श्री चन्द्रराज भण्डारी "विशारद"

श्री० भ्रमरलाल सोनी — श्री० कृष्णलाल गुप्त

(सचालक-कोमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस भानपुरा)

संपादक —

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० कृष्णकुमार मिश्र

श्री० अमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

प्रकाशक—

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० अमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

संचालक—

कॉमार्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

गानपुरा (इन्दौर)

Opinion
On First Volume

The Compilation is both a Directory and a 'who is who' as the title signifies, and as there is no book of this kind in Hindi, it is sure to supply a long-felt want. I am sure it will be useful as a book of reference and congratulate you on your successful attempt.

Rai Bahadur

S. M. Bapna. B.Sc., L.L.B.

Prime-Minister of Indore State.

श्रीमान् बाबू घनश्यामदास बिड़ला एम० एल० ए० कलकत्ता
,, राजा विजयसिंहजी दुधोरिया अजीमगंज
,, सर सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी कलकत्ता
,, छाजूरामजी चोधरी सी० आई० ई०, कलकत्ता
,, साधूराम तोलाराम गोयनका कलकत्ता
,, राय हजारीमलजी दूदवेवाला बहादुर, कलकत्ता
,, राय रामेश्वरदासजी नाथानी बहादुर, कलकत्ता
,, राय रामजीदासजी बाजोरिया बहादुर, कलकत्ता
,, राय सेठूमलजी डालमियां बहादुर, कलकत्ता
,, बाबू म्हालीरामजी सोनथलिया कलकत्ता
,, बाबू गणेशदासजी गधेया सरदार शहर
,, राय बहादुर बाबू राधाकृष्ण साहब मुजफ्फरपुर
,, महाराज बहादुरसिंहजी बालूचर स्टेट अजीमगंज
,, बाबू निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा अजीमगंज
,, महासिंह राय मेघराज बहादुर तेजपुर
,, शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर डिबरूगढ़
,, मोजीराम इन्द्रचन्द नाहटा कलकत्ता
,, कुंवर शुभकरणजी सुराणा चुरू
,, वाणिज्यभूषण लालचन्दजी सेठी झालरापाटन
,, शिवरामदास रामनिरंजनदास कलकत्ता
,, मामराज रामभगत कलकत्ता
,, गिरधारीमल रामलाल कोठी सरदार शहर
,, रामप्रसाद चिमनलाल गनेड़ीवाला कलकत्ता
,, गणपतराय कम्पनी कलकत्ता
,, सनेहीराम टूंगरमल तिनसुकिया
,, बृजमोहन दुर्गादत्त तिनसुकिया
,, महादेवराम रामविलास रानीगंज
,, लालचन्द अमानमल कलकत्ता

Opinion
On First Volume

I have gone through the book and after reading it I cannot refrain from writing that it is a new book, novel in its style and really a good one. It nicely pictures out an account of all important merchants in Rajputana and Central India In such a small time you could compile such a nice book ; it is all due to your hard and much creditable labour. In Hindi, at least, it is the first book of its type. Sincerely I wish that God may fulfil your desires and you may go on making progress after progress.

Vanijyabhushan

Seth Lalchand Sethi

Messrs. Binodiram Balchand of

Jhalarapatan.

भूमिका

आज हम बड़ी प्रसन्नताके साथ अपने माननीय पाठकोंके सम्मुख दूसरी बार फिरसे नवीन और अनुपम भेंटको लेकर उपस्थित होते हैं। इस भव्य भेंटको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करते हुए, आनन्दसे हमलोगोंका हृदय बांसों उछल रहा है, उत्साहकी एक उत्फुल्ल उमंग हमारी रग २ में प्रवाहित हो रही है। इस आनन्दका, इस उत्साहका अनुमान शब्दों के द्वारा नहीं लगाया जा सकता। इसका अनुभव हृदयका काम है, उसी हृदयका जो कार्य्यक्षेत्रमें आशातीत सफलता प्राप्त किये हुए सैनिकके मनोजगतमें निवास करता है।

जिस समय हम लोगोंने इस कार्य्यक्षेत्रमें प्रवेश किया था। उस समय हमको स्वप्नमें भी इस बातका विश्वास न था कि यह कार्य्य इतना शीघ्र और इतनी सफलताके साथ सम्पन्न होता हुआ दृष्टिगोचर होगा। हिन्दी साहित्यकी और उसमें भी खासकर व्यापारसाहित्यकी इस समयमें जो स्थिति है, उसकी गतिविधिके अनुमानसे बिना एक पैसेकी पूंजीके होते हुए, इस महान् कार्य्यमें पूर्ण सफलताकी आशा न रखना स्वाभाविक ही था। हमारी इस निराशाका, हमारे स्नेहियोंने, हमारे मित्रोंने, हमारे परिचितोंमें भी बहुत सद्भावके साथ समर्थन किया था, मगर हृदयके अज्ञात प्रदेश से न मालूम कौनसी उमंग हमें कार्य्यक्षेत्रमें बलात्कार खींचे लिये जा रही थी। हमारे पैर रोके न रुकते थे। फल यह हुआ कि कार्य्यक्षेत्रमें बढ़ते २ हमारे आगेसे निराशाके बादल हटने लगे, और क्रमशः आशाकी चन्द्रिकाके दर्शन होने लगे। यह ऐसा समय था जब शारीरिक कष्ट तो हमलोगोंको बहुत हो रहे थे, मगर आशा की बढ़ती हुई किरणसे हमारा मानसिक जगत उज्वल हो रहा था। अन्तमें हमारी मनोकामना पूर्ण हुई और ग्रन्थका प्रथम भाग हम लोग अपने पाठकोंको भेंट करनेमें समर्थ हो सके। यद्यपि उसकी सामग्रीसे, उसकी छपाईसे, तथा उसके साजो सामानसे हमलोगोंको पूरा सन्तोष न हुआ फिर भी व्यापारी आलमने उसको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया। हमारे परिश्रमकी सराहा और हमारी सफलताका अभिनन्दन किया।

प्रथम भागके निकल जानेपर भी हमें यह आशा नहीं थी कि हम इस ग्रन्थका दूसरा भाग इतनी शीघ्रताके साथ पाठकोंकी सेवामें भेंट कर सकेंगे। क्योंकि प्रथम भागके निकलनेपर

भारतवर्षके अन्तर्गत इस कालमें व्यापार-साहित्यके प्रचारकी कितनी भारी आवश्यकता है, यह बतलाना सूर्य्यको दीपक दिखलानेके समान निरर्थक है। वर्तमानमें व्यापार-ज्ञानके अभावसे संसारके व्यापारिक क्षेत्रमें हम लोगोंकी जो छीछालेदर हो रही है वह किसीसे छिपी हुई नहीं है। इस छीछालेदरका यह कारण नहीं है कि हम लोगोंके पास उपजाऊ भूमिका अभाव है, अथवा हम लोगोंके पास खनिज द्रव्योंकी कमी है, या हम लोगोंमें व्यापारिक बुद्धिका अभाव है। ये सब बातें हमारे यहां पर्याप्त परिमाणमें विद्यमान हैं। हमारे देशकी भूमि "सजलां सुफलां" है, उर्वरा है, उपजाऊ है, सारे संसारमें वह खाने और पहननेकी सामग्रीको पहुंचाती है,खाने और पह-ननेहीकी सामग्रीको नहीं, प्रत्युत खनिज द्रव्योंके रूपमे भी वह संसारको महान् और दिव्य सम्पत्ति भेंट करती है। ऐसी सामग्री जिसके अभावमें शायद विज्ञानके दिखलाई देनेवाले कई अद्भुत चमत्कार भी प्रभा-विहीन दिखलाई देने लगे। इसके अतिरिक्त हम लोगोंमें व्यापारिक दिमागका अभाव है, यह कहना भी प्रायः बुद्धिको धोखा देनाही होगा। हम लोगोंके अन्तर्गत व्यापारिक दिमाग भी कमाल दर्जेका है यदि उसके उपयोगके लिए हम लोगोंको पर्याप्त क्षेत्र मिले। सबसे प्रथम तो हम लोगोंकी राजनैतिक गुलामी हमारी व्यापारिक उन्नतिमें सबसे बड़ी बाधक हो रही है। विदेशी सरकारके और हम लोगोंके स्वार्थोंमें प्रायः स्वार्थ—वैपरीत्य होनेकी वजहसे, शासकोंकी नीति हम लोगोंकी व्यापार नीतिके फलने फूलनेमें सबसे बड़ी बाधक हो रही है। मगर इसके सिवाय भी कई अभाव ऐसे हैं, जो हमारे व्यापारिक क्षेत्रके रहे सहे जीवनको भी कुचल रहे हैं। इनमेंसे कुछ ये हैं।

१—व्यापार साहित्यका अभाव—व्यापारिक क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करनेके लिए, प्रत्येक व्यापारीके लिए, संसारके प्रत्येक व्यापारिक-बाजारसे परिचित रहना कितना अधिक आवश्यक है, संसारके प्रत्येक बाजारके उतार चढ़ावका, प्रत्येक देश और समाजकी अभिरुचिके परिवर्तनका, तथा फसल और खनिजद्रव्योंकी उन्नति और ह्रासका, दैनिक ज्ञान, प्रत्येक व्यापारीके लिए कितना आव-श्यक है यह बतलाना व्यर्थ है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यापारिक देशमें इन बातोंका ज्ञान कराने वाले सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएं, डायरेक्टरीयें तथा और भी दूसरा व्यापारिक साहित्य प्रकाशित होता रहता है। मगर भारतके समान विशाल देशकी राष्ट्रभाषामें—जहांकी जन संख्याका अनुमान संसार के एक पंचमांशसे लगाया जाता है—इस सम्बन्ध की शायद एक भी पत्र, पत्रिका नहीं है, जो संसार भरके बाजारोंकी स्थितिका यहांके व्यापारियोंको दिग्दर्शन करावे और न इस सम्बन्धका कोई व्यापारिक साहित्यही है जो व्यापारके [illegible] विद्यार्थियोंको [illegible] परिचित करे। इस अभावका परि-णाम यह हो रहा है कि यहांके अनेक व्यापारीको संसार और व्यापारिक केन्द्रोंका [illegible]

व्यापारिक जगतमें गतिविधि करना चाहिए, यहां यहांके बहुत से व्यापारी केवल पागलोंके निशान पर, अथवा स्वप्नोंके आधारपर अथवा किसी पागलके वचनपर अथवा किसी शकुन अपशकुनके खयालपर हजारों लाखोंकी बाजी चढ़ा देते हैं। हमने अपनी आंखोंसे देखा है कि, एक सट्टा करने वाले महाशय सड़कपर जा रहे थे उन्हें रास्तेमें एक कुत्ता मिला, उसकी पूंछ ऊंची थी, उन्होंने अनुमान किया कि इस कुत्तेकी पूंछ ऊंची है इसलिए जरूर रुईका भाव ऊंचा जाना चाहिए। और उसी अनुमानके बलपर उन्होंने तेजी मन्दी लगाई, दैवयोगसे उन्हें सफलता न हुई, यदि कहीं हो जाती तो कुत्तेकी ऊंची पूंछ भी भावकी तेजीका एक कारण हो जाता। एक पागलने इसी प्रकार एकबार ऊटपटांग एक महाशयसे कुछ बात कह दी और उससे उनको लाभ भी हो गया, परिणाम यह हुआ कि फिर उसकी बातको सुननेकी इन्तिजारीमें सैकड़ों आदमियोंकी भीड़ लगी रहती थी। यह सब भयंकर स्थिति व्यापार साहित्यके अभाव हीके कारण है। इसके अभाव में यहांका व्यापारी समाज हमेंशा अन्धेरेमें तीर लगाता रहता है। यह सच है कि काकतालीन्यायसे इससे भी कई लक्षाधीश और कोट्याधीश होजाते हैं, मगर केवल इसी प्रमाणपर यह स्थिति अभिनन्दनीय नहीं कही जा सकती। इस स्थितिकी वजहसे यहांके समाजमें धीरे २ उद्योगवादका अधः पतन और प्रारब्धवादका अप्रासंगिक बल बढ़ रहा है। जो किसी भी व्यापारी जातिके लिए अभीष्ट नहीं हो सकता।

२—व्यापारिक संगठनका अभाव-हमलोगोंमें व्यापारिक दिमाग, संसारकी शायद किसी भी व्यापारिक जातिसे कम नहीं है। मगर कुछ तो व्यापारिक ज्ञानकी कमी कारण, और कुछ दूसरे सामाजिक स्थितिकी कमजोरीके कारण, हमलोगोंमें व्यापारिक संगठनसे काम करनेकी पद्धतिका प्रायः अभाव है। जहां दूसरी व्यापारिक जातियां छोटेसे छोटे व्यवसायको भी समूह बद्ध रूपमें प्रारम्भ करती हैं। वहां हम लोग प्रत्येक छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़े कामको केवल व्यक्तिगत बलपर प्रारम्भ करते हैं। फल यह होता है कि प्रथम तो हमलोग किसी बड़े संगठित कार्यका प्रारम्भ ही नहीं कर पाते और कभी कुछ कार्य प्रारम्भ होता भी है तो पर्याप्त सम्पत्तिके अभावमें कभी योग्य कार्यकर्त्ताओंके अभावमें तथा कुछ कभी और कोई दूसरे कारणोंसे वह असफल हो जाता है। फल यह होता कि हमारा व्यापारिक समाज बहुत बड़े व्यापारिक दिमागको रखते हुए भी व्यापारिक संगठनके अभावसे सिवाय विदेशी कम्पनियोंकी दलाली, कमीशन एजन्सी या बेनियन शिपसे आगे नहीं बढ़ने पाता। यही कारण है कि हजारों, लाखों और करोड़ों रुपयेकी सम्पत्ति होते हुए भी व्यापारिक जीवनके वास्तविक आनन्द लाभसे हम लोग वञ्चित रहते हैं।

३—सामाजिक जीवनकी दुरावस्था—राजनैतिक गुलामी ही की तरह सामाजिक जीवनके अप्राकृतिक बन्धन भी हमलोगोंकी व्यापारिक उन्नतिमें कम बाधक नहीं हो रहे हैं। यद्यपि ये

बन्धन अब धीरे२ टूटते जा रहे हैं फिरभी इनका अभी बहुत प्राबल्य है जो हमारे फलने फूलनेके मार्गमें भयङ्कर विघ्नकी तरह है। उदाहरणार्थ समुद्र यात्राके विधान ही को ले लीजिए, इस विधानकी वजहसे हमलोगोंकी व्यापारिक गतिविधीमें जो भारी ह्रास हो रहा है। उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। यदि हमारे जीवनमें यह भारी बन्धन नहीं होता तो आज कलकत्ता, बम्बई और कराँची ही की तरह लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क, शंघाई आदि संसारके प्रसिद्ध बाजारोंमें भी हमलोगोंका कितना प्रभाव होता; यह कौन कह सकता है इसी प्रकारके और भी कितने भीषण समाजिक बन्धन हमारे व्यापारिक जीवनको भयङ्कर रूपसे कमजोर बना रहे हैं, पर उन सबपर प्रकाश डालना इस छोटेसे स्थानमें असम्भव है।

मतलब यह कि हमारे व्यापारिक विकासके लिये व्यापार साहित्यकी उन्नति की बहुत भारी आवश्यकता है इसमें सन्देह नहीं। इसी अभावकी पूर्तिके लिए हमलोगोंने यह एक प्रयत्न किया है। हमें इसमें कितनी सफलता हुई है इसका निर्णय करना पाठकोंका काम है हमारा नहीं, इसके आगे भी इस साहित्यके सम्बन्धमें और भी बहुत कुछ कार्य्य करनेका हमलोगोका इरादा है, खासकर व्यापार सम्बन्धका एक दैनिक और एक मासिक पत्र प्रकाशित करनेका हमलोगोंका बहुत दिनोंसे विचार है। मगर हम इसी प्रतीक्षामें हैं कि यदि कोई हमसे अधिक योग्य सज्जन इस कार्य्यको प्रारम्भ करे तो उससे विशेष लाभ हो। पर यदि ऐसा न हुआ और समय हमारे अनुकूल रहा तो निकट भविष्यमें ही ऐसे उद्योगको प्रारम्भ करनेकी चेष्टा की जायगी।

अन्तमें इस भूमिकाको समाप्त करनेके पूर्व जिन लोगोंके सहयोग दानसे यह महान कार्य्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ है उन लोगोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित न करना वास्तवमें बड़ी कृतघ्नताका काम होगा। सबसे प्रथम तो हम अपने उन सहायकोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थकी अनेक प्रतियोंको खरीदकर हमें उत्साहित किया है। इसके पश्चात् वणिक प्रेसके मैनेजर मि० एच० पी० मैत्रको धन्यवाद दिये विना भी हम नहीं रह सकते, जिनके मैनेजमेण्टमें पुस्तक पहलेसे अधिक सुन्दर, अधिक शीघ्र, और अधिक शुद्धरूप में प्रकाशित हुई है। इस बार आपके व्यवहारसे हमें बहुत ही अधिक सन्तोष रहा। इस ग्रन्थके व्लॉकमेकर म० सुरेशचन्द्रदासगुप्ताको धन्यवाद देना भी हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं जिन्होंने बहुतही साधारण रेटमें अच्छे और सन्तोषजनक व्लाक नियत समयपर बनाकर हमें दिये। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थके संकलनमें सरकारी रिपोर्टं तथा विभिन्न विषयोंके कई ग्रन्थोंसे सहायता ली गयी है। उनके लेखकोंके भी हम अत्यन्त आभारी हैं साथही कलकत्तेकी स्थानीय कमर्शियल लाइब्रेरी और इम्पीरियल लायब्रेरीके प्रबन्धकोंको भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिनके कारण हमें इस कार्यमें पर्याप्त सहायता मिली है।

अन्तमें हम अपने उदार पाठकोंका एक बार पुनः अभिनन्दन करते हुए इस भूमिकाको समाप्त करते हैं।

भानपुरा,
१ अगस्त सन १९२६ ई०

निवेदक—
प्रकाशक कॉमार्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

विषय-सूची

विषय-सूची

कलकत्ता

नाम विषय	पृष्ट संख्या

विषय-सूची

कलकत्ता

बंगाल विभाग

विषय-सूची

आसाम विभाग

भारतीय व्यापारपर एक दृष्टि

SIDE LIGHT ON INDIAN TRADE.

भारतका सच्चा व्यापार

मानव-समाजमें व्यापार वाणिज्यका आश्रय पाकर नित नवीन भव्य भवनोंका निर्माण हुआ करता है। जिस राष्ट्र विशेषका व्यापार जितना अधिक उन्नत अवस्थापर होता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक प्रभावशाली एवं समृद्धिशाली माना जाता है। अतः राष्ट्रकी उत्तम श्रेष्ठताका एकमात्र आदि कारण उसके व्यापार वाणिज्यकी उन्नति ही है। यही सिद्धान्त भारतके लिये भी अनुकरणीय है।

यदि उपरोक्त विचार सारिणीके अनुसार हम भारतके स्वराष्ट्रोचित व्यापारको सम्मुख रखकर विचार करें तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि व्यापार वाणिज्यका रुख भारतीय राष्ट्रके स्वरूपके प्रतिकूल होनेके कारण संसारके अन्य उन्नतिशील राष्ट्रोंकी समतामें लेशमात्र भी खड़ा नहीं हो सकता। फलतः हमें स्वीकार करना ही होगा कि जबतक भारतका व्यापार राष्ट्रीय हितको सम्मुख रखकर सुसंगठित रीतिसे नहीं किया जायगा तबतक वह समुन्नत राष्ट्रोंकी श्रेणी पर नहीं पहुंच सकेगा। ऐसी स्थितिमें भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरूप समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है।

संसारके समुन्नत राष्ट्रोंके व्यापारकी तात्विक मीमांसा कर लेनेपर सहज ही मालूम हो जायगा कि राष्ट्रका वास्तविक व्यापार वही है जिसे वह अपनी आवश्यकता पूर्ति कर बाहर भेज कर किया करता है। अतः मानना पड़ेगा कि भारतका सच्चा व्यापार उसका निर्यात ही है।

भारत तो कृषि प्रधान देश ही है पर अपने शासकोंकी विशेष नीतिके कारण वह आज कच्चा माल उत्पन्न करनेवाला देश बन गया है। भारत सरकारकी कृषि सम्बन्धी नीतिने भारतको अन्य उन्नत राष्ट्रोंके कल-कारखानोंकी आवश्यकता पूर्तिके लिये कच्चे मालका विस्तृत क्षेत्र बना डाला है। अतः भारतसे कच्चा माल ही निर्यातके रूपमें विदेश भेजा जाता है। ऐसी दशामें भारतका सच्चा

व्यापार भारतका निर्यात ही है। इसीपर भारत राष्ट्रका उत्थान सर्वतोपरि निर्भर है। भारतका कच्चा माल ही वास्तवमें भारतके सच्चे व्यवसायका पदार्थ है। संसारके अन्य स्थानोंसे आनेवाले तैयार मालका व्यापार वास्तवमें भारतका सच्चा व्यापार कभी नहीं माना जा सकता। इस प्रकारके तैयार मालका व्यापार करनेवाले व्यापारी अन्य देशोंके कारखानेवाले पूंजीपतियोंके दलाल मात्र है जो आंशिक आर्थिक लाभ अर्थात् दलालीपर अपना व्यापार जमाये बैठे हैं। इन्हीं व्यापारियोंके द्वारा आज भारतके बाजारमें उन लोगोंका माल भारतके बने हुए मालकी प्रतियोगिता करनेमें होड़ लगा रहा है। ये व्यापारी वास्तवमें भारतके सच्चे व्यापारसे बहुत दूर हैं। अत्र उपरोक्त विचार पद्धतिके अनुसार स्थिर किये गये भारतके सच्चे व्यापार अर्थात् कच्चे मालके व्यापारके सम्बन्धमें हम यहां विस्तृत विवेचन करेंगे।

भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरुप और उसकी विशेषतायें

इस शीर्षकमें हम इस बातपर प्रकाश डालेंगे कि भारतका कच्चा माल कौन है, वह कहां कहां जाता है और किस २ उपयोगमें आता है तथा उसे वहां पर कहां कहांके मालसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त हम यह भी बतावेंगे कि वह किस रुपमें विदेशमें भेजा जाय कि उसे सफलता मिले और भारत राष्ट्रके वास्तविक उत्कर्षका कारण बनें।

भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहां प्रचुरतासे कच्चा माल पैदा होता है जिसमेंसे अपनी आवश्यकता पूर्तिको छोड़कर शेष अधिकांश भाग विदेश भेजा जाता है। कच्चे मालका अर्थ इतना अस्पष्ट है कि इसका स्पष्टीकरण कर देना ही उचित है। कच्चे मालके दो भेद है जिनमें एकको कच्चा माल कहते हैं और दूसरेको खाद्य पदार्थके नामसे पुकारते हैं। यह दोनों मिलाकर भारतके कुल निर्यात अर्थात् विदेश जानेवाले मालका ८० प्रतिशत भाग होता है। निर्यातके शेष २० प्रतिशत भागमें वह माल माना जाता है जो पूर्ण अथवा आंशिक रुपसे तैयार करके विदेश भेजा जाता है। इसका कोगम्य स्पष्टीकरण इस प्रकार है जिसे भारतके निर्यातके रुपमें हम दे रहे हैं:—

भारतका निर्यात	सन् १८९९-१०	सन् १९०६-७	सन् १९१३-१४
रुई	६ ६ (मिलियन पौण्ड) ...	१४ ६ ...	२७ ३ ...
जूट कच्चा	५·३ " " ...	१७ ८ ...	२० ५ ...
जूट तैयार	६ २ " " ...	१० ४ ...	१८ ८ ...
चावल	८ ६ " " ...	१२·३ ...	१७·६ ...
तेलहन (तिल्ल, सरसों अलसी आदि)	६·६ " " ...	८·६ ...	१७ ० ...

उपरोक्त अंकोंसे स्पष्ट है कि कच्चे मालकी भांति यहांका तैयार माल भी महत्वका होता जा रहा है।

कच्चे मालकी मदको लेकर हमने उसके ४ प्रकार लिखे हैं उनमेंसे एक एक प्रकारको लेकर हम नीचे उनका विस्तृत विवेचन दे रहे हैं। प्रथम प्रकारके अन्तर्गत रुई, जूट, ऊन, तेलहन, चमड़ा और खाल हैं अतः हम क्रमानुसार इनपर प्रकाश डालेंगे।

रुई

संसारमें रुईके बेचनेवाले प्रधान रूपसे तीन ही देश हैं। जिनके नाम अमेरिका मिस्र और भारत हैं। पर भारतकी रुईके खरीददारोंमें प्रधान रूपसे जापान, जर्मनी, बेलजियम इटली, अस्ट्रिया हंगरी, फ्रान्स और बृटेन हैं। उपरोक्त खरीददारोंके नाम क्रमानुसार दिये गये हैं।

भारतसे विदेश जानेवाली रुईकी निकासीका प्रधान बन्दर बम्बई है।

जूट

जूट उत्पन्न करनेवाला संसारका प्रधान केन्द्र भारत है। संसारके कितने ही देशोंमें जूटकी खेती करनेके लिये प्रचुर धन साध्य प्रयत्न किया गया पर सफलता न मिली। जूटके प्रति उपयोगी पदार्थकी खोजमें संसारके वैज्ञानिकोंने सारा जोर लगा दिया फिर भी वे सफल मनोरथ नहीं हो सके। कहा जाता है कि दक्षिण अफ्रीकामें एक प्रकारके रेशेका प्रयोग कर देखा जा रहा है। यदि उन रेशोंसे टाट बनाया जा सका और बोरे बुननेमें सफलता मिल गयी तो अवश्य ही भारतके जूट व्यवसायको धक्का लगेगा। जूटका उपयोग प्रायः मोटेसे मोटे माल जैसे टाट और बोरे बनानेमें किया जाता है तथा नकली रेशम बनानेका काम भी इसीके रेशोंसे लिया जाता है। जूटके टूटे टुकड़े और मोटे बेकार रेशोंसे कागज बनाया जाता है।

भारतके जूटके खरीदारोंमें बृटेन, जर्मनी, अमेरिका, फ्रान्स, आस्ट्रिया हंगरी, इटली आदि क्रमानुसार प्रधान देश हैं।

भारतसे विदेश जानेवाले जूटकी निकासीका प्रधान बन्दर कलकत्ता है।

ऊन

भारतसे जो ऊन विदेश भेजी जाती है उसमें अफगानिस्थान और तिब्बतसे आनेवाली ऊन भी मिली रहती है। भारतमें इन बाहरी देशोंकी ऊन स्थल मार्गसे यहां आती है और भारतकी ऊनके साथ भारतीय ऊनके नामसे विदेश भेजी जाती है। भारतके अन्दर ऊन प्रधानतया काश्मीर, हिसार, गढ़वाल, नैनीताल, अल्मोड़ा, सिन्ध, बीकानेर आदि स्थानोंसे इकट्ठा की जाती है।

तैयार की जाती है पर यह बड़े ही कामकी रेशम होती है। प्रथम ४ प्रकारकी रेशमके समान ही वेस्ट-सिल्कके लिये भी भारतको जापानसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतकी वेस्ट सिल्कमें कूड़ा अधिक रहता है और जापानके मालमें बिलकुल कूड़ा-कचड़ा नहीं रहता।

उपरोक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि भारतकी रेशमके ५ प्रकार होते हैं और सबके लिये उसे संसारके तीन प्रधान रेशम उत्पन्न करने वाले केन्द्रोंसे प्रतियोगिता करना पड़ती है। अब भारतके लिये रेशमकी कुसियारीका व्यापार भी ध्यानमें रखना आवश्यक है। रेशमकी कुसियारी भारतसे विदेश जाती है। इसके खरीदारोंमें प्रथम बृटेन और दूसरा फ्रान्स माना जाता है। कुछ समयसे इटली भी कुसियारी खरीदने लगा है। वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए मानना पड़ेगा कि संसारमें कुसियारीका व्यापार उन्नति करेगा। दूसरे देश वाले अपनी सुविधाके अनुकूल कुसियारीसे रेशम निकाल कर सुलझा सकते हैं जिससे उन्हें बुननेमें सुविधा होती है। अतः इस व्यापारका भविष्य उज्वल है।

भारतीय रेशमके लिये प्रधान विदेशी बाजार

रेशम—(सभी प्रकारका) बृटेन, फ्रांस और इटली (क्रमानुसार)
वेस्ट सिल्क (घसम)—बृटेन, फ्रान्स और इटली (")
कुसियारी— बृटेन, फ्रान्स और इटली (")

५ तेलहन माल

तेलहन माल किसी एक प्रकारके पदार्थ विशेषका नाम नहीं है। इसके अन्तर्गत ७ प्रकार के तेल देनेवाले पदार्थोंका समावेश माना जाता है। जिनके नाम क्रमशः अलसी, लाही, सरसों, तिल, बिनौले, अंडी, मूंगफली और नारियलकी गरी हैं। इनका अलग अलग आवश्यक विवरण इस प्रकार है।

१ अलसी—भारतमें अलसी इतनी अधिक उत्पन्न होती है कि भारतके घर खर्चको छोड़ करके भी बहुत अधिक परिमाणमें बच रहती है जो विदेशके बाजारमें बेची जाती है। यही कारण है कि भारतसे बहुत बड़ा अलसीका निर्यात् विदेशको किया जाता है। यह निर्यात् कुछ नवीन नहीं है सम्भवतः १९ वीं शताब्दीके आरम्भसे ही इसके निर्यात्का सूत्रपात होता है। सन् १८३२ ई० में केवल ८ हंडर वेट अलसी विदेश भेजी गयी थी पर सन १८८०ई०मे ५० लाख हंडरवेट पर अलसीका निर्यात् पहुंच गया। और सन १९००ई० तक भारतने संसार भरमें अलसी बेचनेका एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। इसी बीच अर्जेन्टाइना रिपब्लिकमें अलसीकी खेती आरम्भ की गयी और वहां उसे अच्छी सफलता मिली। आज तो अर्जेन्टाइना रिपब्लिकका स्थान सबसे प्रथम माना जाता है और इसके बाद

भारतका स्थान है। तीसरा स्थान अर्जेन्टाइना है और फिर क्रमानुसार रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका का स्थान माना जाता है। रूस और संयुक्त राज्य अमेरिकामें इतनी ही अलसी उत्पन्न होती है कि उनके घर खर्चके लिये वह पर्याप्त हो जाती है। ऐसी दशामें अलसीके लिये संसारके बाजारमें भारतको अर्जेन्टाइना रिपब्लिक और कनाडाकी अलसीसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

अलसीकी मांग बाजारमें खूब रहती है। अलसीका तेल पेन्ट, वार्निश, आइल पेन्ट, छापनेकी स्याही आदि बनानेके काममें आता है। ठंडक पहुंचा कर ठंडी पद्धतिसे निकाले गये अलसीके तेलको जैतूनके तेलके स्थानपर काममें लाते हैं। अलसीसे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुई खली जानवरोंके खानेके काममें आती है।

भारत अलसी बेचता है और अलसीका तेल खरीदता है। अलसीका तेल बाहरसे मंगाना भारतके लिये हानिकर है अतः भारतमें ही अलसीका तेल निकलवाया जाय और घर खर्चके लिये व्यवहार किया जाय तो इससे भारत विदेशियोंका शिकार बननेसे बच जायगा और भारतका उद्योग धन्धा उन्नतिकी ओर अग्रसर होगा। तेल सस्ता पड़ेगा और खली मुफ्तमें बच जायगी।

भारत अपनी अलसी बृटेन, फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी और इटलीके बाजारमें बेचता है।

सरसों और लाही—भारतके घर खर्चके लिये ही बोई जाती हैं। इसका तेल मुख्य-तया जलानेके काममें आता है पर मिट्टीके तेलके बढ़ते हुए व्यवहारके कारण जलानेके काममें इस तेलका व्यवहार कम हो चला है। इसकी खली खादके काममें आती है।

सरसों और लाही सबसे अधिक पंजाबमें पैदा होती है और उससे कुछ कम परिमाणमें यह संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होती है। पंजाबका माल करांची बंदरसे विदेश जाता है और संयुक्त प्रान्तका सरसों बम्बई तथा कलकत्तेसे बाहर जाता है।

भारतको सरसों और लाहीके लिये विदेशी बाजारोंमें रूससे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतका सरसों बेलजियम, जर्मनी और फ्रान्सके बाजारमें बिकता है। बृटेन प्रायः योरोपके अन्य देशोंको सरसोंका तेल और खली भेजता है और जापान सरसों तथा लाहीके स्थानमें सोवा-बीज बाहरके बाजारोंमें बेचता है। यही कारण है कि सोवाके बीज और भारतीय सरसोंसे भी वहां पारस्परिक मुठभेड़ हो जाती है और योरोपके तेल पेरनेवाले इससे लाभ उठा लेते हैं। अब भारतको चाहिये कि वह सरसों और लाहीका तेल भारतमें ही तेल की मिलों द्वारा निकला कर साफ करावे और सरसोंका तेल और खली बृटेनके बाजारमें बेचें। इससे उसे अधिक लाभ होगा।

तिल—भारतमें तिलका उपयोग बहुत पुराना है इसीसे संस्कृत शब्द तैलकी रचना हुई है। तिल दो प्रकारका होता है जिसमें एकको काला तिल और दूसरेको सफेद तिल कहते हैं। काला

भारतका स्थान है। तीसरा स्थान कनाडाका है और फिर क्रमानुसार रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका का स्थान माना जाता है। रूस और संयुक्त राज्य अमेरिकामें इतनी ही अलसी उत्पन्न होती है कि उनके घर खर्चके लिये वह पर्याप्त हो जाती है। ऐसी दशामें अलसीके लिये संसारके बाजारमें भारतको अर्जेन्टाइना रिपब्लिक और कनाडाकी अलसीसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

अलसीकी मांग बाजारमें खूब रहती है। अलसीका तेल पेन्ट, वार्निश, आइल पेन्ट, छापनेकी स्याही आदि बनानेके काममें आता है। ठंढक पहुंचा कर ठंढी पद्धतिसे निकाले गये अलसीके तेलको जैतूनके तेलके स्थानपर काममें लाते हैं। अलसीसे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुई खली जानवरोंके खानेके काममें आती है।

भारत अलसी बेंचता है और अलसीका तेल खरीदता है। अलसीका तेल बाहरसे मंगाना भारतके लिये हानिकर है अतः भारतमें ही अलसीका तेल निकलवाया जाय और घर खर्चके लिये व्यवहार किया जाय तो इससे भारत विदेशियोंका शिकार बननेसे बच जायगा और भारतका उद्योग धन्धा उन्नतिकी ओर अग्रसर होगा। तेल सस्ता पड़ेगा और खली मुफ्तमें बच जायगी।

भारत अपनी अलसी वृटेन, फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी और इटलीके बाजारमें बेंचता है।

सरसों और लाही—भारतके घर खर्चके लिये ही बोई जाती हैं। इसका तेल मुख्यतया जलानेके काममें आता है पर मिट्टीके तेलके बढ़ते हुए व्यवहारके कारण जलानेके काममें इस तेलका व्यवहार कम हो चला है। इसकी खली खादके काममें आती है।

सरसों और लाही सबसे अधिक पंजाबमें पैदा होती है और उससे कुछ कम परिमाणमें यह संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होती है। पंजाबका माल करांची बंदरसे विदेश जाता है और संयुक्त प्रान्तका सरसों बम्बई तथा कलकत्तेसे बाहर जाता है।

भारतको सरसों और लाहीके लिये विदेशी बाजारोंमें रूससे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतका सरसों बेलजियम, जर्मनी और फ्रान्सके बाजारमें बिकता है। वृटेन प्रायः योरोपके अन्य देशोंको सरसोंका तेल और खली भेजता है और जापान सरसों तथा लाहीके स्थानमें सोयाबीन बाहरके बाजारोंमें बेंचता है। यही कारण है कि सोयाके बीज और भारतीय सरसोंसे भी वहां परस्परिक मुठभेड़ हो जाती है और योरोपके तेल पेरनेवाले इससे लाभ उठा लेते हैं। अब भारतको चाहिये कि वह सरसों और लाहीका तेल भारतमें ही तेल की मिलों द्वारा निकाल कर खर्च करने और सरसोंका तेल और खली वृटेनके बाजारमें बेंचे। इससे उसे अधिक लाभ होगा।

तिल—भारतमें तिलका उपयोग बहुत पुराना है इसीसे संस्कृत शब्द तैलकी रचना हुई है। तिल दो प्रकारका होता है जिनमें एकको काला तिल और दूसरेको सफेद तिल कहते हैं। काला

मिलानेके काम आता है। मूंगफलीके निर्गन्ध तेलका नकली मक्खन बनाया जाने लगा है। इस तेलके नकली मक्खनको दक्षिण योरोपके लोग बड़े प्रेमसे खाते हैं। इसी निर्गन्ध तेलकी वानस्पतिक चर्बी भी बनायी जाने लगी है। चर्बीकी मांग संसारमें अत्यधिक है अतः पशुओंकी चर्बीके स्थानमें इस तेलकी चर्बीका प्रचार भी अवश्य ही अधिकतासे होगा। इसीलिये मूंगफलीके तेलको अच्छा अवसर हाथ लगेगा। अब कुछ समयसे अमेरिका भी मूंगफलीके तेलका व्यवहार करने लगा है और फलतः भारतके लिये उसे नवीन बाजार समझना चाहिये।

भारतको चाहिये कि वह मूंगफली न भेजकर मूंगफलीका तेल ही विदेश भेजा करे। भारतमें ही भारतीय तेलकी मिलोंमें मूंगफलीका तेल निकाला जावे और फिर उसे निर्गन्ध और साफ कर ढंगसे विदेशके बाजारोंमें भेजा जावे। इस प्रकार मूंगफलीका तेल भेजनेसे कई प्रकारका लाभ तो भारतको होगा ही पर जहाजपर स्थान कम घेरनेके कारण किराया भी कम लगेगा और साथ ही खली भी बच रहेगी जो खादके काममें आयेगी।

बिनौला - संसारभरमें सबसे अधिक बिनौला संयुक्त राज्य अमेरिकामें उत्पन्न होता है पर वहांसे बिनौला विदेश नहीं भेजा जाता। हां उसके स्थानमें बिनौलेका तेल और उसकी खली ही अमेरिका विदेशके बाजारमें भेजता है।

बिनौलेका सबसे बड़ा बाजार वृटेन है। अतः सबसे अधिक बिनौलेकी खरीद बिक्री यहीं होती है। वृटेनके बाजारमें अमेरिकाके बिनौलेका तेल और खली तो आती ही है पर मिस्रका बिनौला भी यथेष्ट परिमाणमें खरीदा जाता है। इसी बाजारमें खरीदा हुआ मिस्रका बिनौला यहांसे जर्मनी जाता है। अमेरिकावाले बिनौलेका छिलका निकाल कर उसका तेल निकालते हैं अतः यह तेल सर्व श्रेष्ट माना जाता है फलतः जर्मनी अमेरिकाके बिनौलेके तेलको खूब खरीदता है।

योरोपमें दूध देनेवाले पशु घरोंमें रखकर खिलाये जाते हैं और उन्हें बिनौलेकी खली ही अधिक खिलायी जाती है। जर्मनी मिस्रके बिनौलेकी खली बेंचता है पर वह भारतकी खलीसे कहीं अधिक मंहगी होती है। अंग्रेज लोग पशुओंको खिलानेके लिये बिनौलेकी सस्ती खली खरीदते हैं अतः जर्मनीकी खलीकी अपेक्षा भारतकी सस्ती खलीको अच्छा अवसर मिलता है। बिनौलेका तेल साबुन बनानेके काममें आता है। इसका निर्गन्ध तेल प्रतिउपयोगीकी भांति जैतूनके तेलके स्थानमें काम आता है। इसके तेलकी वानस्पतिक चर्बी भी तैयार की जाती है। बिनौलेके छिलकेसे लिखनेका कागज तैयार किया जाता है। खली जानवरोंको खिलाने और खादके काममें आती है। अमेरिकावाले बिनौलेसे एक प्रकारका आटा भी तैयार करने लगे हैं जिसको वे गेहूंके आटेके साथ मिलाकर काममें लाते हैं।

भारत यदि स्वदेशमें ही बिनौलेका तेल तैयार करावे और साफ तथा निर्गन्ध कर उसे घर-

तिल श्रेष्ठ होता है। इसका तेल उत्तम और गुणकारी होता है। इन तिलोंमें तेल भी अधिक निकलता है और औषधिके काममें भी यही तेल आता है। सफेद तिल और उसका तेल खाने और मिठाइयोंके काममें आता है इन दोनों ही प्रकारके तिलोंका तेल सुगन्धित तेल बनानेके काममें आता है। सरसोंकी फसल नष्ट हो जानेपर तिलकी मांग बढ़ जाती है। यह खानेके काममें भी आता है अतः भारतकी निम्न-श्रेणीकी जनतामें इसका बहुत प्रचार है। यही कारण है कि मारिशस, सीलोन, जावा, प्रभृति देशोंमें बसे हुए भारतीय श्रमजीवियोंमें इसकी मांग सदैव बनी रहती है। इसकी खली खादके काममें आती है

तिलकी मांग प्रधान रूपसे फ्रांस, बेलजियम, आस्ट्रिया हंगरी, जर्मनी, और इटलीके बाजारमें खूब जोरकी रहती है। इन देशोंमें जैतूनके तेलके स्थानमें तिलके तेलसे साबुन बनाया जाता है। फ्रान्सके आइल मिलवाले तिल न खरीद कर सस्ती मूंगफली खरीदते हैं और मूंगफलीका तेल पेरकर तिलके तेलके स्थानमें उसे काममें लाते है। सस्ती होनेसे मूंगफली और नारियलकी गरी भी यहांके तिलसे विदेशके बाजारमें प्रतियोगिता करती हैं। चीनसे भी तिल विदेशके बाजारोंमें आने लगा है।

भारतसे बाहर जाने वाले तिलके लिये बेलजियम, फ्रान्स, जोगोस्लाविया और इटलीके बाजार हैं, जहां इसकी यथेष्ट मांग रहती है।

मूंगफली—भारतमें सबसे अधिक मूंगफलीकी उपज मद्रास और बम्बई प्रदेशमें होती है। मद्रास प्रदेशकी मूंगफली पाण्डेचेरी द्वारा विदेश भेजी जाती है खासकर फ्रान्सके कार-खानोंके लिये भी इसी बंदरसे रवाना होती है। मद्रास प्रदेशसे मूंगफली कलकत्ता और रंगून भी जाती है जहांके आइल मिलोंमें इसका तेल निकाला जाता है। भारतके विभिन्न भागोंमें मूंगफलीकी समान रूपसे मांग रहती है। इसका तेल सरसों और तिलके तेलमें मिलानेके काममें आता है। इसकी खली जानवरोंको खिलाई जाती है पर सूखी खली गन्ने, गोभी आदिके खेतोंमें खाद देनेके काममें आती है।

संसारमें मूंगफली और उसके तेलके बाजार मुख्यतया फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी, इटली और आस्ट्रिया हंगरी हैं।

पश्चिम अफ्रिकाके सेनेगाल प्रदेशकी मूंगफलीमें अधिक तेल निकलता है अतः उसकी मांग फ्रान्समें अधिक है। मार्सेलीस और बोर्डोकी तेलकी मिलें इसे चावसे खरीदती हैं। प्रथम तो जैतूनके तेलके स्थानमें तिलका तेल व्यवहार किया जाता था पर सस्ते मालकी खोजने तिलके तेलमें मूंगफलीका तेल मिलानेकी प्रथा शुरू कर दी इसका फल यह हुआ कि अब बिलकुल मूंगफलीका तेल ही काममें लाया जाने लगा है। मूंगफलीके तेलसे साबुन तैयार किया जाता है। साफ किया हुआ तेल जैतूनके तेलमें

खर्च के काममें ले तो लाभ अधिक हो सकता है और सस्ती खली विदेश भेजा सकता है।

अरण्डी—इसका पौधा विचित्र प्रकारका होता है। वह भूमिकी नाइट्रोजन नामक वस्तु-को खा-खा कर बढ़ता है। इसके पौधे प्रायः गन्ने, हलदी, अदरख आदिके खेतोंमें छायाके लिये लगाये जाते हैं। पर आसामवाले अण्डीरेशम के कीड़ोंको खिलानेके लिये इन्हें लगाते हैं। निजाम स्टेट और बम्बई प्रान्तमें पैदा होनेवाली अरण्डीकी उपजका अधिकांश भाग बम्बई बन्दरसे विदेशके लिये रवाना किया जाता है इधर कलकत्तेके पासकी तेलकी मिलोंमें बंगाल, आसाम, बिहार, उड़ीसा और संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होनेवाली अरण्डीका तेल निकाला जाता है। इसी प्रकार मद्रासकी तेलकी मिलें उस प्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली अरण्डीका तेल निकालती है।

अमेरिकामें अरण्डी उत्पन्न होती है पर उसका तेल वहींकी खपतके लिये पूरा नहीं होता अतः भारतसे वहां अरण्डी जाती हैं। अरण्डीकी खेतीका प्रसार जावा, इण्डोचाइना, आलजीरिया और ब्रेजीलमें भी हुआ है और इन स्थानोंकी अरण्डी भारतकी प्रतियोगिता करनेके लिये विदेशकी बाजारोंमें सदा तैयार रहती है।

१९ वीं शताब्दीके मध्यकाल और अन्तकाल तक भारतसे अरण्डीका तेल ही विदेश भेजा जाता था पर सन् १८८८-९ से तेलका निर्यात कम होने लगा और अरण्डी अधिक जाने लगी। इसका प्रधान कारण केवल इतना ही है कि कलकत्तेकी मिलोंका तेल विदेशी मिलोंके तेलकी अपेक्षा कम अच्छा होता है। अरण्डीकी सबसे अधिक खपत वृटेनमें होती है। वृटेनमें 'हल' नामक औद्योगिक नगर तेलकी मिलोंका प्रधान केन्द्र माना जाता है। यहीं सब स्थानोंकी अरण्डीको आश्रय मिलता है। इसी नगरसे अरण्डीका तेल जर्मनी, बेलजियम, फ्रांस और इटलीको जाता है। इनका नाम खपतके हिसाबसे क्रमानुसार ऊपर दिया गया है। अरण्डीका तेल मशीनोंमें चिकनाहट बनाये रखनेके काममें लुब्रीकेन्ट आइल (Lubricant) के स्थानमें व्यवहार किया जाता है। चमड़ेके सामानको सूखनेसे बचानेके काममें आता है। युद्धकालमें वायुयानोंकी मशीनोंमें इसका तेल बहुत अधिक कामका सिद्ध हुआ है। इसका साफ और निर्गन्ध तेल औषधिके काममें आता है। प्रसिद्ध लाल तेल (Turkey red-Oil) भी भारत की ही अरण्डीका बनता है। भारत यदि चाहे तो अरण्डीके तेलपर अपना एकाधिपत्य जमा सकता है। अरण्डीकी खली जहरीली होती है अतः पशुओंके कामकी नहीं है पर आलू और गन्नेके लिये तो सर्वश्रेष्ठ खाद मानी जाती है। इसकी खलीकी गैस भी वहां बनायी जाती है जहां कोयला कम और मंहगा मिलता है। भारतको चाहिये कि वह अरण्डी न भेज कर अरण्डीका तेल ही विदेश भेजा करे और इस प्रकार खली बचाकर भूमिका नाइट्रोजन उसको पुनः सौंप दे।

नारियलकी गरी—भारतमें नारियल गंगा और ब्रह्मपुत्र नदीकी घाटी तथा कारोमण्डल

भारतका सच्चा व्यापार

मानव-समाजमें व्यापार वाणिज्यका आश्रय पाकर नित नवीन भव्य भवनोंका निर्माण हुआ करता है। जिस राष्ट्र विशेषका व्यापार जितना अधिक उन्नत अवस्थापर होता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक प्रभावशाली एवं समृद्धिशाली माना जाता है। अतः राष्ट्रकी उत्तम श्रेष्ठताका एकमात्र आदि कारण उसके व्यापार वाणिज्यकी उन्नति ही है। यही सिद्धान्त भारतके लिये भी अनुकरणीय है।

यदि उपरोक्त विचार सारिणीके अनुसार हम भारतके स्वराष्ट्रोचित व्यापारको सन्मुख रखकर विचार करें तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि व्यापार वाणिज्यका रुख भारतीय राष्ट्रके स्वरूपके प्रतिकूल होनेके कारण संसारके अन्य उन्नतिशील राष्ट्रोंकी समतामें लेशमात्र भी खड़ा नहीं हो सकता। फलतः हमें स्वीकार करना ही होगा कि जबतक भारतका व्यापार राष्ट्रीय हितको सन्मुख रखकर सुसंगठित रीतिसे नहीं किया जायगा तबतक वह समुन्नत राष्ट्रोंकी श्रेणी पर नहीं पहुंच सकेगा। ऐसी स्थितिमें भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरूप समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है।

संसारके समुन्नत राष्ट्रोंके व्यापारकी तात्विक मीमांसा कर लेनेपर सहज ही मालूम हो जायगा कि राष्ट्रका वास्तविक व्यापार वही है जिसे वह अपनी आवश्यकता पूर्ति कर बाहर भेज कर किया करता है। अतः मानना पड़ेगा कि भारतका सच्चा व्यापार उसका निर्यात् ही है।

भारत तो कृषि प्रधान देश ही है पर अपने शासकोंकी विशेष नीतिके कारण वह आज कच्चा माल उत्पन्न करनेवाला देश बन गया है। भारत सरकारकी कृषि सम्बन्धी नीतिने भारतको अन्य उन्नत राष्ट्रोंके कल-कारखानोंकी आवश्यकता पूर्तिके लिये कच्चे मालका विस्तृत क्षेत्र बना डाला है। अतः भारतसे कच्चा माल ही निर्यात्के रूपमें विदेश भेजा जाता है। ऐसी दशामें भारतका सच्चा

व्यापार भारतका निर्यात ही है। इसीपर भारत राष्ट्रका उत्थान सर्वरूपेण निर्भर है। भारतका कच्चा माल ही वास्तवमें भारतके सच्चे व्यवसायका पदार्थ है। संसारके अन्य स्थानोंसे आनेवाले तैयार मालका व्यापार वास्तवमें भारतका सच्चा व्यापार कभी नहीं माना जा सकता। इस प्रकारके तैयार मालका व्यापार करनेवाले व्यापारी अन्य देशोंके कारखानेवाले पूंजीपतियोंके दलाल मात्र हैं जो आंशिक आर्थिक लाभ अर्थात् दलालीपर अपना व्यापार जमाये बैठे हैं। इन्हीं व्यापारियोंके द्वारा आज भारतके बाजारमें उन लोगोंका माल भारतके बने हुए मालकी प्रतियोगिता करनेमें होड़ लगा रहा है। ये व्यापारी वास्तवमें भारतके सच्चे व्यापारसे बहुत दूर हैं। अब उपरोक्त विचार पद्धतिके अनुसार स्थिर किये गये भारतके सच्चे व्यापार अर्थात कच्चे मालके व्यापारके सम्बन्धमें हम यहां विस्तृत विवेचन करेंगे।

भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरूप और उसकी विशेषतायें

इस शीर्षकमें हम इस बातपर प्रकाश डालेंगे कि भारतका कच्चा माल कौन है, वह कहां कहां जाता है और किस २ उपयोगमें आता है तथा उसे वहां पर कहां कहांके मालसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त हम यह भी बतावेंगे कि वह किस रूपमें विदेशमें भेजा जाय कि उसे सफलता मिले और भारत राष्ट्रके वास्तविक उत्कर्षका कारण बने।

भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहां प्रचुरतासे कच्चा माल पैदा होता है जिसमेंसे अपनी आवश्यकता पूर्तिको छोड़कर शेष अधिकांश भाग विदेश भेजा जाता है। कच्चे मालका अर्थ इतना अस्पष्ट है कि इसका स्पष्टीकरण कर देना ही उचित है। कच्चे मालके दो भेद हैं जिनमें एकको कच्चा माल कहते हैं और दूसरेको खाद्य पदार्थके नामसे पुकारते हैं। यह दोनों मिलाकर भारतके कुल निर्यात् अर्थात् विदेश जानेवाले मालका ८० प्रतिशत भाग होता है। निर्यात्के शेष २० प्रतिशत भागमें वह माल माना जाता है जो पूर्ण अथवा आंशिक रूपसे तैयार करके विदेश भेजा जाता है। इसका सामान्य स्पष्टीकरण इस प्रकार है जिसे भारतके निर्यात्के रूपमें हम दे रहे हैं:—

भारतका निर्यात्	सन् १८९९-१९००	सन् १९०६-७	सन् १९१३-१४
रुई	९.६ (मिलियन पौण्ड) ...	१४.६ ...	२७.३ ...
जूट कच्चा	५.३ „ „ ...	१७.८ ...	२०.५ ...
जूट तैयार	६.२ „ „ ...	१०.४ ...	१८.८ ...
चावल	८.६ „ „ ...	१२.३ ...	१७.६ ...
टेक्सटाइल (बिच, खाल्डों काल्डों आदि)	६.६ „ „ ...	८.६ ...	१७.० ...

[illegible]	[illegible]			[illegible]	...	[illegible]	...
अफीम	५·४ ,,	,,	...	६·२	...	२·२	...
ऊन	·६ ,,	,,	...	१·६	...	१·६	...
लाख, चपड़ा	·७ ,,	,,	...	२·३	...	१·३	...
काफी	·६ ,,	,,	...	·६	...	१·०	...
जोड़	६२·२ ,,	,,	...	१०४·३	...	१४४·६	
कुल निर्यात्	७०·० ,,	,,	...	११५.३	...	१६२८	

यदि उपरोक्त दिये गये कच्चे मालको माल के प्रकारके रूपमें विभाजित किया जाय तो नीचे लिखेनुसार उसके प्रकार होंगे। और उनमें ये ये पदार्थ माने जांयगे।

कच्चा माल	खाद्य पदार्थ	पक्का माल	अन्य प्रकारका माल
रुई	चावल	जूटका तैयार माल	अफीम
जूट	गेहूं	सूती माल	लाख, चपड़ा
ऊन	चाय	चमड़ेका सामान	खनिज पदार्थ
तेलहन	काफी		
खाल व चमड़ा			

इन्हीं विभिन्न पदार्थोंको मूल्यकी दृष्टिसे यों मानेंगे।

	सन् १६०० ई०		सन् १६०६-७ ई०		सन् १९१३-१४ ई०
कच्चा माल	२४·० (मि० पौं०)	...	४६·८	...	७४·२
खाद्य पदार्थ	१८·१ ,, ,,	...	२४·६	...	३७·२
पक्का माल	१४·० ,, ,,	...	२१·४	...	२६·७
अन्य प्रकारका माल	६·१ ,, ,,	...	८·५	...	३.५
जोड़ ६२·२	,, ,,	...	१०४·३	...	१४४·६

उपरोक्त अंकोंसे स्पष्ट है कि कच्चे मालकी भांति पक्के तैयार माल भी महत्वका होता जा रहा है।

कच्चे मालकी मदको लेकर हमने उसके ५ प्रकार लिये हैं उनमेंसे एक एक प्रकारको लेकर हम नीचे उनका विस्तृत विवेचन दे रहे हैं। प्रथम प्रकारके अन्तर्गत रुई, जूट, ऊन, तेलहन, चमड़ा और खाल हैं अतः हम क्रमानुसार इनपर प्रकाश डालेंगे।

रुई

संसारमें रुईके बेचनेवाले प्रधान रूपसे तीन ही देश हैं। जिनके नाम अमेरिका मिश्र और भारत हैं। पर भारतकी रुईके खरीददारोंमें प्रधान रूपसे जापान, जर्मनी, बेलजियम इटली, अस्ट्रिया हंगरी, फ्रान्स और वृटेन हैं। उपरोक्त खरीददारोंके नाम क्रमानुसार दिये गये हैं।

भारतसे विदेश जानेवाली रुईकी निकासीका प्रधान बन्दर बम्बई है।

जूट

जूट उत्पन्न करनेवाला संसारका प्रधान केन्द्र भारत है। संसारके कितने ही देशोंमें जूटकी खेती करनेके लिये प्रचुर धन साध्य प्रयत्न किया गया पर सफलता न मिली। जूटके प्रति उपयोगी पदार्थकी खोजमें संसारके वैज्ञानिकोंने सारा जोर लगा दिया फिर भी वे सफल मनोरथ नहीं हो सके। कहा जाता है कि दक्षिण अफ्रीकामें एक प्रकारके रेशेका प्रयोग कर देखा जा रहा है। यदि उन रेशोंसे टाट बनाया जा सका और बोरे बुननेमें सफलता मिल गयी तो अवश्य ही भारतके जूट व्यवसायको धक्का लगेगा। जूटका उपयोग प्रायः मोटेसे मोटे माल जैसे टाट और बोरे बनानेमें किया जाता है तथा नकली रेशम बनानेका काम भी इसीके रेशोंसे लिया जाता है। जूटके टूटे टुकड़े और मोटे बेकार रेशोंसे कागज बनाया जाता है।

भारतके जूटके खरीदारोंमें वृटेन, जर्मनी, अमेरिका, फ्रान्स, आस्ट्रिया हंगरी, इटली आदि क्रमानुसार प्रधान देश हैं।

भारतसे विदेश जानेवाले जूटकी निकासीका प्रधान बन्दर कलकत्ता है।

ऊन

भारतसे जो ऊन विदेश भेजी जाती है उसमें अफगानिस्तान और तिब्बतसे आनेवाली ऊन भी मिली रहती है। भारतमें इन बाहरी देशोंकी ऊन स्थल मार्गसे यहां आती है और भारतकी ऊनके साथ भारतीय ऊनके नामसे विदेश भेजी जाती है। भारतके अन्दर ऊन प्रधानतया काश्मीर, हिसार, गढ़वाल, नैनीताल, अल्मोड़ा, सिन्ध, बीकानेर आदि स्थानोंसे इकट्ठा की जाती है।

भारतसे बाहर जानेवाली भारतीय ऊनकी निकासीका प्रधान बंदर करांची है। यहांसे अधिकांश ऊन विदेश भेजी जाती है और शेष ऊन बम्बईके बंदरसे रवाना होती है।

भारतकी ऊनका प्रधान खरीददार बृटेन है। बृटेनके बाजारमें आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड दक्षिण अफ्रीका, अर्जेन्टाइना रिपब्लिक तथा भारतकी ऊन बिक्रीके लिये इकट्ठी होती है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्डकी ऊन सर्वश्रेष्ठ होती है अतः ऊनके बाजारमें भारतको ऊनके लिये बहुत बड़ी प्रतियोगिता करनी पड़ती है। ऐसी दशामें भारतकी ऊनके लिये कोई दूसरा मार्ग खोज निकालनेमें ही भारत राष्ट्र एवं भारतीय व्यापारियोंका हित है। बाजारमें प्रतियोगितासे दूर रहने और अपना हित साधन कर लाभ उठानेके लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है कि भारत अपने घर खर्चके लिये आवश्यक कम्मल आदि मोटा माल स्वयं भारतमें तैयार करावे और साथ ही इसी प्रकारका सस्ता मोटा माल तैयार करा कर एशियाके अन्य देशोंमें व्यवहारके लिये भेजे। इसका परिणाम भी भारतके लिये अत्यन्त हितकर होगा।

रेशम.

संसारमें सबसे अधिक रेशम जापानमें उत्पन्न होता है। और सबसे अधिक रेशमका खर्च अमेरिकामें होता है अतः अमेरिका रेशमका सबसे बड़ा खरीददार है। रेशमकी उपजके सम्बन्धमें जहां जापानका स्थान प्रथम है वहां फ्रांस और इटलीका स्थान क्रमानुसार दूसरा और तीसरा है।

भारतीय रेशमके ४ प्रकार हैं जिनके नाम क्रमानुसार शहतूती, मूंगा, अंडी और टसर हैं। भारतका शहतूती रेशम उत्तम श्रेणीका रेशम माना जाता है अतः इसे संसारकी उत्तम श्रेणीकी रेशम से प्रतियोगिता करना पड़ती है। उत्तम श्रेणीका रेशम जापान, फ्रान्स, और इटलीमें उत्पन्न होता है अतएव इन्हीं तीन प्रधान देशोंसे भारतको अपनी उत्तम रेशमके लिये प्रतियोगिता करना पड़ती है। भारतमें इस प्रकारकी उत्तम शहतूती रेशम मैसूर राज्य और काश्मीरकी झेलम घाटीमें उत्पन्न होती है।

मूंगा रेशम—शहतूती रेशमकी भांति पालतू रेशमके कीड़ोंसे उत्पन्न होती है। इस प्रकारकी रेशम आसाम और बंगालमें पैदा होती है।

अरण्डी रेशम—उन अर्ध पालतू रेशमके कीड़ोंसे उत्पन्न होती है जो अरंडीके पत्ते खाते हैं। इस प्रकारकी रेशम भी आसाम और बंगालमें ही पैदा होती है।

टसर—यह रेशम जङ्गली कीड़ोंकी होती है और मध्य भारत तथा उड़ीसा प्रदेशमें मुख्यतया पायी जाती है। इसके प्रधान केन्द्र रायपुर, बिलासपुर, चांपा, भागलपुर आदि हैं।

इन चार प्रकारकी रेशमके अतिरिक्त एक पांचवा प्रकार भी है जिसे वेस्ट सिल्क कह कर पुकारा जाता है। इस प्रकारकी रेशम प्रायः उलझी हुई रेशम तथा फटी छूटी रेशमकी कुसियारीसे

तैयार की जाती है पर यह बड़े ही कामकी रेशम होती है। प्रथम ४ प्रकारकी रेशमके समान ही वेस्ट-सिल्कके लिये भी भारतको जापानसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतकी वेस्ट सिल्कमें कूड़ा अधिक रहता है और जापानके मालमें बिलकुल कूड़ा-कचड़ा नहीं रहता।

उपरोक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि भारतकी रेशमके ५ प्रकार होते हैं और सबके लिये उसे संसारके तीन प्रधान रेशम उत्पन्न करने वाले केन्द्रोंसे प्रतियोगिता करना पड़ती है। अब भारतके लिये रेशमकी कुसियारीका व्यापार भी ध्यानमें रखना आवश्यक है। रेशमकी कुसियारी भारतसे विदेश जाती है। इसके खरीदारोंमें प्रथम ब्रिटेन और दूसरा फ्रान्स माना जाता है। कुछ समयसे इटली भी कुसियारी खरीदने लगा है। वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए मानना पड़ेगा कि संसारमें कुसियारीका व्यापार उन्नति करेगा। दूसरे देश वाले अपनी सुविधाके अनुकूल कुसियारीसे रेशम निकाल कर गुच्छा मढ़ते हैं जिससे उन्हें बुननेमें सुविधा होती है। अतः इस व्यापारका भविष्य उज्वल है।

भारतीय रेशमके लिये प्रधान विदेशी बाजार

रेशम—(सभी प्रकारका) ब्रिटेन, फ्रांस और इटली (क्रमानुसार)
वेस्ट सिल्क (चसम) – ब्रिटेन, फ्रान्स और इटली (")
कुसियारी— ब्रिटेन, फ्रान्स और इटली (")

५ तेलहन माल

तेलहन माल किसी एक प्रकारके पदार्थ विशेषका नाम नहीं है। इसके अन्तर्गत ७ प्रकारके तेल देनेवाले पदार्थोंका समावेश माना जाता है। जिनके नाम क्रमशः अलसी, लाही, सरसों, तिल, बिनौले, अरंडी, मूंगफली और नारियलकी गरी हैं। इनका अलग अलग आवश्यक विवरण इस प्रकार है।

१ अलसी—भारतमें अलसी इतनी अधिक उत्पन्न होती है कि भारतके घर खर्चको छोड़ करके भी बहुत अधिक परिमाणमें बच रहती है जो विदेशके बाजारमें बेची जाती है। यही कारण है कि भारतसे बहुत बड़ा अलसीका निर्यात् विदेशको किया जाता है। यह निर्यात् कुछ नवीन नहीं है बल्कि १९ वीं शताब्दीके आरम्भमें ही इसके निर्यात्का सूत्रपात होता है। सन् १८३२ ई० में केवल ८ हंडर वेट अलसी विदेश भेजी गयी थी पर सन १८८०ई०में ५० लाख हंडरवेट पर अलसीका निर्यात् पहुंच गया। और सन १९००ई० तक भारतने संसार भरमें अलसी बेचनेका एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। इसी बीच अर्जेन्टाइना रिपब्लिकमें अलसीकी खेती आरम्भ की गयी और वहां उसे अच्छी सफलता मिली। आज तो अर्जेन्टाइना रिपब्लिकका स्थान सबसे प्रथम माना जाता है और इसके बाद

भारतका स्थान है। तीसरा स्थान [illegible] है और फिर क्रमानुसार रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका
का स्थान माना जाता है। रूस और संयुक्त राज्य अमेरिकामें इतनी ही अलसी उत्पन्न होती है कि
वहां घर खर्चके लिये यह पर्याप्त हो जाती है। ऐसी दशामें अलसीके लिये संसारके बाजारमें
भारतको अर्जेन्टाइना रिपब्लिक और कनाडाकी अलसीसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

अलसीकी मांग बाजारमें खूब रहती है। अलसीका तेल पेन्ट, वार्निश, आइल पेन्ट, छापेकी
स्याही आदि बनानेके काममें आता है। ठंढक पहुंचा कर ठंडी पद्धतिसे निकाले गये अलसीके तेलको
[illegible] तेलके स्थानपर काममें लाते हैं। अलसीसे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुई खली जानवरोंके
खानेके काममें आती है।

भारत अलसी बेचता है और अलसीका तेल खरीदता है। अलसीका तेल बाहरसे मंगाना
भारतके लिये हानिकर है अतः भारतमें ही अलसीका तेल निकलवाया जाय और घर खर्चके लिये
व्यवहार किया जाय तो इससे भारत विदेशियोंका शिकार बननेसे बच जायगा और भारतका उद्योग
धन्धा उन्नतिकी ओर अग्रसर होगा। तेल सस्ता पड़ेगा और खली मुफ्तमें बच जायगी।

भारत अपनी अलसी ब्रूटेन, फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी और इटलीके बाजारमें बेचता है।

सरसों और लाही—भारतके घर खर्चके लिये ही बोई जाती है। इसका तेल मुख्य-
तया जलानेके काममें आता है पर मिट्टीके तेलके बढ़ते हुए व्यवहारके कारण जलानेके काममें इस तेलका
व्यवहार कम हो चला है। इसकी खली खादके काममें आती है।

सरसों और लाही सबसे अधिक पंजाबमें पैदा होती है और इससे कुछ कम परिमाणमें यह
संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होती है। पंजाबका माल करांची बंदरसे विदेश जाता है और संयुक्त प्रान्तकी
सरसों बम्बई तथा कलकत्तेसे बाहर जाता है।

भारतको सरसों और लाहीके लिये विदेशी बाजारोंमें रूससे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।
भारतकी सरसों बेलजियम, जर्मनी और फ्रान्सके बाजारमें बिकता है। ब्रूटेन प्रायः योरोपके अन्य
देशोंको सरसोंका तेल और खली भेजता है और जापान सरसों तथा लाहीके स्थानमें सोवा-
बीन बाहरके बाजारोंमें बेचता है। यही कारण है कि सोयाके बीज और भारतीय सरसोंसे भी
कभी पारस्परिक मुठभेड़ हो जाती है और योरोपके तेल पेरनेवाले इससे लाभ उठा लेते हैं। अब
भारतको चाहिये कि वह सरसों और लाहीका तेल भारतमें ही तेल की मिलों द्वारा निकला कर
खली बनावे और सरसोंका तेल और खली ब्रूटेनके बाजारमें बेचें। इससे उसे अधिक लाभ होगा।

तिल—भारतमें तिलका उपयोग बहुत पुराना है इसीसे संस्कृत शब्द तेलकी रचना हुई
है। तिल दो प्रकारका होता है जिसमें एकको काला तिल और दूसरेको सफेद तिल कहते हैं। काला

तिल श्रेष्ठ होता है। इसका तेल उत्तम और गुणकारी होता है। इन तिलोंमें तेल भी अधिक निकलता है और औषधिके काममें भी यही तेल आता है। सफेद तिल और उसका तेल खाने और मिठाइयोंके काममें आता है इन दोनों ही प्रकारके तिलोंका तेल सुगन्धित तेल बनानेके काममें आता है। सरसोंकी फसल नष्ट हो जानेपर तिलकी मांग बढ़ जाती है। यह खानेके काममें भी आता है अतः भारतकी निम्न-श्रेणीकी जनतामें इसका बहुत प्रचार है। यही कारण है कि मारिशस, सीलोन, जावा, प्रभृति देशोंमें बसे हुए भारतीय श्रमजीवियोंमें इसकी माग सदैव बनी रहती है। इसकी खली खादके काममें आती है

तिलकी माग प्रधान रूपसे फ्रांस, बेलजियम, अस्ट्रिया हंगरी, जर्मनी, और इटलीके बाजारमें खूब जोरकी रहती है। इन देशोंमें जैतूनके तेलके स्थानमें तिलके तेलसे साबुन बनाया जाता है। फ्रान्सके आइल मिलवाले तिल न खरीद कर सस्ती मूंगफली खरीदते हैं और मूंगफलीका तेल पेरकर तिलके तेलके स्थानमें उसे काममें लाते हैं। सस्ती होनेसे मूंगफली और नारियलकी गरी भी यहांके तिलसे विदेशके बाजारमें प्रतियोगिता करती हैं। चीनसे भी तिल विदेशके बाजारोंमें आने लगा है।

भारतसे बाहर जाने वाले तिलके लिये बेलजियम, फ्रान्स, जोगोस्लाविया और इटलीके बाजार हैं, जहां इसकी यथेष्ट मांग रहती है।

मूंगफली—भारतमें सबसे अधिक मूंगफलीकी उपज मद्रास और बम्बई प्रदेशमें होती है। मद्रास प्रदेशकी मूंगफली पाण्डेचेरी द्वारा विदेश भेजी जाती है खासकर फ्रान्सके कारखानोंके लिये तो इसी बंदरसे रवाना होती है। मद्रास प्रदेशसे मूंगफली कलकत्ता और रंगून भी जाती है जहांके आइल मिलोंमें इसका तेल निकाला जाता है। भारतके विभिन्न भागोंमें मूंगफलीकी समान रूपसे मांग रहती है। इसका तेल सरसों और तिलके तेलमें मिलानेके काममें आता है। इसकी खली जानवरोंको खिलाई जाती है पर सूखी खली गन्ने, गोभी आदिके खेतोंमें खाद देनेके काममें आती है।

संसारमें मूंगफली और उसके तेलके बाजार मुख्यतया फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी, इटली और अस्ट्रिया हंगेरी हैं।

पश्चिम अफ्रीकाके सेनेगाल प्रदेशकी मूंगफलीमें अधिक तेल निकलता है अतः उसकी माग फ्रान्समें अधिक है। मार्सेलीज और बोर्डोकी तेलकी मिलें इसे चावसे खरीदती हैं। प्रथम तो जैतूनके तेलके स्थानमें तिलका तेल व्यवहार किया जाता था पर सस्ते मालकी खोजने तिलके तेलमें मूंगफलीका तेल मिलानेकी सूझ पैदा कर दी इसका फल यह हुआ कि अब बिलकुल मूंगफलीका तेल ही काममें लाया जाने लगा है। मूंगफलीके तेलसे साबुन तैयार किया जाता है। साफ किया हुआ तेल जैतूनके तेलमें

तिल श्रेष्ठ होता है। इसका तेल उत्तम और गुणकारी होता है। इन तिलोंमें तेल भी अधिक निकलता है और औषधिके काममें भी यही तेल आता है। सफेद तिल और उसका तेल खाने और मिठाइयोंके काममें आता है इन दोनों ही प्रकारके तिलोंका तेल सुगन्धित तेल बनानेके काममें आता है। सरसोंकी फसल नष्ट हो जानेपर तिलकी मांग बढ़ जाती है। यह खानेके काममें भी आता है अतः भारतकी निम्न-श्रेणीकी जनतामें इसका बहुत प्रचार है। यही कारण है कि मारिशस, सीलोन, जावा, प्रभृति देशोंमें बसे हुए भारतीय श्रमजीवियोंमें इसकी मांग सदैव बनी रहती है। इसकी खली खादके काममें आती है

तिलकी माग प्रधान रूपसे फ्रांस, बैलजियम, अस्ट्रिया हंगरी, जर्मनी, और इटलीके बाजारमें खूब जोरकी रहती है। इन देशोंमें जैतूनके तेलके स्थानमें तिलके तेलसे साबुन बनाया जाता है। फ्रान्सके आइल मिलवाले तिल न खरीद कर सस्ती मूंगफली खरीदते हैं और मूंगफलीका तेल पेरकर तिलके तेलके स्थानमें उसे काममें लाते हैं। सस्ती होनेसे मूंगफली और नारियलकी गरी भी यहांके तिलसे विदेशके बाजारमें प्रतियोगिता करती हैं। चीनसे भी तिल विदेशके बाजारोंमें आने लगा है।

भारतसे बाहर जाने वाले तिलके लिये बैलजियम, फ्रान्स, जेगोस्लाविया और इटलीके बाजार हैं, जहां इसकी यथेष्ट माग रहती है।

मूंगफली—भारतमें सबसे अधिक मूंगफलीकी उपज मद्रास और बम्बई प्रदेशमें होती है। मद्रास प्रदेशकी मूंगफली पाण्डेचेरी द्वारा विदेश भेजी जाती है खासकर फ्रान्सके कारखानोंके लिये तो इसी बंदरसे रवाना होती है। मद्रास प्रदेशसे मूंगफली कलकत्ता और रंगून भी जाती है जहांके आइल मिलोंमें इसका तेल निकाला जाता है। भारतके विभिन्न भागोंमें मूंगफलीकी समान रूपसे मांग रहती है। इसका तेल सरसों और तिलके तेलमें मिलानेके काममें आता है। इसकी खली जानवरोंको खिलाई जाती है पर सूखी खली गन्ने, गोभी आदिके खेतोंमें खाद देनेके काममें आती है।

संसारमें मूंगफली और उसके तेलके बाजार मुख्यतया फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी, इटली और अस्ट्रिया हंगरी हैं।

पश्चिम अफ्रीकाके सेनेगाल प्रदेशकी मूंगफलीमें अधिक तेल निकलता है अतः उसकी मांग फ्रान्समें अधिक है। मार्सेलीज और बोर्डोकी तेलकी मिलें इसे चावसे खरीदती हैं। प्रथम तो जैतूनके तेलके स्थानमें तिलका तेल व्यवहार किया जाता था पर सस्ते मालकी खोजने तिलके तेलमें मूंगफलीका तेल मिलानेकी सूझ पैदा कर दी इसका फल यह हुआ कि अब बिलकुल मूंगफलीका तेल ही काममें लाया जाने लगा है। मूंगफलीके तेलसे साबुन तैयार किया जाता है। साफ किया हुआ तेल जैतूनके तेलमें

संसारमें तेल मिश्रित वानस्पतिक वस्तुओंकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि तेलहन मालकी मांग जोरोंसे बढ़ रही है और भारतमें तेलहनका निर्यात भी अधिक परिमाणमें होने लगा है। पर भारतके सम्मुख एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उपस्थित है कि वह तेलहन माल विदेश भेजे या स्वयं अपने स्वदेशी मिलोंमें तेलहन मालसे तेल और खली तैयार करके विदेशके बाजारोंमें एकाधिपत्य जमानेकी ओर पूर्णरूपसे प्रयत्नशील हो ? इस प्रश्नका ठीक उत्तर तो उसकी विवेक बुद्धिपर ही निर्भर है। पर हम तो यही कहेंगे कि स्वदेशकी मिलोंका उपयोग कर भारत अपने कच्चे तेलहन मालको तेल और खलीके रूपमें लाकर विदेशके बाजारपर अपना पूरा प्रभाव जमा अपने प्रतियोगियोंको मुंह तोड़ उत्तर दे।

खाल और चमड़ा

खाल शब्दसे भेंड़ और बकरीके चमड़ेका बोध होता है और चमड़ा शब्द गाय भैंस आदि अन्य पशुओंकी खालका सूचक माना जाता है।

इस व्यापारके प्रधान स्वरूप दो हैं। एक तो देशके विभिन्न प्रान्तोंके बीच होनेवाला पारस्परिक व्यापार और दूसरा देशसे संसारके अन्य देशोंके साथ होनेवाला अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है। भारतमें खाल और चमड़ेका प्रान्तीय व्यापार उतने ही महत्व का है जितना कि उसका यह विदेशी व्यापार माना जाता है। अतः भारतमें ही आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार खाल और चमड़ा कमानेका प्रयत्न होना चाहिये। इसके लिये खाल और चमड़ेकी उत्तमता पर सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिये। यदि भारतसे उत्तम प्रकारकी खाल और चमड़ा कमाकर विदेश भेजा जाय तो भारतको इस व्यवसायमें आशातीत सफलता मिल सकती है।

भारतसे विदेश जानेवाली खाल और चमड़ेका प्रधान खरीदार संयुक्त राज्य अमेरिका है। अतः अमेरिकाके बाजारमें ही भारतके इस मालकी सबसे अधिक मांग रहती है। इसके बाद फिर जर्मनी और फ्रांसके बाजार हैं जिनमें इस मालकी मांग होती है। पर जर्मनीने भारतसे खाल और चमड़ा कच्चे पदार्थके रूपमें मंगाना बंद कर दिया है क्योंकि भारत सरकारने इस पर संरक्षण कर बैठा दिया है अतः मंहगा माल जर्मनी खरीदनेके लिये तैयार नहीं है। यदि कमाया माल भेजा जाय तो वहां उसकी मांग बढ़ सकती है। अतः संयुक्त राज्य अमेरिकाके बाद ब्रिटेन और फ्रान्स ही भारतके इस मालके खरीदार माने जाते हैं।

चावल

साधारणतया भारतके सभी प्रान्तोंमें चावल उत्पन्न होता है पर विशेष रूपसे आसाम, बंगाल, लोअर बर्मा तथा मद्रास प्रान्तमें ही यह पैदा होता है। भारतसे विदेश जानेवाला बंगाली चावल

करनी पड़ती है। भारतके गेहूंमें गर्द और कूड़ा अधिक रहता है अतः यहांके गेहूंमें २ प्रतिशत कचरा काट लिया जाता है।

भारतसे बाहर जानेवाले गेहूंका ८० प्रतिशत भाग केवल ग्रेटब्रिटेन ही अपने खर्चके लिये खरीद लेता है। ग्रेटब्रिटेनको लगभग ६० लाख टन गेहूंकी प्रतिवर्ष आवश्यकता रहती है और भारतमें ६० लाख से ९० लाख टन तक गेहूंकी उपज होती है।

गेहूंके बाजारोंमें ग्रेटब्रिटेन, बेलजियम, फ्रान्स इटली और जर्मनी हैं। खरीदके परिमाणके अनुसार नाम क्रमसे ऊपर दिया गया है।

खान

भारतकी खानें संसारके बाजारमें अपना एकाधिपत्य जमा रक्खा है। पर स्वयं भारतमें [illegible] भाग [illegible] अंग्रेजोंकी मुट्ठीमें है। उन्होंने भारत सरकारसे अपने इस व्यापारके लिये [illegible] अन्त तक सभी सुविधायें प्राप्त कर रक्खी हैं। अतः इस व्यापारको भारतीयोंका व्यापार कहना या मानना उचित नहीं है।

भारतकी [illegible] खरीदारोंमें ग्रेटब्रिटेन, रूस, कनाडा, और आस्ट्रेलिया प्रधान हैं। भारतको [illegible] भी [illegible] प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

कपास

कपासका व्यापार भी भारतमें विदेशियोंके हाथमें है और भारत सरकारसे इस उद्योग [illegible] सभी प्रकारकी सुविधा मिली हुई है। भारतसे बाहर जानेवाली कपासको [illegible] मिलकी कपाससे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इसके प्रधान खरीदार ग्रेटब्रिटेन और फ्रान्स हैं। इन्हीं खरीदारोंसे जर्मनी, [illegible] और संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी आवश्यकतानुसार काफी खरीदते हैं।

जूटका बना माल

[illegible] जूटका [illegible] और कागज तक बनता है पर 'जूटके बने माल' के अन्तर्गत बोरे (थैले) और टाट (गनी क्लाथ) ही मुख्यतया माने जाते हैं।

(अ) बोरोंका सबसे बड़ा बाजार आस्ट्रेलिया है। सभी प्रकारके बोरोंकी मांग वहां सबसे अधिक रहती है। इसके बाद ग्रेटब्रिटेन, मिस्र, [illegible], मारिशस, नेटाल, संयुक्त राज्य अमेरिका, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], स्याम, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, और न्यूजीलैंडको क्रमानुसार बोरेके [illegible] करना चाहिये।

(ब) टाटके सबसे अधिक ग्राहक संयुक्त राज्य, अमेरिकामें हैं। इसके बाद अर्जेन्टाइना [illegible], ग्रेटब्रिटेन, कनाडा, और आस्ट्रेलियाको टाट खरीद करनी पड़ती है।

उपरोक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि कपड़ा और सूतके लिये भारतका बाजार ही पर्याप्त प्रधान क्षेत्र है। पर यहां भी संसारके सबसे जबरदस्त पूंजीपति बृटेनसे प्रतियोगिता उसकी है।

अफीम

अफीमके सम्बन्धको लेकर राष्ट्र संघकी देखरेखमें एक उप-समिति संगठितकी गयी थी और औषधिके लिये जितनी अफीमकी आवश्यकता समझी जाये उसीके अनुसार अफीमकी खेती करनेकी व्यवस्थाकी जाय और अधिक खेती पर कड़ा नियंत्रण रखा जाय आदिउपायोंसे अफीमके व्यवहारको रोकनेकी आयोजना करनेका काम उसे सौंपा गया था। पर इस काममें कमेटीको यथेच्छ सफलता नहीं मिल सकी। कारण कि राष्ट्रोंका पारस्परिक अविश्वास कोई मानवहितकर काम करने नहीं देता।

भारतमें अफीमकी पैदावार मुख्यतया पटना, बनारस, इन्दौर, ग्वालियर, भूपाल तथा मेवाड़में होती है। पटना और बनारसकी ओरके मालको बंगाली अफीम कहते हैं और शेपको मालवेकी अफीमके नामसे पुकारते हैं। सन् १९११ ई० से पटनाके पास अफीमकी खेती बन्द कर दी गयी है। और अब बंगाली अफीम कहलाने वाला माल बनारसहीमें होता है। इस पर सरकारी नियंत्रण उसी प्रकार चला आ रहा है जैसा कि मुसलमान शासकोंने आरम्भ किया था। अफीम तैयार करनेकी सरकारी फैक्ट्री गाजीपुरमें है। जहां तैयार माल बक्सोंमें बंद कर कलकत्ता भेजा जाता है और वहांके बाजारमें सरकार उसे नीलाम करती है। कलकत्तेसे ही यह अफीम विदेश भेजी जाती है।

मालवा अफीम प्रायः देशी राज्योंकी उपज है। भारत सरकारका यह नियंत्रण राज्योंके अन्दर नहीं है पर ज्यों ही यहांकी अफीमके बक्स बृटिश भारतमें प्रवेश करते हैं सरकार १४० रतल वजनी अफीमके बक्स पर ८० पौंडका कर वसूल करलेती है। यह अफीम बम्बई बंदरसे विदेश जाती है। भारतमें जितनी अफीमका खर्च है उससे कहीं अधिक अफीम भारतसे विदेश जाती है।

अफीमका प्रधान खरीदार चीन था पर सन् १९०६ में वहांकी सरकारने अफीमके विरुद्ध आवाज उठायी और १० वर्षके अन्दर उसे बिलकुल रोक देनेके लिये आयोजन तैयार किया। भारत सरकारने भी चीनकी सरकारके प्रति सहानुभूति दिखायी और फल यह हुआ कि सन् १९१३ ई० से चीनके साथ अफीमका व्यापार पूर्ण रूपसे बंद कर दिया गया जिससे मालवाकी अफीमके व्यापारका एक तरहसे अन्त हो गया। अब भारतकी अफीमका बाजार स्ट्रेट सेटलमेन्ट है यहींसे पूर्वीय देशोंको अफीम जाती है।

नील

भारतका नीलका व्यापार बहुत पुराना है पर १७ वीं शताब्दीमें योरोप वालोंने भारतसे नील

मंगाना बंद कर दिया और फल यह हुआ कि भारतसे नीलका बाहर जाना बंदसा हो गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने नीलके व्यवसायकी ओर ध्यान दिया और सन् १७८० ई० और १८०२ ई० के बीच नीलका व्यापार पुनः चमक उठा और इसके साथ ही नीलकी खेती और इसके व्यवसायका केन्द्र बंगालके स्थानमें बिहार बन गया। पर सन् १८९७ ई० में जर्मन वैज्ञानिकोंने रासायनिक उपायोंसे नीलका प्रतिद्वन्द्वी पदार्थ तैयार कर लिया और इस प्रकार भारतके नीलके व्यवसायको सदाके लिये हानिकारक धक्का पहुंचा। भारत सरकारके सारे प्रयत्न निष्फल हो गये थे पर योरोपीय महासमरने इस व्यवसायमें पुनः नवीन जीवनका संचार कर दिया और इसी लिये यह आज भी जीवित है। इसके बाजार पहले ब्रिटेन, आस्ट्रिया हंगरी, फ्रान्स, रूस, मिस्र, संयुक्त राज्य अमेरिका, टर्की, फारस और जापान थे।

लाख और चपड़ा

लाखका व्यापार भी भारतके पुराने व्यापारोंमें से है। इस व्यापारमें भी भारतका एकाधिपत्य है। इसके प्रतिद्वन्द्वी पदार्थके खोज निकालनेमें संसारके मस्तिष्कने कुछ उठा नहीं रक्खा पर लाखके बहुत गुणोंका एक पदार्थमें समावेश करना सम्भव नहीं हो सका। कलकत्ता और मिर्जापुरमें लाखके कितने ही कारखाने हैं जहां चपड़ा तैयार होता है। आसाम, बंगाल, और बर्माके जंगलोंमें इकट्ठी की गयी लाख कलकत्तेके कारखानोंमें गलाई जाती है और इससे चपड़ा बना कर कलकत्तेके ही बंदरसे विदेशको भेजते हैं। मध्य प्रदेश, बिहार उड़ीसा और यू० पी० की लाख मिर्जापुर और झालदाके कारखानोंमें गलाई जाती है और वहां उससे चपड़ा तैयार किया जाता है। संसारमें लाख और चपड़ेके प्रधान बाजार संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, और जर्मनी माने जाते हैं। इन बाजारोंमें इसकी बड़ी मांग रहती है। इससे बड़े कारखाने कांच पालिशके समान श्रेष्ठ वार्निश, ग्रामोफोन रेकर्ड, खिलौने, चूड़ी आदि विभिन्न सामान तैयार करते हैं। भारतको चाहिये कि वह अपने निर्यातपर पूरा ध्यान दे और अच्छेसे अच्छे ढंगसे उत्तम माल विदेशके प्रमुख बाजारोंमें भेजे।

भारत और संसारके अन्य देशोंके साथ उसका व्यापारिक सम्बन्ध

यों तो संसारके सभी देशोंसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध कुछ कुछ है पर इनमें केवल ८ ही ऐसे देश हैं कि जिनसे भारतका गहरा व्यापारिक सम्बन्ध है। ये ही संसारके वे प्रधान बाजार हैं जिनमें भारतके कच्चे मालकी यथेष्ट परिमाणमें बिक्री होती है और साथ ही इस कच्चे मालके मूल्यके

विनिमयमें उन देशोंके औद्योगिक केन्द्रोंमें तैयार किया गया माल भी ऐसे हो पर्याप्त परिमाणमें यहां आता है। इनके नाम क्रमशः वृटेन, जर्मनी, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रान्स, स्पेन, बेलजियम, इटली और अस्ट्रिया हंगरी अर्थात् वर्तमान जूगोस्लाविया आदि हैं। अतः इन्हीं प्रधान देशोंके सम्बन्धकी हम यहां चर्चा करेंगे।

भारत और वृटेन

व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे संसार भरमें केवल भारत ही एक ऐसा अनोखा बाजार है जिसमें एक महाजन समस्त बाजारपर अपना एकाधिपत्य जमाये बैठा है। वह पूंजीपति स्वयं वृटेन है जिस की हथेलीमें भारतके समस्त आयात व्यापारको 'बदर समान' ही मानना चाहिये। वृटेनके प्रभावशाली औद्योगिक केन्द्रोंके तैयार मालका भारत सबसे बड़ा बाजार है जहां वहांके कारखानोंका तैयार माल आकर बिकता है। भारत आज सर्वरूपेण परतंत्र है अतः वृटेन राजनैतिक अनुकूलताके कारण भारतके बाजारमें अन्य देशोंके मालकी अपेक्षा अधिक सुविधाके साथ अपने मालको बेचता है। यही एक सबसे अधिक दृढ़ कारण है कि वृटेन आज संसारमें इतना ऊंचा स्थान प्राप्त कर सका है। भारत कच्चे मालका घर है अतः यहांका कच्चामाल सस्तेपनसे कौड़ीके मोल वृटेनके कारखानोंमें पहुंचाया जाता है और वहांसे तैयार मालके रूपमें पुनः भारतके बाजारमें वही माल रुपयेके मोल बिकनेके लिये आता है। इस प्रकार राजनैतिक वर्चस्वके कारण भारतके कच्चे मालसे कौड़ीका रुपया बनाया जाता है।

राजनैतिक बागडोर हाथमें लिये हुए वृटेन भारतके बाजारमें सब प्रकारकी औद्योगिक एवं व्यापारिक सुविधायें काममें ला रहा है।

व्यापारिक सुविधाओंमें प्रथम श्रेणीकी मानी जानेवाली रेल सम्बन्धी सुविधापर उसका पूरा अधिकार है। भारतकी रेलवे कम्पनियोंका संचालन वृटिश मंत्रणाके अनुसार वृटिश पूंजीपति कर रहे हैं। ये कम्पनियां वृटेनके हित साधनमें निमग्न हो भारतमें कामकर रही हैं। भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहांसे बहुत बड़े परिमाणमें कच्चा माल बाहर भेजा जाता है। वृटेन जलयान संचालन उद्योगमें सबसे आगे माना जाता है अतः भारतका समस्त कच्चामाल इसीके जहाजोंपर दूसरे देशोंको भेजा जाता है। इस प्रकार रेलवे कम्पनियोंकी भांति ही वृटिश जहाजी कम्पनियां भी भारतकी जेबपर पल रही हैं। इतना ही नहीं भारतकी सभी प्रधान बैंकों और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंमें बहुत बड़ी वृटिश पूंजी लगी हुई है इसका परिणाम यह हुआ है कि भारतके आयात और निर्यात व्यापारपर वृटिश पूंजीका एकाधिपत्यसा जम गया है। वृटेनके बड़े बड़े पूंजीपतियोंने भारतमें बड़ी बड़ी पूंजी लगाकर प्रभावशाली फर्में खोल रक्खी हैं। और यहांका सारा व्यापार अपनी मुट्ठीमें कर रक्खा है।

ब्रूटेनसे भारतमें सूती, कपड़ा, सूत, शक्कर, लोहा, फौलाद, मशीनरी, औषधियां, रसायनिक द्रव्य, रेशम, रेशमी माल, तेल, हाईवेग, शराब, कागज, कागजके तख्ते, नमक, मोटर, साइकल, तथा रेलवेका सामान आदि कितनी ही प्रकारकी वस्तुएँ आती हैं।

भारतसे ब्रूटेन जानेवाले मालमें चावल, गेहूं, रुई, अलसी, बिनौला, अरण्डी, कमायी खाल, कमाया चमड़ा, जूट, जूटका माल, चाय, चपड़ा और अभ्रक आदि मुख्य हैं।

भारत और जर्मनी

योरोपीय महासमरके विभिन्न कारणोंमें जर्मनीकी व्यापारिक उन्नति भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। भारतके बाजारमें जर्मनीको जो व्यापारिक सफलता मिली वही उसके प्रति अन्य प्रभावशाली राष्ट्रोंको उकसाकर रणस्थलमें उतारनेके लिये प्रधान कारण बनी। महासमरके पूर्व जर्मन मालने भारतके बाजारमें ऐसा प्रभाव डाल रक्खा था कि सभी राष्ट्र अपना अपना माल लिये बाजारमें हाथपर हाथ रख बैठसे गये थे। विदेशी व्यापारकी दृष्टिसे भारतके बाजारमें राजनैतिक सुविधा-सम्पन्न ब्रूटेनके बाद जर्मनीका ही स्थान माना जाता था। ऐसी दशामें जर्मनीके इस बढ़े-चढ़े हुए व्यापारके प्रसारका प्रधान रहस्य जानना भी अवश्य ही शिक्षाप्रद है। अतः यहांपर हम इस पार्श्व विशेष पर प्रकाश डालना चाहते हैं।

भारतके व्यापारिक क्षेत्रमें जर्मनीने स्वयं ही प्रवेश किया और इस कार्यमें वहांकी राष्ट्रीय सरकारने बहुत बड़ी सहाय प्रदानकर उसके सत् साहसको प्रोत्साहित किया। जर्मनीने भारतके व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश करते ही उसके और भारतके विभिन्न बंदरोंके बीच नियमित रूपसे चलने वाली जलयान कम्पनियोंका सुदृढ़ संगठन किया और इस प्रकार जर्मन जहाजी कम्पनियोंकी शाखायें भारतके औद्योगिक केन्द्रोंसे सम्बन्ध रखनेवाले समुद्रतटवर्ती बन्दरोंमें स्थापित हुईं। इसके बाद ही जर्मन बैंकों (Deuts-che Asiatischo) की स्थापना भी उसने भारतमें की और इस प्रकार प्रारम्भिक प्रबन्ध कर उसने बम्बई कलकत्तेके समान भारतके प्रधान केन्द्रोंमें अपनी कम्पनियां खोलीं। इन कम्पनियोंका काम जर्मन कारखानोंके तैयार मालको बेचना और उनके लिये भारतका कचा माल खरीदना मुख्य रूपसे रहा। इस प्रकारका व्यापारिक संगठन कर जर्मनीने भारतके बाजारपर अधिकार जमाया और अपने सभी प्रतियोगियोंको उन्नतिके विस्तृत मैदानमें बहुत पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया।

भारतकी उपजमेंसे नीचे लिखे हुए पदार्थ जर्मनी जाते हैं -

जूट, रुई, चावल, कमाया चमड़ा, तेलहन माल, जैसे तीसी, सरसों, लाही, नारियलकी गरी आदि। युद्धके पूर्व कचा चमड़ा भारतसे जर्मनी अधिक परिमाणमें भेजा जाता था पर अब बिल्कुल

बन्द है। इसका कारण प्रथम तो यह है कि भारतमें चमड़ा कमानेके अच्छे कारखाने खुल गये हैं अतः चमड़ा यहीं कमाया जाता है और दूसरा कारण यह है कि कच्चे चमड़ेपर एक प्रकारका निर्यातकर भारत सरकारने लगा रखा है। बृटिश साम्राज्यसे बाहर होनेके कारण जर्मनी कर लगे हुए चमड़ेको खरीदनेमें आगे नहीं आना चाहता है। जर्मनीसे भारत आनेवाले मालमेंसे कितना ही ऐसा माल है जो भारतके बाजारमें अपने प्रतियोगियोंको आश्चर्य चकित कर देता है। इनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं। कटलरी, जैसे कैंची उस्तरे चाकू, काचका सामान, मिट्टीके वर्त्तन, वैज्ञानिक तथा डाक्टरी औजार, रासायनिक पदार्थ, रंग आदि।

जर्मनीके मालकी विशेषताओंमें उसका सुडौलपन, दीर्घकालीन टिकाऊपन और उसपर भी उसका सस्तापन आदि प्रधान हैं। इन्हीं गुण विशेषके कारण जर्मनीका माल भारतमें लोकप्रिय हो गया है। यह तो हुआ भारत और जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध पर इसी प्रसंगमें हम जर्मनीकी अन्य बातोंको भी दे रहे हैं क्योंकि उनका सम्बन्ध भारतके व्यापारसे बहुत निकटतम है।

जर्मनीकी उपज

गेहूं, ओट, राई और जौ प्रायः सभी भागोंमें उत्पन्न होते हैं। जर्मनीके पूर्वीय भागमें आलू बहुत अधिक उत्पन्न होता है। यह खानेके उपयोगमें तो आता ही है पर उससे कितनी ही अन्य वस्तुयें भी यहांके कारखाने तैयार करते हैं और साथ ही यह शराब चुआनेके काममें भी आता है। राइनकी घाटी शराबके लिये प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त जर्मनीमें हेम्प नामक सनकी जातिका एक पौधा होता है। तम्बाकूकी खेती भी यहां खूब होती है। जर्मनीके खनिज पदार्थोंमें कोयला, लोहा, जस्ता, तांबा, सीसा, चांदी, आदि प्रधान हैं। फिर भी यहां चांदी, सीसा और जस्ता योरोपके अन्य देशोंको अपेक्षा अधिक परिमाणमें निकाला जाता है। सीसा और जस्ता जर्मनीके सालेशिया प्रान्तमें, तांबा मान्स फील्डमें, तथा चांदी सेक्सनीमें निकलती है। जर्मनीमें बहुत बड़े जंगल हैं जिनमें उत्तम प्रकारकी लकड़ी निकलती है। यहांकी सरकार इनकी यत्नपूर्वक रक्षा करती है।

जर्मनीके उद्योग धन्धे

यहांका उद्योग धन्धा उच्च श्रेणीका है। यहां सूती, ऊनी और रेशमी कपड़ा तैयार होता है। लोहा और फौलादका सामान बनाया जाता है। कांच और चीनी मिट्टीके बर्तन तथा दूसरे सामान बहुत अच्छे बनते हैं। यहां शक्कर और शराब भी बहुत बड़े परिमाणमें तैयार की जाती है। लोहा और फौलादका सामान पूर्वीय प्रशियामें, और मुख्यतया एसेन (Essen) नगरमें बनता है। कपड़ेके बड़े बड़े मिल बर्मन, और इलबर्फील्ड (Barmen & Eber feld) में हैं। पर मुख्यता रेशमी और ऊनी माल तैयार करनेकी मिलें बर्मन (Bermen) में हैं। रेशम और मखमल क्रेफेल्ड (Krefeld)

नामक स्थानका बहुत प्रसिद्ध है। जर्मनीमें रूईका सबसे बड़ा और प्रसिद्ध बाजार ब्रेमेन (Bremen) माना जाता है। वहांपर आज भी हाथके करघों पर कपड़ा बहुत अधिक बुना जाता है। जर्मनीके ब्लेक फौरेस्ट नामक स्थानमें घड़ियां, मेईसेन (Meissen) में चीनीके बर्तन, और बर्लिनमें खिलौने बाजे बहुत उत्तम बनते हैं।

जर्मनीके प्रधान बंदर हैम्बर्ग और ब्रेमेन (Bremen) हैं। इन बंदरोंसे जर्मनीके कारखानोंका तैयार माल विदेश जाता है और अन्य देशोंका माल इन्हीं बंदरोंपर आकर उतरता है। जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध भारतके अतिरिक्त दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, पूर्वीय एशिया, तथा प्रशान्त महासागर स्थित द्वीप समूहसे भी है।

जर्मनीकी व्यापारिक नीति

जर्मनीके औद्योगिक उत्कर्षको वहांके खनिज वैभव, रेलवे लाइनों, जहाजों और बीमा कम्पनियों तथा बैंकों आदि राष्ट्रीय संस्थाओंसे तो सहाय मिली ही है पर सबसे अधिक प्रोत्साहन वहांकी राष्ट्रीय सरकारने अपनी अनुकरणीय नीतिसे दिया है। जर्मनीमें औद्योगिक शिक्षाका प्रबन्ध यथेष्ट है जिसके कारण रासायनिक सिद्धान्तोंका औद्योगिक क्षेत्रमें व्यवहारिक प्रयोग किया जा सकता है। फलतः जर्मनीकी व्यापारिक नीति प्रोत्साहन और संरक्षणकी प्रतिमूर्तिसी बन गयी है जिसे वहांकी सरकार वात्सल्य जनित स्नेह भावसे चला रही है। ऐसी दशामें भारत यदि जर्मनीसे संबन्धिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित न कर सका और पारस्परिक लाभका उपभोग न कर सका तो वास्तवमें यह भारतकी बहुत बड़ी भूल मानी जायेगी।

जर्मनीके प्रधान औद्योगिक नगर

बर्लिन,—यहां छपाईका काम बहुत अच्छा होता है। इसके सिवा यहां इञ्जिन, रेलवेका सभी प्रकारका सामान, सीनेकी मशीनें, पीतलके बर्तन और रासायनिक द्रव्य भी बनते हैं।

हैम्बर्ग—यह जर्मनीका संसार प्रसिद्ध बंदर है। इसी बंदरपर ब्रूटेनसे लोहा, कोयला, ब्रेजिलसे काफी, चिलीसे कच्चे खनिज रासायनिक पदार्थ; पेरुसे अनाज, और संयुक्त राज्य अमेरिकासे पेट्रोल, आदि लाकर उतारे जाते हैं जो यहांसे जर्मनीके सभी स्थानोंको भेजे जाते हैं। इसी बंदरसे जर्मनीके कलकारखानोंमें तैयार होनेवाला सभी प्रकारका सामान विदेश भेजा जाता है। यहां धातुके बर्तन और चमड़ेका सामान तैयार करनेके बड़े २ कारखाने हैं।

म्यूनिच—यह भी जर्मनीका प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र है। यहां सभी प्रकारकी रंग साजी और मुख्यतया कांचपर बहुत अच्छा काम होता है। ढलाईका काम, लकड़ीकी खराद और नक्काशीका काम भी यहां उत्तम बनता है। बवेरियाकी प्रसिद्ध शराबका यही प्रधान केन्द्र है।

बन्द है। इसका कारण प्रथम तो यह है कि भारतमें चमड़ा कमानेके अच्छे कारखाने खुल गये हैं अतः चमड़ा यहीं कमाया जाता है और दूसरा कारण यह है कि कच्चे चमड़ेपर एक प्रकारका नियात कर भारत सरकारने लगा रखा है। वृटिश साम्राज्यसे बाहर होनेके कारण जर्मनी कर लगे हुए चमड़ेको खरीदनेमें आगे नहीं आना चाहता है। जर्मनीसे भारत आनेवाले मालमेंसे कितना ही ऐसा माल है जो भारतके बाजारमें अपने प्रतियोगियोंको आश्चर्य चकित कर देता है। इनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं। कटलरी, जैसे कैंची उस्तरे चाकू, कांचका सामान, मिट्टीके वर्त्तन, वैज्ञानिक तथा डाक्टरी औजार, रासायनिक पदार्थ, रंग आदि।

जर्मनीके मालकी विशेषताओंमें उसका सुडौलपन, दीर्घकालीन टिकाऊपन और उसपर भी उसका सस्तापन आदि प्रधान हैं। इन्हीं गुण विशेषके कारण जर्मनीका माल भारतमें लोकप्रिय हो गया है। यह तो हुआ भारत और जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध पर इसी प्रसंगमें हम जर्मनीकी अन्य बातोंको भी दे रहे हैं क्योंकि उनका सम्बन्ध भारतके व्यापारसे बहुत निकटतम है।

जर्मनीकी उपज

गेहूं, ओट, राई और जौ प्रायः सभी भागोंमें उत्पन्न होते हैं। जर्मनीके पूर्वीय भागमें आलू बहुत अधिक उत्पन्न होता है। यह खानेके उपयोगमें तो आता ही है पर उससे कितनी ही अन्य वस्तुयें भी वहांके कारखाने तैयार करते हैं और साथ ही यह शराब चुआनेके काममें भी आता है। राइनकी घाटी शराबके लिये प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त जर्मनीमें हेम्प नामक सनकी जातिका एक पौधा होता है। तम्बाकूकी खेती भी यहां खूब होती है। जर्मनीके खनिज पदार्थोंमें कोयला, लोहा, जस्ता, तांबा, सीसा, चांदी, आदि प्रधान हैं। फिर भी यहां चांदी, सीसा और जस्ता योरोपके अन्य देशोंकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें निकाला जाता है। सीसा और जस्ता जर्मनीके साइलेशिया प्रान्तमें, तांबा मान्स फील्डमें, तथा चांदी सेक्सनीमें निकलती है। जर्मनीमें बहुत बड़े जंगल है जिनमें उत्तम प्रकारकी लकड़ी निकलती हैं। वहांकी सरकार इनकी यत्नपूर्वक रक्षा करती है।

जर्मनीके उद्योग धन्धे

यहांका उद्योग धन्धा उच्च श्रेणीका है। यहां सूती, ऊनी और रेशमी कपड़ा तैयार होता है। लोहा और फौलादका सामान बनाया जाता है। कांच और चीनी मिट्टीके बर्तन तथा दूसरे सामान बहुत अच्छे बनते हैं। यहां शक्कर और शराब भी बहुत बड़े परिमाणमें तैयार की जाती है। लोहा और फौलादका सामान पूर्वीय प्रशियामें, और मुख्यतया एसेन (Essen) नगरमें बनता है। कपड़ेके बड़े बड़े मिल बर्लिन, और इवरफेल्ड (Barmen & Eberfeld) में हैं। पर मुख्यता रेशमी और ऊनी माल तैयार करनेकी मिलें बर्मन (Bermen) में हैं। रेशम और मखमल क्रेफेल्ड (Krefeld)

नामक स्थानका बहुत प्रसिद्ध है। जर्मनीमें रूईका सबसे बड़ा और प्रसिद्ध बाजार ब्रेमेन (Bremen) माना जाता है। यहांपर आज भी हाथके करघों पर कपड़ा बहुत अधिक बुना जाता है। जर्मनीके ब्लेक फौरेस्ट नामक स्थानमें घड़ियां, मेसेन (Meissen) में चीनीके बर्तन, और बर्लिनमें खिलौने बाजे बहुत उत्तम बनते हैं।

जर्मनीके प्रधान बंदर हेम्बर्ग और ब्रेमेन (Bremen) हैं। इन बंदरोंसे जर्मनीके कारखानोंका तैयार माल विदेश जाता है और अन्य देशोंका माल इन्हीं बंदरोंपर आकर उतरता है। जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध भारतके अतिरिक्त दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, पूर्वीय एशिया, तथा प्रशान्त महासागर स्थित द्वीप समूहसे भी है।

जर्मनीकी व्यापारिक नीति

जर्मनीके औद्योगिक उत्कर्षको वहांके खनिज वैभव, रेलवे लाइनों, जहाजी और बीमा कम्पनियों तथा बैंकों आदि राष्ट्रीय संस्थाओंसे तो सहाय मिली ही है पर सबसे अधिक प्रोत्साहन वहांकी राष्ट्रीय सरकारने अपनी अनुकरणीय नीतिसे दिया है। जर्मनीमें औद्योगिक शिक्षाका प्रबन्ध यथेष्ट है जिसके कारण रासायनिक सिद्धान्तोंका औद्योगिक क्षेत्रमें व्यवहारिक प्रयोग किया जा सकता है। फलतः जर्मनीकी व्यापारिक नीति प्रोत्साहन और संरक्षणकी प्रतिमूर्ति सी बन गयी है जिसे वहांकी सरकार वात्सल्य जनित स्नेह भावसे चला रही है। ऐसी दशामें भारत यदि जर्मनीसे संघस्लिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित न कर सका और पारस्परिक लाभका उपभोग न कर सका तो वास्तवमें यह भारतकी बहुत बड़ी भूल मानी जावेगी ।

जर्मनीके प्रधान औद्योगिक नगर

बर्लिन,—यहां छपाईका काम बहुत अच्छा होता है। इसके सिवा यहां इञ्जिन, रेलवेका सभी प्रकारका सामान, सीनेकी मशीनें, पीतलके बर्तन और रासायनिक द्रव्य भी बनते हैं।

हैम्बर्ग—यह जर्मनीका संसार प्रसिद्ध बंदर है। इसी बंदरपर यूरोपसे लोहा, कोयला, ब्रेजिलसे काफी, चिलीसे कच्चे खनिज रासायनिक पदार्थ; पेरूसे अनाज, और संयुक्त राज्य अमेरिकासे पेट्रोल, आदि लाकर उतारे जाते हैं जो यहींसे जर्मनीके सभी स्थानोंको भेजे जाते हैं। इसी बंदरसे जर्मनीके कलकारखानोंमें तैयार होनेवाला सभी प्रकारका सामान विदेश भेजा जाता है। यहां धातुके बर्तन और चमड़ेका सामान तैयार करनेके बड़े २ कारखाने हैं।

म्यूनिच—यह भी जर्मनीका प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र है। यहां सभी प्रकारकी रंग साजी और मुख्यतया कांचपर बहुत अच्छा काम होता है। ढलाईका काम, लकड़ीकी खराद और नकाशीका काम भी यहां उत्तम बनता है। बवेरियाकी प्रसिद्ध शराबका यही प्रधान केन्द्र है।

लिपजिक—यहां प्रतिवर्ष संसार प्रसिद्ध तीन औद्योगिक मेले लगते हैं। जहां संसारके सभी महत्वपूर्ण केन्द्रोंके व्यापारी और कलाकौशल प्रवीण लोग हजारोंकी संख्यामें आ आकर भाग लेते हैं। यहां किताबोंका काम बहुत बड़ा व्यापार होता है। प्रेस सम्बन्धी सभी प्रकारका माल तैयार होता है। बाजे और वैज्ञानिक समान बहुत बड़े परिमाणमें तैयार होता है।

भारत और जापान

इन दोनों देशोंके बीच व्यापारिक मेल-जोल १९ वीं शताब्दीके अन्तिम कालसे बढ़ना आरम्भ हुआ था। पर रूस जापान युद्धके बादसे विजयी जापानने भारतसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेकी ओर विशेष ध्यान दिया और जर्मनीकी व्यापारिक नीतिका अनुकरण कर भारत और जापानके बीच राष्ट्रीय सरकारकी सराहनीय सहायसे जापानी जहाजी सर्विस स्थापित की। इसप्रकार दोनों देशोंके बन्दरोंका नियमित रूपसे सम्बन्ध जोड़, जापानने व्यापारिक संगठनकी ओर अपना [illegible] । फलतः थोड़े ही समयमें भारतके प्रधान व्यवसायी केन्द्रों और बंदरोंमें जापानने अपने बैंक, बीमा कम्पनियां और बड़ी बड़ी फर्में खोल दीं। इन जापानी फर्मोंकी शाखायें देशके विभिन्न नगरोंमें फैल गयीं। जापानने अपनी भारतवाली फर्मों द्वारा जापानके कारखानोंका तैयार [illegible] आरम्भ किया और अपने कारखानोंके लिये आवश्यक कच्चा माल खरीदनेका काम भी [illegible] । फलतः जापानने भारतमें अपना व्यापार सुदृढ़ जमा लिया और शान्तिके साथ [illegible] । कि इसी बीच योरोपीय महासमर छिड़ गया और अनायासही जापानको [illegible] गया। जापानकी राष्ट्रीय सरकारने वात्सल्य भावसे जापानको व्यवसायिक प्रोत्साहन [illegible] अवसरकी जापानी बैंकोंने जापानके राष्ट्र हितको सम्मुख रख कर ही जापानी [illegible] सहायता दी। भारतस्थित जापानी फर्मोंने भी पूरी सहायता पहुंचायी।

[illegible] भारतमें जापानका स्थान कच्चा माल खरीदनेवालोंमें बहुत बड़ा है। पर तैयार [illegible] स्थान नहीं है जो बृटेन, जर्मनीका माना जाता है। जापान भारतसे [illegible] बहुत बड़े परिमाणमें खरीदता है और इसके विनिमय स्वरूप रेशम, रेशमी माल, [illegible], खिलौने, [illegible], कागज, और कपूर तथा कांचका सामान भारत भेजता है।

[illegible]

[illegible] पूर्वीय किनारेकी ओर समुद्रमें फैला हुआ है। सन् [illegible] देश भी इसी साम्राज्यान्तर्गत माना जाता है। [illegible] माना जाता है और [illegible] बहुत ही

जापान अपने देशमें और चीनके अधिकांश भूभागमें कल-कारखाने बढ़ाता जा रहा है। परिणाम यह हुआ है कि चीनकी वर्तमान मिलोंमें ½ मिलें जापानकी हो गयी हैं। जापान अपने औद्योगिक विकासको ही अपना एकमात्र लक्ष माने हुए है अतः वह उद्योग धन्धोंके उत्कर्षकी ओर पूरी शक्तिसे काम कर रहा है। वहांकी बड़ी बड़ी फर्में भारत और चीनमें कच्चे मालकी पारस्परिक खरीद बिक्रीमें लगी हुई हैं।

जापानका दूसरे देशोंसे व्यापार

जापानका प्रधानतया व्यापार संयुक्तराज्य अमेरिका, चीन, ग्रेट ब्रूटेन, भारत और फ्रांससे है। वह उपरोक्त देशोंको रेशम, रेशमी माल, सूती कपड़ा, तांबा, चाय, चटाई, कपूर, चीनी मिट्टीके बर्तन आदि भेजता है और दूसरे देशोंसे रुई, कपड़ा, लोहा, फौलाद, चावल, खली, ऊन, ऊनी कपड़े शक्कर, पेट्रोलियम आदि मंगाता है। अमेरिका सबसे अधिक माल जापानसे ही खरीदता है और साथ ही अपने यहांका सबसे अधिक माल भी जापानको ही बेचता है। ब्रूटेन जापानसे रेशमी माल मंगाता है और उसके विनिमयमें मशीनरी वहां भेजता है। भारतसे रुई जापान बहुत अधिक जाती है पर उसका कपड़ा तैयार होकर बहुत कम परिमाणमें भारत आता है। पर सूत कातकर जापान चीनके बाजारमें भारतके सूतसे प्रतियोगिता करता है।

भारत और संयुक्तराज्य अमेरिका

संयुक्तराज्य अमेरिकाने जर्मनी या जापानकी भांति भारतसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेका प्रयत्न योरोपीय महासमरके पूर्व कभी नहीं किया था। उसका उद्देश्य कभी भी भारतमें व्यापारिक अड्डा जमानेका नहीं था। अतः भारत और अमेरिकाके बीच व्यापारिक सम्बन्ध स्थापनमें व्यापारिक प्रतियोगिताको लक्ष्यमें लाकर उसने अपना हाथ कभी नहीं डाला। फिर भी उसका व्यापारिक सम्बन्ध भारतसे अधिक गहरा होता जारहा है और यदि वर्तमान प्रगति अधिक समय तक स्थायी रही तो सम्भव है कि आगे चल कर अमेरिकाकी व्यापारिक प्रतियोगिता दूसरे देशोंको आंखका कांटा बन जाय और संसारमें नवीन समरकी भेरी बज उठे। भारतीय बाजार संसारके सभी औद्योगिक राष्ट्रोंको लालायित कर रहा है अतः अपने अपने स्वार्थ साधनमें सभी रत देखे जाते हैं।

योरोपीय महासमरके पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिकाका व्यापारिक सम्बन्ध सीधा भारतसे न था अतः भारतके आयात निर्यात सम्बन्धी सभी प्रकारके व्यापारका प्रधान क्षेत्र उसके लिये लन्दनका बाजार ही था। लन्दनके बाजारमें ही अमेरिका अपना व्यापार भारतसे करता था। पर योरोपीय महासमरके अनुभवने अमेरिकाकी नीतिमें भारी परिवर्तन कर दिया और युद्धके बाद ही अमेरिकाने अपना रुख फेर लिया फलतः भारतके साथ सीधा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये उसने आव-

स्वक व्यापार संगठन करना आरम्भ कर दिया तो भी उसका एक मात्र उद्देश्य अमेरिकन कारखानोंके मालकी खपतके सम्बन्धमें भारतीय बाजारका अध्ययन करना था। अमेरिकन कारखानोंके बने मालकी खपत भारतमें कैसे की जाय यह बात भी जाननेके लिये वह प्रयत्नशील है पर भारतके कच्चे मालको अमेरिकन कारखानोंके लिये खरीदनेका उसने कभी भी विचार नहीं किया।

संयुक्त राज्य अमेरिकाकी उपज

यहांकी प्रधान उपज रुई है तथा दूसरा स्थान मकाका है और इसके बाद तम्बाकू और आलूका नम्बर आता है। यहांके पालतू जानवरोंमें भेड़ और सुअर प्रधान हैं। इनके ऊन और मांसका व्यापार अमेरिका करता है। यहांके खनिज पदार्थोंमें लोहा, ताम्बा, सोना, चांदी और मिट्टीका तेल प्रधान हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके उद्योग धन्धे।

यहां इ औद्योगिक विकासको व्यवहारिक विज्ञानसे बहुत अधिक सफलता मिली है। मशीनरी और बिजलीके सामानमें यह देश बहुत आगे बढ़ा हुआ है। मोटरके कारबारमें भी यह देश बहुत आगे बढ़ा हुआ है और अपना विशेष स्थान रखता है। यहांके प्रधान औद्योगिक केन्द्र न्यूयार्क, ओहियो, मीचीगान और न्यू जर्सी नामक स्थान हैं। जहां बिजलीके बड़े बड़े कारखाने, कपड़ेकी मिलें, रेशम और ऊनकी फेक्ट्रियां हैं। यहांके कारखाने मांस, चमड़ा, चर्बी, रबर और रबरका सामान, तम्बाकू और सिगरेट, मोटर, आदि भी तैयार करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाका आयात् और निर्यात्।

संयुक्त राज्य अमेरिका अपने यहांके कारखानोंका तैयार माल जैसे बिजलीका सामान, मशीनरी, चमड़ेका सामान, रबरका सामान, तम्बाकूकी सिगरेट, सूती, रेशमी तथा ऊनी कपड़ा, फौलाद आदि विदेश भेजता है। यहांकी उपजका अधिकांश भाग जैसे रुई, कोयला, लोहा, मिट्टीका तेल, तांबा आदि भी बाहर भेजा जाता है। और दूसरे देशोंसे कच्चा चमड़ा, कच्ची खाल, कोको, काफी, चाय, गन्ना, रबर, तेलहन माल, आदि मंगाये जाते हैं।

भारतसे जूट और कच्ची खाल तथा कच्चा चमड़ा अमेरिका जाता है। जूटमें भी गनी क्लाथ अर्थात् हेसियन ही अधिक जाता है और जूट और बोरे कम परिमाणमें अमेरिका जाते हैं। चपड़ा, मैंगनीज और क्रोमाइट यहांसे अमेरिका जाते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके प्रधान औद्योगिक नगर।

न्यूयार्क—यहां कपड़ेकी मिलें हैं। रुई और तेल जूटका काम अच्छा होता है। यहां सिगरेटके भी अच्छे कारखाने हैं।

शिकागो—यहां बिजलीका सामान, मशीनरी, धातुका ढला हुआ सामान आदि तैयार होते हैं।

फिलाडलफिया—यहां कपड़ेकी बड़ी बड़ी मिलें हैं। बिजलीका सामान और मशीनरी भी तैयार होती है।

सेन्ट लुइस—यहां मोटरें, जूता और चमड़ेका सामान तैयार करनेके बड़े २ कारखाने हैं।

बाल्टीमोर—यहां तांबेकी ढलाईका काम, मिट्टीके तेलके साफ करनेका काम तथा टीनका माल तैयार होता है।

बोस्टन—जूते, कटलरी, धारदार हथियार, मशीनरी आदि तैयार करनेके कारखाने हैं।

पिट्सबर्ग—लोहा, फौलाद और मशीनरी तैयार करनेके कारखाने हैं।

सान फ्रान्सिस्को—यह बहुत बड़ा बन्दर है एशियाके विभिन्न देशोंका माल यहीं आकर उतरता है और रेलके मार्गसे अमेरिकाके विभिन्न औद्योगिक केन्द्रोंको जाता है। इसी प्रकार अमेरिकाके कारखानोंका बना माल इसी बन्दरसे एशियाके अन्य केन्द्रोंको भेजा जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके प्रधान बन्दर न्यूयार्क और सानफ्रान्सिस्को हैं।

भारत और फ्रांस

भारतका व्यापारिक सम्बन्ध फ्रांसके साथ उतना ही पुराना है जितना कि उसका बृटेनसे है। पर जहां बृटेनका व्यापारिक सम्बन्ध उसके साथ आरम्भसे आजतक शृङ्खलाबद्ध रूपसे चला आ रहा है वहां फ्रांसका व्यापारिक सम्बन्ध टीपू सुलतानके अन्तके साथ ही सन् १७९९ ई० में एकाएक टूट गया। हां उसका थोड़ासा व्यापारिक सम्बन्ध फिर भी भारतके साथ बना रहा पर यह भी बृटेनकी मारफत ही रहा। लन्दनके बाजारमें ही फ्रांस भारतका माल खरीदता और भारतके हाथ वहीं अपना माल भी बेचता रहा। इस प्रकारकी व्यवस्था योरोपीय महासमरके पूर्वतक विशेष रूपसे रही पर इसके बाद बृटेनसे मैत्री हो जानेके कारण फ्रांसने भारतके साथ अपना गहरा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया जो आज भी उन्नति कर रहा है। भारतसे मुख्यतया तेलहन माल, जूट, रुई, और खाल अधिक परिमाणमें फ्रांस जाती हैं। तेलहन मालमें अधिकांश भाग मूंगफली और अलसीका रहता है और अल्पांश भागमें तिल, सरसों, लाही और बिनौला होते हैं। गेहूं और मैंगनीज भी भारतसे कुछ थोड़ेसे परिमाणमें फ्रान्स जाते हैं।

फ्रान्सकी उपज

यहां प्रधान रूपसे मक्काकी खेती होती है और इसके बाद आलूकी खेतीका नम्बर आता है। यहां गेहूं और अंगूर भी पैदा होते हैं। शहतूत और संतरेके अच्छे बगीचोंकी भी फ्रान्समें कमी नहीं है।

फ्रांसके उद्योग धन्धे

फ्रांसमें रेशमके कीड़े पालनेका बहुत बड़ा काम होता है। रेशमके कपड़े की यहां बड़ी मिलें हैं। शराब तैयार करनेके भी अच्छे कारखाने हैं। सभी प्रकारकी आमोद प्रमोद बनानेका उद्योग धन्धा यहां ऊंची श्रेणीका है।

फ्रान्सके प्रधान औद्योगिक नगर

पेरिस—यहां जेवर, सोने चांदी अर्थात् गंगा जमुनी काम ऊंचे दर्जेका तैयार होता है। सभी प्रकारका ललित कला सम्बन्धी काम यहां बनता है। इस नगरका संसार प्रसिद्ध शेयर Stock Exchange महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थान माना जाता है।

लियान्स—यह नगर संसार भरमें सर्वश्रेष्ठ रेशमी माल तैयार करनेका केन्द्र माना जाता है। यहांका साटन, मखमल तथा रिबन (फीता) संसारमें अद्वितीय माने जाते हैं। यहांके कारखानोंके लिये इटली और चीनसे रेशम खरीदकर मंगाया जाता है।

मार्सेलीज—यह संसारका महत्वपूर्ण प्रभावशाली बंदर है। भूमध्यसागरमें इस बंदरका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यहां लोहा गलाने, साबुन बनाने, शक्कर तैयार करनेके बड़े बड़े कारखाने हैं। यहांके कितने ही कारखाने इंजिन और मशीनरी तैयार करते हैं।

बोर्डो—यहांकी शराब संसार सुप्रसिद्ध है। यहां ऊनी और सूती कपड़ेके बड़े कारखाने हैं।

लिले—यहां उच्च कोटिके कपड़े, फीता किनारी, दस्ताने, मोजे, बनियान, तैयार करनेके कारखाने हैं।

फ्रांसमें कौनसा माल कहां तैयार होता है

ऊनी माल—लिले, रून, राउबाई, तथा सेडन

सूती माल—रून, लिले, राउबाई, तथा सेन्ट क्विन्टिन

रेशमी माल—लियान्स

भारत और लोकतंत्र चीन

ये दोनों ही देश संसारकी अत्यन्त प्राचीन सभ्यताके धाती हैं। इन दोनों देशोंका पारस्परिक व्यापार सम्बन्ध भी बहुत पुराना है। जिसे सभी इतिहास मर्मज्ञ भली प्रकार जानते हैं। गत शताब्दीमें भारत और चीनका सम्बन्ध अफीमके व्यापारके सम्बन्धमें अधिक गहरा हो गया था। पर जबसे अफीमका व्यापार बंद हो गया तबसे इन देशोंके पारस्परिक व्यापारमें शिथिलता सी आगयी है। यहांसे चीन जानेवाले मालमें प्रधान रूपसे सूत और बोरे होते हैं।

कारखाने खोले गये हैं। यह भी एक 'ट्रिटी पोर्ट' है अतः विदेशी व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र है।

कैन्टन—यह नगर दक्षिणी चीनका प्रसिद्ध बंदर है। इसके समीपी भूभागकी उपज इसी बंदरसे होकर विदेश जाती है तथा इस भूभागके लिये आनेवाला माल भी यहीं उतारा जाता है। इस बंदरसे रेशमी माल, चाय, और चीनी बाहर जाती तथा रुई और अफीम बाहरसे आती है। यहां रेशम और कपड़ेकी कई मिलें हैं।

शंघाई—यह चीनका एक बहुत बड़ा 'ट्रिटी पोर्ट' है जो उसके समुद्रतट पर यांगटिसि-यांग नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। यह विदेशी व्यापारका प्रधान केन्द्र है।

हांग कांग—यह संसारके प्रसिद्ध बंदरोंमें है। पर ब्रिटिश प्रभावमें है।

भारत और बेलजियम

बेलजियमका आकार प्रकार जितना छोटा है उतना ही उसका औद्योगिक व्यापार बढ़ा चढ़ा हुआ है। भारतके साथ इसका व्यापारिक सम्बन्ध कुछ कम महत्वका नहीं है। इसके बड़े बड़े कारखानोंकी आवश्यकता पूर्ति भारत अपने कच्चे मालसे करता है। यही कारण है कि भारतके कच्चे मालका बेलजियम सदासे एक विशेष खरीदार रहा है और वहांके कारखानोंका बना हुआ माल भारत भी खरीदता रहा है। इस प्रकार इन दोनों देशोंके बीच पारस्परिक व्यापार आज भी पूर्ववत् चला आ रहा है। भारतसे रुई, तेलहन आदि बेलजियम जाते हैं। यहांसे गेंहू और कचा मैंगनीज भी जाता है। और बेलजियमसे पेन्ट, फीता, ऊनकी लच्छी, ज्वेलरी, सेन्ट, हार्डवेर, कांचका सामान आदि भारत आते हैं।

बेलजियमकी उपज

यहां ओट, राई, गेंहूं, आलू, जौ और चुकन्दरकी खेती होती है। खानोंसे यहां कोयला, लोहा, जस्ता, सीसा, और तांबा निकलता है। पर खेतीकी उपज पर्याप्त नहीं होती अतः गेंहू आदि खाद्य पदार्थ बाहरसे आते हैं।

बेलजियमके उद्योग धन्धे

यहांका प्रधान उद्योग धन्धा खानिकी उपज और जंगलकी पैदावारसे अधिक सम्बन्ध रखता है। खान खोदने, पत्थर निकालने और कारखानेंके काममें यहांकी अधिकांश जनता लगी रहती है। यहां कांचके कारखाने, कपड़ा बुननेकी मिलें, तथा फीता किनारी तैयार करनेकी कितनी ही फैक्ट्रियां चल रही हैं। यहां शक्कर और शराब तैयार करनेके कारखाने भी हैं।

बेलजियमके औद्योगिक केन्द्र

ब्रूसेल्स—यहां फीता किनारी, कागज, खिड़कियोंके कांच, आदि बनानेके कारखाने हैं। लोहा, फौलाद, हार्डवेर आदि यहां तैयार होते हैं।

एक विचित्र प्रकारका विचार-प्रवाह दौड़ा दिया है जिससे जनसाधारणकी विचार-पद्धतिमें ही आश्चर्यकारी परिवर्तन हो गया है और वे लोग इस मालको सर्वश्रेष्ठ स्थान देनेपर तुल बैठे हैं। अतः संसारके सभी राष्ट्रोंके विचारशील केवल इसी एक उधेड़बुनमें लगे हुए हैं कि कोई न कोई नवीन बाजार खोज निकालें और वहां अपने व्यापार वाणिज्यका प्रसार करें। स्वराज्योपभागी स्वतंत्र राष्ट्र अपनी अपनी सरकारोंसे राष्ट्रोचित सहायता प्राप्तकर पारस्परिक व्यापार प्रतियोगिताकी अणुमात्र चिन्ता न कर नवीन बाजारोंकी खोज लगा अपना अपना व्यापार सुदृढ़ रीतिसे फैला रहे हैं। ऐसी परिस्थितिमें बेचारे पराधीन दीन भारतका क्या सामर्थ्य जो वह पारस्परिक व्यापार प्रतियोगिताके प्राण संचालक संघर्षके सम्मुख खड़े होनेका स्वप्नमें भी साहसकर सके। फिर भी आत्मरक्षाका प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है कि जिसके सम्बन्धमें सभी एक मतसे स्वीकार करते हैं कि लोग ऐसी स्थितिमें सब कुछ करनेपर उद्यत हो जाते हैं। अतः भारतके सम्बन्धको लेकर नवीन बाजारोंके सम्बन्धमें चर्चा करना कुछ अनुचित और अस्वाभाविक न होगा।

भारतके लिये यदि कोई नवीन बाजार खोज निकाले जा सकते हैं तो स्याम, पूर्व अफ्रिका, फारस, पैलेस्टाइन, और ईराक ही ऐसे स्थान हैं जहां संगठित रीतिसे चलाये जानेवाले भारतीय व्यापार को सरलतासे सफलता मिल सकती है। अतः भारतका हित इसीमें है कि भारतीय व्यापारी सभी राष्ट्रोचित उपायोंसे उपरोक्त बाजारोंमें अपना व्यापार संगठितरूपसे जमावें और उसके प्रसारके लिये प्रयत्न करें।

इस स्थलपर हम उपरोक्त बाजारोंके सम्बन्धको लेकर विस्तृत विवेचन करेंगे और साथ ही वहां भारतका कौन कौनसा माल चल सकेगा और भारतको वहांसे कौन कौनसा माल मंगानेमें लाभ होगा आदि आवश्यक बातोंपर भी यथासाध्य प्रकाश डालनेकी चेष्टा करेंगे।

पूर्व अफ्रिका—अफ्रिका महाद्वीपके इस भूभागके अन्तर्गत कीनिया, यूगेण्डा, टङ्गानिका, जंजीबार और पेम्बा माने जाते हैं। इनके सुविस्तृत स्वरूपका सांख्यिक परिचय यह है:—

१—कीनियाका क्षेत्रफल २,४०,००० वर्ग मील है।

२. युगेण्डा " १,६६,१६८ "

३—टङ्गानिका " ३,८४,००० "

४—पेम्बा " ३८६ "

५—जंजीबार " ६२५ "

क्षेत्रफलके बाद इस भूभागमें जनसंख्याका निदर्शन भी कर देना आवश्यक है। यहांकी जनसंख्यामें संख्याके अनुसार विभिन्न जातियोंका कौनसा स्थान है यह स्पष्ट रीतिसे जान लेनेसे

सरलतया अनुमान किया जाता है कि कौनसा माल किस प्रकारके रहन सहनके अभ्यासी कितना व्यवहार कर सकते हैं। क्योंकि जाति विशेषके रहन सहन और सामाजिक जीवनक्रमसे तज्जनित आवश्यकताओंका सहज अनुमान लगाया जा सकता है

पूर्व अफ्रीकाके देश	वहांकी जनसंख्या				
	योरोपियन	एशियायी	अरब	अफ्रीकन	कुल जोड़
१—कीनियां	६, ६५२	२५, ८८०	१०, १०२	२३, ६६७००	२४, ४५, ३३४
२—यूगेंडा	१, २६६	५, ६०४	×	३६, ६४, ७३१	३०, ७१, ६०८
३—टङ्गानिका	२, ४४७	१०, २०६	४७८२	४१, ०७०००	४१, २४, ४३८
४—जंजीबार और पेम्बा	२७०	×	×	१६७०००	१६, ७२, ७०

इस प्रकार उपरोक्त संख्यासे स्पष्ट है कि पूर्व अफ्रीकामें कुल ९८,३८,६५० व्यक्ति निवास करते हैं। क्षेत्रफल और जनसंख्याके बाद यदि कोई और प्रधान विषय है तो उस वस्तीका व्यापार है। अतः इसके आयातके कुछ उपलब्ध अङ्कोंको जहां हम नीचे उद्धृत करते हैं वहां भारतसे आने और भारत जानेवाले मालके अङ्क भी साथ ही दे रहे हैं। इससे जहां वहांके व्यापार वाणिज्यका स्वरूप स्पष्ट होगा वहां उसके साथ भारतके व्यापारका कैसा सम्बन्ध है यह भी सुबोध रीतिसे समझमें आ जायगा।

व्यापारका स्वरुप	कीनियां	टङ्गानिका	जंजिबार और पेम्बा
१. कुल आयात्	६६१२, ००० पौण्ड	१४, ३१, ००० पौण्ड	२१, ५०, ००० पौण्ड
भारतसे आनेवाला माल	१२, ५०, ००० ,,	२, ६२, ००० ,,	७, ००, ००० ,,
२. कुल निर्यात्	५०, ६१, ०००	१०, ६०, ०००	२१, ५०, ०००
भारत जानेवाला माल	१२, ३८, ०००	१, ०६, ०००	४, २०, ०००
३. कुल व्यापार (आयात निर्यात)	१, १६, ७३, ०००	२५, २१, ०००	४३, ००, ०००
भारतसे कुल व्यापार	२५, ०८, ०००	३, ६८, ०००	११, २०, ०००

उपरोक्त अङ्क पौण्डमें दिये गये हैं। और कीनियाके अङ्कोंमें यूगेण्डाके अंक भी सम्मिलित किये गये है। इस भूभागमें जितना भी माल भारतसे आता है उसमेंसे प्रधान रूपसे कपड़ा ही आता है। अतः भारतसे कितनेका कपड़ा इस देशमें आता है यह नीचेके अङ्कोंसे स्पष्ट है।

कपड़ा आता है	कीनिया यूगेण्डा	टंगेनिका	जंजिबार पेम्बा
भारतसे	३,६६,५०० पौण्ड	२,००००० पौण्ड	१६५,००० पौंड
अन्य देशोंसे	१३,५३,५०० "	५८८,००० "	३,५०,००० "

सम्बन्धमें हाइड्रो एलेक्ट्रिक (Hydro electric) आयोजनको काममें लानेका प्रयत्न भी यहां किया जाना चाहिये। इतना ही नहीं उन्हें देशके श्रमजीवी वर्गको प्रबुद्ध करानेकी चेष्टामें भी संलग्न होना चाहिये। उचित पारिश्रमिक, और रहन सहनकी सुविधाओंका प्रबन्ध कर उनके लिये 'टेकनिकल स्कूल' स्थान स्थानपर खोल कर देशी भाषाओं द्वारा व्यावहारिक शिक्षा देनेका सुप्रबन्ध भी करना चाहिये। देशके औद्योगिक केन्द्रोंका आधुनिक पद्धतिके अनुसार संगठन किया जाना चाहिये। यांत्रिक सहायतासे कलकारखाने चलानेकी सुविधाओंपर ध्यान देना आवश्यक है और साथ ही स्थान स्थानपर बेंकोंकी व्यवस्था भी करना चाहिये। यदि इस प्रकारसे सुसंगठित हो कार्य किया जाय, जो अव्यवहारिक या असम्भव कदापि नहीं है तो अवश्य ही मनचेती सफलता मिल सकती है।

ऐसा करनेसे भारतकी रत्नगर्भा भूमिके कच्चे मालसे अच्छेसे अच्छे ढंगपर देशकी पूंजीसे देशके कारखानोंमें देशी भाइयोंकी सहायतासे सस्ता, सुन्दर और टिकाऊ पक्कामाल बनाया जा सकेगा। भारतीय व्यापारिक वर्गके सामुहिक रूपसे काम करनेसे भारतके किसानोंके कच्चे मालकी मांग बढ़ेगी अतः उन्हें आर्थिक लाभ होगा और उसके बल वे अपना जीवन क्रम सुधारनेमें सफल होंगे। इसी प्रकार कल कारखानोंकी उन्नतिके साथ ही किसानोंके समान ही श्रमजीवी भी पेट भर भोजन करेंगे और शरीरपर सुन्दर कपड़े पहन सकेंगे। अपना और अपनी सन्ततिका भविष्य सुधारनेमें सफल मनोरथ होंगे। देशकी आवश्यकता स्वयं देश पूरी करनेमें समर्थ होगा और क्रमानुसार भारत राष्ट्र एक शक्तिशाली राष्ट्र बनकर अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करनेमें अवश्य ही यशस्वी होगा।

अब हम इसी सिलसिलेमें भारतके कतिपय महत्वपूर्ण उद्योग धन्धोंके सम्बन्धमें यहां कुछ लिख रहे हैं जिन्हें हाथमें लेकर हमारे भारतीय व्यापारी अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

शक्कर—भारत गन्नेकी खेतीका घर है। गन्नेकी खेती यहांसे अधिक संसारके अन्य किसी भी भूभागमें नहीं होती। पर उपजकी दृष्टिसे मानना पड़ेगा कि भारतके गन्नेसे बहुत ही कम परिमाणमें शक्कर निकलती है। भारत सरकारकी कृषि सम्बन्धी रहस्यमय नीतिको भारतके किसान समझनेमें सर्वथा असमर्थ हैं। न मालुम सरकारका कृषि विभाग यहांके किसानोंको भारतीय भाषाओं द्वारा कृषि सम्बन्धी ज्ञान-दान कब देगा और कब यहांके किसान खेतीकी ओर ध्यान देनेकी अभिरुचि दिखावेंगे। लगभग १० लाख टन शक्कर प्रति वर्ष जावा और मारिशससे भारत आती है। भारतसे बहुत बड़े परिमाणमें प्रतिवर्ष गुड़ विदेश भेजा जाता है। गुड़ खरीदने वाले देशोंमें केवल इंगलैंड, स्ट्रेट सेटलमेन्ट्स और सीलोन ही प्रधान हैं। भारतसे गुड़ प्रायः विजगापट्टम, कोकोनाडा, तूतीकोरिन, और बम्बईके बन्दरगाहसे बाहर भेजा जाता है। गुड़का व्यापार भी महत्वका माना जाता

है। इस सम्बन्धकी सभी प्रकारकी जानकारीके लिये इण्डियन शुगर प्रोड्यूसर्स ऐसोसियेशन कानपुरसे पत्रव्यवहार किया जा सकता है।

मोम बत्तियाँ—बाजारमें बिकनेवाली मोमबत्तियां स्टीराइन(Stearine) या पैराफीन वैक्स नामक पदार्थसे बनती हैं। भारतमें मोमबत्ती बनानेका सबसे बड़ा काम होता है। यहां मोमबत्ती तैयार करनेका प्रधान केन्द्र सिरियाम (Syriam) माना जाता है। यह नगर रंगूनके पास है। यहीं साफ किये हुए पैराफीन वैक्सको गला कर मोमबत्तियां बनाई जाती हैं। साधारण शक्तिकी मशीन प्रति १५ मिनटमें ३६० मोमबत्तियां तैयार करती है। इस स्थानके अतिरिक्त कलकत्ता, मद्रास, मैसूर और बड़ोदामें मोमबत्तीके कारखाने हैं। भारतसे विदेश जाने वाली मोमबत्तीका ९० प्रतिशत भाग रंगूनके बंदरसे बाहर जाता है और शेष माल बम्बईके बंदरसे रवाना किया जाता है। भारतकी मोमबत्तियां चीन, सीलोन, न्यूझीलैण्ड, बृटेन, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, श्याम और फारस जाती हैं।

तम्बाकू—भारतमें सबसे अच्छी तम्बाकू रंगपुरमें पैदा होती है। यहांसे तम्बाकूकी पत्ती अदन, हांगकांग, फ्रान्स, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, हालैण्ड, जर्मनी बहुत बड़े परिमाणमें भेजी जाती है। फ्रान्स सबसे अधिक भारतकी ही तम्बाकू खरीदता है और इसके बाद अदन तथा स्ट्रेट सेटलमेन्टका स्थान खरीदारोंमें महत्वका माना जाता है। भारतसे तम्बाकूकी पत्ती रंगपुर, बम्बई, कलकत्ता और नागापट्टमसे विदेश भेजी जाती है। सिगरेट और सिगारके रूपमें तम्बाकू बहुत बड़े परिमाणमें विदेशसे भारत आती है। योंतो सिगार सबसे अधिक मलाया पेनिनसुलामें तैयार होती हैं पर फिलिपाइन और हवानासे बहुत बड़े परिमाणमें सिगरेट भारत आते हैं। भारतमें भी बीड़ी, सिगरेट आदिके कारखाने खुल रहे हैं। मुंगेरमें सबसे बड़ा कारखाना खोला गया है जो अच्छी उन्नतिकर रहा है। दक्षिण भारतमें तैयार होनेवाला माल बम्बई बंदरसे मैसोपोटामिया और पूर्व अफ्रीका भेजा जाता है क्योंकि उसकी वहां अधिक मांग है।

खादके कारखाने—चाय और काफीके बगीचोंमें खादकी सदैव बहुत बड़ी मांग रहा करती है। देशकी खादके अतिरिक्त प्रति वर्ष लगभग १० हजार टन खाद विदेशसे भारत आती है। भारतके किसानोंके पास न तो वैसी उपजाऊ और मूल्यवान भूमि ही है और न मंहगी खाद खरीदनेके लिये उनके पास पैसे ही हैं अतः वे बेचारे किसी प्रकार नाजी खादसे काम चलाते हैं। मछली और हड्डीकी खाद प्रायः २० हजार टन प्रति वर्ष भारतसे सीलोन और स्ट्रेट सेटलमेन्ट जाती है। फ्रांस वाले हड्डीके चूरेसे काले बटन बनाते हैं इसलिये वहां इसकी अच्छी मांग रहती है। भारतके बड़े बड़े नगरोंके कसाई खानोंसे ब्लड मील (Blood meal) के नामसे सूखा खून भी विदेश जाता है। इसी प्रकार अलसी, अरण्डी, मूंगफली आदि तेलहन मालकी खली भी खादके रूपमें विदेश पर्याप्त

जाती है। जो वास्तवमें बहुत ही हानिकर है। भारतकी खाद भारतके लिये होनी चाहिये। पूना और इसी प्रकारके अन्य केन्द्रोंमें प्रान्तीय कृषि विभागके रसायन विशेषज्ञ नवीन प्रकारकी खाद तैयार करनेकी पद्धतियां खोज रहे हैं।

नारियलकी जटा—दक्षिण भारतके कोचीन नामक बंदरसे नारियलकी जटा बहुत बड़ी तादादमें विदेश चली जाती है। नारियलके जटाके रेशोंसे लच्छियाँ तैयार होती हैं जिनसे रस्से बनाते हैं। इन्हींके बिछौने भी बनाये जाते हैं। थैले भी इन्हीं रेशोंसे तैयार होते हैं जो चमड़ा कमानेके काममें आनेवाली छालके भरनेके काम आते हैं। यह उद्योग धन्धा मलाबार प्रदेशका घरेलू धन्धा है। यहांके बने हुए मालका निर्यात् एलेपी, कोचीन और कालीकट नामक बन्दरोंसे होता है। कोचीन और कालीकटमें कुछ गांठ बांधनेके प्रेस भी हैं जहां जटाके रेशोंसे तैयारकी गयी लच्छियोंको ३ हंडरवेट वजनी गांठके रूपमें बांध कर विदेश भेजा जाता है।

मक्खनकी डेरी—भारतसे मक्खन और घी विदेश जाता है। जो सम्भवतः ८ लाख पौंड वजनके परिमाणमें होता है। यों तो प्रायः बम्बई बंदरसे भी यह माल बाहर जाता है पर करांची बंदर इसके निर्यात्‌का प्रधान केन्द्र है। भारतके इस मालकी मांग महत्वके अनुसार इस क्रमसे विदेशोंमें है। सीलोन, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, ज़ंजीबार, पूर्व अफ्रीका, फारसकी खाड़ीके तटवर्ती बंदर और बृटेन।

संसारके प्रधान व्यवसायिक मार्ग और उनका भारतसे सम्बन्ध

एक स्थानसे दूसरे स्थानको माल भेजने और वहांसे माल मंगानेके लिये प्रत्येक व्यवसायीको संसारके प्रधान व्यवसायिक मार्गोंकी यथेष्ट जानकारी रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि व्यापार वाणिज्यके क्रमागत ऐतिहासिक विकासका खोजपूर्ण अध्ययन किया जाय तो पता लग जायगा कि भौगोलिक सत्यका महत्व कितना रहस्यमय है। इसी सत्यके आधार पर यह भी जाना जा सकता है कि कौनसी वस्तु किस प्रकारकी विशेष परिस्थितिके कारण अनुकूल या प्रतिकूल जल वायुको पाकर कब और कहां उत्पन्न होती है। किस स्थान विशेषकी कौनसी आवश्यकतायें हैं और उनकी पूर्तिके लिये किस परिमाणमें वहांकी उपज पर्याप्त होती है तथा आवश्यकतासे अधिककी वस्तुयें कहां और कब भेजी जाती हैं। इसी परिस्थिति वैचित्र्यके कारण आरम्भमें व्यापार वाणिज्यका अंकुर जमा था। अतः भौगोलिक सत्यके व्यवहारिक स्वरूपकी सार्वभौमताके आधार पर मानना पड़ेगा कि सभी देशोंके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यका सम्बन्ध उनके आर्थिक उत्कर्षसे बहुत ही सन्निकट है। फलतः यह स्वयं

सिद्ध हो जाता है कि देशकी आर्थिक अभिवृद्धि भी स्वयं प्रकृति प्रदत्त भौगोलिक सुविधाओं
बसने वाले जन समूहकी मनोवृत्तियोंसे बिलकुल घुली-मिली रहती है।

संसारके व्यापार वाणिज्य सम्बन्धी उत्कर्षमें उसकी जलराशिका बहुत बड़ा
माना है। यही वह सुगम मार्ग है कि जिसके कारण संसारके दूर देश भी एक दूसरेसे
माने जाते हैं। आधुनिक सभ्य संसारके उन्नति शील राष्ट्रोंकी समता करने वाले राष्ट्रको आ
जलराशिके तटवर्ती भूभाग पर अपना आधिपत्य रखना अनिवार्य सा हो गया है। यदि इस अटल
दृष्टिसे देखा जाय तो यह भारतका सौभाग्य ही है कि वह तीन ओर समुद्रसे घिरा हुआ है।
भारतके समुद्रतटवर्ती बंदर गाह उस कोटिके नहीं माने जाते हैं फिर भी वे किसी प्रकार निरर्थक भी
ठहराये जा सके हैं। ये सब प्रकारसे विदेशी व्यापार वाणिज्यके लिये उपयुक्त हैं। यही कारण है
शताब्दियों पूर्वसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध विदेशोंसे बराबर चला आ रहा है।

भारत छोटासा देश नहीं है यह एक विशाल महाद्वीप है। यहां प्रकृति विभेदके कार
नाना प्रकारके पदार्थ उत्पन्न होते हैं जिनके लिये अन्य देशोंके लोग सदा लालायित रहते हैं। औ
साथ ही भारतवाले भी दूसरे देशोंमें होनेवाली कितनी ही वस्तुओंके लिये इच्छुक रहते हैं।

समुद्र मार्गसे होनेवाले व्यापार वाणिज्य दो प्रकारके होते हैं। इनमेंसे एक तो वह है जो
यात्रियों और डाकके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करता है और दूसरा वह जो स्वयं अपना
अस्तित्व रखता है। इन दोनोंहीको भापसे चलनेवाले द्रुतिगतिगामी जलयान आश्रय देते हैं।
ये जलयान सीधेसे सीधे मार्गको सन्मुख रखकर चलते हैं पर स्थान स्थानमें इन्हें कोयला लेनेके लिये
ठहरना पड़ता है। इन्हीं विश्राम स्थलोंको बंदर कहते हैं। इस प्रकार आरम्भमें बंदरोंकी स्थापना हुई
और कोयला चढ़ानेके समय मिलनेवाले अवकाशमें यात्रियोंको चढ़ाने तथा मालको लेनेका काम भी
आरम्भ हुआ फलतः व्यापार वाणिज्यको भी अनायास ही सुविधा मिल गयी और लोगोंको भी
अधिक सुविधा हो गयी। इस प्रकार व्यापार वाणिज्यका जन्म और उसकी वृद्धि हुई अतः भारतके
सम्बन्धको लेकर अब हम नीचे संसारके प्रधान व्यापारिक जलमार्गों और उससे सम्बन्ध रखनेवाले
स्थल मार्गोंकी चर्चा करेंगे।

उत्तर अटलान्टिक महासागरका व्यवसायी मार्ग यद्यपि भारतके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यकी
दृष्टिसे विशेष महत्वका नहीं है फिर भी संसारके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे वह अवश्य ही
बड़े महत्वका है। यही वह महत्वपूर्ण जलमार्ग है जो संसारके उच्च कोटिके दो सुदूरवर्ती भूखण्डोंको
तुलनासे समीप लाकर मिलाता है। इसी मार्गसे अमेरिकाके कच्चे पदार्थ जैसे रूई, गेहूं, अनाज
तथा विभिन्न प्रकारकी धातुएं जहाजमें भरकर ब्रिटेनके समान ही योरोपके अन्य औद्योगिक

देशोंमें पहुंचाई जाती है तथा इन पदार्थोंके विनिमय स्वरूप इन औद्योगिक केन्द्रोंमें तैयार होनेवाले मालको जहाज द्वारा अमेरिकाके बाजारमें पहुंचाया जाता है।

इसी प्रकार भारतके वैदेशिक व्यापारकी दृष्टिसे यदि कोई महत्वपूर्ण मार्ग माना जा सकता है तो वह भूमध्यसागरका ही जलमार्ग है। इस मार्गसे भारत और योरोपके विभिन्न प्रगतिशील केन्द्रों का पारस्परिक सम्मिलन सहजमें हो जाता है। इतना ही नहीं योरोपके कारखानोंका बना माल जहाजपर लादकर भारत लाया जाता है और यहांसे वह सुदूर सिंगापुर होते हुए चीन, जापान और अस्ट्रेलियातक पहुंचाया जाता है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि भारतका वैदेशिक व्यापार नवीन नहीं है वरन भारत तो बहुत प्राचीनकालसे संसारके सुदूर देशोंसे व्यापार वाणिज्य करता चला आ रहा है। यही एक प्रधान कारण है कि भाफसे चलनेवाले जहाजोंसे इसे अधिक प्रोत्साहन मिला और आज उसका व्यापार बहुत बढ़ गया है। यहांकी उपजका अधिकांश भाग निर्यातके रूपमें सुदूर देशोंको जाता है और वहांके कारखानोंका बना हुआ माल भारतमें निर्यातके विनिमयमें आयातके रूपमें आता है। भारतके पश्चिमीय प्रदेश एवं सिन्धु नदीकी घाटीमें उत्पन्न होनेवाला गेहूं कराचीके बंदरसे विदेश भेजा जाता है और खान देश, बरार तथा मालवा, और गुजरातकी रूई बम्बईके बंदरसे विदेश भेजी जाती है। इसी प्रकार मध्यभारतका तेलहन दाना भी बम्बई बंदरसे विदेश भेजा जाता है। बंगाल, आसाम तथा विहार उड़ीसाके उपजाऊ भूभागकी उपज जैसे जूट, चावल, चाय, अभ्रक, कोयला आदि कलकत्ते के बन्दरसे बाहर भेजे जाते हैं और इन पदार्थोंके मूल्यके विनिमयमें सूती माल, यंत्र सामग्री, रेलवेका सामान, आदि कितनी ही वस्तुएं मुख्यतया ब्रूटेन और साधारणतया योरोपके अन्य औद्योगिक भूभागोंसे भारत आती हैं। यह सब व्यापार वाणिज्य इसी सुपरिचित भूमध्यसागरके जलमार्गसे आता जाता है। यदि भारतसे हम योरोपके लिये इस जलमार्गसे चलें तो भारत छोड़नेके बादही सबसे प्रथम अदनका सुप्रसिद्ध बंदर आवेगा। अदनका बंदर एक प्रभावशाली एवं मार्केका बंदर है जहां दूर देशोंका माल उतारा-चढ़ाया जाता है। यह वही महत्वपूर्ण बंदर है जहांसे अरब और पूर्वीय अफ्रीका का आयात और निर्यातका व्यापार होता है। अदनके बाद दूसरा महत्वका बंदर सैय्यद बंदर है। यहां भूमध्य-सागर और श्यामसागरके समुद्रतटवर्ती प्रदेशोंका माल चढ़ता उतरता है। सैय्यद बंदरके बाद सिकन्दरिया और मिश्र प्रान्तसतटवर्ती मार्सेलीज नामक बंदर आवेगा। सिकन्दरिया, मिश्र, पेलेस्टाइन तथा एशियामाइनरकी उपजके निकासका प्रधान बंदर है। इसी बंदरसे योरोपका माल उपरोक्त भूखण्डोंमें प्रवेश करता है। मार्सेलीज बंदर बड़े महत्वका बंदर माना जाता है। यहां पेरिस आदि कितने ही केन्द्रोंसे माल विदेश भेजनेके लिये आता है। मार्सेलीजके समान ही महत्वका एक दूसरा

बंदर इङ्गलैंडमें है जिसे ब्रिस्टल कहते हैं। इस बंदरका भी सम्बन्ध पेरिस आदि योरोपके भीतरी ही केन्द्रोंसे है।

योरोपके विभिन्न औद्योगिक केन्द्र व्यापारिक जलमार्गोंकी सुविधाके लिये वहांके बंदरोंसे नहरों और रेलवे लाइनोंके द्वारा परस्पर जोड़ दिये गये हैं। फ्रांसकी राजधानी पेरिस एक बहुत बड़ा रेलवे जंक्शन है। यहांसे रेलवे लाइनकी एक शाखा दक्षिण पश्चिम योरोपमें आर्लियन्स तथा बोर्डो-तक जाती है और वहांसे दक्षिणकी ओर आगे बढ़ती हुई स्पेनकी राजधानी मैड्रिडतक पहुंचती है। इस प्रकार रेलवे लाइन द्वारा स्पेन और फ्रांस जहां मिल जाते हैं वहां पेरिस और मैड्रिड भी एक दूसरे से सम्बद्ध माने जाते हैं। इसी प्रकार पेरिससे एक दूसरी रेलवे लाइन रोनकी उपजाऊ घाटीसे होती हुई फ्रांसके औद्योगिक केन्द्र डीजन और लियान्सको पारकर मार्सेल्स बंदर पहुंचती है। डीजनसे दूसरी रेल लाइन निकलती है और वह आल्प्स नामक संसार प्रसिद्ध पर्वतश्रेणीको पारकर इटलीमें प्रवेश करती है और मुख्य व्यापारकेन्द्र औद्योगिक केन्द्र मिलानको मिलती है। इस प्रकार ब्रिंडसी नामक बंदर तकका सम्बन्ध जुड़ जाता है और ओरियन्टल एक्सप्रेस नामक लाइन पेरिस और कुस्तुन्तुनियाका सामीप्य सम्बन्ध संस्थापित करती है। हमारे इस विवेचनसे पाठक सज्जन समझ गये होंगे कि कि मुख्य स्वेजका प्रसिद्ध जलमार्ग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे कितने महत्वका है और साथ ही उसका भारतसे कैसा सम्बन्ध है। यह तो हुआ पश्चिमीय जल-मार्गोंका विवरण, अब हम भारतके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे पूर्वीय जलमार्गोंकी चर्चा करेंगे।

पूर्वीय जलमार्गोंको पूर्व एशियायी जलमार्ग भी कहते हैं। भारतसे चलनेके बाद सबसे महत्वपूर्ण बंदर सिंगापुरका बंदर है। सिंगापुर छोड़नेके बाद, हांगकांग, केन्टन, शंघाई, याकोहामा, कोबी, टोकियो आदि संसार प्रसिद्ध बंदर एवं औद्योगिक केन्द्र क्रमशः आते हैं। सिंगापुरसे ही एक दूसरी लाइन जावा जाती है और वहांसे जहाज आस्ट्रेलिया जाते हैं। इसी पूर्वीय जलमार्गसे भारत जूट, चाय, चावल, रुई, अफीम, अनाज आदि पदार्थ पूर्वीय देशोंको भेजता है जो उपरोक्त बंदरोंपर उतारे जाते हैं। इसी प्रकार इन पूर्वीय देशोंका माल इन्हीं बंदरोंपर चढ़ता है और भारत आता है। इस मालमें मुख्यतया शक्कर, स्पीरिट, रेशम तथा रेशमी माल ही होता है। इस जलमार्गका प्रधान बंदर उपरोक्त कथनके अनुसार सिंगापुर ही है। यहां व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र है। इसके बाद जावाका प्रधान बंदर बटेविया आता है जो पूर्वीय देशोंको यात्रा करनेवाले जहाजोंका विश्राम स्थल है। इसके बाद दक्षिण चीनका हांगकांग और पूर्वीय चीनका शंघाई नामक बंदर बड़ाही महत्वका माना जाता है। इसी जलमार्गपर नागासाकी और याकोहामा नामक जापानके प्रसिद्ध बंदर भी आते हैं।

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहांसे कच्चा माल विदेश भेजा जाता है और अन्य देशोंका बना हुआ तैयार माल भारतके कच्चे मालके विनिमयमें भारत आता है। उदाहरणार्थ भारतसे एक व्यक्ति वृटेनको जूट भेजता है और दूसरा व्यक्ति वृटेनसे भारत मोटर मंगाता है ऐसी स्थितिमें जूट और मोटरका मूल्य वसूल करनेके लिये रुपये तो एक देशसे दूसरे देश नहीं भेजे जाते हां केवल मालका पारस्परिक बदला ही दोनों देशोंके बीच हो जाता है। जूट भेजनेवाला व्यक्ति अपने कागज लेकर बैंकमें उपस्थित होता है और कहता है कि मैंने जो जूट वृटेन भेजा था उसका मूल्य मुझे मंगा दो। इसी प्रकार मोटर खरीदनेवाला व्यक्ति भी बैंक जाता है और कहता है मैंने जो मोटर मंगायी है उसका मूल्य वृटेन भेज दो। इन दोनों प्रकारके व्यापारसे यदि कोई बात स्पष्ट होती है तो यह कि एक व्यक्ति निर्यातका मूल्य भारत मंगाना चाहता है और दूसरा व्यक्ति आयात्का मूल्य भारतसे बाहर भेजना चाहता है। ऐसी स्थितिमें बैंक आयातके मूल्यको जमा करानेवाले व्यक्तिसे मोटरका मूल्य ले लेता है और निर्यातका मूल्य मंगानेवालेको जूटका मूल्य चुकाता है और उससे ही कह देता है कि वह वृटेनके अपने आढ़तियेको सूचित कर दे कि जूटका मूल्य उसे मिल गया इस प्रकारकी व्यवस्था कर लेनेपर यहांका बैंक अपनी लन्दनवाली शाखाको सूचित करता है कि जूटके आढ़तियेसे मिली हुई रकम मोटर [illegible] दे दी जाय क्योंकि मोटर खरीदनेवालेने भारतमें उसका मूल्य चुका दिया है जो [illegible] को जूटके भुगतानमें दे दिया गया। वृटेनका बैंक ऐसा ही करता है और इस प्रकार [illegible] मोल दोनों ही व्यापारियोंको यथा समय मिल जाता है। इसी प्रकारके व्यापारिक साधनका [illegible] हुण्डी है। इसमें एक व्यक्तिका जूट दूसरे व्यक्तिकी मोटरसे हस्तान्तरित हो जाता है।

[illegible] दूसरा महत्वका यह प्रश्न है कि मोटर मंगानेवाला व्यक्ति बैंकमें कितने रुपये मोटरके [illegible] कि जिसको पाकर बैंक जूट भेजनेवाले व्यक्तिको रुपयेके रूपमें जूटका मूल्य चुकावे। स्मरण [illegible] कि मोटरका मूल्य पौण्डके रूपमें है।

[illegible] विदेशी हुण्डीका भाव युद्धके पूर्ववाला रहता तो १) रु० १६ पेंसके बराबर होता है। [illegible] १ हजार पौण्ड मूल्यकी मोटरके लिये मोटरके खरीदारको १५०००) रु० जमा करने [illegible] १५०००) रु० जूटवालेको जूटका मोल मिलता क्योंकि जूटवालेने भी वृटेनके बाजारमें [illegible] जूट [illegible] था। परन्तु आजकल वर्तमानमें १) रु० का मूल्य १६ पेन्सके स्थानमें [illegible] दिया गया है अतः १६ पेंसके हिसाबसे १ हजार पौंडकी मोटरके लिये [illegible] भारतमें उसे १३,३३३)रु० ही देने पड़े और जूट वालेको १ हजार [illegible] १५०००) रु० के स्थान पर १३,३३३) रु० मिला। इस प्रकार यदि [illegible] हुई। क्योंकि मोटर वालेको तो वृटेनमें १ हजार

पौंड मिल ही जाता पर वहांके कच्चे मालके व्यापारीको (१००००) रु० के स्थान पर केवल १३,३३
मिले। इस प्रकार उसे प्रति १ हजार पौंड पर (६६६७) रु० की हानि रही।

वर्तमानमें भारतसे विदेश इतना अधिक क्या माल जाने लगा है कि उसके विनिमयमें
भारतको आवश्यकताके लिये तैयार माल विदेशसे आता है मूल्यमें कम होता है। तथापि आवश्यकता
भारत विदेशके बने हुए मालको मंगा कर पूरी कर लेता है फिर भी उसे और देशोंसे कच्चे मालका
मूल्य लेना ही रह जाता है। यह शेष मूल्य उसे सोनेके रूपमें मिलना चाहिये था पर लन्दन स्थित
भारत सचिव भारतकी ओरसे कौंसिल बिल नामक सरकारी कागज बेचकर यह शेष रकम भी वसूल
कर लेते हैं। युद्धके पूर्व भारतमें सोनेका सिक्का था अतः अन्तर्राष्ट्रीय लेन देनके भुगतानमें
बहुत बड़ी सुविधा रहती थी पर अब १८ पेंसकी हुंडीके भावने भारतके व्यापारको जहां हानि पहुंचाती
थी वहां सोनेके सिक्केके अभावने तो उसका सब काम ही तमाम कर दिया है। ऐसी दशामें शेष
रकम जो सोनेके रूपमें भारतको मिलनी चाहिये थी वह भी भारत सचिव कौंसिल बिल बेच कर वसूल
कर लेते हैं और भारतको देखने और समझनेके लिये कागज ही मिलते हैं। कौंसिल बिलका सम्बन्ध यों
तो व्यापारियोंकी रकमसे ही है पर भारत सचिवके आफिसका व्यय भार भी उसी पर जुड़ा रहता है
अतः भारतकी ओरसे भारतके मालका शेष मूल्य तो वह लन्दनमें ही वसूल कर लेते हैं और साथ ही
अपना खर्च भी निकाल लेते हैं। भारतको जो कौंसिल बिल मिलते हैं वह केवल हुंडी है जिसका रुपया
कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रासकी सरकारको चुकाना पड़ता है। जब बाजारमें कौंसिल बिलोंकी मांग नहीं
रहती तब विदेशी विनिमयका भाव भी गिरने पर आ जाता है अतः ऐसी परिस्थितिको सम्भालनेकी
दृष्टिसे भारत सरकार 'रिवर्स कौंसिल बिल' नामक भारत सचिव पर हुंडी करके बाजारमें बेचती है
और इस प्रकारसे रकम वसूल कर विदेशी हुंडीका भाव १८ पेन्स पर सचेष्ट हो स्थिर रखती है।

उपरोक्त विवेचनसे पाठक भली भांति समझ गये होंगे कि विदेशी हुंडी, कौंसिल
बिल तथा रिवर्स कौंसिल बिल क्या हैं और उनका भारतके व्यापारसे कितना अधिक सम्बन्ध है।
साथ ही वे यह भी समझ गये होंगे कि १८ पेन्सके विदेशी विनिमयके कारण भारतके कच्चे मालके
व्यापारको कितनी हानि हो रही है। ऐसी दशामें व्यापारियोंको चाहिये कि मालका मोल स्थिर
करते समय वे इन सब बातोंका पूर्ण ध्यान रक्खें और साथ ही मालका मूल्य चुकाते समय भिन्न
भिन्न देशोंके सिक्कोंका पारस्परिक भाव भी ध्यानमें रक्खें और जिस प्रकारके सिक्केके रूपमें मूल्य
चुकानेमें सुविधा हो उसीसे भुगतान करें।

हुण्डीके सम्बन्धमें अन्य व्यवहारिक बातोंपर हम यहां कुछ भी न लिखेंगे क्योंकि सभी
बातोंको हमारे पाठक भली प्रकार जानते हैं। हमने तो ऊपरके पृष्ठोंमें केवल सैद्धान्तिक दृष्टिसे ही

विचार व्यक्त किये हैं। संसारके विभिन्न देशोंमें व्यवहृत सिक्कोंके अनुमानित विनिमयका भाव नीचे दिया है। पाठक अपने यहांके स्थानिक बैंकोंसे भाव पूछ लिया करें।

विदेशी सिक्कोंका चलतू भाव

आस्ट्रेलिया—यहांके सिक्के ग्रेटब्रिटेनके सिक्कोंके समान होते हैं।

अस्ट्रिया—(वर्तमान जूगोस्लाविया) हंगरीका प्रधान सिक्का क्रोन है जो चांदीका होता है। १०० हेलर=१ क्रोन १ क्रोन=१० पेन्स

१, २ और ५ क्रोनतकके सिक्के चांदीके होते हैं और १० तथा २० क्रोनके मूल्यके सिक्के सोनेके होते हैं।

३ बेलजियम—यहांका प्रधान सिक्का फ्रांक है फ्रांसके सिक्कोंके समान हैं।

फ्रांस—यहांका प्रधान सिक्का फ्रांक है।
१०० सेन्टिमूस=१ फ्रांक
१ फ्रांक=९१⁄₂ पेन्स

जर्मनी—यहांका प्रधान सिक्का मार्क है।
१०० फेनिङ्ग=१ मार्क
१ मार्क=२१⁄₄ पेन्स

इटली—यहांका प्रधान सिक्का लिरा है।
१०० सेन्टसिमी=१ लिरा
१ लिरा=९१⁄₂ पेन्स

स्वीडेन—यहांका प्रधान सिक्का क्रोन है।
१०० ओर=१ रिक्स डेलर या क्रोन
१ क्रोन=१ शि० ११⁄₄ पेन्स

रूस—यहांका प्रधान सिक्का रूबल है जो चांदीका होता है।
१०० कोपेक्स=१ रूबल
१ रूबल=२ शि० ११⁄₂ पेन्स

हालेण्ड—यहांका प्रधान सिक्का फ्लोरिन है।
१०० सेन्ट=१ फ्लोरिन
१ फ्लोरिन=१ शि० ८ पेन्स

डेनमार्क—यहांका प्रधान सिक्का क्रोन है।
१०० ओर१ क्रोन
१ क्रोन१ शि० ११⁄₄ पेन्स

नार्वे—यहांका प्रधान सिक्का क्रोन है। यहांके सिक्के डेनमार्कके सिक्कोंके समान होते हैं।

फारस—यहांका प्रधान सिक्का क्रान है।
२० शाही=१ क्रान
१ क्रान=१० पेन्स

संयुक्त राज्य अमेरिका—यहांका प्रधान सिक्का डालर है। १०० सेन्ट=१ डालर
१ डालर=४ शि० ११⁄₄ पेन्स

चीन— यहांका प्रधान सिक्का यूआन है।

१ यूयान=१ शि० ८ पेन्स

जापान—यहांका प्रधान सिक्का येन है।

२०० सेन=१ येन १ येन=२ शि० ½ पेन्स

विदेशी सिक्कोंका चलन

बृटेन—यहांका प्रधान सिक्का पौण्ड है।

१२ पेन्स=१ शि० २० शि०=१ पौ

भारत—यहांका सिक्का रुपया है

१ रुपया=१८ पेन्स

ऊपर दिये गये विभिन्न देशोंके सिक्कोंका मूल्य विदेशी विनिमयकी सुविधाके लिये हम बृटेनके व्यवहृत सिक्के पौ० शि० पेन्सके रूपमें ही देनेकी चेष्टा की है।

संसारमें विदेशी हुण्डीका सबसे बड़ा एवं प्रधान बाजार लंदन है। अतः वहां चलने वाले सिक्कोंके साथ अन्य देशोंके सिक्कोंका पारस्परिक विनिमय यहां दिया गया है।

निर्यातके सम्बन्धमें अन्तिम निष्कर्ष

पहलेकी अपेक्षा भारतके निर्यात व्यापारमें अवश्य ही वृद्धि हुई है पर इसमें अधिक पूंजी विदेशियोंकी ही लगी है। भारतकी साधारण जनता विदेशी पूंजीके बल चलनेवाले भारतके निर्यात् व्यापारको उन्नतिकी ओर बढ़ानेमें अपना खून पसीनेकी भांति बहा रही है। भारतके कच्चे मालके प्रधान खरीदारोंके साथ भारतका व्यापार स्वतंत्र रूपसे सीधा चलने लगा तो फिर बृटेनको बीचमें हाथ डालकर अकारण उसका भार अधिक करनेकी आवश्यकता ही न रह जायगी और साथ ही भारतकी उपजको संसारके बाजारोंमें घूम घूम कर बेंचनेके कामसे भी बृटेन सहज ही छुटकारा पा जायगा। ऐसा करनेसे भारत भी सीधे मार्गसे अपनी बेची हुई उपज का मूल्य वसूल कर इकट्ठा कर सकेगा और बृटेन आदिसे तैयार माल मंगानेके लिये रुपया संग्रह कर लेगा और भुगतान भी समयपर दे सकेगा।

योरोपवाले अपने कारखानोंसे पक्का माल तैयार करनेके लिये कच्चे मालपर सर्वरूपेण निर्भर रहते हैं। यह कच्चा माल साराका सारा ही बाहरसे योरप आता है। अतः कच्चा माल उत्पन्न करने वाले देशोंको अपना माल सस्ते भावपर बेच डालना वास्तवमें प्राण संघातक ही सिद्ध होगा। क्योंकि उन्हें अपना सस्ता माल बेच कर मंहगा माल तो खरीदना ही पड़ेगा। पर बड़े ही खेदकी बात है कि भारतके शुभेच्छु बनने वाले कितने ही ऐसे लोग हैं जो भारतको बलात् 'इम्पीरियल प्रिफरेन्स' नामक कड़ी जंजीरसे जकड़ कर कस रहे हैं और चाहते हैं कि इस नीतिके अनुसार वह अपनी नीति संकुचित करले और एक सीमाबद्ध क्षेत्रमें ही अपना कच्चा माल बेचा करे तथा अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये तैयार माल भी उसी निश्चित परिमित क्षेत्रसे खरीदा करे पर यहां हम इस विवादको विस्तृत रूपसे छेड़ना नहीं चाहते पर इस सम्बन्धमें इतना तो अवश्य ही कहेंगे और भारत राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे जोर देकर कहेंगे कि भारतके निर्यातके सम्बन्धमें विदेशी बाजारोंको सीमाबद्ध करनेमें भारतके औद्योगिक

विकाससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। हां कच्चे मालका मोल कम करनेमें माल उत्पन्न करने और बेचने वालोंकी जेबपर जो हमला करनेका घातक परिणाम होगा वह अवश्य ही इसी नीतिका प्रतिफल सिद्ध होगा।

भारतमें तैयार किये जानेवाले और बाहर भेजे जानेवाले मालकी क्वालिटी अवश्य ही अच्छी होनी चाहिये। इससे विदेशके बाजारोंमें उसे प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और साथ ही भारतके घरेलू उद्योग धन्धोंको भी उत्थानकी ओर बढ़नेके लिये बल मिल जायगा। अन्तमें इस प्रसंगपर हम यही कहेंगे कि भारतका पक्ष सुदृढ़ है। क्योंकि उसके पास यथेष्ट माल है। और वह जहां चाहे उसे बेंच सकता है। रह गयी इम्पीरियल प्रिफरेन्सकी बात जो वास्तवमें भारतकी वर्तमान परिस्थितिमें अवश्य ही प्राणघातक है फिर भी शान्ति और सुविधाकी दृष्टिसे आयात् कर सम्बन्धी लाभ भी इससे उठाया जा सकता है।

भारत की गृह सम्पत्ति

Commercial Products of India.

जूट

जूट

संसारके औद्योगिक क्षेत्रमें रेशेदार पदार्थोंकी उपयोगिताकी दृष्टिसे रुईका स्थान सबसे श्रेष्ठ है। इसके बाद यदि किसी रेशेदार पदार्थका स्थान है तो वह जूटका। जूट एक प्रकारके पौधोंके रेशोंको कहते हैं। ये पौधे एशिया, अफ्रीका और अमेरिकाके विस्तृत भूभागमें मिलने वाले कई प्रकारके पौधोंसे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। फिर भी ये पौधे खेतोंमें बोये जाते हैं और जंगली हालतमें भी मिलते हैं। अतः दोनोंमें यदि कोई प्रकट अन्तर है तो केवल इतना ही, नहीं तो दोनों प्रकारके पौधोंमें वनस्पति शास्त्रकी दृष्टिसे कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। जंगली पौधोंका व्यवसायिक क्षेत्रमें कोई स्थान नहीं है। केवल खेतमें बोये जाने वाले पौधोंके रेशे ही कामकी वस्तु सिद्ध हुए हैं और इन्हींको जूट शब्दसे सम्बोधित किया जाता है। संसारकी विभिन्न भाषाओंमें जिन जिन शब्दोंसे इस रेशेदार पदार्थको सम्बोधित किया जाता है वे सभी एक ही सूत्रसे निकले हुए प्रतीत होते हैं।

जूटके नाम

अंग्रेजी भाषामें 'जूट' और इसके साहित्य में इसके लिये (*Jews mallow*) 'जूज़ मेलो' शब्द भी प्रयोग किया गया है। फ्रेंच भाषामें 'जूट' या Mauve des Juifs अथवा Corde Textile कहते हैं। जर्मन भाषामें इसे जूट कहते हैं। इसी प्रकार भारतकी देशी भाषाओंमें इसके लिये 'पाट,' झूट ; झोटो ; झूटो, आदि शब्द भी आये हैं। संस्कृत साहित्यमें इसके लिये 'पाट' जूट और जटा शब्दका प्रयोग पाया जाता है। सम्भवतः संस्कृत भाषाके 'झट' शब्दसेही इसकी उत्पत्ति हुई होगी। इस सम्बन्धमें बाबू रमेशचंद्रदत्त और कैम्ब्रिज विश्व विद्यालयके प्रसिद्ध अध्यापक

स्कीटका भी यही मत है। केम्ब्रिजकी फिलासोफिकल सोसाइटीमें व्याख्यान देते हुए प्रो॰ स्कीटने एक बार इस शब्दकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्रकाश डाला था। आपने संस्कृतके 'जट' शब्दकी विस्तृत व्याख्या कर सिद्ध किया था कि इस शब्दसे स्वाभाविक तीन अर्थ निकलते हैं जिसमें अंग्रेजी भाषामें व्यवहृत जूट शब्दके अर्थका पूरा बोध हो जाता है।

जूटके प्रकार और उनका देश विशेषसे सम्बन्ध

हम पहिले लिख चुके हैं कि ये पौधे दो प्रकारके होते हैं जिनमेंसे एक वे जो जंगलोंमें स्वेच्छासे उत्पन्न होते हैं और दूसरे वे जो खेतोंमें बोये जाते हैं। जंगली पौधोंके सम्बन्धमें हम चर्चा करना उपयुक्त नहीं समझते क्योंकि व्यवसायिक क्षेत्रमें इनका कोई मूल्य नहीं है। हम केवल खेतोंमें बोये जाने वाले पौधोंकी ही यहां चर्चा कर रहे हैं। ये पौधे भी दो प्रकारके होते हैं। इनका आकार प्रकार सामान्यतया एक सा होता है और दोनोंमें एक होसे फूल भी आते हैं। अतः इनकी आकृतिको वाह्य दृष्टिसे देखकर दोनोंके पारस्परिक अन्तरको पहिचानना कठिन है। इनके फलोंको देख कर ही पौधोंके अन्तरको पहिचाना जा सकता है।

जिन देशोंमें इन पौधोंकी खेतीकी जाती है उनकी चर्चा करते हुए श्रेसुचनीडरने अपना मत व्यक्त किया है। आप (Brelsch neider) का मत है इस जातिका एक पौधा चीनके निङ्ग-पो Ning-po के विस्तृत मैदानमें अधिकतासे पाया जाता है। इसके रेशोंसे चीनवाले चावल और अन्य प्रकारके अनाज भरनेके लिये बोरे बनाते हैं। इसी प्रकार टिनसिन (चीन) Tientsin के मैदानमें उत्पन्न होनेवाले पौधेमें यह एक प्रधान है। इसकी लम्बाई भी बहुत होती है। चीन स्थित क्यू Kew के वनस्पति उद्यानमें रक्षित रक्खे गये पौधों और उनके रेशोंसे प्रकट रूपसे सिद्ध होता है कि आजकल जूटके मिलने वाले पौधे टिनसिनमें मिलनेवाले पौधोंकी ही जातिके हैं।

भारतमें मिलनेवाले जूटके पौधे यदि कहीं प्रधान रूपसे मिलते हैं तो बंगाल और आसाममें। भारतका यह भूभाग चीनकी कितनी ही विशेषताओंका विचित्र संग्रहालय है। यहांकी भौगोलिक साम्य अवस्थाके अतिरिक्त यहांके लोगोंकी कितनी ही रस्म रिवाजें भी वहांकी रस्म रिवाजोंसे बहुतकुछ मिलती हैं। खान पानमें भी साम्य भावकी पर्याप्त झलक है। जल वायुकी समानता यहांकी एक सा प्रभाव डालती है। ऐसी दशामें वनस्पति शास्त्रके विशेषज्ञोंकी मतानुमोदित तर्क पद्धतिके बल कहा जा सकता है कि हो न हो बंगालमें उत्पन्न होनेवाले पाटके पौधे चीनसेही लाये गये हों। कलकत्तेके रोयल बोटेनिकल गार्डन नामक वनस्पति उद्यानके संस्थापक और संचालक श्रीयुत राक्सबर्ग Mr. Roxburgh का मत है कि लाल रंगका पाट बंगालमें अधिक उत्पन्न होता है। इस पौधेके बीज चीनके केन्टन नगरसे मंगाये गये थे।

चीनमें उत्पन्न होनेवाले पौधेके रेशेसे तैयार होनेवाला जूट भी ऊंची श्रेणीका होता है। इसके सम्बन्धमें रमफिरस Rumphius का मत है कि बंगाल, अराकान, और दक्षिण चीनमें जूट अधिक उत्पन्न होता है। बंगालकी चर्चा न कर चीनके सम्बन्धमें आप लिखते हैं ※ कि इस रेशेसे उत्तम सफेद सूत ऐंठा जाता है जो रुईके सूतसे कहीं अधिक मजबूत होता है परंतु यह प्रायः झुका हुआ रहता है। इसपर चूनेके पानीका प्रयोग किया जाता है'। रही इसकी उपजकी बात वह भी सरकारी कागजोंसे पता चलता है कि सन् १६०३ ई०में अकेले टिनसिन (चीन) से ४० हजार हण्डरवेट जूट विदेश भेजा गया था।†

इतने प्रमाणिक परिशीलनके पश्चात भी यह सिद्ध नहीं किया जा सकता है कि क्यूके वनस्पति उद्यानमें रक्षित नमूनेके पाटके पौधे भारत, मलाया, चीन या जापान किसी भी देशमें जंगली अवस्थामें पाये जाते हैं। ऐसी अवस्थामें औद्योगिक क्षेत्रमें जिनकी उपयोगिता प्रमाणित हो चुकी है उन्हीं दो प्रकारके बोये जाने वालों पौधोंकी चर्चा होती है।

जूटपर वैज्ञानिक दृष्टि

'जूट' के सम्बन्धमें वैज्ञानिक खोज करनेवालोंमें क्रास और बीवान ही ऐसे वैज्ञानिक हैं कि जिन्होंने सबसे अधिक परिश्रम किया है। आप लोगोंने अपनी खोजका तत्त्वांश प्रकाशित करते हुए सन् १८८६ई० के 'जर्नल आफ दि केमिकल सोसाइटी' (Journal of the chemical Society) नामक प्रतिष्ठित पत्रमें जो मंतव्य व्यक्त किया था उसके आधारपर ही हम यहां कुछ बातों की चर्चा प्रसंगवश कर देना उचित समझते हैं। 'जूट' की रासायनिक सारिणी C_{12}, H_{18}, O_9 अर्थात् C= 47·0; H=6·0; O=47·0 है। इसमें सेल्यूलूजका अंश ७८-८० प्रतिशत और गैर-सेल्यूलूजका २०-२२ प्रतिशत है। रसायन शास्त्रसे अनुराग रखनेवालोंके लिये यह विश्लेपण इस प्रकार है। सेल्यूलूज $3\ C_6\ H_{10}\ O_{15}$ और गैर सेल्यूलूज $C_6\ H_6\ O_3$ है।

'जूट' बहुत ही सुकुमार वस्तु है। इस पर दुर्बल रासायनिक पदार्थका प्रभाव भी बिना पड़े नहीं रहता। पानीमें भीगनेके बाद उष्णता और वायुका संसर्ग जहां एक बार पहुंचा कि यह खराब हो गया। पौधेके डंठलमें ६ से २० तक जूटके रेशे मिलते हैं जो परिमाणुवादके सिद्धान्तानुसार परस्पर मिले हुए पाये जाते हैं। जूटके रेशोंकी लम्बाई वैज्ञानिकोंने १·५ से ३ मीलीमीटरतक निश्चित की है। जूटके जिन रेशोंका रंग गहरा और तम्बाकूके समान होता है उनमें 'आयोडीनके' अंशका आभास रहता है। और जिनपर गहरा पीला रंग रहता है उनमें ऐनी लाइन सल्फेटका अधिक अंश माना

※ देखिये *Commercial products of India by Sir George Watt*

† देखिये *Board of Trade Journal* की सन् १६०३ के २६ अक्टूबर वाली प्रति।

जाता है। जूटके जिन रेशोंपर बैंजनी रंग मालूम पड़ता है उनमें फ्लोरोग्लूकोल और हाइड्रो-क्लोरिक एसिड (Phloroglucol & Hydrocloric acid) का अंश पाया जाता है। गहरे * अलकलीजके पानीमें जूटके रेशे भिगोने पर उनमें कौतूहलपूर्ण परिवर्तन देखा जाता है। उपरोक्त संमिश्रित पदार्थोंका सम्पर्क होते ही जूटके रेशे फूल उठाते हैं और कोमल हो जानेके बाद टहनदार घुंघराली आकृतिके हो जाते हैं जो देखनेमें† ऊनके समान मालूम होते हैं। इस प्रयोगके किये हुए रेशोंको 'मरसराइज्ड' रेशे कहते हैं।

जूट में सेल्यूलूजका भाग उसी परिमाणमें मिलता है कि जिस परिमाणमें वह इसी प्रकारके फ्लैक्स आदि अन्य पौधोंके रेशोंमें पाया जाता है। 'जूट' में ६·६३ प्रतिशत जलका अंश पाया जाता है। उबाले जानेके बाद जूट १·१ प्रतिशत खारका भाग निकाल देता है अर्थात् जूट का वजन इतना कम हो जाता है। यदि 'जूटको कास्टिक सोडा (1% Na_2O) में डालकर ५ मिनटतक उबाला जाय तो उसका वजन १३ ३ प्रतिशत कम हो जायगा और १ घन्टेतक उबाला जाय तो १८·२ प्रतिशत वजन कम हो जायगा। यदि 'जूट' को चमकदार बनानेके लिये मरसराइज करनेकी विधिके अनुसार सल्यूशन आफ कनसेन्ट्रेटेड अलकलीज (33% Na_2O) में उबाला जाय तो वह ११·० प्रतिशत वजनमें कम हो जायगा। इस खारमें उबलनेसे रेशे मुलायम और चमकदार हो रेशमके समान मालूम होते हैं। जूटमें कार्बनका अंश ४७ प्रतिशत है। यदि इसपर रासायनिक प्रयोग किये जाय तो यह सन और ऊनकी नाईं मालूम हो सकता है। जूट और सनमें वैज्ञानिक दृष्टिसे‡ अन्तर आवश्य है।

जूटका व्यवसाय क्षेत्रमें प्रवेश

व्यवसाय क्षेत्रमें 'जूट' का प्रवेश तीन रूपमें होता है जो इस प्रकार है।

(१) खुला जूट ३० से ४० सेरतकके गठ्ठोंमें बांधकर बाजारमें बिकनेके लिये आता है और कम्पनीवाले गाठ बांधनेके लिये उसे बाजारमें खरीदते हैं जूट प्रेसमें ले जाकर बांध डालते हैं।

(२) 'कच्ची गाठ' के रूपमें भी जूटका व्यवसाय होता है। कच्ची गाठ कभी कभी हाथसे

---

* Solution of Concentrated Alkalies

† देखिये Cross, Bevan, Kels and Watt, Report on Indian Fibres, 36

‡ इनके वैज्ञानिक विश्लेषणका परिमाण इस प्रकार है

	जूट	सन
Water (Hygroscopic)	9·93	9·60
Aqueous extract	0·36	2·82
Fat and wax	0·68	0·55
Incrusting and Pigment Matter	24·41	6·41
Cellulose	64·24	80·0

मतलब जहां सेल्यूलूजका ८० प्रतिशत अंश है वहां जूटमें उसका ६४ ही प्रतिशत है

दबा दबाकर बांधी जाती है और नहीं तो यंत्र द्वारा जूट प्रेसमें बांधी जाती है। जो हाथसे बांधी है वह कच्ची गांठ ३१ मनके लगभग वजनमें होती है और जो यंत्र द्वारा बांधी जाती है वह क गांठ ३१ से ४ मनतक की होती है। कच्ची गांठ विदेश नहीं जाती।

पक्की गांठ—वजनसे ४ सौ रतलकी होती है। यह यंत्र द्वारा ही बांधी जाती है। अ इसका आकार भी नियमित रहता है। पक्की गांठका आकार १०१ घन फुटका होता है। विदेश भेजने लिये ही यह ऐसी बांधी जाती है।

जूटकी गाँठ और श्रेणी

रेशे सूख जानेके बाद गट्ठे बांधकर जूट पासकी बाजारमें बिक्रीके लिये लाया जाता है। सौदागर लोग जूटको मोल लेकर पासके जूट प्रेसमें गांठ बांधनेके लिये भेज देते हैं। वहां जूटकी छटाई ऊंच नीच श्रेणीके अनुसार की जाती है। जूटकी श्रेणी स्थिर करनेका आधार प्रायः उसकी चमक, मुलायमपन, रंग और रेशोंकी बारीके ऊपर रहता है। जूटके सम्बन्धमें प्रायः यह रुढ़ि-सी पड़ गयी है कि जितने फूल देरसे निकलें अर्थात् सितम्बरमें वह उत्तम, और सबल माना जाता है। सबसे अच्छा माल वह माना जाता है जो उपरोक्त गुणोंके साथ ही लम्बा भी अधिक हो। इस प्रकार मालको छांट लेनेके बाद उसके दोनों सिरे काटकर अलग कर दिये जाते हैं और केवल बीचका भाग जूटके रूपमें गांठ बांध डाला जाता है इसके बाद व्यवसायियोंके संकेत चिह्नको डालकर उसकी व्यवसाय सम्बन्धी श्रेणी भी स्थिर कर दी जाती है। गांठ बांध जानेके बाद दो प्रकारका माल रह जाता है। जो निकम्मा और टुकड़ाके नामसे सम्बोधित किया जाता है।

निकम्मा—वह माल है जो किसी कारणसे खराब हो गया हो या अधिक टूट गया हो। अथवा बार बार भोड़नेके कारण उसपर गांठें अधिक पड़ गयी हों। इस प्रकारका जूट नीचेकी श्रेणीका माल बनानेके काममें आता है।

टुकड़े—यह वह जूट है जो गांठ बांधते समय दोनों सिरोंके काट डालनेपर निकलता है या अच्छा माल चुननेके समय खराब समझकर अलग कर दिया जाता है। इस प्रकारके जूटसे छांटे गये अच्छे टुकड़े बोरे बुनते समय बानेके रूपमें काम आते हैं। यही टुकड़ोंका कागज बनता है। फिर भी व्यवहारकी दृष्टिसे इन दोनों प्रकारके जूटमें और अच्छे जूटमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता क्योंकि आधुनिक युगकी समुन्नत यंत्र सामग्री द्वारा भद्दे से भद्दे प्रकारके जूटका अच्छा माल तैयार किया जाता है।

भारत और जूटके औद्योगिक [illegible] विकास

जूटकी उपयोगितासे भारतीय बहुत प्राचीन कालसे परिचित थे पर जूटके औद्योगिक [illegible] भारतमें आरम्भकाल बृटिश शासनकालके आरम्भसे ही माना जाता है। अतः जूटके

औद्योगिक जीवनकी आयु भी उतनी ही मानी जाती है कि जितनी वृटिश शासनकाल की।

जबसे योरोपकी जलयानकलाने अपनी उन्नतिकी ओर भिन्न २ देशोंमें उत्पन्न होनेवाले मालका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रारम्भ हुआ तबसे उस मालको इधर उधर भेजनेके लिये चट्टी, बोरे, तथा जूटके बने हुए पदार्थोंकी मांग बढ़ी। इससे भारतकी जूटकी खेती तथा बोरेके व्यवसायको बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। ज्यों ज्यों मालकी मांग बढ़ी त्यों त्यों मालका मोल भी बढ़ा और व्यवसायकी उन्नतिकी सीमा न रही। यह परिस्थिति १९ वीं शताब्दीके आरम्भ कालकी है। योरोपमें यांत्रिक शक्तिका चमत्कार फैल चुका था अतः वहांवाले मानवीय पौरुषकी लम्बी दौड़में मानवकरबलको मानव मस्तिष्क बलसे होड़ लगानेपर तुल गये।

भारतके बढ़ते हुए जूट व्यवसायको बृटेनके पूंजीलोलुप व्यवसायी न देख सके और उन्होंने इस ओर विशेष रुपसे ध्यान देना आरम्भ कर दिया। जूटकी खेती करनेमें वे सर्वथा असमर्थ थे अतः यंत्रों द्वारा जूट कातने और बुननेकी चेष्टामें उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा दी। उधर रुससे आनेवाले हेम्प और फ्लैक्सके रेशोंके स्थानपर दूसरे प्रकारके रेशोंको व्यवहारमें लानेकी चेष्टा धीरे धीरे जोर पकड़ रही थी। इस प्रकार दूनी चेष्टासे उद्योग आरम्भ हुआ। भारतमें काम करने वाली ईस्ट इण्डिया कम्पनीके एजेन्ट स्थान स्थानसे जो रेशे संग्रहकर वैज्ञानिक परीक्षाके लिये ब्रिटेन भेजते थे उन रेशोंमें जूट प्रधान रुपसे परीक्षाका लक्ष्य माना गया फलतः सर्वप्रथम रस्से आदि बनानेके लिये ही जूट उचित समझा गया। इस प्रकार थोड़ा थोड़ा जूट कभी कभी ब्रिटेन पहुंचने लगा। और जूटके मिलनेपर उसके कातने और बुननेके सम्बन्धमें खोज करनेकी सुविधा वहांवालोंको अनायास ही मिल गयी।

संसारमें बोरोंकी मांग बढ़ी। भारतीय अपना पल्ला जोरदार समझकर अच्छा लाभ उठा रहे थे कि योरोपसे यंत्रों द्वारा तैयार होनेवाले सस्ते बोरोंका प्रसार आरम्भ हुआ। जिस विश्व बाजारमें भारतीय जूटके मालका एकमात्र राज्य था उसमें दूसरे भी घुसे और बातकी बातमें भारतके इस उद्योगको भारी धक्का पहुंचा। ज्यों ज्यों भारतके बने हुए बोरोंकी मांग कम होने लगी त्यों त्यों जूटके उद्योगमें लगे हुए किसानोंकी चिन्ता बढ़ने लगी। जूट कातने और बुननेवाले बेकार हो गये। उन्होंने देखा कि यंत्रोंका सामना करनेमें कोई बुद्धिमानी नहीं अतः जूटकी खेतीमें ही सारी सामर्थ्य लगा देनेपर वे उतारु हो गये। भारतीयोंके उद्योगका चौपट होना स्काटलैण्डके कारखानोंको और सुदृढ़ बनाना था। यहां श्रम बन्द हुआ और वहां श्रम और बढ़ गया। जूटकी मांग भी साथ ही बढ़ी। यहांके किसानोंकी खेती चमकी और स्काटलैण्डके कारखानोंकी आवश्यकता पूरी हुई। यहांकी सारी शक्ति स्काटलैण्डके कारखानोंको समुन्नत करनेके लिये लगा देनी पड़ी।

इंडीका उद्योग मजबूत हो उन्नतिके ऊंचे शिखर पर जा पहुंचा। यह अवस्था सन १८५४ ई० तक रही। अभी तक योरोपियन ढंग पर भारतमें कारखाने खोलनेका विचार किसीने नहीं किया था। परन्तु क्रीमिया युद्ध और अमेरिकन सिविल वारसे डंडीके ऐश्वर्यकी कल्पनाकी दौड़से अधिक सम्पत्तिशाली हुआ देख भारतकी सस्ती मजदूरी और स्वल्प धन साध्य उद्योगकी ओर लोगोंका ध्यान जाना कुछ आश्चर्यकी बात न थी। अतः सीलोनके काफीके एक प्रसिद्ध व्यापारी मि० जार्ज आकलैंडने भारत आकर सेरामपुरके पास इशरामें 'दि इशरा यार्न मिल्स' नामसे पहिला कारखाना सन् १८५४ ई० में खोला। यहां जूट कातनेका कार्य आरम्भ हुआ। सफलता मिलना निश्चित थी अतः कारखाना शीघ्र उन्नति करने लगा। आज यही वेलिङ्गटन मिल्सके नामसे प्रख्यात है। सन् १८५७ ई० में बोर्नियो द्वीपकी एक कम्पनीने, जिसका नाम बोर्नियो कम्पनी लि० था एक कारखाना और खोला जो आज बारानगर मिल्सके नामसे प्रसिद्ध है। सन १८६२-६५ ई० मे गौरीपुर जूट फैक्टरी की स्थापना हुई। इसके बादसे ही जूट कातने और बुननेके व्यवसायने भारतमें भी उन्नति करनी आरम्भ की और थोड़े ही समयमें कलकत्तेके पास बहुत बड़ी संख्यामें जूट मिल खुल गये। फल यह हुआ कि भारतका बना हुआ माल भी जोरोंसे विदेश जाने लगा। जिसका प्रमाण सन् १८६८-७० ई० के व्यवसायी अङ्कोंसे मिलता है। उस वर्ष ६,४४१,८६३ बोरे विदेश भेजे गये थे। इस प्रकार डंडीसे प्रतियोगिता करनेका विस्तृत क्षेत्र खुल गया। भारतके कारखाने घरकी मांग तो पूरी करते ही थे पर वे विदेशको भी माल भेजते थे। यह होते हुए भी जूटकी मांग कम नहीं हुई। इस प्रकार भारतमें जूट मिल स्थापित करनेका कार्य आरम्भ हुआ और इसकी उन्नति इतनी अधिक हुई कि गत ६० वर्षोंमें इनकी संख्या केवल कलकत्तेमें ही ८४ की हो गयी। ये ८४ जूट मिल ५६ कम्पनियोंकी देख रेखसे संचालित होते हैं। प्रथम जूट मिलमें जहां प्रति दिन ८ टन माल तैयार होता था वहां आज प्रति दिन ४६०० टन माल तैयार होता है और ८ हजार मीलसे अधिक लम्बा जूटका माल बुना जाता है। इस प्रकार भारतकी जूट मिलें अपनी उन्नति करती जा रही हैं।

भारतके जूट प्रेस

माल बनानेके लिये जूटको कारखानों तक पहुंचानेकी सुविधाकी दृष्टिसे जूटकी गांठ बांधनेकी आवश्यकता होती है। इस लिये भारतमें जूट प्रेस भी बहुत बड़ी संख्यामें हो गये हैं। इन जूट प्रेसोंमें दो प्रकारकी गाठें बांधी जाती हैं जो कची और पक्की गांठके नामसे प्रसिद्ध हैं। कची गांठ केवल एक स्थानसे दूसरे स्थान तक माल पहुंचा देनेके लिये होती है यह व्यवस्था स्वदेशके अन्दरकी है। परन्तु विदेश जानेवाले जूटकी गांठ तो पक्की ही बांधी जाती है। इसका वजन ४०० रतलका होता है और बारदानके साथ ४०५ रतलकी होती है फिर भी जहाज पर नियमित स्थान घेरनेके लिये

जूट निर्यातके भारी परिमाणको देखते हुए भी यह कुछ कम आश्चर्य नहीं है कि विदेशी जूट भी भारत आता है। यह प्रायः सीलोनसे आता है और इसे बंगाल प्रान्त खरीदता है। बृटेन, हाङ्गकाङ्ग, स्ट्रेटसेटलमेन्ट, तथा इटलीसे यहां टाट आता है। जूटकी बनी हुई किर्मिच बम्बई वाले बृटेनसे मंगाते हैं।

बंगाल और जूटका उद्योग

जूटके औद्योगिक स्वरूपका पूर्ण अनुभव मिल जानेपर यह सहजमें सिद्ध हो जाता है कि जहां भारतके सम्पत्ति भण्डारका जूट एक बहुमूल्य रत्न है वहां वही जूट बंगालप्रान्तकी उपज और आय का अत्यन्त प्रयोजनीय अंग भी है। बंगाल प्रान्तमें जूटके औद्योगिक विकासका शैशवकाल सन् १८२८ ई० से आरम्भ माना जाता है। इसके पूर्व इस प्रान्तमें जूटकी खेती अवश्य होती थी परन्तु उसकी उपज केवल प्रान्तकी ही आवश्यकताकी पूर्ति करनेके कामकी मानी जाती थी। इसके बाद जहां इसका निर्यात् आरम्भ हुआ कि पलक मारते इसने विश्व बाजारमें अपनी उपयोगिताका रहस्य प्रकट कर दिया। इसकी मांग क्रमशः बढ़ने लगी और प्रान्तके जूट व्यवसायकी उन्नतिका पहिया उन्नतिके पथपर द्रुत गतिसे दौड़ चला। आज इसकी यह अवस्था है कि यह पदार्थ प्रान्तकी आय का ही नहीं वरन समस्त भारतकी आयका प्रधान कारण हो रहा है। इसकी आयसे असंख्य जनताका भरणपोषण होता है। देश विदेशके व्यवसायियोंके पेट भरे जाते हैं। जूटकी बढ़ती हुई मांग और उसका अनमोल भाव पर बिकना तथा इन्हीं कारणोंसे बंगाल प्रान्तमें इसकी खेतीका अत्यधिक प्रसार होना आदि बातें कभी विचारवानोंसे छिपायी नहीं जा सकतीं। संसारके औद्योगिक क्षेत्रमें जूटके वर्तमान गौरव गर्वित स्थानका आभास प्रान्तके व्यवसाय सम्बन्धी प्रकाशित किये जानेवाले अनुमानित अंकोंसे ही स्पष्ट हो जायगा। भारतके सम्पूर्ण निर्यात्का ¼ वां भाग केवल जूटके निर्यातका है अतः बंगाल प्रान्तका जूट भी भारतकी आयका बहुत बड़ा भाग है। इसी प्रकार प्रान्तमें होनेवाली जूटकी खेतीमें भी आज आकाश पातालका अन्तर दिखायी देता है। उपलब्ध अंकोंके अनुसार यह भी जाना जा सकता है कि जहां बंगाल प्रान्तमें एक समय सन १८७६ से १८८० ई० के बीच जूटकी खेतीका औसत ८,६१,६७१ एकड़ भूमिका था वहां अब जूटकी खेतीका बंगाल प्रबल क्षेत्र माना जाता है। जहां सन १८२८ ई० में इस प्रान्तने ३६४ हण्डरवेट जूट विदेश भेज कर ६२०) वसूल किये थे वहां बादके ५० वर्षमें ही यह प्रान्त अपना जूट विदेश, भेजकर ५ करोड़से अधिककी रकम वसूल करने लग गया था और आजकी तो बात ही क्या है। सन् १९२६-२७ में इस प्रान्तने जूटके द्वारा ८८ ½ करोड़से अधिककी रकम विदेशसे वसूल की। जहां सन् १८५५ ई० में इस प्रान्तमें १ जूट मिल था वहां आज सन् १९२८ ई० में जूट मिलोंकी संख्या ८४ है जो ५४

कम्पनियों द्वारा संचालित की जाती हैं। इनमें ४८०० टन माल प्रतिदिन तैयार होता है जिस
लम्बाई ८ हजार मीलसे अधिककी बैठती हैं। इसी प्रकार जहां सन् १८८६ ई० में इस प्रान्तके जू
मिलोंमें केवल ६८४१ करघे काम करते थे वहां आज जूट मिलोंमें काम करनेवाले करघोंकी संख्
देखकर स्तम्भित रह जाना पड़ता है। केवल कलकत्तेकी जूट मिलोंमें जहां सन् १८५६ ई०में १९
करघे थे वहां सन् १९२७ में करघोंकी संख्या ५०,३५४ की थी और इनमें १०५८,०१
तकुए काम करते थे। इन जूट मिलोंमें काम करनेवालोंकी संख्या ३२५००० के करीब है। प्रान्त
जूट मिलोंमें ५,२०००००० पौण्डकी पूंजी लगी हुई है। यहांके मिलोंमें काम करनेवाले भारतीयों
३५ लाखसे अधिककी रकम मासिक पारिश्रमिकके रूपमें मिलती है। यह है एक चलतू दृष्टि
जूटका महत्व अतः इस महत्वपूर्ण अंगके प्रान्तसे सम्बन्ध रखनेवाले पार्श्वका परिचय देना उचि
समझते हैं।

व्यवसायकी दृष्टिसे जूटके नाम	जूटकी जातियोंके स्थानीय नाम
दौरह	१· सूत पाट, २· उधय पाट
नारायणगंज	धाल सुन्दर
सिराजगंज	बरुन
उत्तरिया	१· असुआ (शीघ्र) (२) हेडती (देरीक

किसान लोग पौधेके रंगके अनुसार बीजको नहीं छांटते। वे तो एक खेतमें भिन्न भिन्
भांति और रंगका पाट बोते हैं। उनका उद्देश्य फसलके तैयार होनेवाली अवधिसे रहता है वे जल्
जल्दी तैयार होनेवाले बीज अलग और देरसे तैयार होनेवाले बीज अलग बोते हैं। पौधेके रंग, पत्ति
और शाखोंके क्रम, और फलोंकी दृष्टिसे जूटकी जातियां इस प्रकार होंगीः—

(अ) ताना पाट

हलका हरा – बम्बइया, सिराजगंजका बड़ा पाट, मैमन सिंहका बरुन या बड़ा पाट, ढाक
का धलेश्वर, और उत्तर बंगालका हेडती (सफेद)।

बैंगनी मायल—(छोटी अवस्थामें हलका हरा और बुरा .बैंगनी मायोल) अवस्था
फरीदपुरका अनोलिया, सिराजगंजका देरावाल,

बैंगनी – फरीदपुरका मेम्पाल या लालपाट, ढाकाका अम्बिभर।

(ब) नोटा पाट

हलका हरा—ढाकाका भंगो या देवगलिया। फरीदपुरका सनमाला, भंगो या बोमी

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

बंगालका जूट व्यवसाय

जूटका भौगोलिक क्षेत्र

बंगालके भौगोलिक क्षेत्रमें वैज्ञानिक सिद्धान्तोंके आधारपर जूट उत्पन्न करनेवाले भूभागको दो प्रधान विभागोंमें विभाजित किया जा सकता है। एक तो प्रान्तका वह भूभाग जिसके बीचसे गंगाजी अपनी सहायक नदियोंके साथ बहती हैं और दूसरा वह जहासे ब्रह्मपुत्र नद अपने सैन्य समूहको साथ ले प्रवाहित होता है। इस प्रान्तके जिस भूभागसे गंगाजी निकलती हैं वह भाग समुद्री सीमाकी तुलनात्मक ऊंचाईकी दृष्टिसे नीचा है। अतः यहांपर बाढ़का पानी भरा रहता है और दूसरे गंगाजीका पानी भी मट मैला रहता है। ऐसी दशामें यहां उत्पन्न होनेवाला जूट व्यवसायकी दृष्टिसे नीचे श्रेणीका होता है। परन्तु ब्रह्मपुत्रकी ओरका भूभाग ऊंचा है और उसका जल भी स्वच्छ और वहां अधिक निर्मल रहता है अतः यहांका जूट ऊंची श्रेणीका होता है। जूटके रेशेपर भूमि और जलवायुका प्रभाव बिना पड़े नहीं रहता। अतः यह विभेद नीचे ढंगपर अधिक स्पष्ट हो जाता है।

गंगाजीके कछारका		ब्रह्मपुत्रनदके कछारका
जूट	:	जूट
१ मजबूत		१ मजबूत
२ मोटा और खुरदरा		२ बारीक और मुलायम
३ छोटा		३ लम्बा
४ रंग बदला लिये हुए		४ सफेद
५ पपड़ीदार		५ बिना पपड़ीका साफ
६ कम चमकीला		६ चमकदार
		७ अधिक वजन सहन करनेवाला। ऐं[illegible] सहन करनेवाला।

भौगोलिक परिस्थितिके अनुसार नीचे लिखे ढंगमें जूट उत्पन्न करनेवाले क्षेत्रका स्पष्ट [illegible] हो जाता है।

(अ) गंगाका कछार

नदिया मुंगेर हुगली पुरनिया

(ब) ब्रह्मपुत्रका कछार

नया ब्रह्मपुत्र, छोटा ब्रह्मपुत्र, पुराना ब्रह्मपुत्र, मेघना ढाका

जूटका व्यवसायिक क्षेत्र

बंगाल प्रान्तके जूट उत्पन्न करनेवाले भूभाग व्यवसायकी दृष्टिसे ५ बड़े भागोंमें विभाजित किये जा सकते हैं। नारायनगंज, सिराजगंज, उत्तरिया, दौवरा, देसी।

नारायन गंजी—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है जो पुराने ब्रह्मपुत्र नदसे सींचा जाता है। बंगाल भरमें कोई ऐसा स्थान नहीं कि जहांका पानी पुराने ब्रह्मपुत्र नदके समान स्वच्छ और निर्मल हो। इस भूभागमें उत्पन्न होनेवाले जूटका रंग बाजारमें आनेवाले सभी प्रकारके जूटसे अच्छा माना जाता है। यहां बरसाती पानी भरा रहता है। अतः यहांके जूटमें पपड़ी और मोटापन भी इसी कारणसे मिलता है परन्तु यहांकी ऊंची भूमिमें पैदा होनेवाला जूट सर्वोत्तम माना जाता है। यहां उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत तो हैशियन यानी अच्छे बारीक मेलके माल बनानेके योग्य होता है। यह भूमि मैमनसिंह ढाका तथा त्रिपुराके जिलेके अन्तर्गत है। यहांकी प्रधान जूट मंडी नारायनगंज और चांदपुर हैं।

सिराज गंजी—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है कि जहां होकर नदी ब्रह्मपुत्र अथवा जमुना नदी बहती है। इसका पानी पुराने ब्रह्मपुत्रकी अपेक्षा कम स्वच्छ है। फिर भी इस भूभागमें उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत हैशियन जूट होता है। यहांकी प्रधान जूट-मंडी सिराजगंज है जहां मैमनसिंहके पूर्वीय भागका तथा पबना, बोगरा, कूचबिहार, रंगपुर, और गोलपाराका माल आता है।

उत्तरिया—जूट बंगाल प्रान्तके उस ऊंचे भूभागमें उत्पन्न होता है जहांसे ब्रह्मपुत्र नद प्रवाहित होता है। इस ऊंची भूमिमें नालाबोंके पानीमें जूट धोया जाता है। अतः गंदला और रंगीन हो जानेके रण जूटके रंगपर भी उसका प्रभाव पड़ता है जिससे यह नीचेकी श्रेणीका माना जाता है। यहां उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत हैशियनका माल माना जाता है। यह भूमि राजशाही बोगरा, रंगपुर, जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर, माल्दा, तथा पुरनियां जिलोंके अन्तर्गत है। यहांकी प्रधान जूटकी मंडियां हल्दीबारी, दोमर, किसनगंज, कसबा, और फार्बेसगंज हैं।

दौवरा—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है जहांसे गंगाकी सहायक नदियां प्रवाहित होती हैं। इनका जल गंदला रहता है और यही कारण है कि यहांके जूटका रंग भी मटमैला रहता है। दौवरा जूट बहुत मजबूत होता है परन्तु पपड़ीदार होता है। यह मुख्यतया बोरे बनाने और रस्से बनानेके काममें आता है। फरीदपुर जिलेके मदारीपुर, बरहमगंज, और अंगरिया नामक स्थान दौवरा जूटकी प्रधान मंडी हैं।

देसी—जूट बंगाल प्रान्तके उस ऊंचे भूभागमें उत्पन्न होता है जो कलकत्तेके समीप है। यह

मीठा पाटकी खानिका है। यहां ऊंची भूमि होनेके कारण तालाबके जलसे काम लिया जाता है। इन तालाबोंमें भागीरथी, दामोदर और रूपनारायन नदियोंका जल रहता है जो प्रायः वर्षाऋतुमें गंदला [illegible] काममें आता है। यह [illegible] और २४ परगनेका बेलगछिया नामक स्थान इस जूटकी प्रधान मंडी है।

एक विभागमें उत्पन्न होनेवाला जूट सब एक ही श्रेणीका नहीं होता। भूमिके ऊंचे नीचेपनका प्रभाव भी उसपर पड़ता है जैसे 'जाथ' और 'जिला' जूटमें अन्तर माना जाता है। दोनों एक ही विभागके अन्तर्गत उत्पन्न होते हैं। परन्तु 'जाथ' जूटका रेशा बारीक, मजबूत, लम्बा, चमकदार और दूधके समान उज्वल होता है और 'जिला' जूटका रेशा मोटा, सुर्दग, और नीची श्रेणीका होता है। इसका कारण यह है कि 'जाथ' ऊंची भूमिमें उत्पन्न हुआ जूट है और "जिला" नीची तथा समतल भूमिकी उपज है।

जूट व्यवसायकी दृष्टिसे दो प्रकारका है गंगाजीके कछारका और ब्रह्मपुत्रके कछारका।

१ गंगाके कछारमें ४ किस्में।

१ मदारीपुर, २ जेसोर, ३ पुरनियां, ४ देसी

२ ब्रह्मपुत्रके कछारमें ४ किस्में।

१ जाथ, २ जिला, ३ उत्तरी, ४ तोशा

स्मरण रहे कि उपरोक्त प्रकारोंका सम्बन्ध गांठ बांधनेके समय होनेवाली रेशोंकी छटनीसे कुछ नहीं रहता। क्योंकि उपरोक्त प्रकारोंमें किसी भी प्रकारके रेशोंमेंसे रेशोंकी श्रेणीके आधारपर छटनी नहीं होती है। जैसे जाथ या जिला जूटके प्रकारमेंसे नं० १,२,३ आदि श्रेणियोंका माल अलग२ छांटकर बांधा जाता है।

जूटके रेशे और व्यवसायिक दृष्टिसे उनकी श्रेणीका चुनाव।

व्यवसायकी दृष्टिसे जूटके रेशोंका चुनाव उनकी मजबूती, लम्बाई, रंग, चमक और बारीकीके आधारपर किया जाता है। यह ६ प्रकारके रेशोंकी श्रेणीमें विभाजित किया जा सकता है।

१ हैसियन ताना, २ हैसियन बाना, ३ बोरेका ताना, ४ बोरेका बाना ५ निकम्मा और ६ टुकड़ा।

हैसियन ताना वाले जूटका रेशा मजबूत, लम्बा, स्वच्छ, बारीक, चमकीला और चांदीके समान सफेद होता है; इसे कातनेके काममें लेते हैं। यह माल सर्वोत्तम माल माना जाता है।

हैसियनका बाना वाला रेशा पहिले प्रकारके रेशोंसे कुछ नीचेकी श्रेणीका होता है। इसकी सब बातें वैसे ही रहती हैं केवल लम्बाई और चमक कुछ कम होती है।

वर्तमानमें इस फर्मके कारबारको रा० ब० बैजनाथजी गोयनकाके पुत्र बाबू केदारनाथजी गोयनका संचालित करते हैं। आपका जन्म ३० अक्टूबर सन् १८९८ में हुआ। आप भी योग्य पिताकी योग्य संतान हैं। आपने अपने पूज्य पिताजीके स्मारकमें एक कन्या पाठशाला स्थापित करनेके लिये १ लाख रुपयोंका भागीदान किया है। एवं अपनी माताजीके नामसे स्त्रियोंके आकस्मिक रोगोंके इलाजके लिये एक अस्पताल बनवानेमें २५ हजार दिया है। केदारनाथजी पशुकष्ट निवारिणी सभा मुंगेर और घोड़ियोंके अस्पतालके सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुंगेर—मेसर्स रामगोपाल बैजनाथ गोयनका T. No. 26—यहां जमींदारीका बहुत बड़ा काम होता है। मुंगेर, भागलपुर, पटना, मुजफ्फरपुर, तथा गया जिलेमें आपकी जमींदारी है। इस फर्मपर बैंकिंग व्यापार भी होता है।

राजा रघुनन्दनप्रसाद सिंह एम० एल० ए०

राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह साहबके कुटुम्बने व्यवसायसे ही तरक्की पाई है। आपके पूर्वज बाबू रामप्रसादजीके समयमें इस फर्म पर जमींदारी खरीदी गई। आपके बाद आपके पुत्र राजा कमलेश्वरीप्रसाद सिंहजीके समय जमींदारीकी तरक्की मिली। आप बड़े फारसी दां और स्वतन्त्र विचारोंके सज्जन थे। मुंगेर म्युनिसिपल मार्केट, बबुआघाट, मुंगेर बाजार वगैरह आदि स्मारक आपके हाथोंसे तैयार हुए। इन्हीं सब दानशीलताओंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको राजा की पदवीसे सम्मानित किया। आपके दो पुत्र हुए बड़े राजा शिवनन्दनप्रसाद सिंहजी ओ० बी० ई० थे। आपमें लिखने और बोलनेकी अपूर्व प्रतिभा थी, आप आजन्म मुंगेर म्युनिसिपैलिटी एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्डके चेयरमैन तथा फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट रहे। आपके पुत्र राजा देवकीनन्दन प्रसाद सिंह एम० एल० सी० हैं।

राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी एम० एल० ए०, राजा शिवनन्दन प्रसाद सिंहजीके छोटे भ्राता हैं। आप संस्कृतके विद्वान एवं वैष्णवसाहित्यके ज्ञाता हैं। दो बार आप बिहार कौंसिलके मेम्बर निर्वाचित हुए। आपने हजारों रुपयोंकी बड़ी २ रकमें गवर्नमेंटके चंदोंमें एवं पब्लिकके कामोंमें दी हैं। अबतक आप करीब ६ लाखसे ऊपर रकम धार्मिक कामोंमें लगा चुके हैं। जिसमेंसे प्रेम मन्दिरके निर्माणमें एक लाख ९ हजार और उससे सम्बद्ध पुस्तकालय तथा वैदिक संस्थाको जीवित रखनेके लिये २ लाख ७२ हजारके आदर्श दान विशेष रूपसे स्तुत्य हैं

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपड़ा बिकता है।

कलकत्ता—रामजसराय अर्जुनदास—३, सेंदग पट्टी T. A. No 4849 B B T. A. Arjundas—चलानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

सरसुंड—शिवनाथ किशोरीलाल—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके बिंदल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लाका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरीप्रसादजी हैं। इसमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपके २० गांव जमींदारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां एलनबरी और मारिसकार कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा साइकिलका इम्पोर्ट और पेट्रोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १६२ सूतापट्टी—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स
सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक
फूलचन्द साहु बिहारीलाल
काथ मरचेंट्स
मेसर्स कमलाप्रसाद हनुमानप्रसाद
" बैजनाथ कमलाप्रसाद

मेसर्स गनपतराय महादेव
" गंगाराम श्रीलाल
" बैजनाथ नथमल
" शिवकरणदास हरीप्रसाद
" रघुनाथराय रामविलास

आपका सार्वजनिक जीवन भी कुछ कम सराहनीय नहीं है आप कितनी ही लोकोपकारी संस्थाओंके सदस्य, पेट्रन और प्रेसिडेंट भी हैं। आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके मेम्बर भी हैं। आपकी जमींदारी ५ लाखसे बेशी आमदनी है। आपकी मुंगेर, भागलपुर, गया, संथाल परगना तथा पूर्णियां जिलोंमें जमींदारी हैं। यहां बैंकिंग व्यापार भी होता है। राजा साहबके पुत्र कुमार सचीनन्दन प्रसाद सिंहजी हैं।

मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ

इस फर्मके व्यापारका विशेष परिचय पटनेमें दिया गया है। यहां किराना तथा कागजका व्यापार होता है।

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्डस
भगनीराम बैजनाथ गोयनका
राजा देवकीनन्दन प्रसादसिंह
बा० दिलीप नारायणसिंहजी रायसाहब
रायबहादुर देवनन्दनप्रसाद सिंह
बा० राजनीति प्रसादसिंह

कपड़ेके व्यापारी
राम आदर्श
धर्मनारायण स्वदेशी क्लाथ मरचेंट
नारायणदास हरशंकरप्रसाद
भगवानदास बैजनाथ
मीनाराम गंगाप्रसाद
मेघराज कमलाप्रसाद
रामनंद हजारीमल
हरीराम हीरालाल

चांदी सोनेके व्यापारी
मंगनूराम राधाकिशन
मेघराज कमलाप्रसाद
मोहनलाल भोहरीलाल खेतान
लक्ष्मीप्रकाश नारमल

किरानेके व्यापारी
गोपीराम बद्रीनाथ (बंगाल पेपर मिल एजंसी)
गोविंदराम रामभगत
सदाराम जगन्नाथ
लच्छीराम रामसहायमल

गल्लेके व्यापारी और कमीशनएजंट
कालीसहाय विटवन बाजार
भगवानलालसा विटवन बाजार
रामलालसा विटवन बाजार
रूक्मीरायसा विटवन बाजार
सखीचन्द्सा विटवन बाजार

जेवरके व्यापारी
कान्तिप्रसाद बनवार
जमनाप्रसाद बनवार
जगदीश प्रसाद बनवार
सूर्यप्रसाद नारायण
हरवल्लभ नारायण

रक्सौल—उदयराम सेवाराम—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।
मोतीहारी—उदयराम सेवाराम—बैंकिंग व्यापार होता है।
घोड़ासहन—(चम्पारन) उदयराम सेवाराम—कपड़ा तथा सराफी लेन देन होता है।

मेसर्स सूरजमल महावीरप्रसाद

इसफर्मके मालिक मलसीसर (जयपुरस्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस कुटुम्बके व्यवसाय का स्थापन ८० वर्ष पहिले रामपतदासजी रामकरणदासजी तथा हरसुखरायजीके हाथोंसे लखराम रामकरणदासके नामसे हुआ था। ४५ वर्ष पूर्वतक इस नामसे कपड़ा तथा गल्लाकाकारवार होता रहा। पश्चात रामपतदासजीकी फर्म रामपतदास हजारीमलके नामसे अपना अलग कारवार करने लगी। रामपतदासजीके ४ पुत्र हुए बा० हजारीमलजी रामचन्द्रजी, सूरजमलजी यथा महावीरप्रसादजी। आपकी ओरसे यहां एक मातृस्मृति धर्मशाला वनी हुई है। संवत १९५८ में इनसव भाइयोंकी ३ फर्में हो गईं। वर्तमानमें इसके मालिक बा० सूरजमलजी और महावीर प्रसादजी हैं। बा० सूरजमलजी झूंझनूंवाला अग्रवाल सभाके भागलपुर अधिवेशनके सभापति मुकर्रर हुए थे। आप यहां २६ वर्षोंसे म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपके यहां बैंकिंग जमींदारी और कपड़ेका व्यापार होता है।

<u>कपड़ा और गल्लाके व्यापारी</u>

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल

इस फर्मका परिचय मुजफ्फरपुरमें दिया गया है। बेतियामें आपकी एक रेंडीकी मिल है, तथा आढ़त गल्ला और जमींदारीका काम होता है

मेसर्स रामचन्द्र देवीदत्त

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी झूंझनूवाला के ५ पुत्र देवीदत्तजी, केदारनाथ जी, संतप्रसादजी, गोपालप्रसादजी, आदि हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—रामचन्द्र देवीदत्त T.A. Ranisati—यहां जमींदारी, आढ़त, गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है।

चनपटिया—रामचन्द्र देवीदत्त—आढ़त तथा गल्लेका कारबार होता है।

मनीहारी समानके व्यापारी	सिनेरी पेन्टर
मंगनराम रामटहल	मदनलाल खेमका
सीताराम मनीहारीवाला	सीताराम खेमका
लोहेके व्यापारी	**मोटर ऑइल मर्चेंट्स**
खेमका स्टील ट्रंक फेक्टरी, मुंगेर	कार कम्पनी
रामचरणसा हरीमोहनप्रसाद	नेवीगेशन कम्पनी
रामप्रसाद खेमका	लादूराम नन्दलाल

भागलपुर

बिहार प्रांतकी भागलपुर कमिश्नरीका यह प्रधान स्थान है। इस जिलेके उत्तरमें नेपाल, दक्खिनमें संथाल परगना, पूरबमें पूर्णिया एवं पश्चिममें मुंगेर और दरभंगा जिला है। इसका क्षेत्रफल ४२२६ वर्गमील एवं मनुष्य गणना २७ लाख ८६ हजारके लगभग है। इस जिलेकी प्रधान उपज धान, रब्बी और मकई है। पहाड़ी जमीनमें कुरथी विशेष पैदा होती है। इसके सिवाय हर प्रकारका गल्ला यहां पैदा होता है।

व्यवसायिक साधन—मालको एक स्थानसे दूसरे स्थान भेजनेके लिये एवं यात्राकी सुविधाके लिये यहां ईस्ट इण्डिया रेलवे, और बी० एन० डब्ल्यू रेलवे जिलेमें दौड़ती हैं। गंगा नदीमें स्टीमर चलता है।

भाषा—यहांकी बोली मैथिलीसे मिली जुली है, इसके अतिरिक्त संथाल लोग संथाली एवं मुसलमान तथा कायस्थ उर्दू मिश्रित हिन्दी बोलते हैं। इस जिलेमें ६८ प्रतिशत मनुष्य खेती द्वारा निर्वाह करते हैं, तथा शेषलोग कारीगरी, नौकरी एवं तिजारत करते हैं।

प्रसिद्ध स्थान—व्यवसायकी दृष्टिसे इस जिलेमें ३ स्थान प्रधान हैं। (१) भागलपुर सिटी (२) कहलगांव (३) सुल्तानगंज।

भागलपुर सिटी—यह शहर भारतमें सिल्क एवं टसरके व्यवसायके लिये विशेष प्रसिद्ध है। इसके आसपास दस दस और बीस बीस कोसोंतक टसर बिननेकी करीब २ हजार तानियां चलती हैं। यहांसे करीब १४।१५ लाखका सिल्की एवं टसरी माल प्रति वर्ष भारतके विभिन्न बाजारोंमें जाता है। साधारणतया ६ गजका थान ६) से लगाकर ५०) तक के

बेतिया

नर कटियागंजके समीप बी० एन० डब्ल्यू रेलवेका स्टेशन है। यह बेतिया राजकी राजधानी है। करीब ३६ वर्ष पूर्व यहांके महाराजा साहबका स्वर्गवास होगया; तबसे ठिकाना कोर्ट आफ वार्डसके अंडरमें है। कहते हैं कि महाराज बहुत प्रजाप्रिय थे। यह स्थान गल्लेकी अच्छी व्यापारिक मंडी है। यहांसे गुड़ मारवाड़, पंजाब आदि प्रांतोंमें जाता है तथा हल्दी कलकत्तेसे लेकर देहली तक जाती है। इसी प्रकार लहसुन प्याज बंगालमें और तिल मारवाड़की ओर जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहांकी पैदावारमें सौंफ, आलू, अरहर, लहसुन, धनियां, मंगरैला, अदरख, तीसी, सरसों मकई, धान, मसूर आदि हैं। इस शहरके पास चनपटिया- रक्सोल, धरगतियां, आदि गल्लेकी अच्छी मंडियां हैं। यहां आइल मिल भी है।

बेतियाका मीनाबाजार बहुत अच्छा मालूम होता है। इसकी बनावट विशेष प्रकारकी है।

बैंकर्स एण्ड लैंडलॉर्ड्स

मेसर्स उदयराम सेवाराम

इस फर्मके मालिक रैनी (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। संवत १९०२।३ में बा० उदयरामजी और आपके पुत्र मक्खनलालजी तथा सेवारामजी देशसे बेतिया आये। आरंभमें आपके यहां कपड़ेका व्यापार होता था। बा० मक्खनलालजीने इसके कारबारकी वृद्धिकी थी, आपके समयमें कलकत्ता, आगरा, मोतीहारी आदिस्थानोंपर इसफर्मका कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता था। बा० उदयरामजी का स्वर्गवास भादवा संवत १९३७, मक्खनलालजीका स्वर्गवास ज्येष्ठ १९५३ तथा सेवारामजीका पौष १९५६ में हुआ। संवत १९१९ में बा० मक्खनलालजी और सेवारामजीका कुटुम्ब अलग २ हो गया।

वर्तमानमें इसफर्ममें मालिक बा० सेवारामजीके पुत्र बा० राधाकृष्णजी केदारनाथजी तथा महादेवप्रसादजी हैं। आपने बहुत बड़ी लागतसे बेतियामें एक मंदिर बनवाया है। एवं २० हजारकी जमींदारी धार्मिक कार्मोके लिये दी है। संवत १९६९ में आपके द्वारा एक गौशालाका स्थापन किया गया। बा० राधाकृष्णजी संवत १९६२ से म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप बिहार हिन्दीसाहित्य सम्मेलनके स्वागत सभापति निर्वाचित हुए थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—मेसर्स उदयराम सेवाराम—बैंकिंग जमींदारी तथा कपड़ेका रोजगार होता है।

मूल्यका तयार होता है। टसरीमालमें कोटिंग, शर्टिंग, सूटिंग, साड़ी, साफा मुरेठा आदि सभी प्रकारकी किस्म तयार होती है। यह माल अपनी पायेदारीमें विशेष विख्यात है। यों तो यहां यह व्यवसाय सैकड़ों वर्षोंसे चला आता है पर इधर कुछ वर्षोंसे इसमें कई सुधार हुए है। आजकल प्रायः तानीमें जापानी रेशमका विशेष उपयोग किया जाता है। भागलपुर शहरकी आबादी करीब ७६ हजार है। इस शहरकी बसावट घनी एवं सुन्दर है। यहांके प्रधान बाजार सूजागंजमें विशेष चहल पहल रहती है। इस बाजारमें कपड़ा, चांदी सोना, सिल्क टसर, किराना तथा सब प्रकारका जनरल व्यापार होता है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स भूदरमल चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मंडावा (राजपूताना) है। पर इस कुटुम्बको भागलपुरमें निवास करते हुए करीब १०० वर्ष हो गये हैं। सर्व प्रथम देशसे सेठ भानीदत्तजीके पुत्र सेठ रामकिशनदासजी, सेठ हरचन्दरायजी एवं सेठ सदासुखजी भागलपुर आये। सेठ हरचन्दरायजीने संवत १९०४ में कलकत्ता जाकर फर्मका स्थापन किया। इसप्रकार सेठ रामकिशनदासजी एवं हरचन्दराय जी दोनों भाई संवत् १९२४ तक शामिल व्यापार करते रहे। पश्चात् आप दोनोंका कुटुम्ब अलग अलग होगया। सेठ हरचन्दरायजीके २ पुत्र हुए आनन्दरामजी एवं गोवर्द्धनदासजी, वर्तमानमें इन दोनोंभाइयोंका कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहा है।

सेठ रामकिशनदासजीके पुत्र भूदरमलजी एवं सेठ कालूरामजी संवत १९३८ में अलग २ हुए भूदरमलजीके पुत्र क्रमशः चन्डीप्रसादजी, दुर्गाप्रसादजी, देवीप्रसादजी, लक्ष्मीप्रसादजी हुए।

सेठ भूदरमलजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापार खूब तरक्की प्राप्त हुई। आपने भागलपुरमें एक धर्मशाला बनवाई, एक महावीरजीका मन्दिर बनवाया, बनारसमें अन्नक्षेत्र चालू किया। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हुआ।

सेठ भूदरमलजी अपने स्वर्गवासी होनेके समय एक ट्रस्ट बना गये थे उस ट्रस्टकी लिखावट के अनुसार कार्य भार सेठ देवीप्रसादजी पर आया, आपने २० वर्षों तक व्यवसायका संचालन किया, पश्चात ट्रस्टकी लिखावटके अनुसार फर्मके मालिकोंमें बटवारा होगया, तबसे सेठ चण्डीप्रसाद-जी एवं सेठ देवीप्रसादजीका कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है।

रक्सौल—उदयराम मेवाराम—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

मोतीहारी—उदयराम मेवाराम—बैंकिंग व्यापार होता है।

घोड़ासहन—(चम्पारन) उदयराम मेवाराम—कपड़ा तथा सराफी लेन देन होता है।

मेसर्स सूरजमल महावीरप्रसाद

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस कुटुम्बके व्यवसाय का स्थापन ८० वर्ष पहिले रामचन्द्रदासजी रामकृष्णदासजी तथा हरसुखरायजीके हाथोंसे रूपराम रामकृष्णदासके नामसे हुआ था। ४५ वर्ष पूर्वतक इस नामसे कपड़ा तथा गल्लाकाकारबार होता रहा। पश्चात रामचन्द्रदासजीकी फर्म रामचन्द्रदास हजारीमलके नामसे अपना अलग कारबार करने लगी। रामचन्द्रदासजीके ४ पुत्र हुए बा० हजारीमलजी रामचन्द्रजी, सूरजमलजी तथा महावीरप्रसादजी। आपकी ओरसे यहां एक मातृस्मृति धर्मशाला बनी हुई है। संवत १९५८ में इनसब भाइयोंकी ३ फर्में हो गईं। वर्तमानमें इसके मालिक बा० सूरजमलजी और महावीर प्रसादजी हैं। बा० सूरजमलजी झूंझुनूंवाला अग्रवाल सभाके भागलपुर अधिवेशनके सभापति मुकर्रर हुए थे। आप यहां २६ वर्षोंसे म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपके यहां बैंकिंग जमींदारी और कपड़ेका व्यापार होता है।

कपड़ा और गल्लाके व्यापारी

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल

इस फर्मका परिचय मुजफ्फरपुरमें दिया गया है। बेतियामें आपकी एक रेंडीकी मिल है, तथा आढ़त गल्ला और जमींदारीका काम होता है

मेसर्स रामचन्द्र देवीदत्त

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी झूंझुनूवाला के ५ पुत्र देवीदत्तजी, केदारनाथ जी, संतप्रसादजी, गोपालप्रसादजी, आदि हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—रामचन्द्र देवीदत्त T.A. Ranisati—यहां जमींदारी, आढ़त, गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है।

चनपटिया—रामचन्द्र देवीदत्त—आढ़त तथा गल्लेका कारबार होता है।

स्व: बा: भूदरमलजी डांडनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर

रायबहादुर देवीप्रसादजी डांडनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर

बाबू लक्ष्मीप्रसादजी डांडनियां
(भूदरमल लक्ष्मीप्रसाद) भागलपुर

बाबू मोक्नाथजी डांडनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर

मेसर्स हजारीमल बिसेसरप्रसाद

यह फर्म बाबू रामधनदासजीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू हजारीमलजी झूंझुनूवाला की है। आप बेतियामें आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्यूनिसिपल कमिश्नर थे। आपकी फर्म रामधनदास हजारीमलके नामसे बेतिया राज बैंकर्स थी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू बिसेसरनाथजी हैं। आप भी म्युनिसिपैल्टीके मेम्बर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—हजारीमल बिसेसरप्रसाद—बैंकिंग, गल्ला, माढ़न तथा जमींदारीका काम होता है।

बेतिया—मल एण्ड संस—मोटर आइलका व्यापार होता है।

सिकटा (चम्पारन)—गल्ला और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स रामभगतराय सागरमल

इसका स्थापन ५० वर्ष पहिले बाबू अमोलक चंदजीके हाथोंसे हुआ था। वर्तमान बाबू सागरमलजी गोयनका इसके मालिक हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—रामभगतराय सागरमल—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—अमोलकचंद छोगमल १८० हरिसन रोड—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स

दि नेशनल कोऑपरेटिव बैंक

मेसर्स उदयराम सेवाराम

" सूरजमल महावीर प्रसाद

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स बिसेसरलाल डालूराम

" महादेव प्रसाद रामनिवास

" मुन्नीलाल विलास राय

" रामभगत राय सागरमल

" सूरजमल महावीर प्रसाद

" सुन्दरमल हरीराम

मेसर्स सूरजमल नंदलाल

" सूरजमल नथमल

" हरनंदराय बिसुनदयाल

" हिम्मतराम पालीराम

चांदी सोनेके व्यापारी

दुर्गादत्त बद्रीचन्द

हीरालाल गुटीलाल

गल्लाके व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स उदयराम भगतराम

" गणपतराम लोटनराम

" गिरधारीलाल मोहनलाल

सेठ देवीप्रसादजीके हाथोंसे फर्मके कामोंमें अच्छी वृद्धि हुई, आपको सन् १९२३ में गवर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया, आपने बद्रीकाश्रम एवं सेतुबंध रामेश्वरमें धर्मशालाएं बनवाईं, बनारसमें अन्नक्षेत्रकी व्यवस्थाके लिये एक मकान बनवाया, भागलपुरकी मारवाड़ी पाठशालाका स्थापन कर कई वर्षों तक आपने उसका खर्च निवाहा।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें राय बहादुर सेठ देवीप्रसादजी एवं सेठ चण्डीप्रसादजीके पुत्र बा० लोकनाथजी विद्यमान हैं। रा० ब० सेठ देवीप्रसादजी इस समय फर्मके कामोंसे रिटायर्ड होकर शान्तिलाभ करते हैं। एवं व्यवसायका कुल संचालन भार सेठ लोकनाथजी सम्हालते हैं। बा० लोकनाथजी मारवाड़ी पाठशालाके ज्वाइंट सेक्रेटरी हैं इसके सेक्रेटरी रा० ब० वंशीधरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसाद—यह हेड आफिस है, यहां बेङ्किंग व्यापार होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंककी ग्यारण्टेड केशियर है।

भागलपुर—मेसर्स देवीप्रसाद बद्रीप्रसाद सूजागंज—यहां चांदी सोनेका व्यापर होता है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसाद सूजागंज—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

भागलपुर—बिहार स्वदेशी कम्पनी सूजागंज—सिल्क टसर तथा सब प्रकारके क्लॉथका बिजिनेस होता है।

कलकत्ता - मेसर्स रामकिशनदास चंडीप्रसाद १३६ कॉटन स्ट्रीट T. A. Dhandania—यहां बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—ढाढनियां एण्ड कम्पनी १३६ कॉटन स्ट्रीट—रेलवे मेटीरियलसका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

समस्तीपुर और फइलगांव—भूदरमल चंडीप्रसाद—गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स भूधरमल लक्ष्मीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा है। पर बहुत समयसे यह कुटुम्ब भागलपुरमें निवास करता है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके ढांढनियां सज्जन हैं। इस कुटुम्बके व्यापारको सेठ भूदरमलजीके हाथोंसे बहुत तरक्की प्राप्त हुई। आप बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हो गये हैं। आपके ४ पुत्र हुए, बाबू चंडीप्रसादजी, बाबू दुर्गाप्रसादजी, बाबू देवीप्रसादजी एवं बाबू लक्ष्मीप्रसादजी। सन् १९२० ई०तक इन सब सज्जनोंका व्यापार शामिल होता रहा। सन् १९२० ई०

के कारखाने हैं। मुंगेरका कारखाना पेनिनशुला टोबेको कम्पनीके नामसे मशहूर है। इसमें करीब ३ हजार मजदूर २०० क्लार्क और ५० अंग्रेज काम करते हैं। यह फेक्टरी लालहाथी, मोटर कार, लैंटर्न, रैल्वे पेडू आदि मार्काकी सिगरेट तैयार करती है।

मुंगेरकी पैदावारमें सब प्रकारके अनाज, तेलहन, धान आदि हैं। यहांसे भांग और स्लेट भी बाहर जाती है। इस स्थानपर बन्दूकें और आबनूसके कलमदान छड़ी वगैरा अच्छे बनते हैं। इस शहरके समीप ही सीताकुण्ड नामक एक गरम पानीका झरना है।

मुंगेरके पास जमालपुरका प्रसिद्ध लोहे और रेलका कारखाना है। आसपासकी व्यापारिक मंडियोंमें खगड़िया, जमुई, बेगूसराय प्रधान हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मगनीराम बैजनाथ गोयनका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नवलगढ़ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके गोयनका सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन श्रीमान् सेठ मगनीरामजी गोयनकाके हाथोंसे करीब ७० वर्ष पूर्व हुआ था। आरंभमें आप गल्ला, सोना, चांदी, महाजनी एवं जमींदारीका काम करते थे। आपका स्वर्गवास करीब २३ वर्ष पूर्व होगया है। आपके पश्चात् इस फर्मका व्यवसाय आपके सुयोग्य पुत्र बाबू बैजनाथजी गोयनकाके हाथोंमें आया।

बाबू बैजनाथजी गोयनका बहुत प्रतापी, व्यापारदक्ष एवं ख्याति प्राप्त सज्जन हो गये हैं। आपके समयमें इस फर्मके नाम यश एवं प्रतिष्ठाकी बहुत अधिक वृद्धि हुई। आपने गया मुजफ्फरपुर पटना, भागलपुर, मुंगेर आदि स्थानोंमें बहुत बड़ी जमींदारीकी खरीदी की। स्वर्गवासी होनेके कुछ समय पूर्व आपने कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी रा० ब० सर हरीरामजी गोयनका के० टी० सी० आई० ई० एवं रा० ब० सूरजमल शिवप्रसाद झुनझुनवालेके साथमें कुमार गुरुप्रसाद सिंहजीसे स्टेट खरीद की, जो अभीतक आपके अधीनमें है।

गवर्नमेंट द्वारा होनेवाले कार्योंमें आपने कई बड़ी बड़ी रकमें दी थीं। आपको सन् १९०१में गवर्नमेंटने केसरेहिन्दकी पदवीसे सम्मानित किया। सन् १९११ के देहली दरबारके समय आपको रा० ब० की पदवी प्राप्त हुई। आपने मुंगेर स्टेशनके नजदीक एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। आप अपने स्वर्गवासी होनेके समय बहुत दान कर गये थे।

के नामसे सेठ चंडीप्रसादजी एवं रा० ब० देवीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल चंडीप्रसादके नामसे एवं बाबू लक्ष्मीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल लक्ष्मीप्रसादके नामसे अलग स्वतंत्र व्यापार करने लगीं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्ष्मीप्रसादजी ढांढनियां हैं। आपके पुत्र बाबू त्रिवेणी प्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका कुटुम्ब भागलपुरमें बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। बाबू लक्ष्मीप्रसादजीकी माताजी अपने स्वर्गवासी होनेके समय बड़ी भारी रकम दान कर गई थीं, उस रकमसे रा० ब० देवीप्रसादजीके द्वारा बद्रीकाश्रम एवं सेतुबंधु रामेश्वरमें धर्मशालाएं बनवाई गईं। इसी प्रकारके और भी कई धार्मिक कार्य हुए हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल लक्ष्मीप्रसाद—यहां बेङ्किग, स्थाई सम्पत्ति एवं जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय आनंदराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मंडावा है। पर आप लोग करीब १००वर्षोंसे भागलपुरमें निवास कर रहे हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय ढांढनियां सज्जन हैं। संवत् १९०४ में सेठ भानीदत्तजीके पुत्र सेठ हरचंदरायजी कलकत्ता गये, एवं वहां अपनी फर्म स्थापित की। सन् १९४५ तक आप व्यवसायका संचालन करते रहे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ आनन्दरामजी एवं गोवर्द्धनदासजीके हाथोंसे फर्मके कारबारको विशेष तरक्की मिली।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ आनंदरामजीके पुत्र बाबू द्वारकादासजी, रा० ब० बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं बाबू श्रीमोहनजीके पुत्र केदारनाथजी, तथा सेठ गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बाबू ज्वाला प्रसादजी, बाबू हीरालालजी एवं श्रीछोटेलालजी हैं। इन सज्जनोंमें बाबू श्रीमोहनजीका स्वर्गवास थोड़ी ही वयमें होगया है। बाबू द्वारकादासजीके बड़े पुत्र पन्नालालजीका भी स्वर्गवास होगया है। आपके छोटे पुत्र श्रीमोतीलालजी तथा रा० ब० बंशीधरजीके बड़े पुत्र शिवकुमारजी व्यापारमें भाग लेते हैं। श्री बाबूलालजी, ज्वाला प्रसादजीके यहां दत्तक आये हैं।

इस समय भागलपुर दुकानका संचालन राय बहादुर सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं कलकत्ता दुकानका संचालन बाबू ज्वालाप्रसादजी ढांढनियां करते हैं। सेठ द्वारकादासजी वर्तमानमें व्यापारिक कार्मोंसे रिटायर्ड होकर शांतिलाभ करते हैं। रा० ब० सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० भागलपुरके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको भारत सरकारने सन १९२७ में राय बहादुरकी

स्व॰ रा॰ ब॰ सेठ बैजनाथजी गोयनका फैमिली मुंगेर

राजा रघुनन्दनप्रसा

स्व: सेठ हरचन्दरायजी डोडानिया भागलपुर

स्व: सेठ आनन्दरायजी डोडानिया भागल

के बादसे सेठ चंडीप्रसादजी एवं रा० ब० देवीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल चंडीप्रसादके नामसे एवं बाबू लक्खीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल लक्खीप्रसादके नामसे अलग स्वतंत्र व्यापार करने लगीं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्खीप्रसादजी ढांढनियां हैं। आपके पुत्र बाबू त्रिवेणी प्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका कुटुम्ब भागलपुरमें बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। बाबू लक्खीप्रसादजीकी माताजी अपने स्वर्गवासी होनेके समय बड़ी भारी रकम दान कर गईं थीं, उस रकमसे रा० ब० देवीप्रसादजीके द्वारा बद्रीकाश्रम एवं सेतुबंधु रामेश्वरमें धर्मशालाएं बनवाई गईं। इसी प्रकारके और भी कई धार्मिक कार्य हुए हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल लक्खीप्रसाद—यहां बेङ्किग, स्थाई सम्पत्ति एवं जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय आनंदराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मंडावा है। पर आप लोग करीब १००वर्षोंसे भागलपुरमें निवास कर रहे हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय ढांढनियां सज्जन हैं। संवत् १९०४ में सेठ भानीदत्तजीके पुत्र सेठ हरचंदरायजी कलकत्ता गये, एवं वहां अपनी फर्म स्थापित की। सन् १९४९ तक आप व्यवसायका संचालन करते रहे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ आनन्दरामजी एवं गोवर्द्धनदासजीके हाथोंसे फर्मके कारबारको विशेष तरक्की मिली।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ आनंदरामजीके पुत्र बाबू द्वारकादासजी, रा० ब० बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं बाबू श्रीमोहनजीके पुत्र केदारनाथजी, तथा सेठ गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बाबू ज्वाला प्रसादजी, बाबू हीरालालजी एवं श्रीछोटेलालजी हैं। इन सज्जनोंमें बाबू श्रीमोहनजीका स्वर्गवास थोड़ी ही वयमें होगया है। बाबू द्वारकादासजीके बड़े पुत्र पन्नालालजीका भी स्वर्गवास होगया है। आपके छोटे पुत्र श्रीमोतीलालजी तथा रा० ब० बंशीधरजीके बड़े पुत्र शिवकुमारजी व्यापारमें भाग लेते हैं। श्री बाबूलालजी, ज्वाला प्रसादजीके यहां दत्तक आये हैं।

इस समय भागलपुर दुकानका संचालन राय बहादुर सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं कलकत्ता दुकानका संचालन बाबू ज्वालाप्रसादजी ढांढनियां करते हैं। सेठ द्वारकादासजी वर्तमानमें व्यापारिक कामोंसे रिटायर्ड होकर शांतिलाभ करते हैं। रा० ब० सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० भागलपुरके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको भारत सरकारने सन १९२७ में राय बहादुरकी

मैंग्रोज—इसमें अच्छे जूटके टुकड़े और उत्तरके साधारण मालको मिला कर गांठ बांधते हैं। यह वोरे बनानेके काम आता है इसपर △ मार्क आता है। इसमें सुपीरियर और गुड यह दो क्वालिटी आती हैं।

लाइटनिङ्ग—यह मैंगोजके समान होता है। इसपर चक्कर O का मार्क रहता है। इसमें सुपीरियर और गुड दो क्वालिटी आती हैं।

हार्टस—यह टुकड़ोंकी नीची क्वालिटीका माल होता है।

जूटकी लच्छी और टाट

जूटकी गाँठें जूट प्रेसमें बन्धती है। जूट मिलमें जूट काता जाता है और वहीं उसकी लच्छी बनाई जाती हैं और उसीके अन्तर्गत फैक्ट्री विभाग अर्थात् बुनाई खातेमें जूट बुना भी जाता है और उसके टाट तथा वोरे बनते हैं।

जूटकी कताई और लच्छी

जूटके रेशोंसे लकड़ी आदि कचरा निकाल लिया जाता है और फिर यंत्र द्वारा उसे मुलायम करते हैं। मुलायम करनेके लिये गर्म जल और ब्लीचिङ्ग आइल (Bleaching Oil) नामक तेलसे उसे तर कर दिया जाता है। और उसी हालतमें रेशे २४ घन्टेतक पड़े रहते हैं। इस अवधिमें तेल जूटके रेशोंमें पूर्णरूपेण व्याप्त हो जाता है। यदि आवश्यकता समझी गयी तो उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले जाते हैं। जिस नं० का सूत तैयार करना होता है उस नम्बरपर यंत्रको ठीक लगा देते हैं। यंत्रमें रेशे साफ करने, धुनने और कातनेकी क्रिया स्वयं होती रहती है। यंत्रके पास खड़ा हुआ मनुष्य केवल यंत्रको रेशे पहुंचाता रहता हैं और इस प्रकार यंत्र द्वारा जूटका सूत अर्थात् जूट यार्न (Jute Yarn) तैयार हो जाता है।

सूतका नम्बर प्रायः सूतकी वजनके आधारपर ही रहता है जिसे अंग्रेजीमें स्पिण्डल कह कर चिन्हाङ्कित करते हैं। इसका पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार है।

६० इञ्च=१ सूत

१२० सूत (३०० गज) = १ लच्छी

२ लच्छी = १ हीर

६ हीर = १ मुट्ठा (३६०० गज)

४ मुट्ठा = १ स्पिण्डल (Spyndle) या १४४०० गज।

जूटकी लच्छीका नम्बर जाननेके लिये १४४०० गज नापकर लच्छियां ले लें और फिर उन्हे तौल डालें और उक्त लम्बाईकी लच्छियां वजनमें जितने रत्तल हों उतना ही लच्छीका नम्बर मानें।

भारतमें प्रायः २ रतली नम्बरका जूट यार्न ही अधिक काममें आता है। यहांसे बोरेका कपड़ा बहुत कम परिमाणमें विदेश जाता है। अधिकांश भागके लिये बोरे यही काटकर सिये जाते हैं।

हैसियन या टाट—जूटका कपड़ा अर्थात् टाट प्रायः सादी या सरल टुइल विनावटका होता है। कभी कभी टाटमें दुरसुती विनावटका माल भी आता है। हैसियन माल जूटके कपड़ेमें सर्वोत्तम माना जाता है। यह एक सूतके तानेपर साधारण विनावटका माल रहता है। यह कपड़ा नियमितरूपसे १ गजमें ४० इंच चौड़ा तथा १०३ औंस वजननीट बैठना। इसके हैसियन बोरे बनते हैं जो बृटेन, रूस, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, सैण्डविच द्वीपपुंज, आस्ट्रेलिया मिस्र और दक्षिण अफ्रीकामें बहुत जाते हैं। हैसियन शब्दके अन्तर्गत हैसियन कपड़ा (टाट) और हैसियन गनी (बोरे) दोनों ही आते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका प्रायः हैसियन कपड़ा (टाट) ही अधिक जाता है। वे लोग अपनी सुविधा और रुचिके अनुकूल बोरे वहीं तैयार करते हैं।

जूटकी निकासी

भारतमें प्रायः जूट सितम्बर माससे ही बाहर जाने लगता है पर पूरी फसलकी निकासी प्रायः अक्टूबर और नवम्बर मासमें जोरोंसे विदेशके लिये होती है। और दिसम्बरमें कम पड़ जाती है। विदेशवाले अपने आर्डर सीधा कलकत्तेके शिपर्सके पास भेजते हैं और कभी कभी बृटेनकी मार्फत भी सौदा होता है। कलकत्तेके गनी बाजारमें इनडायरेक्ट कन्ट्राक्ट नहीं होते।

जूटपर निर्यात् कर

भारतसे बाहर जानेवाले विभिन्न प्रकारके कच्चे तथा अर्ध तैयार या तैयार मालपर कितना कर लगता है इस सम्बन्धमें सन् १९१६ ई० के ऐक्ट ४ टेरिफ अमेन्डमेन्टके संड्यूल ३ में विस्तृत विवेचन मिलेगा।

निर्यात् कर कच्चे जूटपर	और	*तैयार जूट पर कर*
टुकड़ेपर ॥=) प्रति गांठ		बोरे १०) रु० प्रति टन (२२४० रतल)
दूसरे प्रकारके जूटपर २।) प्रति गांठ		हैसियन १६) रु० प्रति टन (२२४० रतल)

इसके अतिरिक्त कलकत्ता इम्प्रूवमेन्टके निर्यात् कर इस प्रकार है।

जूट =) प्रति गांठ और बोरा ॥।) प्रति गांठ

निम्न लिखित देशोंको छोड़कर और कहीं भी जूटपर आयात कर नहीं देना पड़ता।

रूस	·८८ शि० प्रति रतल	परशिया	·१४ शि० प्रति रतल
सर्बिया	·४४ शि० ,,	मैक्सिको	·१०२ शि० ,,
बल्गेरिया	·२२ शि० ,,	रोमानिया	·०४४ शि० प्रति रतल

स्व: सेठ हरचन्दरायजी डोडानियां भागलपुर

स्व: सेठ आनन्दरायजी

मेसर्स बलदेवदास नारायणदास

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास मुकुन्दगढ़ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मेहेसेका सज्जन हैं। श्री बाबू बलदेवदासजी देशसे करीब ५० वर्ष पहिले भागलपुर आये थे। आपने किरानेके व्यापारमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्तकी। आपका स्वर्गवास करीब संवत १९६९में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बलदेवदासजीके पुत्र बा॰ नारायदासजी एवं बा॰ जुगुलकिशोरजी मेहेसेका हैं। बा॰ नारायणदासजी भागलपुर के बड़े उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। भागलपुरकी कई पब्लिक संस्थाओंके संचालनसे आपका घनिष्ट सम्बन्ध है। आप भागलपुर गोशालाके ज्वाइंटसेक्रेटरी, और मारवाड़ी पाठशालाकी मैनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर-मेसर्स बलदेवदास नारायणदास सूजागंज—यहां गद्दी है।

भागलपुर-शिवगौरीफ्लावर मिल—इसनामसे आपकी बहुत बड़ी रोलर फ्लावर मिल है। यह अपटूडेट ऑटोमेटिक स्केलपर काम करती है। इसकी बिल्डिंग एवं मशीनरी अच्छी मजबूत है। यहां करीब ५० टन माल प्रतिदिन तैयार हो सकता है।

मेसर्स लादूराम नन्दलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान उदयपुर (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय मारडिया सज्जन हैं। भागलपुरमें करीब ५५ वर्ष पूर्व सेठ लादूरामजी आये थे। आरंभमें आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। तथा इधर २० वर्षोंसे शिवमिल नामसे एक तेलकल स्थापित की है। इस समय आपकी अवस्था ७५ वर्षकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको बाबू लादूरामजीके पुत्र बाबू नन्दलालजी बाबू बैजनाथजी एवं बाबू लोकनाथजी संचालित कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर मेसर्स लादूराम नन्दलाल—यहां सिल्क एण्ड टसर स्टोरके नामसे आपका भागलपुरी टसरी कपड़ा तैयार करनेका कारखाना है। तथा ब्याजका काम होता है।

भागलपुर शिवमिल कम्पनी, मुंदीचक—यहां आंइल एवं राइस मिल है। तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सिंहाना (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके प्रागसुलझा सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बा० ख्यालीरामजीके हाथोंसे करीब २० वर्ष पहिले हुआ था। आपका कुटुम्ब भागलपुरमें करीब सौ वर्षोंसे निवास कर रहा है। आरंभसे ही यह फर्म गल्लेका व्यापार कर रही है। बा० ख्यालीरामजीको गोसेवामें बहुत प्रेमथा। आपका स्वर्ग वास करीब २॥ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र बा० केदारनाथजी फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ सूजागंज—गल्ले और आढ़तका काम होता है। तथा स्टेन्ड र्ड आइल कम्पनीकी एजंसी एवं कंट्राक्टरका काम होता है।

थाना बिहपुर—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ—गल्लेका व्यापार होता है।

नौगछिया—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ—गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स मोहनलाल चाथमल दुधेड़िया

इस फर्मके संचालक ओसवाल समाजके सज्जन हैं। भागलपुरमें यह फर्म गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम करती है।

इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथमभागमें राजपूताना विभागमें पृष्ठ १४६ में दिया गया है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड (ब्रांच)
बनारस बैंक लिमिटेड (ब्रांच)
भूदरमल चंडी प्रसाद
भूदरमल लक्ष्मीप्रसाद
मोतिराम रामचन्द्र
हरचंदराय आनंदराम
सिल्क एण्ड टसर म्येन्युफेक्चरर
टसर एण्ड सिल्क स्टोर शुजागंज
महावीर सिल्क फेक्टरी शुजागंज
रामचन्द्र बंशीधर शुजागंज
सीताराम हरनारायण (मरचेंट्स)शुजागंज
हरचंदराय आनंदराम शुजागंज
गोरखराम दुर्गादत्त (नाथ नगर)
क्लाथ मरचेंट्स
आनंदराम गोवर्द्धनदास (कानपुर ऊलनमिल एजंसी)
जयरामदास हनुमानदास

जानकीदास बैजनाथ
जीवनराम रामचन्द्र (सूत कपड़ा)
दानमल मूलचंद
बैजनाथ रामेश्वरलाल (फैंसी गुड्स मरचेंट्स)
बैजनाथ जीवराज
बिहार स्वदेशी कम्पनी
लक्ष्मीराम बलदेवदास
हरनाथराय बंसराज
ग्रेन मरचेंट्स
स्यालीराम केदारनाथ मिर्जानहाट
गोपीसदाय मुंशीसा मिर्जानहाट
जानकीदास बैजनाथ मिर्जानहाट
भगवतीराम देवीप्रसाद „
भूदरमल चंडीप्रसाद
मोहनलाल चौथमल दुधेरिया (कमीशनएजंट)
रामेश्वरलाल केशवदेव मिर्जानहाट
लछमनसा गोपालसा मिर्जानहाट
हरनाथराम लक्ष्मीप्रसाद मिर्जानहाट
केदारनाथ निर्मलचन्द्र गोहा, मंसूरगंज (आयर्न फाउंडरी वर्क)
भूरामल भैवरीलाल भुतेडिया (कमीशनएजंट)
फैक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज
श्रीमोहन पन्नालाल (राइल आॅइल)
विक्टोरिया मिल (आॅइल)
शिवमिल (लादूराम नन्दलाल आइल मिल)
शंकर मिल (आइल.) बसंतलाल रामजीदास
शिवगौरी पावर मिल (बलदेवदास नारायणदास)
भागलपुर सिल्क इंस्टिट्यूट(गवर्नमेंटकी ओरसे)

किरानेके व्यापारी
पीरमल श्रीराम
दिवकरन्दा राय सागरमल
शोभाराम जोखीराम
भागलपुरी साध मरचें[illegible]
कुंजलाल रामपतराय
रामपतराय देवीप्रसाद
बिहार वीविंग फैक्टरी शा[illegible]
भूरामल लक्ष्मीप्रसाद
लादूराम नन्दलाल
चांदी सोनेके व्यापारी
कन्हैयालाल बनारसीप्रसाद
तेलसीदास महादेवलाल
देवीप्रसाद बद्रीप्रसाद
बोहितराम रामचन्द्र
रामानन्द जौहरीमल
हीरालाल नंदलाल
प्रिंटिंग प्रेस
गोपाल स्टीम प्रेस
युनाइटेड प्रेस
लायब्रेरीज
श्रीभगवान पुस्तकालय
सरस्वती पुस्तकालय
धर्मशालाएँ
जैन धर्मशाला
टोरमल दिलसुखराय
भूदरमल चंडीप्रसाद धर्मशा[illegible]
बिशुनदयाल गजानन्द पो[illegible]

बा० ज्वाला प्रसादजी ढांढनियां (भागलपुर)

बा० हीरालालजी ढांढनियां (भागलपुर)

बा० [illegible] ढांढनियां (भागलपुर)

बा० मोतीलालजी ढांढनियां (भागलपुर)

हरदेवदास डोकनियां धर्मशाला
- जेनरल मरचेंट्स
- जगन्नाथराम बैजनाथराम
- डोकनियां एण्ड को० (इलेक्ट्रिक गुड्स)
- शोभाराम जोरीराम सूत्रागंज

औषधालय और अस्पताल
- आनन्द औषधालय
- सरकारी अस्पताल
- ढाकाशक्ति औषधालय
- ढाका आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड

दानापुर

यहां फौजी छावनी है। यह स्टेशन ई० आई आर लाइनमें पटना जंक्शनसे लगा हुआ है। छावनीकी बस्ती साफ और सुथरी है। इस स्थानका सब व्यापार पटनेसे सम्बन्ध रखता है, यहां और खगौलमें मिलाकर करीब ६ आईल और राइस मिल हैं।

आर्यन मिल

इस मिलका स्थापन सन् १९११ में हुआ। इसके मालिक बाबू लक्ष्मणप्रसाद सिंहजी एवं केशोप्रसादसिंहजी हैं। आप अवध्या कुर्मी समाजके सज्जन हैं। वर्तमानमें फर्मके मैनेजिंग प्रोपाइटर बाबू गुरुप्रसादसिंहजी हैं। दानापुरमें इस फर्मकी बहुतसी जमींदारी है। कलकत्तेमें आपका बहुत बड़ा ईंटा बनानेका कारखाना है। करीब ४०।४२ पगमेल आप चलाते हैं। आप मेसर्स मेके टुक्सर्न एण्ड कं०के ईंटा बनानेके कंट्राक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आर्यन मिल दानापुर T. No 611 T A Oryanmills,—यहां आटाकल, फ्लावर राइस मिल एण्ड आयल फाक्टरी वर्क है

पटना सिटी—आर्यन मिल ब्रांच—मारूफगंज—यहां बिक्री व्यापार होता है।

पटना जं०—आर्यन मिल—गोडाउन और ब्रांच है।

मेसर्स श्यामलाल भागवतप्रसाद

इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय मेसर्स श्यामलाल भागवतप्रसादके नामसे पटनेमें दिया है। दानापुरमें इस फर्मका राइस मिल है। और गल्लेका व्यापार होता है।

पड़ी जाती है। इनके अतिरिक्त आप बिहार लेजिस्लेटिव कौंसिल, बिहार बोर्ड आफ इंडस्ट्रीज आदि कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। बिहार चेम्बर ऑफ कामर्सके आप प्रेसीडेंट रह चुके हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे भागलपुरमें श्री आनन्द औषधालय चल रहा है, इसमें ३००-४०० रोगियोंको प्रति दिन औषधि दिलवाई जाती है। धनसमें आपकी ओरसे एक अन्नक्षेत्र चालू है। कलकत्ता एवं भागलपुरके व्यापारियोंमें इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। संथाल परगना जिलेमें आप लोगोंकी बहुतसी जमींदारी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स हरचंदराय आनंदराम सुजागंज—यहां हेड ऑफिस है और बेङ्किग तथा जमींदारीका काम होता है।

भागलपुर - मेसर्स आनन्दराम गोवर्द्धनदास सुजागंज—यहां कपड़ेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। यहां कानपुर उलन मिलकी एजंसी है। इसका काम सूरजमलजी शाहके पुत्र दुर्गा प्रसादजी देखते हैं

भागलपुर—हरचंदराय आनन्दराम T. A. Anand—यहां सिल्क एण्ड टसर म्येन्यूफेक्चरर एवं उसकी चिजोंका व्यापार होता है।

भागलपुर—श्रीमोहन पन्नालाल T. A. Dhandhania—यहां राइस एवं ऑइल मिल है।

कलकत्ता—मेसर्स हरचंदराय गोवर्द्धनदास १८० हरिसन रोड, T. No. 2129 B. B. तारका पता Hargobar.—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट, व्यापार आढ़त एवं लेन देनका काम होता है।

कलकत्ता—हीरालाल बन्नूलाल ९९ सूतापट्टी-धोतीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—छोटेलाल मननारीलाल २० उल्टा डांगी रोड T. No. 1605 B.B.—यहां आइल मिल तथा आयर्न फाउंडरी वर्क है।

कलकत्ता—धावूलाल रामेश्वरदास ४१ सूतापट्टी—सूतका व्यापार होता है।

पटना—श्री बिहारीजी मिल्स T. A. FLOUR T. No. 518 Patna—इसके अंडरमें आइल राइस, फ्लावर एवं दाल मिल तथा आयर्न फाउंडरी वर्क्स हैं। इसका विशेष परिचय पटनामें दिया गया है।

मेसर्स गोपीलाल मिश्रीलाल

इस फर्मके मालिक फतहपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके भरतिया सज्जन हैं। सेठ जाड़ोरामजीने करीब ७० वर्ष पूर्व पटनेमें दुकान स्थापित की थी। उस समय इस फर्मकी बहुतसी ब्रांचेज थीं जिनपर जाड़ोराम जुहारमलके नामसे गल्ला और आढ़तका काम होता था। बाबू जाड़ोरामजी नेही सबसे पहिले बिहार प्रान्तमें आइल मिल चलाया। २०।२२ वर्ष पूर्वसे जाड़ोरामजीके पुत्र ठाकुरदासजीकी फर्म साहबगंजमें और जुहारमलजीके पुत्र गोपीलालजी की फर्म दुलपुरमें अपना अलग २ कारबार करने लगी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गोपीलालजी और मिश्रीलालजी दोनों भ्राता हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दुलपुर—मेसर्स गोपीलाल मिश्रीलाल T No 608 Patna—यहां आपका फाउंडरी वर्क्स तथा आइल मिल है। यह मिल बिहारमें सबसे पुरानी है। करीब ६२ वर्ष पहिले यह स्थापित की गई थी।

कपड़ेके व्यापारी

मनीराम बैजनाथ

रामप्रसाद भगवानप्रसाद

लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

फेक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

गोपीलाल मिश्रीलाल आइल फ्लावर फॉउंड्री

लक्ष्मणप्रसादसिंह फेरोप्रसादसिंह आयर्नमिल

लक्ष्मी राइस एण्ड आइल मिल

श्यामलाल हीरालाल राइस मिल

इम्पीरियल मिल (क्लोज)

भगवती राइस आइल मिल (क्लोज)

गल्लेके व्यापारी

कपूरचंद लालचन्द बच्चनलाल

दुलिचलाल भगवानदास

रामगोविन्दप्रसाद शिवगोविन्दप्रसाद

रामचरणलाल मनवारीलाल

श्यामलाल भगवानप्रसाद

चांदी सोनेके व्यापारी

डोमनलाल छितनलाल

रामभरोसलाल पन्नीलाल

जनरल मरचेंट्स

गौरीलाल एण्ड ब्रदर्स

पटवारन एण्ड को०

ए० पी० रॉय फर्म

मेसर्स बोहितराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक मलसीसर (जयपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय झुंझुनूवाला सज्जन हैं। बाबू रामसनेहीदासजी ८० वर्ष पूर्व व्यापार निमित्त कलकत्ता आये थे। आपके चार भ्राता और थे जिनका नाम बाबू हरदयालजी, बोहितरामजी, रामचन्द्रजी एवं हरसामलजी था। इनमेंसे सेठ रामसनेहीदासजी एवं बोहितरामजीने मिलकर कलकत्तेमें रामसनेहीराम बोहितरामके नामसे फर्मका स्थापन किया। उसी समय करीब ७० वर्ष पूर्व भागलपुर में भी बोहितराम रामचन्द्रके नामसे फर्म स्थापित की गई।

वर्तमानमें सेठ बोहितरामजी, हरसामलजी एवं रामचन्द्रजी का कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है, इस समय कार्य संचालन करनेवाले प्रधान व्यक्ति बाबू बैजनाथजी, रामेश्वरलालजी, ज्वालाप्रसादजी ओंकारमलजी, केशवदेवजी एवं महादेवलालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसनेहीराम बोहितराम ४०१.७ L अपरचितपुर रोड—आढ़तका काम होता है।
भागलपुर—बोहितराम रामचन्द्र—बैङ्किग, सोना चांदी तथा जमींदारीका काम होता है।
भागलपुर—बैजनाथ रामेश्वरलाल, सुजागंज—फैंसी गुड्सका व्यापार होता है।
भागलपुर—रामेश्वरलाल केशवदेव, मिर्जानहाट—गल्लेका व्यापार होता है। यहां रामकुंवारजी काम देखते हैं।
नवगछिया—B.N.W.R. बल्देवदास महादेव—गल्लेका व्यापार होता है।
रावराघाट (दरभंगा)—ओंकारमल महादेवलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

किरानेके व्यापारी

मेसर्स शोभाराम जोखीराम

इस फर्मके मालिक बाबू जोखीरामजी मेहेसेका हैं। आपका मूल निवास मुकुन्दगढ़ (शेखावाटी) हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ शोभारामजीके हाथोंसे करीब ६० वर्ष पूर्व हुआ था। इस नामसे यह फर्म ४८।५० वर्षोंसे व्यापार करती है। आरम्भसे ही यह फर्म किरानेका व्यापार कर रही है। सेठ जोखीरामजीके नाती श्रीयुत रामप्रसादजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स शोभाराम जोखीराम सूजागंज T.A. Jokhiram—यहां किरानेका व्यापार होता है

आरा

यह शहर ईस्ट इण्डिया रेलवेकी मेन लाइन पर पटना और मुगलसरायके मध्यमें स्थित है। यह स्थान बिहार प्रांतके शाहाबाद जिलेका प्रधान नगर है। यहांसे आरा सहसराम लाइट रेलवे सहसराम की ओर गयी है। शाहाबाद कमिश्नरीमें आरा, बक्सर, सहसराम तथा भभुआ नामक चार प्रधान व्यापारिक स्थान हैं। इनके आस पास कई ऐतिहासिक स्थान हैं। जगदीशपुर (आरा) में सन् १८५७ के विप्लवमें भाग लेनेवाले प्रसिद्ध बाबू कुंवरसिंहका निवास स्थान है। बक्सरमें सन् १७६४ में बंगालके नवाब मीरकासिम और शाहआलम के साथ अंग्रेजोंका युद्ध हुआ था। बक्सर के समीप ही श्रीरामचन्द्रजीने ताड़काका वध किया था। सहसराममें शेरशाहका मकबरा है यहां दरी, कालीन और मिट्टीके बर्तन अच्छे बनते हैं। नासरीगंजमें चीनी बनाई जाती है सहसराम सब डिविजिनमें रोहतास गढ़, शेरगढ़ नामक दो किले हैं। इस जिलेकी प्रधान पैदावार धान, मकई, गेहूं, रब्बी और भदई है।

आरा प्राचीन बस्ती है। यहां प्रधान व्यापार गल्ले और कपड़ेका होता है। इसके अतिरिक्त किराना और जनरल सामान बाहरसे आता है। यहां जैन समाजके कई धार्मिक कार्य हैं जिनमें विशेष उल्लेखनीय वीर बाला विश्राम है।

वीर बाला विश्राम—इस आश्रमकी संचालिका विदुषी देवी चंदाबाई हैं। आपके पति केवल १८ वर्षकी अल्पायुमें ही स्वर्गवासी हो गये थे तबसे आप बराबर परोपकारके कार्योंमें विशेष समय लगा रही हैं। आपने १९२१ में इस आश्रमकी स्थापना की। इस संस्थामें इस समय ५५ छात्रिकाएं अध्ययन करती हैं। जिनमें २० कन्याएं ३० विधवाएं एवं ५ सौभाग्यवती हैं। इस संस्थाके ध्रुवफंडमें तीन चौथाईसे अधिक रकम आपकी ओरसे दी गई है।

आराके व्यवसाइयोंका परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स और जमींदार

मेसर्स निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन

इस कुटुम्बका प्राचीन निवास इलाहाबादके नजदीक है। यहांसे बा॰ प्रभूदासजी बनारस आये और वहांसे करीब ८० वर्ष पूर्व आरा आये। यहां आपने जमींदारी और बेङ्किग व्यवसाय आरम्भ किया, एवं अपने समयमें धार्मिक कार्मोंमें अच्छी प्रसिद्धि पाई। आपने इलाहाबाद जिलेमें २ जैन मन्दिर, बनारसमें २ तथा आरामें एक जैन मन्दिरका निर्माण कराया। बनारसमें गंगातीरपर भदैनीका शिखर जैन टेम्पल आपहीका बनवाया हुआ है। आपका स्वर्गवास करीब ५० वर्ष

पूर्ण हो गया है। आपके पुत्र बाबू चन्द्रकुमारजीके श्री देवकुमारजी एवं श्री धर्मकुमारजी नामक दो पुत्र हुए। इन सज्जनोंमेंसे बाबू धर्मकुमारजीका सन् १९०१ में केवल १८ वर्षकी अल्पायुमें स्वर्गवास हो गया, आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपकी धर्मपत्नी श्रीमती देवी चंदाबाईने अपना धार्मिक जीवन बिताते हुए श्री जैनबाला विश्राम नामक एक आश्रम की स्थापना की, जिसका परिचय पूर्व दिया जा चुका है।

बाबू देवकुमारजी भी बड़े विद्वान और उच्च हृदयके होनहार सज्जन थे, आप भी ३० वर्षकी अल्पायुमें स्वर्गवासी हो गये, आप अपने स्वर्गवासी होनेके समय ८ हजार सालाना आमद-की जमींदारी दान कर गये, जिसकी आमदसे वर्तमानमें आरा ओरियंटल जैन लायब्रेरी, जैन कन्या पाठ॰ सम्मेद शिखर जैन औषधालय आदि संस्थाओंका संचालन और विद्यार्थियोंके स्कालर शिप-का प्रबंध होता है। बाबू देवकुमारजी, जैनमहासभा के सभापति भी मनोनीत किये गये थे, आपके स्वर्गवासी होनेके समय आपके पुत्रोंकी अवस्था छोटी थी अतएव ८।१० वर्षतक फर्मका प्रबन्ध भार कोर्ट आफ वार्ड्सके जिम्मे रहा।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक स्वर्गीय बाबू देवकुमारजीके पुत्र बाबू निर्मलकुमारजी एवं बाबू चक्रेश्वरकुमारजी जैन B.S.C-L L.B. हैं आप दोनों शिक्षित सज्जन हैं। बाबू निर्मलकुमारजी बिहारचेम्बर आफ कामर्सके वाइस प्रेसिडेन्ट हैं। आपके जिम्मे सम्मेद शिखर, पावापुरी आदि बिहारके जैन तीर्थोंका प्रबन्ध भार है। आपकी फर्म आल इण्डिया जैन महासभाकी ट्रेझरर है। आपका कुटुम्ब जैन समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आरा—मेसर्स निर्मल कुमार चक्रेश्वरकुमार जैन—इस नामसे आपकी शाहाबाद जिलेमें जमींदारी है

आरा—श्री सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, चौक—इस नामसे प्रेस है।

कपड़े और गल्लेके व्यापारी

मेसर्स कनीराम गणपतराय

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बा॰ कनीरामजीके हाथोंसे संवत् १९२९ में मधुबनमें संवत् १९४८ में सहसराममें और १९५१ में आरामें हुआ। आपने भभुआ रोड और सहसराममें धर्मशा-

भागलपुर—जानकीदास बैजनाथ—यहां कपड़ेका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
भागलपुर (मिर्जानहाट) जानकीदास बैजनाथ और बैजनाथ मोहनलाल – यहांगल्लेका व्यापार होता है।
कलकत्ता—जानकीदास बैजनाथ १७३ हरीसन रोड–यहां आढ़त और सराफी लेनदेनका काम होता है। इसके अतिरिक्त मुरलीगंज और आलमनगरमें कपड़ा और किराना बिकता है।

मेसर्स जीवनराम रामचन्द्र

यह फर्म कलकत्तेके सूतके व्यापारी मेसर्स जीवनराम शिवबक्सकी है। आपके यहां भागलपुर और नाथनगरमें रेशमी यार्न सूत, कपड़ा और भागलपुरी टसरका व्यापार होता है, यहां रामदेवजी गोयनका काम देखते हैं। इसकी एक ब्रांच मुजफ्फरपुरमें भी है। तारका पता Murli है।

मेसर्स लच्छीराम बलदेवदास

इसफर्मका स्थापन संवत १९५७ में हुआ, इसमें वर्तमान मालिक सेठ लच्छीरामजी एवं उनके पुत्र बल्देवदास और मूलचंदजी हैं। बलदेवदासजीके पुत्र महावीरप्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर - लच्छीराम बल्देवदास—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।
भागलपुर—हजारीमल महावीर प्रसाद—ऊलन, फेंसी गुड्स और रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है।]

मेसर्स हरनाथराय बीजराज

इसे सेठ हरनाथरायजीने १० वर्ष पहिले स्थापित किया। इसके पूर्व आप ४८।५० वर्षोंसे हरनाथ राय जानकीदासके नामसे कपड़ेका कारबार करते थे। इसके वर्तमान मालिक हरनाथ रायजी एवं उनके पुत्र बीजराजजी, लक्ष्मीप्रसादजी तथा बनारसी प्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—हरनाथराय बीजराज—यहां कपड़ेका थोक व्यापार व सराफी लेन देन होता है।
भागलपुर—हरनाथराय लक्ष्मीप्रसाद मिरजानहाट—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।
कलकत्ता—हरनाथराय बीजराज, ६५ लोअर चितपुर रोड—यहां आढ़तका काम होता है।

लाए और देशमें ठाकुरवाड़ी बनवाई। आपका एवं आपके पुत्र जानकीदासजीका स्वर्गवास एक एक मासके अन्तरसे संवत् १९७२ में होगया है।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक कनीरामजीके छोटे भ्राता बा० गणपतरायजी और बा० जानकीदासजीके पुत्र इन्द्रचन्दजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आरा - मेसर्स कनीराम गणपतराय कपड़ा, सोना-चांदी गल्लाका व्यापार और जमींदारी काम होता है।

सहसराम—कनीराम जानकीदास—गल्लाका व्यापार होता है।

बक्सर—कनीराम गणपतराय—यह फर्म संवत १९४९ से कपड़ेका व्यापार कर रही है।

भभुआ रोड—कनीराम गणपतराय—कपड़ागल्ला सोना चांदी व जमींदारीका काम होता है।

दुदरा—कनीराम गणपतराय—गल्ला तथा कपड़ाका व्यापार होता है।

कलकत्ता—कनीराम हजारीमल ४७ स्ट्रांड रोड T. A. Astami—बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

डाल्टनगंज और मोहनियां—कनीराम गणपतराय—कपड़ा तथा गल्लाका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण सागरमल

इसफर्मका स्थापन संवत १९३४।३५ में बा० रामनारायणजीके हाथोंसे हुआ था। आप चुरू (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० सागरमलजी और आपके पुत्र बा० रामेश्वरप्रसादजी और हरिद्वारप्रसादजी हैं। बा० सागरमलजीने इस दुकानके कारबारको तरक्की दी है। आपकीओरसे आरामें एकधर्मशाला बनी हुई है बा० हरिद्वारप्रसादजी जालान शिक्षित नवयुवक हैं। आपने हिन्दीमें कई पुस्तकें लिखी हैं मारवाड़ी अग्रवाल सभामें आप उत्साहसे भाग लेते हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

आरा—मेसर्स रामानारायणसागरमल—कपड़ा, गल्ला जमींदारी और सराफी लेन देन होता है।

हसनबाजार (आरा) रामनारायण सागरमल—राइस आइल और फ्लावर मिल है, तथा गल्लाका कारबार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामनारायण सागरमल १७३ हरीसन रोड—चलानीका काम होता है।

इतिहास

चाय

ऐतिहासिक दृष्टिसे चायका विवेचन करते समय स्वीकार करना पड़ेगा कि इसका इतिहास भी एक प्रकारसे आधार हीन ही है। फिर भी जो कुछ लिखा जा सकता है वह केवल दन्त कथाओंके आधार पर ही। इतना होते हुए भी संसारमें चायकी ख्याति सबसे प्रथम चीन माननी पड़ेगी। चीनके प्राचीन पुस्तकालयोंमें प्रवेशकर यथेष्ट अनुसन्धानके बाद सम्भव है कि भी इस ऐतिहासिक रहस्य पर कुछ प्रकाश डाला जा सके। योरोपीय विद्वान ब्रेट्स-चनेडियरका मत है चीनी भाषाके प्राचीन कोष हु-य (Rh-ya) में चायके पौधेकी चर्चा आयी है। उस ग्रन्थमें उसे ' और क' उ-टू (Kia and k'u-tu) कह कर सम्बोधित किया गया है। चीनी भाषामें क-उ अर्थ कड़वेके होते हैं। आपका कहना है कि चीनी भाषाका आधुनिक 'च' अक्षर वहांके प्राचीन चीन साहित्यमें व्यवहृत ट'+उ के उच्चारणमें गड़बड़ हो जानेसे ही उत्पन्न हुआ है। अर्थात पुराने टू (ट'+उ) (T'u) का उच्चारण बिगड़ कर वर्तमान च'+अ (Ch'a) के समान बोला जाता है। उच्चारणकी यह गड़बड़ी * सम्भवतः २०२ वर्ष मसीह सन् ईस्वीसे पूर्व और २५ वर्ष सन ईस्वीके बादके युगमें हुई मानी जाती है। फिर भी इस उच्चारणका व्यवहारिक प्रयोग साधारणतया ७ वीं और ८ वीं शताब्दीसे ही होने लग गया था। इसी प्रकार चीनी भाषामें चायके पौधेके लिये 'मिङ्ग' शब्दका प्रयोग होता है। मसीह सन् से पूर्व लिखे गये चीनी भाषाके ग्रन्थोंमें चायके सागकी चर्चा भी मिलती है जिसे 'मिङ्ग ट'+साई' कह कर सम्बोधित किया गया है। चायके † सागमें कोई अधिक विशेषता नहीं है क्योंकि इस युगमें भी शान और बर्माके निवासी चायकी गिरी हुई पत्तियोंको संग्रह कर साग बना कर खाते हैं। ऐसी दशामें यह भी सम्भव है कि उस युगमें चीन वाले भी चायकी पत्तीका साग बना कर खाते रहे हों।

---

* देखिये सन् १९१२ ई० का प्रकाशित Botanical Sinensis vol ii page 20 and 130

† देखिये Commercial Products of India by Sir George watt.

व्यापार करते हैं, इसके पूर्व कलकत्तेके [illegible] आफिसमें काम करते थे। संवत् १९८१ तक आपकी फर्म सुरजमल गोवर्द्धनदासके नामसे कारबार करती रही। बादमें गोवर्द्धनदासजी और आपका कारबार अलग हो गया।

बा० लक्ष्मीनारायणजी डालमियां चिड़ावा जयपुर स्टेट निवासी अग्रवाल समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। आपके पुत्र बा० गौरीशंकरजी और गंगाधरजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया - मेसर्स लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर T. A. Dalmia—यहां सूतका कारबार और सराफी लेन-देन होता है।

मेसर्स श्रीनिवास रामकुंवार

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ [राजपूताना] के निवासी हैं। आप अग्रवाल समाजके गर्ग गोत्रीय भगवती सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सम्वत् १९५९ में कुदरामें, सम्वत् १९६४ में मनुआमें और सम्वत् १९७१ में गयामें बा० श्रीनिवासजीके हाथोंसे हुआ। इस समय आपकी आयु ७० वर्षकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बा० श्रीनिवासजीके पुत्र बा० रामकुंवारजी, बा० कृष्णदत्तजी, बा० मदनलालजी तथा बा० पुरुषोत्तमलालजी हैं। आप चारों सज्जन व्यवसायका संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स श्रीनिवास रामकुंवार—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

गया—मेसर्स रामकुंवार कृष्णदत्त—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

कुदरा [आरा]—श्रीनिवास रामकुंवार—यहां कपड़ा और गल्लाका व्यापार तथा बैंकिंगका काम होता है। यहां आपकी श्रीमहावीर आईल मिल है।

मनुआ—रामकुंवार कृष्णदत्त—यहां कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आरा सहसराम लाइट रेलवे लाइनमें आपका गल्लाका व्यापार होता है।

गया

यह शहर पटनासे ५७ मील दूर फल्गू नदीके किनारे बसा है। भारत भरके हिन्दू, पित्रोंको पिंड देनेके लिये यहां आते रहते हैं। इससे सब प्रांतोंके सभी जातियोंके लोगोंकी आमद रफ्त यहां बहुत अधिक संख्यामें रहती है। यहां भारत प्रसिद्ध होल्कर महिलारत्न देवी अहल्याबाई का बनवाया हुआ ऊंचे टीले पर दर्शनीय विष्णुपदका मंदिर हैं।

यहांसे ६ मील की दूरीपर बौद्ध गयामें भगवान बुद्धको बौद्धत्व प्राप्त हुआ था यहां एक सुन्दर बौद्ध मंदिर बना हुआ है। जिसमें शांतिमय भगवान बुद्धकी विशाल प्रतिमा दर्शनीय है बर्मा आदि देशोंसे यात्री भगवानबुद्धके शांतिस्थलके दर्शनोंके लिये यहां आते रहते हैं।

गया जिला बिहार प्रांतके दक्षिणी हिस्सेमें है। जिस प्रकार उत्तरी बिहारकी सस्य श्यामला भूमि अपनी कृषिकी उपजमें बढ़ी चढ़ी है उसी तरह इस प्रांतका दक्षिणी विभाग भी अपने खनिज द्रव्योंकी उपजमें भारतकी सम्पत्तिको बढ़ानेमें प्रधान स्थान रखता है। इसके आसपास अभ्रक, लोहा, कोयला तथा शीशाकी खदानें हैं। जिनका परिचय बिहारके आरम्भमें दिया गया है। गया जिले तथा आसपासके स्थानोंकी पर्वतीय भूमिके गर्भमें अतुल सम्पत्ति भरी है। इसी जिलेमें कोडरमा नामक स्थान अभ्रकके व्यापारके लिये बहुत प्रसिद्ध है। मशहूर भानाखाप नामक अभ्रककी खदान इसीके समीप है।

गयासे हजारीबाग और रांची जानेके लिये कई मोटर लारियां रन करती रहती हैं। यहांसे रांची करीब १५० मीलकी दूरीपर है। शेरशाहकी बनाई प्रसिद्ध ग्रांडट्रंक रोड इसी मार्गमें है। इस सड़कके दोनो ओर सैकड़ों मील तक आमके झाड़ोंकी लगी हुई कतार बड़ी भली मालूम होती है। गर्मियोंमें वायु सेवनके लिये भ्रमण करनेवाले यात्री रांची हजारीबागके लिये इसी रोडसे होकर जाते हैं।

कपड़ा गल्लाके व्यापारी

मेसर्स गुलराज बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गुलराजजी लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब ५०।६० वर्ष पहिले बाबू रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुआ था। सेठ बीजराजजीके पुत्र बाबू रामचन्द्रजी, बाबू जानकीदासजी, बाबू गुलाबरायजी और बाबू गुलराजजी संवत् १९७० तक शामिल कारबार करते रहे, बादमें सबका व्यापार अलग २ होगया, तबसे बाबू गुलराजजीकी फर्म इस नामसे अपना व्यवसाय करती है। आपके पुत्र श्रीबाल-

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लि०
गया को-ऑपरेटिव्ह बैंक लि०
बैंक आफ बिहार लिमिटेड
बिहार ट्रेडर्स बैंक
सदासुख भैरवलाल

ग्रेन मरचैंट्स

रामानंद जुगुल किशोर पुरानी गोदाम
गुलराम बालमुकुंद चौक
गोवर्द्धनदास जगन्नाथ पुरानी गोदाम
रघुनाथ पोद्दार पुरानी गोदाम
छोगालाल दानूलाल चौक
मूलचन्द रामविलास चौक
हजूराम भैरोंलाल
भीमराज पन्नालाल चौक
रामदयाल चैनसुख
रामलाल जुगुल किशोर पुरानी गोदाम
रामचन्द्रराम हरिप्रसाद पुरानी गोदाम
शिव बक्स चैनसुख
सदासुख भैरवलाल
शिवनिवास राम कुंवार

[illegible] मरचैंटस

मेसर्स [illegible] बद्रीलाल
" घनश्यामदास हनुमानदास
" बैजनाथ निर्मलराम
" [illegible]

[illegible] मरचैंटस

मेसर्स ईश्वरदास [illegible]

मेसर्स काशीराम कालूराम
" गोवर्द्धनदास गयाप्रसाद
" घनश्यामदास हनुमानदास पुरानी गोदाम
" जयदयाल मदनगोपाल
" रामकुंवार दुलीचन्द पुरानीगोदाम
" रामलाल जुगुल किशोर "
" रामसरनराम गुरुसरनराम "

किरानेके व्यापारी

मेसर्स बुद्धूराम कालीराम
" शिवचरणराम रघुनाथराम

सूतके व्यापारी

जीवनराम निर्मलराम
रामलाल जुगुलकिशोर
लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

जनरल मरचैंट्स

मेसर्स गणेशब्रदर्स (आइलमेन स्टोर्स)
" चन्द्रमणिलाल बलदेवलाल
" मथुराप्रसाद गंगालाल
" सावित्री भंडार (आइलमेन स्टोर्स)

मोटर एण्ड मोटर साइकल डीलर्स

मेसर्स स्वदेशी मोटर सर्विस गया
" गोवर्द्धनदास गयाप्रसाद (पेट्रोल एजंट)
" देव इंजिनियरिंग वर्क्स
" पटना कोच वर्क्स गया ब्रांच
" मित्रा एण्ड को० (B. O. C. आइल एजंट)

फेक्टरीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

पटना इलेक्ट्रिक वर्क्स लिमिटेड

बाबू रामविलासजी पाटनी गया
(भूथालाल रामविलास)

बाबू लक्ष्मीनारायण
झरिया । बिहार

श्री गजानन्दजी पाटनी गया
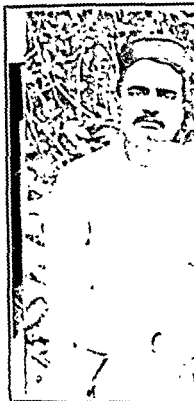
बाबू रामकृष्णजी अग्रवाल झरि

गयाधर चन्दर एण्ड आइलमिल
विष्णु आईल मिल
रामचन्द्र नारायण राइस मिल
शमसुद्दीन मिर्जा रामचन्द्रप्रसाद राइस आईल मिल

पुस्तकालय
रामरतनलाल पुस्तकालय
गांधी पुस्तकालय

प्रेस
कृष्णा आर्ट प्रेस
मानिक प्रेस
लक्ष्मी प्रेस
आनन्द प्रेस

धर्मशालाएं
रा० ब० सूरजमल शिवप्रसाद झुनझुनवाला धर्मशाला स्टेशनके पास और गया शहर
दिगम्बर जैन धर्मशाला

दर्शनीय स्थान
बौद्ध गया मंदिर
विष्णुपद मंदिर
दिगम्बर जैन टेम्पल

झरिया

यह नगर संसार प्रसिद्ध झरिया कोल क्षेत्रका केन्द्र है। यहां पहुंचनेके लिये ई० आई० रेलवेके धनबाद नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है और इसी स्टेशनसे इस कोल क्षेत्रके प्रधान केन्द्रके लिये एक ब्रांच लाइन गयी है। यह नगर अपनी व्यवसायिक महत्ताके लिये तो सुख्यात नहीं है। पर यहांके केवल औद्योगिक केन्द्रको प्रगतिका सहज ही अमिट अनुभव होता है। माल गाड़ीके डिब्बों और कोयलाकी प्रतिमूर्ति बने श्रमजीवियोंकी चलती फिरती भीड़ सहसा आगंतुकों को आकर्षित करनेमें सफल होती है।

भारतमें पत्थरके कोयलेके प्रधान केन्द्र तीन ही माने जाते हैं। इनमेंसे झरियाका कोल केन्द्र भी एक है। कलकत्तेसे १४० मील दूर वाले रानीगंज कोलक्षेत्रसे यह प्रायः ४० मील दूर है। यहांसे कोयला प्रायः रेलवे कम्पनियों, रेलवे कम्पनियोंके कारखानों, जूट मिलों और इतर छोटे मोटे कारखानोंको रेलवे और स्टीमर द्वारा जाता है। बड़े २ लोहेके कारखाने भी यहांके कोयलेके बल पर काम कर रहे हैं अतः इस एक प्रधान औद्योगिक विशेषताके कारण ही झरियाकी यह छोटी बस्ती भी आज ख्याति प्राप्त करनेमें समर्थ हुई है। यहां इस व्यवसायके अतिरिक्त और कोई भी व्यवसाय प्रधान रूपसे नहीं होता है। हां जो कुछ भी यहां सामान्य रूपसे व्यापारके नाम पर उद्योग होता है वह सब इसी एक औद्योगिक जागरूकताका कारण है।

झरिया, एल० बी० हिन्दी बंगाली गर्ल्स स्कूल झरिया, आदि संस्थाओंके मेंबर हैं। और गुजराती गर्ल्स स्कूलके आनरेरी सेक्रेटरी. कोल फील्ड्स बाय स्काउट्स असोसियेशन झरियाके प्रेसिडेंट हैं आप धनबाद जेलके नान आफिशियल व्हिजिटर हैं भारत सरकारने आपको राय बहादुर की पदवीसे सम्मानित किया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झरिया—मेसर्स प्योअर झरिया कोलियारी कंपनी—इस कंपनीके अण्डरमें यहां कई कोयलेकी खदाने हैं। देवजी दयाल ठक्कर इसके मेनेजिंग पार्टनर हैं।

कपड़ेके व्यापारी

फालूराम भोलाराम

गणेशनारायण नथमल

जानकीदास द्वारकादास

बजरंगलाल अग्रवाला

शिवप्रसाद फूलचन्द

सुखदेवदास सदाराम

गल्लेके व्यापारी

अर्जुनदास बाबूलाल

गोवर्धनदास रतीराम

जुगुलकिशोर तुलसीराम

बलभद्रराम बाबूलाल

भगवानदास चिमनराम

भगलुसाहु सौगीसाहु

महादेवलाल कन्हैयालाल

महादेवलाल जयनारायण

मुंशीसाहु बौधूसाहु

रामगोपाल गुरुदयाल

रामेश्वर ताराचन्द

हजारीमल जीवनराम

हाजीदाउद अय्यूफ

चांदी सोनेके व्यापारी

कपिलभगवान रामेश्वर

नागरमल लिहला

भिखाईदत्त

बख्तावरमल अग्रवाला

विनोदबिहारी सेन

सागरमल बिसेसरलाल

पीतलके बर्तनके व्यापारी

डालूराम मूलचन्द

महाबल हनुमानदास

घीके व्यापारी

मुरारजी लालचन्द माटलिया

लद्धाजी वल्लभजी माटलिया

शिवलाल पोपट

मुकुन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हो गया है। आपकी ओरसे गया जैन मंदिर आदिमें सहायता दी गई है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स गुलराज बालमुकुन्द चौक—यहां कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज रामविलास १६।१।१ हरीसन रोड—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ

इस फर्मका स्थापन संवत् १९५१ में बाबू सुखदेवदासजी और बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियांके हाथोंसे सुखदेवदास गोवर्द्धनदासके नामसे हुआ था आपही दोनों सज्जनोंके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की मिली। बाबू सुखदेवदासजीका स्वर्गवास सं०१९६८ में हुआ। आपकी मौजूदगीमें ही आपके पुत्र गोवर्द्धदासजी स्वर्गवासी हो गये थे। आपके बाद फर्मका संचालन बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियां करते रहे। संवत् १९८१ से बाबू लक्ष्मीनारायणजी और स्वर्गीय गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बा० जगन्नाथजी और गोपीरामजी अपना २ अलग कारबार करने लगे। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गया—मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ, पुरानीगोदाम T. A. Jagannath.—यहां कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

गया—श्रीविष्णु ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक ऑइल मिल है।

मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास

इस फर्मके मालिक बाबू घनश्यामदासजी डीडवाणियां हैं। आपके हाथों ही इस दुकानका कारबार ४० वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था। आप फतहपुर (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू बालाबक्सजी और गनेशलालजी हैं। बाबू घनश्यामदासजी खरे स्वभावके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास, T. A. Ghansham—आरंभसेही इस फर्मपर चांदी, सोना, गल्ला, तिलहन, तीसीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

गया—श्रीनागेश्वर फ्लावर एण्ड ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक मिल है।

धनबाद

यह नगर ई० आई० रेलवेके धनबाद स्टेशनके समीप ही छोटीसी बस्तीके रूपमें बसा हुआ है। यहीसे संसार प्रसिद्ध झरियाके कोयला क्षेत्रके लिये रेलवेकी एक ब्रांच लाइन जाती है। अतः यह स्थान प्रधानतया झरिया आनेजानेवाले लोगोंको रेलवेका क्रीड़ास्थल सा प्रतीत होता है। भारत सरकारके खान विभागके प्रधान पदाधिकारीका यहां हेड क्वार्टर है अतः उनसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी दफ्तरोंकी लीला भूमि भी यही स्थान है।

रत्नगर्भा भारत वसुन्धराका अक्षय भण्डार खानसे निकलनेवाले पदार्थोंसे भरा पूरा है पर राष्ट्रोचित सरकारके अभावके कारण यहां यथेच्छ परिमाणमें खानोंसे काम नहीं लिया जाता और परिणामतया यहांके नवयुवक आज अपने कुबेर भण्डारके वास्तविक स्वरूपकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इन सब प्रकारकी कठिनाइयोंको दूर करनेके लिये कई बार सरकारका ध्यान आकृष्ट किया गया तब कहीं जाकर भूगर्भ विद्याकी शिक्षा देनेके लिये इसी स्थानपर एक छोटासा स्कूल खोला गया है। यह स्कूल अपने स्वरूपके अनुकूल कार्यक्षेत्रमें कुछ न कुछ कार्य कर ही रहा है यद्यपि यह भारत ऐसे विशाल राष्ट्रके लिये किसी भी गिनतीमें नहीं आ सकता। फिर भी नहींसे तो अच्छा ही है। धनबाद इन्हीं कतिपय विशेषताओंके कारण आज जनताके सामने है नहीं तो ऐसी बस्तीकी गणना ही कैसी? यहांका व्यापार भी इसी खेलके खिलाड़ियोंकी आवश्यकता पूरी करनेके लिये है अतः यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय हम नीचे दे रहे हैं:—

मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गुढ़ा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गुटगुटिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ अर्जुनदासजीके हाथोंसे हुई। इसका हेड आफिस कोरों (संथाल परगना) है शुरूसे ही यहां धान चांवलका व्यापार होता आ रहा है। इस फर्मकी विशेष उन्नति सेठ अर्जुनदासजीके हाथोंसे ही हुई। आप व्यापार-कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ अर्जुनदासजीके पुत्र बा० रामनारायणजी, एवं गुलाबरायजीके पुत्र बा० सीतारामजी, रामगोपालजी, मुरलीधरजी, गिरधारीलालजी, काशीनाथजी तथा रामनारायणजीके पुत्र बा० विश्वनाथजी हैं। विश्वनाथजीको छोड़कर शेष सब व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मकी ओरसे नीमका थाना नामक स्थानपर एक धर्मशाला तथा गुढ़ामें एक औषधालय स्थापित है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धनबाद—मेसर्स अर्जुनदास गुलावराय T. A. Krishna—यहां तेलका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स अर्जुनदास गुलावराय ६ स्यामाबाई लेन T. A. Gutgutia T. No. 3123 B. B.—यहां कमीशन एजंसीका काम होता है। यह फर्म Sandi सेंडा कम्पनीकी बेनियन है।

करसा—(वर्द्धमान)—मेसर्स अर्जुनदास गुलावराय T. A. Krishna—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

बामनटर (संथाल परगना) „ „ —यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कोगी („ „) „ „ —यहां बैंकिंग, जमींदारी तथा लेनदेनका काम होता है।

रामजीवनपुर (मिदनापुर) „ „ —यहां गल्लेका तथा आढ़तका काम होता है।

शिवनहार [वीरभूमि] „ „ —यहां गल्लेका तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गोपीराम भगवानदास

इस फर्मके मालिक मारवाड़ (भवानी) के निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके मोरदिया सज्जन हैं। आपकी फर्म यहां ४५ वर्षसे स्थापित है। इस फर्मको सेठ गोपीरामजीने स्थापित की। आपहीके हाथोंसे इसकी तरक्की हुई।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धनबाद—मेसर्स गोपीराम भगवानदास—यहां गल्ला, कपड़ा, बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।

धनबाद—ओरियण्ट मर्केण्टाइल—यहां मोटरका व तेलका काम होता है।

इरिया—ओरियण्टल [illegible]—यहां गल्लेका थोक व्यापार होता है।

मुकुन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया है। आपकी ओरसे गया जैन मंदिर आदिमें सहायता दी गई है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स गुलराज बालमुकुन्द चौक—यहां कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज रामविलास १६।१।१ हरीसन रोड—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ

इस फर्मका स्थापन संवत् १९५१ में बाबू सुखदेवदासजी और बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियांके हाथोंसे सुखदेवदास गोवर्द्धनदासके नामसे हुआ था। आपही दोनों सज्जनोंके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की मिली। बाबू सुखदेवदासजीका स्वर्गवास सं०१९६८ में हुआ। आपकी मौजूदगीमें ही आपके पुत्र गोवर्द्धनदासजी स्वर्गवासी हो गये थे। आपके बाद फर्मका संचालन बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियां करते रहे। संवत् १९८१ से बाबू लक्ष्मीनारायणजी और स्वर्गीय गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बा० जगन्नाथजी और गोपीरामजी अपना २ अलग कारबार करने लगे। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गया—मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ, पुरानीगोदाम T. A. Jagannath.—यहां कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

गया—श्रीविष्णु ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक ऑइल मिल है।

मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास

इस फर्मके मालिक बाबू घनश्यामदासजी डीडवाणियां हैं। आपके हाथों ही इस दुकानका कारबार ४० वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था। आप फतहपुर (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू बालावक्सजी और गनेशलालजी हैं। बाबू घनश्यामदासजी खरे स्वभावके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास, T. A. Ghansham—आरंभसेही इस फर्मपर चांदी, सोना, गल्ला, तिलहन, तीसीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

गया—श्रीवागेश्वर फ्लावर एण्ड ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक मिल है।
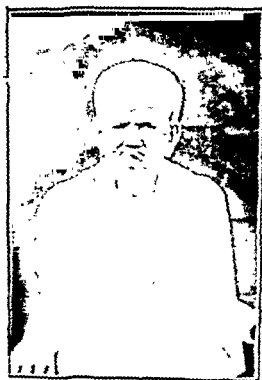
मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल

इस फर्मका हेड आफिस बनारसमें है। गयामें इस दुकानपर बेङ्किग, गल्ला तथा तिलहनका व्यापार होता है। इनके व्यापारका विशेष परिचय चित्रोंसहित कलकत्तेके गल्लेके व्यवसायियोंमें दिया गया है।

मेसर्स झूथालाल रामविलास

इस फर्मके मालिक नागवा (सीकर-शेखावाटी) के निवासी खंडेलवाल सरावगी जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ४० वर्ष पूर्व बाबू हनुमानचन्द्रजी पाटनीके हाथोंसे हुआ था। करीब २५ वर्ष पूर्वसे आपके भतीजे रामविलासजीका और आपका पार्ट अलग २ हो गया है।

इसके वर्तमान मालिक बाबू रामविलासजी पाटनी और आपके पुत्र बा० गजानन्दजी पाटनी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—झूथालाल रामविलास—यहां कपड़ा तथा गल्ला तथा लेनदेनका व्यापार होता है।

कलकत्ता—गुलाब रामविलास १६१।१ हरीसन रोड—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जीतनराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आपलोग माहुरी वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत् १९५१ में बाबू जीतनरामजीके हाथोंसे हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए बाबू निर्मलरामजी, बाबू रामचन्द्ररामजी एवं बाबू रामलालजी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामचन्द्रराम और आपके पुत्र बा० गुलसनलालजी एवं बाबू निर्मलरामजीके पुत्र बा० हरिप्रसादजी, लक्ष्मीनारायणजी तथा विष्णुप्रसादजी हैं। आपकी फर्म गयामें भिन्न २ लाइनोंमें कई प्रकारका व्यापार करती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स जीतनराम निर्मलराम, पुरानीगोदाम—T. A. Jitan Ram—यहां चांदी, सोना, सूत, नमक और बेङ्किगका काम होता है।

गया—मेसर्स रामचन्द्रराम हरिप्रसाद—यहां कपड़ा और गल्लाका कारबार होता है।

गया—मेसर्स रामचन्द्रराम गुलसनराम—यहां कची आढ़तका काम होता है।

गया—रामचन्द्रराम—पुरानीगोदाम—यहां पक्की आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रतनजी भगवानजी

इस फर्मके मालिक मूल निवासी कालावड़ (जामनगर स्टेट) के हैं। आप गुजराती नंदवाना ब्राह्मण सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ भगवानजीके पुत्र सेठ रतनजी थे। आपके सेठ मावजीदास नामक एक और भाई हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मावजीदासजी हैं।

आपकी ओरसे धनबादमें धर्मशाला तथा कालावड़में स्कूल, तथा हास्पिटल, कन्यास्कूल, और पचास हजारकी लागतसे एक बावड़ी बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धनबाद—धनबाद इंजिनियरिंग वर्क्स—यहां मोटरकी रिपेअरी तथा फर्नीचर तैयार होता है।
धनबाद—मेसर्स रतनजी भगवानजी—यहां बैंकिंग, मोटर पार्ट्स और वर्माशेलकी तेलकी एजंसी है।
झरिया— " " " " "
कतरास— " " " " "
दिल्ली—रतनजी भगवानजी एण्ड को० बावड़ी बाजार T A Ginning—यहां मिल जीन, स्टोअर सप्लाइका काम होता है।
कानपुर—रतनजी भगवानजी एण्ड को० लाटूश रोड—मिल जीन स्टोअर तथा मोटरकी एजंसी और पेट्रोलका काम होता है।
बम्बई—दौलतराम रतनजी एण्ड को० नागदेवी स्ट्रीट T A Compare—मिल, जीन, स्टोअर सप्लाइका काम होता है यहां सब समान विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

कपड़ेके व्यापारी
गंगाजल सागरमल
गोपीराम भगवानदास
नागरमल महादेव
वृन्दावन जानकीदास

गल्लेके व्यापारी
गोपीराम भगवानदास
तुलसीराम गोविंदराम
नेतराम मनीराम
रामजीलाल चिरंजीलाल
सोरपामल मनसाराम

कोयलेके व्यापारी
रतनजी भगवानजी
पण्ड्या विनायकराम
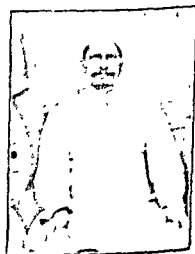
टाटानगर

यह नगर संसार प्रसिद्ध टाटा परिवारकी प्रख्यात महान प्रतिभाकी सजीव प्रतिमूर्ति टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्सके स्थापित किये जानेके बाद बसा है। इसके अन्तर्गत ३ बस्तियां हैं जिनमेंसे एक जहां संसार प्रख्यात टाटाका कारखाना है जमशेदपुर नामक बस्ती भी है। यह बी० एन० रेलवेका स्टेशन है। यहांकी बस्ती साफ सुथरी है। यहांकी चौड़ी समतल सड़कें सदा मोटरोंकी दौड़से सजीव रहती हैं। यहाका जल वायु स्वास्थ्य वर्द्धक है। यहांका प्रधान औद्योगिक केन्द्र यही कारखाना है जिसका परिचय इस प्रकार है।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०

संसार प्रसिद्ध इस कम्पनीका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रूस स्ट्रीट बम्बईमें है। पर इसका कारखाना बी० एन० रेलवेके टाटा नगर नामक रेलवे स्टेशनके पास जमशेदपुरमें है। यह कम्पनी १०,५२,१२,५०० की स्वीकृत पूंजीसे काम कर रही है। इसके साधारण शेयरकी दर आरम्भ में ७५) प्रतिशेयरके हिसाबसे थी और प्रिफरेन्स शेयरकी दर १५०) प्रति शेयरकी थी। इसका संचालन भारत प्रख्यात अनुभवी व्यापारियोंकी एक संचालक समिति करती है जिसके सदस्योंमें श्रीयुत एन० बी० सकलतवाला सी० आई० ई०, सर कावसजी जहांगीर बैरोनेट; सर फाजल भाई करीम भाई, श्रीमान् सेठ नरोत्तम मुरारजी, सर फीरोज सेठना के० टी०, सर पुरुषोत्तमदासदास ठाकुर दास एम० एल० ए०, सर छल्लूभाई सांवलदास और ऑनरेबल सर रहीमतुल्ला आदि हैं।

भारतीय बाजारमें भारतके राष्ट्रीय कल कारखानोंको संसारके बड़े बड़े पूंजी पतियोंकी की सहायतासे चलनेवाले विदेशी कल कारखानोंके बने मालसे व्यापारिक प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इतना ही नहीं स्वयं यहांकी शासन सत्ता भी वहांके पूंजी पतियोंके हाथका खिलौना है अतः वे लोग अपने मालको यहांके बाजारमें सरलतासे बेचनेके लिये राजनैतिक वर्चस्व को आत्मरक्षाके नैतिक अधिकारको ठुकराते हुए काममें लेते हैं। अतः इन्हीं निराशा पूर्ण बाधाओंमें अन्धेरीमें इस राष्ट्रीय कारखानेको भी अपने सारे भविष्यको होड़में लगाकर आगे बढ़ना पड़ रहा है यदि आज इसके पास कोई पथ प्रदर्शन कारी आशाका प्रकाश है तो जन साधारणके प्रतिनिधियों द्वारा कष्टसे स्वीकृत करायी गयी सरकारी आर्थिक सहाय है। जो एक निश्चित समयकी अवधिके लिये मिली है। फिर भी सरकारकी इस आर्थिक सहायके लिये उसे अवश्य ही बधाई देनी चाहिये।

चीनके पुराणोंमें सम्राट चीनङ्गकी चर्चा आयी है और मन्थकारोंने उन्हें कृषि शास्त्र तथा वनस्पति शास्त्रका जनक माना है। सम्राट चीनङ्गका काल पुराणोंके अनुसार मसीह सन् से २७३७ वर्ष पूर्वका माना जाता है। पुराने चीनी मन्थोंके अनुसार स्थिर किया जा सकता है कि इन्हें चायके चमत्कारका पूर्ण रूपेण अनुभव हुआ था। इसके अतिरिक्त चीनी भाषाके काव्य मन्थोंमें जिनका सम्पादन कनफ्यूशशने मसीह सन् से ५५० वर्ष पूर्व किया था चायकी चर्चा पायी जाती है। चीनका प्राचीन इतिहास बताता है कि मसीह सन् की ४ थी शताब्दीमें तत्कालीन सम्राटके श्वसुर वेङ्ग मेङ्ग चाय पीनेके बड़े प्रेमी थे। वे अपने मिलने वालोंको भी चाय पिलाते थे परन्तु लोग चाय पीनेके उतने अभ्यस्त न थे अतः वे कड़वी कह कर उसे थूक देते थे। ब्रेट्स चिनेयडर(Brots-chneider)लिखता है कि १० वीं और १३ वीं शताब्दीके बीच चीनी भाषामें 'चाय' पर एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था जिसमें लिखा गया था कि सम्राट वेन-टी * (Emperor wen-ti) को सिरकी पीड़ा सदा बनी रहती थी। अतः किसी भारतीय बौद्ध भिक्षुने सम्राटको चाय (मिङ्ग-Ming) की पत्ती उबाल कर पीनेकी सलाह दी थी। इस प्रकार औषधिके रुपमें वहां चायका प्रथमबार व्यवहार किया गया। कैम्फर (Kaempfer) नामक एक विद्वानने एक स्थान पर उपरोक्त प्रकारकी घटनाकी चर्चा करते हुए एक जापानी जनश्रुतिका उल्लेख किया है। उक्त विवरणसे पता चलता है कि जापानमें चायका प्रचार करनेवाला व्यक्ति दर्म नामके किसी भारतीय नरेशका तीसरा पुत्र था।

उपरोक्त दोनों प्रमाणोंसे यह तो स्थिर हो ही जाता है कि चीन और जापानमें चायका प्रचार जहां अत्यन्त प्राचीन है वहां उसके प्रसारमें भारत वालोंका भी हाथ रहा है। फिर भी १६ वीं शताब्दीकी खोजके आधार पर यह सत्य है कि हिमालयके† पूर्वीय पार्श्व पर अनादि कालसे चायके पौधे पाये जाते हैं। और चीनी भाषाके पुराने मन्थोंमें चायके प्रमाणोंकी चर्चा कर उसे कन्टु (K'a-tu) शब्द से सम्बोधित किया गया है जो वास्तवमें संस्कृत भाषाके कटु शब्दका ही अर्थ व्यक्त करता है ऐसी दशामें कमसे कम यह तो स्वीकार ही करना पड़ेगा कि भारत वाले चायसे प्राचीन कालसे ही परिचित थे।

चीन, जापान, और भारतके सम्बन्धको लेकर चायके विषयमें विचार करने पर प्रकट रुपसे यही मानना पड़ेगा कि चायका व्यवहार अत्यन्त प्राचीन है पर प्रथम उसका व्यवहार औषधिके रुपमें ही आरम्भ हुआ था। चायके व्यापक व्यवहारका प्रमाण हमें ८ वीं शताब्दीके पूर्वका नहीं मिलता है।

---

* सम्राट वेन-टीका शासनकाल सन् ५८९ ई० से ६०४ ई० तक माना जाता है।

† The tea plant must be wild in the Mountainous region which separates the plains of India from those of China—De Candolle रचित Tea नामक ग्रन्थ लेखक A. Ibbetson.

हम देखते हैं कि * टैङ्ग राजवंशके शासनकालमें लोयू (Lo-yu) नामक एक इतिहासकार हो
उसने अपने ग्रन्थोंमें चायकी उपयोगिताकी चर्चा की है। ६ वीं शताब्दीमें चायका व्यवहार
व्यापक न हो पाया था परन्तु ८ वीं शताब्दीमें उसने पूरी उन्नतिकी। चायके व्यवहारने यह
व्यापक रूप धारण कर लिया कि उसपर चीन सरकारने †कर लगा दिया। यह घटना चीन स
टिह सुंगके शासनकालके १४ वें वर्षकी है। अरबके यात्रियोंने भी लिखा है कि ९ वीं शता
के मध्य कालमें चीनवाले चायके पूरे अभ्यासी हो गये थे। ९ वीं शताब्दीमें चीनकी यात्रा कर
वाला सुलेमान नामक एक ‡ मुसलमान यात्री लिखता है कि, 'किसी पेड़की पत्ती उबालकर पीनेके
चीनी लोग बड़े अभ्यस्त हो गये हैं। वे लोग उसे 'साख' कहते हैं.।' 'मार्को पोलो'को प्रकाशित करते
समय रम्यूसियोने (Ramusio) भूमिका लिखते हुए सन् १५४५ ई० में लिखा था कि 'हाजी मोहम्मद
नामक फारसके किसी व्यापारीसे मैंने चाय पीनेकी चर्चा सुनी थी'। सन १५६० ई० में गैसपर-ड-
क्रूजने लिखा था कि § चीनी लोग अपने मित्रोंको चीनी मिट्टीके प्यालोंमें चाय देते थे। बटेविया
निवासी डा० बनटियस सन् १६३१ में लिखते हैं कि ‖ चाय कभी कभी तो इतनी कड़वी हो जाती है
कि उसमें शक्कर मिलानेकी आवश्यकता पड़ जाती है। गार्सिया-डे-ओर्टे लिखता है कि ¶ 'चाय
गर्मागर्म पी जाती है'।

जापान

जापानमें चायका प्रसार कैसे हुआ और कब हुआ यह ठीक नहीं कहा जा सकता। कैम्फरके
अनुसार यह कहा जा सकता है कि जापानको चायकी चाट किसी भारतीय यात्रीने लगायी
जिसका नाम दर्म था। परन्तु लिखित आधारके अनुसार यह प्रमाणित होता है कि ९ वीं शताब्दी
में एक बार पुरोहित मियोये चायके पौधेको चीनसे लाये और जापानके दक्षिणी द्वीप क्यू-शियू
में इसकी खेती करानी आरम्भ कर दी। चाय पीनेका व्यापक व्यसन १३ वीं शताब्दीसे जापानमें
प्रचलित होता है।

---

* टैङ्ग राजवंशका शासनकाल सन् ६१८—९०६ ई० के बीचका माना जाता है।
† यह घटना सन्—७९३ ई० की है।
‡ ... people of China are accustomed to use as a beverage an infusion of the plant, which ... It is considered very wholesome. This plant (leaves) is sold in all cities of the ...
§ ... रेनाडो (Renaudot) का सन् १७१८ ई० में प्रकाशित Relat. des Indes et de la Chine ... Arabes ...
‖ ... Tractatus in China vol ... Page 40
¶ ... Purchas's Pilgrims, Vol ... Page 180.
... ed. Ind. 1631
... लिखित De China ...

वसुने खोज निकाला और टाटा कम्पनीको इसकी सूचना दी। कम्पनीने अमेरिकासे भूगर्भ विद्या वशेषज्ञ दो इंजिनियरोंको बुलाकर इन खानोंकी परीक्षा करायी और फिर इस कारखानेका आयोजन किया गया। इस राज्यमें १२ के लगभग लोहेकी वड़ी वड़ी खानें हैं। जिनमेंसे गुरुमेशिनी, ओकामपद् और वद्म पहाड़ोकी खानें सबसे वड़ी हैं । जमशेदपुरसे गुरुमेशिनी तक रेलवे लाइन है और इसीके द्वारा इन खानोंसे खनिज (कच्चा) लोहा जमशेदपुरके इस कारखानेमें लाया जाता है। इस कम्पनीकी लोहेकी दूसरी खानें रामपुर और दुर्ग जिले में हैं। कच्चा लोहा गलानेके लिये पत्थरके कोयले और कली के चूनेकी जरुरत होती हैं। यह दोनों ही पदार्थ प्रचुर परिमाणमें इस इलाकेमें पाये जाते हैं।

यह कारखाना वहुतही वड़ा है और निजकी विद्युतशक्ति उत्पन्न कर अपना समस्त कार्य उसी शक्तिसे करता है। इसमें आधुनिक जगत की थाती स्वरुप ऊंचीसे ऊंची यांत्रिक सुविधाओंका यथेच्छ समावेश किया गया है यहां सभी प्रकारका लोहेका सामान वनता है और रेलवे कम्पनियोंके काममें आने योग्य लोहेकी फौलादी रेल लाइनें भी ढाली जाती हैं तथा अन्य भवनोंमें काम देनेवाले वड़े से वड़े फौलादी गार्टर्स, तथा इतर इमारती सामान भी अधिक परिमाणमें तैयार होता है। इस कारखानेमें मेंगनीज (Ferro manganese)तैयार किया जाता है और उसीकी सहायतासे फौलाद तैयार किया जाता है। यहां काममें आनेवाले पत्थरके कोयलेसे कोक तैयार किया जाता है। यह कोयला जलानेसे तैयार होता है। जलाते समय जो धुंआ उठता है उसे रक्षित अवस्थामें संचित करनेका भी पूरा प्रबन्ध इस कारखानेमें किया गया है। इसी धुंएसे अलकतरा, रोशनीकी गैस, और अमोनिया तैयार होता है। इसके तैयार करनेका कारखानेमें यथेष्ट प्रबन्ध है। अलकतरा देखनेमें काला भद्दा, स्वादमें कडुआ, और सूंघनेमें वदवूदार होता है पर इसीसे नाना प्रकारके मनमोहक रंग तैयार होते हैं। शक्करसे ५५० गुना मीठा सैकरीन (Saccharine) नामक पदार्थ भी इसीसे तैयार होता है। और साथही इसीमें टोनोन (Tonone) नामक पदार्थ भी वनता है जिससे नाना प्रकारके सुगंधित नकली इत्र फुलेल तैयार होते हैं इस कारखानेमें इस प्रकार सहजमें प्राप्त होनेवाले अलकतरेके अनुसंगिक पदार्थों को(Byo products) तैयार करनेका उद्योग हो रहा है।

जमशेदपुरके इस कारखानेमें कंट्राक्टका माल भी वनता है। यहांका माल टाटानगर स्टेशन से वाहर जाता है। यहांके व्यपारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गौरीदत्त गणेशलाल

इस फर्मके स्थापक सेठ गौरीदत्तजी थे। आपने ४८ वर्ष पूर्व अपनी फर्म रड़गपुरमें

मेसर्स भीमराज बन्सीधर

यह फर्म यहां संवत् १९२८ से व्यवसाय कर रही है। पहिले इस फर्मपर भीमराज भूरामल नाम पड़ता था। आप दोनों भाई थे। संवत् १९६७ से इस फर्मकी दो शाखाएं हो गईं। तबसे इस फर्मपर भीमराज बन्सीधर नाम पड़ता है। यह फर्म यहांकी प्रतिष्ठित फर्मोंमें गिनी जाती है। इसके मालिक मंडावा (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके मोदी सज्जन हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भीमराजजीके पुत्र बाबू बंशीधरजी, नागरमलजी, शिवनारायणजी तथा पन्नालालजी हैं। आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला तथा एक कुआं बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची—भीमराज बन्सीधर—यहां बैंकिंग तथा कपड़ेका काम होता है।
कलकत्ता—भीमराज बन्सीधर १८० हरिसन रोड—यहां बैंकिंग तथा चलानीका काम होता है।
लोहारडागा—भीमराज बन्सीधर—यहां कपड़ेका काम होता है।
मालदा—शिवनारायण चिरंजीलाल—यहां लाखकी आड़तका काम होता है।
गोमला—(बिहार) शिवनारायण रामदेव—कपड़ा और सूतका काम होता है।

मेसर्स भूरामल जगन्नाथ

इस फर्मके मालिक मंडावा [जयपुर] निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके मोदी सज्जन है। पहिले इस फर्मपर भीमराज भूरामल नाम पड़ता था। आप दोनों भाई थे संवत् १९६७ में भाइयों भाइयोंमें हिस्सा हो जानेसे इस फर्मपर भूरामल जगन्नाथ नाम पड़ने लगा। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू भूरामलजीके पुत्र बाबू जगन्नाथजी, गंगाप्रसादजी हनुमानबक्षजी, हीरालालजी, और रामेश्वरजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची—भूरामल जगन्नाथ—यहां सूता, कपड़ा, गल्ला और आड़तका काम होता है।
कलकत्ता—भूरामल जगन्नाथ १८१ हरिसन रोड T. A. Modika—चलानीका काम होता है।
लोहारडागा—भूरामल रामेश्वर—यहां सूता, कपड़ा, तथा गल्लेका काम होता है।
गुद्दू [रांची] भूरामल जगन्नाथ—" " "

मेसर्स मंगलचंद नागरमल

इस फर्मके संचालक बाबू नागरमलजी, बाबूलालजी और अर्जुनप्रसादजी हैं। इस फर्मकी स्थापना बाबू नागरमलजीके पिता बाबू मंगलचन्दजीने की। आप चुरू निवासी अग्रवाल जातिके गोयल सज्जन थे। यह फर्म संवत् १९३९ से व्यापार कर रही है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची—मंगलचन्द नागरमल—सूता गल्ला और आड़तका काम होता है।
रानीगंज—मंगलचन्द नागरमल—गल्ला और आड़तका काम होता है।

भी पैदा होता है मगर विशेषकर बाहरसेही आता है। यहांके गल्लेमें 'सावे' नामक गल्ला विशेष है जो बिहारको छोड़कर बाहर दूसरे प्रान्तोंमें शायद ही होता है। किराना, तेल, कपड़ा आदि सब बाहरसे यहां आकर बिकते हैं।

यहांकी जेलके हाथके बुने कपड़े, दरियां, निवार, गलीचे आदि अच्छे बनते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स जयनारायण जगन्नाथ

इस फर्मके स्थापक बाबू जयनारायणदासजी तथा आपके पुत्र ठाकुरदासजी संवत् १६३६ में देशसे यहां आये। आपने यहां कपड़ेका व्यापारकर अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। पहिले आप जयनारायणदास ठाकुरदासके नामसे व्यापार करते रहे। फिर संवत् १६६६ में यह फर्म दो फर्मोंमें विभक्त होगई और तभीसे इस फर्मपर उपरोक्त नाम पड़ने लगा। दूसरी फर्म पर ठाकुरदास बद्रीनारायण नाम पड़ता है।

इस समय इस फर्मका संचालन देशनोक (बिकानेर) निवासी बाबू जयनारायणदासजीके पुत्र बाबू जगन्नाथजी,बाबू हरिदासजी, बाबू मदन गोपालजी, बाबू गोविन्दलालजी तथा बाबू रणछोड़-दासजी करते हैं। आप लोग महेश्वरी मल्ल गोत्रीय सज्जन हैं।

आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला तथा कुंआ बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—जयनारायणदास जगन्नाथ—यहां बैंकिंग, सोना, चांदी, गल्ला, सूत और आढ़तका काम होता है। तथा इम्पीरियल केमिकल इंडस्ट्री इण्डिया लिमिटेड, सांवनराम रामप्रसाद मिल्स लिमिटेड आदि मिलोंकी एजंसियां हैं।

पुरुलिया—जगन्नाथ हरिदास—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स तोलाराम नाथूराम

इस फर्मको बाबू तोलारामजीने ६० वर्ष पूर्व स्थापित की थी। आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र बा० नाथूरामजीने इस फर्मके कार्यका संचालन किया आपका स्वर्गवास संवत् १६५८ में हो चुका है। आपके समयमें फर्मकी बहुत उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू शालिग्रामजी तथा बाबू मदनगोपालजी हैं। आप

मेसर्स रतनलाल सूरजमल

इस फर्मके मालिक कुचामण (जोधपुर) के मूल निवासी है। आप खंडेलवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब २५ वर्षसे व्यापार कर रही है। इसके स्थापक सेठ रतनलालजी हैं। आपके पुत्र श्रीसूरजमलजी तथा श्रीचांदमलजी व्यापारमें सहयोग देते हैं।

आपकी ओरसे यहां एक दिगंबर जैन पाठशाला चल रही है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची—मेसर्स रतनलाल सूरजमल T.No ६१, ६१ A तारका पता-Ratanlal—यहां बैंकिंग, गल्ला आढ़त मोटर असेसरीज और बर्माशेलकी एजंसी है।

कलकत्ता—रतनलाल सूरजमल ४६ स्ट्रांड रोड T. A Satyamargi—यहां बैंकिंग तथा आढ़तका काम होता है।

पुरुलिया—रतनलाल सूरजमल—यहां आढ़तका काम तथा पेट्रोलकी सोल एजंसी है।

लोहारडागा—सूरजमल चांदमल— " " "

रामगढ़—रतनलाल सूरजमल—पेट्रोल और तेलकी एजंसी तथा इम्प्रेस मिलकी सूतकी एजंसी है।

चाईबासा— " " पेट्रोलकी एजंसी मोटर असेसरीज तथा आढ़तका काम होता है।

चक्रधरपुर " " पेट्रोलकी एजंसी है।

मेसर्स हुकमीचन्द हरदत्तराय

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू हुकमीचन्दजी थे। आप संवत् १९११में अपने मूल निवास स्थान बिसाऊ (जयपुर)से यहां आये। और कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र हरदत्तरायजीने इस फर्मका संचालन किया और अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बाबू हरदत्तरायजीके पुत्र हनुमानबक्सजी, गंगासागरजी, तथा लक्ष्मीनारायणजी करते हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। रांची—हुकमीचन्द हरदत्तराय - यहां जमीदारी, बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है।

रांची—हरदत्तराय हनुमानबक्स—गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—हुकमीचन्द हनुमानबक्स १९०हरिसन रोड—यहां आढ़त तथा कपड़ेका काम होता है

मल्लार—हरदत्तराय हनुमानबक्स—यहां गल्ला तथा लाह चपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

लोहारडागा—हुकमीचन्द हरदत्तराय—गल्ला, किराना, बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

गोला (हजारीबाग) हरदत्तराय गंगासागर—यहां सब प्रकारका काम होता है।

बरमो (") " " यहां गल्ला व किरानेका काम होता है।

बा० नाथूरामजीके पुत्र हैं। आपका मूल निवासस्थान चुरू (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—मोतीराम नाथूराम (हेड आफिस)—यहां जमींदारी, बैंकिंग, आढ़त और मनिहारीका काम होता है।

पुरुलिया—मेसर्स मदनगोपाल—इस नामसे आपका एक तेलका मिल है।

कलकत्ता—मोतीराम नाथूराम १८० हरिसन रोड T. A. Netatuna—यहां बैंकिंग और चालानीका काम होता है।

बांकुड़ा—मोतीराम नाथूराम—यहां कमीशन एजंसीका काम होता है।

सराईकेला—(सिंहभूमि) मोतीराम नाथूराम—यहां आपकी चायना क्लेनाइन चिनी मिट्टीकी खानें हैं।

झरिया—धानी जयरामपुर कोलियारी—इस नामसे यहां आपकी एक कोयलेकी खदान है।

झरिया—कुसुन्दा कोलियारी— ,, ,, ,,

मेसर्स बालकिशनदास लक्खानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी हैं। बाबू बालकिशनदासजीने इस फर्मका स्थापन २५ वर्ष पूर्व किया। आपके दो भाई और हैं जिनके नाम क्रमशः राधाकृष्णजी और शिवकिशनजी हैं। आप सब व्यापारमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे कोलायतजीमें मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्ममें बा० हरकिशनदासजी, नरसिंहदासजी, शिवरतनजी भी काम करते हैं। बा० हरकिशनदासजीके तीन पुत्र हैं। आपकी ओरसे यहां एक ठाकुरबाड़ी बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—मेसर्स बालकिशनदास लक्खानी—यहां बैंकिंग, गल्ला, किराना, तेल, तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स बालमुकुंद कृष्णगोपाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके गनेड़ीवाला सज्जन हैं। आप फतेपुर (सीकर) के निवासी हैं। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बा० बालमुकुन्दजी थे। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम बा० कृष्णगोपालजी हैं। आपही इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

तनलालजी जैन (रतनलाल सूरजमल) रांची

बा० चांदमलजी जैन (रतनलाल सूरजमल) रांची

रचन्द जैन (रतनलाल सूरजमल) रांची

बा० ताराचन्द जैन (रतनलाल सूरजमल) रांची

घन्नीदास केदारनाथ
बालकिशनदास लक्ष्मणजी
मुरलीधर रावतमल
सुगनचन्द कानीराम

कपड़ेके व्यापारी

घनश्यामदास रामकुमार
जयनारायणदास जगन्नाथ
बाबू नारायणचन्द्र दत्त
बेगराज किशनलाल
भीमराज कन्हैयालाल
भोलाराम हरीराम
महादेवलाल हेमराज
रूपचन्द केदारनाथ

तेलके व्यापारी

तेजपाल मदनगोपाल
बालमुकुन्द किशन गोपाल
मिर्जामल हरिनारायण

चपड़ेके व्यापारी

मेसर्स एम० एम० जार्डन
" हरामिन्युरन

जनरल मरचेंट्स

गुर्दे सौदागर मुसलमान
गौरीप्रसाद नारायणप्रसाद
तीनकौड़ी महीनदार शरत्चन्द्र हलदार
मैकुलाल मिश्र
सरजूप्रसाद लाला

तमाखूके व्यापारी

अब्दुल रहमान
प्रताप चन्द्रसेन
हनुतराम नथमल

हार्डवेअर मरचेण्ट्स

जगबन्धु कुण्डू
सुरजूनारायण दत्त

सिगरेट और बीड़ीके व्यापारी

जेठमल विट्ठलदास
श्रीचन्द छगनलाल

रांची

रांची बिहार प्रान्तके लोहारदगा नामक जिलेका प्रधान स्थान है। यह स्थान चारों ओर पहाड़ोंसे घिरा हुआ है। प्रकृति देवीने अपने अपूर्व सौन्दर्यको बिखेरकर इसकी शोभाको बढ़ा दिया है। पहाड़ी एवं हवाखानेका स्थान होनेकी वजहसे सैकड़ों यात्री यहां घूमनेके लिये आया करते हैं। यहांकी आब हवा सुन्दर एवम् स्वास्थ्य वर्द्धक है। यहांसे हजारीबाग मोटर जाती है। इसकी राह और रांचीके रास्तेमें सड़कके दोनों ओर आमकी कतारका दृश्य देखनेकी मिलता है। इसके अतिरिक्त और भी कई प्राकृतिक स्थान देखने योग्य हैं। यह बी० एन०

श्री वैधनाथधाम (देवघर) के आस पास पर्वतीय विभाग ज्यादा है, अतएव जंगली वस्तुओंकी आमदनी विशेष है। इस स्थानपर महुआ तथा महुआका तेलकी आमदनी अधिक है। इसके अलावा धान, कुलथी, आदि भी पैदा होता हैं। यहां आस पास विशेषकर संथाल लोगोंका वास है। आनेवाले मालमें कपड़ा, किराना आदि हैं।

यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है

मेसर्स चुन्नीलाल रामेश्वरलाल

इस फर्मके मालिक बाबू चुन्नीलालजीके सबसे छोटे पुत्र बाबू रामेश्वरलाल सराफ हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बिन्दल गौत्रीय सज्जन हैं। आपका पारिवारिक परिचय ठण्डीराम सूरजमलके परिचयमें दिया जा चुका है। बाबू रामेश्वरलालजी बहुत सभ्य एवं समझदार सज्जन हैं। खादीसे आपको विशेष स्नेह है आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

श्री वैधनाथधाम देवघर—मेसर्स चुन्नीलाल रामेश्वरलाल—यहां कपड़ेका व्यापार और साहुकारी लेन देनका काम होता है।

मेसर्स ठंडीराम सूरजमल

इस फर्मके स्थापक स्वर्गीय ठंडीरामजी सराफ करीब ८० वर्ष पूर्व गुढ़ा (राजपूताना) से आये थे। आपने आरम्भमें कपड़ेका कारबार शुरू किया, और परिश्रम एवं अध्यवसाय पूर्वक ३० वर्षोंतक कार्यकर फर्मको जमाया। आपके बाद आपके पुत्र बाबू चुन्नीलालजी सराफने भी इस फर्मके कपड़े और गल्लेके व्यापारको अच्छी तरक्की दी आपने करीब ४०में वर्ष पहिले और लक्खीसरायमें २५ वर्ष पूर्व अपनी गद्दी स्थापित की। बाबू चुन्नीलालजीके ४ पुत्र हुए, बा० सूरजमलजी बाबू चंडीप्रसादजी, बाबू बंशीधरजीएवं रामेश्वरलालजी। संवत् १९७० में इन सब भाइयोंका कारबार अलग २ हो गया, तबसे बाबू सूरजमलजीकी फर्म उपरोक्त नामसे अपना अलग व्यापार कर रही है। बाबू चंडीप्रसादजीके जिम्मे लक्खीसरायका कारबार आया, वर्तमानमें आपके पुत्र श्री लोकनाथजी चुन्नीलाल चंडीप्रसादके नामसे वहां व्यवसाय कर रहे हैं। एवं बंशीधरजी सराफ गल्लेका व्यवसाय कर रहे हैं। बाबू सूरजमलजीकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बैद्यनाथ धाम—ठंडीराम सूरजमल—गल्ला तथा कपड़ाका व्यापार होता है।

कटक—सूरजमल विंदेश्वरीप्रसाद—यहां आपका ओरीसा राइस मिल है।

पार्वतीपुर—सूरजमल बिहारीलाल—यहां बेंकिंग और मरचेंट्सका काम होता है।

यहां निम्नलिखित बड़ी २ धर्मशालाएं हैं।

धर्मशालाएं

देशी अग्रवाल धर्मशाला

बिहारीलाल कुंजलाल धर्मशाला

सुखराम लक्ष्मीनारायण धर्मशाला

रामचन्द्र हरीराम गोयनका धर्मशाला

रा० ब० हरिकृष्णदासजी भट्टर धर्मशाला

हजारीमलजी दुदवेवालोंकी धर्मशाला

रेलवेके अरगोड़ा नामके स्टेशनसे करीब १ माईलकी दूरीपर बसा हुआ है। यहां भी बसावट साफ सुथरी और सुन्दर है। सड़कें चौड़ी एवम साफ हैं। बाहरके यात्रियोंके लिये यहां दो सुन्दर धर्मशालाएं भी बनी हुई हैं।

यहांका व्यापार गल्ले, कपड़े, किराने आदिका है। ये सब वस्तुएं बाहरसे यहां आकर बिकती हैं। यहांसे बाहर जानेवाले मालमें कोई विशेष वस्तु नहीं है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास चुरू (बीकानेर स्टेट) है। करीब ८५ वर्ष पूर्व सेठ चुन्नीलालजी देशसे रांची आये थे। आप अग्रवाल समाजके बुधिया सज्जन हैं। जिस समय सेठ चुन्नीलालजी रांची आये थे, यहां रेल आदि नहीं थी। आपने यहां सराफी लेनदेनका काम शुरू किया, धीरे २ आपका व्यापार तरक्की पाता गया, और वहांके अंग्रेज लोगोंसे आपका लेनदेन शुरू हुआ। आपके बाद आपके पुत्र रायसाहब गणपतरायजीने फर्मके व्यवसायमें विशेष उन्नति की, आपको सन् १९२० में अकाल पीड़ितोंकी सहायता करनेके उपलक्षमें गवर्नमेन्टसे राय साहबकी पदवी प्राप्त हुई है, आपकी ओरसे रांचीमें एक संस्कृत पाठशाला चल रही है, यहां छात्रोंके लिये भोजन वस्त्र एवं निवासका भी प्रबन्ध है। आपने रांचीमें एक सुन्दर मारवाड़ी आरोग्य भवन बनानेके लिये ४० बीघा जमीन दी है। आपके ३ पुत्र हैं, बाबू राधाकृष्णजी बुधिया, बाबू गंगाप्रसादजी बुधिया एवं श्रीमदनलालजी बुधिया। श्रीमदनलालजी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं तथा बाबू राधाकृष्णजी गंगाप्रसाद-जी फर्मके व्यापारका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची (बिहार) मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय—यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है इसपर बैङ्किग, जमीदारी और कमीशनका काम होता है, यह फर्म बेण्डेलप नामक चायकी व्यवसायी फर्मकी ४० वर्षोंसे बैंकर हैं। यहां आपकी बहुत सी जमीदारी है।

कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय १७८ हरीसन रोड T. NO 417 B B—यहां बैङ्किग तथा आढ़तका काम होता है।

कटक—मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय—आढ़त तथा सराफी लेनदेन होता है।

वाल्टेर—(मद्रास) चुन्नीलाल गणपतराय " "

...के मतानुसार इसका आरम्भ १७ वीं शताब्दीके म...
...मान्यताकी चर्चाका उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि उस समय तक भा...
साधारणतया चायका व्यवहार व्यापक हो गया है। इतना ही नहीं भारतमें रहनेवाले अंग्रेज औ...
दोनों ही चायका व्यवहार लोगोंसे करते थे और यहांके रहनेवाले फारस निवासी चाय न पीकर ...
पीते थे।

भारतमें जहां चायका प्रसार हो रहा था वहां इंगलैंडमें चायकी मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जा...
थी जावासे अंग्रेज निकाले जा चुके थे अतः इंगलैंडकी मांग पूरी करनेके लिये केवल दो ही बाजार
सूरत और मद्रास, जहां चाय खरीदी जाती थी। ऐसी दशामें भविष्यका विचारकर बृटेनकी सरका...
चिन्तित थी। उसने भावी अनिष्टसे बचनेके उद्देश्यसे ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतमें चायकी खेती
करानेका परामर्श दिया। इस समय कम्पनीके हाथमें यदि कोई लाभका व्यवसाय था तो वह चाय
का था। कम्पनी भारतके सूरत और मद्रासके बाजारमें चाय खरीदती और इंगलैंडके बाजारमें
मनमाने लाभपर बेचती थी। ऐसी दशामें कम्पनीने भी चायकी खेती करानेकी ओर ध्यान देने
में लाभ समझा। क्योंकि सन् १७८७ ई० में ही उसने भारतकी बाजारोंसे खरीदकर इंगलैंडमें
२,००,००,००० रतल चाय खपाकर बेशुमार लाभ उठाया था। बृटिश सरकारके आदेशानुसार
...स्ट इण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने भारतमें चायकी खेती करानेके कार्यक्रम सन् १७८७
...० में आरंभ कर दिया और आवश्यक व्यवस्था करनेकी आज्ञा तत्कालीन गवर्नर-जेनरल वारेन
...स्टिङ्गसको—दे दी। उसी वर्ष सर जोसेफ बैङ्कर्सकी देख-रेखमें चायकी खेती करानेके सम्बन्धमें एक
...योजना तैयार करायी गयी। इसमें चायकी खेती करानेके लिये आवश्यक सभी पार्श्वों पर पूर्णरूपेण
...रकर प्रकाश डाला गया और साथ ही खेतीके उपयुक्त केन्द्रोंका भी निर्देश कर दिया गया। इस
...शमें धीरे धीरे खोज हो ही रही थी कि सन् १८२० ई० में आसामके प्रथम कमिश्नर मि० डेविड
...ने आसामसे कुछ पत्तियां कलकत्ते यह कहकर भेजी कि आसामवाले इसे जंगली चाय कहते हैं।
...इसकी जांच की जाय। उधर सन् १८३४ ई० में उस समयके गवर्नर जेनरल लार्ड बेन्टिकने
...मासकी ता० २४ को एक प्रस्ताव पासकर चायकी खेती करनेका प्रबन्ध भार उठा लिया और
...ा एण्ड कम्पनी नामक फर्मके मि० जी० जे० गार्डनको चीन भेजा तथा डा० एन० वालिचकी
...एक कमेटी बनाई। डा० एन० वालिचने आसाम कमिश्नरकी भेजी हुई पत्तियोंके सम्बन्धमें
...न्देह किया था और इसी कारण वे लंदनकी लीनियन सोसाइटीके पास निर्णयके लिये भेजी
...ी। उधर चीनसे बीज मंगाकर कमायूं जिलेमें प्रयोगात्मक खेती आरम्भ कर दी गयी।
...न्दनकी सोसाइटीने निर्णय दे दिया कि वे पत्तियां निःसंदेह चायकी ही हैं। फिर क्या था डा०

जाते हैं। इन वृक्षोंमें प्रायः सितम्बर मासमें सुन्दर फूल निकलते हैं जो देखनेमें सफेद अथवा कुछ ललायी मायल निकलते हैं। इनमें कुछ सुहावनी सी एक प्रकारकी गन्ध भी होती है, फूल साधारणतया एक अथवा गुच्छेके रूपमें पत्तीके उद्गम स्थानके पास निकलते हैं। फूलोंके बाद फल निकलते हैं जो आकारमें गोल होते हैं। फलके भीतर तीन आवरण रहते हैं जिनमें एक एक बीज होता है इस प्रकार एक फलमें तीन बीज होते हैं। फल सामान्यतया नवम्बर मासमें लगते हैं और एक वर्ष बाद पक कर तैयार होते हैं जिनके बीज चायकी खेतीके काममें आते हैं। ये एक वर्ष बाद नवम्बर मासमें तैयार हो जाते हैं और फिर चुन कर संग्रह कर लिये जाते हैं। बीजमें तेलका भी अंश रहता है।

चायके बीज चायकी खेती करनेके काममें आते हैं अतः जहां वे पैदा होते हैं वहां पर्याप्त प्रमाणमें खेती करनेके काममें आते हैं और शेष दूसरे देशोंको निर्यातके रूपमें खेतीके लिये भेजे जाते हैं।

चायके पौधे

चायका पौधा स्वभावसे ही झाड़ोंकी जातिका पौधा होता है। यदि वह समय समय पर कलम न कर दिया जाय तो वह बढ़ कर ३० से ४० फिट ऊंचा वृक्ष हो जाता है। परन्तु खेतीकी दृष्टिसे वे समय समय पर कलम कर दिये जाते हैं और उनसे नवीन सुकोमल पत्तियां और कलियें निकल आते हैं। जो उनमें सघन पत्तियोंके समूहको विकसित कर देते हैं और यह हरे भरे पौधे प्रचुर पत्तियोंके भण्डारको बढ़ानेके कारण होते हैं।

चायकी पत्ती

स्थान और परिस्थितिका संयोग पाकर विभिन्न जातिके चायके पौधोंकी पत्तियां भिन्न भिन्न आकार प्रकारकी होती हैं। फिर भी साधारणतया वे लम्बी और पतली एवं कम चौड़ी होती हैं। उनके किनारे प्रायः दन्त पंक्तिके आकारसे प्रतीत होते हैं। पत्तियोंमें बहुत सूक्ष्म छिद्र रहते हैं जिनमें एक प्रकारका तेल ऐसा पदार्थ रहता है जो चायके स्वादको चित्त प्रिय बनाता है। नव विकसित कोमल पत्तियोंकी नीची सतह पर रोंयें होते हैं जो आयु पाकर विलीन हो जाते हैं। कुछ पत्तियां धुंधली होती हैं और इनमें तेलका अंश अधिक रहता है। इस तेलके आधिक्यके कारण ही चायके स्वादमें अधिक विशेषता उत्पन्न हो जाती है जिससे उत्तम प्रकारकी चाय तैयार होती है।

चायकी जातियां

चायकी प्रधान जातियोंमें व्यवसायकी दृष्टिसे आसामी, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] एवं चीनी यही प्रसिद्ध हैं। इनकी पत्तियोंके आकार प्रकारमें ही भिन्नता होती है। जो स्थान और परिस्थितिकी भिन्नताके कारण चायमें बड़ी अन्तर उत्पन्न कर देती है। [illegible]

स्व० भीमराजजी मोदी (भीमराज बन्सीधर) रांची

बा० बन्सीधरजी मोदी (भीमराज बन्सीधर) रांची

[illegible] मोदी (भीमराज बन्सीधर) रांची

बा० शिवनारायणजी मोदी (भीमराज बन्सीधर) रांची

योरोप

योरोपमें चायके प्रसारका श्रेय डच लोगोंको ही है। जब डचलोग बेन्टम नगरमें (जावा) स्थायी रूपसे निवास करने लगे तो उनका सम्पर्क चीनी लोगोंसे हो गया और वे लोग भी चाय पीनेके अभ्यस्त हो गये। अतः उन्होंने हालैण्डमें चायका प्रसार किया और यहींसे लार्ड 'आर्लि-ङ्गटन आदि चाय इङ्गलैंड ले गये। यह घटना १७ वीं शताब्दीके मध्यकालकी कही जाती है। इसकी चर्चा करते हुए मि० ए० इबेट्सन महाशय अपने 'टी' नामक ग्रन्थमें लिखते हैं कि महारानी एलिजाबेथके शासनकालमें किसी अंग्रेज दम्पत्तिको इंग्लैंडमें कुछ चाय मिल गयी। उनलोगोंने उसे उबाल डाला और उसके पानीको फेंक दिया और उबाली पत्ती रोटीके साथ खा गये। अर्थात् उस समय इग्लैंड वाले चायके व्यवहारसे बिलकुल अपरिचित थे। इसीके बाद चायका व्यवहार वहां भी बढ़ चला। यही क्यों चायके एकमात्र व्यापारी मि० थामस गार्वे चाय पिलानेकी दूकान खोलनेकी चिन्ता करने लगे और सन् १६५८ ई० में आपने एक्सचेंज ऐले (लण्डन) में गर्म चाय बेचनेकी प्रथम दुकान खोलदी। उस कार्यसे चायके सम्बन्धमें इग्लैंडमें एक प्रकारकी हलचल सी मच गयी। पेपीजने ता० २८ सितम्बर सन् १६६० ई० के दिन अपनी डायरीमें यह भी लिख दिया कि मैंने चायका एक प्याला मंगाकर पिया। चाय मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं पी थी। बृटेनकी सरकारने सन् १६६० ई० में चायपर कर भी बैठा दिया। यह कर तैयार की गयी चायपर प्रति गैलन ८ पेन्सके हिसाबसे लगाया गया था। भारतमें व्यवसाय करनेवाली ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सन् १६६४ ईस्वीमें बृटेन सम्राट् चार्ल्स द्वितीयको ४० शि० प्रति पौण्डवाली १ पौंड २ औंस चाय भेंट स्वरूप प्रदान की। इसके २ वर्ष बाद अर्थात् १६६६ ई० में २२३ रतल उत्तम चाय सम्राट्को भेंट की। इस समय इंग्लैण्डमें चाय पीनेका प्रचार पर्याप्त हो चुका था फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीका चायके व्यवसायकी ओर अभी तक ध्यान नहीं था। वह तो केवल भेंट करनेके लिये कभी कभी विदेशसे चाय मंगा लिया करती थी। इंग्लैण्डमें चायकी मांग बढ़ती गयी फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन् १६७७ ई० तक चुपचाप बैठी रही। इंग्लैण्डवालोंकी आवश्यकता पूर्तिके लिये जावासे चायकी खरीद होती रही परन्तु सन् १६८६ ई० में जब डच लोगोंने जावासे अंग्रेजोंको निकाल बाहर कर दिया तब ईस्ट इण्डिया कम्पनीको चायका व्यवसाय करनेपर बाध्य होना पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इंग्लैण्डकी मांगको पूरा करनेके लिये सूरत और मद्रासके मार्गसे चाय खरीदना आरम्भ किया।

भारत

भारतमें चायके व्यवहारका वर्तमान प्रचलित ढंग कबसे आरम्भ होता है यह कहना अवश्य

चायकी श्रेणी

इसका निर्णय चायकी पत्ती तोड़ते समय ही किया जाता है और उसीके अनुसार चायकी श्रेणी स्थिर की जाती है। चायकी श्रेणी चीनी नाम संस्कारके अनुसार सम्बोधित की जाती हैं जैसे फ्लावर आरेञ्ज पीको, आरेञ्जपीको, ब्रोकेनपीको, पीको, पीको सूचाङ्ग, कनिङ्ग और चायका चूर्ण (Tea dust) आदि श्रेणियां मानी जाती हैं। इन्हींके अनुसार चायकी श्रेणी निर्धारित कर उसे निर्वात् टीनमें बंद किया जाता है और फिर वह बाजारमें बिकनेके लिये भेजी जाती है। जिस श्रेणीके चायमें जितनी अधिक थीन रहती है वह उतनी ही उत्तम मानी जाती है। उत्तम श्रेणीकी चायमें थीनका भाग अधिक होनेसे उसका मूल्य भी औरोंकी अपेक्षा अधिकही होता है।

चायका वैज्ञानिक विश्लेषण

चायके रसायन सम्बन्धी विवेचनमें चायकी उत्तमता को ध्यानमें रखना पड़ता है। चायको उत्तम श्रेणीका बनानेवाले पदार्थोंमें तेल सा चिकना पदार्थ, टैनिन तथा थीन यही तीन प्रधान रूपसे पाये जाते हैं। चायके अन्दर जो एक प्रकारकी प्रिय गन्ध सी मिलती है वह चायकी पत्तीमें पाये जानेवाले तेलके कारण है। परन्तु चायको स्फूर्तिदायक गुण देनेवाली वस्तु बना देनेका श्रेय थीन नामक पदार्थको ही है। चायमें थीन पायी जाती है और इसीके कारण चाय पीनेसे कुछ समयके लिये एक प्रकारको स्फूर्तिका संचार हो उठता है। स्नायुमें एक प्रकारकी चेतन शक्ति सी दौड़ जाती है। थीन वही पदार्थ है जो इसी प्रकारके अन्य पेय पदार्थों जैसे काफी, कोको और कोलानट, आदिमें पायी जाती है। तेल और थीनके अतिरिक्त चायमें टैनिन भी पाया जाता है टैनिन भूखको कम कर देती है और पाचनशक्तिको शिथिल कर देनेमें सिद्धहस्त है। इसीलिये अनुभवकर देखा गया गया है कि गर्म पानीमें अधिकसे अधिक १० मिनट तक ढकन बंद कर चाय उबालनेसे थीनका पूरा अंश उतर आता है पर देरतक गर्म की जानेसे टैनिनका अंश उतर आता है जो पाचन शक्तिको बलहीन कर भूख बंदकर देता है। चायका रसायन सम्बन्धी विश्लेषण इस प्रकार हैं।

१ जल	५·० प्रतिशत	४ टैनिन एसिड	२६·२५ प्रतिशत
२ मांस बनानेवाले पदार्थ	१८·०० ,,	५ लकड़ीका अंश	२०·०० ,,
१ थीन	३·०० ,,	६ खनिज द्रव्य	५·०० ,,
२ कैसीन	१५·०० ,,	कुल	१००·००
३ गर्मी देनेवाले पदार्थ	२५·७५,,		
१ आरोमैटिक आइल	०·७५ ,,		
२ शक्कर	३·०० ,,		
३ गोंद	१८·००,,		
४ चर्बीके तेल	४·०० ,,		

एन० वालिच अपनी कमेटीके साथ जोरोंसे काम करने लगे और फल यह हुआ कि सन् १८३७ ई० में आपकी कमेटीने भारतके पूर्वीय भूभागमें चायके सुविस्तृत क्षेत्रको खोज निकाला। इसका प्रधान श्रेय कमेटीके सदस्य जेनकिन्स और चार्लटनको ही है।

१९ वीं शताब्दीके आरम्भतक पूर्वीय देशोंसे व्यवसाय करनेका अधिकार केवल भारतकी ईस्ट इण्डिया कम्पनीहीको था। अतः कम्पनी व्यापारसे अच्छा लाभ उठा रही थी लेकिन दूसरी कम्पनियोंको यह फूटी आंख न भाता था और लोग इसकी स्वतंत्रताके बाधक हो रहे थे। फलतः सन् १८३४ ई०से ईस्ट इण्डिया कम्पनीके हाथसे चायके व्यापार करनेकी स्वाधीनता छिन गयी। जिससे मुक्तद्वार व्यवसाय हो जानेके कारण लोग दौड़ पड़े। भारतके पूर्वीय भूभागमें चायकी खेती आरम्भ हो चुकी थी उसके परिणाम स्वरूप सन् १८३६ ई० में भारतकी १ रतल चाय लन्दन भेजी गयी। सन् १८३७ ई० में भारतकी ५ रतल चाय लन्दनके बाजारमें गयी और सन् १८३८ ई० में इसका परिमाण इतना बढ़ गया कि १० छोटे बक्सोंमें भरकर भेजी गयी सन्० १८३९ ई० में भारतकी चायके ९५ बक्स भेजे गये और सन् १८४० ई० में भारतकी चायके नीलामका प्रबन्ध भी नियमित रूपसे आरम्भ होगया।

सीलोन

इस द्वीपमें चायकी खेतीका कार्य आरम्भ करनेके लिये डच और अंग्रेज दोनों ही उत्सुक थे और दोनोंही ने उद्योग किया था परन्तु सन् १८७३ ई० तक उन्हें सफलता न मिली। सन् १८७३ ई०में काफी की पत्तीमें बीमारी लग जानेके कारण नेटालके समान यहां भी इसकी समस्या उपस्थित हो गयी। यहां भी चायकी खेतीके उत्थानका युग यहींसे आरम्भ होता है।

सबसे प्रथम सन् १८३९ ई० में चायकी खेतीका प्रयोग यहां किया गया। सन् १८६७ ई० में मेसर्स केयर डन्डूस एण्ड को० ने यूलकोन्डूरा में चायका बगीचा लगाया। इस प्रकार उन्नति होती गयी और सन १८७७-७८ की घटनाके कारण नयी पूंजीके लगनेसे इस उद्योगको अच्छा बल मिला। और सन १८९७ ई० में तो हम देखते है कि यहां चायकी खेतीने ऐसी उन्नतिकी कि उस वर्ष ३ लाख ५० हजार एकड़ भूमिमें यह बोई गयी। उसी समयसे यहां क्रमशः इसकी उन्नति होती जाती है।

उपरोक्त विवरणसे पाठक समझ गये होंगे कि चायने किस प्रकार अपना प्रसार किया और आज सभ्य समाजमें यह किस लोक प्रियताकी दृष्टिसे देखी जाती है।

चायके बीज

चायके बीज अण्डाकार और कठिन छिलके वाले होते हैं। बीजके लिये रक्खे गये पौधोंको प्रथमसे ही स्वाभाविक गत्यानुसार बढ़ने दिया जाता है। ये बढ़कर ३० से ४० फीट तक ऊंचे वृक्ष

कनाडा तो बहुत पुराने बृटिश साम्राज्यकी चायके पीनेवाले हैं और अब आस्ट्रेलिया भी चीनकी चायको छोड़कर साम्राज्यकी चाय पीने लगा है।

चाय और स्वास्थ्य

चायसे मनुष्यके स्वास्थ्यपर क्या प्रभाव होता है इस विषयमें भारी मतभेद है परन्तु चायके व्यापक व्यवहारको देखकर यह सहसा कहा नहीं जा सकता कि चाय स्वास्थ्यके लिये सर्वथा हानिकारक ही है। हां एक प्रकारका व्यसन कहकर सम्बोधित करनेवाले आदर्शवादी लोगोंसे इस सम्बन्धमें हमारा भी अधिक मतभेद नहीं है पर वैज्ञानिक दृष्टिसे इसकी परीक्षा कर लेनेमें हमें कोई आपत्ति भी नहीं है। 'इन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाका' मत है कि चायके सम्बन्धमें अभीतक कोई ※ विश्वासोत्पादक अधिकार युक्त रासायनिक विश्लेषण नहीं किया गया अर्थात् चायके सम्बन्धमें अभीतक इस ओर पर्याप्त वैज्ञानिक खोज नहीं की गयी। ऐसी दशामें यह कहना कि इसमें विषके अतिरिक्त और कुछ सार वस्तु ही नहीं है यह एक प्रकारसे भारी भ्रम फैलाना है। परन्तु उपलब्ध रासायनिक खोजके आधारपर चायके तत्त्वोंकी यदि विवेचना की जाय तो पता चलेगा कि उसमें कौनसा ऐसा तत्त्व है कि जिससे चायकी उपयोगिताकी ओर लोगोंका ध्यान जाता है। चायमें एक प्रकारका तेलसा चिकना पदार्थ होता है जो चायको स्वादिष्ट बनाकर उसमें एक प्रकार का चित्तप्रिय गन्ध उत्पन्न करता है और † दूसरा प्रधान तत्त्व थीन है जिसे आजकल रसायनशास्त्री कैफीन कहते हैं। चायमें मिलनेवाले प्रधान स्वास्थ्यवर्द्धक गुणका यही पदार्थ प्रधानजनक माना जाता है। अतः यही चायकी पत्ती का उत्तमांश है। उत्तम ‡ श्रेणीकी चायमें इसी थीन नामक पदार्थका अंश अधिक पाया जाता है और इसीसे वह उत्तम श्रेणीकी चाय मानी जाती है। नीचेके श्रेणीकी चायमें उत्तम श्रेणीकी अपेक्षा कम 'थीन' रहती है और इसी कारण वह नीची श्रेणीकी चाय मानी जाती है। क्योंकि चायकी उत्तमता उसके गुणोंपर ही निर्भर रहती है और चायमें जो गुण है वह थीनके ही कारणसे हैं। थीनसे स्नायुमें स्फूर्तिका संचालन तत्कालिक होता है और यही उसका प्रधान गुण है। वह मनुष्यकी मुर्झाई हुई प्रकृतिको

※ *The chemistry of the completed teas of commerce does not appear to have been subjected to adequate scientific study. There can not be said to have to any standard or recognized analysis,* देखिये *Encyclopædia Britannica*

† *The second of the important constituents of Tea is the Coffeine or Theine, to which almost the whole of the stimating power of the Tea seems to be due. From medical point of view it is the most important substance. Encyclopædia.*

‡ *The Higher-priced grades of Tea certainly contain more Coffeine than the lower. Encyclopædia Britannica.*

उन्नतिके लक्षण स्पष्ट प्रतीत हो चले। अभीतक चाय एक पेय पदार्थ माना जाता था। परन्तु अब वह व्यवसायकी वस्तु मानी जाने लगी। उत्तर पूर्वीय भूभागके अधिकांश बगीचोंके एजेन्ट कलकत्तेमें रहते हैं। जो उन बगीचोंकी व्यवस्थाका प्रबन्ध संचालन करते और उन्हें आर्थिक सहायता देते रहते हैं। प्रत्येक बगीचेके साथ ही उसका निजका चाय तैयार करनेका एक छोटासा कारखाना भी रहता है। पत्ती चुन जानेके बाद कई ऐसे प्रयोग किये जाते हैं कि जिनके न करनेसे चाय के खराब हो जानेकी आशंका रहती है। सुव्यवस्थित कारखानोंमें आधुनिक यंत्र सामग्री रहती है जिनपर काम करनेवाले अपने विभागके विशेषज्ञ होते हैं।

आज भारतमें ४२७८ से अधिक चायके बगीचे हैं जिनमें आवश्यकतानुसार सुव्यवस्थित छोटे छोटे कारखाने हैं। जहां चायकी पत्तियोंसे चाय तैयार की जाती है और व्यवसायकी दृष्टिसे चायकी विभिन्न श्रेणियोंके अनुसार उसे छांटकर निर्वात (air light) डब्बोंमें बन्दकर दिया जाता है। इस समय आसाम और बंगाल प्रदेशान्तर्गत ब्रह्मपुत्र तथा सुर्माकी घाटीके सुविस्तृत क्षेत्रमें, दार्जिलिङ्ग, जलपाई गोड़ी, तथा चटगांवके मैदानमें चायके बगीचे लहलहा रहे हैं। नेपाल और संयुक्तप्रांतके देहरादून, अलमोड़ा और कुमाऊं, गढ़वाले के जिलोंमें भी चायकी खेती होती है। पञ्जाब प्रांतके कांगड़ा, मण्डी राज्य तथा सिरमर और शिमलेके पहाड़ी भूभागमें भी चाय पैदा होती है। बिहार-उड़ीसा के छोटानागपुर जिलेमें भी चायकी खेतीका उद्योग सन् १८५३ ई० से होता चला आ रहा है और आज मद्रास प्रदेशके विनाद और निलगिरि और ऐनामलीज तथा ट्रैवनकोरमें चायकी अच्छी खेती होती है।

चायका व्यवसाय

भारतकी चायकी मांग आरम्भसे ही अधिक होती आयी है परन्तु सन् १९०७ ई० से सभ्य संसारने भारतकी चायको सर्वश्रेष्ठ करार दिया है। आज भारतकी चाय अत्यन्त लोकप्रिय हो रही है। चीनकी अन्ध परम्पराके कारण वहांवाले नवीन पद्धतिके अनुसार कार्य नहीं करते अतः चीनकी चायका स्थान धीरे २ गिरने लगा है। आजकल इसकी चायका निर्यात बहुत कम हो गया है।

संयुक्तराज्य अमेरिका और कनाडाके अंग्रेज निवासी 'इङ्गलिश ब्रेकफास्ट टी' कह कर चीनकी चाय प्रायः प्रातः काल पीते हैं इस लिये वहां वाले चीनकी काली चाय थोड़े परिमाणमें खरीदते हैं। चीनकी हरी चायकी खपत संयुक्त राज्य अमेरिका, मध्य एशिया और उत्तर अफ्रीकाके निवासियोंमें होती है। चीनमें चायकी खेती प्रायः सभी लोग करते हैं और एजेण्टोंकी आवश्यकताके लिये ग्रामवासी चाय बेच देते हैं जो कारखानोंमें तैयारकर विदेश काली चाय या हरी चायके रूपमें

छड़के आकारका डंठल निकलता है और २ से ३ फीट तक ऊंचा हरा भरा पौधा बन जाता है। और पत्ती चुनने योग्य हो जाता है। इस अवस्थामें पहुंचकर एक पौधा २० वर्ग फीट क्षेत्र घेर लेता है।

चायकी खेतीके उपयुक्त जलवायु

जिस स्थानकी वायुमें उष्णता और जलका अंश अधिक रहता है उसमें खेती की जासकती है। जहां थोड़े थोड़े समयके अन्तरपर जोरकी वर्षा हो और पौधोंकी जड़पर पानी न रुका रहे वहां खेतीके उपयुक्त क्षेत्र माना जाता है। जिस प्रकारके जलवायुमें, समशीतोष्ण प्रधान प्रदेशवाले जंगल लहलहा उठते हैं और दलदली भूमिपर भी पौधे पनप जाते हैं वहां चायकी खेती सुगमतासे की जा सकती है। जिस भूमिमें गहराई तक उपजाऊपन हो और पानी पड़ते ही भूमिमें प्रवेश कर जाय तथा शेष जल पौधेके जड़परकी मिट्टी बहाये बिना शीघ्र बह जाय। दोरस मिट्टी जिसमें उसे मुलायम रखने भरके लिये कुछ अंश रेतीका भी रहे जो धूप लगते पपड़ी बनकर न सूख जाय और न पानी पड़ते ही कीचड़में बदल जाय।

चायकी पत्ती चुननेका समय

भारतमें प्रायः अप्रैल माससे चायकी पत्तियोंकी चुनाई आरम्भ होती हैं। चायके पौधोंको कलम कर देनेके बाद और शीतकालीन अवकाश ले चुकनेके बाद नयी पत्तियां निकलने लग जाती है और उसी समयसे प्रथम चुनाई आरम्भ कर दी जाती है। पौधेके प्रधान डंठलपर छ पत्तियां भरी पूरी निकल आती हैं तब प्रथम चुनाई आरम्भ होती हैं। प्रधान डंठलको छोड़कर पौधेकी और शाखोंपर की ऊपरवाली दो पत्ती तोड़ी जाती हैं इसके ७ से ६ दिन बाद दूसरी चुनाई आरम्भ होती है इसमें केवल दो ही पत्ती छोड़ी जाती है। तीसरी बारकी चुनाईमें एक पत्ती और चौथीमें सब तोड़ ली जाती हैं। अन्तिम बारकी चुनाईका समय लगभग अक्टूबरसे दिसम्बरके बीच आता है।

चाय बनाना

फेक्ट्रीमें पत्तियां तौली जाती है और फिर वे बांसकी छिछली टोकरियोंमें फैला दी जाती हैं जहां वे १८ से ३० घन्टे तक पड़ी रहती हैं। वैसी अवस्थामें दिन चढ़ते ही उनका पानी मर जाता है और वे मुरझा जाती हैं। इसके बाद बड़े बड़े कड़ाहोंमें डालकर उन्हें आंच दी जाती है। फिर वे बेलनके नीचे दबा दी जाती हैं जिससे पत्तियोंकी नसें टूट जाती हैं तथा पत्तीके छिद्रोंमें भरा हुआ तैल समान पदार्थ पत्ती भरमें फैलकर मिल जाता है। इतनी विधिका अनुभव पा जानेके बाद वे किसी ठंडे स्थानमें १ से २ इंच मोटी तहोंमें फैला दी जाती हैं। जहां वे २ से ३ घन्टे तक वैसी ही अवस्थामें पड़ी रहती हैं। इस प्रकार तैयार की गयी पत्ती चायके नामसे सम्बोधित की जाती है।

उपरोक्त विश्लेषणसे स्पष्ट हो जाता है कि चायमें जहां भीतर [illegible] १८ [illegible] और शरीरमें गर्मी पहुंचानेवाले २८-७५ प्रतिशत हैं वहां पाचन शक्तिको कमजोर कर भूख बंद कर देनेवाला टैनिन नामक पदार्थ भी २१-२८ प्रतिशत मिला हुआ है। ऐसी दशामें टैनिनको दूर करनेके लिये जो उपाय काममें लाया जाता है वह ध्यानमें रखना आवश्यक है। १० मिनटके भीतर चायके उत्तम * तत्वांश निकल आते हैं अतः इसी अवधिके भीतर चाय छानकर पीनेसे टैनिनका अंश न आने पायेगा। एक ही पौधेसे भिन्न भिन्न समयपर पत्तियां तोड़कर परीक्षा की गयी है और सिद्ध हुआ है कि सुकोमल नवजात पत्तियोंमें थीन नामक शक्ति वर्द्धक पदार्थ पुरानी अथवा मोटी और कड़ी पत्तियोंकी अपेक्षा कहीं अधिक पाया जाता है। और पुरानी पत्तियोंमें टैनिन पदार्थका ही भाग अधिक रहता है। शुद्ध चायमें कितने ही प्रकारके दूषित पदार्थ मिलाये जाते थे परन्तु अब अधिक कड़ाई रक्खे जानेके कारण यह कार्य बहुत कम हो गया है।

हरी चाय के सम्बन्धमें भी पहिले लोगोंमें बड़ा भ्रम फैला हुआ था परन्तु राबर्ट फारचूनके द्वारा रहस्योद्घाटनके कारण बहुत कुछ यह भ्रम दूर हो गया है। इन्होंने लिखा है कि मैं स्वयं चीनके उस प्रदेशमें गया जहां हरी चाय बनायी जाती है। वहां जाकर मैंने देखा कि आसमानी रंगको पीसकर लोग पहिलेहीसे तैयार रखते हैं और जब अन्तिमवार कड़ाहोंमें चायकी पत्तियां भूंनी जाती हैं तब उतारनेके ५ मिनट पूर्व चम्मचसे पत्तियोंपर रंग छिड़क दिया जाता है। इसके बाद पत्तियां खब तेजीसे चलायी जाती हैं जिससे रंग सब जगह मिलकर चायमें जज्ब हो जाता है।

संसारमें चायकी मांग

संसारमें सबसे अधिक चायके पीनेवालोंमें बृटेनके लोग हैं। यहां चायकी खपत सबसे अधिक होती है। परिमाणकी दृष्टिसे चायकी खपतमें जहां ग्रेट बृटेनका सबसे ऊंचा स्थान है वहां दूसरे स्थानपर रूस आता है। और तीसरा स्थान संयुक्त राज्य अमेरिका माना जाता है। इन तीनके बाद फिर हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, और न्यूजीलेण्ड आदिका स्थान क्रमानुसार आता है। बृटिश साम्राज्यान्तर्गत उत्पन्न होनेवाली चायकी प्रतियोगितामें यदि कहींकी चाय खड़ी हो सकती है तो वह चीनकी है। परन्तु संसारकी आवश्यकताका ५० प्रतिशत भाग केवल भारत पूरा करता है। ऐसी दशामें संसारकी मांगके शेष ५० प्रतिशतके साथ ही चीनकी प्रतियोगिताका प्रश्न उठ खड़ा होता है पर दूसरे देशोंमें बृटिश साम्राज्यकीही चायकी अधिक मांग रहती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और

* चाय कोई भोजनका पदार्थ नहीं है जो खाकर पचाया जा सके। उससे तो कुछकालके लिये शरीरमें एक प्रकारकी स्फुर्तिका सचार हो जाता है और निकटवर्ती वातावरण चेतन्यमय प्रतीत होने लगता है। यह सब चायमें पाये जानेवाले थीन *Theine* अथवा *Methyl Theobromine* का प्रभाव है। इस पदार्थको वैज्ञानिक सारिणी $C_8H_{10}N_4O_2+H_2O$ है।

जिस प्रकार प्रभावशून्य सिद्ध करता है उसी प्रकार अग्निके प्रचण्ड प्रकोपको भी तृणवत समझता है। यह है आधुनिक युगके विज्ञान विशारदोंकी अटल खोज और इसी सैद्धान्तिक बलपर वे लोग अभ्रकके इस गुणपर रीझे हुए हैं। परन्तु भारतके प्राचीन विज्ञान वेत्ताओंने इससे आगे भी हाथ मारा है। जिस अभ्रकको आजके वैज्ञानिक अग्निभाव शून्य मान बैठे हैं उसी अभ्रकको भारतके पुराने रसायनशास्त्रियोंने भस्मीभूत कर डाला है और उसकी ऐसी भस्म बना डाली कि जिसका पुनरोत्थान न हो सके। अतः भारतके सम्बन्धमें अभ्रकसे परिचित होनेका प्रश्न उठाना ही अनावश्यकसा प्रतीत होता है। फिर भी आधुनिक विद्वानोंके मतानुसार हम यहांपर प्रसंगवश अभ्रकका ऐतिहासिक विवेचन कर देना ही उचित समझते हैं।

अभ्रकका ऐतिहासिक विकास

अमेरिका

पूर्वकालीन युगमें अमेरिकाके आदि निवासी रेड अमेरिकन लोग अभ्रकसे परिचित थे। अभ्रककी उपयोगितासे ये लोग उस समय भी लाभ उठाते थे। अपने समयकी सजावट और आमोद-प्रमोदमें ये लोग अभ्रकका उपयोग तो करते ही थे पर मनुष्योंके शवके साथ ही अभ्रकको भी भूमिमें उसे समाधि दे देते थे। जैसा कि अमेरिकाके ओहियो जिलोंमें पायी गयी पूर्वकालीन समाधियोंसे विदित होता है। अमेरिकाकी 'ऊपर लेक' नामक प्रसिद्ध झीलके तटपर पायी गयी प्राचीन वस्तुओंमें पत्थरके कुछ ऐसे भी औजार मिले हैं जिनसे अनुमान होता है कि किसी युगमें लोग इनका व्यवहार पत्थरकी चट्टानोंसे अभ्रक निकालनेके समय करते रहे होंगे।

योरोप

अभ्रकका परिचय योरोपवालोंको भी पुराने ही युगमें मिला था और वे लोग भी इसे कई प्रकारसे काममें लाते थे।

रोम

रोम साम्राज्य संसारके प्राचीन साम्राज्योंमें से है। यहां वाले अभ्रकसे बहुत पहिलेसे परिचित थे। आधुनिक युगकी म्यूनिसिपैलिटियोंके समान उस समय नगर संस्थायें न थी कि जो मार्गों पर प्रकाशका प्रबन्ध करती अतः घरसे बाहर जानेके लिये प्रकाश ले जानेकी आवश्यकता रहती थी पर वायुके झकोरोंसे दीपककी रक्षा करनेके लिये उन्हें सदैव चिन्ता रहती थी उस समय शीशा भी बनाया नहीं जाता था ऐसी दशामें वे लोग अभ्रकके लालटेनोंमें शीशाका काम लेते थे। इस प्रकारके लालटेन रोमके इतिहास प्रसिद्ध हरक्यूलेनियम (Herculaneum) में आज भी पाये जाते हैं। इतना ही नहीं रोमके मकानोंमें अभ्रकका काम लिया जाना यह इतिहास

उत्फुल्लितकर उसमें चैतन्यताकी जान फूंक देती है। यह पदार्थ थोड़े † परिमाणमें शक्ति-संचारक और लाभकारी होता है। चायमें थीनका अंश ३ से ६ प्रतिशत ही रहता है जो उसे लाभकारी कार्य करनेमें समर्थ बनता है। अतः चायका यह पदार्थ स्वास्थ्यके लिये कोई हानिकारक वस्तु नहीं है। चायमें यदि कोई हानिकारक वस्तु प्रधान रूपसे है तो वह टैनिन है। परन्तु १० मिनट ‡ तक चायकी पत्तीको उबालनेसे केवल थीनका ही अंश पानीमें उतर आता है। अतः इतनी अवधिमें चाय छानकर पी ली जाय तो टैनिनके अनिष्टकारी प्रतिफलसे सहजमें रक्षा की जा सकती।

भारतमें चायका उद्योग

भारतमें चाय की उन्नति किस प्रकार हुई इसकी चर्चा की जा चुकी है। सन १८४० ई० में ५ लाख पौंडकी पूंजीसे आसाम कम्पनी नामक एक चाय कम्पनी की स्थापना हुई। इस कम्पनीने शिव-सागरका सरकारी बगीचा खरीद लिया और उसी वर्ष दार्जिलिङ्ग तथा चटगांवके जिलोंमें प्रयोगात्मक कृषि आरम्भ किया। कछारमें पहिला बगीचा सन १८५५ ई० मे लगाया गया। इधर चायकी खेती की वृद्धि आरम्भ हुई उधर सट्टेबाजोंने चायका सट्टा आरम्भ कर दिया। इससे व्यापारको धक्का लगा फिर भी काम जारी रहा और कुछ समयमें सुरमा और ब्रह्मपुत्र की घाटियोंके विस्तृत क्षेत्रमें चाय-के बगीचे लहलहा उठे। परन्तु यहांका प्रबन्ध ठीक न था। लोग व्यवसायके लिये चायके बगीचे नहीं लगाते थे। वे तो बगीचा तैयारकर थोड़े लाभ पर उसे बेच देते थे। फल यह हुआ कि सन् १८६६-७ ई० में चायकी खेतीको भारी धक्का लगा। आसाम कम्पनीकी स्थापनाके बाद कुछ ऐसी कठिनाइयां उपस्थित होगयीं कि चायकी खेतीके काम में उन्नति न दिखायी दी। कम्पनीके शेयरका भाव भी गिर गया परन्तु आसाममें चायके पौधोंका पता लग जानेके कारण कुछ जीवन संचार हुआ और १५ वर्ष बाद आशाका आभास हुआ। उधर सट्टेबाजीने जो जोर किया तो सन् १८६६ में सरकारने चायके उद्योगसे अपना हाथ हटा लिया और कठिनाइयोंकी घटा घिर आयी। फलतः भयङ्कर उत्पात पुष्कल हो गयी। चायकी कम्पनियों और बगीचोंके व्यवस्थापकोंकी अयोग्यता और अदूरदर्शिताका अवश्यम्भावी परिणाम सामने आया, इनकी अनुभव हीनता अपना रंग दिखा गयी। कितने कितनी ही कम्पनियां टूटीं और कितने ही बगीचे मिट्टीके मोल बिक गये। कुछ समय पश्चात् फिर नवीन कम्पनियोंका जन्म हुआ और पुनः व्यवसाय की व्यवस्था आरम्भ हुई और कुछ ही समय बाद

† *In large quantities it is a poison, but in smaller quantities it acts as a stimulant.*

‡ *Experiment has shown that an infusion of the leaf for ten minutes is sufficient to extract all the valuable theine and a longer period merely results in an accumulation of tannin which in excess is well known to seriously impede digestion.*
(*Tea by A. Ibbetson*)

इत्यादि। इसी प्रकार जर्मन विद्वान * जान वेकमानने सन १७१६ ई० में अभ्रककी उपज और उपयोगिताकी विस्तृत विवेचना की है। उस विवरणसे यह भी पता चलता है कि उस समय जर्मनीमें कहांसे अभ्रक आता था और किस किस काममें आता था। कुछ समय बाद शीशा बनानेकी विधि खोज निकाली गयी और इस सम्बन्धमें अभ्रकका आनेवाला उपयोग कम परिमाणमें होने लगा। सन् १८७० ई० के लगभग वैज्ञानिकोंने एक प्रकारके चूल्हेकी योजना की जिसमें अभ्रकका उपयोग होने लगा। इस प्रकारके चूल्होंका प्रचार जर्मनीमें भी हो गया। स्मरण रहे कि चूल्हेके आयोजनके पूर्व साइबेरियाका अभ्रक योरोपके बाजारकी आवश्यकताको पूरी करता था परन्तु सन् १८६८ ई० में उत्तर करोलिना की अभ्रकवाली खानें खोज निकाली गयीं और उनसे अभ्रक बाजारमें आने लगा। चारों तरफसे लोग इस क्षेत्रमें टूट पड़े और मनमानी खुदाई आरम्भकी गयी। यह क्रम वर्षोंतक जारी रहा पर सन् १८८४ ई० से भारतके संसारकी बाजारोंमें अभ्रक भेजना आरम्भ कर देनेपर बाजारमें अभ्रकका भाव बहुत गिर गया। इसके दो वर्ष बाद सन् १८८६ ई० में कनाडाने भी अपने यहांकी खानोंका माल भेजना आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भाव और भी बैठ गया।

कनाडामें फास्फेटकी खानों से असली मालके साथ अभ्रक अवश्य निकलता था परन्तु उपेक्षा साथ वह फेंक दिया जाता था। पर अमेरिकामें विद्युतके उद्योगके सन् १८९० ई० में स्थापित होनेके बाद अमेरिकावालोंने कनाडावालोंको प्रलोभन दे प्रोत्साहित किया और फल यह हुआ कि वहां भी अभ्रककी निकासी आरम्भ हो गई। इसी प्रकार संसारमें ज्यों ज्यों उद्योग धन्धोंने उन्नति की त्यों त्यों अभ्रककी मांग बढ़ती गयी और इसी ढंगसे अभ्रकके व्यवसायका औद्योगिक विकास क्रमानुसार होता गया पर विद्युत शक्ति संयुक्त कलाकौशलकी उन्नतिसे अभ्रकके व्यवसायको सबसे अधिक बल मिला और आज वह उस उद्योगके साथ ऐसा घुल मिल गया है कि विद्युतशक्तिकी कल्पना होते ही अभ्रककी उपयोगिताका मानचित्र आंखोंके आगे अमिट रूपसे अंकित हो जाता है।

अभ्रकके भौतिक गुण

खानोंमें अभ्रक चट्टानोंके रूपमें पाया जाता है जो छोटी सी छोटी आकृतिसे लगाकर भारीसे भारी आकारमें पायी जाती हैं। सामान्य श्रेणीके बड़े आकारवाले पर्तका अभ्रक आन्टेरियो (कनाडा) प्रान्तके सिडनहम स्थानके पासवाली लेसी खान नामक खानोंसे निकलता है। इन खानोंसे अधिकसे अधिक ७ फीटकी लम्बाईका अभ्रक का तख्ता देखा गया है और अभ्रकके ढेले जो यहां बड़ेसे बड़े निकाले गये हैं उनका वजन २०हजारसे ४० हजार रतल तक तौला गया है। अभ्रकके एक तख्तेकी

* विस्तृत विवरणके लिये देखिये *Encyclopædia by Johan. Beckmann, published in Gottingen in 1796*

भेजी जाती है। इसमें भी कुछ भाग रख लिया जाता है जिसकी टिकिया और ईंटें बनाई जाती हैं। इस कामके लिये भारत, सिलोन, और जावासे चीनमें चाय मंगायी जाती है। हेंकाउमें कुछ ऐसे भी रूसी कारखाने हैं जो चायकी ईंटें तैयार करने का काम करते हैं। इसी प्रकार सूचाउमें भी कई कारखाने हैं जो चायकी ईंटें बनाते हैं। ईंटें काठके सांचेमे डालकर दबाई जाती हैं और पत्थरके समान कड़ी कर दी जाती हैं। फिर उनको कागजमें लपेट दिया जाता है। इसी प्रकार एक स्थानसे दूसरे स्थान तक लेजानेकी सुविधाकी दृष्टिसे गीली ईंटें १२ की संख्यामें एक दूसरेके ऊपर रखकर जमायी जाती हैं जो सूख जानेपर एक कठिन पिण्डका स्वरूप धारण करलेती हैं। इस प्रकारके पिण्डमें ६० से ७० रतल तक वजन हो जाता है। ये ईंटें ऊंटोंमें लादकर रूस भेजी जाती हैं और कुलियों द्वारा निर्यात जाती हैं।

जापानकी चाय उत्तर अमेरिकावालोंमें खपती है पर अब वे भारतीय चायको अधिक पसन्द करने लगे हैं अतः जापानकी चाय की मांग कम हो गयी है। दूसरी ओर जापानी लोग चायके स्थानमें शहतूतकी खेती करने लगे हैं और वे चायकी अपेक्षा रेशम द्वारा अधिक धन कमाते हैं।

चायका नीलाम, नमूना और बिक्री

जिस प्रकार लन्दनकी फ्लीट स्ट्रीट नामक गली संसारके पत्रकारोंका बहुत बड़ा अड्डा और वहांकी डाउनिंग स्ट्रीट नामक गली साम्राज्य प्रसार लोलुप लोगोंका जमघट मानी जाती है उसी प्रकार वहांकी मिनसिंग लेन नामक गली चायकी प्रधान मण्डी है। संसारके विभिन्न केन्द्रोंसे यहां चाय आती है और परीक्षा हो चुकनेके बाद खुली नीलाम द्वारा बेंची जाती है। जहाज परसे उतर लेनेके बाद चुंगी विभागके इंसपेक्टरके सम्मुख चाय तौली जाती है और गुदाममें सजाकर रख दी जाती है। लंदनके व्यापारी अथवा आढ़तिये माल रवाना होनेकी सूचना पाते ही दलाल नियुक्त कर देते हैं जो माल आ जानेका समाचार पाते ही वहांके बड़े बड़े व्यापारियोंको सूचित करते हैं कि अमुक दिन इतने बजे अमुक प्रकारकी चायका नीलाम होगा। दलाल लोग नीलामकी नोटिस तो निकालते ही हैं पर साथ ही छपे हुए सूचीपत्र भी प्रकाशित करते हैं जिसमें नीलाम और चायके सम्बन्धमें सभी ज्ञातव्य बातोंका समावेश रहता है। निश्चित तारीखके दिन चुंगी वाले चायके बंडलोंको नीलामके लिये सम्मुख रख देते हैं। खरीदार लोग अपने प्रतिनिधि चुंगीके गोदाम पर भेजते हैं जो वहांसे चायके नमूने ले आते हैं। नमूने परीक्षाके लिये भेजे जाते हैं। परीक्षाका निष्कर्ष तथा चायका मूल्य स्थिर कर परीक्षा करने वाले खरीदारके पास भेज देते हैं। खरीदार लोग जहां तक उसे खरीद सकते हैं वहां तक मूल्यका अंतिम सूचीपत्र पर करके दलालके पास भेज देते हैं। जब नीलाम आरम्भ होता है तब खरीदार अपनी पसन्दकी हुई चायको पूर्व भेजे गये मूल्यके अनुसार मान लेता है और उसी समय

यदि किसी अन्धेरे कमरेमें एक निश्चित ओरसे प्रकाश डाला जाय और उसके सामने कागजका एक ऐसा टुकड़ा खड़ा किया जाय कि जिसमें छोटासा छेद हो फिर उस टुकड़ेको दूरसे किसी छोटे अभ्रकके टुकड़ेके भीतरसे देखा जाय तो कागजके उस छेद पर ६ किरण वाला सितारासा दिखायी देगा। इन किरणोंके परस्पर मिल जानेसे जो कोण बनते हैं वे ६० डिग्रीके होते हैं।

अभ्रकके रंगकी परीक्षा डाइक्रास्कोप (Dechrosedqe) नामक यंत्रको लगाकर की जाती है। रंग अभ्रककी मोटाई पर बहुत कुछ निर्भर करता है। यही कारण है कि रंगकी परीक्षा निश्चित मोटाईमें जो १ से २ मीलीमीटर तक की होती है-की जाती है। इतने ही मोटे अभ्रकके तहों का जो रङ्ग परीक्षासे निश्चित किया जाता है वही रङ्ग व्यवसायमें माना जाता है और उसी रङ्गके अभ्रकके नाम से घर [illegible] भी किया जाता है।

अभ्रककी कठोरताकी परीक्षा अन्य प्रकारकी धातुओं पर अभ्रकके टुकड़ोंसे बनाई जाने वाली रेखाओंसे की जाती है। इसकी परीक्षित कठोरताके अधारपर अभ्रकका नाम क्रम इस * प्रकार है।

अम्बर अभ्रक, स्फटिक, भारतीय अभ्रक, हरा मद्रासी और कलकत्ता अभ्रक, लाल [illegible] अभ्रक, कठोर हरा या बादामी अभ्रक, हरा बादामी और पीला पूर्वीय अफ्रीका का अभ्रक [illegible] है। संयुक्त राज्य अमेरिकाका अभ्रक है

[illegible] नाम क्रमसे पता चलता है कि पहिला कोमल और दूसरा उससे कठोर तथा तीसरा [illegible] भी अधिक कठोर होता है। अम्बर नामक अभ्रकमें भी व्यवसायी दृष्टिसे कठोरताके आधार पर [illegible] है जैसे स्वच्छ पारदर्शक कोमल अम्बर अभ्रक, दूसरा मध्यम श्रेणीको [illegible] अम्बर अभ्रक तथा तीसरा कठोर अम्बर अभ्रक होता है।

अभ्रकके [illegible] गुणका निर्णय भी कुछ सरल नहीं है। अभ्रक और उसके समान [illegible] तुलनाका निश्चित स्वरूप निकालना भी कठिन कार्य है। अभ्रककी क्योंकि [illegible] है अतः तुलनात्मक गुरुता निकालनेमें कठिनाई पड़ती है। [illegible] अनुसार अभ्रक, अल्युमिनियम, चूना और संगमरमरकी गुरुता समान [illegible] है।

विद्युत [illegible] पदार्थोंमें अभ्रकका सबसे ऊंचा स्थान है। अभ्रक [illegible] विद्युत्शक्ति उत्पन्न कर देता है और स्वयं विद्युत्शक्तिका शोषण न करनेवाला होनेके कारण [illegible] अनुभव करनेका अवसर देता है। अभ्रकके दो टुकड़े परस्पर रगड़नेसे

* [illegible] London mica expert

चायके बीजका निर्यात

भारतकी चाय सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो चुकी है अतः यहांकी चायके बीजकी मांग भी संसारके बगीचोंमें बहुत अधिक रही है। परन्तु भावमें उतार चढाव होते रहने तथा वर्षों यहांकी चायके बीजका प्रसार निरन्तर होते रहनेके कारण आज कल मांग कम हो गयी है।

सन् १८६५-६६ में ३२ ३८ हण्डर वेट यह माल जावा सुमात्रा और सीलोन गया था
२५ वर्ष बाद सन् १९१५-१६ में २७ ५५ हण्डर वेट „ „ सीलोन सुमात्रा गया था
५ „ „ „ १९२०-२१ में ८८० हण्डरवेट „ „ जावा सीलोन और सुमात्रा गया था

चायकी खेती और उपज

भारतमें चायकी खेतीका प्रसार और उपजकी उन्नति किस प्रकार हुई यह इन अंकोंसे स्पष्ट हो जायगा।

सन्	१८९०	३,४४,८२७	एकड़	११ २०,३६,४०१ रतल
१० वर्ष बाद „	१९००	५,२२,५८७	एकड़	१९,७३,१०,६६४ रतल
१० वर्ष बाद „	१९१०	५,६३,४४९	एकड़	२६,१९,२७,९९२ रतल

चायका निर्यात

सन्	१९००-०१	में	१९०३०,७९० रतल	मूल्य	६३,६७२८१	पौं
„	१९०५-०६	में	२१४२२३७८८ रतल	मूल्य	५८९८५०२	पौंड
„	१९१०-११	में	२५४३०१०८९ रतल	मूल्य	८२७१९१२	पौंड
„	१९१५-१६	में	३३८५७०२६२ रतल	मूल्य	१३३२०७१५	पौंड
„	१९२०-२१	में	२८ ७११८५९ रतल	मूल्य	८०९९८५३	पौंड

प्लीनीका मत है कि शयनागार व स्नानागारकी खिड़कियोंमें भी अभ्रकके आइने लगाये जाते थे। इसी प्रकार शीतकालीन केलि भवनों * और सिंहासनोंपर भी अभ्रकके शीशेका शृंगार होता था। सेनीका नामक एक योरोपियन इतिहास मर्मज्ञका मत है कि घरोंकी खिड़कियोंमें तो अभ्रकके आइने जड़े जातेही थे पर मधुमक्खीके छत्ते भी अभ्रकके बनाये जाते थे जिनमें निवास करनेवाली मक्खियोंको पालकर उनकी शिल्पक्रियाका लोग कौतुक देखा करते थे। यही क्यों उसका तो यह भी कहना है कि विशेष महोत्सवोंपर भूमिपर भी अभ्रकके टुकड़ोंका छिड़काव कर दिया जाता था।

यूनान

यूनानवाले भी अभ्रकसे प्राचीन युगमें ही परिचित हो चुके थे। वे लोग उसकी उपयोगिताभी जानते थे। अभ्रकके पत्रोंसे प्रकाश पुंज बिना प्रयास प्रवेश कर जाता है यह बात भी यूनानी जानते थे। मध्यकालीन युगके यूनानी लेखक एग्रीकोला (Agricola) का कहना है कि प्लिनेके मतानुसार उस समय भी यूनानी भाषामें अभ्रकके लिये कई एक शब्द थे जो अभ्रकके विभिन्न प्रकारोंके पारस्परिक अन्तरकी सूक्ष्म खोज तक की पहुंचके सूचक हैं। एग्रीकोला 'Cat's gold' 'Cat's silver' or, ice' नामसे भी अभ्रकका ही अनुमान करता है। प्राचीन कालमें योरोपमें कानराड गेसनर नामक एक प्रकृति शास्त्रज्ञ हो गया है उसने वनस्पतियों और पशुओंके सम्बन्धको लेकर जहां अपने ग्रन्थोंमें खोज पूर्ण वैज्ञानिक चर्चा की है वहां उसने भूगर्भ विद्या विषयक विस्तृत विवेचन भी किया है। उसके ग्रन्थोंसे-जो बहुत पुराने हैं-यह भी पता चलता है कि वह स्वर्ण पद्मकोश [illegible] के गुणोंसे पूर्णरूपेण परिचित था। वह लिखता है कि हैले (Halle) नामक स्थानमें [illegible] थीं। इतना ही नहीं उसका मत था कि अभ्रक औषधिके रूपमें सेवन करनेसे † उन्माद और कुष्ठको दूर करता है। [illegible] ([illegible]) लिखता है कि उस समय स्त्रियां अपने मुंहपर अभ्रकका चूर्ण मलती थीं जिससे उनके मुंहकी शिकन दूर हो जाती थी।

अभ्रकका औद्योगिक विकास

अभ्रकके व्यावहारिक उपयोगके बाद उसके रंगोंके अनुसार उसके अनेक प्रकारोंका विवरण १७४७ ई० में योरोपीय विद्वान ‡ वेलेरियसने किया। उसका कहना है कि अभ्रक कई प्रकारका होता है और सफेद, पीला, लाल, हरा, काला, [illegible], सुनहला, [illegible] और [illegible]

* [illegible] Page 1111-14

† इस सम्बन्धमें [illegible] का मत है कि शराबके साथ अभ्रक सेवन करनेसे [illegible] दूर होती है तथा इससे [illegible] होता है।

‡ [illegible]

§ [illegible]

अभ्रकके दो प्रकार

व्यवसायके काममें आनेवाले अभ्रककी * दो जातियाँ हैं। इनमेंसे एकको ‡ मस्कवाइट और दूसरेको फ्लोगोपोइट कहते हैं। भारतमें इन्हीं दोनों जातियोंका अभ्रक पाया जाता है।

औद्योगिक महत्वकी दृष्टिसे अभ्रकके गुणधर्म

अभ्रकसे जितने ही अधिक पतले और सुडौल पर्त निकाले जासकें उतना ही अधिक मूल्य वान वह माना जाता है। पर्त तभी तक पतलेसे पतले और सुडौल निकलते जायगे जब तक उसमें कड़ाई रहेगी अन्यथा वह चूर चूर हो जायगा। इन दो विशेषताओंके अतिरिक्त उसमें लचीलापन न हुआ तो भी औद्योगिक दृष्टिसे वह अधिक कामका नहीं है। अतः यह तीन गुण आर्थिक दृष्टिसे अभ्रककी विशेषताको बढ़ाते हैं। खानसे अभ्रक सुडौल आकृतिका नहीं निकलता खानसे निकालनेके बाद उसके बेडौल पर्त निकाल फंके जाते हैं और फिर किनारे काटकर उसके ढंगदार टुकड़े बनाये जाते हैं। इतना करनेके बाद तब कहीं अभ्रककी श्रेणी और प्रकारका पता लगता है। अभ्रकके टुकड़ोंको सुडौल करनेमें ही भारतमें ६० प्रतिशत मालकी क्षति होती है और तब जाकर वह बाजारमें बिक्रीके योग्य बनाकर लाया जाता है। अतः उपरोक्त तीन गुणोंका अभ्रकमें पाया जाना उसकी विशेषताको बढ़ानेवाला माना जाता है।

अभ्रककी श्रेणी

अभ्रक स्वच्छ और छींटेदार दो प्रकारका होता है। इन्हीं दोनोंको देखकर अभ्रककी श्रेणी निश्चित की जाती है बाजारमें दो तरहकी पद्धतिके अनुसार निश्चित की गयी श्रेणियाँ आती हैं जिनमेंसे एकको अमेरिकाकी घरेलू पद्धतिके अनुसार निश्चित किया गया कहा जाता है और दूसरी पद्धति है ब्रिटिश अधिकारियोंकी। प्रत्येक पद्धतिके अनुसार किसमें कितनी श्रेणियाँ होती हैं यह यों स्पष्ट होगा :—

अमेरिकन ढंगपर	बृटिश अधिकारियोंके ढंगपर
१ स्वच्छ	१ स्वच्छ (सरकार द्वारा निश्चित किये गये स्वच्छताके परिमाणके अनुसार)
२ कमदागी	२ कम दागी (... ....)
३ अधिक दागी	३ दूसरे दर्जेका बेदाग
	४ „ „ „ कुछ पर कुछ दागी
	५ सामान्य दागी
	६ साधारण रीतिसे पूरा दागी
	७ दागी, ८ ज्यादा दागी, ९ काले दागवाला

* इन दोनोंका वास्तविक विश्लेषण जाननेके इच्छुक रसायन शास्त्र प्रेमियोंके लिये इनकी रसायनसारिणी यों है।
Muscovite mica = $Al_3 Kh_2 Si_3 O_{12}$, *Phlogopite mica* = $Almg_3 Kh_2 Si_3 O_{12}$

‡ इसके मास्कोविया स्थानमें सबसे पहले इस प्रकारका अभ्रक निकलता है इसीसे मस्कवाइट कहते हैं।

लम्बाई ८ फीट और चौड़ाई ४ से ६ फीट तक की भी देखी गयी है। कनाडाकी खानोंसे निकाले जाने-वाले अभ्रकके तल्लेकी मोटाई ४ से ६ इंच तक हुआ करती है। जर्मन पूर्वीय अफ्रीकामें निकलने वाले अभ्रकके तल्ले भी बड़े आकारके निकलते हैं। यहांके बड़े से बड़े तल्लेकी लम्बाई ८८ सेन्टीमीटर और चौड़ाई ७८ सेन्टीमीटर तथा मोटाई १५ से २५ सेन्टीमीटर तक पायी गई है परन्तु इन सबसे अधिक लम्बा चौड़ा और मोटा तल्ला भारतमें पाया गया है जिसने संसारमें मिले हुये सभी अभ्रकके तल्लोंके आकारको नीचे गिरा दिया है।

खानसे बाहर निकाले जानेवाले अभ्रकके तल्ले खानमें सुडौल आकारमें नहीं पाये जाते हैं वे प्रायः बेडौल ही पाये जाते हैं। इन तल्लोंमें भी बहुतसा इतर पदार्थ सम्मिलित पाया जाता है जो अभ्रकके भावका मूल्य कम कर देता है। अभ्रकके तल्लोंका आकार कई कोनेवाला होता है अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि वे कितने पार्श्ववाले माने जांय। इनके तल्लोंके पर्तोंमें कभी कभी कई प्रकारके अन्य पदार्थ भी दिखाई दे जाते हैं। कभी कभी इनकी तहोंके बीचमें हिंगुलकी लड़ें भी दिखाई दे जाती हैं। इसी प्रकारके अन्य पदार्थोंकी अभ्रकके पर्तोंके बीचमें जब प्रचुरता हो जाती है तो उनकी विद्युत सम्बन्धी उपयोगिता बिलकुल शून्य हो जाती है क्योंकि हिंगुलके समान गुण धर्म वाले पदार्थ विद्युत शक्तिके शोषक माने गये हैं। कभी कभी ये पदार्थ नियारके रूपमें देखे जाते हैं जो परस्पर ६० डिग्रीका कोण बना कर एक दूसरेको काटते हुए निकल जाते हैं। अभ्रकके तल्लेके पर्त इतने पतले, नियमित एवं सुव्यवस्थित रूपसे क्रमानुसार सटे हुए देखे जाते हैं कि एक तल्लेसे सैकड़ों पर्त निकाले जा सकते हैं जो आकार प्रकारमें तल्लेके समान ही होंगे चाहे वे कितने ही अधिक पतले क्यों न हो जांय। अभ्रकके तल्लेके पर्त इतने पतले-तक निकाले गये हैं कि उनकी मोटाई एक मीलीमीटरका पट सहस्त्रांश तक मापी गयी है। कठिन (Hard) गुण धर्मवाले अभ्रकके पर्त बहुत ही पतले निकाले जा सकते हैं।

यदि अभ्रकका बेड़ौल तल्ला किसी छपे हुए कागज पर रख दिया जाय और फिर उसके बीचसे देखा जाय तो अक्षर कुछ उभड़े हुए और दोहरे दिखाई देंगे। यही अभ्रककी विशेषता कही जाती है। यों तो कई और भी पदार्थ ऐसे हैं जिनमें देखनेसे अक्षर दोहरे दिखायी देते हैं पर अभ्रकके समान इस महत्वको सुस्पष्ट दिखानेवाला और पदार्थ नहीं है। यदि ध्यान से देखा जाय तो पता चलेगा कि अभ्रकके तल्लेमें एक या दो पार्श्व ऐसे भी होते हैं कि जिनकी ओरसे देखनेपर अक्षर दोहरे न दिखाई देंगे। इन्हीं विशेष पार्श्वोंको आधार मानकर अभ्रकके तल्ले की परीक्षा की जाती है। ये पार्श्व कोणके रूपमें परस्पर मिलते हैं और अभ्रकके विभिन्न प्रकारोंमें ये कोण भिन्न भिन्न अन्तरके होते हैं। परन्तु [illegible]

दूसरेको वर्तुलाकार अभ्रक कहा जाता है। यह पंचसे बड़ा होता है अर्थात् समकोण चतुर्भुज और पंचके बीचवाले आकारका होता है।

इस प्रकार आकारके अनुसार सबसे छोटा टुकड़ा पंच, उससे बड़ा वर्तुलाकार और फिर समकोण चतुर्भुजाकारका होता है। पंच और वर्तुलाकारका माप निश्चित है परन्तु समकोणकी माप भिन्न भिन्न प्रकारकी होती है जैसे छोटा और बड़ा।

कनाडा—में अम्बर नामक अभ्रक इसी प्रकारसे छांटा जाता है पर अमेरिकाकी घरेलू पद्धतिके अनुसार मिलनेवाली साइजसे यह कुछ भिन्न होता है। इसके ये प्रकार हैं।

१×१ इंच	२×३ इंच	४×६ इंच
१×२ ”	२×४ ”	५×८ ”
१×३ ”	३×५ ”	

भारत—में आकारके अनुसार छटाईका काम उपयोगी क्षेत्रवाले टुकड़ेके आकारपर ही निर्भर रहता है। टुकड़ेकी अधिक लम्बाई बढ़ जाने और चौड़ाईके घट जानेकी आशंकासे आकार निर्धारित करनेके लिये प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। कलकत्तेके बाजारमें अभ्रकके टुकड़ेका आकार इस प्रकारसे रहता है:—

१ एक्स्ट्रा स्पेशल	६० से ७०	वर्ग इंच तक
२ स्पेशल	४८ से ५९¾	” ” ”
३ ए वन (A—I)	३६ से ४७¾	” ” ”
४ नम्बर १	२४ से ३५¾	” ” ”
५ ” २	१४ से २३¾	” ” ”
६ ” ३	१० से १३¾	” ” ”
७ ” ४	६ से ९¾	” ” ”
८ ” ५	३ से ५¾	” ” ”
९ ” ६	१ से २¾	” ” ”

व्यवसायिक दृष्टिसे अभ्रकके प्रकार।

अम्बर अभ्रक—यह प्रधानतया कनाडाका अभ्रक है। यह कठोर नहीं होता वरन इस प्रकारका अभ्रक कोमल गुणवाला ही होता है। यह बिजलीसे संचालित कम्यूटेटर नामक यंत्रमें काम आता है। इसके टुकड़े सुडौल आकृतिके नहीं आते। इसकी छटाई हाथोंसे बेडौल भागको मसल कर की जाती है। जो टुकड़े बाजारमें बिकनेके लिये आते हैं उनकी मोटाई ·००५ से ·०५० इंच तक की होती है।

भी विद्युतशक्ति उत्पन्न होती है। यदि अन्धेरे कमरेमें अभ्रकके नलीके टुकड़े २ करके रख
तो नीचे किनारों पर इलेक्ट्रीकल प्रकाश सा दिखाई देगा। यही प्रकाश उस अवस्थामें अधि
होगा जब उसे तोड़कर तेजीसे रगड़ दिया जाय। यह प्रकाश रगड़से उत्पन्न होनेवाली वि
होता है।

अभ्रक गर्मी भी बहुत अधिक सहन कर सकता है। ४०० से ६०० डिग्री तक गर्म कर
भी उसकी पारदर्शक विशेषता और विद्युतशक्तिके प्रति उदासीनताके गुणका अस्तित्व उसमें
जाता है। ६०० से १००० डिग्रीकी गर्मीसे उसकी चमक और अधिक बढ़ जाती है और वह चांद
समान मालूम होने लगता है इससे भी अधिक गर्मी पाकर वह पिघल जाता है। और फि
भी अधिक गर्मी पाकर वह उबलने लगता है तथा भूरे या पीले रंगका कांच जैसा हो जाता है।

अभ्रकका रासायनिक गुणधर्म

रसायन शास्त्रके अनुसार अभ्रक अल्यूमिना और अन्य क्षारदार पदार्थोंका सम्मिश्रण है।
इसमें मैग्नेशिया और आइरन आक्साइड नामके पदार्थ भी कभी २ सम्मिलित पाये जाते हैं। अधिकांश
में इन्ही पदार्थोंकी मात्राके अनुसार ही अभ्रकके प्रकार निश्चित किये जाते हैं। अभ्रकके एक प्रकारको
अङ्गरेजीमें बियोटाइट कहते हैं जिसमें मैग्नेशियाका अंश १० से ३० प्रतिशत तक पाया जाता है।
मिस्कोवाइटकी अपेक्षा इसमें लोहेका अंश अधिक होता है। मिस्कवाइटमें अल्यूमीना और
सीलीसिक एसिडका भाग अधिक पाया जाता है। इसमें जलका भाग १५ प्रतिशत रहता है परन्तु
बियोटाइटमें जलका भाग ७ प्रतिशत ही रहता है। इसी तरह अभ्रकके अन्य प्रकारोंमें जलका अंश कम
पाया जाता है। अभ्रकमें सोडियम और पोटेशियमका भाग भी पाया जाता है। अभ्रकके तत्वांश
विवेचनके समान गम्भीर विषयका यहां विस्तृत रूपसे लिखना आवश्यक प्रतीत नहीं होता अतः इस
विषयसे अनुराग रखनेवालेको रैमेल्सबर्ग, टस्चेरमार्क तथा क्लार्कके⊛ सिद्धान्तोंका मनन करना चाहिये।

जिस अभ्रकमें मैग्नेशियाका अंश अधिक होता है वह यदि जोरदार गंधकके तेजाबमें डाल-
कर गर्म किया जाय तो वह गलकर विलीन हो जाता है और प्यालेमें सफेद सिलिका रह जाती है।
अभ्रक और तेलका संयोग भी चमत्कारिक होता है। अभ्रकका सम्पर्क तेलसे हुआ नहीं कि तेल
उसकी तहोंमें प्रवेश करने लगा और उसके परमाणुओंकी पारस्परिक आकर्षणकारी शक्तिको नष्टकर उसे
चूर चूर कर डालता है। रसायन शालाओंमें अभ्रक कृत्रिम रीतिसे भी बनाया गया है। इसी कार्यमें

⊛ Tschermak, *Proceedings of the Academy of Vienna V I 76, July issue and Vol 78, June issue. Further Zeitschrift fur krystallographie, II, 1878, 14 and III, 1879, 122. Rammelsberg, Ann. d. Phys. U. Chemie, N. F. Vol. IX 1880. 113 and 302 Clark American Journal of Science Vol. 38, 1889. 284*

सरकारी नियन्त्रणका प्रधान कारण

अभ्रककी उपयोगिताका यहां पारावार नहीं है वहां सबसे अधिक महत्वका गुण इसमें यही है कि वह गोला बारूदके काममें आता है अतः योरोपीय समरके समय सरकारने अपने नियन्त्रणमें अभ्रकको भी ले लिया था पर गत १९१९ के अक्टूबर माससे यह नियन्त्रण उठा लिया गया है।

अभ्रककी उपयोगिता

प्राचीन कालमें अभ्रकका उपयोग खिड़कियों और लालटेनोंके कांचके स्थानमें किया जाता था और जहां अत्यन्त उष्ण द्वारा उत्पन्न होनेवाले प्रकाशपुंज मात्रका उपयोग इष्ट रहता है वहां आज भी कांचके स्थानमें अभ्रककाही उपयोग किया जाता है। इसपर क्षणिक तापमानके प्रबल, उतार चढ़ावका विस्तार भी प्रभाव नहीं पड़ता अतः अभ्रकका उपयोग कई प्रकारके (Anthracite stoves and Gas asbestos stove) विलायती चूल्होंमें काम आता है। तेल और गैसकी चिमनियां भी इसीके बनते है। जहां पानी और तूफानसे आग लग जानेका भय रहता है वहां अभ्रकके संयोगसे संयुक्त प्रकाश पुंजसे काम लिया जाता है। प्रकाश पारदर्शक तथा उष्ण प्रतिरोधक होनेके कारण अभ्रकके पतरेके पर्दे जड़ी हुई भट्ठियोंके मुंहपर रहते हैं। कारखानों और रसायनशाला तथा प्रयोगशालाओंमें उष्णताके प्रकोपसे बचकर प्रेक्षणीय प्रतिक्रियायें देखनेके लिये भी अभ्रकसे काम लिया जाता है। फोटोफोन तथा टेलीफोनके प्लेटोंपर प्रतिध्वनि अंकित करनेका काम भी अभ्रक देता है। इसके १ इंच चौड़े तथा ४ से ८ इंच लम्बे तख्ते डायनामों तथा मोटरोंके विद्युत् [illegible] संबन्धी कंडक्टरोंका काम देते हैं। अभ्रकमें जलके संचय करनेकी सामर्थ्य रहती है अतः यह [illegible] का काम भी देता है। इसे ग्रेफाइट या ग्रीसके साथ मिलाकर गाड़ियोंमें तेल देनेका काम भी लिया जाता है। काला अभ्रक औषधिके काम भी आता है।

भारतकी "दूनीकुनी"* नामक खानमें पाया गया टुकड़ा सबसे बड़ा था। मतलब यह कि उद्योग
काममें आनेवाला अभ्रक ही भारतमें अधिक मिलता है। औद्योगिक दृष्टिसे यह सर्वोच्च श्रेणीका
जाता है और परिमाणमें भी संसार भरकी खानोंसे निकलनेवाले कुल अभ्रकके परिमाणसे कहीं अ
केवल भारतमें ही निकाला जाता है।

खानोंसे अभ्रक निकालनेका काम भारतमें अत्यन्त प्राचीन समयसे अखण्डित रूपसे च
आ रहा है। सन् १८२६ ई० में डा० बेलोब्रेटनने पटना और दिल्लीके पास अभ्रककी खानें का
करती हुई देखी थी। डाक्टर साहब (Dr. Belo Bretn) का कहना है कि इन खानों पर ५ हजा
श्रमजीवी काम करते थे। डा० मैक्लेलैण्ड (Dr Mo clelland) ने लिखा है कि सन् १८४९ ई०
में इन खानोंसे ८ लाख पौण्ड वजनका अभ्रक निकाला गया था। भारतमें सबसे प्रथम अभ्रकका
निर्यात् बंगालसे आरम्भ हुआ और उसी वर्ष कलकत्तेसे ६५०७ रतल अभ्रक विदेश गया। तबसे
आज तक बराबर भेजा जा रहा है।

संसार भरकी खानोंसे निकलनेवाले अभ्रकका ६० प्रतिशत भाग भारतकी खानोंसे निकाला
जाता है। भारतमें अभ्रकके दो कटिबंध माने जाते हैं और इन्हीं में भारतकी अभ्रककी मुख्य २
खानें भी हैं। उत्तर पूर्वकी ओर वाला अभ्रक कटिबन्ध १२ मील चौड़ा और ७० मील लम्बा है। इस
कटिबन्धका फैलाव मुंगेर, हजारीबाग, तथा गयाके जिलोंमें है और मग तथा चम्पारन तक फैला
हुआ है। यहां वाली अभ्रककी खानोंमें गत ५० वर्षोंसे बराबर काम होता चला आ रहा है। गत
योरोपीय महासमरने अभ्रकके उद्योगको बहुत बड़ा प्रोत्साहन दिया फिर भी भारतमें कुछ ही ऐसी खानें
हैं जिन पर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार काम होता है। नहीं तो यहांकी अधिकांश खानों पर
पुराने ही ढंगसे काम होता है। इस अभ्रक कटिबन्धके अतिरिक्त भारतमें एक और अभ्रक कटिबन्ध
है जो मद्रास प्रदेशान्तर्गत नेलोर जिलेमें फैला हुआ है। इसके पूर्वीय पार्श्व पर हलके दर्जेका अभ्रक
निकलता है। इसके प्रधान खण्ड चार हैं जो गूडूर, रापुर, आत्माकुर और कवालीके नामसे विख्यात हैं।
इस कटिबन्धकी प्रधान खानें रापुरमें हैं। ये खाने प्रायः चौड़े मुंह वाली हैं। भारतके इन दो
प्रधान अभ्रक कटिबन्धोंके अतिरिक्त मद्रासके सालेम और मलाबार जिलोंमें तथा भारतके मध्यभाग
अजमेर, किशनगढ़, सिरोही, टोंकमें भी अभ्रक निकलता है। सन् १९१७ ई० में उदयपुरके पास
खोज की गयी थी और गंगातुर्के उत्तर नानतामें अभ्रककी खानका पता चला था। ट्रावनकोरमें भी
[illegible]यम जातिका अभ्रक मिलता है।

* [illegible] earlier records were broken by finding of a crystal in the [illegible] which measured 10 ft. over the [illegible] surface and 15 ft. over the [illegible] ... [illegible] by [illegible]

करते थे यह भी इसी शब्दसे स्पष्ट हो जाता है। भारतकी प्रायः * सभी भाषाओंके प्राचीन साहित्यमें पलासको लाक्षतरुके नामसे ही सम्बोधित किया गया है पर संसारकी अन्य † भाषाओंके प्राचीन साहित्यमें लाखका कहीं भी पता नहीं चलता।

हम ऊपर लिख आये हैं कि लाखके दो गुण हैं और दोनों ही से लाभ उठाया जाता है। प्राचीन भारतमें लाखके रंगवाले गुणकी अपेक्षा यदि इसके अन्य किसी गुणको अधिक महत्व था तो वह राल था। इसी गुणको यहांवाले प्रधानता देते थे और यह अवस्था मध्यकालीन युगतक बराबर रही जैसा कि सन् १५९० ई० की आइने अकबरीसे स्पष्ट हो जाता है। परन्तु आश्चर्य है कि योरोपमें लाखका प्रवेश रंगके रूपमें हुआ। रंगवाला गुण उतने महत्वका न उस समय माना जाता था और न आज ही। ऐसी दशामें लाखके हीन गुणको ही योरोपवालोंने क्यों अपनाया यह भी एक पहेली ही है। लाखका निर्यात सन् १८१४ ई० से आरम्भ हुआ और वह भी कोचीनियल नामक रंगदार पदार्थके प्रतियोगीके रूपमें।

योरोपमें लाल रंगके प्रसारकी चर्चा करना प्रसंगवश आवश्यक प्रतीत होता है। पुराने समयमें यूनान और रोमनिवासी लाल रंगकी वस्तुएं एक दूसरे प्रकारके कीड़ेसे उत्पन्न होनेवाले पदार्थसे तैयार करते थे कुछ लोगोंका यह भ्रम था कि ये रंग लाखसे ही तैयार किये जाते थे। टामलिन्सन्स साइक्लोपीडिया (Tomlinsons Cyclopædia) के आधारपर डा० बालफरका मत था कि कोचीनियल नामक लाल रंगके पूर्व यूनान और रोमवाले लाखसे ही लाल रंग तैयार करते थे और मूसल तथा फ्लीमसका पक्का लाल रंग भी लाखसे ही तैयार किया जाता था। परन्तु डा० वर्डउडने इस भ्रमको दूर करते हुए लिखा है कि ये लोग जो लाल रंग तैयार करते थे वह एक दूसरे प्रकारके (Kirmij) कीड़ोंसे पैदा होनेवाले पदार्थसे तैयार करते थे। जो दक्षिण फ्रांस, स्पेन, इटली तथा कैनाडा द्वीपमें ओक जातिके वृक्षोंपर उत्पन्न होता था और उसे निकालकर अलग कर लिया जाता था। इस अलग निकाले गये पदार्थको दाने या फल कहते थे (Grains or Berries) और इसीसे रंगका काम लिया जाता था। सम्भव है कि रंगीन मालके व्यवसायमें पक्के रंगसे रंगे गये मालको दानों (Grains) के आधारपर ही Engrained कहा जाने लगा हो। रंग उत्पन्न करनेवाले कीड़ोंके सम्बन्धमें चर्चा करते हुए यूनान और रोमन भाषाके पुराने साहित्यमें काकस Coccus

* *But as far as I have been able to discover lac finds no place in the literature of ancient Greece, Rome, Egypt, Persia or Arabia Sir George Watt*

† *Sir William Jones* के आधारपर *Dr. Birdwood* ने लिखा है कि हिन्दुओंके प्राचीन साहित्यमें लाखके लिये ६ शब्द हैं पर वे लोग साधारणतया इसके लिये लाक्ष शब्दका ही व्यवहार करते हैं जो बहुसंख्यक कीड़ा, मनुष्यके कराणकी ओर संकेत करता है।

अभ्रककी कटाई छंटाई

बिक्रीके लिये तैयार किये जानेवाला अभ्रकका टुकड़ा खानसे निकाले जानेके बा[…]
छांटा जाता है। टुकड़ेपरके पर्त एक एक कर निकाले जाते हैं ताकि वह सुडौल और च[…]
हो। इस प्रकार जब ठीक ढंगका टुकड़ा हो जाता है तब उसके पर्त निकालना बंद करदिया जात[…]
उसके किनारोंको हाथसे ही तोड़कर सम कर दिया जाता है तथा टूटे टुकड़े तोड़कर फेंक दिये […]
इस प्रकार सुधारे गये टुकड़ोंका ढेर लगा दिया जाता है। फिर चाकूसे उन टुकड़ोंके किनारे काट[…]
किये जाते हैं। भारतकी पूर्ववाली खानोंमें कटाईका काम हंसियेसे लेते हैं हंसियेसे काटनेमें किनारे प[…]
या फटते नहीं हैं और कटे हुए टुकड़ोंसे पर्त भी सरलतासे निकाले जा सकते हैं। इस प्रकार […]
गये अभ्रकको अमेरिकावाले 'कच्चा अभ्रक' मानते हैं, जिससे कर लगाने की सुविधा हो जाती है। […]

अभ्रकके टुकड़ोंका आकार

अभ्रक खानसे निकाले जानेके बाद काटा और फिर छांटा जाता है तब कहीं उसकी
श्रेणीका अनुमान होता है। इतना हो जानेपर भी व्यवसायकी सुविधाके लिये उसका आकार बनाकर
निश्चित किया जाता है और फिर श्रेणीके अनुसार भिन्न २ आकारका अभ्रक अलग २ छांटा
जाता है।

अमेरिकावाले अभ्रकके आकारका निर्णय समकोण चतुर्भुजके रूपमें करते हैं। एक टुकड़ेमें
जितना बड़ा समकोण चतुर्भुजाकार उपयोगी टुकड़ा सुडौल और चौरस निकाला जा सके उतना ही
बड़ा अभ्रकके उस टुकड़ेका आकार मानते हैं। सबसे छोटे आकारवाला अभ्रकका टुकड़ा जो बाजारमें
बिकता है वह समकोण चतुर्भुजाकार १½×२ इंचका होता है। इससे बड़ा दूसरा आकार २×२ इंचका
होता है और फिर क्रमशः २×३ इंच; ३×३ इंच; ३×४ इंच; ४×६ इंच; ६×६ इंच; ६×८ इंच;
८×१० इंच और इससे बड़े ठीक ढंगसे काटे गये टुकड़ेमें भी समकोण चतुर्भुजाकार टुकड़ा निकालनेके
लिये इच्छित आकारसे कुछ बड़ा टुकड़ा लेना पड़ता है। जैसे २×३ इंचकी आकृतिवाले समकोण चतु-
र्भुजके लिये २×३ इंचसे बड़ा टुकड़ा लेना पड़ता है। जिस आकारका चतुर्भुज चाहिये उससे १½ गुना
बड़ा टुकड़ा लिया जाता है। अतः २×३ इंचके लिये ३×४½ इंचका टुकड़ा होना चाहिये। इस प्रकार
३×४½ इंचके बड़े टुकड़ेमें केवल २×३ इंचका ही अच्छा टुकड़ा माना जाता है। [illegible] इसमें दो
उन टुकड़ोंकी वास्तविक नाप है कि जिसका मूल्य दिया जाता है।

उपरोक्त सबसे छोटे से आकारोंमें [illegible]
१½×२ का समकोण चतुर्भुज नहीं निकलकर परन्तु इससे [illegible] पैनल(Panel) कहते हैं। इसमें
[illegible] १½ इंच और [illegible] टुकड़ा निकलते
[illegible] ½ इंचका [illegible] है।

बाद शताब्दियों तक इतिहासमें लाखकी कहीं चर्चा तक नहीं मिलती। हां आइने अकबरीमें लाख और लाखके संयोगसे तैयार की जानेवाली वार्निशकी धानका सम्बन्ध आया है। सन् १५९० ई०में अकबरने दर्वाजों और राजप्रासादोंके फाटकोंपर पोती जानेवाली लाखकी वार्निशके सम्बन्धमें नियम बनाये थे। इसके कुछ ही समय बाद पुर्तगालके सम्राटने जान ह्यूग्लेन वानलिनचोटन(John Huyglen Von Linschoten) नामक एक डच जानकारको लाखकी वैज्ञानिक खोज करनेके लिये भारत भेजा था। इस डच जानकारने अपना अनुभव सन् १५९६ ई०में प्रकाशित कराया और वही सन् १५९८ ई०में पुस्तकाकार प्रकट हुआ। आबूहनीफा नामक जानकारने लाखको औषधिके काममें व्यवहार करनेकी सलाह दी है। डा० केयरने* सन् १७८१ ई० में लाखके कीड़ोंका विस्तृत विवरण प्रकाशित कराया था। सन् १७९० ई० में डा० राक्सबर्गने † इन कीड़ोंका जीवन वृत्तान्त लिखा था। इसके बाद सन् १८०० ई० में डा० बुचानन हैमिल्टनने भारतकी लाखकी खेती की विस्तृत चर्चा प्रथम बारकी थी। सन् १८६१ ई० में डा० कार्टनने कीड़ोंकी शरीर रचना पर प्रकाश डाला था।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचनसे प्रकट होता है कि भारतकी लाखके गुण, उसकी विशेषता, और उसकी उपयोगिताका पूर्ण अनुभव विदेशी लोग शताब्दियोंमें कर पाये थे।

लाखकी उपजके प्रधान केन्द्र

संसारमें सबसे अधिक लाख भारतमें उत्पन्न होती है। भारत ही वह देश है कि जिसने संसारमें सबसे प्रथम लाखकी खेती आरम्भ की थी। यही कारण है कि लाखपर भारतका अटल एकाधिपत्य अविच्छिन्न रूपसे बराबर चला आ रहा है। भारतके अतिरिक्त इण्डो-चाइना, अनाम और कम्बोडियामें भी लाखकी खेती होती है पर निश्चित सीमाके अन्दर। लाखकी उपयोगिताका अनुभव कर जापानने फर्मोसा द्वीपमें और जर्मनीने दक्षिण पूर्व अफ्रीकाके अमानी नामक स्थानमें लाखकी खेती करानेका शिरतोड़ प्रयत्न किया पर सफलता न मिली। इसी प्रकार मिस्रवाले भी अपने प्रयत्नमें विफल मनोरथ हो गये। लाखका प्रति उपयोगी पदार्थ मैडगास्कर द्वीपमें पाया जाता है पर बहुत कम परिमाणमें। फलतः यह भारतकी प्रतियोगितामें कभी भी नहीं टिक सकता है।

लाखकी वैज्ञानिक परीक्षा

आधुनिक जगतकी व्यापक वैज्ञानिक खोजका ही प्रतिफल है कि लाखकी उपयोगिताका वर्तमान चमत्कार संसारपर प्रकाश हो सका है। अतः लाखकी चलनू वैज्ञानिक परीक्षाकी चर्चाकर देना ही उचित है।

लाख

—:o:—

बीसवीं शताब्दीके विज्ञान प्रधान समुन्नत युगमें लाखकी व्यापक उपयोगिताका प्रत्यक्ष अनुभव सहजमें ही आया करता है। बिजलीके सामानमें, वार्निशके कामनें, बोलते हुए ग्रामोफोनके रेकार्डमें, बीमा पार्सलकी मोहरमें, छीपोंकी स्याहीमें, नकली रबड़की ढुलाईमें, बटन और जूतेके साजमें लाखका प्रकट दर्शन होता है। इतना होते हुए भी जिस भारत देशमें यह उत्पन्न होती है उसमें इसकी उपयोगितासे लाभ नहीं उठाया जाता। यों तो लाखपर भारतका एकाधिपत्य है पर इस पदार्थको वह किस प्रकार उपयोगमें लाता है यह प्रश्न उठते ही मूक रह जाना पड़ता है। जिस प्रकार रुई, जूट, आदि का उपयोग स्वयं भारत व्यापक रूपसे करता है उसी प्रकार वह लाखसे लाभ नहीं उठाता। अन्य कच्चे पदार्थोंके समान ही लाख और चपड़ा भी कौड़ी मोलपर निर्यातके रूपमें विदेश भेज दिया जाता है और योरोप और अमेरिकावाले इसकी उपयोगितासे लाभ उठाते हैं।

भारतके सभी प्रान्तों किसी न किसी प्रमाणमें लाख उत्पन्न ही होती है अतः इसकी चर्चा भी यहां कर देना आवश्यक है।

लाख नामका उपयोगी पदार्थ कई प्रकारके वृक्षोंपर पाया जाता है। चिपकनेवाले लसदार पदार्थ गोंदके रूपमें यह वृक्षोंकी पतली टहनियोंपर देखा जाता है। यह एक छोटेसे कीड़ेके कार्य कौशलके प्रतिफल स्वरूप उत्पन्न होता है। लाखमें गोंदके समान गोंदका गुण और रंगके समान विशेष प्रकारके रंगका गुण समानरूपसे होता है। इसके चिपकानेवाले गुणका प्रत्यक्ष अनुभव गोंदमें मिलता है और रंगरूप पदार्थका चमत्कार इससे तैयार किये जानेवाले महावरमें दिखलायी देता है।

इतिहास

भारतमें जितने भी छोटे छोटे उद्योग धन्धे शताब्दियों पहलेसे चले आ रहे हैं उन सबमें लाख के समान पुराने बहुत कम हैं। लाख यों तो सभी प्रकारके वृक्षोंपर उत्पन्न होती है पर कुसुमके वृक्षपर यह अधिक परिमाणमें पायी जाती है। भारतके प्राचीन साहित्यमें [illegible] का प्रचुर उल्लेख है। अतः [illegible] शब्दसे ही लाखके औद्योगिक स्वरूपकी प्राचीनताका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। [illegible] ही सभी [illegible] संस्थाने छोटे छोटे [illegible] लाख उत्पन्न

चपड़ेके प्रकार

चपड़ेमें हरताल मिलानेसे उसका रंग सोनेकासा चमकीला हो जाता है और [राल (Resin) मिलानेसे चपड़ा जल्दी पिघलने वाला हो जाता है। चपड़ेके प्रायः तीन भेद प्रधान हैं (१) चपड़ा (२) बटन लैक, (३) गार्नेट लैक।

१ चपड़ा—लाख पिघला कर तैयार किया जाता है इसमें राल और हरताल मिला रहता है।

२ बटन लैक—लाख पिघलाकर जब तख्ते बनाये जाते हैं तो उसे चपड़ा कहते हैं पर जब उस पिघली हुई लाखको चिकनी जगह पर बूंद बूंद कर टपका देते हैं तो वह बटन लाख कहलाती है।

३ गार्नेट लैक आसाम और बर्माको 'स्टिक लैक' से स्पिरिट द्वारा यह चपड़ा तैयार किया जाता है इसका रंग स्याही मायल लाल होता है। इसमें प्रायः १० प्रतिशत राल रहती है।

चपड़ाकी श्रेणी और व्यवसायिक मार्क

व्यवसायकी दृष्टिसे बाजारमें आनेवाले चपड़ेमें टी० एन० (T, N.) क्वलिटीका चपड़ा अच्छा माना जाता है। यही कारण है कि यह माल बाजारमें सबसे अधिक आता है। यह चपड़ा प्रायः पलासकी लाखसे बनता है और देखनेमें चमकदार नारंगी रंगका होता है।

(१) T. N. (टी० न)	इनमें से नं० २ और नं० ३ का माल प्रायः T. N. से ऊंची श्रेणीका होता है।
(२) स्टैण्डर्ड	
(३) सुपर फाइन	

इनके अतिरिक्त कितनी ही कम्पनियोंका माल उनके विशेष मार्कोंके अनुसार भी बाजारमें विशेष श्रेणीका माना जा कर चालू है।

लाख और चपड़ेकी उपयोगिता

लाखपर भारतका एकाधिपत्य है। पर वह इसका उपयोग किस प्रकार करता है यह जानकर सभी विवेकशील व्यक्तियोंको महान खेद होगा। भारतमें उत्पन्न होनेवाली रुई, जूट, अभ्रक, चाय, खाल आदिका जैसा उपयोग भारत करता है वह तो सभी जानते हैं पर लाख और चपड़ेके सम्बन्धको जान कर अवश्य ही उसकी कारुणिक अवस्थापर तरस आती है। ये दोनों ही पदार्थ भारतसे कच्चे मालकी भांति विदेश भेजे जाते हैं और योरोप तथा अमेरिका वाले उसकी उपयोगितासे बहुत बड़ा लाभ उठाते हैं।

बिजलीके सामानमें, सभी प्रकारकी वार्निश तैयार करनेमें, ग्रामोफोनके रेकार्ड बनानेमें, जहां लाखका उपयोग होता है वहां हैट बनाने, मोहर लगाने, बटन बनाने, अभ्रकके पर्त आदि जड़ने,

शब्दका प्रयोग पाया जाता है। इसी प्रकार करमेस Kermes (Karmij) के अरबी भाषामें पाये जानेवाले पर्य्यायवाची शब्दके अर्थ छोटे कीड़ोंके होते हैं। इस करमेस शब्दसे इटैलियन और फ्रान्सीसी लोगों द्वारा लाल रंगके बोधक क्रिमसन Crimson शब्दकी उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार देखा जाय तो 'काकस' शब्दसे करमेस और करमेससे क्रिमसन शब्दकी उत्पत्ति हुई प्रतीत होती है (Coccus, Kermes, Crimson) आजकल अंग्रेजीमें लाल रंगके लिये जिस क्रिमसन Crimson शब्दका प्रयोग किया जाता है उसकी उत्पत्तिके आधारको देखते हुए यही स्थिर करना पड़ता है कि लाल रंगकी उत्पत्तिमें कीटाणुके कार्यकौशलका रहस्य भी छिपा हुआ है लैटिन भाषामें इसी रंगको Vermiculus कहते हैं जिसके तात्विक अर्थ कीटाणु समूहके होते हैं। इसी लैटिन शब्दसे फ्रेंच लोगों द्वारा अंग्रेजीके Vermillian शब्दकी रचना हुई है। इसी प्रकार लाख Lac शब्दसे अंग्रेजी भाषामें Lake शब्द की रचना हुई है। जिस प्रकार यूनानी साहित्यका काकस Coccus अरबीका करमेस Kermes और लैटिनका Vermiculus शब्द सब एक ही प्रकारसे कीटाणु समूहकी ओर संकेत करते हैं उसी प्रकार संस्कृत शब्द 'लाक्ष' भी कीटाणु समूहके कौतुकमय कौशलका ही सूचक है।

उपरोक्त विवेचनसे यही स्पष्ट होता है कि पाश्चात्य भाषाओंमें लाखके लिये व्यवहार होनेवाले शब्दोंका सम्बन्ध लाखके हीन गुण अर्थात् उसके रंगसे ही है। परन्तु भारतमें लाखके दूसरे गुणकी उपयोगितासे भी लाभ उठाया जाता था। इसका प्रमाण आइने अकबरी है जिसमें राजमहलोंमें की जानेवाली लाखकी वार्निशकी चर्चा पायी जाती है।

भारतमें लाखका उद्योग अत्यन्त प्राचीन समयसे श्रृङ्खलाबद्ध चला आरहा है। भारतका यह घरेलू उद्योग धन्धा संसारके प्राचीन उद्योग धन्धोंमें माना जाता है। लाख प्रायः पलास वृक्ष पर ही अधिक उत्पन्न होती है। इसका पूर्ण अनुभव भारतको बहुत प्राचीन समयसे था अतः संस्कृत साहित्यमें पलास वृक्षका पर्य्यायवाची शब्द लाक्षतरु है लाक्षतरुसे लाखके सम्बन्धमें दोनों प्रधान बातोंका संकेत हो जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि लाखों कीटाणु समूह पलास वृक्षपर आश्रय ले एक प्रकारका लाल रंग वाला लसलसा गलके समान गोंद तैयार करते हैं। यही कारण है कि भारतके कर्मकाण्डियोंने पलासकी उन डालियोंका छूना निषेध कर रक्खा है कि जिनपर रक्तवर्णका आवरण आजाता है। महाभारतके समान प्राचीन ग्रन्थमें भी लाक्षभवनकी चर्चा आयी है। भारतके इस प्राचीन उद्योग धन्धेकी ख्याति अन्य विदेशोंमें कब और कैसे पहुंची, इसका कोई विश्वासोत्पादक प्रमाण तीसरी शताब्दीके मध्यकालीन युगके प्रथमका नहीं मिलता है पर सन् २५० ई० में एलियन (Æline) नामक पाश्चात्य विद्वानने सबसे प्रथम इसकी चर्चा की है इसका ऐतिहासिक प्रमाण अवश्य ही मिलता है। इसने लिखा है कि भारतमें एक ऐसा भी कीड़ा होता है जो रंगके काममें आनेवाले पदार्थको उत्पन्न करता है। इसके

निश्चित ऐतिहासिक प्रमाण सबसे प्रथम सन् १७८१ ई० का मिलता है। उस समय डा० केयरने लिखा * था कि बंगालमें गंगाके दोनों किनारों परके जंगलोंमें लाख होती है। जो ढाकाके बाजारमें बिकती है उस समय १२ शि० में १ हण्डरवेट लाख बिकती थी। ढाकाके बाजारमें आसामकी लाख भी आती थी। सन १८७६ ई० में रांचीके पास दोरन्दा छावनीमें रांची लेक कम्पनी † नामक एक कारखाना था जहां चपड़ा और लाखका रंग बनाया जाता था। इस कारखानेमें लोहारडांगा रामपुर तथा मानभूम जिलोंसे लाख आती थी। इस कारखानेमें कुसुमकी लाखका चपड़ा और पलासकी लाखका रंग तैयार होता था। इसी प्रकार ‡ बीरभूमि जिलेके इलमबाजारमें, दुमका तहसीलके बेलगी तालुकेमें, नदिया तालुकेके कैनगोर गांवमें, और बाजी तालुकेके आरामहानो स्थानमें भी लाखका अच्छा व्यवसाय होता था।

भारतके लाखका निर्यात

यों तो भारतसे विदेशमें लाख अत्यन्त पुराने समयसे जाती रही है पर आधुनिक ऐतिहासिक प्रमाण पद्धतिके अनुसार पुराने समयके निर्यात् अंक उपलब्ध नहीं है अतः जबसे ऐसे प्रमाण मिलना सुलभ होता है तभीसे हम इसके निर्यातकी चर्चा करते हैं।

लाखकी उपयोगिताका रहस्य ज्यों ज्यों योरोपवालों पर प्रकट हुआ त्यों त्यों उन लोगोंने इस ओर ध्यान देना आरम्भ किया। यही कारण है कि बंगालके कासिमबाजार नामक स्थानमें रहनेवाले मि० जान जानसन एक ¶ योरोपियनने सन १७९२ ई० में लाखके निर्यातके सम्बन्धमें लिखा था कि यदि योरोपकी इच्छा हो तो कुछ लाख योरोप भेजी जाय। लाख कलकत्तेमें मिल सकती है। इसके बाद योरोपमें कोचीनियलका भाव बढ़ जानेके कारण सन् १८१३ ई० से भारतसे योरोप लाख जाना आरम्भ हुई। सन १८३० ई० में २ लाख रुपयेकी लाख योरोपमें गयी थी और सन् १८२४-२१ के बाद लगभग • लाखकी हो गयी। पर कोलतारके रंगका प्रचार होते ही भारतकी लाखकी मांग योरोपमें कम हो गयी। फिर भी इसके लाभदायक गुणोंके कारण चपड़ेका निर्यात बहुत शीघ्रतासे बढ़ने लगा और आज कल बहुत अधिक परिमाणमें भारतसे विदेश जाता है।

पहिले भारतसे लाख लंदन जाती थी और वहांसे योरोपके अन्य स्थानोंको भेजी जाती थी पर स्वेज नहरके खुल जानेसे भी भारतसे ही सीधी अन्य देशोंको अब जानेलगी।

* देखिये The Agricultural Ledger, 1901—no. 9 Page 211
† देखिये The Statistical Reporter Vol. II, no. 1878 Page 404—1
‡ The Indian Forester Vol. VIII 1882 Page 274-79
¶ देखिये Consultation register, Vol II Page 519
• देखिये Review of the external commerce of Bengal, H H H Wilson

टेनाडिक्, मस्लर, टसचिर्च, फार्नर आदि विज्ञान विशेषज्ञोंका मत है कि लाखमें कित
ही अन्य प्रकारके तत्त्व सम्मिलित हैं। इन वैज्ञानिकोंके मतानुसार लाखका वैज्ञानिक विश्लेषण यों है।

लाख {
- ६५ से ८० प्रतिशत राल (Rasin)
- ६ से १० प्रतिशत लालरंगके तत्त्व (Red colouring matter)
- ४ से ६ प्रतिशत लाखका मोमी पदार्थ (Lac wax)
- २ से ५ प्रतिशत तक काष्टांश, जलांश, तथा धूल मिट्टी।

उपरोक्त वैज्ञानिक विश्लेषणके सम्बन्धमें डा० ई० सचमिड्ट (Dr. E. Schmidt) का * मत है कि लाखमें सारकोसइन (Sarcosine) नामक पदार्थ भी रहता है।

चपड़ा सभी प्रकारकी ऐलकोहलमें तथा कास्टिक पोटास, सोडा और अमोनियामें घुल जाता है।

कच्ची लाख धोकर तैयार किये गये लाखके बड़े दानोंमें रालका अंश प्रायः ७५ से ९० प्रति शत रहता है। इन्हीं बड़े दानोंसे तैयार किये गये चपड़ेमें ८० से ९० प्रतिशत तक राल रहती है। कारण जहां चपड़े में लाल रंगकी रंगीन वस्तु और न घुलनेवाला पदार्थ (Alluminous) घटता है वहां राल (Resinous Matter) की वृद्धि होती है। गर्म ऐकुअस, बोरैक्स, सोल्यूशन—ऐलकलाइन—कार्बोनेट और अमोनियामें घोलकर इसकी वार्निश बनती है।

लाखकी औद्योगिक परीक्षा

जो लाख देखनेमें खूब चमकीली और आकारमें बड़ी मोटी और दानेदार होती है वही उत्तम
त मानी जाती है। उत्तम लाख प्रायः वह होती है जो अण्डे देनेके बाद ही रंगीन कीटाणुके
ही काट ली जाती है। कीटाणुओंके अण्डे खाकर साफ कर देनेके बाद काटी गयी लाख
श्रेणीकी लाख मानी जाती है।

से चपड़ा तैयार करनेकी विधि

टहनियोंपरकी लाखको साफ कर स्वच्छ लाख तैयार की जाती है। इसकी विधि हम लिख
इस स्वच्छ लाखसे चपड़ा तैयार होता है जिसकी विधि हम नीचे दे रहे हैं।
उत्तम स्वच्छ लाख देखनेमें मसूरकी दालके समान चमकदार होती है। इस लाखको
त करते हैं। यह लाख धूपमें सुखाकर साफकी जाती है। इसके बाद हमनाल पीसकर

देखिये जर्मन भाषाकी P[illegible] Chemie II Page 2
लिये Lac & Lac Industries नामक Mr. G. [illegible] का ग्रन्थ जिसमें Dr. H. [illegible] के
[illegible] Chemistry of lac नामक शीर्षकमें लाख और चपड़ा।

(२) चपड़ी लाख ३ औंस (७½ तो०), मैथीलेटेड स्पिरिट—२० औं० (५० तो०) और थोड़ा पकाया हुआ अलसीका तेल।

लाखका आयात

भारतमें विदेशसे भी लाख आती है। यह प्रायः स्याम और इण्डोचाइनासे स्टिकलैकके रूपमें आती है जो चपड़ा तैयार करनेके लिये होती है।

व्यापारका ढंग

भारतसे प्रायः T. N. मार्केका ही चपड़ा विदेश जाता है। लन्दनमें भारतके चपड़ेके नमूनेको स्टैण्डर्डका रूप दिया जाता है और T. N. के आधारपर मालकी सूचना दी जाती है। न्यूयार्कमें लन्दनके आधारपर N. Y. T. N. का मार्का बनता है जिसमें T. N. का ३ प्रतिशत [illegible] N. Y. जोड़ा जाता है। लाखमें मिलावटकी रोक जोरोंसे हो रही है। यूरोपका कारबार C. I. F. पर और अमेरिकाका C. F. पर होता है। चपड़ा संदूक या दोहरे बोरोंमें भरकर २ मन या १½ हंडरवेट वजनमें भरा जाता है। बाजारमें मनका वजन चलता है। यूरोपको हण्डरवेटके हिसाबसे और अमेरिकाको रतलसे चपड़ा भेजा जाता है।

---

(४) लाखमें कभी २ लोग काले नमकके कंकड़ भी मिला देते हैं।

यही कारण है कि बाजारमें साधारणतया मिलनेवाली लाखमें उपरोक्त प्रकारके पदार्थ मिले हुए पाये जाते हैं। इसके सिवा (५) महुएकी मींगी (६) कलीका चूना, और (७) धानकी भूसी भी किसी अंशमें कभी कभी मिला दी जाती है।

चपड़ा बनाते समय राल और हरताल तो मिलाया ही जाता है पर वजन बढ़ानेके लालचसे लोग लाखकी थैली ही में गुड़, या शक्कर मिला देते हैं कभी कभी लाखका चूरा भी मिला दिया जाता है पर भट्टीके सामने चपड़ेका नल्ला बनाते समय।

लाखके प्रकार

व्यवसायकी दृष्टिसे लाखकी कई किस्में होती हैं जो बाजारमें मिलती हैं इनमेंसे लाख छड़ी जिसे व्यापारी स्टिक लैक (Stick-lac) कहते हैं इसमें तीन प्रकारकी लाख सम्मिलित रहती है। इसका ऊपरी भाग लाखकी राल का होता है। लाखके दानोंके अंदरके भागमें जहां कीड़े केलि करते हैं लाखका मोम (Lac Wax) रहता है। कीड़ोंके शरीर मिश्रित लाखमें लाखका रंग होता है। इस प्रकार स्टिक लाखके अन्दर तीन प्रकारसे लाख पाई जाती है। लाखके कुल प्रकार यों हैं।

१ स्टिक लाख	५ मुलम्मा	लाखके व्यवसायिक भेद।
२ बिडली	६ कीरी	
३ कच्ची चौवरी	७ परेवा	
४ पक्की चौवरी		

इनके अतिरिक्त फाइन आरेञ्ज, लिवरी, गार्नेट-देशी लीफ, और बटन लाख भी होती है।

१ स्टिक लाख—लाखकी छोटी २ टहनियाँ

२ बिडली—लाखका चूरा जिसमें मिट्टी, और लकड़ियाँ भी होती हैं।

३ कच्ची चौंवरी—बिना धोई दानेदार लाख

४ पक्की चौंवरी—धोई दानेदार लाख

५ मुलम्मा—एक बारकी धोई बारीक लाख जिसमें कचड़ा और बालू भी रहती है।

६ कीरी—चपड़ा बनाते समय थैलेमें जो लाख बच रहती है और मैलकाट कर निकाली जाती है। इसकी टिकियाँ बनाई जाती हैं।

७ परेवा—चपड़ा बनानेके बाद जो लाख थैलेमें लगी ही रह जाती है। यह लाख रिपटा कर लकड़ीके समान लम्बी कर ली जाती है और गर्म पानीमें उबाल कर मोटेके सहायताके अलग कर ली जाती है।

बैठ गये। फिर भी कलकत्तेके व्यापारी पूर्ववत् अपने कार्यमें बराबर डटे रहे। उसी वर्ष उन्होंने कोयला निकालनेके व्यावहारिक क्षेत्रमें साहसके साथ प्रवेश किया और फलतः रानीगंजके कोयला क्षेत्रमें कार्यारम्भ किया गया। सन १८३६ ई० इसी खानसे ३६ हजार टन कोयला निकाला गया, सन् १८५४ ई० में ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनीने अपनी रेलवे लाइन भी इसी कोयला क्षेत्रसे निकाल कर इस खानके समीप ही रेलवे स्टेशन भी बना दिया। इससे खान खोद कर कोयला निकालनेके कामको बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। इसके बाद ही कलकत्तेमें जूट मिलोंकी स्थापना होने लगी अतः बंगालके कोयलेकी खानोंका भाग्य ही पलट गया और सन १८५७-५८ ई० के बादसे इस धन्धेने जोरोंसे उन्नति करना आरम्भ कर दी जो नीचे के * अंकोंसे स्पष्ट है।

सन् १८५८ ई० में २,९३,५५३ टन
„ १८६८ „ ४,२६,४०१ टन
„ १८७८ „ ९,२५,५६४ टन
सन् १८९८ ई० में ४६,०८,१९६ टन
„ १९०८ ई० में ९७,८३,२५० टन
इसमें ८८ प्रतिशत कोयला बंगालकी खानोंका है

इसी प्रकार खानोंकी संख्यामें भी वृद्धि हुई है जो नीचेके अंकोंसे स्पष्ट है।

सन् १८८५ ई० में कोयले की कुल खाने ९५ थीं जिन में से ९० बंगाल में थीं।
„ १९०० ई० में „ „ „ „ २८६ „ „ „ „ २७१ „ „ „
„ १९०१ ई० में „ „ „ „ ३०७ „ „ „ „ २७४ „ „ „

उपरोक्त ऐतिहासिक विवेचनसे स्पष्ट हो जाता है कि संसारमें पत्थरके कोयलेसे मानव [illegible] परिचित अवश्य था पर सबसे प्रथम पत्थरके कोयलेकी खानोंका उद्योग चीनसे आरम्भ हुआ था और धीरे धीरे भारतमें इस उद्योगने अपनी जड़ जमा ली। आज भारतमें कोयलेका काम जोरोंसे हो रहा है।

कुछ इतिहासकारोंका मत है कि कोयलेका उद्योग धन्धा सर्व प्रथम योरोपमें आरम्भ हुआ था वहीं किन्तु कई लोगोंका मत है कि योरोपवालोंकी अपेक्षा † चीन वाले शताब्दियों पूर्व ही कोयले और उसके व्यवहारसे परिचित थे।

यद्यपि कोयलेकी खोज भी बहुत पुराने समयमें हुई थी परन्तु उद्योग धन्धोंमें इसकी [illegible] करनेका काम बहुत पीछेसे आरम्भ हुआ था। और आज भी संसारमें [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त है सभी राष्ट्र अपनी आवश्यकताके लिये इसी [illegible] करते हैं।

* देखिये Mines and Mines at present of India 1905 Page 6 111
† "The Chinese commenced Coal in [illegible] centuries before these things were [illegible] in Europe [illegible] देखिये Outline of History by H. G. Wells Vol I page 651.

औद्दिके काममें भी लाखका प्रयोग होता है। लाखसे लीयोकी स्याही तैयार होती है
रंनड़ बनाई जाती है और जूतेंका साज तैयार होता है। इसके साथ ही लाखसे लाल रंग भी
होता है जिसे लाखका रंग कहते हैं।

लाखका रंग

लाखके रंगके सम्बन्धमें लोगोंका अनुमान है कि भारतमें तो इसके रंगका व्यवहार व
पुराने समयसे था ही पर योरोपमें लाखका प्रवेश लाखके * रंगके कारण ही हुआ था। टामलिन्सन
साइक्लोपीडिया (Tomlinsons Cyclopædia) के आधारपर डा० वाल्करने लिखा है कि लाख
कीड़ोंका रंग योरोप वाले भी पहिले व्यवहारमें लाते थे। यूनान और रोमके निवासियोंका क्रिमसन
नामक लाल रंग और मूलेस्त तथा फ्लीमिसका पक्का लाल रंग भी लाखका ही रंग होता था पर इस
सम्बन्धमें सर जार्ज वर्डवुडका मत उपरोक्त डाक्टरके मतसे भिन्न है वे इसे लाखके कीड़ोंके स्थानमें इसी
प्रकारके दूसरे कीड़ों (Kirmig) का रंग बताते हैं। फिर भी यह निश्चय है कि योरोपमें लाखने यदि
प्रवेश किया तो अपने लाल रंगके ही कारण। योरोप वाले कोचीनियलसे लाल रंग तैयार करते थे पर जब
यह पदार्थ मैक्सिकोसे आना बंद हो गया तो उन्होंने लाखसे लाल रंग तैयार करनेकी युक्ति निकाली
और इस प्रकार लाखके रंगका व्यवहार योरोपमें आरम्भ हुआ। योरोप वाले इस रंगसे सैनिकोंकी
पोषाक रंगते थे। पर कोल्तारके रंगका प्रचार बढ़ते ही लाखके रंगको भारी धक्का लगा और थोड़ी
ही अवधिमें लाखके रंगका व्यवहार सदाके लिये बंद हो गया। कोलतारके रंग (Aniline
dyes) के समान सस्ता और कोई रंग नहीं होता अतः लाख और कोचीनियल दोनों ही प्रकारके
रंगका व्यवसाय सदाके लिये रुक गया।

भारतमें पुराने समयसे लाखके रंगका व्यवहार होता आया है। पर वर्तमान युगमें लाखके
रंगका वह पूर्वकालीन व्यापक प्रसार भारतमें भी नहीं रह सका। हां यहां लाखके रंगसे † महावर
तैयार किया जाता है जिससे हिन्दू ललनायें अपने पैरोंकी लाल लाल सुकोमल एड़ियोंको लाल
करती हैं। महावर बनानेकी सहज विधि यह है कि लाखको पानीमें घोल दिया जाता है और फिर
इसके रंगीन पानीमें रूई भिगो दी जाती है जो फिर सुखा ली जाती है। इसी सूखी हुई रंगीन
रूईको महावर कहते हैं

भारतमें लाखका व्यवसाय

भारतमें अत्यन्त प्राचीन समयसे लाखका व्यवसाय होता चला आरहा है पर इनका

* भारतसे लाख, लाल समुद्र तटवर्ती अफ्रीकन बंदर अदूली (Adule) जाती थी और वहांसे अरब
व्यापारी उसे योरोप भेजते थे जहां वह अरेबियन या इथोपियन रोबन रालके नामसे बिकती थी।

† देखिये Mono Metals of Hindus by Dr. C. C. Datt, Pg. 21

भारतमें पत्थरके कोयलेके केन्द्र

भारतमें निकलनेवाले पत्थरके कोयलेका ९७ ! प्रतिशत भाग ऐसी पद्धतिकी खानोंसे निकलता है कि जिनके कोयलेको गोंडवाना सिस्टम (Gondwana System) का कोयला कहते हैं। भारतके प्रधान कोयला क्षेत्रोंमें रानीगंज और झरिया ही दो ख्याति प्राप्त क्षेत्र हैं। भारतकी खानोंसे निकलनेवाले: पत्थरके कोयलेका ८३ प्रतिशत माल इन्हीं दो क्षेत्रोंसे निकलता है। इनमेंसे रानीगंज तो वर्द्धवान जिलेमें है जहांकी खानोंमें सबसे प्रथम निकालनेका काम सन् १८२० ई०में आरम्भ हुआ था। दूसरा झरियाका कोयला क्षेत्र है जो वर्तमानमें विहार उड़ीसा प्रदेशमें है। यहांकी खानोंमें कोयला निकालनेका कार्य सन् १८९३ ई० में आरम्भ हुआ था। इन दो प्रधान कोयला क्षेत्रोंके अतिरिक्त हैदराबाद राज्यके सिंगरेनी स्थानमें भी .कोयलेकी बड़ी खान है जहां कोयला निकालनेका कार्यारम्भ सन् १८८७ ई० में हुआ था। भारतमें कोयलेके यही तीन बड़े क्षेत्र हैं। इनके अतिरिक्त वर्धा, और पेंचकी घाटी सी० पीमें; उमरिया रीवां राज्यमें; माकुम आसाममें और झेल जिला पंजाबमें भी कोयलेकी खाने हैं जहां कोयला निकाला जाता है। इनका स्पष्ट स्वरूप इस प्रकार है:—

ब्रटिश भारत आसाम, बंगाल, विहार उड़ीसा, पंजाब, बलूचिस्तान, मध्य प्रदेश आदिमें ही कोयलेकी खाने हैं।

देशी राज्य—हैदराबाद, बीकानेर और रीवांमें कोयलेकी खाने हैं।

भारतकी कोयलेकी खाने और उनका भविष्य

हम अन्यत्र दे चुके हैं कि भारतमें कोयलेकी खानोंका उद्योग क्यों और कैसे आरम्भ हुआ और साथ ही कैसे २ इस क्षेत्रमें उन्नति हुई और कोयलेकी खानोंकी संख्यामें वृद्धि हुई। भारतके कोयलेके व्यवसायके सम्बन्धमें लार्ड * कर्जनने जो विचार झरियाकी कोयलेकी खानोंको देख कर कहा था वह अवश्य ही ध्यानमें रखने योग्य हैं। आपने कहा था कि सिंगापुर और स्वेज नहरके बीचका ही एक मात्र ऐसा क्षेत्र है कि जहां भारतके पत्थरके कोयलेकी मांग बहुत अधिक बढ़ सकती है। और आपने आशा की थी इस विस्तृत क्षेत्रपर भारतका कोयला अवश्य ही अपना अधिकार जमानेके लिये शिरतोड़ प्रयत्न करेगा।

---

* *Indian Coal can hardly be expected to get beyond Suez on the west or Singapore on the east. At those points you come up against English Coal on the one side and Japanese Coal on the other. But I wish to point out that there is a pretty extensive Market between, and I think that Indian Coal should make a most determined effort to capture it*

Lord Courzon

22nd January 1903

आजकल भारतमें लाखके व्यवसायका प्रधान केन्द्र कलकत्ता माना जाता है। बर्मा और मद्राससे जैसे लाख कलकत्ता आती है वैसे मध्य प्रदेश और आसामसे भी लाख कलकत्ते ही आती है।

भारतमें लाखके केन्द्र

भारतके सभी भूभागोंमें लाख उत्पन्न होती है पर प्रधानतया नीचे लिखे केन्द्रोंमें बहुत अधिक परिमाणमें पायी जाती है।

मिर्जापुर (यू० पी०), बलरामपुर और झालदा (मानभूमि जि०) पकौड़ कोटल पोखर (सन्थाल परगना) दूलियन, प्रतापगंज (मुर्शिदाबाद जि०) इमामगंज (गया जि०) उमरिया (रीवां राज्य) कोटा (बिलासपुर) गोंदिया (सी० पी०) डाल्टन गंज (पलामू जि०)

चीनी पलास, कुसुम, बबूल, बेर, और गोंद पर लाख अधिक लगती है पर बंगालमें बेर पर, आसाममें अरहर और पीपलपर, बर्मामें पीपल और पलासपर, बिहार-उड़ीसामें पलास और कुसुमपर, संयुक्त प्रान्तमें पलास पर, मध्य प्रदेशमें पलासपर, मध्य भारतमें पलास और कुसुम पर, पंजाबमें बेरपर सिन्धमें बबूल पर ही अधिक होती है।

ऊपर लिखे गये केन्द्रोंमें और उनके आसपास लाख बहुत अधिक होती है और उन्हीं केन्द्रोंमें संग्रह कर वहींके चपड़ेके कारखानोंमें गलाई जाती है तथा वहीं चपड़ा भी बनता है। यही चपड़ा कलकत्ता, रंगून, करांची, बम्बई और मद्रासके बन्दरोंसे संयुक्तराज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रान्स तथा अन्य देशोंको भेजा जाता है। भारतसे यह माल स्टिकलैक, बड़ा दाना लाख, लाख और चपड़ा, और बटन चपड़ाके रूपमें विदेश जाता है।

स्मरण रहे उपरोक्त केन्द्रोंके व्यापारी लाख खरीदकर चपड़ा तैयार करते हैं पर इनमें अधिकांश व्यापारी स्वयं निर्यात नहीं करते जो चपड़ा विदेश भेजते हों। फिर भी दो व्यापारी ऐसे भी हैं जो लाख खरीदकर अपने कारखानोंमें चपड़ा तैयार करते हैं और स्वयं चपड़ा भी विदेश भेजते हैं। इनके नाम ये हैं :—

१ मेसर्स एंजिलो ब्रदर्स—कोसीपुर चौबीसपरगना

२ " जे० डी० गालस्टन—कलकत्ता।

वार्निशका व्यापार

जहां चपड़ेसे कम परिमाणमें लाख होती है वहां उससे वार्निश बनाई जा सकती है [illegible] व्यापार लाखके साथ चलाया जा सकता है। वार्निश इस प्रकार बनती है।

(१) मैथीलेटेड स्पिरिट १० औन्स (२५ तो०), रोजिन (Rosin) १ औं० (२॥ तो०), [illegible] औंस, ड्रैगन ब्लड (अरंग या सिंदुरी) १ औं० (१ तोला)।

कोयला भारतमें प्रायः निम्नश्रेणीके कोयलेसे विहार और उड़ीसाके कोयला क्षेत्रमें तैयार किया जाता है। भारतसे यह कोयला सीलोन और स्ट्रेटसेटलमेन्ट को बहुत थोड़े परिमाणमें जाता है शेष अधिकांशकी खपन मेसोपोटेमियोंमें होती है।

कोयलेका आयात्

विदेशसे आनेवाले कोयलेमें सबसे अधिक कोयला क्रमानुसार बृटेन, नेटाल, पोर्तुगीज पूर्व अफ्रीका, जापान, हालैण्ड और आस्ट्रेलियासे भारत आता है। आश्चर्य है कि कम किरायेके कारण भारतके बाजारमें देशी कोयलेसे प्रतियोगिता करनेमें दूर देशोंका कोयला सफल होता है।

भारतमें कोयलेका व्यवहार

भारतके बाजारोंमें उपलब्ध पत्थरके कोयलेका ३०.८ प्रतिशत भाग तो रेल्वे कम्पनियाँ व्यवहारमें लाती है और २२.५ प्रतिशत छोटे छोटे घरेलू उद्योग और घरेलू काममें व्यवहार होता है। १२.०३ प्रतिशत कोयलेकी खानों और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले कामोंमें खर्च किया जाता है। १२ प्रति शत लोहा गलानेकी भट्टियों और पीतल तथा अन्य प्रकारकी धातुके कारखानोंमें खर्च होता है। कपड़ेकी मीलोंमें ५.६ प्रतिशत तथा जूट मिलोंमें ४.७ प्रतिशत खर्च होता है। भारतमें लगभग २,००,८२,००० टन कोयला (देशी व विदेशी) उपलब्ध रहता है। भारतके कोयलेका ६० प्रतिशत यहांकी रेल्वे कम्पनियाँ और कारखाने खपाते हैं।

कोयलेकी उपयोगिता

कोयलेके सम्बन्धमें निज मत व्यक्त करतेहुए एक* वैज्ञानिकने कहा था कि कोयला वास्तवमें पदार्थोंकी दृष्टिसे सर्वोपरि ही है। विज्ञानकी उन्नति और कलाकौशल सम्बन्धी सुधार, भाफ और कोयलाके महत्वपूर्ण प्राधान्यको और वृद्धि करेंगे।

उपरोक्त वाक्य उस समय अर्थात् सन् १८६५ ई०में चाहे मनो जगतकी लम्बी दौड़ही क्यों न माने गये हो पर आज तो हम देखते हैं मानो समाजका कोई भी ऐसा अंग नहीं जिसे कोयलेने समुन्नत करनेमें प्रशंसनीय भाग न लिया हो। कोयला प्रकाश, ऊष्णता, और शक्ति-संचारकी प्रधान शक्ति है। सभी प्रकारके औद्योगिक जीवनका कोयला एक प्रधान आधार है। कोयलेसे गैस तैयार होती है और गैस निकालकर बचेहुए कोयले अर्थात् कोकसे टार और गैस बनती है। कोक कोयलेकी भांति जलता भी है। टारसे जलानेका एक प्रकारका तेल (Fuel oil) और मोटर स्पिरिट बनती है। अतः कोयलेकी काया पलटका परिणाम इससे तैयार किये जानेवाले रङ्गोंमें, गैस निकाले गये कोकमें, और संचालक पदार्थों रचनामें मिलेगा।

* "*Coal in truth stands not beside, but entirely above all other Commodities*........*The progress of Science and the improvement in the arts, will tend to increase the Supermacy of Steam and Coal. W. S. Jevons.* देखिये (*The coal Question 1865 by W. Stanly Jevons*)

कोयला

संसारकी अन्तर्राष्ट्रीय रीति नीतिमें आश्चर्यजनक उथलपुथल करनेकी यदि किसी पदार्थमें शक्ति है तो वह कोयला और लोहेमें ही। इन दो पदार्थोंके समान लाभके युगमें कोई अन्य पदार्थ ऐसा उपयोगी नहीं माना जाता। यही कारण है कि संसारके सभी राष्ट्र कोयला और लोहेके राशि भण्डारको अपने २ हाथमें लेनेकी चिन्तामें सदा चूर रहते हैं। इन्हीं दो पदार्थोंकी उपजको लेकर अनेकों और युद्धकी पारस्परिक मुठभेड़की आशंकाका जन्म हो चुका है। अस्तु यह दोनों ही पदार्थ अपना विशेष स्थान अवश्य रखते हैं और इसीलिये हम भारतके सम्बन्धको लेकर कोयलेके विषयमें कुछ लिख रहे हैं।

इतिहास

पत्थरके कोयलेके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि मानव-समाजने कबसे इसकी उपयोगिताका अनुभव कर इसे काममें लाना आरम्भ किया। फिर भी इतना तो अवश्य ही अनुमान किया जा सकता है कि जब संसारमें पत्थरका कोयला इतने प्रचुर परिमाणमें मिलता है तो अवश्य ही मानवीय पौरुषने कोयलेपर प्राचीन समयमें ही विजय प्राप्त की होगी और उसी कालसे इसका व्यवहार करना आरम्भ कर दिया होगा। जिस समयसे मानव समाजमें धातुका व्यवहार चला उसी समयसे पत्थरके कोयलेका उपयोगमें आना माना जा सकता है। यह समय अनुमानतया मसीह सन् से ६ हजारसे ८ हजार वर्ष पूर्व तकका हो सकता है। सबसे प्रथम सन् [illegible]सीसे * ३०० वर्ष पूर्व यूनानके थियोफ्रेटस (Theophratus) नामके एक व्यक्तिने पत्थरके कोयलेको काममें लाना आरम्भ किया था। इसके बाद दूसरा ऐतिहासिक प्रमाण रोमन वैभव कालीन [illegible] मिलता है। जिस समय रोमन लोगोंने बृटेनपर आक्रमण किया था उस समय बृटेनमें [illegible] भी खानसे निकाला जाता था। पर कोयलेके उपयोगका प्रमाण सन् ८५२ ई० के पूर्व [illegible] मिलता। कोयलेका प्रसार ३ सौ वर्षतक साधारण रीतिसे होता रहा। इसके बाद ही कुछ उन्नति [illegible] कार्यारम्भ हुआ।

* देखिये Coal Industry by A. E. S[illegible] of O[illegible]

कुछ ऐसे भी मिलेंगे कि जिनका आकार प्रकार अधिकांशमें रोमन हथियारोंसे मिलता है। नैपाली और भूटानी कुकुरीके आकारके छोटे खंजर भी मिलेंगे जो सूचित करते हैं कि इस भूभागमें उस समय लोहेके उद्योग धन्धे की कितनी उन्नति हो चुकी थी। कनारकके मंदिरमें इन चिन्होंके अतिरिक्त लोहेके विशाल खम्भे भी मिलेंगे जो आज भी अपने अतीत गौरवकी स्मृति दिला रहे हैं। इस मंदिरकी प्राचीनताके सम्बन्धमें फरग्यूसन साहबका मत है कि इसका निर्माण ६ वीं शताब्दीके अन्तमें हुआ होगा परन्तु स्टरलिङ्गका मत है कि यह सन् १२४१ के लगभग बनाया। इस मंदिरके प्रवेश द्वारके पास ही पत्थरोंके बीच ११½ इंच मोटा और २३ फीट लम्बा एक लोहेका स्थम्भ है; जो सूचित करता है कि उस समयभी हिन्दू लोहेके गुणधर्म और उसकी उपयोगितासे पूर्ण रूपेण परिचित थे। वे लोहेके उद्योगमें सराहनीय उन्नति कर चुके थे। इसी समयकी बनी 'बचउलीतोप' नामक एक विशाल तोप नवाब मुर्शिदाबादके इमामबोड़ और महलके बीचवाले मैदानमें रक्खी है। इस प्रकार लोहेके खम्भ और स्थूलकाय तोपें जब ढालकर बनाई जाती थीं तो उस समय हिन्दू लोहा गलाने और उसे मनमानी आकृतिमें ढालनेकी कलासे अपरिचित न थे यह कहना अनावश्यक है। यही क्यों बल्कि पुराणमें लिखा है कि चुम्बक परमाणु प्रधान लोहेके बर्तनोंके व्यवहारसे कई प्रकारके रोग दूर हो जाते हैं।

यवन शासनके आरम्भके साथ ही इस प्रान्तमें बहुतसे नवीन परसंस्कृति जनित परिवर्तनोंका समावेश भी हो चला और शनैः २ इस उद्योग धन्धेमें भी कई उलट फेर हो गये। मुसलमानोंके साथ जो कारीगर इस प्रान्तमें आये उन्होंने अपने ढंगकी बातोंका प्रसार किया और फलतः यहां आज बङ्गाल की विशेषताको व्यक्त करनेवाला एक भी औजार नहीं है। पटना, मुंगेर, ढाका, मुर्शिदाबाद, वर्द्धमान आदि स्थानोंमें बननेवाले सभी हथियारों पर फारस, अरब आदिकी पूरी छाप बैठ गयी। क्योंकि हथियारोंके प्रेमी मुसलमान शासक इस ओर विशेष ध्यान देते थे। हथियारोंके कारखानों पर शासकोंकी वैयक्तिक देखरेख रहती थी। स्वयं अकबर सबल शासक होते हुये भी हथियारोंका चतुर कारीगर था, यही कारण था कि योरोप तकके* कारीगर यवन सम्राटका शस्त्र गार देखनेके लिये आनेको बाध्य किये जाते थे। बङ्गाल प्रान्तमें यवन शासनका आरम्भ सन् १४८० के बादसे होता है और १५ वीं तथा १६ वीं शताब्दीके मध्यकालमें इस प्रान्तके लोहेके औद्योगिक क्षेत्रमें उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। जहां लोहेकी बन्दूकें बनती थीं वहां भारी तोपें भी ढाली जाने लगीं जैसे मुर्शिदाबादवाली † 'जहानकोश' नामक तोपपर अङ्कित लेखसे विदित होता है।

---

* *The most proficient artisons of Europe were induced to come…… …the construction of guns— E. R. Watson M. A. B. Sc.*

† यह तोप जहांगीर नगर उर्फ ढाकामें शेरमोहम्मदको देखरेखमें सन् ११३७ में बनी थी। वहांके जनार्दन

कोयलेकी तत्वोंका जन्म इन्हीं वृक्षोंके सतत इंधनोंके आकस्मिक भूगर्भमें
से ही होता है अतः वृक्षोंके प्रधान वानस्पतिक तत्वोंका किसी न किसी रूप तथा किसी न किसी
कोयलेमें मिलना पाना अनिवार्य है। रासायनिक परिवर्तन ही एक ऐसा प्रधान अवलम्ब है कि जि
वानस्पतिक जगत फलता फूलता है। यह रासायनिक परिवर्तन प्रधान रूपसे सूर्यके प्रकाशसे ह
यहाँ भाग पहुंचने वाले नमकीन द्रव्यों,चतुर्दिक बने हुए वातावरणमें सम्मिश्रित कार्बन डाइअक्स
(Corbon diovide) और जलांशके संयोगसे ही हुआ करता है। इसी परिवर्तन कालमें वृक्ष श
और स्टार्च जैसे पदार्थोंकी उत्पत्ति करते * है। और अन्तमें उनका परिवर्तित स्वरूप सेल्यु
और लिग्नो सेल्यूलस बन जाता है। जिस क्रमसे यह परिवर्तन होता है उसकी कुछ रूप रेखा इस
प्रकार है।

भूकम्पनका होना, वृक्षोंका गिरना और दलदली भूमिमें उनका धंस जाना, ऊपरसे पानी
पा जाना, पानीमें प्रकट एवं अप्रकट रूपसे रहनेवाली धातुओंका पानीकी पेंदीपर बैठना और बालूके
ढेरकी रचना उन्हींपर करना इस प्रकार दबे हुए वृक्ष:समूहको जल मिश्रित उत्तप्त भूगर्भमें सड़ाके लिये
समाधिस्त कर देना। समाधियोंपर मिट्टीका जमा होना, नवीन वृक्षोंका उन्हींपर अंकुरित हो उठना,
उनका फूलना फलना और फिर भूकम्पनकी ध्वनिके साथ ही पुनः भूगर्भमें समा जाना। उसपर मिट्टीके
ढेरकी पुनः रचनाका होना और पुनः नवीन वनराशिकी उत्पत्तिका क्रमारम्भ होना। फलतः दलदली
भूभागमें पायी जानेवाली मेथेन गैस (Methane) और कार्बन डाईअक्साइड नामक गैस जोरोंसे
अपना अपना कार्य करनेमें जुट पड़ती हैं। साथ ही भूगर्भकी उत्तप्त अवस्था और चतुर्दिक दबाव
आदि स्वाभाविक शक्तियाँ सब मिल सामुहिक रूपसे उस भूगर्भमें दबी हुई वनराशि पर शीघ्रतासे अचूक
रासायनिक कार्य करके उसके स्वरूपको परिवर्तित कर उसके वाह्य आकार प्रकारको:कुछका कुछ कर
देते हैं। फलतः इसके वानस्पतिक मूल तत्त्वोंमें भी परिवर्तन होकर प्रथम तो लकड़ीसे सेल्यू
लूस (Cellulose) के रूपमें और पश्चात् क्रमानुसार पत्थरके कोयलेके रूपमें वह वनराशि
प्रकट होती है।

---

* भूगर्भमें वृक्षराशिके दब जानेके जिस क्रमके अनुसार रासायनिक परिवर्तन होता है वह जानकारीके लिये हम नीचे दे रहे हैं।

लकड़ीका मूलस्वरूप—Wood = 49·0G | 6·0H | 45·0O |

Wood tissue = 49·66c | 5·74H | 44·60·O

...तः परिवर्तित स्वरूप—Ligno Cellulose = $C_{12}H_{11}O_{9}$ = 47·05C | 5·88H | 47·05O |

Cellulose = $C_{6}H_{10}O_{5}$ = 44·40C | 6·20H | 49·40O

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—टाटानगर (इसका विस्तृत परिचय बिहार-उड़ीसा प्रान्तमें देखें)

१ बंगाल आइर्न एण्ड स्टील कम्पनीज़ वर्क्स—बाराकार
२ मेसर्स बर्न एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हवड़ा
३ मेसर्स जेसप एण्ड को० ब्रिज वर्क्स एण्ड फाउन्ड्री—हवड़ा
४ मेसर्स जेसप एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्कस—कलकत्ता
५ मेसर्स जेसप एण्ड को० ऐलिङ्ग स्टाक वर्क्स—गार्डन रीच, कलकत्ता,
६ ई० आई० आर० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क-शाप—जमालपुर
७ ई० आई० आर० वर्क शाप—लिलुआ
८ ई० बी० स्टेट रेलवे इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—कचरापारा
९ गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्ट्री—काशीपुर और ईशापुर
१० गवर्नमेन्ट राइफल फैक्ट्री—ईशापुर
११ मेसर्स जे० एच० किङ्ग एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हवड़ा
१२ हुगली डाकिङ्ग एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग को० लि०—हवड़ा
१३ बी० आई० एस० नेवीगेशन कम्पनी डाक्स एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—हवड़ा
१४ गैनजेस इञ्जिनियरिङ्ग वर्कस—हवड़ा
१५ मेसर्स टर्नर, मोरीसन एण्ड को० शिपबिल्डिङ्ग यार्डस्—शालीमार

उपरोक्त बड़े कारखानोंके अतिरिक्त कितने ही छोटे छोटे कारखाने भी हैं जहां भिन्न भिन्न प्रकारका काम होता है। इन बड़े कारखानोंमेंसे कुछका संक्षिप्त परिचय हम यहां दे रहे हैं। जो इस प्रकार है।

बंगाल आइरन एण्ड स्टील वर्क्स—बराकार

यह कारखाना ई० आई० आर० की ग्रैण्डकार्ड लाइनपर आसनसोलके पास है। यहां लोहा गलानेकी भट्टी और ढालनेके सांचे हैं जहां लोहेकी गलाई और ढलाईका काम होता है। इन भट्टियोंमें जलानेके लिये कोयला (Coke) भट्टियामें आता है। यह कोयला गैस निकाल लेनेके बाद काम देता है और इसी लिये इसे 'कोक' कहते हैं। भारतके कोयले और कोक दोनोंमें ही यह बुराई है कि इसमें राख ज्यादा होती है जो पिघलते हुए गरम लोहेको हानि पहुंचाती है। इसके सिवाय यहांके कच्चे मालमें लोहेका अंश अनियमित* परिमाणमें पाया जाता है। यह मानु-

* कच्ची धातुके कच्चे मालमें ६८ प्रतिशत लोहा रहता है।

भारतमें खानोंकी खोदाईका कार्य सन्तोषप्रद नहीं कहा जा सकता। यहांकी खानोंमें काम करनेवाले श्रमजीवी प्रायः किसान होते हैं जो बेकारीके समयमें खानोंपर काम करने आते हैं। ये लोग काम करनेकी इच्छासे खानोंमें नहीं आते वरन् आवश्यकता और परिस्थितिसे बाध्य होकर वहां आते हैं ऐसी दशामें माल यथेष्ट परिमाणमें नहीं निकलता। यहांकी खानोंमें प्रायः सभी यांत्रिक व्यवस्था कर दी गयी है पर कोयलेका भाव कमजोर रहनेके कारण इस उद्योगमें विशेष रूपसे लाभ नहीं होता। इसकी अवस्था सुधारनेके लिये आवश्यक तो यह है कि भारतके घरेलू उद्योग धन्धोंको प्रोत्साहन दिया जाय। इससे कम कीमतके भारतीय कोयलेकी खपत अधिक होने लगेगी और कोयलेकी अधिक खपतके कारण खानवालोंको भी अच्छा लाभ रहेगा साथ ही कारखानेवालोंको भी कम कीमती कोयलेसे अच्छी सुविधा मिलेगी। इस प्रकारकी व्यवस्थासे विदेशके मंहगे कोयलेका आना भी रुक जायगा।

कोयलेकी प्रधान खानें

भारतकी प्रधान खानोंमें रानीगंज और झरिया ही की खानें मानी जाती हैं। रानीगंज कलकत्तेसे लगभग १४० मील दूर है। इन खानोंसे कोयला रेलवे और स्टीमरोंके द्वारा कलकत्ते आता है। रानीगंजसे ४० मील दूर झरियाका कोयला क्षेत्र है इन दोके बाद गिरिडिहकी खानका स्थान माना जाता है। इन तीनों ही खानोंका कोयला परिमाणमें एकसे एक बढ़कर निकलता है। यह भारतकी कोयलेकी कुल उपजका ६७ प्रतिशत माना जाता है। इस औद्योगिक कार्यसे २ लाखके लगभग श्रमजीवी पलते हैं। फिर भी अभी श्रमजीवियोंकी मांग कम नहीं हुई। क्योंकि कभी कभी आदमियोंकी कमीके कारण माल भी कम निकलता है। इन खानोंमें सभी प्रकारका काम करनेके लिये आधुनिक यंत्र सामग्रीकी सुविधा दी गयी है। विद्युत शक्ति संचालनकारी केन्द्रोंकी स्थापना भी की गयी है। तथा कोयलेसे दूसरे प्रकारके उपयोगी पदार्थ तैयार करनेकी व्यवस्था भी की गयी है।

कोयलेका निर्यात्

प्रायः भारतीय व्यापारियोंका कोयला विदेशके लिए कलकत्तेसे ही रवाना होता है भारतके कोयलेके प्रधान खरीददारोंमें सीलोन और स्ट्रेट सेटलमेन्ट ही अधिक ख्याति प्राप्त हैं। इनके बाद सुमात्रा और सबाङ्गका स्थान माना जाता है ये दोनों ही जहाजी बन्दरोंमें सुदूर पूर्वकी यात्रा करनेवाले जहाजसे कोयला लेते हैं।

यद्यपि आधिकाश कोयला कलकत्तेसे ही विदेश जाता है फिर भी बंकर कोल कोयला कलकत्ता, बाम्बे, करांची, रंगून और मद्रासके बन्दरोंसे भी बाहर जाता है। इस प्रकारके कोयलेकी खपत जलसेनामें ही अधिक होती है।

कोक पत्थरके उस कोयलेको कहते हैं जिससे गैस निकाली जाती है। इस प्रकारका

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—टाटानगर (इसका विस्तृत परिचय बिहार-उड़ीसा प्रान्तमें देखें)

१ बंगाल आइर्न एण्ड स्टील कम्पनीज वर्क्स—बाराकार
२ मेसर्स बर्न एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हबड़ा
३ मेसर्स जेसप एण्ड को० ब्रिज वर्क्स एण्ड फाउन्ड्री—हबड़ा
४ मेसर्स जेसप एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—कलकत्ता
५ मेसर्स जेसप एण्ड को० ऐलिङ्ग स्टाक वर्क्स—गार्डन रीच, कलकत्ता,
६ ई० आई० आर० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क-शाप—जमालपुर
७ ई० आई० आर० वर्क शाप—लिलुआ
८ ई० बी० स्टेट रेलवे इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—कचरापारा
९ गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्ट्री—काशीपुर और ईशापुर
१० गवर्नमेन्ट राइफल फैक्ट्री—ईशापुर
११ मेसर्स जे० एच० किल्बर्न एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हबड़ा
१२ हुगली डाकिङ्ग एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग को० लि०—हबड़ा
१३ बी० आई० एस० नेवीगेशन कम्पनी डाक्स एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—हबड़ा
१४ रेनफ्रेम इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हबड़ा
१५ मेसर्स टर्नर, मोरीसन एण्ड को० शिपबिल्डिङ्ग यार्डस्—शालीमार

उपरोक्त बड़े कारखानोंके अतिरिक्त कितने ही छोटे छोटे कारखाने भी हैं जहां भिन्न भिन्न प्रकारका काम होता है। इन बड़े कारखानोंमेंसे कुछका संक्षिप्त परिचय हम यहां दे रहे हैं। जो इस प्रकार है।

बंगाल आइरन एण्ड स्टील वर्क्स—बाराकार

यह कारखाना ई० आई० आर० की ग्रैण्डकार्ड लाइनपर आसनसोलके पास है। यहां लोहा गलानेकी भट्टी और ढलाईके सांचे हैं जहां लोहेकी गलाई और ढलाईका काम होता है। इन भट्टियोंमें काम आनेवाला कोयला (Coke) झरियासे आता है। यह कोयला गैस निकाल लेनेके बाद काम देता है और इसी लिये इसे "कोक" कहते हैं। भारतके कोयले और कोक दोनोंमें ही यह बुराई है कि इनमें राख ज्यादा होती है जो गिरते हुए गाल लोहेको हानि पहुंचाती है। खानसे निकाले गये कच्चे मालमें लोहेका अंश अनियमित* परिमाणमें पाया जाता है। यह धातु-

* कच्चे मालमें [illegible] से ६८ प्रतिशत लोहा रहता है।

लोहा

—:०:—

दूसरी चीजोंकी तरह भारतमें लोहेका उद्योग भी बहुत ना है खनिज लोहेको साफकर फौलाद बनानेकी चाल यहां बहुत पुराने समयसे चली आ रही है। हजारो वर्षोसे अस्त्र शस्त्र यहां बनते रहे हैं।

पा मसीह सन्के १५० वर्ष पूर्वसेही ऐसे प्रमाण मिलने लगते हैं कि जिनके आधारपर बंगाल प्रान्तका लोहा सम्बन्धी विषय स्वतंत्र रूपसे लिखा जा सकता है। इस अवधिके बीचके निर्मित मंदिर जो आज भी अधिकांशमें सुरक्षित अवस्थामें पाये जाते हैं इस बातका प्रचुर प्रमाण देते हैं कि उस युगमें इस प्रान्तवाले लोहेसे किस प्रकारसे परिचित थे। विहार उड़ीसा प्रदेशान्तर्गत उदयगिरिका पहाड़ी मंदिर, बुद्ध गयाके मंदिर और अमरावती गुम्मजमें पर्याप्त चिन्ह पाये जाते हैं। इन मंदिरोंमें कितनी ही प्रस्तर प्रतिमायें हैं जो योद्धाओंको तलवार फेंकते, कटार, बर्छी, धनुषबांड़ आदि लिये हुए प्रदर्शित करती हैं इन प्रतिमाओंके हाथमें परशु और ढाल भी हैं। इनके आकार प्रकारसे हम उस समयके अस्त्र-शस्त्रोंके आकार प्रकारका अनुमान अनायास ही कर सकते हैं। उस समय अस्त्र-शस्त्र लोहेके बनाये जाते थे। यह मंदिर बंगालमें हैं अतः इन अस्त्रशस्त्रोंकी आकृति उन्हीं अस्त्र शस्त्रोंकी सी है जो उस समय बंगालमें व्यवहार किये जाते थे। अंकुश और क्योंकि पहियेकी हालें तो उस समय लोहेकी ही बनती थीं।

इस कालके इतिहासके लिये जहां हमें मंदिरोंमें पाये जानेवाले प्रमाणोंपर निर्भर रहना पड़ता है। वहां मुर्शिदाबादके नवावके पासकी 'पिरो' यत्न नामक एक बर्छी भी इसका प्रमाण है जिसके एक ओर विष्णु और दूसरी ओर गरुड़के चित्र अङ्कित हैं यह फौलादकी बनी हुई है। इसे लोग विक्रमादित्यकी बताते हैं। फल पर बने हुए कामकी रूप रेखा आश्चर्यजनक रीतिसे उड़ीसाके मंदिरोंमें मिलनेवाली कारीगरीसे मिलती है। यह काम बंगालका बना हुआ है। इसके लिये उसे उचित गर्व हो सकता है।

उड़ीसा प्रदेशीय भुवनेश्वर और कनारकके मंदिर ऐसे हैं कि जिनपर प्रशंसनीय चित्रकारी बनी है। इनको देखकर बंगालमें पाये जानेवाले लोहेके प्राचीन अस्त्रशस्त्रोंके सम्बन्धमें बहुत कुछ खोजकर अध्ययन किया जा सकता है। उस समयके इन हथियारोंकी तुलनात्मक विवेचना यदि अन्य राष्ट्रोंके हथियारोंके साथ की जाय तो विचित्र समानता दिखाई देगी। इन मंदिरोंमें अंकित चित्रोंमें

किया कि जिसपर रेशम बुनी जाने लगी। अस्तु चाहे जो हो पर यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि चीनवालोंने इस उद्योगमें अच्छी उन्नति की। उन्होंने इस कलाको अति गोपनीय मान रक्खा था और यही मुख्य कारण है कि इसका प्रसार और देशोंमें बहुत देरसे हो पाया।

जापान।

'गोपनीय रस रहे पुरातन यान भली है' के अनुसार चीनवाले कब किसीको इस नवीन कलाका पता देने लगे? जापानको कानोकान इसकी कुछ भी सूचना नहीं मिली। निहोंगी (Nihongi) नामक जापानके एक प्राचीन इतिहास ग्रन्थसे पता चलता है कि कोरियाको पारकर रेशमकी चर्चा सन् ३०० ई० में जापान पहुंची। फिर क्या था कुछ कोरियावाले जापानकी ओरसे चीन भेजे गये। वहां से वे लोग रेशमकी कलामें परम प्रवीण चार चीनी युवतियां ले आये। इन युवतियोंने वहां वालोंको इस कलाकी शिक्षा दे थोड़े ही समयमें कार्य्यपटु बना दिया। जापनवालोंने इनके सम्मानार्थ सेटसू (Settsu) प्रान्तमें एक मन्दिर निर्माण कराया। उस समय जापानने जिस कलाको इस प्रकार आरम्भ किया था वही आज उसके लिये कामधेनु हो रही है। स्वशासित देशोंको शोभा देने योग्य राष्ट्रीय व्यवसायका आज वह एक सुदृढ़ स्तम्भ हो रही है।

खोतान

प्राचीन इतिहास ग्रन्थोंमें सीरिया और भारतके बीचका भूभाग खोतान प्रदेशके अन्तर्गत माना जाता था। यह भूखण्ड भी हिमालय पर्वत श्रेणीके पश्चिमी किनारेसे सटा हुआ है अतः रेशमके कीड़े यहां भी पाले जा सकते हैं। चीन अपने बाबापन्थी अन्धविश्वासमें लीन बैठा था कि वहां की एक राजकुमारीकी शादी खोतानमें हुई। इसे रेशमी वस्त्र बहुत प्रिय थे अतः उसने इस कलाका प्रसार अपने पतिके यहां करनेकी ठानी। सन् ४१९ ई० में जब वह वहांसे आयी तो शहतूतके बीज और रेशमके कीड़े अपने केशपाशमें छिपाकर लेती आयी। इसी समयसे मध्य एशियामें रेशमका औद्योगिक प्रसार आरम्भ होता है। इसके डेढ़ सौ वर्ष बाद रेशमकी कलाका ज्ञान फारस यूनान और रोमको हुआ। खोतानमें इस उद्योगने अच्छी सफलता प्राप्त की जिसे देखकर योरोप वालोंके भी मन चल गये। उस समयकी राजनैतिक परिस्थितिने योरोपवालोंको रेशमकी चाहके कारण स्वतंत्र रूपसे इस औद्योगिक क्षेत्रमें उतरनेके लिये बाध्य कर दिया।

योरोप

रेशमकी कलाका योरोपमें कब और कैसे प्रसार हुआ यह प्रमाणिक रीतिसे नहीं कहा जा सकता। इसके लिये पुरातत्ववेत्ताओंमें भारी मत भेद है।* सर थामस हर्बर्ट ने सन् १६७७ ई० में

* देखिये De Bello, Gothico II, 17 in jales

१८ वीं शताब्दीके बने हथियार आज भी पाये जाते हैं, अतः उनके सम्बन्धमें सब बातें स्पष्ट ही हैं। इन समयके हथियारोंका अच्छा संग्रह महाराज वर्द्धमानके महलमें है इसी प्रकार मुर्शिदाबादके नवाबके यहां भी कितने ही पुराने हथियार हैं जो पटना, मुंगेर और वर्द्धमानके कारीगरोंके बनाये हुए हैं। प्रसिद्ध वर्द्धमानी तेगा भी यहां है। इन स्थानोंके अतिरिक्त बांकुड़ा जिलेके विष्णुपुर नामक स्थानके पास जंगलमें जो १२ ½ फीट लम्बी तोप पड़ी हुई है वह भी बताती है कि विष्णुपुर राज्यका उस समय कितना गौरव था। इसी प्रकार हुगली जिलेके प्रतापनगर नामक स्थानमें भी हथियार बनाये जाते थे। उपरोक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट हो जाता है धनुषबाणसे लगाकर बड़ी बड़ी तोपें तक यहां वाले सरलतासे ढाल लेते थे। यह उद्योग इस प्रान्तमें बहुत पुराना है लोग हथियार खम्भे और रोगसे मुक्त होने तकके काम में लोहेके गुणधर्मसे भिज्ञ थे। उसकी उपयोगिताको पहिचानकर उन्होंने उससे भारी लाभ भी उठाया।

लोहेके उद्योगकी वर्तमान अवस्था

प्रान्तमें, लोहेके उद्योगकी गिरी हुई अवस्थाने वर्तमान पाश्चात्य पद्धतिके आधारपर ही अपनी उन्नति स्थापित कर रक्खी है। यहांके देशी लोहार आवश्यकता की पूर्तिके परिमाण भर ही काम बनाते हैं और शेष समय बेकार काटते हैं। जब वह कामपर बैठते हैं तो बहुत थोड़ा काम कर पाते हैं और जो कुछ माल वे तैयार भी करते हैं वह न तो मजबूतीमें कोई विशेषता रखता है और न उसको मनमोहक स्वरूप ही दे पाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि उनका माल साधारणतया योरोपके बने हुए मालकी भद्दी नकलके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। वर्तमानमें यदि इस प्रान्तमें कोई स्वरूप इस धन्धेका है तो आधुनिक पाश्चात्य पद्धतिपर काम करने वाले बड़े कारखाने। जहां पर्याप्त परिमाणमें लोहा गला कर साफ किया जाता है और आवश्यकतानुसार भिन्न २ प्रकारका माल बनाया जाता है। योरोप और अमेरिकाके बड़े बड़े कारखानोंकी दृष्टिसे इस प्रान्तके ये कारखाने बहुत ही छोटे और कम संख्यामें हैं परन्तु जितने अल्पकालमें इन्होंने उन्नति कर अपनी उपयोगिता सिद्ध की है उसे देखते हुए भावी समुन्नत युगका आशामय स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

यहांके कारखानोंके बने हुए मालकी उत्तमताके सम्बन्धमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत सरकार भारतके जिन नौ प्रामाणिक कारखानोंसे माल खरीदती है उनमेंसे सात तो केवल इसी प्रान्तमें हैं इस प्रान्तके प्रधान लोहेके कारखानोंमेंसे कुछके नाम ये हैं:—

कर्मकार नामक कारीगरने बनाया था। इसकी लम्बाई १० फीट है और वजन २१२ मन है। यह १८ सेर बारूदसे दागी जाती है।

७ यहां वर्द्धमानसे ८ मील दूर कमरपारा नामक गांवके बने हुए ख्याति प्राप्त इतिहास प्रसिद्ध हथियार भी हैं। जैसे अङ्गरेजोंके विरुद्ध महाराजा त्रिलोकचन्द्र बहादुर द्वारा उठाये गये हथियार भी हैं।

रेशमके कीड़ोंकी गणना अण्डज योनिमें की जाती है। प्रथम ये अण्डेके रूपमें उत्पन्न होते हैं। अण्डे फूटनेके बाद ये छोटे छोटे कीड़ोंके रूपमें प्रकट होते हैं। फिर ये वृक्षकी पत्ती खा कर बढ़ने लगते हैं और युवा अवस्थाको प्राप्त होते हैं। तदनन्तर ये अपने मुंहसे रेशम निकाल कर अपने चारों ओर एक प्रकारका वेष्टन बना कर उसीके अन्दर बन्दीकी तरह बन्द हो जाते हैं और कुछ समय बाद उस जालको काट कर ये तितलीके रूपमें बाहर निकलते हैं। इसके उपरांत प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक नियमानुसार मादी तितली नर तितलीकी सहायतासे अण्डे देती है और तब अपनी लीला समाप्त कर मर जाती है। उपरोक्त कौतुक पूर्ण परिवर्तनके आधार पर ही रेशमके कीड़ोंकी जातियां स्थिरकी गयी हैं। वर्षमें एक बार परिवर्तन क्रमको पूरा करने वाले कीड़ोंकी एक जाति मानी गयी है। वर्षमें दो बार परिवर्तन क्रमको करने वालोंकी जाति दूसरी मानी गई है। इस प्रकारके कीड़े प्रायः चीनमें ही अधिक पाये जाते है। वहीं से ऐसे कीड़ोंका प्रसार योरोपमें हुआ है। कुछ ऐसे कीड़े भी पाये जाते हैं जो वर्षमें तीन बार काया पलटका करिश्मा दिखाते हैं। परन्तु इन कीड़ोंमें कुछ ऐसी भी जातियां हैं जो वर्षमें चार बारसे आठ बार तक अपना कलेवर बदलते हैं। इस प्रकार कीड़ोंकी जातियां निश्चितकी गयी हैं। चीन, जापान और योरोपमें मिलने वाले पालतू कीड़ोंमें प्रायः वर्षमें दो बार काया पलटने वाले ही कीड़े अधिक मिलेंगे परन्तु भारतमें तीन बारसे लगा कर आठ बार कौतुक दिखाने वाले कीड़े भी मिलते हैं। जंगली कीड़ोंमें टसर, मूंगा और अण्डी यह तीन प्रकारके ही कीड़े पाये जाते हैं।

कीड़ोंका भोजन

'पालतू' कहे जाने वाले रेशमके कीड़ोंका एक मात्र खाद्य पदार्थ शहतूतकी पत्तियां हैं। अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तियां खिलानेके प्रयोग असफल सिद्ध हुए हैं। जंगली कीड़े शहतूतके अतिरिक्त अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तियां खाकर भी जीवित रहते हैं और रेशम उत्पन्न करते हैं। ये कीड़े जिन वृक्ष विशेषकी पत्तियां खाकर जीवित रहते हैं उनमें महुआ, कचनार, सेमर, करौंदा, मालकांगनी, बेल, जामुन, कामरूप, अरंडी, सागौन, अर्जुन, जंगलीबदाम, असन और बेरके नाम अधिक उल्लेखनीय हैं।

कीड़े

अण्डोंके ऊपर रक्खे हुए ढक्कनका मुंह खुला रहता है और उसपर चलनीके समान छिद्रदार एक कागज रख दिया जाता है। अण्डे फूटते ही उनमेंसे कीड़े निकल कर घूमने लगते हैं। उनकी भूख बढ़ जाती है और वे उसे शान्त करनेके लिये दौड़ पड़ते हैं। नवजात कीड़े छोटे छोटे छिद्रोंके द्वारा बाहर निकलते हैं। ऐसा करते समय कीड़ेके शरीरपर लगा हुआ अण्डेका दूषित पदार्थ छिद्रोंके

निक पद्धतिके अनुसार कई प्रकारका कच्चा माल एक साथ ही भट्ठीमें गलाया जाता है। इस कारखानें भी यही व्यवस्था है। इस काममें लगनेवाला चूना सतनासे कम्पनी मंगाती है।

इस कारखानेमें मुख्यतया पाइप और बड़े आकारके पहलूदार लौह स्तम्भ ढाले जाते हैं यहां फौलाद और चद्दर बनानेकी भी व्यवस्था है। कारखानेमें काम करनेवाले श्रमजीवी वर्गके लि रहनेका प्रबन्ध भी कम्पनीकी ओरसे है। स्वच्छ जल और डाक्टरोंकी व्यवस्था भी उनके लि अच्छी है

मेसर्स बर्न एण्ड को० लि० वर्क्स—हवड़ा

यह कारखाना हुगली नदीपर हवड़ाकी ओर है। नदीका विस्तृत पाट जहाज बनाने औ माल उतारने तथा चढ़ानेके काममें अच्छी सुविधाका सिद्ध हुआ है। इस कारखानेका काम चा विभागोंमें विभक्त है। एक विभागमें गलाने, ढालने और इंजिनका काम होता है। दूसरेमें लोहेके पु और बड़े २ गार्डर्स बनाये जाते हैं। तीसरेमें रेलके डब्बे बनाते हैं और चौथेमें जहाज बनानेका काम होता है। यह कारखाना बहुत बड़ा है। इसकी लम्बाई १२०० फीट है। यहां सभी प्रकार मजबू और अच्छा माल तैयार होता है।

मेसर्स जेसप एण्ड को० वर्क्स

इस कम्पनीके तीन बड़े बड़े लोहेके कारखाने हैं। इनका :—

१ हवड़ावाला कारखाना पुल बनाने और इमारती सामान तैयार करनेका काम करता है यहां लोहा गलानेकी भट्ठी भी है। इस कारखानेमें उपरोक्त प्रकारका सभी सामान तैयार होता है कारखानेमें आधुनिक यंत्रों और सुविधाओंकी प्रचुरता है।

२ कलकत्तेके फोनिक्स वर्क्समें इंजिन बनानेका काम होता है। यहां सभी प्रकारके साधारण इंजिन और जूट प्रेस वगैरः तैयार किये जाते हैं।

३ रोलिङ्ग वर्क्स गार्डन रीच कलकत्तेवाले कारखानोंमें पहिये और धुरेको छोड़कर डब्बोंके सभी भाग बनाये जाते हैं। रेलवे कम्पनियोंके आर्डर भी यह कारखाना लेता है। यहांतक कि जो भाग यहां बनाने नहीं दिये जाते वे भाग भी रेलवे बोर्डने विशेष स्वीकृति प्राप्तकर आवश्यकता पर इस कार खानेसे बनवाये हैं।

गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्ट्री काशीपुर और ईसापुर

इस कारखानेके आकार प्रकारका अनुमान इसीसे हो जायगा कि इसमें ६ हजारसे अधिक श्रमजीवी काम करते हैं। इस कारखानेमें बंदूक और राइफलें तथा गोले बनते हैं। इसमें फौला दको तैयार करनेका विशेष रूपसे प्रबन्ध है। योरोपीय युद्धसे इस कारखानोंकी अच्छी उन्नति हुई है

रेशमके कीड़ोंकी गणना अण्डज योनिमें की जाती है। प्रथम ये अण्डेके रूपमें उत्पन्न होते हैं। अण्डे फूटनेके बाद ये छोटे छोटे कीड़ोंके रूपमें प्रकट होते हैं। फिर ये वृक्षकी पत्ती खा कर बढ़ने लगते हैं और युवा अवस्थाको प्राप्त होते हैं। तदनन्तर ये अपने मुंहसे रेशम निकाल कर अपने चारों ओर एक प्रकारका वेष्टन बना कर उसीके अन्दर बन्दीकी तरह बन्द हो जाते हैं और कुछ समय बाद उस जालको काट कर ये तितलीके रूपमें बाहर निकलते हैं। इसके उपरांत प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक नियमानुसार मादी तितली नर तितलीकी सहायतासे अण्डे देती है और तब अपनी लीला समाप्त कर मर जाती है। उपरोक्त कौतुक पूर्ण परिवर्तनके आधार पर ही रेशमके कीड़ोंकी जातियां स्थिरकी गयी हैं। वर्षमें एक बार परिवर्तन क्रमको पूरा करने वाले कीड़ोंकी एक जाति मानी गयी है। वर्षमें दो बार परिवर्तन क्रमको करने वालोंकी जाति दूसरी मानी गई है। इस प्रकारके कीड़े प्रायः चीनमें ही अधिक पाये जाते है। वहीं से ऐसे कीड़ोंका प्रसार योरोपमें हुआ है। कुछ ऐसे कीड़े भी पाये जाते हैं जो वर्षमें तीन बार काया पलटका करिश्मा दिखाते हैं। परन्तु इन कीड़ोंमें कुछ ऐसी भी जातियां हैं जो वर्षमें चार बारसे आठ बार तक अपना कलेवर बदलते हैं। इस प्रकार कीड़ोंकी जातियां निश्चितकी गयी हैं। चीन, जापान और योरोपमें मिलने वाले पालतू कीड़ोंमें प्रायः वर्षमें दो बार काया पलटने वाले ही कीड़े अधिक मिलेंगे परन्तु भारतमें तीन बारसे लगा कर आठ बार कौतुक दिखाने वाले कीड़े भी मिलते हैं। जंगली कीड़ोंमें टसर, मूंगा और अण्डी यह तीन प्रकारके ही कीड़े पाये जाते हैं।

कीड़ोंका भोजन

'पालतू' कहे जाने वाले रेशमके कीड़ोंका एक मात्र खाद्य पदार्थ शहतूतकी पत्तियां हैं। अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तियां खिलानेके प्रयोग असफल सिद्ध हुए हैं। जंगली कीड़े शहतूतके अतिरिक्त अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तियां खाकर भी जीवित रहते हैं और रेशम उत्पन्न करते हैं। ये कीड़े जिन वृक्ष विशेषकी पत्तियां खाकर जीवित रहते हैं उनमें महुआ, कचनार, सेमर, करौंदा, मालकागनी, बेल, जामुन, कामरूप, अरंडी, मागौन, अर्जुन, जंगलीबदाम, असन और बेरके नाम अधिक उल्लेखनीय हैं।

कीड़े

अण्डोंके ऊपर रखते हुए ढक्कनका मुंह खुला रहता है और उसपर चलनीके समान छिद्रदार एक कागज रख दिया जाता है। अण्डे फूटते ही उनमेंसे कीड़े निकल कर घूमने लगते हैं। उनकी भूख बढ़ जाती है और वे उसे शान्त करनेके लिये दौड़ पड़ते हैं। नवजात कीड़े छोटे छोटे छिद्रोंके द्वारा बाहर निकलते हैं। ऐसा करते समय कीड़ेके शरीरपर लगा हुआ अण्डेका दूषित पदार्थ छिद्रोंके

निक पद्धतिके अनुसार कई प्रकारका कच्चा माल एक साथ ही भट्ठीमें गलाया जाता है। इस कारखानेमें भी यही व्यवस्था है। इस काममें लगनेवाला चूना सतनासे कम्पनी मंगाती है।

इस कारखानेमें मुख्यतया पाइप और बड़े आकारके पहलूदार लौह स्तम्भ ढाले जाते हैं। यहां फौलाद और चद्दर बनानेकी भी व्यवस्था है। कारखानेमें काम करनेवाले श्रमजीवी वर्गके लिये रहनेका प्रबन्ध भी कम्पनीकी ओरसे है। स्वच्छ जल और डाक्टरोंकी व्यवस्था भी उनके लिये अच्छी है

मेसर्स बर्न एण्ड को० लि० वर्क्स—हवड़ा

यह कारखाना हुगली नदीपर हवड़ाकी ओर है। नदीका विस्तृत पाट जहाज बनाने और माल उतारने तथा चढ़ानेके काममें अच्छी सुविधाका सिद्ध हुआ है। इस कारखानेका काम चार विभागोंमें विभक्त है। एक विभागमें गलाने, ढालने और इंजिनका काम होता है। दूसरेमें लोहेके पुल और बड़े २ गार्डर्स बनाये जाते हैं। तीसरेमें रेलके डब्बे बनाते हैं और चौथेमें जहाज बनानेका काम होता है। यह कारखाना बहुत बड़ा है। इसकी लम्बाई १२०० फीट है। यहां सभी प्रकार मजबूत और अच्छा माल तैयार होता है।

मेसर्स जेसप एण्ड को० वर्क्स

इस कम्पनीके तीन बड़े बड़े लोहेके कारखाने हैं। इसका :—

१ हवड़ावाला कारखाना पुल बनाने और इमारती सामान तैयार करनेका काम करता है। यहां लोहा गलानेकी भट्ठी भी है। इस कारखानेमें उपरोक्त प्रकारका सभी सामान तैयार होता है। कारखानेमें आधुनिक यंत्रों और सुविधाओंकी प्रचुरता है।

२ कलकत्तेके फीनिक्स वर्क्समें इंजिन बनानेका काम होता है। यहां सभी प्रकारके साधारण इंजिन और जूट प्रेस वगैरः तैयार किये जाते हैं।

३ गेलिक वर्क्स गार्डन रीच कलकत्ते वाले कारखानेमें पहिये और धुरेको छोड़कर डब्बोंके सभी भाग बनाये जाते हैं। रेलवे कम्पनियोंके आर्डर भी यह कारखाना लेता है। यहांतक कि जो भाग यहां बनाये नहीं किये जाते वे भाग भी रेलवे बोर्डने विशेष स्वीकृति मानकर आवश्यकता पर इस कारखानेसे बनवाये हैं।

गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्टरी काशीपुर और ईसापुर

इस कारखानेके आकार प्रकारका अनुमान इसीसे हो सकता कि इनमें ६ हजारसे अधिक श्रमजीवी काम करते हैं। इन कारखानोंमें बंदूक और कारतूसें तथा तोपें बनते हैं। इसमें फौलादको तैयार करनेका विशेष रूपसे प्रबन्ध है। पिछले युद्धने इन कारखानोंकी अच्छी उन्नति हुई है

तितली

रेशमकी तितलीका रंग मटमैला होता है और वह देखनेमें बहुत ही भद्दी होती है। नर तितली देखनेमें छोटी और दुर्बल होती है और मादीका शरीर अपेक्षा कृत बड़ा और हृष्टपुष्ट होता है। कोषसे निकलते ही नर और मादी परस्पर एक दूसरेको ढूंढनेमें वियोग विह्वलतासे उतावले हो जाते हैं। दोनोंमें मेल होते ही प्राकृतिक नियमके अनुसार मादी गर्भवती हो जाती है। इस समय बड़ी सावधानीसे काम लिया जाता है। नर तितली उड़ा दी जाती है और गर्भवती मादी तितली प्रकाश रहित सुरक्षित स्थानमें पाली जाती है। कुछ समय बाद वह अण्डे देती है जो उपरोक्त पद्धतिके अनुसार पाले पोषे जाते हैं।

यह है रेशमके कीड़ोंकी जीवनचर्या और रेशम नामक बहुमूल्य वस्तुकी उत्पत्तिका संक्षिप्त इतिहास।

कीड़ोंकी बीमारी

रेशमके कीड़ोंमें जितने प्रकारकी बीमारियां फैलती हैं वे प्रायः सभी सांसर्गिक स्वभावकी होती हैं ऐसी दशामें इस प्रकारकी बीमारियोंके रोकनेका सबसे सरल उपाय यही है कि सूक्ष्मदर्शी यंत्रसे परीक्षाकर रोग प्रपीड़ित अण्डों और कीड़ोंको स्वस्थ अण्डे और कीड़ोंसे अलगकर देना चाहिये।

कुछ बीमारियां ऐसी भी होती हैं जो कीड़ोंके मर जानेके बाद प्रकट होती हैं। रासा (Rasa) नामकी बीमारी प्रायः वर्षा ऋतुमें ही होती है। जिस समय कई दिनतक पानीकी झड़ी लगी रहती है उस समय कीड़ोंको पानीकी भीगी पत्तियां खिलायी जाती हैं। भीगी पत्तियां स्वभावतया हानिकर होती हैं और कीड़ोंमें रोग उत्पन्न करदेती हैं। झड़ी लगे रहनेमें यदि उपरोक्त सावधानी भी जोर पकड़ा भी बीमारी भयंकर रूपसे फूट निकलती है। इस लिये शहतूतकी झाड़ियों की पत्तियां न खिलाकर सूखी पत्ती खिलाना बुद्धिमानी है।

कीड़ोंकी बीमारीका प्रभाव कीड़ों द्वारा उत्पन्न होनेवाली रेशमकी जातिपर भयंकर रूपसे पड़ता है। रोग प्रपीड़ित कीड़ोंका रेशम बहुत ही नीचेकी श्रेणीकी होती है।

रेशम कैसे उत्पन्न होता है

अण्डे—रेशमके कीड़ेका अण्डा आकारमें बहुत ही छोटा होता है। १ ग्रेन वजनमें लगभग १०० अण्डे चढ़ जाते हैं। अण्डेकी लम्बाई १ मीलीमीटरके करीब होती है। ये देखनेमें कुछ चपटे और अंडाकार रंगके होते हैं। पानीको आधार मानकर निकाला गया इनका गुरुत्वाकर्षण १०८ डिग्रीका होता है। अण्डे स्वतन्त्र स्थानपर रखे जाते हैं। जिस समय तितली अण्डे देने लगती है उस

लिखा था कि सिकन्दरके जीवनकालके कुछ दिन पूर्व सेरे अथवा शीनियो-सीरिका;—भारतकी ओर झुका हुआ सीरियाका भूभाग-से ही पहिले पहल रेशमके कीड़े फारस लाये गये। योरोप वाले सम्राट जस्टिनके पूर्व रेशमके कीड़ोंसे परिचित न थे। फारस वालोने ही इन्हें सम्राटको उपहारमें दिया था। यह घटना पैमनटियम नगरकी है। इस प्रकार योरोपमें इस कलाका प्रसार हुआ। दूसरा मत श्रीयुत डिवेओ नामक एक रोमन लेखकका है। आपका कहना है कि सन ५३० ई० के लगभग कुस्तुन्तुनियाके सम्राट जस्टीनियम (Emperor Justinium) ने सेरिन्द (Serind) से रेशमके कीड़े ले आनेके लिये एक भिक्षुसे अनुरोध किया। इस मार्गका अनुसरण करनेका कारण राजनैतिक था। फारसवाले इस उद्योगमें अच्छी सफलता प्राप्त कर चुके थे और वे ही प्रायः योरोपवालोंको रेशमी वस्त्र पहुंचाते थे। परन्तु रोम और फारसमें कभी भी न बनती थी। अतः रोम वाले अपने शत्रु पक्ष पर रेशमके लिये आश्रित रहना ठीक न समझते थे। अतः एक भिक्षु द्वारा कीड़ोंका मंगाया जाना उचित और नीतियुक्त माना गया।

भारत

रेशमके कीड़ोंके विशेषज्ञोंने स्थिर किया है कि हिमालय पर्वत श्रेणीमें ११ हजार फीटकी ऊंचाईतक ये कीड़े अनादिकालसे मिलते हैं। अतः भारतमें रेशमके औद्योगिक विकासके लिये यथेच्छ विस्तृत क्षेत्रका मिलना कितना स्वाभाविक है यह अवश्य ही युक्तियुक्त है। फिर भी पाश्चात्य पुरातत्ववेत्ताओंकी विचार पद्धतिकी चर्चा यहां संयोग वश कर देना अनुचित न होगा। इन लोगोंका मत है कि सम्भवतः एशियाके मध्य भागसे ये कीड़े यहां लाये गये हों। पेरीप्लस (per plus) के सम्बन्धको लेकर कहा जाता है कि ये कीड़े बैकट्रियाके समीपवर्ती भूभागसे सिन्धु नदीकी ओर लाये गये और इन कीड़ोंसे उत्पन्न होनेवाली रेशम उस समयके समुन्नत व्यवसाय केन्द्र बारीगजा-जिसे आजकल भड़ोच कहते हैं—में बिकनेके लिये लायी गयी। अस्तु चाहे जो हो पर हिन्दुओंके प्राचीन ग्रन्थ वेदोंमें भी रेशमकी चर्चा की गयी है।

उपरोक्त ऐतिहासिक विवरणसे स्पष्ट हो जाता है कि रेशमके कीड़ोंका प्रसार संसार भरमें किया गया और जहां जहां शहतूतके वृक्ष उपज सकते थे वहां वहां रेशमके व्यवसायने अच्छी उन्नति की।

रेशमके कीड़े

रेशमके कीड़े दो प्रकारके होते हैं एक पालतू और दूसरे जंगली। पालतू कीड़े वे हैं जो घरोंमें शहतूतकी पत्ती खिलाकर पाले जाते हैं जंगली कीड़े घरोंमें पाले नहीं जा सकते। वे जंगलमें ही रहते हैं और वहींके वृक्षोंकी पत्ती खा कर रेशम उत्पन्न करते हैं।

रचनामें लीन हो जाता है। यह लार जो ऐसी परिस्थितिमें सूजे हुए छिद्रोंसे निकलती है प्रकाशमें आकर ज्यों ही वायुके झोंकेका अनुभव करती है त्यों ही सूखकर कठिन हो जाती है और रेशम तन्तु कहाती है। यह तन्तु फाइब्रोइन (Fibroin) का बना होता है और रेशमके गोंद सेरीसिन (Sericin) का खोल इसपर चढ़ा रहता है। इस खोलपर एक प्रकारके रंगकी रेखा भी रहती है। यह रंगदार पदार्थ कीड़ेके उन्हीं छेदोंके मुंहपर रहता है। तरल पदार्थके बाहर आते ही यह रंग उसकी ऊपरी तहपर चढ़ जाता है। सफेद तन्तु पीलेकी अपेक्षा कम लचीले होते हैं परन्तु इनसे कहीं अधिक मोटे और मजबूत होते हैं।

कोष बनानेका पूरा कार्य कीड़ा २४ घन्टेमें समाप्त कर डालता है और वहीं बन्दी बन बैठ जाता है। यदि कोषको ऐसे समयमें देखा जाय तो कीड़ा मृत प्रायः और रंगमें सफेद मालूम होगा। आकार उसका छोटा हो जायगा पर श्वासोच्छ्वास नियमित रूपसे जारी रहेगा। कोषमें बन्द हो जानेके तीन दिन बाद यदि कोषको खोल कर कीड़ा देखा जाय तो वह भारी काया पलटके कारनामेको वस्तु सा प्रतीत होगा। न तो वह आकार प्रकार और न वह रूपरेखा। सभी बातें बदली हुई मिलेंगी। वहां होगा सिर्फ मांसका एक सुकोमल पिण्ड। जिसे देख न तो कीड़ेकी स्मृति जागृत होगी और न तितलीकी आकृतिका ही भान होगा। जब यह मांसका पिण्ड सूख और सिकुड़ कर बादामके आकारका हो जाता है तब पिण्डका ऊपरी छिलका कुछ कठिन सा हो जाता है और पतला भी पड़ जाता है। इसीके अन्दर धीरे धीरे पकने और तितलीकी आकृतिका प्रतिबिम्ब दिखायी देने लगता है। ऊपरी छिलका फट जाता है और तितली निकल कर उसी कोषमें रहती है। इसका सिर कोषके अन्दर वाली छतसे टकराता है और इसके मुंहसे (Alkaline acid) तेजाबी बूंदे टपक पड़ती हैं जिससे हालकी जमी हुई रेशम मुलायम हो जाती है और गोंद वाली जाली इधर उधर हट जाती है तथा तितली मार्ग पा बाहर निकल आती है। उस समय उसके पंख और शरीर भीगे हुए रहते हैं पर १५ मिनटके अन्दर ही वे सूख जाते हैं। इसके बाद ही संयोग वश सृष्टिकी रचनाका कार्य आरम्भ हो जाता है। मादी तितली लगभग ७ सौ अण्डे देती है जिनसे पुनः प्रकृतिकी चक्की चल पड़ती है। यह है विकासवादका एक कौतुक पूर्ण उदाहरण।

जंगली रेशमके कीड़े

उपरोक्त ढंग तो पालतू कीड़ोंका है, परन्तु जंगली कीड़ोंसे रेशम इकट्ठा करनेकी रीति बिलकुल भिन्न है। ये कीड़े घरोंमें पाले नहीं जा सकते। अतः इनकी देख रेख करना भी कुछ कम कठिन नहीं है। अगस्त मासमें जंगली लोग इनका बीज इकट्ठा कर रखते हैं और समयपर लोग जंगलोंमें बखेर देते हैं। जंगलमें जहां कीड़ोंके रहने योग्य वृक्षोंकी सुविधा होती है वहीं उपयुक्त स्थान

किनारोंपर साफ होकर रह जाता है। कीड़े जहां पाले जाते हैं वह स्थान विस्तृत और हव
है। वहां प्रकाशके पर्याप्त प्रवेशका प्रबन्ध रहता है। इस प्रकार वह स्थान साफ सुथरा
वहांकी वायु समशीतोष्ण एवं स्निग्ध रहती है। उस स्थानका तापमान नियमित और नियंत्रि
है। ६२° फ० से ७८° फ० तककी उष्णता कीड़ोंको हानिकार नहीं होती। इससे अधिक
वे सहन नहीं कर सकते। कम उष्णतामें वे अवश्य ही जीवित रह सकते हैं। जितनी कम उष्णता
उतना ही अधिक समय वे वयस्क होनेमें लगायेंगे। परन्तु कम उष्णतामें वे अधिक स्वस्थ और
होते हैं। उनका कोष्ट बड़ा और रेशम भी अच्छी होती है।

कोष

उपरोक्त परिवर्तन क्रमको पारकर कीड़े अपनी युवा अवस्थामें प्रवेश करते हैं और उस
समयसे रेशम उत्पन्न करनेकी तैयारीमें लग जाते हैं। इसकी सबसे अच्छी पहिचान यह है कि वे
खाना छोड़ देते हैं। पालनेवाले उनके रहनेके स्थानमें कुछ नकली झाड़ियां बनाकर खड़ी कर देते हैं।
कीड़े इन्हीं झाड़ियोंके आसपास घूमने और चढ़ने लगते हैं। वे अपने मुंहसे एक प्रकारकी लार
निकालकर अपने चारोंओर लपेटने लगते हैं। इन कीड़ोंकी इस लारमें यही एक विचित्र विशेषता है
कि वायु और प्रकाशके सम्मिलित सम्पर्कमें आकर वह कठिन और चमकीली हो जाती है और रेशम-
का नाम ग्रहण करती है। कीड़ा जिस समय रेशमका तार निकालने लगता है उस समय पालनेवाले
एक कीड़ेको दूसरे कीड़ेसे दूर हटाकर रेशमके तारको उलझनेसे बचाते हैं। असावधानीसे रेशम
परस्पर मिलकर उलझ जाती है और वही फिर नीचे श्रेणीकी करार दी जाती है। तीन चार दिनमें
कीड़े अपना काम पूराकर कोपको बंदकर बंदीकी भांति उसीमें बन्द हो जाते हैं। दो तीन दिनके
बाद कोप इकट्ठे कर लिये जाते हैं और गर्म पानीमें डालकर व्यवसाय योग्य बना लिये जाते हैं।
यदि गर्म पानीकी क्रियामें विलम्ब हो जाय तो कोपका बन्दी कीड़ा अपनी काया पलटकर नितलीके
रूपमें बाहर निकल आता है। ऐसा करनेसे रेशमके तन्तु कट जाते हैं और वे पुनः सुलझाये नहीं जा
सकते। अतः रेशम नष्ट हो जाती है और व्यवसायको भारी क्षति पहुंचती है।

कुछ कोप ऐसे भी रख छोड़े जाते हैं जिन्हें गर्म पानीमें डाला नहीं जाता। वे बीज मानकर
अलग कर दिये जाते हैं। अवधि समाप्त होनेपर उनसे बन्दी कीड़ा मटमैली नितलीके रूपमें अपना
कलेवर बदलकर बाहर निकलता है। बीजवाले कोप समूहको इकट्ठाकर ६६° फ से ७२° फ तककी
उष्णतामें रखते हैं। यहां वे ११ से १५ दिन तक जानकारोंकी देखरेखमें रक्खे जाते हैं। इस अवधिके
समाप्त होते ही बन्दी कीड़ा कोपको रेशमको इधर उधर हटाकर नितलीके रूपमें बाहर निकल
आता है।

रचनामें लीन हो जाता है। यह लार जो ऐसी परिस्थितिमें सूजे हुए छिद्रोंसे निकलती है प्रकाशमें आकर ज्यों ही वायुके झोंकेका अनुभव करती है त्यों ही सूखकर कठिन हो जाती है और रेशम तन्तु कहाती है। यह तन्तु फाइब्रोइन (Fibroin) का बना होता है और रेशमके गोंद सेरीसिन (Sericin) का खोल इसपर चढ़ा रहता है। इस खोलपर एक प्रकारके रंगकी रेखा भी रहती है। यह रंगदार पदार्थ कीड़ेके उन्हीं छिद्रोंके मुंहपर रहता है। तरल पदार्थके बाहर आते ही यह रंग उसकी ऊपरी तहपर चढ़ जाता है। सफेद तन्तु पीलेकी अपेक्षा कम लचीले होते हैं परन्तु उससे कहीं अधिक मोटे और मजबूत होते हैं।

कोप बनानेका पूरा कार्य कीड़ा २४ घन्टेमें समाप्त कर डालता है और वहीं बन्दी बन बैठ जाता है। यदि कोपको ऐसे समयमें देखा जाय तो कीड़ा मृत प्रायः और रंगमें सफेद मालूम होगा। आकार उसका छोटा हो जायगा पर श्वासोच्छ्वास नियमित रूपसे जारी रहेगा। कोपमें बन्द हो जानेके तीन दिन बाद यदि कोपको खोल कर कीड़ा देखा जाय तो वह भारी काया पलटके कार-खानेकी वस्तु सा प्रतीत होगा। न तो वह आकार प्रकार और न वह रूपरेखा। सभी बातें बदली हुई मिलेंगी। वहां होगा सिर्फ मांसका एक सुकोमल पिण्ड। जिसे देख न तो कीड़ेकी स्मृति जागृत होगी और न तितलीकी आकृतिका ही भान होगा। जब वह मांसका पिण्ड सूख और सिकुड़ कर बादामके आकारका हो जाता है तब पिण्डका ऊपरी छिलका कुछ कठिन सा हो जाता है और पतला भी पड़ जाता है। इसीके अन्दर धीरे धीरे पखने और तितलीकी आकृतिका प्रतिबिम्ब दिखायी देने लगता है। ऊपरी छिलका फट जाता है और तितली निकल कर उसी कोपमें रहती है। इसका सिर कोपके अन्दर वाली छतसे टकराता है और इसके मुंहसे (Alkaline acid) के भारी बूंदें टपक पड़ती हैं जिससे हालको जमी हुई रेशम मुलायम हो जाती है और गोंद वाली जाली इधर उधर हट जाती है तथा तितली मार्ग पा बाहर निकल आती है। उस समय उसके पंख और शरीर भीगे हुए रहते हैं पर १५ मिनटके अन्दर ही वे सूख जाते हैं। इसके बाद ही संयोग वश सृष्टिकी रचनाका कार्य आरम्भ हो जाता है। मादी तितली लगभग ७ सौ अण्डे देती है जिनसे पुनः प्रकृतिकी चक्की चल पड़ती है। यह है विकासवादका एक कौतुक पूर्ण उदाहरण।

जंगली रेशमके कीड़े

उपरोक्त ढंग तो पालतू कीड़ोंका है, परन्तु जंगली कीड़ोंसे रेशम इकट्ठा करनेकी रीति बिलकुल भिन्न है। ये कीड़े घरोंमें पाले नहीं जा सकते। अतः इनकी देख रेख करना भी कुछ कम कठिन नहीं है। अगस्त मासमें जंगली लोग इनका बीज इकट्ठा कर रखते हैं और समयपर लोग उन्हींसे खरीद लेते हैं। जंगलमें जहां कीड़ोंके खाने योग्य वृक्षोंकी सुविधा होती है वहीं उपयुक्त स्थान

...रोपर साफ होकर रह जाता है। कीड़े जहां पाले जाते हैं वह स्थान विस्तृत और हवादार
है। वहां प्रकाशके पर्याप्त प्रवेशका प्रबन्ध रहता है। इस प्रकार वह स्थान साफ सुथरा रहता
वहांकी वायु समशीतोष्ण एवं स्निग्ध रहती है। उस स्थानका तापमान नियमित और नियंत्रित र...
है। ६२° फ० से ७८° फ० तककी उष्णता कीड़ोंको हानिकार नहीं होती। इससे अधिक उष्ण...
वे सहन नहीं कर सकते। कम उष्णतामें वे अवश्य ही जीवित रह सकते हैं। जितनी कम उष्णता होग...
उतना ही अधिक समय वे वयस्क होनेमें लगायेंगे। परन्तु कम उष्णतामें वे अधिक स्वस्थ और सबल
होते हैं। उनका कोष्ट बड़ा और रेशम भी अच्छी होती है।

कोष

उपरोक्त परिवर्तन क्रमको पारकर कीड़े अपनी युवा अवस्थामें प्रवेश करते हैं और उसी
समयसे रेशम उत्पन्न करनेकी तैयारीमें लग जाते हैं। इसकी सबसे अच्छी पहिचान यह है कि वे
खाना छोड़ देते हैं। पालनेवाले उनके रहनेके स्थानमें कुछ नकली झाड़ियां बनाकर खड़ी कर देते हैं।
कीड़े इन्हीं झाड़ियोंके आसपास घूमने और चढ़ने लगते हैं। वे अपने मुंहसे एक प्रकारकी लार
निकालकर अपने चारोंओर लपेटने लगते हैं। इन कीड़ोंकी इस लारमें यही एक विचित्र विशेषता है
कि वायु और प्रकाशके सम्मिलित सम्पर्कमें आकर वह कठिन और चमकीली हो जाती है और रेशम-
का नाम ग्रहण करती है। कीड़ा जिस समय रेशमका तार निकालने लगता है उस समय पालनेवाले
एक कीड़ेको दूसरे कीड़ेसे दूर हटाकर रेशमके तारको उलझनेसे बचाते हैं। असावधानीसे रेशम
परस्पर मिलकर उलझ जाती है और वही फिर नीचे श्रेणीकी करार दी जाती है। तीन चार दिनमें
कीड़े अपना काम पूराकर कोषको बंदकर बंदीकी भांति उसीमें बन्द हो जाते हैं। दो तीन दिनके
बाद कोष इकट्ठे कर लिये जाते हैं और गर्म पानीमें डालकर व्यवसाय योग्य बना लिये जाते हैं।
यदि गर्म पानीकी क्रियामें विलम्ब हो जाय तो कोषका बन्दी कीड़ा अपनी काया पलटकर तितलीके
रूपमें बाहर निकल आता है। ऐसा करनेसे रेशमके तन्तु कट जाते हैं और वे पुनः सुलझाये नहीं जा
सकते। अतः रेशम नष्ट हो जाती है और व्यवसायको भारी क्षति पहुंचती है।

कुछ कोष ऐसे भी रख छोड़े जाते हैं जिन्हें गर्म पानीमें डाला नहीं जाता। वे बीज मानकर
...लग कर दिये जाते हैं। अवधि समाप्त होनेपर उनसे बन्दी कीड़ा मटमैली तितलीके रूपमें अपना
...लेवर बदलकर बाहर निकलता है। बीजवाले कोष समूहको इकट्ठाकर ६६° फ से ७२° फ तककी
...ष्णतामें रखते हैं। यहां वे ११ से १५ दिन तक जानकारोंकी देखरेखमें रक्खे जाते हैं। इस अवधिके
...प्त होते ही बन्दी कीड़ा कोषकी रेशमको इधर उधर हटाकर तितलीके रूपमें बाहर निकल
...ा है।

स्थानमें सन् १७५० ई० में एक उद्योग शाला स्थापित की और वहीं खोजका कार्य आरम्भ किया गया। इस समय तक इस उद्योगमें पूर्ववालोंका ही प्रधान स्थान रहा। १९ वीं शताब्दीके आरम्भ से योरोपवालोंने इस ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया और थोड़े ही दिनोंमें वै[illegible] पद्धतिका जन्म हुआ। इसकी व्यवहारिक कार्य शैली और परिणामकारी सफलताको देख कर [illegible]य देशवालोंने भी इसी पद्धतिका अनुसरण किया। तबसे यही सुधरी हुई परिपाटी संसारके समुन्नत देशोंमें पायी जाती है।

आज कल इस कार्यशैलीमें भी दो प्रकारके ढंग हो गये हैं जिनमेंसे एकको फ्रान्सीसी और दूसरेको इटेलियन कहते हैं।

फ्रान्सीसी पद्धतिके अनुसार दो तारसे चार और छ तार तक एकमें मिले हुए होते हैं और इटेलियनके अनुसार सुलझाई गयी रेशममें एक तारसे आठ तार तक एक ही में मिले हुए आते हैं। आज कल अमेरिकामें इस उद्योगमें भी बिजलीसे काम लिया जाने लगा है।

कच्ची रेशमकी वैज्ञानिक परीक्षा

साधारण कुसियारीका वजन १५ से ५० ग्रेन तक होता है। इसमेंसे ¾ भाग तो शुद्ध कुसियारी होती है और उसमेंसे भी केवल आधी ही अच्छे ढंगसे सुलझाई जा सकती है शेषमें कूड़ा करकट रहता है। अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि रेशमका एक कीड़ा कितना लम्बा रेशमका तार उत्पन्न करता है। फिर भी देखा गया है कि ५०० मीटरसे १२०० मीटर तक लम्बा तार निकलता है। जिसका वजन औसत कुसियारी पर १ किलोग्राम शुद्ध रेशमका बैठता है। रेशमके तारकी मोटाईके सम्बन्धमें लीक (Leek) नगरके सर थामस वार्डलेका मत है कि [illegible] से [illegible] इंच तकका मोटा तार होता है। स्मरण रहे यह पालतू कीड़ेकी रेशमका प्रमाण है पर जंगली कीड़ेकी रेशमका तार [illegible] से [illegible] इंच तक मोटा होता है।

रेशममें १० से १५ प्रति शत जलका भाग रहता है। यदि उसे २५० °F तक तपाया जाय तो वह अपना जलांश छोड़ देता है। यही कारण है कि जलांश रहित सूखी रेशम पर बिजली का तत्कालिक प्रभाव होता है। इसलिये रेशमके तंतु मुलायम रखनेके लिये उन पर ग्लेसरीनका प्रयोग किया जाता है। रेशमपर आक-साइड आफ लेड (Oxside of Lead) का कुछ भी प्रभाव नहीं होता पर उसको वह काला कर देता है। नाइट्रिक एसिडमें रेशम घुल जाता है पर ऊनपर इस एसिडका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। पिक्रिक एसिडसे रेशम चमकदार पीले रंगकी हो जाती है पर अन्य प्रकारके तन्तुपर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता है। सूक्ष्मदर्शी यंत्रसे देखनेपर रेशम छड़के समान सम और सीधी प्रतीत होती है पर दूसरे रेशे वैसे नहीं मालूम होते। इन्हीं कारणोंसे रेशमको ऊन तथा रूई आदिसे सहजमें प्रथक किया जा सकता है।

समय उसे कपड़ेपर बैठा देते हैं और वह उसी कपड़ेपर घूम घूमकर अण्डे देती है। अण्डे एक ढकन के नीचे सुरक्षित रखकर सिरजे जाते हैं।

कीड़ेकी जीवनचर्यापर एक वैज्ञानिक दृष्टि

रेशमके कीड़ोंके अण्डोंका वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार यदि विश्लेषण किया जाय तो उसमें प्रधान रूपसे मिले हुए पदार्थ ये होंगे:—

१.	फास्फोरिक एसिड	५३.८	प्रतिशत
२.	पोटेशियम	२६.५	,,
३.	मेग्नेशियम	१०.५	,,
४.	कैल्शियम	६.४	,,

अण्डा रखनेके बादसे ही ऑक्सीजनके सूखनेका काम आरम्भ हो जाता है और परिणाम यह होता है कि अण्डेका कार्बोनिक एसिड और जल कम हो जाता है। यही कारण है कि फूटनेके समय अण्डेका वजन कम पड़ जाता है। इसी प्रकार अण्डेका रंग भी क्रमशः बदलने लगता है। इसका रंग पहिले भूरा मालूम होता है, फिर नीला, बैंजनी, पीला और अन्तमें फूटनेके समय तक बिलकुल सफेद हो जाता है। यह प्रकट परिवर्तन शीतकालकी अपेक्षा ग्रीष्मऋतुमें अधिक स्पष्ट दिखायी देता है।

एक ग्रेम वजनके अण्डेके समूहसे १ हजार २ सौ से १ हजार ५ सौ तक कीड़े उत्पन्न होते हैं। अण्डा जहां आकारमें १ मीलीमीटर लम्बा होता है वहां उससे उत्पन्न होनेवाला कीड़ा ३ मीलीमीटर लम्बा होता है और कीड़ेका वजन ·१½ मीलीग्रामका होता है। कीड़ा बढ़ने लगता है और ३३ से ३८ दिनतक उसकी लम्बाई ६ सेन्टीमीटरकी हो जाती है। इसी प्रकार इस ६ सेण्टी-मीटर लम्बे कीड़ेका वजन ५ ग्रामके करीब बैठता है।

इस कीड़ेके मुंहसे सटे हुए दो छोटे छेद होते हैं। जब यह युवाअवस्थामें प्रवेश करता है तो ये दोनों छेद कुछ सूज जाते हैं। इनकी बेचैनीसे उकता कर वह पत्ती खाना छोड़ देता है। उस समय मुंहमें पहिलेसे पहुंची हुई पत्तियोंको पचानेमें ही वह लगा रहता है। पाचनकार्य समाप्त करनेके बाद वह अपना मुंह इधर उधर खुजलाता है और परिणाम यह होता है कि मुंहसे सटे हुए उन सूजे हुए दोनों छिद्रोंसे एक एक बूंद पोटेशियम जो विशुद्ध होता है टपक पड़ता है। यदि इस व्यथित अवस्थामें उसको तोला जाय तो उसका वजन १ ग्रामके लगभग घटा हुआ मिलेगा। वह प्रपीड़ित अवस्थामें अपना शिर इधर उधर घुमाता है और जहां कहीं उसे रुकावट अनुभव हुई कि वह उसीको पकड़ कर चढ़ जाता है और अपने उन्हीं छिद्रोंसे तारकी भांति तरल पदार्थ निकाल कर रेशमकी

चीनी (भाफद्वारा सुलझाई हुईका)—२० से २३ प्रतिशत वजन कम हो जाता है।

कैन्टनका	—२० से २३	”	”	”	”	”	”
टसरका	—८ से १४	”	”	”	”	”	”

इस प्रकारकी सभी परीक्षा उपरोक्त कनडिशनिङ्ग मकानोंमें होती है पर वहां रेशमके ढेरकी कुछ ही गांठे परीक्षार्थ भेजी जाती हैं अतः पूर्ण रूपसे उसे परीक्षित नहीं माना जाता। विशेष प्रकारकी परीक्षा तो इन्स्पेक्टर लोग ही करते हैं। इनकी परीक्षा प्रमाणिक मानी जाती है। तारोंपर एक प्रकारकी कांजी देकर उन्हें कड़ा किया जाता है। अतः रेशमके सम्बन्धमें जहां उबालने, नमी दूर करने, और ११ प्रतिशत जलांश माननेकी परीक्षा होनी आवश्यक रहती है वहां तारों पर की गयी कांजीका हलका पन, तार लपेटनेका रंग, रङ्गोंके अनुसार रेशमकी छटाई और टेंकोंका मेल तैयार किया जाना भी देखना आवश्यक ही रहता है। रंगके अनुसार छांटी गयी रेशमसे कारखाने वालोंको रंगके सम्बन्धमें सुविधा मिल जाती है और वे सरलतासे जान लेते हैं कि कौनसे टेरकी रेशममें कौनसा रंग सरलतासे चढ़ानेमें सुविधा रहेगी।

फ्रान्सकी रेशम —	हलकी	या	गहरी	पीली	होती	है।	
इटली	”	”	”	”	”	”	”
स्पेन	” ”	”	”	”	”	”	”

जापान—ऊमैन, गिरूमेन, बुशीपूकी रेशम—मलाईकी भांति सफेद	
” मिनसीपू; मिनो, शिमोशा	साधारण रूपसे सफेद
” फोशू	मटमैली सफेद
चीन— शंघाईकी रेशम	बिलकुल सफेद
कैन्टन की रेशम	सफेदी मायल मलाईका रंग
लीवान्त—सलोनिका की रेशम	हलकी पीली,
एड्रियानोपल ” ”	बिलकुल सफेद
बल्गेरिया ” ”	मलाईका रंग
ब्रूसा ” ”	सफेदीमायल मलाईके रंगकी।
सीरिया ” ”	सुनहरी पीली
ककेशिया ” ”	हरी मायल
भारत—बंगाल ” ”	सोनेके समान चमकदार पीली।

अतः उपरोक्त प्रकारकी सभी परीक्षाओंके बाद ही रेशमकी श्रेणी निश्चित की जाती है

स्थान संसारमें सर्वोच है। फ्रान्सके रेशमी मालका भण्डार लियान्सके कार्योंमें भरा रहता है। फ्रांसके निर्यातमें बहुत बड़ा हिस्सा रेशमी मालका रहता है।

अमेरिकाके समान बड़ी बड़ी पूंजीसे हजारों मनुष्यों द्वारा चलनेवाले बड़े बड़े कारखानोंका लियान्समें पूर्णतया अभाव ही मिलेगा। यहां तो केवल तैयार मालके व्यापारियों और मिलवालोंके पारस्परिक सहयोगके बलपर ही सारा काम होता है। लियान्समें व्यापारियोंके कारखाने नहीं हैं वे लोग अपने आर्डर जुलाहोंको देते हैं और डिजाइनके अनुसार अच्छे से अच्छा माल उनसे लेते हैं। शेष समयमें लियान्सके व्यवसायी संसारमें फेशनके उतार चढ़ाव तथा जन-समाजकी ऊँची नीची अभिरुचि-का अध्ययन किया करते हैं और इस अनुभवके अनुसार माल तैयार कराते। इस काममें इन व्यापारियोंको मालका डिजाइन तैयार करनेवाले कारखानेवाले जुलाहे रंगसाज और तैयार मालको बाजारमें बेचने योग्य सजधज एवं रूप रंगका स्वरूप देनेवालोंका पारस्परिक सहयोग मिलता है। अतः लियान्सके व्यवसायी अपने प्रतियोगियोंसे सदैव बाजी मार लिया करते हैं। लियान्स नगरमें आज कल १५ हजारसे अधिक करघे नकाशीदार माल तैयार करनेका काम कर रहे हैं। यह अवस्था केवल नगरही की नहीं है वरन आसपासके गावोंमें भी किमखाप वगैरः बराबर तैयार होता है। यहांके रंग-साज बड़े ही अनुभवी और उच्च श्रेणीके माने जाते हैं। यहांका मनमोहक माल पेरिसके बाजारमें अपनी निराली छटाके साथ दिखायी देता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष इंग्लैण्ड, रूस, जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंके हजारों व्यापारी माल खरीदनेके लिये स्वयं पेरिसमें आकर यहांकी गलियोंमें चक्कर काटा करते हैं। लियान्स नगरके समीप ही सेन्ट इटने है जहां सभी प्रकारके रेशमी फीते बहुत अधिक तैयार होते हैं।

रेशमी मालमें लियान्सका सामान अभी तो सर्वोत्कृष्ट माना जाता है यहांके कौशलपूर्ण रेशमी मालका अच्छा संग्रह अजायब घरमें (Art musium of lyons) है। जिसे देखकर मंत्रमुग्ध हो जाना पड़ता है।

लीवान्त —इसके अन्तर्गत यूनान, बलगेरिया, सीरिया, फकेशिया, पर्शिया तथा साइप्रेस माने जाते हैं। यहां रेशम यथेष्ट रूपमें पैदा होता है पर यहांके व्यवसायपर योरोपवालोंका ही पंजा है। यहांकी कुमियारीका आधेसे अधिक भाग इटली और फ्रान्सको चला जाता है। यहां कुमियारीकी फसल जूनके अन्तमें तैयार होती है अर्थात् जापानकी फसलके ३ सप्ताह बाद और कैन्टनकी फसलके ६ सप्ताह बाद। कुमियारीसे रेशमके तार सुलझानेका काम जुलाईसे आरम्भ होता है। यहां कुमि-यारीके प्रधान बाजार ये हैं। ब्रूसा, मोउडानियां, इस्मिद, अदा बाजार, विलेजिक, ऐड्रियानोपल, स्लोनिका, यनाऊम, बेरुथ, और मिमिनों। इन बाजारोंके पास ही रेशम सुलझानेके कारखाने हैं। यहां

कैन्टन की रेशम गर्द्दार और कमजोर होती है। तथा उसका रंग सफेदी मायल होता है और तार कमजोरीके कारण सहजमें रंगा भी नहीं जा सकता।

क्वाङ्गटुङ्ग—प्रान्तमें प्रायः ५ सौ ऐसे कारखाने हैं जहां रेशम सुलझानेका काम होता है। यहां यूरोप भेजी जाने वाली रेशम एक विशेष प्रकारसे सुलझाई जाती है और अमेरिका भेजी जाने वाली दूसरी पद्धति से।

इण्डो चाइना—यह भूभाग फ्रान्सके शासनान्तर्गत है। यहां पाश्चात्य पद्धतिके अनुसार कीड़ोंका पालन करना आरम्भ किया गया है। इसी प्रकार रेशम सुलझानेके कारखानोंकी भी पूरी व्यवस्था पाश्चात्य पद्धतिके अनुसारकी गयी है। यहांके नाम-डिङ्ग (Nam Ding) और टाइबिङ्ग (Tai Bing) नामक स्थानोंकी रेशम कैन्टनकी रेशमसे अच्छी होती है। यहांकी रेशमकी फसल बादके सौदेकी भांति पहिले ही बिक जाती है। यहांकी रेशमकी प्रतिष्ठा और मांग लियान्स (फ्रान्स) के रेशमके कारखानोंमें बहुत है।

भारत - यहांका रेशम प्रायः ४ प्रकारका होता है जिसे क्रमशः शहतूनी मूंगा अरण्डी और टसरके नामसे पुकारते हैं।

शहतूनी - रेशम उत्तम प्रकारकी रेशम होती है। इसे पालतू रेशमके कीड़े शहतूतकी पत्ती खाकर पैदा करते हैं। यह प्रथम श्रेणीकी रेशमके अन्तर्गत मानी जाती है। भारतमें प्रायः शहतूनी रेशम मैसूर राज्य और उसीके समीप कोयम्बतूर जिलेके कोलेगाल तालुकेमें,बंगालके मुर्शिदाबाद, माल्दा, राजशाही और वीरभूमि जिलोंमें, काशमीर और जम्मूकी झेलमवादीमें, तथा इसी भूभागके पश्चात प्रान्त और सीमान्त प्रदेशमें अधिक उत्पन्न होती है। मैसूर और बंगालमें फ्रेंच और जापानी रेशम विशेषज्ञोंकी देखरेखमें काम चलाया गया है। काश्मीरमें भी पाश्चात्य पद्धतिके अनुसार रेशमका उद्योग आरम्भ किया गया है। इस प्रकार बँगलोर और श्रीनगरमें योरोपियन लोगोंकी देखरेखमें रेशम सुलझानेके बड़े कारखाने काम कर रहे हैं। मुर्शिदाबाद जिलेमें ५ बड़े बड़े कारखाने हैं जहां भारतीय पुराने ढंगसे रेशम सुलझाई जाती है। अकेले काशमीरसे प्रायः २ लाख रतल रेशम विदेश जाती है।

मूंगा—रेशम शहतूनी रेशमके कीड़ेके समान पालतू कीड़ेकी रेशम होती है। यह देखनेमें सुनहली चमकदार सुनहरे रंगकी होती है। यह मजबूत रेशममें मानी जाती है। यह साधारणतया आसाममें अधिक होती है। पर प्रधान रूपसे आसामके पूर्वीय भाग, नागा पहाड़ोंके पास, त्रिपुरा स्टेट तथा बर्मामें उत्पन्न होती है। इसी प्रकार कुमायूं और कांगड़ाकी घाटीमें भी मूंगा रेशम उत्पन्न होती है। इस रेशमके बीज कामरूपके बाजारमें बिकते हैं। इसका प्रधान बाजार गोहाटी डिब्रूगढ़ (आसाम) है।

भारतमें रेशमका व्यवसाय

भारतमें रेशमका व्यवसाय बहुत पुराने समयसे होता आया है। इसके उद्योग धन्धेका प्रधान केन्द्र बंगाल ही रहा है। यही कारण है कि भारतमें रेशमके व्यवसायकी चर्चा छिड़ते ही बंगालके विस्तृत औद्योगिक क्षेत्रका सहसा स्मरण हो आता है। बंगाल प्रान्तसे ही रेशमके कीड़े पालने, रेशम सुलझाने तथा रेशम बुननेकी कलाने भारतके अन्य प्रान्तोंमें प्रवेश किया। ईस्वी सन्‌की दूसरी शताब्दीमें भारतका रेशम और रेशमी माल योरोपके रोम नगरको जाता था। रोम सम्राट, यूरोपके धनकुबेरों, तथा ख्याति प्राप्त महापुरुषोंको संसारके किसी भी भागका रेशम सन्तुष्ट नहीं कर सकता था। क्योंकि वे भारतके मालपर ही लट्टू थे। बगदादके खलीफा लोग भी भारतकी ही रेशमका उपयोग करते थे। यह आरम्भ कालीन युगकी चर्चा है मध्यकालीन युगमें भी भारतके रेशमका व्यवसाय अच्छी उन्नत अवस्थामें था। नूरजहां ऐसी बेगमको भी भारतीय रेशमके कपड़ेकी धुनसी सवार थी, जब वह अपने प्रथम पतिके साथ बर्द्धवानमें रहती थी तो वीरभूमिका बना हुआ उच्च श्रेणीका रेशमी माल व्यवहार करती थी। बंगालके रेशमके उद्योगको प्रोत्साहन देनेके लिये उसने अधिकारियोंको रेशमी परिधानाच्छादित रहनेकी आज्ञा निकाली थी। इसीके बादका ऐतिहासिक प्रमाण बताता है कि उस समय माल्दाके किसी व्यापारीने तीन जहाज रेशमी माल रूसको भेजा था। अकेले माल्दा से प्रतिवर्ष ५० जहाज रेशमी सूती माल योरोप भेजा जाता था। टूवर्नियरका कहना है कि कासिम बाजारसे २२ लाख रतल रेशमकी लच्छियां विदेश गयीं थीं। भारतसे डच लोग प्रतिवर्ष ७० लाख रतल रेशमकी लच्छियां जापान और वृटेन भेजते थे। पर आज उसी बंगाल प्रान्तमें रेशमके उद्योगका एक प्रकारसे अन्त हो चुका है। एक वह भी समय था जब इस प्रान्तके रेशमी उद्योगके समान अतुल वैभवका परिचय प्रथम बार पा* डच और अंग्रेज अपनेको कृतार्थ मान बैठे थे। और एक दिन आज है भारत रेशमी मालके लिये विदेशपर निर्भर रहता है। एक दिन वह था जब यहांका माल कड़े प्रतिबन्धके होते हुए भी वृटेनके बाजारमें अपने प्रतियोगियोंको मुंह की खिलाता था इस प्रतियोगिताका विवरण † सर जार्ज

* इस घटनाका मनोरञ्जक विवरण देखिये *Early Annals of the English in Bengal By C. R. Wilson.*

† "*A law was passed by which all wrought Silk mixed stuff and figured Calicoes—the manufactures of Persia, China, and East Indies was forbidden to be worn or otherwise used in Great Britain. It was practically designed for the protection of the Spitalfields Silk Manufacture but proved of little or no avail against the prodigious importation and tempting cheapness of Indian piece-goods at that time.* (*Industrial India by Sir George Birdwood*)

और श्रेणीके अनुसार ही यह भी निश्चय किया जाता है कि किस श्रेणीकी रेशम किस प्रकारके काममें आती है।

रेशमके औद्योगिक केन्द्र

योरोपमें रेशमकी उपजके प्रधान केन्द्र इटली और फ्रान्स माने जाते हैं।

इटली—संसारमें उत्पन्न होनेवाली रेशमकी दृष्टिसे इटलीका स्थान बड़े महत्वका माना जाता है। रेशम सुलझानेके यहां १०३६ से अधिक कारखाने हैं। जहां अनुमाननया एक करोड़से एक करोड़ बीस लाख रतल कची रेशम सुलझाई जाती है। यहां प्रतिवर्ष १ करोड़ २० लाख रतल कुसियारी विदेशसे आती है जिसको सुलझाकर रेशम तैयार की जाती है।

यहांवाले कुसियारीकी छटाई इस प्रकार करते हैं।

१ खुली कुशियारी—जिसमें कीड़ेका काम अधूरा रह जाता है।

२ मुन्दी कुशियारी—जिसमें कीड़ा काम समाप्त करनेके पहिले ही मर जाता है।

३ गंदी कुशियारी—जिसमें कीड़ा मर जानेसे दुर्गंध आती है।

४ अधरी कुशियारी—जो कार्ती जाती है।

५ दोहरी कुशियारी—जिसमें दो कीड़ोंका काम उलझ जाता है।

इटलीमें कुशियारीका मूल्य दो प्रकारसे होता है। एक तो प्रत्येक स्थानका चेम्बर आफ कामर्स मूल्य स्थिर कर देता है और दूसरे बाजारका सेरीकल्चरल एसोसियेशन। रेशमके व्यवसाय सम्बन्धी सभी झगड़ोंका फैसला यहांका सिल्क एसोसियेशन करता है।

रेशमके उद्योगको प्रोत्साहन देनेके लिये यहां सब प्रकारकी सुविधायें हैं। रेशमके कारखानोंमें काम करनेवालोंके जीवनका बीमा रहता है। मिलानोंके सेरिका एसोसियेशनकी ओरसे रेशम सम्बन्धी औद्योगिक शिक्षाके लिये सायंकालके क्लास हैं और कमो (Camo) नगरमें रेशमके कीड़े पालनेकी शिक्षा देने तथा रेशमकी औद्योगिक शिक्षाका एक आदर्श कालेज भी है।

फ्रांस—संसारमें उत्तम रेशम और उत्तम रेशमी माल तैयार करनेमें फ्रान्स प्रधान केन्द्र माना जाता है। यहांके कारखानोंके लिये कुशियारी प्रायः यूनान, तुर्की, बलगेरिया, सीरिया, तथा ककेशियासे ही अधिक परिमाणमें आती है और मार्सेलीज नामक बन्दरके बड़े २ गुदामोंमें भरी रहती है। यहां अनुमाननया १६१ रेशमके कारखाने हैं। फ्रांसके रेशमका प्रधान औद्योगिक केन्द्र लियान्स (Lyons) है।

रेशमका सबसे अधिक परिमाण तो अमेरिकामें मिलता है पर मालकी उत्तमता, मालका मानव अभिरुचि जनित मनमोहक रंगढंग, एवं मालकी तड़क भड़क आदिके सम्बन्धमें फ्रान्सका

जापान सरकारका कानून है। जापान सरकारने एक कानून पास किया था जिसके सम्बन्धमें लिखा है कि—The yamamai is so highly prized in Japan that by law, capital Punishment may be meled out to any person Exporting the seed cocoons or eggs कुसियारी विदेश भेजने वालेको प्राण दंड तक दिया जाता था।

भारतमें रेशमके व्यवसायमें भी अवस्था तो यह है कि यहां रेशमके बीज तक कोई संचित नहीं रखता और न किसीका ध्यान ही इस ओर है। इसके प्रतिकूल यहां बाजारमें सरकार और प्राइवेट फर्मे कुसियारी बीज बेचती हैं। कीड़े पालनेवाले इसे बिना परीक्षा किये खरीदते हैं। बीमार और छूतदार अंडोंके कारण रेशमकी पूरी फसल नष्ट हो जाती है। जमींदारोंने शहतूत बोये जाने वाले खेतोंका लगान बहुत बढ़ा रक्खा है। अतः बाध्य होकर जंगली शहतूतोंकी झाड़ियों पर रेशमके कीड़े पाले जाते हैं। यह आर्थिक उपज पर धक्का देता है और मालका मोल इतना बढ़ जाता है कि रेशम सुलझाने वाले इसे खरीद नहीं सकते जिससे विवश हो काम छोड़ बैठ जाते हैं। यह है रेशमके व्यवसायके सर्वनाशका स्वरूप।

इन सब कारणोंके अतिरिक्त देशके उद्योग धन्धेको मरणासन्न अवस्था पर ले जाने वाली भयानक शत्रु है विदेशियोंकी प्रतियोगिता जो नौकरशाहीकी मायावी 'मुक्तद्वार व्यापार' नीतिसे लालित पालित हो घूर घूर कर देख रही है।

मूगाडी—रेशमके कीड़े अर्धपालतू होते हैं वे लकड़ीके पत्ते खाते हैं। इस
मेंसे रेशम सुलझाया नहीं जा सकता अतः इसका रेशमी तार काटकर निकाला जाता है।
बंगालमें अधिक उत्पन्न होती है और आसाममें आसाम सिल्कके नामसे बिकती है।
यह चमकीला और मटमैले रंगका होता है, पर मजबूत बहुत होता है, इसका प्रधान
गोहाटी और डिब्रूगढ़ है।

टसर—रेशम वास्तविक रूपसे जंगली रेशम है। यह बिहार उड़ीसा और मध्य प्र
अधिक उत्पन्न होती है। टसर प्रायः पीली, मटमैली, भूरी और हरी मायल भी देखी जाती
टसरके धोने, छानने और रंगनेकी युक्ति भी है जिससे यह चायना सिल्ककी भांति चमकीली
जाती है, इस प्रकारकी रेशमके प्रधान बाजार भागलपुर, बिलासपुर, चांपा, आदि हैं।

संसारके किन बाजारोंमें कौनसी रेशमकी मांग रहती है

भारतीय रेशम—यहांकी रेशमकी अधिक मांग यहींके कपड़ोंके लिये रहती है। पर उत्तम
श्रेणीकी रेशम फ्रान्स, इटली और ब्रिटेनके कारखानेवाले खरीदते हैं।

जापानी—अमेरिकन मिलोंमें जापानी रेशमकी मांग रहती है। वहांके आधेसे अधिक
खरीदार तो ऐसे हैं जो दूसरी रेशम छूते तक नहीं।

चाइना—मोटामाल तैयार करनेवाले रेशमके कारखाने ही इसे अधिक खरीदते हैं। यह
मोटी इटेलियन रेशमसे अच्छी होती है।

टैस्टलीस—रेशमसे सोनेकी रेशमका सूत तैयार करनेवाले अधिक खरीदते हैं। यह
मोटे मेलकी रेशम होती है।

टसर—यह रेशम जंगली होती है। कालीन बनानेवाले ही इस रेशमको खरीदते
हैं। यह रेशम कुछ तो काटन मिलवाले, कुछ मिलानेके लिये, तथा बिजलीके तार बनानेवाले मिल भी
खरीदते हैं। इसी प्रकार नकली सन्दूकस तथा नकली पोजी तैयार करनेवाले भी इसे खरीदते हैं।

कैंटन—क्रेप (Crepe de chine) तथा मखमल तैयार करनेवाले मिल खरीदते हैं।
इसे जापानी रेशमी सूतके साथ मिलानेका काम करनेवाले भी खरीदते हैं।

पीली इटेलियन—यह रेशम अमेरिकावाले ऊंचे दर्जेका माल तथा साटन तैयार कर-
नेके लिये खरीदते हैं। इस रेशमके वेस्ट मशहूर सूती मिलोंके हाथ बेचे जाते हैं।

सफेद इटेलियन—केवल भूभागकी बुरिलायोंसे यह रेशम इटलीमें तैयार की जाती
है। एड्रियानोपलकी अच्छी रेशम चीनी रेशमकी भांति होती है और उसीके समान बिकती है।
कोंकी रेशम यदि मोटी और सस्ती जापानी रेशमकी भांति हो तो इसकी भी मांग बढ़ सकती है।

२०

"By far the most important seat of Hindu maritime power of the times in Bengal was that established at Chandi kan or Sagar Island, by the constructive genius of Pratapdity the redoubtable ruler of Jessore" अर्थात् उस समय बंगालमें हिन्दुओं की जल सेनाका प्रधान केन्द्र सागर द्वीपमें था। यह जेसोरके प्रतिभाशाली शासक प्रतापादित्य द्वारा स्थापित की गयी थी। उपरोक्त इतिहास विशेषज्ञने इस हिन्दू शासकके सम्बन्धको लेकर जो कुछ लिखा है उससे यही प्रतीत होता है कि प्रतापादित्यके जहाज सदैव सैनिक सजधजसे रहते थे इन्होंने तीन ऐसे केन्द्र स्थापित किये थे जहां जहाज बनाये जाते, जहाजोंकी मरम्मत की जाती तथा जहाज रहा करते थे। इनके यहां जलयान सेनामें एक पोर्तुगीज ऐडमिरल था जिसका नाम रोडा (Rodda) था। प्रतापादित्यकी* जल सेनाने आदि गंगा और विद्याधरी नदीके संगम पर मोगल सैन्यको पराजित कर दिया था।

उपरोक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट हो जाता है कि सन् १४९५ ई० में यह नगर एक छोटेसे गांवके रूपमें था और इसके समीपवर्ती भूभाग पर प्रतापादित्य नामक एक हिन्दूराजा राज्य करता था जो पूर्ण रूपसे अपनेको स्वतन्त्र मानता था। इसके बाद ही योरोप वालोंका प्रवेश इस भूभागमें आरम्भ होता है।

सबसे प्रथम पोर्तुगीज वालों ने हुगली नदीमें सन् १५३० ई० के लगभग आना आरम्भ किया। हुगलीके पास ही प्राचीन सरस्वती नदीपर सतगांव नामक एक प्रभावशाली व्यापारी केन्द्र था अतः ये लोग वहीं आने लगे। फिर भी नदीके कम गहरी होनेके कारण इनके जहाज केवल गार्डन रीच तक ही आ सकते थे और वहांसे छोटी २ नावोंपर माल लादकर सतगांव पहुंचाया जाता था। इस प्रकारकी कठिनाइयोंके कारण ही शिवपुरके पास ही बेतोर गांवमें बाजार लगने लगा और पोर्तुगीज लोगोंने इसी स्थानपर अपना अड्डा जमाया। १६ वीं शताब्दीके अन्तिम कालमें सरस्वती बिलकुल सूख गयी और सतगांवका बाजार जो बेतोर बाजारके कारण पहिले ही शक्तिहीन हो चुका था सदाके लिये बन्द हो गया। यहांके कितने ही व्यापारी एवं नगर निवासी हुगली नगर में जा बसे पर ४ ऐसे परिवार थे जो वर्तमान फोर्ट विलियम नामक किलेके समीप गोविन्दपुर नामक स्थानमें गांव बसा कर वहीं रहने लगे। इसके कुछ समय बाद बेतोर खालीकर पोर्तुगीज लोग हुगली चले गये। इनके जानेके बाद बेतोर बाजारका व्यापार, हुगली न जाकर वर्तमान कलकत्तेके उत्तर सुतानटी नामक बाजारमें उठ गया। इसी सुतानटी बाजारमें सबसे प्रथम ईस्ट

* देखिये *History of Indian Shipping and Maritime Activity Page 218 by Pt. Radhakumud Mukerji.*

किलेमें घुस गये। यह किला न तो इतना सुदृढ़ ही था और न किले पर चढ़ी हुई तोपें ही काम दे सकती थी ऐसी दशामें किलेके अन्दर वाले भी अपने आपको सुरक्षित नहीं समझते थे। अतः कुछ अफसरोंको साथले किलेके पिछले द्वारसे गवर्नरने जहाजपर सवार हो हुगली नदीके जल मार्गसे भाग निकलनेमें विलम्ब न किया और किलेके शेष लोगोंके साथ हालवेलने नवावकी फौजके सम्मुख आत्म समर्पण कर दिया। दूसरे वर्ष सन् १७५७ ई० में क्लाइव और जल सेनापति ऐडमिरल वाटसनने कलकत्ते पर पुनः अधिकार कर लिया। इसके कुछ समय बाद प्लासीका इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ और उसके बाद मीरजाफरने अंग्रेजोंको २४ परगनेकी जमीदारी दे दी और साथ ही नगरके आसपासके कितने ही गांव उन्हें भेंट दे दिये। नगरके व्यापारियों और कम्पनीके सेवकों को यथेच्छ क्षति पूर्ति भी दी गयी और कम्पनीको टकसाल स्थापित करनेकी अनुमति भी मिल गयी।

इसी समयसे नगरकी उन्नति अबाधित रूपसे हो चली। नवाबसे क्षतिपूर्ति स्वरूप जो रकम मिली थी वह गोविन्दपुरके नगरनिवासियोंको उनकी स्थायी सम्पत्तिके प्रति मूल्य स्वरूप दे दी गयी और स्थान उनसे खरीद लिया गया। स्थान खाली हो जानेपर वहां वर्तमान फोर्ट विलियम नामक किला बनाया जाने लगा। यह किला सन् १७७३ में बन कर तैयार हो गया। इसके पासका जंगल साफ कर डाला गया और फलतः वर्तमान मैदान नामक स्थान तैयार हो गया। सन् १७६६ ई० में जेनरल अस्पताल अपने वर्तमान स्थानपर उठ आया। इसके बाद ही से चौरंगीके समीपवर्ती भूभागपर योरोपियन लोगोंकी बस्ती बसनी आरम्भ हो गयी। सन १७७३ ई० में पार्लामेन्टने एक नवीन कानूनकी रचना की, जिसके परिणाम स्वरूप कम्पनीके समस्त भारतीय कारोबारका नियंत्रण भार बंगालके सपरिषद् गवर्नरके हाथमें आया और वारेन हेस्टिङ्गने मुर्शिदाबादसे कम्पनीका खजाना कलकत्तेमें ला रक्खा।

इस प्रकार कलकत्ता नगर एक छोटेसे गांवसे उन्नतिकर कम्पनीके कारोबारका केन्द्र बन गया। इसकी उन्नतिमें यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनका बहुत बड़ा हाथ रहा है अतः प्रसंगवश उक्त कार्पोरेशनकी चर्चा भी कर देना आवश्यक प्रतीत होती है।

कलकत्ता कार्पोरेशन

कलकत्तेके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनका जन्म सन् १७२७ ई०में हुआ। कार्पोरेशनने एक मेयर तथा नौ एल्डरमैन इसप्रकार १० व्यक्तियोंकी एक समितिके रूपमें अपना कार्य आरम्भ किया। समितिके शैशव कालमें भूमिकर तथा नागरिक नामक दो करोंके वसूलकरने और सड़कोंकी सुव्यवस्था तथा नालियोंकी सफाई करनेका प्रबन्धभार इसको सौंपा गया। इस व्यवस्थाके करनेके लिये बहुत थोड़ी रकम कार्पोरेशनको दी गयी थी। अतः आर्थिक कठिनाइयोंको दूर करनेके उद्देश्यसे

कलकत्ता

CALCUTTA.

कार्पोरेशनने निर्माण कराया। सन् १८८८ ई० में सरकुलर रोडके दक्षिण तथा पूर्वकी ओर बसे हुये विस्तृत उपनगरको भी कलकत्ता कार्पोरेशनमें सम्मिलित कर लिया गया,फलतः पहिलेके ५ वार्डोंके अतिरिक्त ७ नवीन वार्ड और जोड़ दिये गये और नगरके उत्तरकी ओर बसे हुए उपनगरको नगरमें सम्मिलकर ३ वार्ड और बनाये गये। इस प्रकार जहां वार्डोंकी संख्यामें वृद्धि हुई वहां कमिश्नरोंकी संख्या भी ७२ से ७५ की कर दी गयी जिसमें ५० निर्वाचित १५ सरकार द्वारा नियोजित तथा १० स्थानीय चैम्बर आफ कामर्स, ट्रेड ऐसोसियेशन और पोर्ट कमिश्नरकी ओरसे भेजे जाने लगे। इस प्रकार कार्पोरेशन उन्नतिकी ओर द्रुतगतिसे बढ़ने लगा। इसके पश्चात् १९२४ ई०के अप्रेल माससे नवीन एवं पुनः संशोधित स्वरूपमें कार्पोरेशनने कार्यारम्भ किया। इसके पूर्व इसकी म्यूनिसिपल सीमा १८३ वर्गमील तक थी पर संशोधनके कारण काशीपुर, चीतपुर, मानिकतल्ला तथा गार्डेनरीच आदि उपनगर भी मिला लिये गये और म्यूनिसिपल सीमामें ३० वर्ग मीलसे अधिकका क्षेत्र आगया।

इसके प्रबन्धके लिये सदस्योंकी संख्या बढ़ाकर ९० कर दी गयी और जहां सदस्य कमिश्नरके नामसे पुकारे जाते थे वहां वे कौन्सिलर कहे जाने लगे। इस संख्यामेंसे ६२ तो निर्वाचित रहते हैं जिनमेंसे १५ मुसलमान जनताके लिये रक्षित निर्वाचन पद्धति की गयी है उससे चुने जाते हैं। इसके अतिरिक्त बंगाल चेम्बर आफ कामर्स ६ सदस्य, कलकत्ता ट्रेड एसोसियेशन ४, पोर्ट कमिश्नर २ और सरकार १५ के स्थानपर १० कौन्सिलर मनोनीत करती है। इस प्रकार निर्वाचित तथा मनोनीत कुल मिलाकर ८५ कौन्सिलर्स होते हैं। शेष ५ स्थानोंके लिये कौन्सिलर लोग स्वयं एल्डरमैन निर्वाचित करते हैं। कार्पोरेशनका निर्वाचन सभी दशामें तीन वर्ष बाद होता है पर कार्पोरेशन प्रतिवर्ष अपना मेयर तथा डिपुटी मेयर निर्वाचित करता है। इस कार्पोरेशनमें वर्तमान समयमें ३२ वार्ड हैं।

जनसंख्या

कलकत्ता नगरकी जनसंख्याका विवरण सबसे प्रथम सन् १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ था। उस समय नगरकी जन-संख्या ६,११,०७८५ थी पर ज्यों २ नगरने उन्नति की त्यों २ जन संख्या भी बढ़ती गयी जो इस प्रकार है।

सन् १८८१	६,१२,३०७	सन् १९११	८,९६,०६७
सन् १८९१	६,८२,३०५	सन् १९२१	९,०७,८५१
सन् १९०१	८,४७,७९६		

नगरका औद्योगिक विकास

हम लिख आये हैं कि कलकत्ता नगर प्रथम एक छोटेसे गांवके रूपमें था और क्रमशः

कलकत्ता

कलकत्ता नगर जो कुछ समय पूर्व भारतकी राजधानीके नामसे सम्बोधित किया जाता था
आज भी ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत एक महत्वपूर्ण नगर माना जाता है। जन संख्याकी दृष्टिसे यह
नगर भारतका प्रथम और उक्त साम्राज्यका दूसरा नगर है। समुद्री बन्दरगाहोंकी श्रेणीमें भारत
स्थित बम्बई बन्दरके बाद यही माना जाता है। यहां अनुमानतया २९,५१,८३६ टन मालका वार्षिक
प्रवेश माना जाता है अर्थात् ६,६२,६२,००० पौण्ड मूल्यका समुद्री व्यापार यहांसे प्रतिवर्ष होता है।
यह विशाल नगर बंगाल प्रान्तके २४ परगना इलाकेमें हुगली नदीके बायें किनारेपर ३० वर्गमीलके
विस्तृत क्षेत्रपर बसा हुआ है। इस नगरसे लगभग ८६ मील दक्षिणकी ओर बंगाल उपसागर हिलोरें
ले रहा है। नगरके चारों ओर फैले हुए उपनगर औद्योगिक जीवनके मूर्तिमान नमूने हैं।

इतिहास

इस भूभागकी चर्चा यों तो महाभारतके समान भारतके प्राचीन ग्रन्थोंमें पायी जाती है
पर इस नगर विशेषका उल्लेख १५ वीं शताब्दीके मध्यकालीन युगतक नहीं मिलता। हां सन् १४९५
ई० के लगभग लिखी गयी बंगभाषाकी एक पद्य रचनामें इस नगरका नाम अवश्य पाया जाता है।
बंग कवि विप्रदासने अपनी पद्य रचनामें लिखा है कि चांद सौदागर नामक किसी व्यापारीने
बर्द्दवान से जहाजमें सवार होकर समुद्र तक यात्रा की थी। मार्गमें यह व्यापारी भातपारा और
बरईपुरके बीच कितने ही नदी तटवर्ती गांवोंमें ठहरा था और कलकत्तेके पाससे ही गया था। उस
समय इस भूभागपर किसका शासन था यह ऐतिहासिक प्रमाणके आधारपर निश्चित रूपसे नहीं कहा
जा सकता परन्तु उस समयके साहित्य ग्रन्थोंके बलपर अनुमान होता है कि प्रतापादित्य नामक कोई
हिन्दू राजा वहां राज्य करता था। सम्भवतः यह अकबरका सामन्त था फिर भी ऐसा प्रतीत होता है
कि यह पूर्ण रूपसे स्वतंत्र था।

इसी प्रकार पं० राधाकुमुद मुकर्जीने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थमें भारतीय जलयान
...की चर्चा करते हुए प्रतापादित्यके सम्बन्धमें लिखा है :—

व्यापारमें लग गया। अतः व्यापारकी उन्नतिको अधिक बल मिला। इसी बीच जूटकी उपयोगिताका रहस्य योरोप पर प्रकट हुआ और जूटकी मांग बढ़ी। भाफसे चलने वाले जलयानोंने संसारके विभिन्न दूर देशोंको पारस्परिक विनिमय भोगी बनानेमें सबसे अच्छी सफलता प्राप्त की। फलः यह हुआ कि संसारका व्यापार इन्हीके द्वारा होने लगा। अतः इस कामके लिये जूटकी मांग और बढ़ी। जूट भारतमें ही होता है इस लिये यही संसारकी मांग पूरी करता है और भारतमें भी बंगाल तथा आसाम प्रान्तमें ही यह उत्पन्न होता है ऐसी दशामें संसारकी मांग यहींसे पूरीकी जा सकती थी। इन प्रान्तोंका माल यदि विदेश जा सकता है तो कलकत्ता हो कर। ऐसी दशामें इसी नगरसे जूटका निर्यात् किया जाने लगा। धीरे धीरे जूटका निर्यात् बहुत बढ़ गया। और हजारोंकी संख्यामें यहांका जन मजूर इस व्यापारमें लग गया इन प्रान्तोंमें उत्पन्न होने वाले तेलहन माल तथा चायकी मांग भी यूरोपमें बढ़ी और यह माल भी इसी कलकत्ते नगरसे विदेशको भेजा जाने लगा। बंगालमें कोयलेकी खानें ढूंढ़ निकाली गयी और कलकत्तेसे ही कोयला भी विदेश भेजा जाने लगा। इस प्रकार जहां यह एक छोटेसे गांवसे उन्नतिकर विशाल नगर बन गया वहां इसके छोटेसे व्यापारने भी उन्नति कर अपनी अच्छी धाक बैठा ली। प्रान्तके बढ़ने हुए व्यापार वाणिज्य तथा उद्योग धन्धेने नगरकी उन्नतिको अच्छा प्रोत्साहन दिया। और यहांकी रेलो लाइनों नदियोंमें चलने वाले जलयानों तथा नहरोंने नगरके व्यापारी वर्गको जीवन दिया।

नगरके विदेशी व्यापारने किस प्रकार अपनी क्रमशः उन्नतिकी यह नीचे दिये गये अङ्कोंसे स्पष्ट हो जाता है।

		आयात्	(लाख)	निर्यात	(लाख)
सन	१८७५ ई०	१६४८	„	२३४६	„
„	१८८० „	१७८०	„	२७४८	„
„	१८८५ „	२१५०	„	३३०८	„
„	१८९० „	२३४४	„	३५७३	„
„	१८९५ „	२५२५	„	३६६०	„
„	१९०० „	२८४५	„	४५७६	„

[illegible]

नगरसे विदेश जाने वाले और विदेशसे यहां आने वाले मालोंकी [illegible] वस्तुएं बताना है [illegible] है। विदेशसे यहां आनेवाले मालोंमें रूई माल, [illegible], धातु, तेल, [illegible], [illegible] वस्तुएं प्रधान हैं इनके अतिरिक्त ऊनी माल, [illegible] माल, [illegible]

इण्डिया कम्पनीके जाब कार्नाक सन् १६३६ ई० में आये और स्थानको देखकर वहीं ठहर गये। इनकी इच्छा यहां अड्डा जमानेकी थी परन्तु उस समयके मुगल शासकसे मनमुटाव हो जानेके कारण आप वहां बस न सके। पर इसी नवाबने जाबकार्नाकको सन् १६९० ई० में पुनः आमंत्रित किया। आपने आकर ता० २४ अगस्तके दिन वर्तमान कलकत्ता नगरकी आधार शिला रक्खी।

अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि सन् १६९६ ई० में वर्द्धमानके शोभासिंह नामक जमींदारने अंग्रेजोंके विरुद्ध बगावतका झण्डा उठा दिया। अंग्रेज लोग क्षत्रीकी रोषपूर्ण भृकुटिसे भयातुर हो उठे और आत्मरक्षाके लिये दुर्ग निर्माण करनेकी आज्ञा नवाबसे प्राप्त की। यह दुर्ग सन् १७०२ ई० में बन कर तैयार हो गया। इस दुर्गके तैयार होनेके ३ वर्ष पूर्व ही अंग्रेजोंने हुगलीके शासकसे कलकत्ता, सुतानटी तथा गोविन्दपुर नामक तीनों गांव खरीद लिये थे। अतः यह किला इन्हीं तीनोंके बीच बनाया गया। इस प्रकार यहां की बस्ती बढ़ने लगी और नगरकी उन्नतिका सूत्रपात हो गया। थोड़े ही समयमें जहाजोंके ठहरनेके घाट, अस्पताल और ईसाइयोंके गिरजाघरोंकी इमारतें भी बन गयीं। फलतः इसी बीच सन् १७०७ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इसे एक स्वतंत्र इलाका ही घोषित कर दिया और इसका सम्बन्ध केवल लन्दनमें रहने वाले डायरेक्टरोंसे ही रह गया।

इस नव विकसित नगरपर बंगालके मुसलमान नवाबकी दृष्टि सदा कड़ी रहने लगी और फल यह हुआ कि दिन दहाड़े आक्रमणोंका होना सामान्य बात हो गयी। कलकत्तेके अंग्रेजोंने कम्पनीकी ओरसे इनके विरुद्ध दिल्लीके सम्राटके पास शिकायत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि भेजे। दिल्ली सम्राटने कम्पनीके अधिकारोंको स्पष्ट कर दिया और कम्पनीको स्थायी सम्पत्ति खरीदनेकी आज्ञा दे दी फिर भी नवाबकी निश्चित मनोवृत्तिमें कुछ भी परिवर्तन न हुआ और पूर्ववत् आक्रमणोंकी आशंका बनी ही रही इसी बीच मराठोंके आक्रमण भी होने आरम्भ हो गये। ये लोग असमय आक्रमण कर बैठते थे अतः कलकत्ते वाले अपनी असहाय अवस्थासे व्याकुल हो उठे और आत्मरक्षार्थ सन् १७४२ में 'मराठा डिच' नामकी गहरी खाई खोदना आरम्भ कर दिया पर उसे पूरा न कर सके। वर्तमान सरकुलर रोड इसीके समीपसे गया है। कम्पनीके बढ़ते हुए व्यापार और मराठोंके आक्रमणोंसे भयभीत हो पासके कितने ही स्थानोंसे लोग आकर कलकत्तेमें बस गये। जिससे नगरकी उन्नतिको सहाय मिला।

इस प्रकारकी उन्नति करते हुआ कलकत्ता नगरका वैभव बढ़ रहा था कि सन् [illegible] ई० में बंगालके नवाब सिराजुद्दौलाने नगरपर आक्रमण कर दिया। कम्पनीकी थोड़ी फौजने नवाबके विरुद्ध देर न लगायी और शीघ्र ही मैदानसे किनारा कर लिया। सब अंग्रेज भाग गये। उन्हें इतना समय न था कि वे नगरकी [illegible] करते ऐसे समयमें मैदान छोड़ [illegible] ये लोग

आती रहती हैं यह तो व्यापार सम्बन्धी व्यवस्था हैं साथ ही साथ ही नगरसे स्टीमार भी छूटते हैं जो माल और यात्री लेकर बङ्गाल और आसामके सुदूर नगरोंतक जाते और वहांसे आते रहते हैं। उड़ीसाकी ओर भी स्टीमर सर्विस है और स्टीमर द्वारा यात्री लोग सदा जाते आते रहते हैं।

बंदरगाह

नगरका बंदरगाह प्रथम तो सरकारके नियंत्रणमें था पर सन् १८७० ई० से पोर्ट ट्रस्ट नामक एक स्वतंत्र बंदर विभागकी रचना कर बंदर सम्बन्धी सभी प्रकारका प्रबंध भार उसे सौंप दिया गया और तबसे यह उसी विभागके हाथमें हैं। जिस समय यह व्यवस्था प्रथम बार पोर्ट ट्रस्टको दी गयी उस समय केवल ६ घाट ६ माल उठानेके यंत्र और ६ माल रखनेके बाड़े थे। पर आज इस बंदरगाहकी समृद्धिको देख कर चकित सा रह जाना पड़ता है। पोर्ट ट्रस्टने मिट्टीके तेल और पेट्रोलके लिये अलग स्थान बनानेका निश्चय किया और सन १८८६ ई० में बजबजमें सुरक्षित एवं सुदृढ़ स्थान बनवाये। सन् १८८७ ई० में चायके लिये भी एक अलग स्थान बनाया सन् १८८६ ई० में पोर्ट ट्रस्टके अधिकारोंमें सरकारने वृद्धि कर दी अतः उसने अपने स्वतंत्र रीतिसे डाक बाड़े और स्टोर-हाउस, वेर हाउस आदि बनवाये। इसी प्रकार अपने विभागके लिये आवश्यक वस्तुयें तैयार करनेके लिये कारखाने भी खोले। प्रबंध देखनेके लिये वैतनिक अधिकारी नियुक्त किये। जहाजोंको खींचनेके लिये 'स्टीम लांच' तथा 'प्रोपेलर्स' नामक विशेष प्रकारके जलयानोंकी व्यवस्था की। मालकी नावोंको तैरने फिरनेका लैसेन्स देनेका प्रबन्ध किया, जल पुलिसकी नियुक्तिमें सहयोग दिया और नदीसे समुद्र तक जल मार्गका चार्ट तैयार कराया और साथ ही जलमार्गपर प्रकाशका भी पर्याप्त प्रबन्ध किया गया। इस प्रकार यहांके पोर्टट्रस्टने अन्त ले नगरके बन्दरका निर्माण कराया और उसे सब विधि आधुनिक जगतकी व्यवहृत व्यवस्थाके अनुसार सुसज्जित किया।

इस नगरमें मालका जलमार्ग द्वारा आना जाना यों तो बहुत पुराना है। पर उस समयके अंक उपलब्ध नहीं है अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जाता कि उस समय किस परिमाणसे यहां जल मार्ग द्वारा व्यापार होता था। पर सन् १७२७ के अंकोंसे ज्ञात होता है कि उस वर्ष १० हजार टन माल जहाजोंमें लदा था। हम यहां कुछ अंक पंचवर्षीय रिपोर्टसे उद्धृत कर रहे हैं उनके देखनेसे स्पष्ट हो जायगा कि इस बन्दरने किस प्रकार इस ओर पैर बढ़ाये थे।

सन्	बन्दरमें आये—		बन्दरसे गये	
	जहाज संख्या —	माल टनमें —	जहाज संख्या —	मालटन
१८८६-७-	१३८०—	१५,४३,०७५—	१४१६—	१६,२०,८००
१८९१-२-	१४४६—	१६१२४८१—	१४११—	१८३६,२७१

सन् १७८७ ई० में नगरके मकानों पर हाउसटैक्स लगा कर फण्डकी वृद्धि की गयी। सन् १८०३ ई० में लार्ड वेलस्लीने नाली नालोंकी गन्दगी दूर करनेके सम्बन्धमें नये कानून बनाये। साथ ही बाजारों और वधस्थलोंकी स्थापना करायी। इससे कार्पोरेशनका काम उन्नतिकी ओर अग्रसर हुआ। पर कार्यकी भरमारके कारण भवन निर्माण सम्बन्धी नियम बनाने तथा राजमार्गोंके तैयार करनेके सम्बन्धमें ३० सदस्योंकी एक स्वतंत्र कमेटी टाउन इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके नामसे स्थापित की गयी। इस इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टने लाटरीकी पद्धतिसे धनसंग्रह करना आरम्भ किया और इस धनसे सार्वजनिक मार्ग आदि बनवाना प्रारम्भ किया। इस कमेटीने वर्षों तक जीवित रहकर कितने ही लोकोपकारी कार्य किये। इसीने यहांका टाउनहाल बनवाया और वेलियाघाटा नहर खुदायी। इसी प्रकार स्ट्रेंण्ड रोड, एमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलूटोला स्ट्रीट, मिर्जापुर स्ट्रीट, फ्री स्कूल स्ट्रीट, क्लाइव स्ट्रीट, कनाल रोड, मैनगो लेन, वेन्टिक स्ट्रीट, कार्नवालिस स्ट्रीट, कालेज स्ट्रीट, वेलिङ्गटन स्ट्रीट, तथा वेलस्ली स्ट्रीट आदि बनवायीं। तथा नगरके चारों ओर स्कायर भी इसी कमेटीने बनवाये। सड़कोंके छिड़कानेका प्रबन्ध भी किया। सन् १८२० ई० में नगर सुधार समितिने २५ हजारकी रकम व्ययकर सड़कें पक्की करनेका आयोजन किया पर इसी बीच इंग्लैण्डमें कलकत्तेकी लाटरीबाजीके विरुद्ध घोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिससे १८३६ में इस ट्रस्टका अन्त हो गया। फलतः नगर व्यवस्थाका पूरा भार कार्पोरेशन पर पड़ा। इस प्रकार समयकी गतिके साथ कलकत्ता कार्पोरेशन भी कितने ही परिवर्तन कर तीन सदस्योंके एक बोर्डके रूपमें आ पहुंचा। इस नव संयोजित कार्पोरेशनको नगर सुधारके लिये ऋण लेनेका अधिकार भी मिला था अतः सब विधि सुदृढ़ कार्पोरेशनने अल्प अवधिमें ही अच्छी उन्नतिकर दिखायी। सन् १८६६ ई० में कार्पोरेशनने नगरके लिये वधस्थल निर्माण कराये और उनके सम्बन्धमें नियम तैयार किये। सन् १८७४ में न्यूमार्केट बनाया गया तथा नगरके प्रधान राजमार्गोंके दोनों ओर पत्थरके फुटपाथ भी पैदल चलनेवालोंके लिये बनाये गये। विडन स्कायरका उद्घाटन भी हुआ। इस प्रकार अनुमान तथा दो करोड़ रुपया व्यय कर वर्तमान कलकत्ता नगर तैयार किया गया।

सन १८७६ ई० में नवीन कानूनके अनुसार कार्पोरेशनका आदिसे अन्त तक परिवर्तन कर डाला गया। कार्पोरेशनमें ७२ कमिश्नर होने लगे और वहांकी कार्यवाहीको नियमित रूपसे चलानेके लिये चेयरमैन और वायस चेयरमैनकी नियुक्ति की गयी। कार्पोरेशनके कमिश्नरोंमें दो तिहाई तो करदाताओं द्वारा चुने जाते और शेष सरकार द्वारा मनोनीत किये जाते थे। इस प्रकारसे संयोजित नये कार्पोरेशनने सफाई एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी पुराने आयोजनोंको सफल बनाया और जलका प्रचुर प्रबन्ध कर दिया। इसी प्रकार हरिसन रोड नामक नगरका केन्द्रीय राजमार्ग भी इसी

भाषा साहित्य प्रसारक कितने ही स्कूल और कालेज इस नगरमें खुले हुए हैं जिन्हें सभी जानते हैं। हम तो यहां सबसे प्रथम उन्हीं शिक्षालयों की सूची उद्धृत कर रहे हैं जो विशेष प्रकारकी शिक्षाका प्रसार करनेके लिये खोले गये हैं। इनमेंसे कुछके नाम धाम इस प्रकार हैं :—

१ एङ्गलोटैमिल स्कूल, २४-३ ए कालेज स्ट्रीट।
२ आर्य मिशन इन्स्टीट्यूशन, ७१ शिमला स्ट्रीट।
३ बंगाल सोशल सर्विस लीगका इण्डस्ट्रियल स्कूल—६३ ऐमहर्स्ट स्ट्रीट
४ बंगाल टेकनिकल स्कूल—पंचवटी विला, मानिकतल्ला स्ट्रीट
५ बंगाल टेकनो-केमिकल इन्स्टीट्यूट, २१—३ सरकुलर रोड
६ बंगाल वेटरनरी कालेज—बेलगछिया
७ कलकत्ता ब्लाइण्ड स्कूल, २२२ लोअर सरकुलर रोड।
८ कलकत्ता कमर्शियल इन्स्टीट्यूट, ८१ हरिसन रोड
९ कलकत्ता डम्ब एण्ड डेफ स्कूल, २९३ अपरसरकुलर रोड
१० कलकत्ता होमियो पैथिक कालेज १५० कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कलकत्ता स्कूल आफ म्यूजिक—४३ पार्क स्ट्रीट
१२ कारमाइकल मेडिकल कालेज, ९ बेलगछिया
१३ बंगाल इञ्जिनियरिङ्ग कालेज शिवपुर हवड़ा
१४ गवर्नमेन्ट स्कूल आफ आर्ट्स २८ चौरंगी रोड
१५ इण्डियन आर्ट स्कूल—६२ बहु बाजार
१६ टाइपराइटिङ्ग स्कूल ३-१ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
१७ यूनिवर्सिटी ला कालेज दर्भङ्गा बिल्डिङ्ग कालेज स्ट्रीट,

उपरोक्त नाम सूचीमेंसे नं० २, ३ तथा ४ तो वे स्कूल हैं जहां लड़कोंको दस्तकारी जैसे बुनाई, लोहार, बढ़ाई आदिका काम सिखाया जाता है। नं० ७ अन्धों, नं० ९ गूंगों और बहिरोंको शिक्षा देनेके लिये हैं। नं० ६ में पशुपालनकी शिक्षा दी जाती है। नं० ८ तथा ११ में व्यापारकी शिक्षा तथा आफिसका काम सिखाया जाता है। और १४ तथा १५ में ललित कलाकी शिक्षा दी जाती है।

उन्नतिकर एक विशाल नगर बन गया। नगरकी रचना, उसके सुधार और नगरसम्बन्धी प्रबन्धक कमेटियां किस प्रकार बनी और नगरको उन्होंने किस प्रकार बनाया आदि सभी बातोंकी चर्चा की जा चुकी है। अब इस जनाकीर्ण नगरके बलपर चले हुए व्यापार वाणिज्यका विवेचन करना अनिवार्य प्रतीतहोता है।

इस नगरको बसानेमें जिन उद्देश्योंको सम्मुख रखकर उद्योग किया गया था वे सर्वरूपेण फलतः हो गये। यह नगर हुगली नदीके उस स्थानपर बसा हुआ है जहांतक समुद्री जहाज सरलतासे सदैव आ सकते हैं। इस विशेषताके कारण नगरको उन्नतिको अच्छी सहायता मिली है। ब्रह्मपुत्र और गंगाके उर्वरा कछारकी उपज हुगलीके जलमार्ग द्वारा नगरमें सुगमतासे आ जाती है और साथ ही वहां बसनेवाले जन-समूहकी आवश्यकताओंकी पूर्तिकी वस्तुओंको इन्हीं जलमार्गों द्वारा उनतक पहुंचाया जाता है। इस भूभागके समथल होनेके कारण रेलवे लाइनें सरलतासे निकाली गयी हैं और प्रान्तके आयात् और निर्यात्को अत्याधिक प्रोत्साहन मिलता है।

जिस समय यह नगर बसना आरम्भ हुआ उस समय इस प्रदेशके ढाका और मुर्शिदाबाद नामक नगर मुसलमानी शासन कालमें अपनी उन्नतिकर पूर्ण प्रभासे आलोकित हो रहे थे। उनके मालकी प्रशंसा यूरोप तक पहुंच चुकी थी। ज्यों ही यह नगर बसा त्योंही उपरोक्त स्थानोंका माल यहांसे सीधा विदेश जाना आरम्भ हो गया। फलतः यहांके व्यापारी वर्गको प्रोत्साहन मिलने लगा और व्यापारकी वृद्धि हो चली।

इस प्रकार विदेशसे व्यापार आरम्भ तो हो चुका था पर इसी बीच यूरोपमें इंग्लैंड और फ्रांसमें युद्ध छिड़ गया अतः भारतके अंग्रेजोंने यहांसे माल भेज स्वदेशकी सहायता करनेका निश्चय कर लिया। युद्धमें खर्च होने वाली बारूदके लिये बिहारका 'साल्टपिटर' इसी नगरसे भेजा जाने लगा। धीरे धीरे यहांसे चावल, सूती कपड़ा, शक्कर, घी, लाख, कालीमिर्च, अदरख, हर्रे, टसर आदि वस्तुयें भी क्रमशः विदेश भेजी जाने लगीं। ये सभी वस्तुयें बंगाल तथा आसाममें उत्पन्न होती हैं अतः इन प्रान्तोंसे इन्हें विदेश भेजनेके लिये सबसे अच्छा मार्ग यदि कोई हो सकता था तो वह कलकत्ता नगरसे होकर था। इस प्रकार समीपके भूभागकी उपज इसी नगरसे विदेश भेजी जाने लगी। जिससे नगरके व्यापारमें अत्याधिक उन्नति हुई। १६ वीं शताब्दीके आरम्भमें योरोपने भाफ द्वारा यंत्र चलाने की विधि ढूंढ़ निकाली। फल यह हुआ कि वहां भी माल तैयार किया जाने लगा। कुछ ही समय बाद लंकाशायरसे भाफ द्वारा तैयार किया गया सूती माल भारत आने लगा। यह माल कलकत्ता नगरमें उतारा जाता और यहींसे रेलके तथा जलके मार्ग द्वारा बंगाल और आसामके भिन्न भिन्न स्थानोंको भेजा जाता। इस कार्यसे यह परिणाम निकला कि नगरका एक बहुत बड़ा जन समुदाय इस

प्रथम तीन तो ऐसे स्कूल हैं जिनमें हिन्दू लड़कियोंको उनकी सामाजिक पद्धतिके अनुसार पढ़ाया जाता है पर नं० ८ तथा ६ में अंग्रेज बच्चोंके साथ उन्हें शिक्षा दी जाती है।

इनके अतिरिक्त प्रारम्भिक शिक्षाके लिये नगरके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनकी ओरसे फ्री प्राइमरी स्कूल खुले हुए हैं इनकी संख्या १६२ से अधिक है। इनमें २३०६३ बच्चे निःशुल्क शिक्षा पाते हैं। इस प्रबन्धके लिये कार्पोरेशन ४,००,६१४) रु० वार्षिक व्यय करता है।

भारतकी राष्ट्र भाषा सम्मेलनके नामसे ३७ नं०हरीसनरोड पर एक निःशुल्क विद्यालय खोला गया है जहां कोई भी भारतीय राष्ट्र भाषाका अध्ययन कर सकता है।

धर्मशालायें

नगरमें यात्रियोंकी सुविधाके लिये धर्मशालायें खुली हुई हैं। इनमेंसे प्रसिद्ध धर्मशालाओंके नाम ये हैं:—

१ पं० विनायक मिश्रकी धर्मशाला—२२६ हरीसनरोड
२ बाबू बब्बूलाल अग्रवाल धर्मशाला—१६६ हरीसनरोड
३ डूडडे वालोंकी धर्मशाला—६ मल्लिक स्ट्रीट
४ बाबू लक्ष्मीनारायण धर्मशाला—२१ बांसतल्ला
५ धनसुखदास जेठमल धर्मशाला—४४ बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट

आमोद प्रमोदके स्थान

कलकत्ताके नागरिकोंके आमोद प्रमोदके लिये नगरमें कितने ही थियेटर तथा सिनेमा भवन खुले हुए हैं। जहां मनमोहक एवं शिक्षाप्रद अभिनय बड़ी सजधजसे दिखाये जाते हैं। इस क्षेत्रमें श्रेष्ठ कम्पनी मैडन थियेटर्स लि० है जिसके कितने ही नाट्य मंदिर और सिनेमा घर खुले हुए हैं। इनके अतिरिक्त कई बंगाली कम्पनियां भी हैं जो बंग रंगमञ्चको प्रतिष्ठाके उच्च स्थानपर पहुंचानेमें समर्थ हुई हैं। सिनेमा घर यों तो प्रायः नगरके कितने ही स्थानों पर हैं पर न्यू मार्केटके पास वाले अधिक अच्छे माने जाते हैं। हम कुछ थियेटर्स और सिनेमा घरोंके नाम नीचे देते हैं।

हिन्दी नाट्यपरिषद

१ अल्फ्रेड थियेटर—६१ हरीसनरोड २ कोरन्थियन थियेटर—५ धरमतल्ला स्ट्रीट

बंगाली नाट्यपरिषद

१ मिनर्वा थियेटर—६ बीडेन स्ट्रीट २ नाट्य मंदिर—कार्नवालिस स्ट्रीट
३ स्टार थियेटर—कार्नवालिस स्ट्रीट ४ मनमोहन थियेटर—बिडन स्ट्रीट

सिनेमा घर

१ एल्फिन्स्टन पिक्चर पैलेस—चौरंगी। २ ग्लोब थियेटर्स—लिण्डसे स्ट्रीट। ३ चित्र

७ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी—७।१ जगमोहन मल्लिक लेन

८ मातृजाति सेवक समिति—६० हरीघोष लेन स्ट्रीट

९ निखौं हितैषी सभा—२३ मदन घराल लेन

विधवाओंकी सहायता करना इस संस्थाका उद्देश्य है।

१० श्रद्धेश्वरी-आश्रम—२६ रानी हेमन्तकुमारी स्ट्रीट,यहां बहकाई गयी अबलाओंको आश्रय मिलता है

११ रेफ्यूज—१२५ बहू बाजार स्ट्रीट, यह संस्था अनाथ एवं अनाश्रित लोगोंको आश्रय देती है।

१२ रामकृष्ण मिशन आश्रम—बारानगर

१३ सोसाइटी फार प्रोटेक्शन आफ चिल्ड्रन इन इण्डिया

यह संस्था बच्चोंकी रक्षा करनेके लिये सरकारी कानूनके अनुसार खोली गयी है।

१४ चित्तरंजन सेवासदन

१५. आनन्दमाई दरिद्र भण्डार—८७ डायमन हारबर खिदर पुर

१६ अनाथ भण्डार—१२ सर पैन्टाइन लेन

१७ कलकत्ता प्रिजनर्स एड सोसाइटी-महारानी स्वर्णमयी रोड, यह संस्था जेलकी यात्रा कर चुके कैदियोंकी सहायता करनेके लिये है।

इसके अतिरिक्त नगरका म्यूनिसिपल कार्पोरेशन लोगोंकी अच्छी सेवा कर रहा है। उसने २६ वर्ष तकके बच्चोंको मुफ्तमें दूध बांटने, औषधि वितरण करने, आदिका प्रबन्ध किया है। इसी प्रकार इसकी ओरसे प्रसूति गृह खुले हुए हैं जहां निर्धन स्त्रियोंको आश्रय मिलता है। कष्टप्रपीड़ितोंकी सहायताके लिये 'ऐम्बुलैन्स' नामक एक विशेष प्रकारकी व्यवस्थाकी गयी है जिसके द्वारा आकस्मिक दुर्घटना यथा सांसर्गिक रोग प्रताड़ित व्यक्तियों, तथा आहत पशुओंकी देखभालका प्रबन्ध किया जाता है। इस प्रकारसे संकटग्रस्त व्यक्तियोंकी रुग्णालयमें ले जानेके लिये कार्पोरेशनकी ओरसे 'ऐम्बुलैन्स कार' नामक मोटरें नियुक्त कर दी गयी हैं जो बिना भेद भावके सभीकी सेवा करती रहती हैं।

आग आदि भयंकर दुर्घटनाके हो जाने पर फायर बिगेड आदि बुलाये जा सकते हैं जो तत्काल घटना स्थल पर पहुंच लोगोंकी सेवामें लग जाते हैं।

अस्पताल

नगरमें कितने ही रुग्णालय व मुफ्ती दवाखाने खुले हुए हैं अतः यहां हम कुछ नामाङ्कित अस्पतालोंके ही नाम नीचे दे रहे हैं :—

१. एल्बर्ट विक्टर हास्पिटल—यहां सरकारी प्रबन्ध एवं देख रेखमें कैदियोंकी चिकित्साकी जाती है।

पत्र-पत्रिकायें

आधुनिक जगतमें पत्र-पत्रिकाओंका मानव-समाजसे कितना गहरा सम्बन्ध है यह पाठकोंको बताना नहीं है। इसी अचूक अनुमानके बल पाठक सहज ही समझ सकते हैं कि कलकत्तेके समान उन्नत-जन-समूह संयुक्त नगरमें पत्र-पत्रिकाओंकी क्या अवस्था होना चाहिये। यहांकी जनता यथेष्ट रूपमें पत्र-पत्रिकायें पढ़ती है अतः नित नवीन पत्र-पत्रिकायें यहां निकला करती हैं। ऐसी दशामें सबकी नाम सूची न देकर हम केवल उन्हीं पत्रोंकी तालिका नीचे दे रहे हैं जो जनतामें श्रद्धाके साथ पढ़े जाते हैं।

हिन्दी

दैनिक—विश्वमित्र, स्वतंत्र, भारत मित्र,

साप्ताहिक—विश्वमित्र, श्रीकृष्णसंदेश, मतवाला, बंगवासी, हिन्दूपंच, भारतमित्र, मारवाड़ी ब्राह्मण।

मासिक—विशाल भारत, नवयुग, सरोज, मारवाड़ी अग्रवाल,

बंगला

दैनिक—बसुमती, आनन्द बाजार पत्रिका,

साप्ताहिक—बसुमती, आत्मशक्ति, अवतार,

मासिक—बसुमती, भारतवर्ष, प्रवासी, प्रवर्तक, पञ्चपुण्य,

अंग्रेजी

दैनिक—अमृतबाजार पत्रिका, लिबर्टी (फारवर्डके स्थानपर) बसुमती, बंगाली, इंग्लिशमैन, स्टेट्समैन।

साप्ताहिक—कैपिटल,

मासिक—माडर्न रिव्यू, वेलफेयर,

इनके अतिरिक्त अंग्रेजी भाषामें कितनी ऐसी पत्र-पत्रिकायें निकलती हैं जिनमें अनेक विषयोंको लेकर स्वतंत्र रूपसे चर्चा की जाती है। ये प्रायः एक-एक विषयको लेकर प्रकाशित होते हैं अतः उस विषयकी जानकारीके लिये उसी विषयके पत्रोंको पढ़ना पड़ता है इनमेंसे कुछके नाम और विषय हम नीचे दे रहे हैं।

१ ऐग्रीकलचरल जनरल आफ इण्डिया—एक सरकारी पत्र है और इसमें कृषि सम्बन्धी सभी आवश्यक बातोंकी चर्चा रहती है। इसका वार्षिक मूल्य ६) रु० है। इसका प्रकाशन गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया सेन्ट्रल पब्लिशिङ्ग ब्राञ्च कलकत्तासे होता है।

कलकत्ता

यहां कितने ही कालेज हैं जहां हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इनमेंसे कतिपय प्रसिद्ध कालेजोंकी सूची हम नीचे दे रहे ।

१ प्रेसीडेन्सी कालेज ... ८६-१ कालेज स्ट्रीट
२ संस्कृत कालेज ... १ कालेज स्क्वा
३ इस्लामियां कालेज ... ८ वेलस्ली स्ट्रीट
४ स्काटिश चर्च कालेज ... ४ कार्नवालिस स्ट्रीट
५ विद्यासागर कालेज ... ३६ शङ्करघोष लेन
६ आसुतोष कालेज ... १४७ रसा-रोड साउथ
७ नरसिंहदत्त कालेज ... १२६ वेलीलियस रोड हवड़ा
८ रिपन कालेज ... २४ हरिसन रोड
९ बेथून कालेज ... १८१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१० डायोसेसन कालेज ... ४७ एलिन रोड

नं ९ तथा १० में लड़कियोंके ही लिये शिक्षाका प्रबन्ध किया गया है।

११ डेविड हेयर ट्रेनिंग कालेज ... २५ बालीगंज
१२ लारेटो हाउस ७ मिडिल्टन रोड

इनमें कालेज, स्कूल, शिक्षक तथा किण्डर गार्डन ये चार विभाग हैं।

स्कूल भी यहांपर बहुत हैं पर हम विस्तृत नाम सूची न देकर कुछ प्रसिद्ध स्कूलोंके नाम नीचे दे रहे हैं।

१ विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय ... महुआ बाजार स्ट्रीट
२ तिलक राष्ट्रीय विद्यालय ... महुआ बाजार स्ट्रीट
३ सनातनधर्म विद्यालय ... काटन स्ट्रीट
४ हिन्दू स्कूल ... कालेज स्ट्रीट
५ आर्य कन्या पाठशाला ... कार्नवालिस स्ट्रीट
६ मारवाड़ी कन्या पाठशाला ... बांसतल्ला लेन
७ सरस्वती कन्या पाठशाला ... १ शिवकृष्णदान लेन
८ लारेटो कानवेन्ट ... एन्टाली
९ पुर मेमोरियल स्कूल ... १६८ चितपुर रोड

नं० ५ से नं० ९ तकके वे स्कूल हैं जिनमें लड़कियोंको शिक्षा दी जाती है। इनमेंसे

कुछ ऐसीही संस्थाओंका नाम नीचे दे रहे हैं जो अपने दृष्टिकोणसे स्थायी काम करनेमें प्रगतिशील दिखायी देती हैं।

विभिन्न विषयोंकी वैज्ञानिक चर्चा करनेके लिये स्थापित की गयी संस्थाओंके नामः—

१ ऐग्रीकल्चरल एण्ड हार्टीकल्चरल सोसाइटी—१ अलीपुर (यह संस्था कृषि सम्बन्धी है)

२ आल इण्डिया एस्ट्रालोजिकल एण्ड एस्ट्रानोमिकल सोसाइटी—जोरासाकू (यह फलित एवं गणित ज्योतिषसे सम्बन्ध रखती है।)

३ आल इण्डिया होमियोपैथिक ऐसोसियेशन—१७२ बोबाजार स्ट्रीट

४ एन्थ्रापालोजिकल सोसाइटी आफ इण्डिया—२ वेलेस्ली स्क्वायर (यह मानव जातिकी प्राचीन खोजसे सम्बन्ध रखनेवाली संस्था है)

श्रमजीवी संघ

संसारमें जो नवीन लहर उठ रही है उसीके परिणाम स्वरूप संसारभरमें श्रमजीवी संघ खुल रहे हैं उनमेसे कलकत्तेके कुछ संघ ये हैं:—

१ आल इण्डिया पोस्ट यूनियन—२३६ बोबाजार स्ट्रीट

२ „ „ टेलिग्राफ यूनियन – ७ मैङ्गो लेन

३ „ „ रेलवेमेन्स फेडरेशन—१२ डलहौजी स्क्वायर

४ बंगाल ट्रेड यूनियन फेडरेशन—१२डलहौजी स्क्वायर

५ कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट इम्प्लाइज ऐसोसियेशन—२वेलेस्ली स्क्वायर

६ कलकत्ता ट्रामवेज इम्प्लाइज ऐसोसियेशन—१३३ कालीघाट रोड

७ कलकत्ता हाकर्स यूनियन—६७ हाडन स्ट्रीट

८ कलकत्ता लेबर ऐसोसियेशन—घोष बागान लेन काशीपुर

राजनैतिक संघ

मानव समाज अपनी वर्तमान परिस्थितिसे सन्तुष्ट नहीं है अतः वह पारस्परिक हित हितका विचार न कर छीनझपटका अभिनय दिखानेमें अस्त व्यस्त हो रहा है। फलतः अपने अपने हितों एवं स्वत्वोंकी रक्षाके लिये राजनैतिक संघ भी खोले गये हैं। कलकत्तेमें भी ऐसे संघोंकी की कमी नहीं है अतएव हम कुछके नाम यहां दे रहे हैं।

१ बंगाल लैण्ड होल्डर्स ऐसोसियेशन—१० ओल्ड पोस्टआफिस स्ट्रीट

२ कलकत्ता डाम्स ओनर्स ऐसोसियेशन १२६ कार्नवालिस स्ट्रीट

३ बृटिश इण्डियन ऐसोसियेशन—१८ बृटिश इण्डियन स्ट्रीट

है और दूसरी सुदूर पूर्वीय देशों और अमेरिकाको माल ले जाती और वहांसे लाती है। इस प्रकार ये दो कम्पनियाँ संसारभरके बंदरोंको परस्पर एक सूत्रमें गूंथ देती हैं। पर देशके समुद्री तटपरका व्यापार जो वास्तवमें भारतीय जहाजी कम्पनियोंके लिये रक्षित रहना चाहिये किसी अंशमें देशकी एक मात्र भारतीय जहाजी कम्पनी:—

३ दि सिन्धया स्टीम नेविगेशन कम्पनी द्वारा होता है। यह कम्पनी पूर्णरूपसे भारतीय कम्पनी है। इसका हेडआफिस बम्बईमें है। तथा वहांके मेसर्स नरोत्तम मुरारजी एण्ड कम्पनी इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट हैं। यह कम्पनी भारतके समुद्रीतटका माल एक स्थानसे दूसरे स्थानको ले जाती है। कलकत्तेमें इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सीका ब्रांच आफिस क्लाइव स्ट्रीटमें है।

४ ब्रिटिशइण्डिया कम्पनी के जहाज भी कलकत्तेसे चटगांव, अकायाब, रंगून तथा सिंघापुर, चीन, जापान और इसी प्रकार कलकत्तेसे मद्रास कोलम्बो और बम्बईको जाते हैं, इस कम्पनीके मैनेजिंग ऐजेन्ट मैकेन्जी ऐण्ड को० १६ स्ट्राण्ड रोड है।

५. रिवर्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी लि० के स्टीमर कलकत्तेसे छूटते हैं और बंगाल तथा आसामके सुदूर नगरोंको यात्री और माल लादकर ले जाते हैं। इसी प्रकार प्रान्तके अन्य स्थानोंमें इसी कम्पनीके स्टीमर यात्री और माल लेकर आया जाया करते हैं। इस कम्पनीके स्टीमर कलकत्तेके नीमतल्ला घाट और जगन्नाथ घाटसे डिब्रूगढ़ आसामके लिये खुलते हैं। इस कम्पनीके हाथमें ग्वालन्दो बहादुराबाद, अमीनगांव तेजपुर, खुलना बैरीसाल तथा खुलना नारायनगंज, आदि नामकी सर्विस है। इस कम्पनीके ऐजेन्ट मेसर्स मैकनेल एण्ड को० २ फेयर्लीप्लेस कलकत्ता है।

६. इण्डिया जेनरल नेविगेशन एण्ड रेलवे को० लि० इस कम्पनीके स्टीमर स्थानीय नीमतल्ला घाट, जगन्नाथघाट आदि घाटोंसे छूटते हैं और माल लेकर कछार, चांदपुर, ढाका, सिल्हट, मिळचर आदि तक जाते हैं और वहांका माल यहां पहुंचाते हैं। इसी प्रकार पश्चिमकी ओर यहांसे बनारस तक आते हैं। मेसर्स किलबर्न एण्ड को० ४ फेयर्लीप्लेस कलकत्ता इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट हैं।

७. अमेरिकन इण्डियन लाइनकी कलकत्ता ऐजेन्सी मेसर्स ग्रेहम्स ट्रेडिंग एण्ड को० ३ कौंसिल हाउस स्ट्रीटके पास है। इस कम्पनीके जहाज अमेरिका और भारतके बीच चलते हैं। कलकत्तेमें इस कम्पनीके जहाज १० वें दिन छूटा करते हैं।

८. सिटी लाइन - यह लाइन लिवरपूल कोलम्बो और कलकत्ताके बीच जहाज चलाती है। इस कम्पनीके जहाज कलकत्तेसे पाक्षिक छूटते हैं। इसके ऐजेन्ट हैं —मेसर्स ग्लैडस्टन विली एण्ड को० लि०

९ नेटाल डायरेक्ट लाइन कलकत्ता-रंगून तथा दक्षिण अफ्रीकाके बीच जहाज चलाती है।

२ पीस गुड्स कमेटी—कपड़ा सम्बन्धी
३ यार्न कमेटी—सूत सम्बन्धी
४ फाइनेंस कमेटी—अर्थ सम्बन्धी
५ रेल्वे इनलैण्ड कमेटी—रेल्वे आदि स्थलके व्यापार सम्बन्धी
६ शिपिंग कमेटी—जहाजी सम्बन्धकी उप-समिति
७ इन्कम् टॅक्स कमेटी—आयकर सम्बन्धी
८ इण्डस्ट्रियल लेजिस्लेचर कमेटी—औद्योगिक कानून सम्बन्धी
९ म्यूनिसिपल कमेटी—कार्पोरेशन सम्बन्धी
१० इलेक्ट्रिक कमेटी—बिजली सम्बन्धी
११ इण्डिया टी सेस कमेटी—चाय सम्बन्धी
१२ कलकत्ता मैरीन ऐसोसियेशन—समुद्र सम्बन्धी
१३ कलकत्ता मेरीन इन्सुरेन्स—समुद्री बीमा सम्बन्धी
१४ कलकत्ता बेल्ड जूट ऐसोसियेशन—जूटकी पक्की गांठोंके सम्बन्धमें
१५ कलकत्ता बेल्ड जूट शिपर ऐसोसियेशन—जूट भेजने वालोंकी समिति
१६ कलकत्ता जूट डीलर्स ऐसोसियेसन—जूटके व्यापारी
१७ कलकत्ता जूट हाइड्रालिक प्रेस ऐसोसियेशन—जूट प्रेस सम्बन्धी
१८ वाइन, स्पिरिट एण्ड बियर ऐसोसियेशन—शराब सम्बन्धी
१९ कलकत्ता ग्रेन, एण्ड सीड ट्रेड ऐसोसियेशन—अनाज सम्बन्धी
२० कलकत्ता हाइड एण्ड स्किन शिपर्स ऐसोसियेशन—चमड़ा और खाल सम्बन्धी
२१ इन्डियन इंजिनियरिंग ऐसोसियेशन—इंजिनियरोंके सम्बन्धी
२२ इन्डियन लैक ऐसोसियेशन फार रिसर्च—लाख सम्बन्धी
२३ इन्डियन टी ऐसोसियेशन—चायके व्यापारियोंका संघ
२४ इन्डियन टी एसोसियेशन साइन्स—चायका वैज्ञानिक विभाग
२५ कलकत्ता टी ट्रेडर्स ऐसोसियेशन—चायके व्यापारियोंकी कमेटी
२६ कलकत्ता फायर इन्सुरेन्स ऐसोसियेशन—आगके बीमाके सम्बन्धमें
२७ वर्कमेन कम्पेनशेशन स्टैण्डिङ्ग कमेटी—मजदूरोंकी क्षतिपूर्ति सम्बन्धी
२८ मिसलेनियस कमेटी—मुतफर्रिकात विषयोंसम्बन्धी
२९ ऐक्सीडेन्ट इन्सुरेन्स कमेटी—आकस्मिक दुर्घटना सम्बन्धी

२ कामर्स—यह साप्ताहिक पत्र है। इसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रिपोर्ट, शेयर बाजारका विवरण आदि व्यापार सम्बन्धी सभी बातोंका समावेश रहता है। इसकी व्यापार सम्बन्धी सूचनायें महत्वपूर्ण होती हैं। यह डलहौसी स्क्वायरसे प्रकाशित होता है।

३ कैपिटल—यह वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी साप्ताहिक पत्र है। यह कमर्शियल बिल्डिङ्गसे प्रकाशित होता है।

४ कमर्शियल एजूकेशन—यह अंग्रेजी मासिक पत्र है। इसमें व्यापार सम्बन्धी विषय रहता है। पो० बक्स २०२० कलकत्ता।

५ इण्डियन ट्रेड जरनल—यह सरकारी पत्र है।

६ प्रापर्टी—यह सम्पत्ति सम्बन्धी पत्र है पता टालबट एण्ड को०३ लियान्स रेंज कलकत्ता

७ इण्डस्ट्री—यह उद्योग धन्धेका पत्र है। २२ श्यामबाजार।

८ कलकत्ता एक्सचेंज गजट एण्ड डेली ऐडवर्टाइजर।

९ कलकत्ता कमर्शियल गजट।

१० इण्डियन एण्ड ईस्टर्न—यहांसे इञ्जिनियर, मोटर, और रेलवे इस प्रकारके तीन पत्र निकलते हैं। पता ६ मैनगो लेन है।

११ बिजनेस वर्ल्ड—मासिक, राजामनीन्द्र रोड बेलगछिया।

१२ इण्डियन इन्सुरेन्स जर्नल—९७ क्लाइव स्ट्रीट

१३ बंगालको-अपरेटिव जरनल—राइटर बिल्डिङ्ग

१४ जरनल आफ सेन्ट्रल ब्यूरो आफ ऐनीमल हसबेण्ड्री एण्ड डेरिङ्ग इन इण्डिया - इस नामका पत्र सरकार निकालती है इसमें पशुपालन तथा डेरी आदिके सम्बन्धकी चर्चा रहती है।

१५ इण्डियन प्रिन्टर—पो० बक्स २१५२ कलकत्ता।

१६ इण्डियन इञ्जिनियरिङ्ग—७ मिशन रोड कलकत्ता

१७ इण्डियन जरनल आफ मेडिकल रिसर्च—यह पाक्षिक पत्र है। पता थैकर स्पिङ्क एण्ड को० कलकत्ता।

१८ इण्डियन मेडिकल गजट—३ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता

सार्वजनिक संघ

हम पहिले लिख आये हैं कि पत्र पत्रिकाओंने मानव समाजकी उन्नतिमें प्रशंसनीय भाग लिया है। समाजके विभिन्न अंगोंकी उन्नतिके लिये होनेवाले आन्दोलनोंको इन्होंने जीवन दे दे कर सफल बनाया है और परिणाम यह हुआ कि स्वार्थीपनसे काम करनेके लिये स्थान स्थान पर लोकसेवक संघ बनते हैं जो अपने ढंगसे बढ़कर काम करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। [illegible]

७ बंगाल जूट डीलर्स ऐसोसियेशन—जूटके व्यापारियोंका संघ
८ फाइनेन्स कमेटी—अर्थ सम्बन्धी
९ पीस गुड्स कमेटी – कपड़ा सम्बन्धी
१० यार्न कमेटी—सूत सम्बन्धी
११ कॉटन मिल कमेटी – कपड़ेकी मिलोंका संघ
१२ इन्सुरेन्स कमेटी—बीमा सम्बन्धी
१३ कोल कमेटी कोयला सम्बन्धी
१४ बीट्स सीड्स ऐसोसियेशन—अनाज सम्बन्धी
१५ ट्रान्सपोर्ट कमेटी—माल ढोनेके सम्बन्धका संघ
१६ हार्डवेयर एण्ड इंजिनियरिङ्ग—इञ्जिनियरोंके सम्बन्धका संघ
१७ ड्रगिस्ट एण्ड केमिस्ट—दवावाले व्यापारियोंके सम्बन्धका संघ

इसी प्रकार कितनी ही उपसमितियां हैं जिनका संचालन भारतीय व्यापारियोंके हाथमें है इस संघका कार्यालय १३५ केनिङ्ग स्ट्रीटमें है।

३ मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स —इसका आफिस २०३-१ हरिसन रोड पर है। इसका काम भी अनुभवी व्यापारियोंके हाथमें है।

अब हम शेष व्यापारी संघोंकी नाम सूची दे रहे हैं।

४ शीयर एक्सचेञ्ज — २ हाइट स्ट्रीट
५ मोइ ई एक्सचेंज —२ हाइट स्ट्रीट
६ इण्डियन माइका ट्रेडर्स ऐसोसियेशन ५०।६ धर्मतल्ला
७ मोटर इण्डस्ट्रीज ऐसोसियेशन—१०।११ केनिङ्ग स्ट्रीट
८ बंगाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स —२० स्ट्राण्ड रोड
९ बंगाल मुस्लिम ट्रेडर्स ऐसोसियेशन —८२।८ कोल्हू टोला स्ट्रीट
१० कलकत्ता ट्रेडर्स ऐसोसियेशन – ३५ डलहौसी स्क्वायर

---

९ वेलवेडियर जूट मिल्स—संकरैल हवड़ा
१० बाली जूट मिल—बाली ”
११ फोर्ट विलियम जूट मिल्स—(२ मिलें) ”
१२ अमेरिकन जूट मिल—शाहगंज हुगली
१३ नार्थब्रुक जूट मिल—चम्पदानी ”
१४ श्यामनगर नार्थ जूट मिल भद्रेश्वर ”
१५ चम्पदानी जूट मिल्स—चम्पदानी ”
१६ डलहौसी जूट मिल चम्पदानी ”
१७ वेलिङ्गटन जूट मिल्स—रिश्रा ”
१८ इण्डिया जूट मिल्स (२ मिलें)—
८ स्ट्रैण्ड रोड सेरामपुर ”
१९ इण्डिया ट्रस्ट मिल्स नं० ३—सेरामपुर ”
२० ऐंगस जूट मिल्स—भद्रेश्वरी ”
२१ विक्टोरिया जूट मिल्स (२ मिलें)
तेलिनी पाड़ा ”
२२ प्रेसीडेन्सी जूट मिल—रिश्रा ”
२३ इम्पायर जूट मिल—टीटागढ़ २४ परगना
२४ जगदल जूट मिल (न्यू)—जगदल ”
२५ केल्विन जूट मिल—टीटागढ़ ”
२६ यूनियन जूट मिल (उत्तर)—स्यालदा ”
२७ यूनियन जूट मिल (दक्षिण)—बदरतोला ”
२८ हुकुमचंद जूट मिल—हाली शहर ”
२९ बेल्टिट जूट मिल—बजबज ”
३० वेवरली जूट मिल—श्यामनगर ”
३१ कॉन्टिनेन्टल जूट मिल—बजबज ”
३२ कैलेडोनियन जूट मिल्स—बजबज ”
३३ ओरियन्टल जूट मिल्स—बजबज ”
३४ बजबज जूट मिल्स (नं० १ और २) बजबज ”

३५ बागनगर ईस्ट जूट मिल— २४ परगना
आलम बाजार
३६ बागनगर साउथ जूट मिल—
आलम बाजार ”
३७ कमरहट्टी जूट मिल्स—(२ मिलें A B)
३८ क्लाइव जूट मिल्स (नं० १ और २)
गार्डनरीच ”
३९ हुगली जूट मिल (अपर) गार्डनरीच ”
४० अलबियन जूट मिल्स—बजबज ”
४१ बेलियाघट्टा जूट मिल—
१३४ बेलियाघट्टा रोड ”
४२ रिलायन्स जूट मिल्स—भाटपाड़ा ”
४३ श्यामनगर जूट मिल्स (२ मिलें) गरुलिया ”
४४ गौरीपुर जूट मिल्स (नं० १ और २)
गौरीपुर ”
४५ कनकीनारा जूट मिल्स (ए और बी)
कनकीनारा ”
४६ ऐंग्लो इण्डिया अपर मिल—कनकीनारा ”
४७ ऐंग्लो इण्डिया मिडिल मिल—जगदल ”
४८ ऐंग्लो इण्डिया लोअर मिल जगदल ”
४९ नार्थ ऐलाइन्स जूट मिल्स—जगदल ”
५० सोरा जूट मिल्स—सोरा ”
५१ टीटागढ़ जूट मिल्स (नं० १ और २)
टीटागढ़ ”
५२ स्टैण्डर्ड जूट मिल्स—टीटागढ़ ”
५३ किनीसन जूट मिल्स (नं० १ और २)
टीटागढ़ ”
५४ भारा जूट मिल्स (नं० १ और २) भारा ”

२३ ग्रेट इण्डियन मोटर वर्क्स—
१५८-५९ धरमतल्ला स्ट्रीट

जहाज और बंदरके कारखाने

१ किङ्गजार्ज डाक—१४ ग्रेसब्रिज रोड गार्डन रीच

२कलकत्ता पोर्ट कमिश्नर्स आर लेण्ड वर्कशाप खिदरपुर

३ पोर्टकमिश्नर्स वर्कशाप—गार्डन रीच रोड

बिजलीके कारखाने

१ पी० डब्लू० डी० इलेक्ट्रिक इंजिनियरिङ्ग वर्क्स—ट्रेजरी बिल्डिङ्ग

२ वेडिङ्ग फैक्ट्री हैस्कीस्ड (इण्डिया) लि० १४ रानीस्वर्णमयी रोड

३ हवड़ा इञ्जिनियरिङ्ग को०—७७ कालेज रोड शालीमार

४ लिलुआ इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन—ई० आई० आर० लिलुआ

५ हवड़ा ट्रान्सफार्मर्स हाउस—ई० आई० आर लिलुआ

६ इण्डिया इलेक्ट्रिक वर्क्स —६० बालीगंज

७ वृटिश इण्डिया इलेक्ट्रिक कन्स्ट्रक्शन को० ६ बजबज रोड

८ रमा इञ्जिनियरिङ्ग कम्पनी—२० हेस्याम रोड भवानीपुर

९ ई० बी० आर० इलेक्ट्रिक शाप—बीजपुर-कचरापाड़ा

१० काशीपुर पावर स्टेशन—२८ मील रोड काशीपुर

११ गौरपुर पावर स्टेशन – नयीहट्टी

१२ भानपाग पावर हाउस—श्यामनगर

१३ खिदरपुर पावर हाउस (बी० एन० रेलवे) खिदरपुर

१४ बी० एन० आर० का सन्तरा गाछी पावर हाउस सन्तरागाछी

पीपे रंगनेके कारखाने

१ गंगा टीनिङ्ग फैक्टरी—५ राजा राजकिशन स्ट्रीट

२ टैंक स्टोरेज को०—बजबज

इसी प्रकार स्टेंडर्ड, वर्मा, इण्डो वर्मा एसियाटिक पेट्रोलियम आदि तेलकी कम्पनियोंके इसी प्रकारके कारखाने अपने २ नामसे बजबज में हैं।

जूट प्रेस

१ सन जून प्रेस– ३ काशीपुर रोड

२ ओशन जूट प्रेस—१४ नवाबपट्टी रोड चितपुर

३ अटलस जूट प्रेस—३ कालीप्रसन्न सिंघी स्ट्रीट काशीपुर

४ सूरज जूट प्रेस—१ गन फेक्ट्री रोड काशीपुर

५ लक्ष्मी जूट प्रेस—२२ मील रोड काशीपुर

६ काशीपुर हाइड्रालिक जूट प्रेस—
१५ A रतन बाबू रोड काशीपुर

७ गैन्जेस जूट प्रेस—चितपुर काशीपुर

८ कैम्पर हाउन प्रेस—५ रुस्तमजी पारसी रोड काशीपुर

९ विक्टोरिया जूट प्रेस—११५ चितपुर ब्रिज रोड काशीपुर

१० ऐशक्राफट प्रेस—१६ नवाबपट्टी रोड चितपुर

३० इण्डियन जूट मिल ऐसोसियेशन—जूट मिल सम्बन्धी

३१ मोटर वेहिकल्स स्टैण्डिङ्ग कमेटी—मोटर सम्बन्धी।

३२ इण्डियन माइनिङ्ग ऐसोसियेशन—खान सम्बन्धी।

३३ कलकत्ता जूट फेब्रिक शिपर्स ऐसोसियेशन जूटके मालको भेजने वालेकी समिती।

३४ कलकत्ता इम्पोर्ट ट्रेड ऐसोसियेशन--विदेशी माल मंगाने वालेकी समिति।

३५ कलकत्ता शुगर इम्पोर्ट ऐसोसियेशन शक्करके व्यापार सम्बन्धी

३६ कलकत्ता कोल कमेटी—कोयलेके सम्बन्धी

३७ इण्डियन मैप मेकर्स ऐसोसियेशन—भारतके नक्शोंसे सम्बद्ध

३८ रॉयल एक्स चेंज कमेटी—हुण्डी सम्बन्धी।

उपरोक्त नाम सूचीसे स्पष्ट होजाता है कि व्यापारके विभिन्न अंगोसे सम्बन्ध रखने वाली उपसमितियोंके अतिरिक्त भिन्न भिन्न व्यापारके कितने ही संघ बनाये गये हैं जो उक्त चेम्बरकी देख रेखमें उसके आदेशानुसार समस्त कार्य संचालन करते हैं।

इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स—यह व्यापारी संघ पूर्ण रूपसे भारतीय व्यापारी संघ है। यद्यपि यह संघ उपरोक्त संघके समान भारत व्यापी प्रभाव नहीं रखता फिर भी कलकत्ता नगरके व्यापारी वर्गमें इसकी प्रतिष्ठा एवं प्रभाव इसके अनुरूप ही है। समय समय पर इसे विदेशियोंके संगठित आन्दोलनके विरुद्ध भारतीय हित साधनके लिये भिड़ जाना पड़ता है। उस समय भारतके व्यापारकी शोच्य अवस्थाका कारुणिक दृश्य सम्मुख खिंच जाता है। इतना होने पर भी यह संस्था अवश्य ही भारतीय व्यापार वाणिज्यकी स्वत्व रक्षामें सदैव सतर्क पायी जाती है।

इस संघने भी व्यापारके विभिन्न अंगप्रत्यङ्गों पर पूरी दृष्टि रखनेके लिये छोटी छोटी अनेक समितियाँ बना कर अनुभवी दक्ष व्यापारियोंका सहयोग प्राप्त कर उन्हें दायित्वपूर्ण काम सौंप रक्खा है। अतः हम उनमेंसे कुछ प्रयोजनीय उपसमितियों और ऐसोसियेशनोंकी नाम सूची नीचे दे रहे हैं।

१ कलकत्ता राइस मर्चेण्ट्स ऐसोसियेशन—चावलके व्यापारियोंका संघ।

२ इण्डियन जूट ऐसोसियेशन लि०—भारतीय जूट व्यापारी संघ

३ एक्सचेञ्ज एण्ड बुलियन ब्रोकर्स ऐसोसियेशन—हुण्डीके दलालोंका संघ

४ इण्डियन स्टील ऐजेण्ट्स ऐसोसियेशन—भारतीय फौलादके व्यापारियोंका संघ

५ कलकत्ता किराना ऐसोसियेशन--किरानेके व्यापारियोंका संघ

६ गनी ट्रेडर्स ऐसोसि ... का संघ

ास

१ ऐनजिलो ब्रदर्स लि०—इसका आफिस ६ ट्यान्सरेंजमें है तथा चपड़ा तैयार करनेका कारखाना काशीपुर ७ रामगोपाल घोषाल घोष लेनमें है। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स टर्नर मारीसन एण्ड को० लि० है। तारका पता Angelo Bro.

२ ग्लास्टनकी जे०सी० शेलेक फैक्ट्री—इसका आफिस ५७ राधा बाजारमें है। भारतमें इसके एजेन्ट मेसर्स जे० सी०ग्लास्टन हैं।

खेतीके यंत्र

१ दत्त मशीन एण्ड ट्रल वर्क्स—इसका कारखाना ४३ मस्जिदबारी स्ट्रीटमें है। इसका दूसरा कारखाना कलकत्ता हार्डवेर मैन्यूफैक्चरिङ्ग लि० है। यहां कृषि सम्बन्धी सभी प्रकारके यंत्र तंत्र तैयार होते हैं और पुरानोंकी मरमत की जाती है।

ा मिल्स

१ बंगाल सा मिल्स—यह कारखाना १७।१ कनाल ईस्ट रोड उल्टा डांगामें है। इसके मालिक चक्रवर्ती एण्ड को० तथा इसके हिस्सेदार बाबू एन० जी० चक्रवर्ती और बाबू पी० देव हैं।

एल्युमीनियमके कारखाने

१ विक्टोरिया ऐल्यूमीनियम वर्क्स—घुसरी, सलकिया।

२ ऐल्यूमीनियम मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी—२ जेसोर रोड, दमदम।

जहाज तयार करनेके कारखाने

१ आर० एम० एन० कम्पनीका कारखाना—४३।४६ गार्डनरीच।

२ शालीमार वर्क्स—६८, फोरशोर रोड शिवपुर।

३ बर्न एण्ड को० कमर्शियल डाक - सलकिया।

४ जेसप कम्पनीकी हवड़ा फाउन्ड्री—हवड़ा।

५ जान किंग एण्ड को० का विक्टोरिया इञ्जिन वर्क्स—२३, तेलकल घाट रोड।

६ कलकत्ता लैण्डिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी—२० हवड़ा रोड—सलकिया।

ईनमल वर्क्स

१ बंगाल इनैमिल वर्क्स—पाल्टा।

२ सूर इनैमल एण्ड स्टैम्पिंग वर्क्स - ६ मिडिल रोड इन्टाली।

सीसेके कारखाने

१ कमरहट्टी वेनेस्टा फैक्टरी—कमरहट्टी

अभ्रक

१ जे० डी० जोन्सका माइका वर्क्स—४६ डाब० सन रोड।

कलई और पालिश

१ बंगाल गैलवनाइजिंग वर्क्स - ४३ मस्जिद बारी स्ट्रीट।

२ मारवाड़ गैलवनाईजिंग वर्क्स—राधो कलाई लेन, बामनगाछी।

३ इण्डियन गैलवनाईजिंग वर्क्स ४।२ घोषाल पारा लेन, घुसड़ी।

फैक्टरीज़ और इराडस्ट्रीज़

कलकत्ता और उसके आसपास वाले उपनगरोंकी फैक्टरी और इण्डस्ट्रीजकी नाम सूची हम सरकारी रिपोर्टके आधार पर नीचे दे रहे हैं:—

कपड़े और सूतकी मिलें

१ बंगलक्ष्मी काटनमिल—सेरामपुर हुगली
२ रामपुरिया काटन मिल सेरामपुर ,,
३ श्रीराधाकृष्ण काटनमिल्स—१२५ ओल्ड गूजरी रोड सल्किया हवड़ा
४ जाजोदिया काटन मिल—गिरीश घोष स्ट्रीट बेलूर ,,
५ विक्टोरिया काटन मिल्स—गूजरी सल्किया ,,
न्यू इण्डिस्ट्रीज़ लि॰—ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड सल्किया (उत्तर) ,,
...बाग़िह काटन मिल्स कम्पनी—घोरिह (न्यूलमिल्स.) ,,
...रिह काटन मिल्स कम्पनी—घोरिह (रिङ्ग मिल्स) ,,
...रिंग मिल फूलेश्वर उल्बेरिया ,,
...ोरान काटन मिल्स—४२ गार्डन रीच २४ परगना
...काटन मिल्स नं॰ १ श्यामनगर ,,
...काटन मिल्स नं॰ ४ (रिंग मिल्स) श्यामनगर ,,

मोजे बनियानके कारखाने

१ बालीगंज होजियरी फैक्टरी —२८ रोला रोड (दक्षिण) २४ परगना
२ एन॰ दोलत्की बेलिया घट्टा होजियरीफैक्टरी—बेलिया घट्टा ,,
३ पारजोर होजियरी मिल्स लि॰—बनारस रोड सल्किया हवड़ा

जूटमिल्स

१ लडलो जूट मिल—चंगेल ,,
२ फोर्ट ग्लास्ट मिल्स (३ मिलें) फोर्ट ग्लास्टर ,,
३ न्यूसेन्ट्रल जूट मिल्स—३३ जय बीबी लेन गूजरी ,,
४ गैन्जेस जूट मिल्स (२ मिलें) ४७३ ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड शिवपुर ,,
५ हवड़ा जूट मिल्स (३ मिलें) राम-कृष्णपुर शिवपुर ,,
६ डेल्टा जूट मिल्स—मानिकपुर ,,
७ नैरानल जूट मिल्स—राजगंज ,,
८ लौरेन्स जूट मिल्स—चकासी ,,

४

कोमिकल वर्क्स

१ बंगाल केमिकल एण्ड फार्मेस्यूटिकल वर्क्स ९० मानिकतल्ला मेन रोड

२ डी वालडाई एंड को० कोनागर

३ स्मिथ स्टेनिस्टरीट एंड को० १८ कानवेन्ट रोड

गैसके कारखाने

१ ओरियन्टल गैस वर्क्स १३।१४ कैनाल वेस्ट रोड

२ बेंगाल एरेटिंग गैस वर्क्स गार्डन रीच

३ ओरियन्टल गैस वर्क्स ४२२ मैंडर्-फ रोड

चपड़ाका कारखाना

१ ऐनजेलो ब्रदर्स शैलैक फैक्ट्री ६ रामगोपाल घोष रोड कासीपुर।

कागजके कारखाने

१ टीटागढ़ पेपर मिल्स (२ मिलें) टीटागढ़।

२ इंडिया पेपर पल्प कम्पनी हाली शहर

दियासलाईके कारखाने

१ इसावी इण्डिया मैच मैन्यू फैक्ट्री—४६ मुरीपुकर रोड

२ वेस्टर्न इण्डिया मैच कम्पनी—४६-५ कैनाल वेस्ट रोड

३ कलकत्ता मैच वर्क्स-दिलवरजंग लेन गार्डनरीच

४ एम० एन० मेहता फैक्ट्री—१०४ उल्ताडिंगी मेन रोड

५ सुपर मैनटोश एण्ड को०—३०२-१ अपर सरकुलर रोड

६ करीम भाई मैच मैन्यूफेक्चरिङ्ग को०—३२ कैनाल वेस्ट रोड

तेल मिल

१ हवड़ा आइल मिल्स—रामकृष्टोपुर घाट रोड

२ अभय आइल मिल—१३५-१ मानिक तल्ला मेन रोड

३ हालिंग्जुल आइल मिल—कोनागर

४ वृद्धिचंद रामकुमार आइल मिल—९ राजा राजकृष्ण स्ट्रीट

५ हपीकेश गौरहरी घोष आइल मिल—७ बनारस रोड सलकिया

६ गोलखनदास दुलीचन्द आइल मिल—६।३ मानिक तल्ला रोड

७ मानिकलाल साधूखा आइल मिल—२३५अपर सरकुलर रोड

पेन्ट और वार्निश

१ शालीमार पेन्ट वर्क्स—हवड़ा

२ जैनसन एण्ड निकलोन पेन्ट फैक्ट्री—गौरीफा नईहट्टी

३ मुगारका पेन्ट एन्ड वार्निश वर्क्स—सौदपुर

४ हैडफील्ड लि० का पेन्ट एण्ड वार्निश वर्क्स रानी स्वर्णमई लेन

५ योपमैन एण्ड कैरेन लि०—६७ साउथ रोड इन्टाली

६ कलकत्ता पेन्ट, कलर एण्ड वार्निश वर्क्स—१० जोड़ाबगान स्ट्रीट

साबुनके कारखाने

१ नार्थवेस्ट सोप फैक्ट्री—६३ गार्डनरीच

२ इण्डियन सोप कम्पनी—११।१ बेचूलाल रोड इन्टाली

३ कलकत्ता सोप फैक्ट्री—बालीगंज

५५ अलेक्सफोन्ड्रा जूट मिल—जगदल २४ परगना
५६ आकलैण्ड जूट मिल—जगदल „
५७ नयीहट्टी जूट मिल्स—नयीहट्टी
हाली शहर „
५८ लैन्स डाउन जूट मिल्स—दक्षिणदरी „
५९ मेघना जूट मिल्स (उत्तर)जगदल „
६० मिड्ल्स जूट मिल्स—श्यामगंज „
६१ नदिया जूट मिल (उत्तर)—नयीहट्टी „
६२ नदिया जूट मिल (दक्षिण)—नयीहट्टी „
६३ क्रोग जूट मिल—श्यामनगर „
६४ मेघना जूट मिल—जगदल „

रेशमका मिल

१ बंगाल सिल्क मिल—ऐरिफ रोड उल्टाडांगा „

मशीनरी सम्बन्धी कारखाने

१ इण्डियन मोटर टैक्सी कैब कम्पनी—
३३ ऐलेण्ड रोड बालीगंज
२ स्टुअर्ट कम्पनीका कारखाना—
३८।१ पण्डितिया रोड बालीगंज
३ फ्रेञ्च मोटरकार कम्पनीका कारखाना—
२३४-३ लोअर सरकुलर रोड
४ जी मैकन्जी कम्पनीका मोटरका कारखाना-
२०८ लोअर सरकुलर रोड
५ थार्नी क्रैफ्ट लि०—४८ डायमण्ड हारबर रोड
अलीपुर
६ गोल्डवर्ग ब्रदर्स पेरिस गैरेज—१२ मिडिल
रोड इंटाली
७ विकर्स एण्ड को०मोटरका कारखाना—
२३३।४लोअर सरकुलर रोड
८ एम० टी० लि०—५९-६० चौरंगी
९ ईवान जोन्सका मोटरका कारखाना—
२०८ लोअर सरकुलर रोड
१० वालफर्ड ट्रान्सपोर्ट लि०—हाइड रोड
खिदिरपुर
११ रगबी इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—१८२ लोअर
सरकुलर रोड
१२ ऐलेन बेरी कम्पनीका कारखाना—६२ हजारा
रोड बालीगंज
१३ स्पेन्स लि०—मोटर मरम्मत—२३ कानवेन्ट
इन्टाली
१४ ए० ई० हेजेन एण्ड को०—मोटर मरम्मत
१० डेकर्स लेन
१५ वाल्टर लाकी एण्ड को०—१४ वृटिश इण्डिया
स्ट्रीट
१५ स्टुअर्ट कम्पनीका कारखाना—३ मैन्गो लेन
१७ ग्रेक्वेल कम्पनी „ „—४४ फ्री स्कूल
स्ट्रीट
१८ जी० एफ० जेनरल मोटर इंजिनियरिङ्ग वर्क्स
४६।४ वेलस्ली स्ट्रीट
१९ इण्डो-वृटिश मोटर इण्डस्ट्री—७२६ फ्री
स्कूल स्ट्रीट
२० मैथ्यू एण्ड टर्नबुल मोटर रिपेअर वर्क्स—
६२ इलियट रोड
२१ रुसा इञ्जिनियरिंग (गैरेज) वर्क्स—
३ मिडलरोड
२२ ए० मिल्टन एण्ड को० का कारखाना—
११६ धरमतल्ला स्ट्रीट

ग्रामोफोन रेकार्डका कारखाना

१ ग्रामोफोन कम्पनी कारखाना १३६ वेलियाघट्टा

धोबी कम्पनी

१ बेंगाल स्टीम लांड्री को० लि०—रिची रोड बालीगंज

गोली बारूदके कारखाने

१ मेटल एण्ड स्टील फैक्ट्री इचापुर

२ गन एण्ड सेल फैक्ट्री काशीपुर

३ राइफल फैक्ट्री इचापुर

रस्सेके कारखाने

१ गैनजेस रोप वर्क्स शिवपुर

२ शालीमार रोप वर्क्स ४१ शालीमार रोड

३ घूसरी रोप वर्क्स १४६ ओल्ड घूसरी रोड

टीनका कारखाना

१ धूरसिंह टीन फैक्ट्री १४ हालसी बगान रोड

सो पफैक्ट्री

१ कलकत्ता सोप वर्क्स लि०—इसका कारखाना साइडिङ्ग रोड बालीगंजमें है। इसमें ४ लाख १० हजार की पूंजी लगी है। यहां साबुन, ग्लैसरीन और शृङ्गारकी सभी प्रकारकी वस्तुओंके बनानेका प्रबन्ध है।

२ इण्डियन सोप कम्पनी एण्ड बक्स फार्डवार्ड वर्क्स मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी—इसका कारखाना ११ बेचूलाल रोड इन्टालीमें है।

३ नार्थ वेस्ट सोप कम्पनी लि०—इसका कारखाना ६३ गार्डन रीच रोड पर है।

शक्करके कारखाने

१ बंगाल पाम शुगर मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—इसका कारखाना सल्कियामें है तथा इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ए० एल० कुवड़ एण्ड को० है।

२ ईस्ट बंगाल शुगर मिल्स लि०—इसका आफिस३ कालेज स्कायरमें है तथा इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एस० एस०हीन एण्ड को० हैं।

रंग और मोम जामा

१ नेशनल डाई एण्ड वाटर प्रुफ वर्क्स लि०—इस कारखानेके आदि संस्थापक स्वनाम धन्य देशबन्धु चित्तरंजन दास हैं। और वर्तमानमें आपकी धर्म पत्नी श्रीबासन्ती देवी इसकी एक डायरेक्टर हैं। इसके सोल ऐजेन्ट मेसर्स बी० सी० नाग एण्ड ब्रदर्सका आफिस ७ बो बाजार स्ट्रीटमें हैं।

ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियां

हम यहां कतिपय उन्हीं ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंकी चर्चा करते हैं जिनका हेड आफिस कलकत्तेमें है और इनके डायरेक्टर मण्डलमें भारतीय सदस्य भी शामिल हैं :—

कोयलेकी कम्पनियाँ

१ अल्बियन कोल कम्पनी लि०—इस कम्पनीमें श्री० जे० सी०मुकर्जी और श्री एल० सी० मोदीको छोड़कर सभी डायरेक्टर योरोपियन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० वी० लो० एण्ड को० लि०-१२ डल्हौसी स्क्वायर हैं। पद्मा राज्यमें खरीदी गयी ६०० बीघा भूमिमें

११ हुगली हाइड्रालिक जूट प्रेस—चितपुर काशीपुर
१२ बंगाल हाइड्रालिक प्रेस—३ गन फैक्ट्री रोड काशीपुर
१३ यूनियन जूट प्रेस—१० डिरिजंग रोड काशीपुर
१४ न्यू कोल प्रेस—काशीपुर
१५ कलकत्ता हाइड्रालिक जूट प्रेस—१५ काली प्रसन्न सिंघी लेन काशीपुर
१६ चितपुर हाइड्रालिक जूट प्रेस—काशीपुर
१७ पेंक्टेश्वर हाइड्रालिक प्रेस—बेलगछिया होलिसडारी
१८ स्टूबर्ट बैंक प्रेस—४।५ कालीप्रसन्न सिंघी काशीपुर
१९ कम्बल जूट प्रेस—२ टर्नर रोड काशीपुर
२० राली ब्रदर्स जूट प्रेस—६ रामगोपाल घोष रोड काशीपुर
२१ राली ब्रदर्स जूट प्रेस—गोवर डांगा
२२ गोला घरी जूट प्रेस—बाग बाजार
२३ सेन्ट्रल हाइड्रालिक जूट प्रेस—२४३ अपर चितपुर, बाग बाजार
२४ इण्डिया जूट प्रेस—१५ नीमतल्ला लेन
२५ मिल्लीप जूट प्रेस—१२४ ओल्ड घुसड़ी रोड
२६ सलकिया जूट प्रेस—४३ ओल्ड घुसड़ी रोड
२७ हनुमान जूट प्रेस—३८ घुसड़ी रोड
२८ इम्पीरल बाफ इण्डिया जूट प्रेस—२४ घुसड़ी रोड
२९ वेस्टर्न पेटेन्ट प्रेस—३२ हवड़ा रोड सलकिया
३० गुमटी जूट प्रेस—३४ गोरूमी लेन सलकिया
३१ इम्पीरियल जूट प्रेस—२१ घुसड़ी रोड
३२ हवड़ा हाइड्रालिक जूट प्रेस—३४ गोरूमी लेन हवड़ा
३३ राली ब्रदर्स जूट प्रेस—शिवराखुली

काटन जीनिङ्ग एण्ड बेलिंग फैक्टरी

१ कलकत्ता काटन फैक्ट्री—६० काशीपुर रोड
२ काशीपुर काटन जीनिङ्ग फैक्ट्री—२ शुगर वर्क्स लेन काशीपुर
३ हरदत्तराय गुलाबराय कपास जिनिङ्ग मिल्स—लिलुआ
४ बालकृष्ण दास मोहता कपास जिनिङ्ग फैक्ट्री ३४ मोहिनीराय पारा लेन सलकिया
५ जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनीकी हवड़ा जीनिङ्ग फैक्ट्री, १२।१ गिरीश घोष लेन बेलूर
६ सोहन लाल कपास फैक्ट्री—१५२ ओल्ड घुसड़ी रोड
७ हनुमान कपास फैक्ट्री—१५२ ओल्ड घुसड़ी रोड
८ विश्वनाथ कपास मिल—६५ धरमोला लेन सलकिया

कंघा, बटाई आदि

डेसेर कोम, बटन एण्ड मैन्युफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर राजा पी० सी० देव, राय बहादुर, राय० जे० एन० मजूमदार C. I. E. आदि हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख की है। इसके कारखानेमें कंघे, बटन तथा बटाइयाँ तैयार होती हैं। इसका आफिस २०।१ लाल बाजार स्ट्रीटमें है।

१० बंगाल नागपुर कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल श्री गजानन्दजी जटिया ही एक भारतीय डायरेक्टर हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐड्रयूल एण्ड को० लि० के पास है।

११ भलगोरा कोल कम्पनी लि०—इसके डाइरेक्टर श्री जे० सी० बनर्जी; मंगनीराम बांगड़, तथा राय बहादुर सेठ सुखलालजी करनानी हैं इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० वी० लो एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीके पास १२५० बीघाकी कोयलेकी खानें है। यह कम्पनी कोक भी तैयार करती है।

१२ देवली कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमेंसे केवल सर ओंकारमलजी जटिया ही एक मात्र भारतीय हैं जो डायरेक्टर मण्डलके सदस्य हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐड्रयूल एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीकी खाने देशरगढ़ जिलेमें १०२६ बीघा भूमिमें हैं।

१३ घेमों मेन कालरीज लि०—इसमें महाराज सर मनीन्द्रचंद्र नान्दी के० सी० आई० ई० के अतिरिक्त सभी योरोपियन डायरेक्टर हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मैकनियल एण्ड को० २ फेयरली प्रेस कलकत्ताके पास है।

१४इस्वीटेबल कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमेंसे राय साहिब इनमचंद्र घोषको छोड़कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मैकनियल एण्ड को० के पास है। कम्पनीके पास १४१५४ बीघा कोयलेका क्षेत्र है।

१५ फलपहारी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया ओ० बी० ई० और महाराज सर मनीन्द्रचंद्र नान्दी] के० सी० आई० ई० हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० है। इसकी खाने रानीगंजके प्रसिद्ध कोयला क्षेत्रमें ६८७ बीघा भूमिमें हैं।

१६ कास्टा कालरीज लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल श्री जे० सी० बनर्जी ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० वी० लो एन्ड को० के पास है। कम्पनीकी खाने १४०० बीघेमें हैं।

१७ कोसुनन्दा एण्ड नाइडो कालरीज लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर आर० एन० मुकर्जी ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्ट मार्टीन कम्पनी ६।७ क्लाइव स्ट्रीट है। इसकी खाने करियाके समीप ११८० बीघाके कोयला क्षेत्रमें हैं।

१८ कुआरडी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर राय साहिब ईसनचंद्र घोष, राय बहादुर सेठ सुखलाल करनानी, तथा श्री० जे० सी० बनर्जी हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी एच० बी० लो० एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीकी खानें रानीगंजमें ३११५ बीघा भूमिमें हैं।

बिस्कुटके कारखाने

१ श्यामबाजार बिस्कुट फैक्ट्री २ कालाचांद सन्याल लेन।

२ ए० फिरपो लि० चौरंगी।

३ लिली बिस्कुट फैक्ट्री ३, रामाकान्त सेन लेन, उल्टा डांगा।

४ बृटेनिया बिस्कुट फैक्ट्री बीरपारा १ली लेन दमदम।

शराबकी भट्टी

१ रुसा डिसटिलेरी टालीगंज।

आटेकी मिलें

१ कलकत्ता सिटी फ्लोर मिल्स २४३ अपर चीतपुर रोड।

२ यूनाइटेड फ्लोर मिल्स ३ उल्टा डांगा रोड।

३ नरिकेल डांगा रोलर फ्लोर मिल्स १७।४ कनाल वेस्ट रोड।

४ इम्पायर फ्लोर मिल्स जगत बनर्जी घाट रोड शिवपुर।

५ हवड़ा फ्लोर मिल्स, ३५ रामकिष्टोपुर घाट रोड हवड़ा।

६ हुगली फ्लोर मिल्स फ़ारेस्ट रोड रामकृष्टोपुर

७ रिफार्म फ्लोर मिल्स १४२ फोरशोर रोड शिवपुर।

बर्फ और सोडावाटर

१ लाइटफुट रिफ्रिजेरेशन कम्पनीका कारखाना बेलिया हट्टा रोड इन्टाली।

२ कलकत्ता आइस फैक्ट्री ३ घोस स्ट्रीट।

३ वैगन एंड कम्पनी ४ बी चौरंगी।

४ काली मजूमदार (रोड) आइस फैक्ट्री सलकिया।

५ क्रिस्टल आइस फैक्टरी २१ कैनाल स्ट्रीट

चावल मिल

१ अतुलकृष्ण दत्त राइस मिल शाहपुर टालीगंज

२ कृष्णकाली रायका शाहपुर राइस मिल बेहला।

३ गांगजी साजन राइस मिल इतलहट्टा रोड

४ मदनमोहन राइस मिल चांदी टोला। टालीगंज

५ बागमारी राइस मिल ३५ बागमारी रोड।

६ पोर्टकेनिंग राइस मिल केनिंग टाउन।

७ तारा राइस मिल चंडीतल्ला टालीगंज।

शक्कर मिल

१ काशीपुर शुगर वर्क्स ४१५ गनफाउण्ड्री रोड

तम्बाकूके कारखाने

१ अमेरिकन ईस्टर्न टोबाको कार्पोरेशन लि० १६ दमदम रोड।

२ कान्टीनेन्टल स्टोर्स एजैन्सी ८२ नीमतल्ला घाट स्ट्रीट।

खाद तैयार करनेकी मिल

१ बेंगाल बोन मिल्स राममोहन मल्लिक गार्डन लेन, बेलियाहट्टा

२ गैंजेस वैली बोन मिल उल्टाडांगा

३ अटलस फर्टिलाइजर वर्क्स डाइड रोड

४ चितपी हट्टा बोन मिल्स ४।१ राममोहन मल्लिक गार्डन लेन

तथा सर लल्लू भाई सांवल दासको छोड़ कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मार्टीन एण्ड को० के पास है।

९ दार्जीलिंग हिमालय रेल्वे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल सर आर० एन० मुकर्जी के० सी० एस० आई०के०सी० वी०ओ० ही भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी, गिलैण्डर्स आर्वथ नाथ एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीटके पास हैं।

१० फटूवा इस्लामपुर लाइट रेल्वे को० लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर० आर० एन० मुकर्जी तथा सर लल्लूभाई सांवलदासको छोड़ कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मार्टीन एण्ड को० के पास है।

अभ्रककी खानें

१ वृन्दाबन इंडस्ट्रियल सेण्डीकेट लि० इसका रजिस्टर्ड आफिस ५ फेयर्ली प्लेसमें है। कम्पनीकी खानें कोडर्मा जि० हजारी बागमें है जहां अभ्रक निकाला जाता है। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स होर मिलर एण्ड को० लि० कलकत्ताके पास है।

२ छोटूराम होरिलराम लि०—इसके डायरेक्टर बाबू छोटूरामजी तथा दरसऊ रामजी हैं। इसका रजिस्टर्ड आफिस १, २, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीटमें है। इसकी खानें कोडर्मा जि० हजारी बागमें हैं। यह कम्पनी स्वयं ही अपने मालको विदेश भेजती है।

३ नन्द एण्ड सामन्त कम्पनी लि०—इसका हेड आफिस २६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्तेमें है। इसकी खानें घोरखोला, देवूर, नागघाटी, चित्रापुरमें है जहांसे अभ्रक निकलता है। अभ्रक साफ करने तथा काट कर छटाई करनेका काम इसके कोडर्मा कारखानेमें होता है।

सीसाके कारखाने

१ ट्रायङ्गल लेड मिल्स कम्पनी लि०। इस कारखानेमें चाय लपेटने तथा चायके बक्सोंमें रखनेका सीसा तैयार होता है। जिसमें T. L. M मार्का मशहूर है। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स मैक्लाड एण्ड को० के पास है।

आटाकी मिलें

१ हवड़ा फ्लोर मिल्स लि०। इसका रजिस्टर्ड आफिस २१ रूपचंदराय स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया के०टी० ओ० बी० ई तथा बाबू गजानंदजी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाख रुपयेकी है जो १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १५ हजार शेयर निकाल कर इकट्ठी की गयी है। इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर बाबू चम्पालालजी जटिया तथा बाबू कन्हैयालालजी जटिया हैं।

अलकतराके कारखाने

१ ब्रिस्टर ऐन्टीसेप्टिक ड्रेसिङ्ग कम्पनी—
७उमाकान्त लेन दमदम

२ शालीमार टार डिस्टिलरी वर्क्स— गोवोरिया
हवड़ा

मोमजामाके कारखाने

१ सालीमार वाटर प्रूफ मैन्यूफेक्चरिङ्ग वर्क्स—
गोवोरिया हवड़ा

स्याहीके कारखाने

१ हुगली इंक कम्पनी—४२७ ग्रैण्ड ट्रंक रोड

२ यू० सी० चक्रवर्ती इंक फैक्ट्री—१६१ ई०
जी बेलियाघट्टा

ईंट खपड़ा सुरखी मिल

१ विक्टोरिया सुरखी मिल—७६-१ कार्नवालिस
स्ट्रीट

२ हमटन एण्ड सन्स सुरखी मिल—६ कैनाल
स्ट्रीट इन्टाली

चूना सीमेण्टके कारखाने

१ सिल्हट लाइन वर्क्स—पंचपारा

२ कलकत्ता पाटरी वर्क्स—४४।४५ टंगरा रोड

लकड़ी और फरनीचरके कारखाने

१ मैनुल फील्ड एण्ड सन्स फरनीचर वर्क्स—
टैङ्गरा रोड इन्टाली

२ लिन्टन लि०—६, वेस्टन स्ट्रीट

३ सी० लाजरस एण्ड को०—इन्टाली

४ मार्ट पुकुर वर्क्स—४८-१ चिंगरी घट्टा रोड

५ कैन्टन कार्पेन्टरी वर्क्स—१४ टैङ्गरा रोड

६ पैकिङ्ग मैटीरियल कम्पनी—१९७ अपर सर्कु-
लर रोड

कांचके कारखाने

१ ग्लास कटिङ्ग एण्ड पालिशिङ्ग फैक्ट्री—ओल्ड
कोर्ट हाउस स्ट्रीट

२ कलकत्ता ग्लास एण्ड सिलिकेट वर्क्स—४।१
कुण्डू लेन बेलगछिया

३ बंगाल ग्लास वर्क्स—चर्च रोड दमदम

लकड़ीके कारखाने

१ बेलियाघट्टा फैक्ट्री आफ टिम्बर ट्रेडर्स लि०-१६
B. २ चालपट्टी रोड बेलियाघट्टा

२ ब्रिटेनिया बिल्डिङ्ग एण्ड आयर्न को०—१२।१
बेलेस्ली स्ट्रीट

संग तराशीके कारखाने

१ एल० ई० सैलतिकस्तियोनी लि० (संगमरमर)—
२० हवड़ा रोड सल्किया

२ इण्डियन पेटेण्ट स्टोन वर्क्स—१ कनाल ईस्ट
रोड—बेलियाघट्टा

३ कट्टा स्टोन एण्ड मारबल वर्क्स—५ कट्टा रोड
खिदरपुर

चमड़ाके कारखाने

चार्ल्स बूथ एण्ड को० लेदर वर्क्स—चिंगरियाहट्टा
रोड खिदरपुर

२ इण्डिया टैनरी ५ हाइड रोड खिदरपुर

३ बंगाल टैनरी हाइड रोड खिदरपुर

४ नेशनल टैनरी पगला डांगा साउथ कनाल रोड

५ कलकत्ता रिसर्च टैनरी कनाल साउथ रोड

ब्रशका कारखाना

१ कलकत्ता ब्रश एण्ड फाइबर फैक्ट्री १७२ बो
बाजार स्ट्रीट

कलकत्ता और उपनगरके मिलोंकी संख्या बढ़ने ही नयी उलझनें भी उठ खड़ी हुई अतः सन् १८८४ ई० में इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशनकी स्थापना कलकत्ते में की गयी। सन् १८८५ से १८९५ तक मिलोंकी संख्यामें कोई वृद्धि नहीं हुई पर मिलवाले अपने यहां करघेकी संख्या अवश्य बढ़ाते रहे। इसी समय भाफके साथमें बिजलीसे काम लेना आरम्भ किया गया। सन् १८८५से १९०० ई० के बीच खरड़ा, गोंडलपारा (फ्रेंच सीमामें) अलायन्स, ऐंग्लो इण्डिया, स्टेण्डर्ड, नेशनल, डेल्टा, किनोसन, और ऐराधून (वर्तमान लैंसडाउन) नामके जूट मिलोंकी स्थापना की गयी। सन १९०४ ई० तक डलहौसी, अलेक्जेन्डरा नईहट्टी, लारेन्स, वेलवेडियर, रिलायन्स, केलविन, आकलैण्ड, तथा नार्थब्रूक मिल्स खोले गये। सन् १९०४-१४ ई० के बीच ऐलवियन, ऐंग्स (अमेरिकन कम्पनीका मिल) तथा इम्पायर ३ मिल स्थापित किये गये। योरोपीय महासमरके समय कैलेडियन, ईथियन ओरियन्ट, वेवर्ली, क्रेग तथा बालीमिल खुले। युद्धके बाद नदिया, मेघना, चेविया, बेंजामिल (वर्तमान प्रेसीडेन्सी मिल्स) बिड़ला और हुकुमचंद मिल्सकी स्थापना हुई। सन् १९२३ ई० में लडलो तथा अमेरिकन मैन्यूफैक्चरिङ्ग नामक दो अमेरिकन मिलोंकी स्थापना हुई।

वर्तमानमें २ मिलोंकी एजेण्ट भारतीय व्यापारी फर्में हैं। तीन मिलोंकी अमेरिकन कम्पनियां हैं तथा शेष मिलोंकी एजेण्ट योरोपियन फर्में हैं।

आदमजी जूट मिल लि०; हनुमान जूट मिल (प्राइवेट) अगरपाड़ा जूट मिल (प्राइवेट) यह मिलें भी भारतीय हैं।

कलकत्ता और उसके उपनगरोंके जूट मिलोंका आवश्यक परिचय इस प्रकार है।

अलवियन जूट मिल्स कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०६ ई० में हुई थी इसके डायरेक्टरोंमें श्री डी० डी० सासुन, मि० जी० एफ० रोज तथा बाबू गजानंदजी जाड़िया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी तो २१ लाखकी है पर १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १२ लाखकी साधारण पूंजी इकट्ठीकर काम चलाया जा रहा है। इसका हिसाब ६ मासमें होता है अतः छः माही आर्थिक विवरण अप्रेल और अक्टूबरमें प्रकाशित किया जाता है।

कम्पनीका जूट मिल बजबजके पास है। इसमें बोरेके करघे ३०० और हेसियनके ४० हैं। इस प्रकार कुल ३४० करघे हैं, इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रो कलकत्ते में है।

अलेक्जेन्डरा जूट मिल्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०४ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें डी० एम० के० मेंग, मि० एम० एम० हडमन, मि० सी० ए० जोन्स तथा मि० ई० स्टाम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है पर १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६ हजार साधारण

कम्पनीकी कोयलेकी खाने हैं। ये खाने बोकरूओं और रामगढ़के बीच वाले क्षेत्रमें हैं।

२ ऐमल गमेटेड कोल फील्डस लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल राय बहादुर श्री ए० सी० बनर्जीको छोड़कर सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स शा वालेस एण्ड को०—४ बैंक्स हाल स्ट्रीट है।

३ अरंग कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा एल० सी० झंवरको छोड़कर शेष सभी योरोपियन हैं। इस कम्पनीकी कोयलेकी खानें ५०० बीघेके क्षेत्रमें फैली हुई हैं।

४ बागडिग्गी कुजामा कालरीज लि०—इस कम्पनीके भारतीय डायरक्टरोंमें राय० ए० सी० बनर्जी बहादुर, सी० आई० ई, और श्री० एम० के खन्ना हैं—इसकी मैनेजिङ्ग ऐजन्सी मेसर्स एम० के० खन्ना एण्ड को० लि०—८ ओल्ड कोर्ट हाउस कार्नरके पास है। इस कम्पनीकी खानें झरियाके प्रसिद्ध कोयलेके क्षेत्रमें ३०० बीघा भूमिमें हैं।

५ बरबोनी कोल कनसर्न लि०—इसके डायरेक्टरोंमें राय बहादुर सेठ सुखलाल करनानी ओ०बी०ई० ईसनचंद्र घोष; जे० सी० बनर्जी तथा ए० सी० चटर्जी हैं। इस कम्पनीके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० बी० लो० एण्डको लि० है। इस कम्पनीकी खानें २२, ५०० बीघेकी विस्तृत भूमिमें है।

६ बेनाकुरी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरक्टरोंमें श्री० जे० सी० बनर्जी तथा श्री० एल० सी० झंवरको छोड़कर शेष सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० बी० लो० एण्ड को० है। इसकी खाने रानीगंज स्टेशनसे ६ मील दूरपर हैं।

७ बंगाल भट्टडी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री कन्हैयालालजी जटियाके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इस कम्पनीके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि०-८ क्लाइव रो है। इसकी खाने झरियाके कोयला क्षेत्रमें ३७० एकड़ भूमिमें हैं।

८ बंगाल कोल कम्पनी लि०—इसमें सर ओंकारमलजी जटिया ही एक मात्र भारतीय डायरेक्टर हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० हैं। इस कम्पनीके अधिकारकी भूमि यों तो रानीगंज और रफारोके बीच ६०हजार एकड़ है पर इसमेंसे ५० हजार एकड़ ऐसी भूमि है जिसमें कोयला निकलता है। इसके अतिरिक्त गिरिडिह, पलामूं और झरियामें भी इसकी खाने हैं।

९ बंगाल गिरिडिह कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री गजानन्दजी जटियाके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० हैं। यह कम्पनी उपरोक्त बंगाल कोल कम्पनी लि० के अन्तर्गत ही है।

फिनले, मि० जी० एच० फेयरथर्स्ट, और मि० जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे २० हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका हिसाब ६ मासमें होता है अतः सितम्बर और मार्चमें आर्थिक विवरण प्रकाशित किया जाता है।

यह कम्पनी बारानगर जूट फैक्टरी खरीदनेके लिये खोली गयी थी। इसका मिल बारानगरमें है उसमें २५० बोरेके और ५७१ हैसियनके करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स हेन्डरसन एण्ड को० लि० का आफिस १०१।१ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

७ बेलवेडियर जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६०६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० डी० डी० सासुन, श्री सेठ छज्जूराम जी चौधरी सी० आई० ई०, मर ओंकारमलजी जटिया, के०टी० ओ बी० ई तथा मि० जी० एफ० रोज हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २१ लाख की हैं इसका हिसाब छ मासमें हुआ करता है अतः जून और दिसम्बरमें आर्थिक विवरण प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल संकेल हवड़ामें है। इसमें २१६ बोरेके और ४३१ हैसियनके करघे हैं। इस प्रकार कुल ६५० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रोडमें है।

८, विड़ला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६१६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर बाबू ब्रजमोहनजी विड़ला, राय बद्रीदासजी गोयेनका बहादुर, बाबू गजानंदजी जटिया, सेठ छज्जूरामजी चौधरी सी० आई० ई०, मि० ई० पी० रजदर तथा सेठ मगनमलजी कोठारी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है जिसमें से १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे २,५०,००० साधारण शेयर हैं। इसका छमाही आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्च में प्रकाशित किया जाता है।

इसका जूट मिल श्यामगंज हाट बजबज में है। इसमें ३०० बोरेके करघे तथा तथा ५०० हैसियनके हैं इस प्रकार ८०० करघे चल रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स विड़ला ब्रदर्स लि० का आफिस ८ नं० रायल एक्सचेंज प्लेसमें है।

६, बजबज जूट मिल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७२ ई०में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमलजी जटिया, के०टी० ओ०बी०ई०, मि०ई०आर० हार्टले, तथा मि०जी०एफ० रोज हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २७ लाखकी है जिसमेंसे १००) प्रति शेयरके हिसाबसे १८ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका छमाही हिसाब अप्रैल और अक्टूबरमें प्रकाशित होता है।

१९ लकारका कोल कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०७ ई० में कराई गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें बाबू बालमुकुन्दजी डागा, रा० ब० सेठ सुखलाल करनानी तथा श्री० जे० सी० बनर्जी हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० ले एण्ड को० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४ लाख ५० हजारकी है जो १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४५ हजार शेयर बेच कर लगायी गयी है। इसकी खानें ५८७ बीघेके क्षेत्रमें करियाके पास है।

२० न्यू सिनिडिही कोल कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१४ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा श्री ए० सी० कंवर भी हैं। इसके मैनेजिंग एजेन्ट एच० बी० ले एण्ड को० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ७५ हजारकी है। इसकी खानें रानीगंज कोयला क्षेत्रमें ४०० बीघा भूमिमें हैं।

२१ न्यू बेलगढ़ कोल कम्पनी लि० इसकी रजिस्ट्री सन् १९१२ ई० में हुई थी। इसके डाइरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी, रा० ब० सेठ सुखलालजी करनानी तथा बाबू बालमुकुन्दजी डागा हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० ले कम्पनी लि० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाख २५ हजार है जो १०) प्रति शेयरके हिसाबसे ३२ हजार शेयर निकालकर वसूल की गयी है। सन् १९२६ ई० में साउथ गोविन्दपुर कालरीज लि० तथा वेस्ट केंडुलिया कालरीज लि० भी इसमें सम्मिलित कर दी गयी हैं।

२२ नार्थ कजोरा कोल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९२४ में कराई गयी थी। इसके माननीय डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा श्री ए० सी० कंवर हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० ले कम्पनी लि० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ७५ हजारकी है जिसमेंसे १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे २४४०० शेयर बेचकर कम्पनी काम कर रही है। इसकी खानोंकी भूमि ४१० बीघा है जो रानीगंजके कोयलेके क्षेत्रमें है।

२३ पाण्डिया कालरीज लि० की रजिस्ट्री सन् १९०८ ई० में कराई गयी थी। इसके भारतीय डायरेक्टरोंमें रा० ओंकारमलजी जटिया ओ० बी० ई०, बाबू गङ्गाबक्सजी जटिया तथा बाबू नन्दलालजी जटिया हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स [illegible] ४ [illegible] के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ८ लाख की है जो १० रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ८० हजार शेयर निकालकर वसूल की गयी है। इसके पास ८९१० बीघे ऐसी भूमि है जहां कोयलेकी खानें हैं।

२४ [illegible] कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०५ ई० में कराई गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें [illegible] हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी [illegible] के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी १२ लाख की है

इसका मिल गार्डन रीचमें है जिसमें ४७२ बोरेके करघे तथा ३६६ हेसियनके हैं। इस प्रकार कुल ८३८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजण्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमें है।

१४ फोग जूट मिल्स लि० के डायरेक्टर मि० डी० एम० के ग्रेग, सी० ए० जोनस, बाबू बहादुर सिंहजी सिंघी, तथा राय बद्रीदास गोयनका बहादुर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ३ लाख साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब जनवरी और जुलाईमें प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल कंकनारामें है। जिसमें ८५ करघे बोरेके और १६५ हेसियनके हैं इस प्रकार कुल २५० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को० लि० का आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है।

१५ हवड़ोमी जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०३ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनथाल, मि० डब्लू० एम० मेडक, मि० जी० एल० रफाट तथा राय बद्रीदास गोयनका बहादुर हैं। इसकी स्वीकृत पुंजी ३० लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १५ हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही आर्थिक विवरण प्रकाशित होता है।

कम्पनीका मिल चाम्पदानीमें है। जिसमें २२४ बोरेके करघे और ४८० हेसियनके हैं। इस प्रकार कुल ७०४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एन्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमें है।

१६ इन्डिया जूट मिल्स कम्पनी लि० के डायरेक्टर सर डेविड इजरा, सर ओंकारमल जटिया, तथा मि० जी० एल० गेज हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है इसका हिसाब ६ मासमें होता है। अतः इसका आर्थिक विवरण मई और नवम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल संक्रैल हवड़ामें है जिसमें ४०० बोरेके करघे और ७७० हेसियनके हैं इस प्रकार कुल ११७० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्डरूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रो में है।

१७ इम्पायर जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९२० ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० डाउडा, मि० ई० ए० स्टूम, और मि० सी० ए० जोन्स, हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे २ लाख साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ मासमें होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमें ७५८ करघे बोरेके और १८८ करघे हेसियनके हैं

२ रिफार्म फ्लोर मिल्स लि० हवड़ा। इसका रजिस्टर्ड आफिस २१ रूपचंदराय स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के०टी० ओ० बी० ई० बाबू गजानंदजी जटिया; तथा आर० आर० अप्पर हैं। इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर बाबू कन्हैयालालजी जटिया तथा चम्पालाल-जी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १६ लाख ५० हजारकी है।

जूटकी मिलें

इस ग्रन्थके प्रारम्भिक विभागमें जूटके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डालते हुए शृङ्खलाबद्ध परिचय दिया जा चुका है। अतः यहां उसे पुनः उद्धृत न कर केवल जूट मिलोंके सम्बन्धमें चलन्तू चर्चाकी जायगी।

यों तो १६ वीं शताब्दीके आरम्भ कालसे ही जूटके सम्बन्धमें महत्वपूर्ण बातोंकी खोज आरम्भ हो चुकी थी पर सन् १८२५ में स्काटलैण्डके डण्डी नामक नगरमें जूट बिननेका काम आरम्भ किया। फलतः जूटकी मांग बढ़ी और भारतमें जूटकी खेतीका प्रसार जोरोंसे हो चला। भारतमें भी जूट मिल स्थापित करनेके लिये लोग विचार करने लगे और सन १८५५ ई० में मि० जार्ज आकलैण्ड नामक एक योरोपियनने कलकत्ताके उपनगर सिरामपुरके समीप रसड़ामें एक जूट मिल खोला और उसका संचालन करनेके लिये कलकत्तेमें सबसे प्रथम रसड़ा ट्वाइन एण्ड यार्न मिल्स कम्पनी लि० के नामसे प्रथम ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीकी स्थापनाकी। यह कम्पनी सन् १८६८ ई० तक काम करती रही। सन् १८७२ ई० में यही मिल कलकत्ता जूट मिल्स कम्पनी लि० के नामसे तथा इसके बाद वेलिङ्गटनजूट मिल्सके नामसे काम करता रहा और वर्तमानमें यही मिल चम्पदानी जूट मिल्स कम्पनी लि० के नामसे काम कर रहा है।

रसड़ावाले मिलमें हाथके करघे थे पर सन् १८५९ ई० में जब बोर्नियो जूट कम्पनी लि० की स्थापना की गयी तब इसमें हैण्डलूमके स्थानमें पावर लूम लगाये गये। इस मिलमें बुनाई तथा कताईके विभाग अलग अलग खोले गये थे। इसे अच्छी सफलता मिली पर सन् १८७२ में मिलका नाम वर्तमान बारानगर जूट फैक्ट्री कम्पनी लि० रक्खा गया जो आज भी काम कर रहा है।

सन् १८६२ ई० में गौरीपुर तथा सिराजगंज मिल्सकी स्थापना की गयी तथा सन् १८६६ ई० में इण्डिया मिल्स खोला गया। सन १८७२-७३ ई० में बजबज, फोर्ट ग्लास्टर, शिवपुर (वर्तमान फोर्ट विलियम मिल्स), श्यामनगर और चम्पदानी नामक मिलोंकी स्थापना की गयी। सन् १८७३-७५ ई० के बीच ओरियन्टल (यूनियन नार्थ), हवड़ा एशियाटिक, (वर्तमान सोरा), क्लाइव, बंगाल (वर्तमान वेलिया घट्टा), रुस्तमजी (वर्तमान न्यू सेन्ट्रल), हेस्टिङ्ग और गैनजेस नामके जूट मिल खोले गये। सन् १८७७ ई० में कमरहट्टी मिल खोला गया। और सन् १८८२ ई० से सन् १८८४ ई० के बीच हुगली, टीटागढ़ विक्टोरिया, और कंकनाड़ा नामक मिलें खुलीं।

है जिसमेंसे ३००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ३६०० साधारण शेयर है। इसका वार्षिक हिसाब ३१ दिसम्बरको होता है। इसका हेड आफिस फ्रेन्च राज्यान्तर्गत चंद्रनगरमें है।

इसका मिल नईहट्टी (E. B. Ry.)में है जिसमें १६० बोरेके तथा २०० हैसियनके करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेण्ट मेसर्स गिलेण्डर्स अर्बुथनाट एण्ड को० कलकत्ता है।

२२ गौरीपुर कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर आनरेबल सर जान बेल, मि० ई० जी० ऐबाट, सर आर० एन० मुकर्जी, मि० सी० जी० कूपर तथा ए० एन० मैकनजी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १२ हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बर मासमें होता है।

इसका मिल नईहट्टी (E.B Ry.) में है जिसमें बोरेके करघे ४०६ और हैसियनके ९४८ है इस प्रकार कुल १३५४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेरी एण्ड को का आफिस २ फेयर्ली प्लेस में है।

२३ हुगली मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८१३ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० वी० ई० जी० ईडिस, मि० सी० डे० एम० केलाक, सर आर० एन मुकर्जी, और मि० जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५६६०००) रु० की है इसका वार्षिक आर्थिक विवरण ३१ मार्चको प्रकाशित होता है।

इसका मिल गार्डन रीचमें है जिसमें २५४ करघे बोरेके और २०० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ४५४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स गिलेण्डर्स अर्बुथनाट एण्ड को० का आफिस ८ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

२४ हवड़ा मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७४ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर अलेक्जेण्डर मरे के०टी० सी० बी० ई०; मि० जे० येन० आस्टिन, सर ह्यूबर्ट कार के०टी०, मि० जे० एल० स्काट, मि० डब्लू० एम० फ्रेडक हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५२ लाख ५० हजारकी है। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बर में होता है।

इसका मिल शिवपुर, हवड़ामें है जिसमें ६५२ करघे बोरेके और १०११ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १६६३ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट्स मेसर्स जारडाइन स्किनर एण्ड को० का आफिस ४ क्लाइव रोमें है।

२५ हुकुमचन्द जूट मिल्स लि० की रजिस्ट्री सन् १९१९ ई०में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर सरूपचन्द हुकुमचन्द के० टी० बाबू गजानन्दजी जटिया, सेठ कस्तूरचन्द कोठारी, मि० जे०डब्लू०

२९ केल्विन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०७ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० टाउलर, मि० जी० एल० स्काट, तथा बाबू छोटेलाल कानोड़िया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २२ लाखकी है। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमें ३४६ करघे बोरेके और २९० हैसियनके हैं इस प्रकार ६३६ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स मैकलाड एण्ड को० का आफिस २८ डलहौसी स्क्वायरमें है।

३० खरडा कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८९५ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० ए० ई० मिचेल, मि० ई० निसिम, तथा सी० ए० बाइन्ड हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५४ लाखकी है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४५ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका हिसाब ६ माही होता है अतः इसका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित किया जाता है।

इसकी मिल खरडामें है जिसमें ५१५ करघे बोरेके और ८५५ हैसियनके हैं इस प्रकार कुल १३७० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्टका आफिस २२ स्ट्राण्ड रोडपर है।

३१, किनीसन जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८९९ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ए० हार्वे, मि० जी० एल स्काट, मि० ई० सी० बेनथाल हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १५ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बर मासमें प्रकाशित होता है

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमें ५७४ करघे बोरेके और ६४७ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १०२१ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स एफ० डब्लू० हीलगर्स एण्ड को का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग मे है।

३२, हैंण्डसडाउन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१४ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनथाल, मि० जी० एल० स्काट, मि० ए० में।डी, ईडिस, तथा राय-बहादुर हजारीमल डुडवेवाले हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३२ लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १७ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल दक्षिण दरीमें है जिसमें ३४७ करघे बोरेके और ५२३ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल ८७० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक। बिल्डिंग में है।

३३, टारेन्स जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०५ ई० में करायी गयी है।

इसका मिल बजबजमें है जिसमें एण्ड्रयूल एण्ड को० लि० की मैनेजिंग ऐजेन्सी है।
७८१ करघे काम कर रहे हैं

१० कैलेडोनियन जूट मिल्स कम्पनी लि०—की रजिस्ट्री सन् १९१५ ई० में करायी ग
थी। इसके डायरेक्टर सर डेविड इज़रा, सर ओंकारमल जटिया के०टी० और मि० जे० साइम हैं। इस
स्वीकृत पूंजी १९ लाख की है। इसका ६ माही हिसाब मई और नवम्बरमें प्रकाशित होना है
इसका मिल बजबजमें है जिसमें २२० करघे चोरेके और २९० हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल
५१० करघे काम कर रहे हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐण्ड्रयूल को० लि० के
पास है।

११ चाम्पदानी जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९२१ में करायी गयी थी। इसके
डायरेक्टर मि० जे० ए० टसी; मि० डी० जे० लेकी, मि० सी० ए० जोन्स, मि० जान लांगफर्ड जेनस
तथा बाबू मुकुन्दलालजी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाख की है इसमेंसे १००) रु० प्रति शेयर
के हिसाबके ५९१६४ साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ मासमें होना है अतः आर्थिक विवरण
सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित किया जाता है।

इसकी दो मिलें हैं जिनमें १२१७ करघे काम कर रहे हैं। इन दो मिलोंमेंसे वेलिङ्गटन
जूट मिल रसड़ामें और चाम्पदानी जूट मिल वैद्यवाटीमें हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स जेनस
फिनले एण्ड को० लि० का आफिस १ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

१२ चेविया मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१९ में करायी गयी थी। इसके
डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया तथा मि० जे० साइम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २६ लाख की है
जिसमें से १००) रु० के भावके १६००० साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ मासमें होता है इस
प्रकार आर्थिक विवरण नवम्बर और मईमें प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल बजबजमें है जिसमें चोरेके ५० और हैसियनके ३५० इस प्रकार कुल
४०० करघे काम करते हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० ८ क्लाइव रो में
है।

१३ क्लाइव मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८९४ ई० में करायी गयी थी। इसके
रेक्टर मि० ई० सी० बेन्थाल, मि० ए० मैकड़ो हैडिंग, मि० ए० ए० हार्वे, तथा राय बद्रीदास गोय-
न बहादुर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३२ लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १ लाख
हजार साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ महीने पर होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण
शित होता है।

इसका मिल सोरामें है जिसमें ३७५ कुल करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मैक्लाउड एण्ड को० हैं।

४५ स्टेण्डर्ड जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनथाल, मि० डब्लू० एम० क्रॅडाक, मि० जी० एल० स्काट तथा बाबू रामकुमार बांगड़ हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २३ ला० की है जिसमें १००) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १४ हजार साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में हैं जिसमें ५९२ बोरेके करघे और ११२६ हेसियनके हैं इस प्रकार कुल १७१८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स थामस डफ एण्ड को० लि० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमें हैं।

४६. यूनियन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७२ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी बेनथाल, मि० डब्लू० एम० क्रॅडाक, मि० जी० एल० स्काट तथा बाबू राम-कुमारजी बांगड़ हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १८ लाख की है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १८ हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इस मिलमें २०४ करघे बोरेके और ३०० हेसियनके हैं इस प्रकार कुल ५०४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गसमें है।

४७. बेवरली जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१६ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० डी० एन० के० ग्रेग, मि० एम० एम० हडसन, मि० सी० ए० जोन्स, तथा राय बहादुर [illegible] गोयनका हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख की है जिसमें १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे २५०,००० साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण जुलाई और जनवरीमें प्रकाशित होता है। इसका मिल कंकनारामें है जिसमें १०० करघे बोरेके और २०० हेसियनके हैं। इस प्रकार कुल ३०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को० लि० का आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है।

इसके अतिरिक्त और भी जूट मिल्स हैं मगर स्थानाभावसे सबका परिचय यहां नहीं दिया जा सकता।

भिन्न भिन्न प्रकारकी कुछ अन्य ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंका संक्षिप्त विवरण हम नीचे दे रहे हैं।

दियासलाईके कारखाने

१ आसाम मैच कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९२४ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर [illegible] अटिया, कुमार राजा प्रभातचंद्र बरुआ तथा मौलवी अब्दुल हमीद हैं।

इस प्रकार कुल ५३६ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स मैक्नाब एण्ड
आफिस २८ डलहौसी स्क्वायर ईस्टमें है।

१८ फोर्ट ग्लास्टर जूट मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७४
थी। इसके डायरेक्टर मि० जे० ए० आग, आनरेबल एल० जे० बेस्ट, तथा मि० जी० एल०
हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २८ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १४ ह
साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ महीने पर होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण मार्च औ
सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल बौरियामें है इसमें ६९२ बोरेके और ११०८ हैसियनके करघे हैं इस प्रकार
कुल १८०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स पेटलेवेल बुलियन एण्ड को०
लि० का आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडमें है।

१९ फोर्ट विलियम जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९११ ई० में करायी गयी थी।
इसकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १४ हजार
साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित
होता है।

इसका मिल हवड़ामें है जिसमें ३५८ करघे बोरेके और ५४२ हैसियनके हैं इस प्रकार कुल
९०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स पेटलेवेल बुलियन एण्ड को० लि० का
आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडपर है।

२० गैनजेस मैन्यू फैक्चरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१६ ई० में करायी गयी
थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० जी० ऐबाट, आनरेबल सर जान बेल, तथा मि० पी० एच० थाउर्न
हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाखकी है जिसमेंसे ३००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे
२८१०७ साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और
मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल शिवपुर हवड़ामें है जिसकी एक शाखा बांसबेरिया हुगलीमें है। इसमें ७०२
करघे बोरेके और ७९८ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १५०० करघे काम कर रहे हैं। इसके
मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स मैक्नेयल एण्ड को० का आफिस २ फेयर्ली प्लेसमें है।

२१ गोंडलपारा मिलकी रजिस्ट्री सन् १८९२ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर
० बी० ई० जी० ईहिल, मि० सी० डी० एम० मैल्टाक्, सर आर० एन० मुकर्जी के० सी आई०ई०
सी० वी० ओ० तथा मि० जी० एल० स्काट हैं इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख ८० हजार रुपयेकी

हवड़ा ब्रिज कलकत्ता

इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेन्थल ; डब्लू० एम० क्राडक, बाबू बलदेवदास बानोरिया, तथा जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दस हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बर मासमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल उलूबेरियाके पास चकासी में है जिसमें ३०४ बोरेके तथा ४०० हैसियनके करघे हैं। इस प्रकार कुल ७०४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगमें है।

३४, लोथियन जूट मिल्स कम्पनी लि०की रजिस्ट्री सन् १९१९ ई० में करायी थी। इसके डायरेक्टर सर डेविड इज़रा, सर ओंकारमल जटिया तथा जे सइम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दश हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मई और नवम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल बजबजमें है जिसमें १०० करघे बोरेके और २५० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ३५० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस क्लाइव रो में है।

३५, वेगना मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९२० ई० में करायी गयीं थी। इसके डायरेक्टर मि० पी० एच० ब्राउन, आनरेबल सर जान बेल, मि० सी० जी० कूपर०, मि० ई० जी० ऐबाट, तथा डब्लू० एन० सी० ग्रान्ट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख की है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६१२३६ साधारण शेयर निकाले गये हैं।

इसका मिल जगदलमें है जिसमें ३९२ करघे बोरेके और ६१६ करघे हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १००८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स मैकिनन मेकंजी एण्ड को० का आफिस १६ स्ट्रैण्ड रोडमें है।

३६, नईहट्टी जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९०५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० डब्लू० एम० क्रेडाक, मि० जी०एल० स्काट, तथा ई० सी० बेनथाल हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख की है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दश हजार शेयर हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल नईहट्टीमें है जिसमें २९९ करघे बोरेके और ४०१ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल ७०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स एफ. डब्लू हेल्गर्स एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगसमें है।

इसकी स्वीकृत पूंजी ७ लाखकी है जिसमें ५ लाखके शेयर तो ५) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे संग्रह किये गये हैं।

इसका कारखाना ब्रह्मपुत्रके तट पर धुब्री नगरमें है जहां दिया सलाई बनती है। आसामके सरकारी जंगलकी लकड़ी ही इस कारखानेमें काम आती है।

इसका आफिस ८ रोयल एक्सचेंज प्लेसमें है।

सोडाका कारखाना

२. बंगाल एरेटिड गैस फेक्ट्री लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९१७ में कराई गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के०टी०, भी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६ लाख ५० हजारकी बतायी जाती है। जिसमें से १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६५०० शेयर निकाले गये है। यह कम्पनी सोडा आदि तैयार करनेके अतिरिक्त कार्बोलिक एसिड भी तैयार करती है और सोडा आदि बनानेकी छोटी मशीनोंका भी व्यापार करती है। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स एण्ड्र्यूल कम्पनी लि० का आफिस ८ क्लाइव रो में है।

रसायन बनानेका कारखाना

३. बंगाल केमिकल एण्ड फारमेस्यूटिकल वर्क्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०१ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर० पी० सी० राय, राय बहादुर डा० चुन्नीलाल बोस सी० आई० ई०, राय बहादुर डा० हरिधन दत्त, राय साहब कुञ्जबिहारी बोस आदि हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १६ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १६ हजार साधारण शेयर हैं।

इस कारखानेमें देशी वनस्पतियोंसे अंगरेजी ढंगकी दवाइयां तैयार की जाती हैं। इसका कारखाना मानिकतल्ला मेन रोड पर है।

४. बंगाल पेपर मिल कम्पनी लि०—इसकी स्थापना सन् १८८९ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें केवल राय साहिब हंसनचंद्र बोस ही भारतीय हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १४ लाख की है।

इसकी मिल रघुनाथ पर रानीगंजमें है। इसमें ४ मशीने हैं जिनमें कागज तैयार होता है। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स बामरलारी एण्ड को० का आफिस १०३ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्तेमें है।

५. बंगाल टेलिफोन कार्पोरेशन लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९२२ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर [illegible] इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़की है।

आचार्य श्रीशीतलनाथजीका है। ये मन्दिर राय बद्रीदास बहादुर जौहरी, द्वारा सन् १८६७ ई० में बनवाये गये थे।

टेम्पुल स्ट्रीट के द्वारसे घुसते ही बड़ा सुन्दर दृश्य सामने आता है। स्वर्ग सदृश्य भूमि-पर मनोहर मन्दिर बड़ाही मनोहर मालूम पड़ता है। यह उत्तर भारतकी जैन-शिल्पकलाका उज्ज्वल उदाहरण है। मन्दिरके सामने संगमरमरकी सीढ़ियां बनी हैं और इसके तीन ओर चित्ताकर्षक बरामदे बने हुये हैं। दीवारोंपर रंग बिरंगे छोटे २ पत्थरके टुकड़े जड़े हुए हैं और दालान तथा छत इस खूबीसे बनाये गये हैं कि उनपरसे आंख हटानेको जी नहीं चाहता। शीशे और पत्थरका काम भी उत्तम ही नयनाभिराम है। छतके मध्यमें एक बड़ा भारी फानूस टंगा है। मन्दिरके चारों तरफ सुन्दर बगीचा बना है। जिसमें बढ़ियासे बढ़िया फौव्वारे, चबूतरे इत्यादि बने हैं। कोनेपर एक छोटासा तालाब है, जिसमें रङ्ग बिरङ्गी सुनहली मछलियां अठखेलियां करती रहती हैं। कई आतिथ्यागार भी बने हुए हैं। बगीचेके उत्तरमें शीशमहल है इसमें दीवाल; छत, फानूस, कुर्सियां इत्यादि सभी वस्तुयें शीशेकी बनी हैं। इसके भीतरका भोजनागार सबसे अधिक देखने योग्य है। ये मन्दिर और बगीचा भारतके ही किसी चतुर शिल्पीका कार्य है इसका नक्शा स्वयं रायबहादुर बद्रीदासजीने सोचा था। यह मन्दिर सर्वसाधारणके लिये निःशुल्क रूपसे खुला रहता है। चांदनी रातमें मन्दिरकी शोभा अनुपम होती है और उस समय आनेकी स्वीकृति अधिकारियोंसे मिल सकती है।

पारसियोंका अग्निमन्दिर

यह मन्दिर बेलियाघाटा मेन रोडमें स्थित है, जो सियालदहके पूर्वमें है। इसके चारों ओर बड़े २ खजूरके वृक्ष और तालाब हैं। चबूतरोंके बीचमें एक [illegible] बना हुआ कुआं है। जो सन् १८०८ में बनवाया गया था। इसके पीछे दुहरी छत है और एक दूसरा बड़ा कुआं है। यह सन् १८१२ में बना था। सीढ़ियां चढ़नेपर एक छोटा सा दरवाजा मिलता है, जहांसे केवल "नमस्कार" ही करके लौट ले जाते हैं। कुएंका भीतरी भाग तीन हिस्सोंमें विभक्त है, इनमें एक शव आसा-[illegible] है; पहले भागमें पुरुष, दूसरेमें स्त्री, और तीसरेमें बच्चे रख दिये जाते हैं। [illegible] है। [illegible] रख दिये जाते हैं। और चील कौए मांस नोच नोचकर खा जाते हैं। [illegible] होती हैं। जहांसे ये नाली द्वारा बहा दी जाती हैं। पारसी लोग अग्नि, जल और मिट्टीको पवित्र मानते हैं इसीलिये पवित्र वस्तुओंके अपवित्र होनेके भयसे ये अपने मुर्दोंको न तो जलाते ही हैं और न गाड़ते हैं।

राजेन्द्र मल्लिककी कोठी

यह मुक्ताराम बाबू स्ट्रीटमें है और इसके दो भाग हैं; एक तो विशुद्ध देशी और दूसरा

दूसरे दिन केवल २३ व्यक्ति ही जीवित निकले। इन्हीं मृतक व्यक्तियोंके स्मारकमें यह स्थान बनाया गया है।

हवड़ा पुल

यह तैरता हुआ हवड़ा पुल सन १८७४ में सर ब्रैडफोर्ड लेस्ली द्वारा २२ लाख रुपयेमें बनवाया गया था यह पुल संसारभरमें अपने ढंगका अद्वितीय है। हवड़ा और कलकत्ताके बीच केवल यही पुल है। पुलका मध्यभाग बड़े २ जहाजों और स्टीमरोंके आने जानेकी सुविधानुसार हटाया जा सकता है। कई वर्षोंसे अधिक परिमाणमें आवागमनके योग्य एक नवीन पुल बनानेका विचार हो रहा है; परन्तु धनाभावके कारन यह अभी तक कार्यरूपमें परिणित नहीं किया जा सका है।

ओक्टरलोनी मानूमेन्ट

यह लाट १६५ फुट ऊँची है और नैपाल-विजेता सर डेविड ओक्टरलोनीकी स्मृतिमें सार्वजनिक चन्देसे बनवायी गयी थी। यह लाल ईंटोंकी बनी है और इसके भीतर चक्करदार सीढ़ियां हैं। जिनसे आदमी बिल्कुल ऊपर पहुंच जाता है। यद्यपि चढ़नेमें पहले कुछ कष्ट होता है। परन्तु ऊपर पहुंचकर हृदय प्रसन्न हो उठता है। यह प्रायः बन्द ही रहती है। इसमें जानेकी स्वीकृति पुलिस कमिश्नर, लालबाजारसे मिल सकती है।

न्यू मार्केट

इसे हॉग मार्केट भी कहा जाता है। यह बाजार ईंटका बना हुआ है और खूब लम्बा चौड़ा है, लिण्डसे स्ट्रीटपर तो यह ३०० फीट चौड़ा है। इसमें एक बुर्ज है जिसमें एक घड़ीली घड़ी लगी है। यह सन् १८७४ में ६॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बनी थी; परन्तु तबसे इसमें और भी अधिक धन लगाया जा चुका है। आजकल यह बाजार संसारमें अद्वितीय है। इसमें ४००० दूकानें हैं और इनमें कोई भी वस्तु क्यों न हो, मिल सकती है। बाहरसे कलकत्ते आनेवालोंके लिये तो यह वास्तवमें अवश्य दर्शनीय है। नानाप्रकारकी चीनी, चांदी और पीतलके बर्तन, हाथीदांतकी बहुमूल्य मूर्तियां, काश्मीरी लकड़ीपरके काम, दरियां, रेशम, शाल, जरीका कपड़ा, इत्यादि तरह २ की चीजें देखकर मन प्रसन्न हो जाता है इसके अतिरिक्त हथियार, लोहेकी सामग्रियां, श्रृंगारके सामान, खिलौने, तरकारी और फलकी दूकानें इत्यादि भी बहुत हैं। यद्यपि यहां चीजें अच्छी मिलती हैं फिर भी एक अपरिचित व्यक्ति यहां बड़ी आसानीसे ठगा लिया जाता है। इसलिये घूमनेवालेके साथ सबसे अच्छा जानकार है जो सभी दूकानें दिखलानेमें सहायता करता है।

डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता

बर्मी पगोडा, इडन गार्डन, कलकत्ता

विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता

जैन मंदिर, रायबद्रीदास बहादुर, कलकत्ता
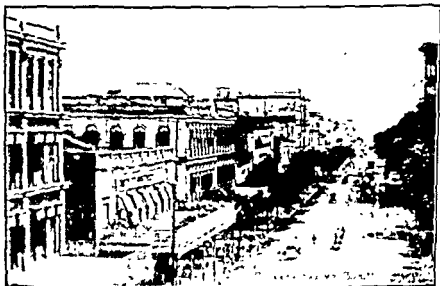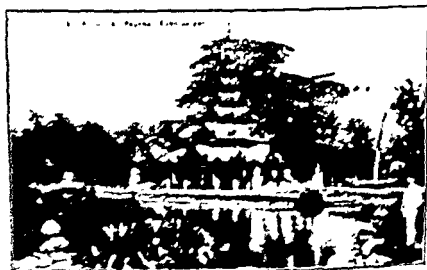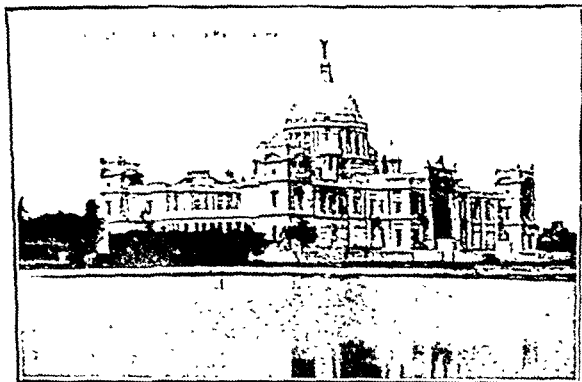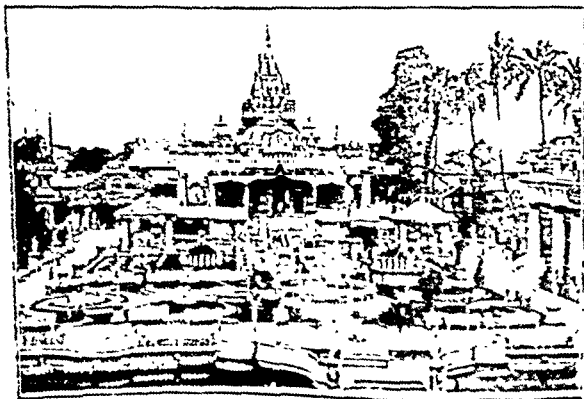
धोती जोड़ोंका व्यापार होता है। पगिया पट्टीकी गलियोंमें चेक, दुपट्टे आदिका भी व्यापार होता है,

फॉटनस्ट्रीट—इसका दूसरा नाम तुलापट्टी भी है। इसमें हैसियनके हाज़रमालका सौदा होता है। कई बड़े २ हैसियन व्यापारियोंकी इसमें दुकाने हैं। रूईका कारवार भी इस बाजारमें होता है। इसी बाजारमें पगियापट्टीके सामने चीनी पट्टी (रामकुमार रक्षितलेन) है। यहां चीनीका व्यसाय एवं वायदेका सौदा होता है। पानीके सट्टे के लिये इसी बाजारमें अफीम चौरस्ता मशहूर है।

आर्मेनियनस्ट्रीट—इसमें गल्ले और किरानेका ही विशेष रूपसे व्यापार होता है। इस व्यापारके करनेवाले प्रायः गुजराती सज्जन हैं। यहां कई बड़े २ गोदाम हैं। इसके अतिरिक्त कमीशन से काम करनेवालोंकी कई फर्में इस स्ट्रीटमें हैं। चांदी, सोना एवं जवाहिरात और कपड़ेका व्यापारभी इस स्ट्रीटमें होता है। इसके अतिरिक्त रंग और छातेके भी बड़े बड़े व्यापारी यहां व्यापार करते हैं।

खंगरापट्टी—क्रासस्ट्रीट और चायना बाजारके बीचमें है। यहां रंग, दवाई, तेल, फीते मोती आदिका व्यापार होता है। इसके पासही मूंगापट्टी है। यहां नकली नगीनें, मोती, हीरे आदिका व्यापार होता है।

बोनफील्डलेन खंगरापट्टीसे क्लाईव स्ट्रीट जाते समय यह रास्तेमें पड़ती है। यहां बड़े २ केमिस्ट और ड्रगिस्टकी दुकाने हैं

क्लाइवस्ट्रीट—यह स्ट्रीट यहांके व्यापारिक स्थानोंमें सबसे बड़ी जगह मानी जाती है। यहां कई बड़े बड़े बैंकोंकी एवं बड़ी बड़ी युरोपियन एवं इण्डियनफर्मोंकी आफिसें हैं। इसमें केमिस्ट ड्रगिस्ट, लोहेके व्यापारी पीतलके व्यापारी आदि भी अपना व्यापार करते हैं। इसी स्ट्रीटमें रायल एक्सचेंज प्लेस, क्लाइव रो आदि स्थान हैं। यहां भी कई बड़ी २ कम्पनियोंके आफिस हैं। मशीनरी मर्चेंट्सकी दुकानें भी है।

रायल एक्सचेंज प्लेस यह स्थान कलकत्तेके सुन्दर स्थानोंमेंसे है। यहांकी बड़ी बड़ी विशाल इमारतें देखते ही बनती हैं। इसी जगह शेयर और स्टाक एक्सचेंज है, यहां गवर्नमेन्ट पेपर एवं सेक्यूरिटीजका बहुत बड़ा कारबारहोता है। हैसियन के वायदेका सौदा भी इसी बाजारमें होता है सैकड़ों मारवाड़ी इस बाजारमें चक्कर काटते हुए दिखलाई देते हैं। इसस्थान पर भी बड़े २ युरोपियन और हिन्दुस्तानी व्यापारियोंकी फ़र्में हैं।

चायना बाजार—इस बाजारमें कागज, स्टेशनरी, ट्रंक, चीनीका सामान, कांचके गिलास वगैरह, चमड़ेके सूट केस, छाते आदि वस्तुओंका व्यापार होता है। कागजके बड़े २ व्यापारी यहां व्यापार करते हैं। इसमें कुछ मारवाड़ी फर्मोंकी भी गद्दियां हैं।

राधाबाजार—चीना बाजारमें आगे चलने पर यह बाजार आता है इसमें कागज, मारबल स्टोन, घड़ियों और जवाहरात आदिका व्यापार होता है। चांदीके बने हुए बर्तन भी इस बाजारमें मिलते हैं। राधा बाजार और चायना बाजारके मेंऊपर एक लेन गई है। इसका नाम स्लातो लेन है। यहां कांच एवम कांचका सब प्रकारका समान बिक्री होता है। यहां बड़े २ कांचके इम्पोर्टर्स की आफिसें हैं।

समय ५ बजे तक खुला रहता है। प्रत्येक शुक्रवारको इसमें ।।) आना प्रवेश शुल्क लगता है। यह भवन सोमवारको बन्द रहता है। चित्रोंकी दो गेलरियां ऐसी भी हैं जहां जानेमें ।) आना प्रवेश शुल्क भी लगता है।

कलकत्तेका किला

वर्तमान किलेका बनना सन् १७५० ई०में लार्ड क्लाइव द्वारा प्लासीके युद्धके बाद आरम्भ किया गया था और यह सन् १७७३ ई० में पूरा तैयार हुआ। इसके बननेमें २० लाख रुपये खर्च हुए थे। आकारमें यह एक अष्टकोणके समान है, जिसके ५ कोण कलकत्ते की ओर और तीन गंगाकी ओर हैं। इसके चारों ओर एक पचास फीट चौड़ी और ३० फीट गहरी खाई है जो आवश्यकतानुसार नदीके जलसे भर दी जा सकती है। किलेमें १०००० मनुष्य रह सकते हैं और इसपर भिन्न २ प्रकारकी ६०० तोपें चढ़ाई जा सकती हैं। किलेके भीतर भारतीय और गोरी सेनाके लिये साफ सुथरी बारकें हैं। इसके अतिरिक्त इसमें तोपखाना, रसदखाना और परेड इत्यादिके लिये सुन्दर मैदान भी है। इसके अन्दर दो गिरजाघर भी हैं।

जियालाजिकल गार्डन

यहां तरह २ के पशु, पक्षी और सर्प इत्यादि बिल्कुल स्वाभाविक ढंगपर रक्खे गये हैं। अभी हालहीमें दो चित्तेके बच्चे लाये गये हैं जो बिलकुल बकरीकी तरह रक्खे जाते हैं; उन्हें मांस नहीं दिया जाता। यहां भी सुन्दर तालाब और चित्र विचित्र पुष्प और वृक्ष बड़ी खूबसूरतीसे लगाये गये हैं। चिड़ियाखाना प्रतिदिन सूर्योदयसे सूर्यास्त तक खुला रहता है। प्रतिदिन प्रवेश शुल्क एक आना रहता है केवल रविवारको १२ बजेके बाद १) रुपया लगता है क्योंकि उस दिन वहां मिलिटरी बैंड बजा करता है।

कालीजीका मन्दिर

इसका जन्म-काल अन्धकारमें है। पर वर्तमान मन्दिर बहुत पुराना नहीं है; यह सन् १८०९ ई०में बनवाया गया था। मन्दिर जानेके पथके दोनों ओर भिखमंगोंकी लम्बी कतार चली गई है जो यात्रियोंको बड़ा तङ्ग करते हैं। मन्दिरमें पूजाके लिये नित्य प्रति अनेकों बकरे बलि किये जाते हैं और दुर्गापूजा तथा अन्य बड़े त्यौहारों पर तो यह संख्या बहुत अधिक हो जाती है।

जैन मन्दिर

जैन मन्दिर नगरके उत्तरमें मानिकतल्ला स्ट्रीटमें है। यहां पर सर्कुलर रोडसे आसा-नीसे पहुंचा जा सकता है। वास्तवमें यहां तीन मन्दिर हैं, जिनमें मुख्य मन्दिर जैनियोंके दशवें

क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

चौरंगी रोड, कलकत्ता

चितरंजन एवेन्यूसे यह प्रसिद्ध महल बिल्कुल घनी बस्तीमें स्थित है और इसके भीतर घुसतेही एक अपूर्व दृश्य सामने आता है। सामने ही एक समाधिस्थ सन्यासी और ग्रीक देवीकी सुन्दर मूर्तियां हैं। बागमें एक छोटा मोटा चिड़ियाखाना भी है जिसमें नाना प्रकारके पक्षी हैं। सारस भी बहुत हैं जो बागमें इधर-उधर स्वच्छन्द विचरा करते हैं।

महलके भीतर ही अनेकों मूर्तियां और एकसे एक बढ़कर चित्र हैं। एक बड़ीसी मूर्ति है जिसमें महारानी विक्टोरिया राज्यारोहणका वस्त्र पहने दिखलाई गई है तैल चित्रोंमें एक सर जोशुआ रीनाल्डस द्वारा और दो रूबन्स द्वारा बने हुए हैं। एकमें सेण्ट सेबेस्टियनका जीवनोत्सर्ग और दूसरेमें सेन्ट कैथरीनका विचित्र विवाह चित्रित है। दूसरे चित्रको एक सज्जनने ७५००० रुपये देकर लेनेकी इच्छाकी थी परन्तु वह अस्वीकार कर दी गयी।

इडेन गार्डेन

इडेन गार्डेन कलकत्तेकी खूबसूरत जगहोंमें है। यह गार्डेन हाईकोर्ट के दक्षिणमें, गवर्नमेंट हाउस और गंगाके मध्यमेंस्थित है। बागके भीतरके सुन्दर लाल टेढ़े मेढ़े पथ बड़ेही भले मालूम देते हैं, और कृत्रिम सरोवरसे तो इसकी शोभा द्विगुणित हो गई है। सवेरे शाम यहां लोगोंका अच्छा जमाव रहता है। इडेन गार्डेनके भीतरका बौद्ध-मंदिर सन् १८४५ ई० में युद्धके बाद प्रोम नगरसे यहां लाया गया था। यह बड़ाही सुन्दर है। गार्डेनके भीतर एक छोटासा साफ सुथरा मैदान भी है; इसीके बीचमें बैण्ड बजनेका स्थान है। यहां पहले बैण्ड बजता था परन्तु अब कारपोरेशनने बन्द कर दिया है। जगह जगह रंग बिरंगे पुष्प वृक्ष बड़े चित्ताकर्षक हैं। झीलके कमल भी अपनी सानी नहीं रखते। कलकत्ता क्रिकेट क्लबकी ग्राउन्ड यहीं है, जो भारतवर्षमें सर्वोत्तम है।

डलहौसी स्क्वायर

इस स्थानका ऐतिहासिक महत्व है और यह प्राचीन कलकत्तेका केन्द्र रह चुका है। यह गवर्नमेंट हाउसके कुछ उत्तरमें है और यहां सबसे आसानीसे ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीटसे पहुंचा जा सकता है। यह लगभग २५ एकड़ भूमिमें है और अपने मनोहर सरोवर और चतुर्दिककी सुरम्य विशाल अट्टालिकाओंके कारण संसार भरमें अद्वितीय माना जाता है। कलकत्ताके जन्मकालमें यह तालाब पानी पीनेके लिए सरकार द्वारा खुदवाया गया था और लोगोंको इसमें स्नान करनेसे रोकनेके लिये चारों ओर जङ्गले लगा दिएगये थे।

बोटैनिकल गार्डेन

यह सुविस्तृत और प्रसिद्ध बाग गंगाके उसपार शिवपुरमें है जो कलकत्तेसे तीन मील दूर है। बोटैनिकल गार्डेन जानेके दो रास्ते हैं; सड़कसे और स्टीमरसे, परन्तु सड़क खराब रहनेके कारण
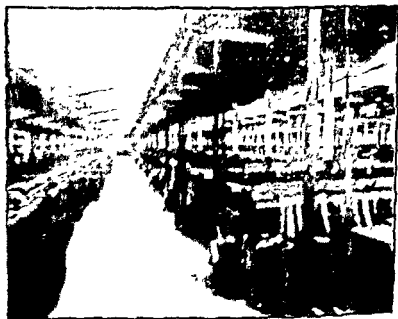
इस फर्मने अपने व्यवसायके संगठनके लिये संसारके सभी देशोंमें अपने एजंट नियत कर रक्खे हैं। लंडनमें ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज कम्पनीके नामसे इसकी एक ब्रांच स्थापित है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इसी ग्रंथके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ठ ८१ में दिया गया है।

मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान संचालक राय बहादुर सर सेठ हुकुमचंदजी एवं स्व० राय बहादुर सेठ हरिकृष्णदासजीके पुत्र बा० देवकिशनदासजी, बा० पन्नालालजी एवम् बा० रामरतनदासजीके पुत्र बा० शिवकिशनदासजी और बा० बुलाकीदासजी भट्टड़ हैं।

इस फर्मका स्थापन सन् १९१९में सर हुकुमचंदजीके हाथोंसे हुआ। आप मालवेके प्रसिद्ध धनिक एवम् कुशल व्यापारी हैं। आपने पहले मालवेमें तीन चार कॉटन मिल खोल कर उसमें अच्छा पैसा पैदा किया। काटन मिलमें सफलता प्राप्त कर लेनेपर आपका ध्यान कलकत्तेमें होने वाले जूटके व्यापारकी ओर गया। इसके फल स्वरूप सन् १९१९ में आपने राय बहादुर श्रीहरिकृष्णदासजीकी देखरेखमें ८० लाखकी पूंजीसे कलकत्तेमें हुकुमचंद जूट मिल्स लि० को जन्म दिया। यह मिल सन् १९२१ में ३०० लूमसे चालू हुई। कहना न होगा कि कलकत्तेमें यह भारतीय पहली ही मिल थी। लोगोंका विश्वास था कि भारतीय लोगोंके संचालनमें जूट मिलें तरक्की नहीं कर सकतीं। सेठ साहबने जूट मिल खोलकर इस धारणाको मिटा दिया। इस मिलने अपने सात वर्षके जीवनमें १ करोड़ २० लाख रुपया पैदा किया तथा सन् १९२१में ३००लूमसे जो मिल चालू हुई थी वही सन् १९२६ में ११०० लूम से चल रही है।

सन् १९२० में जूट मिलके अतिरिक्त एक स्टील फैक्टरी भी १५ लाखकी पूंजीसे स्थापित की। यह अपने व्यवसायमें भारतमें पहली ही फैक्टरी है। इसमें रेलोंके डिब्बोंके उपयोगमें आनेवाली प्रायः सभी सामग्री बनती है। इस मिलने भी अच्छा लाभ उठाया है।

कलकत्तेमें सर हुकुमचंदजीके व्यवसायको चमकानेमें प्रधान हाथ रायबहादुर स्व० सेठ हरिकृष्णदासजी भट्टड़का था।

राय बहादुर सेठ हरिकृष्णदासजी भट्टड़—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ था। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी समाजके भट्टड़ सज्जन थे। स्व० भट्टड़जी ११ वर्षकी अल्पायुमें ही कलकत्ता आये एवं २० वर्षकी वयमें अजमेरकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स हुकमचन्द गंभीरमलके प्रधान संचालक नियुक्त हुए। इस फर्मके [illegible] [illegible] [illegible] शोटके

कैनिंगस्ट्रीट—यह रास्ता स्ट्रांड रोडसे लेकर लोअर चितपुर तक सीधा चला गया है। इसमें जूट, हेसियन आदिका व्यापार करनेवाले कई व्यापारियों की आफिसें हैं। इसी बाजारमें खिलौने इत्र, तेल, सेन्ट, साबुन, वार्निस और पेन्ट, एल्यूमिनियम, चाकू, कैंची, चूड़ियां, मनिहारीके सामान आदिका व्यापार होता है। इस बाजारमें बिस्कुट आदि भी मिलते हैं।

कोलूटोला स्ट्रीट—कैनिंग स्ट्रीटके सामनेवाले रास्तेका नाम है। जहां लोअर चितपुर रोडमें कैनिंग स्ट्रीट खतम हो जाती है। वहीसे यह स्ट्रीट शुरू होती है इसमें भी खिलौने छाते बिस्कुट आदिके व्यापारी व्यापार करते हैं। तमाखू और सिगरेटका व्यापार भी इस बाजारमें होता है।

अमरतल्ला स्ट्रीट—कैनिंग स्ट्रीट और आर्मेनियन स्ट्रीटके बीचमें यह रास्ता है। यहां किरानेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां विशेष कर गुजराती व्यापारी रहते हैं। हायफरीका व्यापार भी इस बाजारमें होता है।

इजरास्ट्रीट—अमरतल्लाके सामने कैनिंगस्ट्रीटको क्रास करके जाना होता है। इसमें बिड़ी, एल्यूमिनियम, बिजलीके सामान आदि बेचने वालोंकी दुकानें हैं। इसमें विशेष कर गुजराती भाषा भाषी व्यक्ति रहते हैं। इसके पासही कांचकी शिशियां बेचने वालोंकी दुकानें हैं। यहां हर प्रकारकी रंग बिरंगी जिन्दा चिड़ियां भी बिकती हैं।

राजा उडमंड स्ट्रीट—स्ट्रांड रोड और क्लाईवस्ट्रीटके बीचमें आती है। यहां इमारती सामान, नल, वारनिस और पेंट आदिका व्यापार होता है। यहां कई बड़े २ जूटके मारवाड़ी व्यापारियोंकी गद्दियां भी हैं।

स्ट्रांडरोड—यह रोड हुगली नदीके किनारे २ बहुत दूरतक चला गया है। इसके किनारे २ कई जहाजके घाट आते हैं इसी रोड पर जेटीज भी हैं। यहां बड़े २ बिल्डिंग कंट्राक्टर्स, इंजिनियर्स और बिल्डिंग मेटेरियल सेलर्सके आफिस हैं। इसीपर इम्पीरियल बैंक एवम पी० एण्ड० ओ० बैंक भी है। जूट मेशीनरी मरचेन्ट भी इस रास्ते पर हैं।

हाटखोला—शोभाबाजारके कोने पर है। यहां हाजिर जूटका व्यापार होता है। हाजिर जूटके व्यापारी यहांसे माल खरीदते हैं। यह एक जूटकी मंडी है।

नीमतल्ला—यह स्ट्रांड रोडके आखिरमें है। यहां लकड़ीका व्यापार होता है। कई बड़ी आरा मीलें यहां कायम हैं। मकानके सम्बन्धी प्रायः सभी लकड़ीका सामान यहां बिकता है। जैसे किवाड़, खिड़की आदि।

चितरंजनएवेन्यू—यहां बड़े २ मारवाड़ी धनिकोंकी आलिशान इमारतें बनी हुई हैं। यहांके दर्शनीय स्थानोंमें है। यह रास्ता सुन्दर और साफ है।

कोलेजस्ट्रीट—इस बाजारमें पुस्तकोंकी बिक्री होती है। कई पुस्तकालयोंकी यहां दुकानें इसके अतिरिक्त सेकन्ड हैण्ड पुस्तकें भी इस बाजारमें बहुत बिकती हैं।

चितपुररोड—यह कलकत्ता का मशहूर रोड है। इसमें बड़े २ सुन्दर [illegible]

श्रीयुत बुलाकीदासजी भट्टड़
S/o रा० ब० हरिकृष्णदासजी भट्टड़

श्रीयुत रतनलालजी गोयनका
S/o बाबू तोलारामजी गोयनका

हुकुमचन्द इलेक्ट्रिक स्टील डिपार्टमेंट (मशीन शाप)
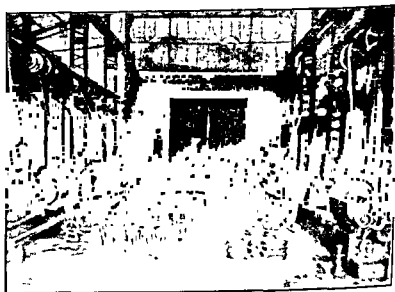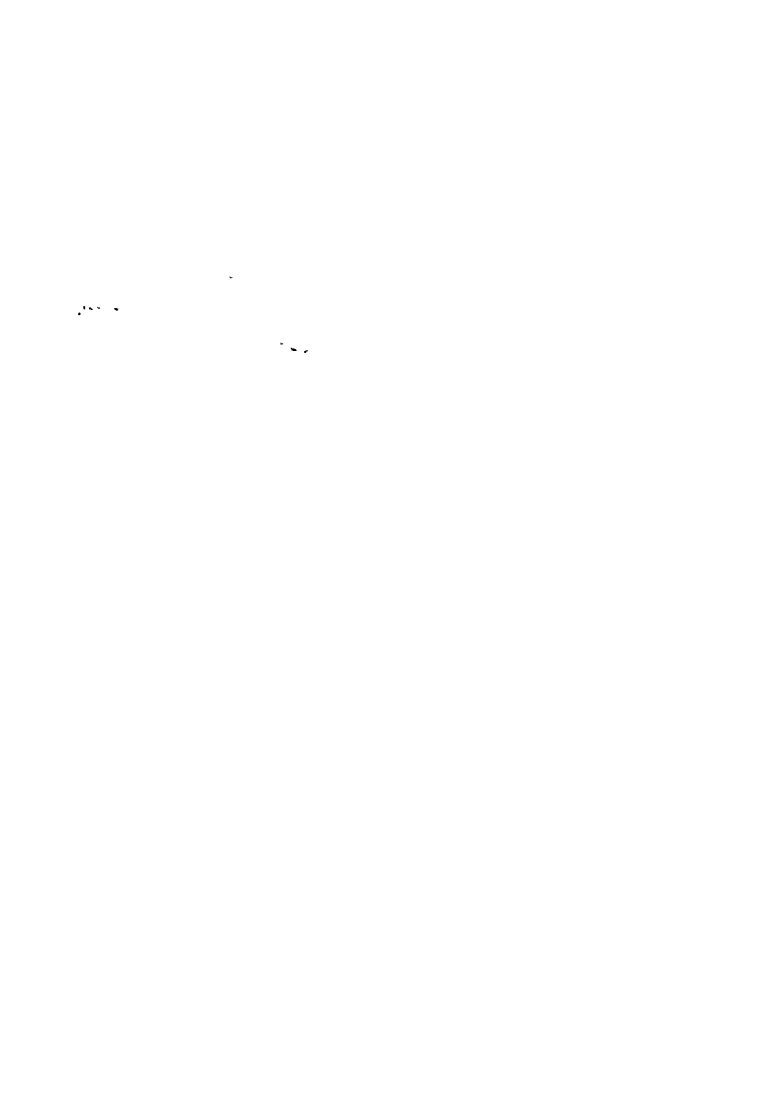
गद्दी—३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A Kashaliwal) यहां बैंकिंग, विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट, शक्कर और आढ़तका व्यापार होता है।

— —

मेसर्स साधूराम तोलाराम।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (मारवाड़) है। आप लोग अग्रवाल वैश्यजातिके गोयनका सज्जन हैं। फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ तोलारामजीके पितामह श्री सेठ राधाकृष्णजी अपने आदि स्थान नवलगढ़से खुरजा (बुलन्द शहर) में आ बसे। इनके पांच पुत्र थे, जिनके नाम क्रमानुसार ये हैं—श्रीजोखीरामजी, श्रीगनेशीलालजी, श्रीगोरखरामजी, श्रीसाधूरामजी और श्रीसागरमलजी।

श्री सेठ जोखीरामजीने खुरजावाले सेठ रामकृष्णदासजीके यहां मुनीमातका काम आरम्भ किया परन्तु कुछ ही समय बाद आपने उनसे अलग हो रुई, नील, शक्कर और गल्लेका साधारण व्यवसाय आरम्भ किया। इस व्यवसायकी उन्नति क्रमशः हो चली। बाबू साधूरामजी खुरजासे कलकत्ते चले आये और खुरजाके धनीवाले सेठ हरमुखरायजी सरावगीके साझेमें 'हरमुख राय साधूराम' के नामसे व्यापार करने लगे। इस कार्यमें सेठ जोखीरामजी भी सम्मिलित थे। सेठ हरमुखरायजीने 'हरमुख राय फूलचंद' के नामसे अपना अलग व्यापार आरम्भ कर दिया। परन्तु सेठ साधूरामजी सेठ जोखीरामजी सरावगीके साथ व्यापारमें सम्मिलित रहे और 'साधूराम सदासुख' के नामसे सम्मिलित व्यापार करते रहे। परन्तु कुछ ही समय बाद साधूरामजी अलग हो गये और और अपना स्वतन्त्र व्यवसाय 'साधूराम सागरमल' के नामसे आरम्भ किया। यह फर्म मेसर्स रामजी दास लक्ष्मणदासके साथ कई प्रकारके मालका व्यापार करती रही। उक्त फर्मके साथ यह फर्म बम्बईमें रुई तथा किरासिन आदिका व्यापार करती रही। परन्तु सम्वत् १९५२ में सेठ साधूरामजीने अपनी फर्मका सम्बन्ध उपरोक्त फर्मसे तोड़ लिया और बम्बईमें भी "साधूराम सागरमल" के नामसे व्यापार आरम्भ कर दिया। सम्वत् १९५५ में सेठ गनेशीलालजी तथा सेठ सागरमलजीके पुत्र इस फर्मसे अलग हो गये। उस समयसे शेष तीनों भाइयोंकी सन्तानें बम्बईमें "गोरखराम साधूराम" और कलकत्तेमें 'साधूराम तोलाराम' के नामसे व्यवसाय कर रही हैं।

सम्वत् १९५५ से इस फर्मने रुईके व्यापारकी ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया और इस व्यापारको बहुत बढ़ा दिया। इस फर्मके पास केटल विल बुलेन तथा किलबर्न कम्पनी की सूतकी मिलोंकी मुत्सद्दीगीरी (बेनियनशिप) रही तथा बहुतकाल तक यह फर्म ऐन्ड्रयूल एण्ड

मिलआनर्स

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मके वर्तमान कुशल संचालक राजा बलदेवदासजी बिड़लाके पुत्र बाबू जुगुल किशोरजी बिड़ला, बाबू रामेश्वर दासजी बिड़ला, बाबू घनश्याम दासजी बिड़ला और बाबू बृजमोहनजी बिड़ला हैं। आप लोगोंने अपनी व्यवसाय चातुरी एवं दानशीलतासे व्यवसायिक क्षेत्रमें बहुत बड़ा स्थान पाया है। यह फर्म कलकत्तेमें जूट, हेसियन, गनी, अलसी, गल्ला, तेलहन, चांदी आदिका बहुत बड़ा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट और व्यवसाय करती है। कलकत्तेके बाजारमें मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सका दबदबा है। इस फर्मकी प्रशंसामें जितनी लाइनें लिखी जांय उतनी थोड़ी हैं। आप लोग मारवाड़ी समाजके चमकते हुए उज्वल रत्न हैं। आपकी फर्म नीचे लिखी मिलों और कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है।

(१) बिड़ला जूट मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता

(२) केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड, कलकत्ता

(३) जयाजी राव कोटन मिल्स ग्वालियर

(४) बिड़ला काटन स्पीनिंग एण्ड वीविङ्ग मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

(५) जूट सप्लाई एजंसी लिमिटेड, कलकत्ता

(६) गोविंद राइस मिल्स लिमिटेड

(७) चितपुर जूट प्रेस लिमिटेड

(८) बिड़ला कॉटन फेक्टरी लिमिटेड, कलकत्ता

(९) इंडियन शीपिंग कम्पनी कलकत्ता

(१०) कॉटन एजंट्स लिमिटेड बम्बई

(११) जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लिमिटेड कलकत्ता

(१२) मॉडल जूट प्रेस लिमिटेड कलकत्ता

(१३) नेशनल एजंसीज लिमिटेड कलकत्ता
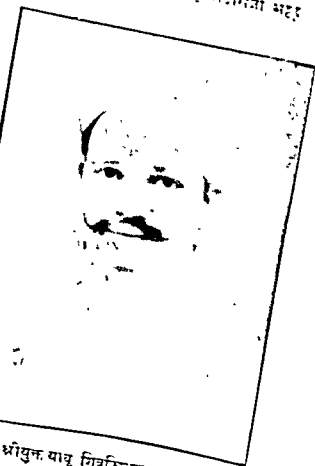
उक्त विभागके हाथमें रहेगी और प्रबन्ध भार एवं संचालन कार्य उक्त एक्टके अनुसार संस्थापित समितिके आदेशानुसार होगा इस समितिके आप भी एक आजीवन सदस्य हैं। आजकल आप काशीवास करते हैं, आपका गीताकी ओर अनन्य प्रेम है।

श्रीबाबू कन्हैयालालजी गोयनका

आपका भी शिक्षा प्रसारकी ओर अनुराग है। आपने फिरोजाबादमें रामचन्द्र विक्टोरिया हाई स्कूल स्थापित किया है जहां अच्छी संख्यामें विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस परिवारकी ओरसे चित्रकूट (बांदा) खुरजा तथा रतलाममें धर्मशालायें चल रही हैं। तथा इस फर्मकी ओरसे स्वयं खुरजामें राधाकृष्ण संस्कृत विद्यालय तथा भगवान राधाकृष्णका मंदिर स्थापित है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१ कलकत्ता—मेसर्स साधूराम तोलाराम नं० ६ वेहरापट्टी—तारका पता (Ruiwalla) इस फर्मपर रुई व बैंकिंगका व्यापार होता है। यह फर्म राधाकृष्ण मिल्स नं० १ और २ की मालिक है।

२ बम्बई - मेसर्स गोरखराम साधूराम—नं० ३६५ कालबादेवी रोड तारका पता-Pencil यहांपर रुई और बैङ्किगका व्यापार होता है।

३ खुरजा—मेसर्स गोरखराम साधूराम—यहां एक काटन जिनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फैक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है। यह फर्म आरम्भसे ही इस नामसे व्यापार कर रही है।

४ फिरोजाबाद (आगरा)—मेसर्स रामचन्द्र मटरूमल—यहां इस फर्मकी एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। यह फर्म रूईका व्यापार भी करती है।

५ अमरावती —मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा रूईका व्यापार होता है।

६ अकोला—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा फर्मकी एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। और रूईका व्यापार होता है।

७ वर्धा - मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहांपर फर्मकी एक जिनिंग प्रेसिङ्ग फैक्ट्री है और रूईका व्यापार भी होता है।

८ हिंगनघाट - मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहां पर एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। और रूईका व्यापार होता है।

९ नागपुर—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहां रूईका व्यापार होता है।

१० पाथर कुवाड़ा (सी० पी०)—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहां फर्मकी ओरसे रूईका व्यापार होता है

व्यापारको काफी इतना बढ़ाया, कि इस व्यवसायके आप कलकत्तेमें किंग कहलाने [illegible]
१९१६ ई० में सेठ हुकुमचन्दजीने अपनी फर्म कलकत्तेमें स्थापित की तब सेठजीने इस
फर्मका कार्य भट्टड़जीको सौंप दिया जिसे आपने बड़ी ही कुशलतासे संचालित किया।

व्यावसायिक उन्नतिके साथ २ आपका व्यापारिक एवं धार्मिक जगतमें भी अच्छा [illegible]
रहा है। आप मारवाड़ी एसोसिएशनके वाइस प्रेसिडेन्ट एवं मारवाड़ी भवनके ट्रस्टी थे। मार[illegible]
चेम्बर आफ कामर्सके सभापतिका आसन भी आपने सुशोभित किया था। आपको शिक्षाके काम[illegible]
बड़ा प्रेम था। आपने सन १९२३ में गोयनका गर्ल्स मेमोरियल स्कूलको २१०००) प्रदान किये [illegible]
इसी प्रकारके हजारों सार्वजनिक कार्योंमें आप उदारतापूर्वक भाग लेते रहते थे।

आपकी ओरसे कुचामनमें एक अच्छा मन्दिर एवं वैजनाथधाममें ७५ हजारकी लागतसे
शिवगङ्गापर विशाल धर्मशाला बनी हुई है। आप हुकुमचंद जूट मिलके आजीवन चेयरमैन रहे।
इस प्रकार गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ के माघ मासमें हुआ।

बाबू पन्नालालजी भट्टड़—आप स्व० भट्टड़जीके छोटे भ्राता हैं, तथा वर्तमानमें इस
कुटुम्बका प्रधान सञ्चालन भार आप हीके ऊपर है।

बाबू रामरतनदासजी भट्टड़—आप रा० ब० हरिकृष्णदासजीके कनिष्ट भ्राता थे। आप
अच्छे शिक्षित सज्जन थे। कपड़ेके व्यापारमें आपकी अच्छी निगाह थी। फर्मके कपड़े विभागमें
आपने अच्छी उन्नति की थी। आपका शरीरान्त ४१ वर्षकी वयमें संवत् १९७२ में हो गया है।
आपके दो पुत्र हैं, बाबू शिवकिशन दासजी और बा० दुलीचन्द दासजी।

बाबू देवकिशन दासजी भट्टड़—आप स्व० भट्टड़जीके पुत्र हैं। आप शिक्षित एवं
सरल स्वभावके मिलनसार नवयुवक सज्जन हैं। हिन्दीसे आपको बड़ा प्रेम है, आप भी अपने पिता
की भांति फर्मके व्यवसायमें सफलता पूर्वक भाग ले रहे हैं।

बाबू शिवकिशनदासजी भट्टड़—आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप शिक्षित
सज्जन हैं, हिन्दीसे आपको अच्छा स्नेह है। आप हुकुमचंद जूट मिलका सञ्चालन बड़ी तत्परता
से करते हैं। आपके छोटे भ्राता श्रीदुलीचन्ददास भी व्यापारमें भाग लेने लगे हैं।

सर स्वरूपचन्द हुकुमचंद एण्ड कम्पनीमें होनेवाले व्यापारोंका परिचय इस प्रकार है:—

आफिस—३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A. Kashaliwal)—यह फर्म दि हुकुमचंद जूट मिल और दि
हुकुमचन्द स्टील फैक्टरी की मैनेजिङ्ग एजण्ट है। इसके अलावा यहां जूट और हेसियनका
व्यापार और एक्सपोर्टका काम होता है। यह फर्म नाटकन इंश्योरेंस कम्पनीकी चीफ
रिप्रेजेण्टेटिव्ह है।

बाबू गोकुलचन्दजी साहब (शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद)

कुमार कृष्णकुमार साहब एम० ए० बी० एल०
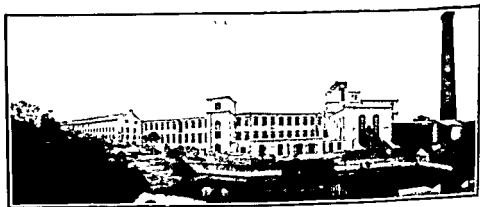
दि भारत अभ्युदय काटन मिल, हवड़ा

बैजनाथजी जालान एवं बाबू नागरमलजी बाजोरियाके हाथोंसे इस फर्मकी उत्तरोत्तर उन्नति हुई। जब आपका व्यवसाय तरक्की पाता गया तब आपने जूटके व्यवसायको बढ़ानेके निमित्त विशेष रूपसे संगठन किया तथा संवत् १९६९में इण्डिया जूट प्रेसकी स्थापना की और संवत् १९७२ में "हनुमान जूट प्रेस" नामक एक प्रेस और खोला। इस प्रकार अपने व्यवसायका विशेष रूपसे संगठन कर जूटकी खरीदीके लिये आपने बंगाल प्रांतमें स्थान २ पर जूटकी एजेन्सियां स्थापित कीं। जूटके व्यापारके साथ २ आपने सनके व्यापारको भी शुरू किया तथा उसका विलायतमें एक्सपोर्ट करने लगे। जब आपका जूटका व्यापार अच्छी तरक्कीपर पहुंच गया तब आपने संवत् १९८४ में "हनुमान जूट मिल्स" स्थापित किया। इस मिलमें आरम्भमें २६५ लूम्स काम करते थे। अभी आपने २५० लूम्स और बढ़ाये हैं। इस मिलकी मालिक सिर्फ यही फर्म है।

वर्तमानमें यह फर्म कलकत्तेके प्रतिष्ठित जूट व्यवसाइयोंमें समझी जाती है। यह फर्म पूर्वी और पश्चिमी बंगालमें जूट तथा यू० पी०, पंजाब और सी० पी० में सन खरीदीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मकी ओरसे रतनगढ़में हनुमान वाचनालय और कलकत्तेमें हनुमान लायब्रेरी नामक दो विशाल पुस्तकालय स्थापित हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स सूरजमल नागरमल—६१ हरिसन रोड कलकत्ता—T. A. "Hemp Baler"—यह फर्म हनुमान जूट मिलकी मालिक है इस फर्मपर जूट और सनकी खरीदी एवं एक्सपोर्टिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

२ हनुमान जूटमिल्स—६४ घुसड़ी रोड सलकिया—T. N. 488 हवड़ा—यह इस फर्मका जूट मिल है।

३ इण्डिया जूट प्रेस—१५ नीमतल्ला लेन स्ट्रीट कलकत्ता T. N. 35/37 B. B.—जूट प्रेस है।

४ हनुमान जूट प्रेस ओल्ड घुसड़ी रोड सलकिया T. N. 502 Hawrah—जूट प्रेस है।

मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया

इस फर्मका मूल निवास बीकानेरमें है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रोंसहित इस ग्रंथके प्रथम भागमें बीकानेर पोर्शनमें दिया गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री सेठ हीरालालजी, बाबू शिखरचंदजी, बाबू नथमलजी और बाबू भँवरलालजी रामपुरिया हैं। कलकत्तेके कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मका प्रधान स्थान है। यह फर्म विलायती और जापानी कपड़ेके इम्पोर्टरोंमें मारवाड़ी समाजमें पहली है।

इसके अतिरिक्त सिरामपुरमें आपका एक प्राइवेट मिल है। यह मिल रामपुरिया कॉटन मिलके नामसे प्रसिद्ध है। इस मिलमें ३२४ लूम्स काम करते हैं तथा प्रतिदिन काम करनेवाले मजदूरोंकी औसत ४०० है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया-१४८ कॉटन स्ट्रीट, तारका पता HAZANA तथा T. No. 1203 B. B. है। यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और बैङ्किंग व्यापार होता है। कलकत्तेमें आपकी बड़ी बड़ी ४० बिल्डिंगस हैं, जिनके किरायेकी बहुत बड़ी आमदनी होती है।

फो० के फोर्टविलियम फ्लावर मिलकी बेनियन रही। सन् १९१६ ई० में 'केटल विलबुलैन' कम्पनीसे इस फर्मने 'घुसड़ी काटन मिल' ७ लाखमें खरीद ली। इस मिलका नाम श्रीराधाकृष्ण मिल रक्खा। गत योरोपीय महासमरमें इस मिलको बड़ा भारी लाभ हुआ। इस समय इस मिलमें २७ हजार तकुए सूत कातनेके काम करते हैं। सन् १९२७ ई० में इस फर्मने १०॥ लाखमें सुखदेवदास रामप्रसादसे 'जाजोदिया काटन मिल' खरीद लिया और मिलका नाम बदलकर राधाकृष्ण मिल नं० २ नाम रख दिया। इस मिलमें १५७९० तकुए तथा २६७ करघे काम करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ साधूरामजीके पुत्र बाबू तोलारामजी गोयनका सेठ जोखीरामजीके पौत्र (मटरूमलजीके पुत्र) बाबू गौरीशङ्करजी तथा सेठ गोरखरामजीके पौत्र (रामचन्द्रजी) के पुत्र बाबू कन्हैयालालजी हैं।

श्रीसेठ तोलारामजी गोयनका

आप मारवाड़ी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आप अ० भा० मा० अग्रवाल पंचायत, श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल तथा कलकत्ता पिंजरापोलके सभापति रह चुके हैं। कलकत्ते की प्रतिष्ठित व्यवसायी संस्था मारवाड़ी ऐसोसियेशनके सबसे पहिले सभापति आप ही थे। आपके २ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीमन्नालालजी तथा रतनलालजी हैं। ये दोनों सज्जन व्यवसायमें भाग लेते हैं।

श्रीबाबू गौरीशंकरजी गोयनका

आपका संस्कृत साहित्यकी ओर अधिक अनुराग है और स्वयं भी संस्कृतके अच्छे विद्वान हैं। आपने बनारसमें जोखीराम मटरूमल गोयनका संस्कृत महाविद्यालय स्थापित किया है, जिसमें २५० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। इसके अतिरिक्त संस्कृत साहित्यकी ओर लोगोंको प्रोत्साहित करने व उच्च कोटिकी शास्त्रीय खोज करानेके उद्देश्यसे आपने १॥ लाखका दान दिया है। इसके द्वारा उत्तीर्ण परीक्षार्थीको १ हजार मुद्राकी दक्षिणा और सम्मानसूचक परिधानका पुरस्कार दिया जायगा। और साथ ही सुवर्ण एवं रौप्य पदक भी दिये जायंगे। आपने उपरोक्त रकम चेरीटेबल इन्डाउमेन्ट एक्ट के (Charitable Endowment Act 1890) अनुसार संयुक्त प्रान्तीय सरकारके पास संरक्षित रख दी है कि जिसकी आयसे उपरोक्त व्यवस्था की जायेगी। ये परीक्षायें सरकारी शिक्षा विभागके अन्तर्गत संस्कृत विभागकी ओरसे बनारस संस्कृत कालेजमें होंगी और सफल परीक्षार्थी को 'विषय विशेषके 'वाचस्पति'की पदवीसे सम्मानित किया जायगा। इसकी परीक्षा-सम्बन्धी व्यवस्था

मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद

इस फर्मकी स्थापना सन् १८३३ ईसवीके लगभग ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें हुई थी। आज भी इसका हेड आफिस इसी स्थानपर है। यह फर्म एक सम्मिलित परिवारकी सम्पत्ति है, जिसके सदस्य आनरेबल राजा मोतीचंद सी० आई० ई० बनारस, बाबू गोकुलचंदजी और कुमार कृष्णकुमार एम० ए०, बी० एल० कलकत्ता और बाबू ज्योतिभूषणजी बनारस हैं। इन महानुभावोंकी सम्मिलित बड़ी २ जागीरें और स्थायी सम्पत्ति बनारस जिला और संयुक्त प्रान्त तथा बिहार उड़ीसा प्रदेशमें है। इस फर्मके मालिकोंमेंसे बाबू गोकुलचंदजी और कुमार कृष्णकुमारजी एम० ए०, बी० एल० कौन्सिलर कलकत्ता कार्पोरेशन, कलकत्तेमें ही रहते हैं।

यह फर्म बैंकर्स, मिलओनर्स, और व्यवसायी वर्गमें मानी जाती है। इसका प्रायवेट बैंकिंग का काम बहुत ही विस्तृत है। कलकत्तेके अतिरिक्त बनारस और संयुक्त प्रांतके कितने ही स्थानोंमें इसकी गद्दियां हैं। जहां प्रायवेट बैंकिंगका काम बहुत उन्नत रूपमें होता है। प्राइवेट बैंकिंगका कार्य करनेवाली बड़ी एवं प्रभावशाली फर्मोंमें इसकी गणना होती है।

यह फर्म भारत अभ्युदय काटन मिल्स लिमिटेड हवड़ाकी मेनेजिंग एजंट है इस कम्पनीके सभी शेअर इसी फर्मके पास हैं। इसके अतिरिक्त "दी बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स लिमिटेड चौका घाट बनारस केन्ट" तथा "न्यू दरभंगा मिल्स नवसारी" (बड़ौदा) की भी यह फर्म मैनेजिङ्ग एजंट है।

इस फर्मका व्यवसाय बीज और तिलहन बानेका भी है। इस ओर भी इसका पर्याप्त लक्ष्य है। और व्यवसाय खूब बढ़ाया गया है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता T. A. 'farewell'—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहांपर बैंकिंग और इतर व्यवसाय होता है।

२ मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद ३१ और ३१।१ बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता—यहांपर भारत अभ्युदय काटन मिल्स हवड़ा, बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स बनारस और न्यू दरभंगा मिल्स नौसारीके कलकत्ता वाले आफिस हैं।

इस फर्मकी मैनेजिङ्ग एजेन्सीमें चलनेवाली मिल्स ये हैं।

१ भारत अभ्युदय काटन मिल्स लिमिटेड हवड़ा, तारका पता हेल्प 'help'।
२ बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स लिमिटेड T. A 'Belgard' बेलगार्ड
३ दि न्यू दरभंगा मिल्स नवसारी (बड़ौदा स्टेट) T. A. 'Navmil नवमिल।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है इस फर्मके संस्थापक बाबू सूरजमलजी जालान संवत् १९५२ में देशसे कलकत्ता आये एवं आरम्भमें आपने यहां आकर अपने मामा सेठ "गुरुमुखराय शिवदत्तराय" के यहां रोकड़का काम किया। इनके छोटे भाई बाबू बंशीधरजी जालान भी प्रथम "हरदेवदास गुरुदयाल" के यहां मुनीमीका काम करते थे। आप दोनों भाइयोंकी व्यवसायिक बुद्धि बड़ी तीव्र है। आपने थोड़ी पूंजीसे ही संवत १९६२ में अपना स्वतंत्र व्यापार करना शुरू किया। बाबू सूरजमलजी जालान, बाबू बंशीधरजी जालान, बाबू

बा० सूरजमलजी जालान (सूरजमल नागरमल

बा० बंशीधरजी जालान (सूरजमल नागरमल)
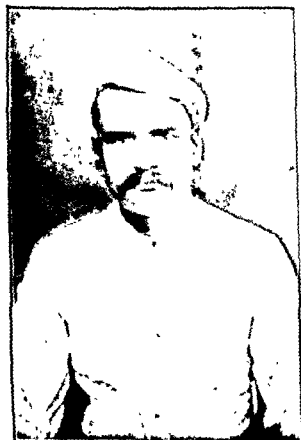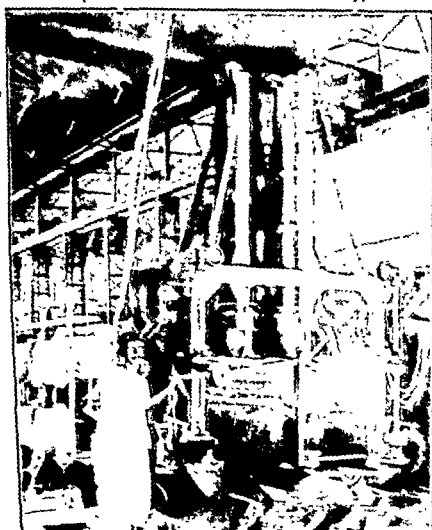
तेल सप्लाई करनेके लिये भारतभरकी यह फर्म सोल ऐजेण्ट है। भारतकी सभी बड़ी २ रेल्वे स्टेशनोंपर इस फर्मकी शाखाएं और एजंसियाँ हैं। सब स्थानोंपर तेल डिस्ट्रीव्यूट करनेके लिये ४ प्रधान फर्म कलकत्ता, बम्बई, मद्रास तथा करांचीमें खुली हैं। कलकत्ता फर्मका पता १८ मल्लिक स्ट्रीट में है। यहां बैङ्किग और तेलकी एजंसीका व्यवसाय होता है। तारका पता PODDAR है।

मेसर्स ताराचंद मघराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं। इस फर्मका स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके मालिक ओसवाल वैश्य जातिके रतनगढ़ निवासी हैं। इनका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पोर्शनमें दिया गया है।

कलकत्ता – मेसर्स ताराचंद मेघराज—४ नरायण बाबू लेन —यहां बैङ्किग तथा हुण्डी चिठ्ठीका काम होता है।

मेसर्स तेजपाल ब्रह्मादत्त

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बिसाऊ (शेखावाटी) है। देशसे आकर यह कुटुम्ब बहुत वर्षोंसे मिर्जापुरमें ही निवास करने लगा है। सेठ तेजपालजीके पुत्र बाबू जमनादासजी मिर्जापुर आये थे। एवं जमनादासजीके पुत्र बाबू ब्रह्मादत्तजीने करीब ४० वर्षों पूर्व इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें किया था आरम्भमें आपने शेयर, गवर्नमेंट पेपर्स एवं बैङ्किग व्यापार चालू किया, आपके हाथोंसे ही इस फर्मके व्यवसायकी उन्नति हुई। आपने अपनी फर्मकी स्थाई सम्पत्तिमें भी अच्छी वृद्धि की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू भगवानदासजी बजाज हैं। आप सेठ ब्रह्मादत्तजीके यहां दत्तक आये हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बजाज सज्जन हैं। ऋषीकेशमें आपकी एक धर्मशाला बनी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल ब्रह्मादत्त १८ बड़तल्ला, T. No 1810 B. B.—यहां बैङ्किग एवं आढ़तका काम होता है।

मेसर्स दिलसुखराय सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सागरमलजी गजगढ़िया हैं। आप भादरा (बीकानेर स्टेट)

बैंकर्स

BANKERS

बैंकर्स

बैंक

बैंक और व्यापारका बहुत ही समीप सम्बन्ध है, अतः संसारके सभी व्यापारी केन्द्रोंमें बड़ी बड़ी बैंकें स्थापित हो जाती हैं। इतना ही नहीं वरन संसारकी सभी प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली बैंकोंकी शाखायें संसारके बड़े बड़े व्यापारी केन्द्रोंमें रहा करती हैं। आधुनिक जगतके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारकी सुविधाके लिये बैंकोंका रहना आवश्यक ही है। हमारे प्रथम भागमें बम्बई विभागके अन्तर्गत भारतमें काम करनेवाली सभी प्रतिष्ठित बैंकोंकी विस्तृत चर्चा प्रकाशित हो चुकी है। अतः यहांपर हम उन्हीं प्रतिष्ठित बैंकोंका आवश्यक वर्णन संक्षिप्त रूपसे देंगे जिनका हेड आफिस कलकत्ते में है और शेषके नामधाम ही मात्र देकर यह विषय समाप्त करेंगे।

१ इलाहाबाद बैंक—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वर्तमानमें यह बैंक संसारप्रसिद्ध पी० एण्ड० ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० से सम्बद्ध है। इसकी स्थापना सन् १८६५ ई० में हुई थी, अतः यह पुरानी बैंकोंमें एक है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख रुपयेकी है। इसकी शाखायें भारतके ख्यातिप्राप्त व्यापारी केन्द्रों, जैसे बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावलपिण्डी, नागपुर, पटना आदिमें खुली हुई हैं। इसके लंदन स्थित एजेन्ट मेसर्स पी० एण्ड ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० तथा दि नेशनल प्राविन्शियल बैंक लि० हैं।

२ करनानी इण्डस्ट्रियल बैंक लि०—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। इसकी नियमित रूपसे सन् १९१९ ई० में रजिस्ट्री करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर राय बहादुर सेठ सुरजमलजी करनानी ओ० बी० ई०, सेठ चंदनमलजी करनानी, सेठ कन्हैयालालजी करनानी, बाबू लक्ष्मीचंदजी कोठारी और मि० जे० एच० टेनिसन हैं। इसके मैनेजिंग एजेन्ट रायबहादुर सेठ सुरजमलजी करनानी ओ० बी० ई० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ रुपयेकी है, पर वसूल पूंजी १० लाखकी है, जिससे बैंक काम कर रही है।

कलकत्ता—मेसर्स कस्तूरचंद हनुमान बक्स—२६ अमरतल्ला स्ट्रीट—इस फर्म पर किरानेका काम होता है।

इस फर्मके मुनीम बालमुकुन्दजी डागा हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। मारवाड़ी एसोसिएशनके आप वाइस प्रेसिडेन्ट हैं।

मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल

यह फर्म सन् १९१० ई०से ईस्टर्न बैंककी बेनियन है। और सन् १९१६ ई०से सेंट्रल बैंककी हेड आफिस और बड़ा बाजार ब्रांचकी ग्यारंटेड केशियर एवं बेनियन है। इसका आफिस ४६ स्ट्रांड रोडमें है, विशेष परिचय इसी भागमें मेन मर्चेंट्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। आपकी फर्म पर प्रधानतया बैंकिंग आढ़त, जूट आदिका व्यापार होता है। आपका आफिस बड़तल्ला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स बलदेवदास जुगुलकिशोर बिड़ला

इस फर्मका मालिक प्रसिद्ध बिड़ला परिवार है। आपकी उपरोक्त नामसे गद्दी १८ मल्लिक स्ट्रीट कालीगोदाममें हैं। यहां बैंकिंग व्यापार होता है। विस्तृत परिचय मिल ओनर्सके पोर्शनमें दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द सुराणा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास चुरू (बीकानेर स्टेट) है। आप ओसवाल जैन तेरापंथी समाजके सुराना सज्जन हैं। करीब ५०।५५ वर्ष पूर्व इस फर्मका स्थापन श्री सेठ मन्नालालजी सुरानाके हाथोंसे हुआ है। स्वर्गीय सेठ सुखरामदासजी के पुत्र बाबू हरिचन्ददासजीके ४ पुत्र सेठ [illegible]चन्दजी, सेठ [illegible]मलजी, सेठ मन्नालालजी एवं सेठ शोभाचन्दजी हुए। जिनमेंसे सेठ [illegible]जी के पुत्र श्री [illegible]मलजीका शरीरान्त थोड़ी ही अवस्थामें हो गया था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती [illegible] [illegible] तथा आपके पुत्र श्री मोहनलालजीने संसारसे विरक्त होकर संवत १९६८ में श्रीआचार्य [illegible] कालूरामजी महाराजके पास जैन तेरापंथी समाजके सन्यासी (जैन-साधु) की दीक्षा ग्रहणकी। श्री मोहनलालजी, व्याकरणके विद्वान, संस्कृत काव्यके ज्ञाता, जैनशास्त्रोंमें पारंगत एवं [illegible]

बैंकर्स

बैंक

बैंक और व्यापारका बहुत ही समीप सम्बन्ध है, अतः संसारके सभी व्यापारी केन्द्रोंमें जहां तहां बैंकें स्थापित हो जाती हैं। इतना ही नहीं वरन संसारकी सभी प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली बैंकोंकी शाखायें संसारके बड़े बड़े व्यापारी केन्द्रोंमें रहा करती हैं। आधुनिक जगतके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारकी सुविधाके लिये बैंकोंका रहना आवश्यक ही है। हमारे प्रथम भागमें बम्बई विभागके अन्तर्गत भारतमें काम करनेवाली सभी प्रतिष्ठित बैंकोंकी विस्तृत चर्चा प्रकाशित हो चुकी है। अतः यहांपर हम उन्हीं प्रतिष्ठित बैंकोंका आवश्यक वर्णन संक्षिप्त रूपसे देंगे जिनका हेड आफिस कलकत्ते में है और शेषके नामधाम ही मात्र देकर यह विषय समाप्त करेंगे।

१ इलाहाबाद बैंक—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वर्तमानमें यह बैंक [illegible] पी० एण्ड० ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० से सम्बद्ध है। इसकी स्थापना सन् १८६५ ई० में हुई थी, अतः यह पुरानी बैंकोंमें एक है। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख रुपयेकी है। इसकी शाखायें भारतके स्थानिक व्यापारी केन्द्रों, जैसे बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहौर, रावल पिण्डी, नागपुर, पटना आदिमें खुली हुई हैं। इसके लंदन स्थित एजेन्ट मेसर्स पी० एण्ड ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० तथा दि नेशनल प्राविन्शियल बैंक लि० हैं।

२ करनानी इण्डस्ट्रियल बैंक लि०—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। इसको लिमिटेड रूपसे सन् १९१९ ई० में रजिस्टर्ड करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर्स राय बहादुर सेठ सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई०, सेठ चंदनमलजी करनानी, सेठ [illegible] करनानी, बाबू लक्ष्मीचंदजी कांकरिया और मि० जे० एच० पेटिसन हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट रायबहादुर सेठ सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ रुपयेकी है, पर वसूल पूंजी ६० लाखकी है, जिससे बैंक काम कर रही है।

बेङ्किग शेअरका व्यापार और स्थाई सम्पत्ति किरायेका काम होता है। इस फर्मका हेड आफिस ६६ घांसतल्ला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स महलीराम रामजीदास जटिया

इस फर्मके मालिक सर ओंकारमलजी जटिया के० टी० और आपके पुत्र बाबू कन्हैया लालजी जटिया, बाबू गजानंदजी जटिया और बाबू चम्पालालजी जटिया हैं। आपका कुटुम्ब मारवाड़ी समाजमें ऊंचे दर्जेका प्रतिष्ठा सम्पन्न, शिक्षित एवं व्यवसायमें आगे बढ़ा हुआ माना जाता है। आप सब सज्जन कलकत्तेकी बीसियों बड़ी बड़ी ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त मशहूर विदेशी फर्म मेसर्स एन्ड्रू यूल कम्पनीके आप बेनियन हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके समस्त व्यापारिक समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझी जाती है। यह फर्म कई मोहिल मिल और पञ्जाब मिलकी मैनेजिंग एजंट है। सर ओंकारमलजी के० टी० कलकत्तेके नामी गरामी व्यापारियोंमेंसे एक हैं। आपकी आफिस रूपचन्दराय स्ट्रीटमें है।

मेसर्स मूलचन्द हरकचन्द, राय बिशनसिंह बहादुर दुधोरिया अजीमगंजवाले

यह राजवंश मुर्शिदाबाद जिलेके अजीमगंजवाले दुधोरिया राजवंशके नामसे प्रसिद्ध है। अजीमगंजका यह राजपरिवार बहुत ही प्राचीन है। मसीह सन् ई०से १३५ और ११० वर्ष पूर्व भटनेरमें राजा चन्दन राज्य करते थे उन्हींसे इस राज परिवारका आरम्भ होता है। सन् ११५ ई० में दुधोर नामके राजाने जैन सिद्धान्त स्वीकार कर लिये। तभीसे इनके राज परिवारका नाम दुधोरिया राजवंश पड़ गया।

इसी राजपरिवारके कुछ महानुभाव सन् १७७४ ई० में अजमेरसे अजीमगंज आये और यहीं रहने भी लगे। श्रीहरखीमल दुधोरियाने अपने दो पुत्रोंको साथ ले यहीं कपड़का व्यवसाय आरम्भ किया। आपके बाद बाबू हरखचन्दजी दुधोरियाने व्यापारको बहुत ही बढ़ाया। आप अपने समयके प्रथम श्रेणीके व्यवसायी गिने जाते थे। आपने कलकत्ता, मिरजापुर, अजीमगंज, भागलपुर तथा दिनाजपुरमें दुकानें खोलीं। इस प्रकार व्यवसाय कौशलका चमत्कार दिखा आपने सन् १८१२ ई० में ऐहिक लीला समाप्त की। आपके पुत्र रायबहादुर बुधसिंहजी और रायबहादुर बिशनचन्दजीने व्यवसायको इसी प्रकार बढ़ाया और अपनी पूंजीको जमींदारी खरीदनेमें भी लगाया। आपकी जमींदारी दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद, वीरभूम, फरीदपुर, नदिया, पुर्निया तथा राजशाही जिलेमें बहुत दूरतक है

स्व० महादत्तजी बजाज (तेजपाल महादत्त)

स्व० दिलसुख रायजी राजगढ़िया (दिलसुखराय सागरमल)

...रामजी बजाज (मेघराज महादत्त)

बाबू सागरमलजी राजगढ़िया (दिलसुखराय ...
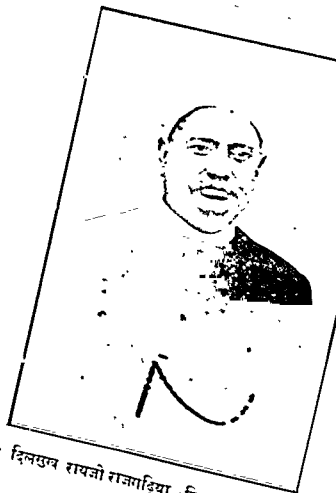
स्व० राय विशनचन्दजी दुधोरिया बहादुर

राजा विजयसिंहजी दुधोरिया आफ अजीमगंज

बाबू पूर्णचन्दजी नाहटा (मौजीराम इन्द्रचन्द

बाबू ज्ञानचन्दजी नाहटा (मौजीराम इन्द्रचन्द)

के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब २५ व
दिल्सुखरायजी राजगढ़ियाके हाथोंसे हुआ था। इस फर्मकी साम्पत्तिक वृद्धि आप हीके
आरंभमें आप मामूली चलानीका काम करते थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२८ ई०में
बाबू दिल्सुख रायजीके पुत्र बाबू सांगरमलजी राजगढ़िया हैं। आपकी ओ
धर्मशाला, मन्दिर आदि बने हैं। आप यहांकी मारवाड़ी सभा, सरस्वती विद्यालय, औषधा
रापोल आदि संस्थाओंमें सहयोग देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स दिल्सुखराय सांगरमल राजगढ़िया—मुक्तराम बाबू स्ट्रीट,टेलीफोन नं०237
यहां बेंकिंग व्यापर होता है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मोतीलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके नवल
गढ़ निवासी हैं। आपकी फर्मका चित्र सहित पूरा विवरण इस ग्रन्थके प्रथम भागके बम्बई-विभागमें
दिया गया है। नीचे लिखा कारबार होता है—

कलकत्ता—मेसर्स देवकरणदास रामकुमार १७३ काटन स्ट्रीट—यहां बेंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेके
इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स प्राणकृष्ण ला एण्ड को०

इस प्रतिष्ठित फर्मके संस्थापक बाबू प्राणकृष्ण ला थे। आप स्वभावसे ही व्यवसाय
कुशल थे। आपके यहां अफीम, नमक आदि कितने ही पदार्थोंका व्यवसाय होता था। यद्यपि आप
अपने समयके असाधारण व्यवसायी न थे फिर भी आपने उस समय एक ऐसी आधारशिला रक्खा कि
जिसपर आज महाजनी, व्यापार वाणिज्य तथा जमींदारी आदिके विस्तृत कारबारके भव्य भवनका
निर्माण किया जाना सहज हो सका है। बाबू प्राणकृष्णला के तीन पुत्र थे जिनमें सबसे बड़े
महाराज दुर्गाचरण ला थे। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्तकर आपने १७ वर्षकी आयुमें व्यापारिक क्षेत्रमें
प्रवेश किया और अपने पिताकी देख रेखमें ध्यान करने लगे। आप बड़े ही कुशल और अनुभवी
व्यापारी थे। आपको जे० पी० और आनरेरी प्रेसीडेन्सी मैजिस्ट्रेटके पदपर सरकारने नियुक्त
किया। १५ वर्ष तक आप कलकत्ता पोर्टके कमिश्नर रहे। आप कलकत्ताके शरीफ और नामीन

आपका प्रधान व्यवसाय महाजनीका था। आपका बनवाया हुआ गढ़के सामनेका बिहारी सागर नामक कुआं, छत्री तथा एक और दूसरा कुआं अब भी मौजूद हैं। आपही के समयमें इस कुटुम्बका आगमन सीकरसे नवलगढ़में हुआ। तथा वर्तमानमें आपका कुटुम्ब नवलगढ़का निवासी कहा जाता है। सेठ नाथूरामजी की चौथी पीढ़ीमें सेठ परसादीरामजी थे, आपने संवत् १९१५ में अपने पुत्र सेठ शिवरामदासजीको साथ लेकर व्यवसायके निमित्त पटनेकी यात्रा की। सेठ नाथूरामजीने पटनेमें आकर अपने पुत्र शिवरामदासजी एवं पौत्र मनसुखरायजीके नामसे शिवरामदास मनसुखराय नामक दुकान स्थापितकर कपड़े और अनाजका कारबार शुरू किया। इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ अतः संवत् १९१८ में आपने अपने पुत्र सेठ शिवरामदासजीको कलकत्ता भेजकर शिवरामदास मंगलचन्द फर्मका स्थापन करवाया। पटना वाली फर्मकी तरह यहां भी अनाज और कपड़ेका कारबार होता था। सेठ शिवरामदासजीने अपने व्यापारमें बहुत अधिक उन्नतिकी और आप कलकत्तेके बाजारमें अपने समयके लब्ध प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाने लगे। सेठ शिवरामदासजीके तीन पुत्र हुए जिनमेंसे सेठ मनसुखरायजी और सेठ मंगलचन्दजी स्वर्गवासी हो चुके हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामनिरंजनदासजी हैं। आपका जन्म संवत् १९२१ में हुआ। अपने छोटी वयमें ही अपने पिताजी द्वारा स्थापित पटनेकी कपड़ेकी दुकानका कार्य सम्हाला। एवं कलकत्ते आकर यहांका व्यवसाय बढ़ाया। आप ई० डी० ससुन, फारबेस फेम्बल कम्पनी, फारबस कम्पनी येरी कम्पनी, आदि प्रतिष्ठित विदेशी फर्मोंके बेनियन नियुक्त हुए। संवत् १९४७ में आपने शॉ वॉलेस कम्पनी के कपड़े और मिट्टीके तेलकी मुत्सद्दीगीरीका काम आरंभ किया। इस कार्यमें मेसर्स नागरमल घनश्यामदासजी फर्म भी आपके साथ थी। आपने अपनी फर्म के नाममें मंगलचन्दके स्थानपर अपना निजका नाम बदल दिया, तथा वर्तमानमें यह फर्म इसी उपरोक्त नामसे व्यवसाय कर रही है।

सेठ रामनिरंजनदासजी पुराने विचारोंके वृद्ध सज्जन हैं। आप अग्रवाल गार्गगोत्रीय सज्जन हैं। आपने नैमिषारण्य, एवं वृन्दावनमें विशाल धर्मशालाएं बनवाईं, कई जगह कुएं बनवाये। कलकत्तेमें जनाना और मरदाना आयुर्वेदिक औषधालय खोल रक्खा, एवं पटनेमें संस्कृत पाठशाला स्थापित की, पटनेकी पाठशालामें विद्यार्थियोंके साथ २ छात्रोंको अन्न वस्त्रका भी प्रबंध है। आपने कुरुक्षेत्र पुलके ४२ हजार रुपयोंकी रकम बिहार उड़ीसा सरकारको दी है। जिसके ब्याजसे बुढ़ियों-को निरन्तर भोजन दिया जाता है। उड़ीसा अकालके समय आपने प्रायः २ मास मनुष्योंको करीब ३ हजारका अन्न और वस्त्र दिये। इसके अतिरिक्त आपने [illegible] सरकारी अस्पतालमें २५ हजारका दान दिया एवं [illegible] १००० बीघा [illegible] दान की है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पृष्ठ ५६ में दिया गया है। बम्बई, अकोला, अमरावती, खामगांव, अमृतसर और करांचीमें इस फर्मपर रुई तथा गल्लेका अच्छा कारबार होता है। इसके वर्तमान मालिक बाबू रामकुमारजी, बाबू श्रीरामजी बाबू मुरलीधरजी आदि सज्जन हैं। आप अग्रवाल समाजके हरएक काममें अच्छा भाग लेते रहते हैं। आपकी कलकत्ता फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां बैङ्किंग हुण्डी चिट्ठी, हेशियन, चीनी तथा रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास सूरजमल

इस फर्मके मालिक बा० सूरजमलजी और बाबूलालजी जटिया हैं। आप मारवाड़ी अग्रवाल समाजके खुरजा निवासी सज्जन हैं। इस फर्मका प्रधान व्यापार सराफी, आढ़त, गल्ला तथा रुईका है इसका व्यापारिक परिचय निम्न प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मणदास सूरजमल, काटन स्ट्रीट T.A. Geathiring—यहां सराफी व्यवसाय होता है।

खुरजा (यू०पी०) मालीराम लक्ष्मणदास T.A. Jatiya—यहां इस फर्मकी एक काटन जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा काटन, सराफी और आढ़तका काम होता है। आइस फेक्टरी भी इस फर्मकी ओरसे चलती है।

डिबाई (बुलंदशहर) मालीराम लक्ष्मणदास—यहां सराफी, आढ़त तथा काटनका बिजिनेस होता है। यहां भी आपकी एक काटन जीनप्रेस फैक्टरी है।

चंदौसी—मालीराम लक्ष्मणदास—यहां भी आपकी एक जीनप्रेस फेक्टरी है। तथा काटन, गल्ला और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रायबहादुर सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान

इस फर्मके मालिक चिड़ावा (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक बाबू सूरजमलजी बांसल हैं। आपने अपने जीवनमें बहुत साधारण स्थितिसे लेकर व्यापार आरम्भ किया और इतनी ऊंची स्थितिको बनाया, इससमय कलकत्तेके व्यवसायियोंमें यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित एवं सम्पत्तिशाली मानी जाती है। व्यवसायकी उन्नतिके साथ साथ फर्मके मालिकोंकी

[illegible] सन १८[illegible] ई० में दोनों भाई अलग हो गये और अपने अपने नामसे [illegible]
[illegible]।

वर्तमान राजा सा० के पिता रायबहादुर विशनचंदजीका देहान्त सन १८९४ ई० में हुआ। उस समय आपके पुत्र बाबू विजयसिंहजीकी आयु केवल १४ वर्षकी थी। इसलिए सब प्रबन्ध भार आपके चचा रायबहादुर बाबू बुद्धसिंहजीके हाथमें रहा। सन १९०० ई० में आपने अपनी स्टेटका सारा भार अपने हाथमें लिया। आप आरम्भसे ही होनहार थे। आपने अपने कार्यो बेहतर ढंग सम्पादित किया। सरकारने आपको सन १९०३ ई० में अजीमगंज म्युनिसिपलिटीका म्युनिसिपल कमिश्नर मनोनीत किया। सन १९०४ ई० की अ० भा० जैन कान्फ्रेन्सके बड़ौदावाले अधिवेशनमें आपके चचा राय बहादुर बुद्धसिंहजी प्रमुख और राजा सा० उप-सभापति थे। सन १९०६ ई०में आप अजीमगंज म्युनिसिपलिटीके चेयरमैन निर्वाचित हुए। सन १९०८ ई०में सरकारने आपको राजाकी उपाधिसे सम्मानित किया। आप जितने कर्मवीर हैं उतने ही दानवीर भी हैं। आपका झुकाव शिक्षा प्रचारकी ओर अधिक रूपसे रहता है। सन १९१५ ई० में आप कलकत्ताके ब्रिटिश इण्डिया एसोसियेशनके उप-सभापति रह चुके हैं। आप मुर्शिदाबाद जिलाबोर्डके सदस्य, इम्पीरियल लीगकी कार्यकारिणीके सभासद, किंग एडवर्ड मेमोरियल फण्ड कमेटीके मेम्बर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आप कलकत्तेके मशहूर कलकत्ता क्लबके, लेण्डहोल्डर्स एसोसियेशन कलकत्ताके, जैन एसोसियेशन आफ इण्डिया बम्बईके, आनन्दजी कल्याणजीकी पेढ़ीके, तीर्थरक्षा कमेटीके और कलकत्ता रायल टर्फ क्लबके मेम्बर हैं। श्रीसम्मेद शिखरके झगड़ेके लिए पटनेमें जो कान्फ्रेन्स हुई थी उसके आप प्रेसीडेन्ट निर्वाचित हुए थे। सार्वजनिक कार्योंमें इस प्रकार लगे रहनेपर भी आप अपने व्यवसायका कार्य स्वयं देखते हैं।

दुधोरिया परिवार अपनी दानवीरताके लिये सदासे प्रसिद्ध चला आ रहा है। इसके दानसे बनी हुई धर्मशालायें, औषधालय, अस्पताल तथा स्कूल आदि हैं। स्वयं राजा सा० ने जबसे कार्य भार संभाला तबसे दोनों हाथ खोलकर लाखों रुपयेका दान किया। आपने १ लाख रुपये लेडी मिन्टो नर्सिङ्ग एसोसियेशनको, २० हजार जियागंज सप्तम एडवर्ड कारोनेशन इन्स्टीट्यूटको, ५ हजार इम्पीरियल वार रिलीफ फण्डको और ५ हजार कृष्णनगर कालेजको दान दिये हैं। इसके अतिरिक्त कष्ट प्रपीड़ित लोगोंकी सेवा और सहायता आप सदैव करते रहते हैं। सन् १९१९-२० में मैमनसिंह, ढाका, फरीदपुर इत्यादि स्थानोंमें बहुत जोरका तूफान आया था। उसमें लोग घरबार विहीन होकर महान दुर्दशा ग्रस्त हो गये थे। ऐसे कठिन समयमें मैमनसिंह जिलेमें आपने लाखों मन चावल बाहरसे मंगाकर गरीब जनताको बहुत ही सस्ते दामोंमें बेचा था। इस कठिन

स्व॰ रायबहादुर हरदत्तरायजी धमाड़िया

रायबहादुर रामप्रतापजी धमाड़िया

बाबू राधाकृष्णजी धमाड़िया

इस समय करीब १५ वर्षोंसे अपने व्यवसायका भार अपने पुत्रोंपर छोड़कर आप काशी वास करते हैं। वर्तमानमें आपके आठ पुत्र हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं - बा० हीरालालजी, नंदलालजी, गणेशलालजी, कन्हैयालालजी, मिश्रीलालजी, चौथीलालजी, छोटेलालजी तथा कृष्णलालजी हैं। आप सब सज्जन व्यवसायका कार्य बड़ी तत्परतासे संचालित करते हैं। आपकी फर्म कलकत्तेकी पुरानी एवं प्रतिष्ठित फर्मोंमें मानी जाती है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास १३६ तुलापट्टी T. No. 253, 720 B. B.—यहां हेड ऑफिस है, तथा सराफी, गल्ला, तेल, जूटका व्यापार और कपड़ेके इम्पोर्टका काम होता है।

कलकत्ता—मुरारका पेन्ट एण्ड वार्निस वर्क्स १३७ केनिङ्ग स्ट्रीट T. No. १००३ कलकत्ता और ८३ बारिकपुर —यहां पेंट और तेलका ऑफिस है। इसका कारखाना सेरामपुरमें है।

कलकत्ता—पीताम्बर सरकार एण्ड कम्पनी ४७ बहुबाजार स्ट्रीट T. No. 1795 B. B.—ऑफिस और शोरूम है कारखाना डंगरामें है।

झरिया—शिवरामदास रामनिरंजनदास श्रीलक्ष्मीकोलेरी—कोयलेकी खान है।

बनारस—अन्नपूर्णा ऑइल मिल बनारस छावनी—तेलकी मिल है।

बनारस—अन्नपूर्णा आयर्न फाउंडरी वर्क्स मुहल्ला-नरवास लोहेकी फेक्टरी है। और व्यापार होता है।

चांदूर (बरार)—मुरारका जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी—काटन फेक्टरी है और रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेर पोर्शनमें पृष्ट १२८ में दिया गया है। इसका स्थापन संवत् १८६५ में बाबू सदासुखजीके हाथोंसे कलकत्तेमें हुआ। इसके वर्तमान मालिक बाबू कस्तूरचन्दजी कोठारी, बाबू दाऊदयालजी कोठारी और कुंवर भैरोंबक्सजी कोठारी हैं। कलकत्तेमें आप लोगोंकी बहुत बड़ी स्थाई सम्पत्ति है। प्रसिद्ध सदासुखका कटरा आपका ही है। इसके अलावा इस फर्मकी बम्बई, मद्रास तथा दिल्लीमें शाखाएं हैं। जहांपर बैङ्किग, आढ़त और चांदी सोनेका व्यापार होता है।

बा० रावतमलजी कोठारी (करणीदान रावतमल)

बा० दलामालजी कोठारी करणीदान रावतमल)

बाजोरिया (शिवदयाल रामजीदास)

बा० नन्दकिशोरजी बाजोरिया (शिवदयाल रामजीदास

संवत् १९५८ में आपने अपनी फर्मपर धातु बानेका व्यवसाय आरंभ किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू पन्नालालजी कोठारीने फर्मके कारबारको संभाला, तथा वर्तमानमें आपही फर्मके मालिक हैं। आपने अपनी फर्मपर संवत् १९७४, ७५ में कपड़े और चीनीका इम्पोर्ट व्यवसाय आरंभ किया। संवत् १९८२ में आपने जूटबेलिंग और शीपिंगका कार्य आरंभ किया और संवत् १९८२ सेही आपकी फर्म नेशनल ट्रेस इण्डिया कमर्शियल बैंककी केश मुंशियर है। सेठ पन्नालालजीके ४ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े भैरवराजजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कर्णीदान गजमल १४१ हरिसन रोड—T. A. Kothari—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। तथा बेंकिंग, जूटकी कमीशन एजंसी तथा कपड़ा और चीनीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स कर्णीदान गजमल ५५ सूतापट्टी—यहांपर धोतीका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स कर्णीदान गजमल ५-१ रायल एक्सचेंज प्लेस—यहांपर जूटका आफिस है।

इसके अतिरिक्त जूटके समयमें बंगालमें आपकी कई ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) है। आप तेरापंथी जैन समाजके ओसवाल सज्जन हैं। सर्व प्रथम करीब संवत् १९१० के सेठ चिमनीरामजी देशसे दिनाजपुर (बंगाल) आये, तथा संवत् १९१२ में आपके छोटे भ्राता सेठ चौथमलजी भी दिनाजपुर आये। चौथमलजी, मुर्शिदाबादके सेठ केशोदास सताबचंदके यहां रोकड़ एवं गोदामकी प्रधान व्यवस्थाका काम करते थे। एक बार चिमनीरामजी रथयात्राके मौकेपर सालडांगा (जलपाई गोड़ी) गये और वहांके लोगोंके आग्रहसे करीब संवत् १९१५ में वहीं बस गये। सालडांगामें दोनों भाई मिलकर गल्ला कपड़ा आदिका व्यापार करने लगे। धीरे २ आपलोगोंने अपनी बहुत बड़ी जमीदारी वहां बढ़ाई जो आज गोठी-स्टेटके नामसे मशहूर है। थोड़े समय बाद सेठ चिमनीरामजी, विवाह करनेके लिये देश गये, एवं अविवाहित अवस्थाहीमें आप देशमें स्वर्गवासी हो गये।

सेठ टीकमचंदजीके ६ पुत्र थे जिनमेंसे सेठ चिमनीरामजी तो अविवाहित अवस्थामें ही स्वर्गवासी हो गये थे, तथा शेष ५ पुत्र सेठ जीवनदासजी, सेठ चौथमलजी, सेठ पांचीरामजी, सेठ मल्लावरमलजी एवं सेठ हीरालालजीकी संतानें वर्तमानमें इस फर्मकी मालिक है। इन सब भाइयों

दानधर्म और सार्वजनिक कामोंकी ओर भी अच्छी रुचि है। बद्रीनारायणके रास्तेका प्रसिद्ध लक्ष्मण झूला आपहीका बनाया हुआ है। आपकी ओरसे गयामें २ विशाल धर्मशालाएं तथा चिड़ावामें एक धर्मशाला बनवाई गई है। इसके अतिरिक्त चिड़ावेमें आपकीओरसे एक संस्कृत एवं एक अंग्रेजी पाठशाला चल रही है, वहांकी गौशालामें भी आपका प्रधान हाथ रहा है। इसी प्रकार कई धार्मिक कामोंमें आपने बड़ी रकमें लगाई हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री बाबू शिवप्रसादजी एवं बाबू गंगासहायजी हैं। आपके कुटुम्बकी अग्रवाल समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रा० ब० सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां बैंकिंग, कपड़ेकी कमीशन एजंसी तथा दलालीका बड़ा कारबार होता है।

रायबहादुर सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई०

राय बहादुर बाबू सुखलालजी करनानी ओ०बी० ई०ने करनानी इंडस्ट्रियल बैंकका स्थापन किया है। आप माहेश्वरी समाजके अच्छे ख्याति प्राप्त सज्जन हैं। तथा कलकत्तेकी ३१४ ज्वाइंटस्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। आपकी बैंक सैनेगो स्ट्रीटमें है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्डसंस

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान फतहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चमड़िया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक श्रीमान रायबहादुर हरदत्तरायजी चमड़िया थे। आपके पिताजीका नाम सेठ नंदरामजी था। आप ९ वर्षकी आयुमें व्यवसायके निमित्त कलकत्ता आये। आपके बड़े भ्राता सेठ गोरखरामजी देशहीमें निवास करते थे। सेठ हरदत्तरायजी बहुत मामूली परिस्थितिमें कलकत्ता आये थे। आपने यहां आकर अफीमकी दलालीका काम शुरू किया, साथ ही आप अपना खुद व्यवसाय भी करने लगे। आपका व्यापार दिनपर दिन तरक्की पाता गया, कुछ समय पश्चात् आपने बम्बईमें भी एक ब्रांच स्थापित की। बम्बई दुकानके द्वारा, मालवेमें पैदा होनेवाली अफीमका शिपमेंट होता था। साथही यहां रुईकी आढ़तका काम भी होता था। आपने अपने अफीमके व्यापारको इतना बढ़ाया कि उसके लिये आपको हांगकांग और शंघाईमें अपनी ब्रांचेज स्थापित करना पड़ी, जबतक भारतमें अफीमका व्यापार होता रहा, तबतक ये ब्रांचेज अपना काम करती रहीं। अफीमका व्यापार बंद हो जानेके पश्चात आपने रुई तथा

संवत् १६५८ में आपने अपनी फर्मपर धातु बानेका व्यवसाय आरंभ किया। आपका स्वर्गवास संवत् १६८१ में हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू पन्नालालजी कोठारीने फर्मके कारबारको संभाला, तथा वर्तमानमें आपही फर्मके मालिक हैं। आपने अपनी फर्मपर संवत् १६७४, ७५ में कपड़े और चीनीका इम्पोर्ट व्यवसाय आरंभ किया। संवत् १६८२ से आपने जूटबेलिंग और शीपिंगका कार्य आरंभ किया और संवत १६८२ सेही आपकी फर्म नेदरलैण्ड्स इण्डिया कमर्शियल बैंककी केश ब्रोकर है। सेठ पन्नालालजीके ४ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े मेघराजजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल १४१ हरिसन रोड —T. A. Kothari—यहां इसफर्मका हेड आफिस है। तथा बैङ्किग,जूटकी कमीशन एजंसी तथा कपड़ा और चीनीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल ५५ सूतापट्टी—यहांपर धोतीका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल ६-१ रॉयल एक्सचेंज प्लेस—यहांपर जूटका आफिस है।

इसके अतिरिक्त जूटके समयमें बंगालमें आपकी कई ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) है। आप तेरापंथी जैन समाजके ओसवाल सज्जन हैं। सर्व प्रथम करीब संवत् १६१० के सेठ चिमनीरामजी देशसे दिनाजपुर (बंगाल) आये, तथा संवत् १६१२ में आपके छोटे भ्राता सेठ चौथमलजी भी दिनाजपुर आये। चौथमलजी, मुर्शिदाबादके सेठ केशरीदास सतावचंदके यहां रोकड़ एवं गोदामकी प्रधान व्यवस्थाका काम करते थे। एक बार चिमनीरामजी व्यापारके मौकेपर सालडांगा (जलपाईगोड़ी) गये और वहांके लोगोंके आग्रहसे करीब संवत् १९१५ में वहीं बस गये। सालडांगामें दोनों भाई मिलकर गल्ला कपड़ा आदिका व्यापार करने लगे। धीरे २ आपलोगोंने अपनी बहुत बड़ी जमीदारी वहां बढ़ाई जो आज गोठी-स्टेटके नामसे मशहूर है। थोड़े समय बाद सेठ चिमनीरामजी, विवाह करनेके लिये देश गये, एवं अविवाहित अवस्थाहीमें आप देशमें स्वर्गवासी हो गये।

सेठ टीकमचंदजीके ६ पुत्र थे जिनमेंसे सेठ चिमनीरामजी तो अविवाहित अवस्थामें ही स्वर्गवासी हो गये थे, तथा शेष ५ पुत्र सेठ जीवनदासजी, सेठ चौथमलजी, सेठ पांचीरामजी, सेठ पन्नालालजी एवं सेठ हीरालालजीकी संतानें वर्तमानमें इस फर्मकी मालिक है। इन सब भाइयों

जूट डीलर्स

जूटके व्यवसायी

संसारके समुन्नत व्यवसायमें जूटके व्यवसायका स्थान बड़े ही महत्वका है। जूटका प्रधान केन्द्र जहां भारत माना जाता है वहां भारतमें इस व्यवसायका प्रधान केन्द्र कलकत्ता है। जूटकी खेती प्रायः मार्चसे मईतक होती है और जुलाईसे सितम्बरतक जूटकी फसल तैयार होकर माल बाजारमें आ जाता है। इसी प्रकार अक्टूबरसे दिसम्बरतक खूब जोरोंसे जूटकी निकासी यहां होती है। जूटके सम्बन्धमें विस्तृत विवरण हमारे इसी ग्रन्थके 'भारतकी गृह सम्पत्ति' नामक विभागमें दिया गया है। यहां इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि जूट व्यवसायिक क्षेत्रमें छुट्टा जूट, जूटड्रम कच्चीगांठ, पक्कीगांठ, हेसियन क्लाथ, और गनीके रूपमें आता है और इसी प्रकार इसका व्यवसाय होता है।

जूटका वायदेका सौदा भी जोरोंके साथ होता है। जिस प्रकार बम्बईमें काटनका वायदेका सौदा होता है उसी प्रकार यहां जूटका होता है। इस प्रकारके, व्यवसायका प्रधान केन्द्र क्लाइव स्ट्रीट और रॉयल एक्सचेंज प्लेसमें है। व्यवसायके समय यहां बहुत गतिविधि रहती है।

यहांके जूट व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स करणीदान रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बीकानेर है इसके पूर्व आपके पूर्वज बरसलपुर (जेसलमेर)में रहते थे। आप माहेश्वरी समाजके कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ करणी दानजी कोठारी बीकानेर होकर संवत् १९०० के करीब कलकत्ता आये। आपने कपड़ेकी आफिसोंकी दलाली तथा जवाहरातका व्यवसाय आरंभ किया। आपका स्वर्गवास संवत १९३५ में हुआ। कुछ ही समय बाद संवत १९३६-३७ में आपके पुत्र रावतमलजीने करणीदान रावतमलके नामसे फर्म स्थापित कर कपड़ेका कारबार शुरू किया। इसके व्यवसायको आपके हाथोंसे अच्छी तरक्की मिली।

स्व० सेठ सरदारमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू वृद्धिचन्द्रजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू रामलालजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू महालचन्दजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बा० चम्पालालजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० मदनचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० सिरदारचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० अभयचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

स्व॰ सेठ सरदारमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू वृद्धिचन्दजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू रामलालजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू मतालचन्दजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल

मेसस ज्वालाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास फतहपुर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके भरतिया सज्जन हैं। सेठ ज्वालाप्रसादजी करीब १७ वर्ष पूर्व देशसे यहां आये थे यहां आकर आपने जूटका कारबार आरम्भ किया। बाबू ज्वालाप्रसादजीके २ भाई और हैं जिनका नाम बाबू लूनकरनजी तथा बाबू नंदलालजी हैं। बाबू ज्वालाप्रसादजीके हाथोंसे इस फर्मके कारबारको विशेष प्रोत्साहन मिला है। आपने करीब ६ वर्ष पूर्वसे कपड़ेका इम्पोर्ट व्यवसाय भी आरम्भ किया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गोगराज ज्वालाप्रसाद ४२ शिवठल्ला स्ट्रीट T. NO. 1132 B. B—यहां जूटका व्यापार, कपड़ेका इम्पोर्ट तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है काशीपुर कॉटनजीन फेक्टरीमें आपका पार्ट है जूटसीजनमें इस फर्मकी बंगाल प्रान्तमें कई ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गोगराज ज्वालाप्रसाद २ रायल एक्सचेंज प्लेस T.A. Bhartia, T.A. 358 Cal. यहां जूट बेलिंग और शीपिंगका काम होता है।

मेसर्स चेतराम रामबिलास

इस फर्मके व्यवसायका विस्तृत परिचय किरानेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है। यह फर्म कलकत्तेमें किरानेका लम्बे अरसेसे व्यापार कर रही है। इस व्यवसायके अलावा जूट बेलिंग तथा शीपिंगका काम भी होता है। आपके आफीसका पता ३३ आर्मेनियनस्ट्रीटमें है। तारका पता Geera Jami है।

मेसर्स चंदनमल कानमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिक बाबू कानमलजी लोढ़ा हैं। आपका परिवार ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके व्यवसायका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथके प्रथम भागमें अजमेरके पोर्शनमें दिया गया है। आपकी कलकत्ता फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स चंदनमल कानमल १७८ हरीसनरोड, यहां जूट बेलिंग और शीपिंगका काम होता है इस दुकानमें बाबू मूलचंदजी तथा सूरजचंदजी सेठिया वर्किंग पार्टनर है।

मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल

इस फर्मपर हेम्प और जूटशिपिंगका अच्छा व्यवसाय होता है इसका आफीस १८ मल्लिक स्ट्रीट काली गोदाममें है। विस्तृत परिचय चित्रों सहित मेन मर्चेन्टमें दिया गया है।

बाबू जयदयालजी कसेरा

बाबू बालुंदजी कसेरा

बाबू दुर्गाप्रसादजी कसेरा

श्री बाबूलालजी कसेरा
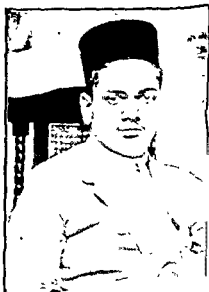
जूट प्रेस और मोती बाजार तथा संजीवन बाजार नामक दो जूटके बाजार है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें इस फर्मकी बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

कलकत्ता—जीवनमल चन्दनमल बैंगानी १ मन फंड्री रोड—यहां शेअर्स, बैङ्किग व्यापार, बिल्डिंग्स, जूट प्रेस, तथा जूटमार्केटके किरायेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनराम जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके जालान सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें संवत् १९४१ में बा० देवीबक्सजी जालान और बाबू जीवनरामजी जालानके हाथोंसे हुई। प्रारंभमें यह फर्म फेन्सी पीस गुड्स और रेशमी बानेका व्यापार करती रही। आप दोनों भाइयोंने इसकी अच्छी उन्नतिकी। आपके पश्चात् जुहारमलजी जालानने इस फर्मके कामको और भी बढ़ाया।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू जुहारमलजी और जीवनरामजीके पौत्र बाबू श्रीकृष्णजी और मक्खनलालजी तथा जुहारमलजीके पुत्र शुभकरणजी हैं।

बाबू जुहारमलजीका सम्बंध सन् १९१४ से बिड़ला ब्रदर्सके साथ हुआ। तभीसे आप बिड़ला ब्रदर्सके पीस गुड्स डिपार्टमेंटको देख रेख करते थे। आजकल आप जूट विभागका काम देखते हैं। इसमें आपका अच्छा अनुभव है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीवनराम जुहारमल १८ काली गोदाम—यहां जूट, बेंकिंग और पीस गुड्सके इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स थानसिंह करमचन्द

इस फर्मका हेड आफिस नारमल लुदिया लेन कलकत्तामें है। इसके मालिक ओसवाल (तेरापंथी जैन) समाजके सज्जन हैं। यह फर्म जूट बेलिंग तथा शीपिंगका प्रधान व्यापार करती है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान मँडावर (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके लोहिया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ दौलतरामजी संवत् १९३४में कलकत्ता आये संवत्१९४८

की सारी जमीदारी, बीकानेर स्टेट, तथा बंगालमें जलपाईगोड़ी, रंगपुर, पवना आदि स्थानोंमें अलगर विभाजित है। केवल व्यवसाय सारे कुटुम्बका साथमें चलता है।

वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान संचालक बा० सरदारमलजी, बा० वृद्धिचंदजी एवं सेठ रामलालजी हैं। आप लोगोंका बहुत बड़ा कुटुम्ब है इनमेंसे करीब १०।१२ सज्जन फर्मके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ वृद्धिचंदजी बड़े प्रतिष्ठित एवं समझदार सज्जन हैं। आपको स्टेट कौंसिल और लेजिस्लेटिव कौंसिलमें एक एक बोट देनेका अधिकार है, इसी प्रकार बंगाल कौंसिलमें भी जोतदार और रियाया (प्रजा) की ओरसे एक एक बोट देनेका अधिकार है। आप व्हाइसरायकी लेव्हीके भी सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त आप सरदार शहरकी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाके ऑनरेरी सेक्रेटरी एवं कलकत्तेके जैनश्वे० तेरापंथी विद्यालय एवं सभाके उपसभापति रह चुके हैं।

सेठ रामलालजी कलकत्ता दुकानका संचालन करते हैं, कलकत्ता दुकानकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई है। आप जूटके व्यापारकी अच्छी जानकारी रखते हैं।

इस कुटुम्बका शिक्षाकी ओर भी काफी ध्यान है सेठ वृद्धिचंदजीके पुत्र मदनचंदजी मेट्रिकतक शिक्षा पाचुके हैं। जैन तेरापंथी समाजमें यह कुटुम्ब अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

संवत् १९४६ में कलकत्तेमें सेठ चौथमलजीके द्वारा इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें हरख-चंद नथमलके साझेमें हुआ। संवत् १९६२ में सेठ चौथमलजी स्वर्गवासी हो गये और १९६३ से यह फर्म उपरोक्त नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता - मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठी १० आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां इसफर्मका हेड आफिस है तथा जूट बेलर्स, शीपर्स, और एक्सपोर्टका व्यापार तथा बैङ्किंग काम होता है।

२ कलकत्ता—चौथमल जैचंदलल गोठी १० आर्मेनियन स्ट्रीट—आड़तका काम होता है।

३ सालडांगा (जलपाई गोड़ी बंगाल) जीवनदास चौथमल—यहां इस कुटुम्बकी अलग २ जमीदारी है।

४ जलपाई गोड़ी (बंगाल) जीवनदास वरदीचंद -यहां भी जमीदारी है।

इनके अतिरिक्त सीजनके समयमें जूटकी खरीदीके लिये आपकी कई एजेंसियां स्थापित हो जाया करती हैं।
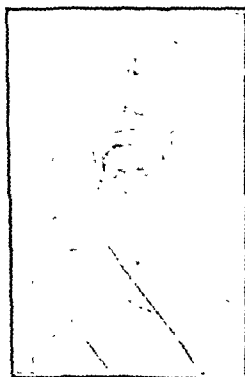
बाबू राजमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू अमरचंदलालजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू हुकुमचंदजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)
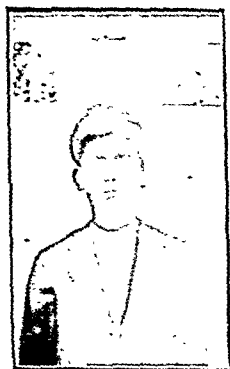
मेसर्स रामदत्त रामकिशनदास

यह फर्म कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी रामचन्द्रजी हरीरामजी गोयनकाकी है। आपके यहां प्रधानतया ४० वर्षोंसे रायली ब्रदर्सकी कपड़ेकी बेनियनशिपका काम होता है। इसके अलावा जूट वेलिंग और शीपिंग व्यवसाय भी बहुत बड़े परिमाणमें इस फर्मके द्वारा होता है। आपकी गद्दीका पता ४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट गोयनका हाउस है। फर्मके व्यवसाय आदिका विस्तृत परिचय कपड़ेके व्यवसायियोंमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स रामदत्त गंगावक्स कानोड़िया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कानोड़िया सज्जन हैं। करीब २ वर्ष पूर्वसे यह फर्म जूटका व्यवसाय करने लगी है। इसके मालिक श्रीयुत गंगावक्सजी हैं। आपका सम्बन्ध मेसर्स बिड़ला ब्रादर्संसे करीब २५-२६ साल से है। आप ही वर्तमानमें बिड़लाजीके प्रधान मुनीम हैं। बिड़ला ब्रदर्सकी उन्नतिमें आपका भी बहुत हाथ रहा है। आपकी फर्मका संचालन आपके पुत्र बा० राधाकृष्णजी करते हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदत्त गंगावक्स १८ काली गोदाम T.A. kanodia—यहां जूट तथा प्रेसका काम होता है।

कलकत्ता - आर० के० कानोड़िया १३ क्लाईव स्ट्रीट, यहां हैसियनका काम होता है। यह कार्य इस फर्मपर करीब ५ वर्षसे चालू है।

मेसर्स शिवदयाल रामजीदास बाजोरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके बाजोरिया सज्जन हैं। संवत् १८७५ के करीब सेठ शिवदयालजीके पिता सेठ रामानंदजी व्यापारके निमित्त फतहपुरसे आगरा आये थे। आप यहां साधारण व्यापार करते रहे। आपके २ पुत्र थे, सेठ शिवदयालजी तथा सेठ हरदयालजी। सेठ रामानन्दजीका स्वर्गवास होनेके पश्चात् आपके दोनों पुत्र संवत् १६०२ में आगरेसे गाजीपुर चले गये। वहां आपने नीलके बीजोंका व्यापार आरंभ किया, कुछ समयके पश्चात् आपने गोरखपुर जिलेमें जमींदारी भी

मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी

इस फर्मके मालिक मूल निवासी फतहपुर (जयपुर) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बा० जयदयालजी कसेरा हैं। आपके पिता भजनलालजी कसेरा बड़े धार्मिक पुरुष थे। जयदयालजीके दो भाई और हैं। जिनके नाम वासुदेवजी कसेरा और नन्दलालजी कसेरा हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की बा० जयदयालजी कसेराके हाथोंसे हुई। आरंभमें आप गल्लेकी दलालीका काम करते थे। आपने मेसर्स एटंसथॉसन नामक कम्पनीकी जिसका नाम पीछे जाकर हासन ब्रदर्स पड़ गया था, दलालीका काम किया इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ। कुछ समय पश्चात् हासन साहब विलायत चले गये। तब आपने उनसे काशीपुर काटन जीन फैक्टरी खरीदकी। पश्चात् हवड़ा और रिलायंस मिलकी दलाली शुरूकी जो इस समय तक चल रही है। आपके साथ आपके भाईयोंका भी व्यापारमें बहुत हाथ रहा। आप सब लोग इस समय व्यापारमें भाग लेते हैं। बा० जयदयालजीके २ पुत्र हैं। दुर्गाप्रसादजी और बाबूलालजी। दुर्गाप्रसादजी व्यवसायमें भाग लेते हैं तथा बाबूलालजी पढ़ते हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी P 14 सेंट्रल एवेन्यू, नार्थ—इस फर्म पर जूट बेलर्स शीपर्स तथा डीलर्सका काम होता है। यह फर्म शॉ वालेस कम्पनी की शुगर डि० की बेनियन और ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त अमेरिकन इन्सुरंस कम्पनी लि० और मोटर युनीयन इन्स्युरंस कम्पनी लि०के मेरीन डि० की एजंसीका काम होता है। यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवनारायन सुरोदिया एण्ड को० सेंट्रल एवेन्यू—यहां शेअरका काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

कलकत्ता—काशीपुर कॉटनजीन फेक्टरी—इसमें आपका साझा है।

कलकत्ता—मेसर्स दलीराम प्यारेलाल सेन्ट्रल एवेन्यू—यहां कपड़े तथा शक्करकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जीवनमल चन्दनमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थके प्रथमभागके राजपूताना विभागमें पृष्ठ १६७ में दिया गया है। कलकत्तेमें इस फर्मके विक्टोरिया जूटप्रेस तथा सूरज जूटप्रेस नामक दो
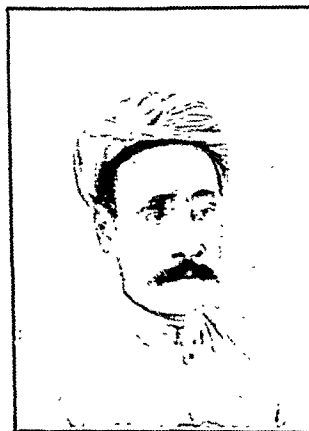
वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स शिवदयाल रामजीदास १३० मछुआबाजार कलकत्ता (T. A. Hemshiper T No 1969 B. B.—यहां जूट बेलिंग, शीपिंग तथा सावे घासका व्यापार होता है। यह फर्म टीटागढ़ पेपरमिल्सको घास सप्लाई करनेकी सोल एजंट हैं इसके अतिरिक्त यहां बैङ्किग व्यापार व मारबल टाइल्सका इम्पोर्ट भी होता है।

(२) मेसर्स शिवदयाल रामजीदास ५४ राधाबाजार कलकत्ता—यहां मारबल टाइल्सकी बिक्रीका काम होता है।

(३) शिव जूटप्रेस काशीपुर कलकत्ता—यहां जूटकी पक्की गाठें बांधनेका काम होता है।

इसके अतिरिक्त शिवदयाल रामजीदासके नामसे नीचे लिखे स्थानोंपर "सावे घास" की खरीदीका काम होता है।

(१) साहबगंज (२) मिरजाचौकी (बिहार) (३) जौनपुर

(४) नगीना (बिजनौर) (५) कोटद्वार (गढ़वाल) (६) ज्वालापुर

(७) सहारनपुर (८) तुलसीपुर (गोंडा) (९) नेपालगंज (१०) बहराइच

मेसर्स सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्मके व्यापारका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके पृष्ट २३६ में हम दे चुके हैं। यह फर्म जूट बेलिंग तथा शीपिंगका व्यवसाय भी करती है। इसके ऑफिस का पता ३० क्लाइव स्ट्रीट है। तारका पता Kashaliwal है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

यह फर्म जूट मुकामोंमें जूट खरीदती है, बेलिंग करने तथा एक्सपोर्ट करनेका काम भी करती है। इसकी हनुमान जूट प्रेस और मित्र नामक स्वतंत्र प्रेस और मिल हैं। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके पृष्ठ२५१ में दिया गया है। इसके ऑफिस कापता ६१ हरीसन रोड है। इस फर्मने बहुत छोटे रूपमें कार्य आरम्भ कर अपने जूट व्यवसाय में अच्छी उन्नति प्राप्त की है। फर्मके संचालकोंका जूट व्यापार की ओर अच्छा लक्ष्य है।

में एक सज्जनके साझेमें आपने गल्लेकी फर्म स्थापित की। पश्चात् संवत् १९५८ में आपने अलग होकर दौलतराम दौलतरामके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय प्रारंभ किया। कुछ समय पश्चात् श्री रावतमलजीने भी अपना साझा अलग कर लिया। तब आपने दौलतराम रावतमलके नामसे व्यापार शुरू किया। इसमें आपने रतनगढ़ निवासी रामचन्द्रदास रामविलास भुवालकाका साझा कर लिया।

वर्तमानमें इसके संचालक सेठ दौलतरामजी एवम् सेठ रामविलासजीके कुटुम्बी हैं। इसके प्रबंधका भार बा० नंदलालजी रावतमलजी, बजरंगलालजी, रामेश्वरलालजी तथा मानमलजीपर है।

इस फर्मने संवत् १९६० से जूटका व्यापार भी प्रारंभ किया और इस ओर व्यापारको अच्छा बढ़ाया। तथा सन् १९२३ से यह फर्म डायरेक्ट विलायत जूट आदिका भी एक्सपोर्ट करने लगी। इस समय इसका प्रधान व्यापार जूट और गल्लेका है। बंगाल तथा बिहारमें आपकी कई स्थानोंपर खरीदीके लिये एजेंसियां हैं। कलकत्तेसे गल्लेका एक्सपोर्ट करने वाली फर्मोंमें इसका स्थान भी बहुत ऊंचा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स दौलतराम रावतमल १७८ हरिसन रोड T. A. Gullhsud T. NO 3172 B. B.—यहां जूट, गल्लेकी खरीदी और एक्सपोर्टका काम होता है। यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

कहलगांव (भागलपुर)—मेसर्स दौलतराम रावतमल—गल्लेका काम होता है।

मेसर्स पी० जी० एण्ड० डब्लू० शाह

इस फर्मके मालिक बशीरहाटके समीप धान्यकुड़िया गांवके रहनेवाले हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू पतितचन्द्रजी साहुने बाबू गोविन्द चन्द्र गुप्तके साथ इस फर्मकी स्थापना सन् १८६२ ई० में कलकत्तेमें की थी। इस फर्मपर घी, आटा और गुड़का काम आरम्भ किया गया और बादको बीज और जूटका व्यापार भी होने लगा। सन् १८६५ ई० में पतित बाबूके दामाद बाबू श्यामाचरन वल्लभ भी इस फर्ममें हिस्सेदार हुए और दोनों संस्थापकोंके स्वर्गवासके बाद आपहीने फर्मके व्यापारको संभाला और अपनी योग्यता और कार्यचातुरीसे व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया आपने जूटके व्यवसायमें अच्छा अनुभव प्राप्त किया और आपका चलाया हुआ 'वल्लभ' मार्का आज भी जूट संसारमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। आपने सन् १८९१ ई० में काशीपुरका स्टील प्रेस खरीदा। कुछ ही समय बाद यह प्रेस रोज २ हजार गांठ दैनिक बांधने लग गया।

बा० डालचंदजी—आप जैन समाजमें बहुत प्रतिष्ठा संपन्न महानुभाव होगये हैं। आप पुराने विचारोंके सज्जन थे। आपका कई मन्दिरोंके जीर्णोद्धार एवम जैन विद्वानोंके प्रचारमें बहुत धन व्यय हुआ है। जिस समय जूट बेलर्स असोसिएशनकी स्थापना हुई उस समय सर्व प्रथम आपही उसके सभापति नियुक्त हुए थे। स्थानीय चित्तरंजन सेवासदनमें आपकी ओरसे १००००) रु० प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त हिन्दू युनिवर्सिटी आदि कई संस्थाओंको भी आपके द्वारा अच्छी सहायता प्रदान की गई थी। आपके द्वारा आपके रिश्तेदारोंको भी काफी सहायता दी गई थी। आप मृत्यु समय ३० लाख रुपैया अपने रिश्तेदारोंमें वितरण कर गये। कहनेका मतलब यह है कि आप बड़े सज्जन एवम उदार महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ ई०में होगया।

बा० बहादुरसिंहजी—आप सेठ डालचंदजीके एकलौते पुत्र हैं। इस समय आपही उत्तराधिकारी हैं आपका स्वभाव सादा और मिलनसार है। आपको पुरानी कारीगरीका बेहद शौक है। आपने अपने यहां पुरानी कारीगरीकी कई ऐतिहासिक वस्तुओंका बहुमूल्य संग्रह कर रखा है। जैसे सिराजुद्दौलाका सिर पेंच, बाजू आदि। आप बम्बईमें होने वाली जैन कान्फ्रेंसके सभापति रह चुके हैं। मुर्शिदाबादके आप बहुत बड़े जमींदार माने जाते हैं। आपकी बम्बई, मद्रास, बंगलोर आदि प्रांतोंमें अभ्रक, कोयला आदिकी कई खानें हैं। बम्बईमें आपकी एक एल्युमिनियमकी भी खदान है। कहनेका मतलब यह है कि यह खानदान बहुत पुराना प्रतिष्ठित एवम सम्पत्तिशाली है।

सेठ भैरुदानजी इसरचंदजी आपलोग,गंगाशहर (बीकानेर) के निवासी तथा ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय महानुभाव हैं। आप दोनों ही भाई हैं। मेसर्स हरिसिंह निहालचंदकी फर्ममें आपका साझा है। आपका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरके पोर्शनमें दिया गया है। वर्तमानमें उपरोक्त फर्मका व्यापार इस प्रकार है -

कलकत्ता—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द नं० १ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट - यहां इस फर्मका हेड आफिस है। यहां जूट बेलिंग तथा शिपिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है। बैङ्किग काम भी यहां होता है।

सिराजगंज—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द	इन सब फर्मों पर जूटका व्यापार तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है।
अजीमगंज—मेसर्स निहालचन्द डालचन्द	
फारबिसगंज—हरिसिंह निहालचन्द	
मिरसु बाड़ी—" "	
मोरंगा मारी (रंगपुर)—भैरोंदान इसरचन्द	

इनके अतिरिक्त बंगाल प्रान्तमें आपकी कई शाखाएं और भी हैं।

रायबहादुर रामजीदासजी बाजोरिया
(शिवदत्तराय रामजीदास)

बाबू [illegible]दासजी बाजोरिया
(शिवदत्तराय रामजीदास)

बाबू बैजनाथजी

मेसर्स चेतनदास हजारीमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान श्रीडूंगरगढ़में है। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके डागा गौत्रीय सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना संवत् १६५० में हुई। इसकी स्थापना नारायणचंदजी डागाने तेजमल चेतनदासके नामसे की थी। इसकी विशेष उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप श्रीयुत चेतनदासजीके जेष्ठ पुत्र हैं। श्रीचेतनदासजीका स्वर्गवास संवत् १६६० में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक नारायणचंदजी, पूरणचन्दजी, हजारीमलजी, और बालचंदजी हैं।

आपकी ओरसे श्रीडूंगरगढ़ स्टेशनपर एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। डूंगरगढ़ तथा बाहर गांवोंमें आपकी ओरसे कई कुए बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नालवाड़ी टेपा (रंगपुर)—मेसर्स चेतनदास नारायणचंद (हे० आ०) यहां बैंकिंग, जूट, तमाखू तथा जमींदारीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चेतनदास हजारीमल २ राजा उडमंट स्ट्रीट T. NO 4281 cal यहां जूट और तमाखूका व्यापार होता है।

हल्दीबाड़ी (कूच बिहार)—चेतनदास पूरणचन्द यहां जूट, और तमाखूका काम होता है।

इसके अतिरिक्त लालमनीरहाट, टीस्टा, गोप भंडार, मिठी गौड़ी, प्यारपुर, [illegible], [illegible] हट आदि स्थानोंपर आपकी दुकानें हैं इन सबपर जूट और तमाखूका काम होता है।

मेसर्स चम्पालाल कोठारी

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ मूलचन्दजी और मदनचन्दजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६० में मेसर्स हजारीमल [illegible]के नामसे दिया गया है। यहां इस फर्मका आफिस १३ नारमल लोहिया लेनमें है। यह फर्म यहां जूटका व्यापार एवं [illegible] विदेशोंको एक्सपोर्ट करती है।

मेसर्स छगनमल मुलतानमल

इस फर्मका हेड आफिस इस्लामपुर (बंगाल) है। यहां यह फर्म ७।२ [illegible] लेनमें

खरीदी संवत् १६१२ में सेठ शिवदयालजी अपने व्यापारको बढ़ानेके निमित्त कलकत्ता आये; तथा यहां अपनी शाखा स्थापित की और संवत् १६२८ में आपने अपना हेड आफिस यहींपर बनाया।

सेठ शिवदयालजी व्यापारिक कामोंमें बड़े साहसी एवं मेधावी सज्जन थे। आपने इस फर्मके व्यापारको आरम्भ किया, तथा उसे अच्छी स्थितिमें पहुंचाया। संवत् १६५० में आपका ध्यान "सावाघास" जिसका कि कागज बनता है, उसके व्यापारकी ओर गया। इस व्यापारमें आपने बहुत अधिक उन्नतिकी और साहब गंज आदि स्थानोंमें अपनी कई शाखाएं स्थापित कीं। आपका देहावसान संवत् १६५२ में बद्रीनारायणकी यात्रामें केदारनाथ नामक तीर्थमें हुआ, आपने अपनी यात्राके समयमें हरिद्वारमें अन्नक्षेत्रकी स्थापना की, जहां २०।२५ मनुष्य प्रतिदिन भोजन पाते हैं। आपके ३ पुत्र हुए, सेठ गौरीदत्तजी, सेठ जगन्नाथजी तथा सेठ रामजीदासजी। इनमेंसे बाबू गौरीदत्तजीका बाल्यकालहीमें देहावसान हो गया। पश्चात् दोनो भाई शिवदयाल सूरजमलके नामसे व्यापार करते रहे। संवत् १६५२ में आप लोगोंने अपनी गोरखपुरकी जमीदारी को करीब २॥ लाख रुपयेमें बेंच दिया। उसी समयमें आपने कलकत्तेकी म्युनिसिपेल्टीकी सड़कें बनवाने के लिये पत्थरका कंट्राक्ट लिया, यह काम आप १६७० तक करते रहे।

संवत् १६५७ में नेपाल गवर्नमेंटसे आपने नेपालकी तराईके पासका कंट्राक्ट लिया, तथा उस तरफ अपनी शाखाएँ स्थापित की। उसी साल आपने जूटबेलर्सका काम आरंभ किया और कई भागीदारोंके साथमें सलकियामें "इम्पीरियल प्रेस" की स्थापना की। बाबू जगन्नाथ प्रसादजीका देहावसान हो जानेके बाद संवत् १६७० में आप दोनोंका कारबार अलग २ हो गया। तबसे सेठ रामजीदासजी "मेसर्स शिवदयाल रामजीदास" के नामसे व्यवसाय करते हैं।

सेठ रामजीदासजीका अग्रवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्ते में प्रसिद्ध विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पतालकी संवत् १६७६ में स्थापना हुई। अभीतक आपने उसमें करीब २॥ लाख रुपयोंका दान किया है। मारवाड़ी एसोसियेशनके आप सभापति रह चुके हैं। एवं अग्रवाल पंचायतकी कलकत्ता ब्रांचके वर्तमानमें आप सभापति हैं। कलकत्तेके विशुद्धानन्द विद्यालयको आर्थिक सहायता दिलानेमें आपने अच्छा परिश्रम उठाया है। सन् १६२४ में आपको रा० ब० की पदवी प्राप्त हुई है। वर्तमानमें आपके ४ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू बलदेवदासजी, बाबू कंसनाथजी, बाबू केदारनाथजी तथा बाबू रामनाथजी हैं। आप चारों ही व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपके बड़े पुत्र बाबू बलदेवदासजी अ० भा० अग्रवाल पंचायतके प्रधान मंत्री तथा बाद कम्पनीकी जूट मिलके डायरेक्टर हैं।

मेसर्स सूरजमल आसकरण

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता ही में मेसर्स जीवनमल चन्दनमलके नामसे है। इस फर्मपर यहां जूट बेलर्सका व्यापार होता है। इसका आफिस १ गन फाउंड्री रोड में है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १९५ में दिया गया है। इस फर्मकी यहां चन्दनमल चम्पालालके नामसे एक शाखा और भी है, यहां भी जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स सोनीराम जीतमल

इस फर्मका हेड आफिस नागपुर है। इसका प्रधान व्यापार कपड़ेका है। मेसर्स टाटा-संसकी मिलोंका माल बेचनेकी इस फर्मके पास एजंसी है। इसके अतिरिक्त हेसियन तथा जूट एक्स-पोर्ट करनेका काम भी यहां होता है। इसका हेसियन जूट एक्सपोर्ट आफिस फेनिंग स्ट्रीट में है। विशेष परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें इसी नामसे चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स हरगोविंदराय मथुरादास

इस फर्मपर प्रधान व्यापार हेसियन तथा गनीका होता है। जूट बेलिंग तथा शीपिंगका काम भी होता है। इस फर्मकी गद्दीका पता ५० कॉटन स्ट्रीट है। विशेष परिचय हेसियन तथा गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द

इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक मुर्शिदाबादके निवासी सेठ हरिसिंहजी थे। आप ओसवाल श्वेताम्बर संप्रदायके जैन धर्मावलम्बीय सज्जन थे। जबसे यह फर्म स्थापित हुई है तभीसे इस पर उपरोक्त नामसे ही कारबार होता चला आ रहा है। संवत् १९६३ तक यह फर्म अपना कार्य करती रही पश्चात् गंगाशहरके निवासी सेठ भैरुदानजी ईसर चन्दजी चोपड़ाका इसमें साझा होगया। इसी समयसे इस फर्मकी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी।

सेठ हरिसिंहजीके पश्चात् इस फर्मके व्यापारका संचालन सेठ निहालचंदजीने संभाला। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री सेठ डालचन्दजीने फर्मके व्यापारका संचालन किया। इस समय इसके संचालक भैरुदानजी तथा सेठ ईसरचन्दजी भी होगये थे। आप तीनों सज्जनोंकी व्यापार कुशलताकाही कारण है कि आज यह फर्म यहांके जूटके व्यवसायियोंमें बहुत उंचा स्थान रखती है।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ जुगुलकिशोर सदासुखका कटला—जूट और चावलका व्यापार, तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता (टालीगंज) मेसर्स रामेश्वर रायरतन—इस नामसे आपकी ३ गद्दस फेक्टरी हैं।

पोचागढ़ (जलपाई गौड़ी) बीजराज जगन्नाथ—जमींदारी, कपड़ेका व्यापार और व्याजका काम होता है।

मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सुजानगढ़में है। आप ओसवाल समाजके सिंघी गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पहिले सेठ ज्ञानचन्दजी सिंघी कलकत्ता आये थे। और मेसस रतनचन्द शोभाचन्दके यहां सर्व प्रथम आपने सर्विसकी। सर्विसके साथ २ आपका इस फर्ममें साझा भी हो गया था। करीब ४५ वर्षतक आप इस फर्मके साथ २ कारबार करते रहे। संवत १९५० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके २ पुत्र हुए, बाबू जीतमलजी एवं बाबू प्रेमचन्दजी। संवत् १९५७ तक आप दोनों भाई भी रतनलाल शोभाचन्द फर्मके साथ साथ काम करते रहे। उसके पश्चात् उपरोक्त नामसे आप लोगोंने अपना स्वतंत्र कारबार शुरु किया, अपनी फर्मके कारबारको आप दोनों भाइयोंने अच्छी तरक्की दी, संवत १९६४ में बाबू जीतमलजीका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें बाबू प्रेमचन्दजी तथा बाबू जीतमलजीके चार पुत्र बाबू मालचन्दजी, बाबू अमीचन्दजी बाबू हुलासचन्दजी और बाबू मोहनचन्दजी हैं। आप सब व्यापारमें भाग लेते हैं। आप लोगोंकी ओरसे जमालपुरमें जीतमल प्रेमचन्दके नामसे एक पक्कीसड़क बनी हुई है, वहांके स्कूलमें आपने बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया है इसके अतिरिक्त सुजानगढ़के ओसवाल विद्यालयमें भी आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गई है। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द १०५ ओल्ड चायना बाजार यहां जूटका अच्छा बिजनेस होता है। यह फर्म मिलोंको जूट सप्लाई करती है।

जमालपुर—मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द T.A. Sinhgi—यहां जूटकी खरीदी होती है।

सिंगमारी (मैमनसिंह) जीतमल प्रेमचन्द—T. A. Singhi जूटकी खरीदीका व्यापार होता है।

ईसरगंज—जीतमल प्रेमचन्द—यहां भी जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संस

यह फर्म बैङ्किग तथा चांदी सोनेके व्यापारके अतिरिक्त जूट बेलिंग और शीपिंगका व्यवसाय भी करती है। इस फर्मका विस्तृत परिचय बैंकर्समें दिया गया है। कलकत्तेकी नामी मारवाड़ी व्यापारी फर्मोंमें यह भी एक है। इसकी गद्दीका पता १७८ हरिसन रोड है।

मेसर्स हीरालाल अग्रवाला एण्ड कम्पनी

इस फर्मका प्रधान व्यापार चपड़ेका है। सन् १९२४ से इस फर्मने जूट बेलिंग तथा एक्सपोर्टका व्यापार भी शुरू किया है। इसके ऑफिसका पता ४ मिशन रो कलकत्ता है, तारका पता Shellak है।

जूट मरचेंट्स

मेसर्स आसकरण भूतोड़िया

इस फर्मका हेड आफिस १२४ हरिसन रोड है। इसके वर्तमान संचालक बाबू आसकरणजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज १४२ में दिया गया गया है। यहांपर यह फर्म जूट, हुण्डी चिट्ठी और सराफीका काम करती है। तारका पता "Bhutodia" है।

मेसर्स कस्तूरचन्द भगवानदास

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चौधरी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ६ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म मेसर्स किशनदयाल भगवानदास के नामसे संवत् १९५१ से काम कर रही थी। इसके भी पहले इसका स्थापन डिब्रूगढ़में हुआ था। इस फर्मपर आरंभसे ही चालानीका काम होता रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक भगवानदासजी तथा मानमलजी हैं। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपने ही इस फर्मपर जूटका व्यापार प्रारंभ किया। तथा हालहीमें श्रीगंगेरा जूट मिल नामक एक छोटे जूट मिलकी स्थापनाकी है। इस मिलके सफलता पानेपर छोटी पूंजीसे जूट मिल चालू करनेका अच्छा मार्ग पैदा हो जायगा।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ जुगुलकिशोर सदासुखका कटला—जूट और चावलका व्यापार, तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता (टालीगंज) मेसर्स रामेश्वर रायरतन—इस नामसे आपकी ३ राइस फेक्टरी हैं।

पोचागढ़ (जलपाई गौड़ी) बीजराज जगन्नाथ—जमींदारी, कपड़ेका व्यापार और व्याजका काम होता है।

मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सुजानगढ़में है। आप ओसवाल समाजके सिंघी गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पहिले सेठ ज्ञानचन्दजी सिंघी कलकत्ता आये थे। और मेसस रतनचन्द शोभाचन्दके यहां सर्व प्रथम आपने सर्विसकी। सर्विसके साथ २ आपका इस फर्ममें साझा भी हो गया था। करीब ४५ वर्षतक आप इस फर्मके साथ २ कारबार करते रहे। संवत १६५० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके २ पुत्र हुए, बाबू जीतमलजी एवं बाबू प्रेमचन्दजी। संवत् १६५७ तक आप दोनों भाई भी रतनलाल शोभाचन्द फर्मके साथ साथ काम करते रहे। उसके पश्चात् उपरोक्त नामसे आप लोगोंने अपना स्वतंत्र कारबार शुरु किया, अपनी फर्मके कारबारको आप दोनों भाइयोंने अच्छी तरक्की दी, संवत १६६४ में बाबू जीतमलजीका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें बाबू प्रेमचन्दजी तथा बाबू जीतमलजीके चार पुत्र बाबू मालचन्दजी, बाबू अमीचन्दजी बाबू हुलासचन्दजी और बाबू मीलनचन्दजी हैं। आप सब व्यापारमें भाग लेते हैं। आप लोगोंकी ओरसे जमालपुरमें जीतमल प्रेमचन्दके नामसे एक पक्की सड़क बनी हुई है, वहांके स्कूलमें आपने बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया है इसके अतिरिक्त सुजानगढ़के ओसवाल विद्यालयमें भी आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गई है। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द १०५ ओल्ड चायना बाजार यहां जूटका अच्छा बिजनेस होता है। यह फर्म मिलोंको जूट सप्लाई करती है।

जमालपुर—मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द T.A. Sinhgi—यहां जूटकी खरीदी होती है।

भिमावाड़ी (मैमनसिंह) जीतमल प्रेमचन्द—T. A. Singhi जूटकी खरीदीका व्यापार होता है।

ईसरगंज—जीतमल प्रेमचन्द—यहां भी जूटका व्यापार होता है।

बा० जैचन्दलालजी बेद (उमराव जैचंदलाल)

बा० बींजराजजी पूगलिया (बींजराज ईसरलाल)

बा० बींजराजजी बेद (उमराव जैचंदलाल)

बा० मगराजजी पूगलिया (बींजराज जैचन्दलाल)

बा० प्रेमचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० अमीचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० मानकचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० धनराजजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

हैं। आप सब लोग व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके आठवें पुत्र बा० हंसराजजीका १९८२ के हमें स्वर्गवास होगया है।

इस फर्मके मुख्य कार्यकर्त्ता बा० बीजराजजी हैं। आपका अंग्रेजी फर्मोंके साथ विशेष परिचय है। यह फर्म मेसर्स लेडलो जूट कम्पनी लि०, मेसर्स जे० सी० डफस एण्ड कम्पनी लिमिटेड आदि कई अंग्रेज फर्मोंके साथ जूट बेलिंगका व्यापार करती है। मेसर्स जे० सी० डफस कम्पनीकी भी जूट खरीदी प्रायः आपहीके यहां होती है।

इस फर्मने संवत् १९७६ में कपड़ेका व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९८३ से यह फर्म मेसर्स केटूल बुल बुल्न एण्ड कंपनी लिमिटेड (Kette well bullen & Co Ltd) के पीस गुड्स डिपार्टमेंटकी सोल बेनियन हुई। हालहीमें इस फर्मने देशी सूतके व्यापारको भी प्रारंभ किया है। इस समय यह फर्म मेसर्स बावरिया काटन मिल कम्पनी लिमिटेड, दी हनवार मिल्स लिमिटेड, और दी स्पूरिंग मिल कम्पनी लिमिटेडके सूतकी सोल बेनियन और ब्रोकर है।

इस फर्मके संचालक शिक्षित; एवम मिलनसार व्यक्ति हैं। राजलदेसरमें स्टेट स्कूलके स्थापनमें आपलोगोंने अच्छा परिश्रम किया तथा आर्थिक सहायता भी प्रदानकी। सेठ बीजराजजी, राजलदेसरकी म्युनिसिपेल्टीके वाइस चेअरमैन हैं। बीकानेर स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान है। आप यहांकी हाईकोर्टके जूरी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स भेमराज भैंचन्दलाल १४२ काटन स्ट्रीट T.A. Capable T.No 1258 B.B. यहां इस फर्मका हे०आ०है। यहां जूट,बेंकिंग,पीसगुड्स एवं देशी सूतका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स भेमराज भैंचन्दलाल ११४ बाग स्ट्रीट—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका थोक तथा खुदरा व्यापार होता है।

कलकत्ता - मेसर्स भेमराज भैंचन्दलाल १४३—१ दरमाहट्टा T. No. 1259—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—२१ स्ट्रांड रोड—यहां केटलवुलके पीसगुड्स डिपार्टमेंट और तीनों सूतकी मिलोंकी बेनियनशिपकी आफिस है।

सिराजगंज—मेसर्स बीजराज मिश्रीलाल—यहां जूट और चावलका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

राजलदेसर (राजधानी) मेसर्स भैंराज भैंचन्दलाल—यहां जमींदारी, बैंकिंग, जूट एवम गल्लेका काम होता है।

बा० प्रेमचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० अमीचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द
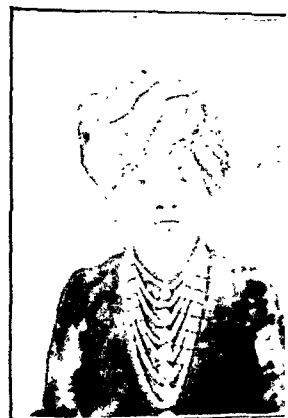
मेसर्स मेघराज तनसुखदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। यह फर्म मेसर्स खड्‌गसिंह लच्छीरामके फर्ममेंसे निकली हुई है। जिसको स्थापना कलकत्तेमें संवत् १९०५ में हुई थी यह फर्म लच्छीरामजीके भाई मेघराजजी बैदके पुत्र श्री तनसुखदासजीकी है। पहले संवत् १९५३ मे यह फर्म मेघराज छोगमलके नामसे व्यापार करती रही। पश्चात् संवत् १९७०से उपरोक्त नामसे यह व्यापार कररही है।

वर्तमानमें इसके मालिक सेठ तनसुखदासजी तथा आपके पुत्र बा० भूरामलजी हैं। आप दोनोंही सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। भूरामलजी, उत्साही एवं व्यापार कुशल सज्जन हैं। राजलदेसर स्टेशन पर आपकी फेमिली की ओरसे धर्मशाला बनी हुई है। श्रीयुत भूरामलजीके तीन पुत्र हैं। राजलदेसरमें आपकी बहुत अच्छी इमारतें तथा नोहरे बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज तनसुखदास १९ सेनागो स्ट्रीट—यहां बैंकिंग जूट तथा कमीशन एजेंसी का काम होता है।

चांपाई-नवाबगंज—मेसर्स तनसुखदास भूरामल - यहां आपकी इमारतें बनी हुई हैं। तथा जूट कपड़ा बैंकिंग और गल्लेका व्यापार होता है।

जूटकी मौसिममें आपकी टेम्परेरी शाखाएं और खुल जाया करती हैं।

मेसर्स मेघराज छोगमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके बैद सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ८० वर्ष हुए। सर्व प्रथम इसकी स्थापना सेठ लच्छीरामजीने की। इस फर्मपर पहले मेसर्स खड्‌गसिंह लच्छीराम नाम पड़ता था। हिस्सारसी हो जानेसे अब उपरोक्त नामसे व्यापार होता है। सं० १९५३ सेही आप इस नामसे व्यापार करते हैं

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ छोगमलजीके पुत्र श्री० मीनालालजी तथा कालूरामजी हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज छोगमल १९ नारमल लोहिया लेन—यहां जूट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल बैद

इस फर्मके संचालक गजलदेसर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापंथी जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। संवत् १९०५ में सेठ जेसराजजी तथा आपके बड़े भ्राता सेठ लच्छीरामजीके हाथोंसे मेसर्स खड़गसिंह लच्छीरामके नामसे फर्म स्थापित हुआ था। इस फर्मकी विशेष उन्नति आप दोनोंहीके हाथोंसे हुई। शुरूसे इस फर्मपर बैंकिंग तथा चलतीका काम होता था। संवत् १९९० में सेठ जेसराजजीका स्वर्गवास होगया। आपके पुत्र सेठ जैचन्दलालजीका जन्म सं० १९१२ में हुआ। छोटी वयसे ही आप दुकानका काम देखने लग गये। संवत् १९३९ तक इस फर्म पर इसी नामसे व्यापार होता रहा पश्चात् सेठ जैचन्दलालजीने अपना व्यवसाय अलग कर लिया। तथा मेसर्स जेसराज जैचन्दलालके नामसे व्यापार करना शुरू किया। इसी समय नाटोर (राजशाही) में आपने अपनी एक ब्रांच स्थापित की। इस पर इस समय बैंकिंग तथा चलतीका काम होता है। संवत् १९५० में आपने अपनी एक और शाखा दिनाजपुरमें मेसर्स बीजराज सिंचयालालके नामसे चांदी, सोना, बैंकिंग, तथा धान चावलके व्यापारके लिये खोली। संवत् १९५९ में आपने रामगढ़ी नामक स्थान पर जूटके व्यापारके लिये एक और शाखा स्थापित की। तथा इसी समयसे उपरोक्त सब फर्मों पर जूटका व्यापार शुरू किया।

कलकत्ता फर्म पर संवत् १९६५ में आपने जूटकी पक्की गांठोंके बेलिंगका भी काम प्रारंभ किया। जिसमें आपका मार्का जेचंद एम० शुरू हुआ। आज कल इस मार्केको मेसर्स जे० सी० डफस एण्ड कम्पनी लिमिटेड पेक करती है। संवत् १९६७ में आपने जेपुरहाट एवम जमाल गंज नामक स्थानों पर हीरालाल चांदमलके नामसे जूटके एवम धान चावलके व्यापारके लिये दो और शाखाएं स्थापित कीं।

उपरोक्त प्रायः सभी स्थानों पर आपकी स्थायी सम्पत्ति मकान, गोदाम आदि बने हुए हैं। तथा सोना तोलाके प स ल ल का तुलपुरके पांच मौजेकी जमींदारी भी आपकी है। यह सब सेठ जैचन्दलालजी द्वारा हुई है। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवम् मेधावी व्यक्ति थे। आपने गजलदेसरसे २ मील की दूरी पर राजासर नामक स्थान पर एक धर्मशाला तथा कुए बनवाये हैं। बीकानेर दरबारमें आपका अच्छा सम्मान था। आपको वहांसे छड़ी चपरास भी बख्शी गयी थी।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जयचंदलालजीके सात पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बा० बीजराजजी, सिंचयालालजी, हीरालालजी, चांदमलजी, नथराजजी, इन्द्रराजमलजी एवम चम्पालालजी

दुलीचन्दजी, बाबू छोगमलजी, बाबू भेरोंदानजी, बाबू सुकनमलजी, बाबू रेखचन्दजी, बाबू सिखरचंदजी तथा बाबू हीराचन्दजी हैं। सेठ मेघराजजीके पुत्र बाबू सुगनमलजी, रूपचन्दजी तथा अमरचन्दजी हैं। आप सब लोग व्यवसायमें भाग लेते हैं। आप लोगोंकी फर्मपर श्रीआदूरामजी चौधा लाडनू निवासी करीब २६ वर्षोंसे, बाबू हरकचन्दजी दूगड़ २६ वर्षोंसे तथा बाबू जुहारमलजी दूगड़ ४० वर्षोंसे मुनीमातका काम कर रहे हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पीलमारी (बंगाल)—मेसर्स लालचन्द अमानमल (हेड आफिस)—यहां जूट तथा कपड़ेका व्यापार और सराफी लेन देन होता है।

पीलमारी—मेघराज दुलीचंद—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लालचन्द अमानमल ४ राजा उडमंड स्ट्रीट T. No. 2871 Cal, T. A. Gogolawbasi—यहां जूटका व्यापार, कपड़ेकी चलानीका काम तथा सराफी लेनदेन होता है।

मागेरघर (पूर्णी) लालचन्द अमानमल—यहां जूटका व्यापार होता है।

मैनामगंज (सिलहट) लालचन्द अमानमल—यहां जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मका हेड आफिस डिब्रूगढ़ (आसाम) में है। यहां यह फर्म कई वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके डिब्रूगढ़ पोर्शनमें दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, बैंकिंग और कमीशनका काम करती है। इसका आफिस ४ दहीहट्टामें है। तारका पता है "Hakum."

मेसर्स शंभूराम पूनमचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० नेमीचन्दजी बेद हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६८ में दिया गया है। यहां इसका आफिस ४२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यह फर्म यहां जूट तथा कमीशन एजन्सीका व्यापार करती है।

गमगढ़ी (गजराही) मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल—यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।
जयपुर हाट (बोगरा) हीरालाल चांदमल—यहां जूट एवं चावलका व्यापार होता है।
जमालगंज (बोगरा) मेसर्स हीरालाल चांदमल—यहां जूट एवं चावलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त मौसिमके समय आपकी ओर भी शाखाएं खुल जाया करती हैं। लाडनू, [मारवाड़] बेड़ा [पबना] आदि स्थानों पर आपकी अच्छी इमारतें बनी हुई हैं सोना तोला [बोगरा] के पास आपकी जमीदारी भी है।

मेसर्स तिलोकचंद डायमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बिदासर (बीकानेर) है। आप ओसवाल तेरापंथी जैन समाजके दूगड़ सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ जेसराजजीने गोहाटीमें किया था। सेठ जेसराजजीके दूसरे भागीदार बाबू चुन्नीलालजी थे, इस फर्मके व्यापारको बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई।

सेठ जेसराजजीके दो पुत्र बाबू तिलोकचंदजी एवं हाकमलजी हुए। तथा बा० चुन्नीलालजी के पुत्र बाबू रतनचंदजी, बाबू फतेचंदजी एवं बाबू तनसुखदासजी हैं। इन सज्जनोंमेंसे बाबू तिलोकचंदजी, बाबू हाकमलजी एवं बाबू धनेचन्दजीका कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ तिलोकचन्दजीके पुत्र लाभचन्दजी, सेठ हाकचन्दजीके पुत्र जेठमलजी, सूबचन्दजी, डायमलजी तथा सेठ धनेचन्दजीके पुत्र मोतीलालजी एवं मूलचन्दजी हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गोहाटी—मेसर्स जेसराज तिलोकचन्द लाभचन्द फांसी बाजार T. A. Dugargi—यहां सरसों पाट गल्ला और किरानेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तिलोकचन्द डायमल ७।१ बाबूलाल लेन T. A. Sinciable, Phone No 546 B.B.—यहां धोतीका इम्पोर्ट, पाटका व्यापार एवं रुपयेकी लेन देनका काम होता है।

कलकत्ता—तिलोकचन्द डायमल मरसा स्ट्रीट—यहां धोतीका व्यापार होता है।

लाल पाटिया (आसाम) जेसराज तिलोकचन्द लाभचन्द—पाट एवं सरसोंकी खरीदीका व्यापार होता है।

मेसर्स नौरंगराय नागरमल

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रंथमें बंगाल विभागके पेज नं० ६१ में दिया गया है।

मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान एद्लावादमें था मगर करीब ४३ वर्षसे आप लोग सरदार शहरमें रहते हैं। आप माहेश्वरी जातिके करनानी सज्जन हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व इस फर्मकी स्थापना दार्जिलिंगमें हुई थी। इसके स्थापक सेठ होगराजजी थे। आपका स्वर्गवास होगया है आपके पश्चात् इस फर्मकी आपके पुत्र श्रीकिशनदासजीने उन्नति की। आपने करीब ४० वर्ष पहले कलकत्तेमें अपनी एक ब्रांच खोली। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। आपके इस समय २ पुत्र हैं। श्रीयुत कन्हैयालालजी तथा श्रीयुत जगन्नाथजी। आप दोनों ही व्यापार करते हैं। श्रीयुत कन्हैयालालजीके चार पुत्र और श्रीयुत जगन्नाथजीके ७ पुत्र

इस फर्मके मालिकोंकी ओरसे लुणकरनसर (बीकानेर) नामक स्थानपर एक धर्मशाला तथा कुंआ और सरदार शहरके आसपास तीन चार कुएं तथा कुंड बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल २२८ हरिसन रोड T. A. Karnani. T. No. 2941 B.B.—यहां बैंकिंग और जूटका व्यापार तथा आयर्न गोड्सका इम्पोर्ट होता है। कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

दार्जिलिंग—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल—यहां बैंकिंग, किराना तथा सोने हीरा काम होता है। यहा आपकी करनानी बिल्डिंगके नामसे एक इमारत बनी हुई है।

कलकत्ता—कन्हैयालाल रामचन्द्र—इस नामसे यहां जूटका व्यापार होता है।

जूट मरचेंट्स, बेलर्स एण्ड शिपर्स

अमेरिकनमेन्युफेक्चरिङ्ग कम्पनी ४ लियांस रेंज चौथा तल्ला
अण्डर गइट एण्ड को० २२ स्ट्रांड रोड
आशाराम वृद्धिचन्द २०६ हरिसन रोड
आशाराम मिर्जामल रेसी१८सैय्यद साली लेन
आसकरण मुनोरिया २२४ हरिसन रोड
आसकरण घोयमल ४२ आरमेनियन स्ट्रीट
इण्डिया ट्रेडिङ्ग कम्पनी ११ क्लाइव स्ट्रीट
इण्डो—योरोपियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० सी ३ क्लाइव स्ट्रीट
उपेन्द्रमोहन चौधरी
उदयचन्द पन्नालाल ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट
ए० डमियानो एण्ड को०
ए० एच० गजनवी एण्ड को०
ए० मैकमेगार एण्ड को०
ए० एम मायर एण्ड को०
ए० के० मुकुर्जी एण्ड को०
ए० सी० पाल एण्ड को० कमर्शियल बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीट
ऐंग्लो—इंच कर्पोरेशन लि० २ क्लाइव रो
ओंकारमल महादेव १५ क्लाइव रो०

सईदाबाद (मुर्शिदाबाद)—मेसर्स छोगमल—यहां आपकी जमींदारी है। तथा कपड़े और बैंकिंगका काम होता है।

मेसर्स रावतमल पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू कूंपमलजी एवम आपके पुत्र पन्नालालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में मेसर्स धनसी मानकचन्दके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, बैंकिंग और आढ़तका काम करती है इसका आफिस नं० ३०।३८ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है।

मेसर्स रामसहायमल मोर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है आप अग्रवाल वैश्य-समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ सुखदानजी मोर करीब ५५ वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये थे। आरंभमें आप सनकी दलालीका काम करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सुखदानजी मोरके पुत्र बा० रामसहायमलजी और भतीजे बा० नन्दलालजी हैं। बा० नन्दलालजीने करीब ५ वर्ष पूर्व हेसियनका काम शुरू किया। आपकी फर्म गनीट्रेड एसोसिएशनकी स्टेण्डिंग कमेटीकी मेम्बर है। बा० रामसहायमलजी मोर ईस्ट इण्डिया जूट एसोसिएशनके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसहायमल मोर ५ [illegible]—T. A. Mor Co—यहां हेड आफिस है तथा हाजर रुईका व्यापार, चांदीका इम्पोर्ट, सनकी, मिलों आदिका व्यवसाय और मिलोंको जूट सप्लाईका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसहायमल मोर ५५ [illegible]—हेसियन तथा जूटका कारबार होता है।

मेसर्स कन्हैयालाल रामसहाय १७५ हरिसन रोड—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और कमीशनका काम होता है।

मानकचर (आसाम) रामसहायमल नन्दलाल—यहां आपकी ओरियन्ट कॉटन जीनिंग फैक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है। और जूटकी खरीदी का काम होता है।

सिराज रामसहायमल नन्दलाल—जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान एहलनावादमें था मगर करीब ४३ वर्षोंसे आप लोग सरदार शहरमें रहते हैं। आप माहेश्वरी जातिके करनानी सज्जन हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व इस फर्मकी स्थापना दार्जिलिंगमें हुई थी। इसके स्थापक सेठ होगलाउजी थे। आपका स्वर्गवास होगया है आपके पश्चात् इस फर्मकी आपके पुत्र श्रीकिशनदासजीने उन्नति की। आपने करीब ४० वर्ष पहले कलकत्तेमें अपनी एक ब्रांच खोली। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। आपके इस समय २ पुत्र हैं। श्रीयुत कन्हैयालालजी तथा श्रीयुत जगन्नाथजी। आप दोनों ही व्यापार करते हैं। श्रीयुत कन्हैयालालजीके चार पुत्र और श्रीयुत जगन्नाथजीके ७ पुत्र

इस फर्मके मालिकोंकी ओरसे लुणकरनसर (बीकानेर) नामक स्थानपर एक धर्मशाला तथा कुंआ और सरदार शहरके आसपास तीन चार कुएं तथा कुंड बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल २२८ हरिसन रोड T. A. Karnani. T. No. 2941 B.B.—यहां बैंकिंग और जूटका व्यापार तथा आयर्न शीट्समका इम्पोर्ट होता है। कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

दार्जिलिंग—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल—यहां बैंकिंग, किराना तथा सोने चांदीका काम होता है। यहां आपकी करनानी बिल्डिंगके नामसे एक इमारत बनी हुई है।

कलकत्ता—कन्हैयालाल रामचन्द्र—इस नामसे यहां जूटका व्यापार होता है।

जूट मरचेंट्स, बेलर्स एण्ड शिपर्स

अमेरिकनमैन्यूफेक्चरिङ्ग कम्पनी ४ क्लियांस रेंज चौथा तल्ला
अण्डर सन एण्ड को० २२ स्ट्रांड रोड
आशाराम वृद्धिचन्द २०६ हरिसन रोड
आशाराम मिर्जामल रेमी १८ सैय्यद साली लेन
आसकरण मुनोत्या २२४ हरिसन रोड
आसकरण चोथमल ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट
इण्डिया ट्रेडिङ्ग कम्पनी ११ क्लाइव स्ट्रीट
इण्डो—योरोपियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० सी ३ क्लाइव स्ट्रीट
उपेन्द्रमोहन चौधरी
उदयचन्द पन्नालाल ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट
ए० डमियानो एण्ड को०
ए० एच० गजनवी एण्ड को०
ए० मैकमेगर एण्ड को०
ए० एम मायर एण्ड को०
ए० के० मुकुर्जी एण्ड को०
ए० सी० पाल एण्ड को० कमर्शियल बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीट
ऐंग्लो—डच कॉरपोरेशन लि० ३ क्लाइव रो
ओंकारमल महादेव १५ क्लाइव रो०

मेसर्स शोभाचंद सोहनलाल

इस फर्मका हेड आफिस डोमारमें (बंगाल) है। अतएव इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० २६ में दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स सूरजमल गनेशराम

इसफर्मके वर्तमान मालिक बाबू मुखालालजी हैं। आप लोसल (मारवाड़)के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके खेतान सज्जन हैं। बाबू मुखालालजी करीब २० वर्ष पूर्व देशसे खुलना आये, वहां आपने पाट, चांवल और कमीशनका काम शुरू किया। आप उत्साही व्यक्ति हैं, इसलिये व्यापारकी बराबर तरक्की करते गये। संवत् १९८१ में आपने कलकत्तेमें दुकान स्थापित की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू मुखारामजी एवं आपके छोटे भाई श्रीडेडराजजी हैं। मुखालालजीके पुत्र भूदरमलजी पढ़ते हैं। लोसलमें आपने पाठशालाके लिये एक मकान दिया है तथा गांवमें एक कुआं बनवाया है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल गनेशराम १६।१। हरिसन रोड—यहां जूटकी आढ़तका व्यापार होता है।
खुलना—गनेशराम मुखालाल -- जूटकी खरीदी और दूकानदारीका काम होता है।
मागरा (बंगाल) मुखालाल डेडराज— ,, ,, ,, ,,
विनोदपुर (जेसोर) मुखालाल डेडराज—जूटका व्यापार होता है।
दौलतपुर मुखालाल भूदरमल जूटकी खरीदीका काम होता है

मेसर्स हुकुमचंद हुलाशचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गोविंदरामजी बाबू तिलोकचन्दजी तथा बाबू रूपचंदजी नाहटा हैं। आप ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। बंगाल तथा आसाम प्रांतमें इस फर्मपर कई स्थानोंमें जूटकी आढ़त आदिका व्यापार होता है। इस फर्मका कलकत्तेका पता ४ दहीहट्टा स्ट्रीटमें है। यहां जूटका व्यापार, बैङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। T. A. ENOUGH तथा T. NO. 1035 B. B. है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रोंसहित इसी ग्रन्थके राजपूताना विभागके पेज नं० १४६ में दिया गया है।

जी० एण्ड एम० फ्रास्ट
जेम्स सिनुले एण्ड को० लि०
झोफो एण्ड को०
टीकमचन्द सन्तोखचन्द
टीकमसी सवानसुख
टी० एल० ब्रूकूस
टी० एम० थाडियस एण्ड को०
डी० कक्रानियाँ एण्ड को०
डी० एल० मिलार एण्ड को०
डेमिट्रियस ब्रदर्स ४७ राधा बाजार स्ट्रीट
तनसुखराय मेघराज
ताराचंद रामप्रताप ४२ स्ट्रांड रोड
थानसिंह करमचंद दूगर १५ पांचागली
थामस डफ एण्ड को० लि०
दीनबन्धु प्राणबन्धुशा चौधरी
दुलीचंद थानमल १०५ ओल्ड चायनाबाजार
दौलतराम रावत मल १७८ हरिसन रोड
दे० एच० पी० एण्ड सन्स
नार्दन बेंगाल कम्पनी लि०
नारायण रंज एण्ड को०
पावल पोगोसे
प्रतापमल रामेश्वर ४६ स्ट्रांड रोड
पी० ई० गजदर एण्ड को०
पी० जी० एण्ड डब्लू शाहु
पी० एम० गिल्न एण्ड को०
फतेचंद पानाचंद करमचंद
फार्बेस, फार्बेस केम्बेल एण्ड को०

फूलचन्द सगरगी
बद्रीदास फूलचंद
बल्देवदास रामेश्वर नाथानी मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
बक्सीराम ऋद्धिकरन सेठिया
बर्थाउ एण्ड को०
बिड़ला ब्रदर्स लि० ८ रायल एक्सचेंज प्लेस
बंशीधर बेजनाथ ६१ हरिसन रोड
बंशीधर जुगल किशोर
बिरकू मियर ब्रदर्स
बी० एन० पाल एण्ड को०
बीजराज जोरावरमल बांठिया
वृद्धिचंद्र केशरीचंद
ब्लैकवुड ब्लैकवुड एण्ड को०
बी० चन्या एण्ड सन्स
बी० के० राय चौधरी एण्ड को०
भागचंद नेमचन्द २ राजा उडमाउ स्ट्रीट
भीखमचन्द चोरडिया ४ राजा उडमाउ स्ट्रीट
भैरवदान चुन्नीलाल
महेन्द्रनाथ गुनी
मधुलाल शिवचन्द
मर्केन्टाइल यूनियन
मगनीराम बांगड़ एण्डको० ६५
मालमचन्द सुरजमल बाग बाजार
मासे एण्ड को०
मिचेल एण्ड को०
मित्स्यू भुपान कैशा लि०

सोभागमल शिखरचन्द
सोहनलाल दूगड़
सोवाचन्द धनराज
सोनीराम जीतमल कैनिंग स्ट्रीट
स्टाल अर्ल एण्ड को० लि०
हजारीमल मुन्नानमल
हरत्तराय चमड़िया एण्ड सन्स
१७८ हरिसन रोड
हरगोविन्दराय मथुरादास ७० काटन स्ट्रीट
हरसुखराय दुलीचन्द
हरसुखदास बालकृष्ण २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
हरसुखदास दुलीचन्द
हीरालाल अग्रवाला एण्ड को०
हीरालाल मीजराज
हीरालाल चन्दनमल
हुकुमचन्द हुलासचन्द
होअर मिलर एण्ड को० लि०

करनीदान रावतमल १५६ हरिसन रोड
काकूस ब्रदर्स (इंडी) लि० १ सी हेयर स्ट्रीट
कालूराम नथमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
केशोराम पोद्दार एण्ड को०
क्लाइव रो० ६ कन्नूलाल लेन
के० एल० चौधरी एण्ड को०
के० एन० लाचर एण्ड को०
के० सी० मल्लिक एण्ड को०
खेतर सिकदर एण्ड को०
गनेशप्रसाद महादेवप्रसाद एण्ड को०
गनेश दास दीवान बहादुर केशरीसिंह
कॉटन स्ट्रीट
गांगजी साजन एण्ड को० ७१ कैनिंग स्ट्रीट
गिलेंडर आरबुथनाट एण्ड को०
गिरधारीमल रामलाल गोठी आर्मेनियन स्ट्रीट
गोनराज ज्वालाप्रसाद ४२ शिवठाकुर स्ट्रीट
गोपालचन्द्र दूगड़ एण्ड को०
ग्लैडस्टन विली एण्ड को०
चन्दनमल कानमल लोढ़ा १७८ हरिसन रोड
चन्दनमल चम्पालाल १ गन फांउण्डरी रोड
चन्दनमल कुन्दनमल
चन्दनमल गनेशमल
...इगांव कम्पनी लि०
...दमल भोजराज ४ राजा उडमंड स्ट्रीट
...दमल चम्पालाल राजाउडमंड स्ट्रीट
...मल दत्ता सी०आई०ई०३७ कैनिंग स्ट्रीट
...गिराम जसकरनमल १६ पोन लिटलेन

चेतराम रामबिलास आर्मेनियन स्ट्रीट
चोकचन्द कालूराम
चोथमल जयचंदलाल गोठी
चौधरी एण्ड को०
चुन्नीलाल भैरवदान
चार्ल्स हास्टन एण्ड को०
छन्नालाल सोहनलाल
छोटूलाल जुहारमल
जयदयाल कसेरा एण्ड को० २ रायल
एक्सचेंज प्लेस
जयदयाल मदन गोपाल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जयनारायण ब्रदर्स
जार्ज हेण्डरसन एण्ड को०
जापान कॉटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि०
जार्डीन स्किनर एण्ड को०
जीवनमल चन्दनमल १ गनफांउण्डरी रोड
जीवनराम जुहारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जीतमल प्रेमचन्द १०९ ओल्ड चीना बाजार
जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लि०
जेसराज गिरधारीलाल
जेसराज जयचन्दलाल १४२ कॉटन स्ट्रीट
जेम्स स्काट एण्ड सन्स लि०
जी० ए० जार्डीन एण्ड को०
जे० थामस एण्ड को०
जे० ए० बर्नेट एण्ड को०
जे० सी० गैल्स्टन
जे किन नहराइट एण्ड को० लि०

नामसे यह फर्म गत सन् १९२६ ई० से व्यापार करने लगी है। इस फर्मको सेठ छाजूरामजी चौधरीने एक सच्चे स्वावलम्बी व्यक्तिकी भांति आरम्भ कर अपने असीम साहस एवं व्यापार चातुरीसे बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया है। आप स्थानीय कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंके डायरेक्टर और सार्वजनिक संस्थाओंके सहायकोंमें हैं। आप स्वभावके सरल और हृदयके उदार महानुभाव हैं। आपकी ओरसे हिसार [पंजाब] में दो और रोहतकमें एक इस प्रकार तीन हाई स्कूल तथा भिवानीमें एक लेडी अस्पताल चल रहा है। आपका दान निसंकोच और निरंकुश हुआ करता है। आपका सम्मान सरकारने सी० आई० ई० की पदवीसे किया है।

वर्तमानमें आपके बाबू सज्जनकुमारजी, बाबू महेन्द्रकुमारजी तथा बाबू प्रद्युम्नकुमारजी नामक तीन पुत्र हैं। जिनमें बाबू सज्जनकुमारजी चौधरी व्यापारमें भाग लेते हैं। आप शिक्षित और स्वभावके मिलनसार हैं। साथ ही अपने पिताजीके समान ही होनहार भी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स छाजूराम एण्ड सन्स ९७–१०० क्लाइव स्ट्रीट तारका पता Goodwish T. N. 1115, 1110 और 656 Cal—यहां हैसियन और गनीका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स जगन्नाथ गुप्ता एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू जगन्नाथजी गुप्त हैं। आपका जन्म संवत् १९३९ में गुलकुआ [गुड़गांव] निवासी सेठ पनरामजी अग्रवालाके यहां हुआ। आप सन् १८९९ ई०में कलकत्ता आये और आरम्भमें आपने हेसियनकी दलालीका कार्य आरंभ किया, इस व्यवसायमें आपने अच्छी उन्नति एवं सम्पत्ति पैदा की। आप अपने विद्यार्थी जीवनसेही सार्वजनिक कामोंमें अच्छा सहयोग लेते रहे हैं। वर्तमानमें आप गनीहेसियन एसोसिएशनके मंत्री हैं। एवं इस व्यापारिक एसोसियेशनका काम आप भली प्रकार संचालित कर रहे हैं। आप सुधरे विचारोंके सज्जन हैं। सामाजिक विषयोंमें आपके विचार उदार हैं। अनाथालय, विधवाश्रम आदि संस्थाओंको आपकी ओरसे अच्छी सहायताएं मिलती रहती हैं। आप बंगाल आसाम प्रांतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके प्रधानमंत्री एवं कलकत्ता आर्य समाजके मंत्री रह चुके हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ गुप्ता एण्ड कम्पनी 7 C ह्रायव रो T. N. 4503,100 Cal—यहां हेसियन गनीकी आढ़तका बिजिनेस होता है।

हेस्सियन एण्ड गनी
मर्चेण्ट्स एण्ड ब्रोकर्स

Hessian & Gunny
Merchants & Brokers.

हेसियन एण्ड गनी
मर्चैण्ट्स एण्ड ब्रोकर्स

Hessian & Gunny
Merchants & Brokers.

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता - मेसर्स तुलसीदास मेघराज ११६।१ हरिसन रोड T No 647 B.B. T A Miyaniwala—यहां बैंकिंग, हेसियन गनी मर्चेंट, श्युगरमर्चेंट, एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट और कमीशनका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स तुलसीदास मेघराज २१ केनिंग स्ट्रीट T A 5947 Cal हेसियन गनीका काम होता है। यह फर्म तुलसीदास एण्ड कम्पनीके नामसे जूट मिलोंकी ग्यारंटेड ब्रोकर्स है।

(३) बम्बई—मेसर्स तुलसीदास मेघराज ३४ न्यू बारदान गली (T A Bindhyachal-यहां बारदानका व्यापार और बैंकिंग कामकाज होता है।

(४) कराची—मेसर्स तुलसीदास मेघराज खोटी गार्डन T A Sabbarwal—बैंकिंग, श्युगर और गनी मर्चेंट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

(५) मिरपुर खास (सिंध)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—यहां वालकट ब्रदर्स को नाणा सप्लाई करनेका काम होता है।

(६) मुल्तान सिटी (पंजाब)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—यहां भी वालकट ब्रदर्सको नाणा सप्लाई करनेका काम होता है।

(७) मांटगोमरी—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—वॉलकट ब्रदर्सको नाणा सप्लाई करनेका काम तथा बैंकिंग वर्क और गनी मर्चेंटका काम होता है।

(८) लाहौर (पंजाब)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज पीमहल (T A Kismatwala) वालकट ब्रदर्सकी एजंसी है। तथा बैंकिंग एवं गनी मर्चेन्टका काम होता है।

(९) अमृतसर तुलसीदास मेघराज कटरा हरीसिंह T A Sabarwal —यहां बैंकिंग गनी और श्युगर मर्चेन्टका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी जमींदारी भी है।

(१०) लुधियाना—मेसर्स तुलसीदास मेघराज T A Sabarwal—गनी, श्युगर मर्चेन्ट, बेङ्कर्स तथा जमींदारीका कामकाज होता है।

(११) अम्बाला-सिटी—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—गनी मर्चेन्ट तथा बैंकिंग व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त वॉलकट ब्रदर्सकी एजंसी है।

(१२) दिल्ली—मेसर्स तुलसीदास मेघराज नया बाजार T. A. Prakash—गनी श्युगर मर्चेंट, बैंकर्स तथा जमींदारीका काम काज होता है।

(१३) कानपुर—मेसर्स तुलसीदास मेघराज नयागंज T A Miyaniwala—श्युगर, गनी मर्चेंट तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है।

हेसियन और गनी

जूटके सम्बन्धको लेकर प्रारम्भिक पोर्शनमें हमने विस्तृत रूपसे जूट, हेसियन और गनी-पर प्रकाश डाला है। यहां हम केवल इस व्यवसायकी प्रधान तालिका अर्थात् वायदेके सौदेके सम्बन्धमें चलनू चर्चा कर रहे हैं।

हेसियन और गनीके वायदेके सौदेका प्रभाव प्रायः सब प्रकारसे जूट व्यवसायके सभी अंग प्रत्यंगोंपर समानरूपसे पड़ता है। इस प्रकारके व्यापारके प्रधान स्थान कलकत्तेमें दो हैं जिन्हें हेसियन बाजार और हेसियन बाड़ा कहते हैं।

हेसियन बाजार—२१ नं० कैनिङ्ग स्ट्रीटको हेसियन बाजार कहते हैं। इस बाजारमें हेसियनके व्यापारी, जूटमिल मालिक शिपर्स और दलालोंकी चहल पहल रहती है। यहां दो प्रकारका सौदा होता है। तैयार मालके सौदेको पक्के मालका सौदा कहते हैं और दूसरे प्रकारका सौदा वायदेका सौदा कहाता है। यहां कमसे कम ५० हजार गज हेसियनका सौदा होता है। सौदा स्थानीय बंगाल चेम्बर आफ कामर्सके निश्चित नियमोंके अनुसार कन्ट्राक्ट करनेपर पक्का समझा जाता है। और महीनेकी अन्तिम तारीखपर जिसे 'ड्यू डेट' कहते हैं मालकी डिलीवरी होती है। इस सम्बन्धमें होनेवाले सभी प्रकारके झगड़ोंको बंगाल चेम्बर आफ कामर्स तय करता है और इसके निर्णयको मानना सभी सदस्योंके लिये अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त देशी दलालोंकी भी एक संस्था है जो व्यापार सम्बन्धी झगड़ोंको सुलझानेमें सहयोग देती है। इस बाजारमें काम करनेवाले योरोपियन दलाल अपना स्वतंत्र सौदा नहीं करते पर देशी दलाल अपने ग्राहकोंका सौदा तो करतेही हैं पर साथ ही प्रायः अपना स्वतंत्र सौदा भी करते हैं। इसी बाजारसे प्रायः संसारभरके लिये हेसियनका सौदा हुआ करता है और इसीके द्वारा वहां माल जाता है।

कलकत्ता हेसियन एक्सचेंज—इसे हेसियनका बाड़ा भी कहते हैं। यह बाड़ा १७१ हरिसन रोडपर है। इस बाड़ेमें कमसे कम १० हजार गज हेसियनका सौदा होता है। सौदे तीन तीन महीनेके वायदेके होते हैं इस प्रकार वर्षमें ४ सौदे रहते हैं। इस बाड़ेमें भावके डिफरेन्सका भुगतान साप्ताहिक होता जाता है और इस प्रकार तिमाही वायदेके सौदेकी मिती आती है और इसी

अमृतसर—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल हरिसिंहका फर्म T A Mianiwala—यहां बैंकिंग, गनी और शक्करका व्यापार होता है।

लायलपुर—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल T A Sabarwal—यहां बैंकर्स, गनी मर्चेन्ट्स और शुगरका काम होता है।

सरगोदा—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल T A Sabarwal—यहां बैंकिंग, गनी और शुगरका व्यापार होता है।

मेसर्स नन्दराम बैजनाथ केड़िया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर) स्टेटमें है। आप अग्रवाल समाजके गर्गगोत्रके सुप्रसिद्ध केड़िया वंशके सज्जन हैं। सबसे पहले श्रीयुत नन्दरामजी केड़िया चिड़ावासे कानपुर आये और कानपुरसे कलकत्ता आकर श्री सेठ रामचन्द्रजी गोयनकाके यहां रैलीब्रदर्सके आफिसमें कपड़ेका काम किया। करीब २० वर्ष तक वे इस कामको करते रहे। आपके तीन पुत्र हुए श्रीयुत बैजनाथजी, श्रीयुत हरजीमलजी और श्रीयुत बसन्तलालजी। इनमेंसे श्रीयुत बैजनाथजीने प्रारम्भमें बिड़लाजीके फार्म पर हेसियनकी दलाली प्रारम्भ की। यहां पर आपने करीब १० वर्ष तक काम किया। इसके पश्चात् आपने बैजनाथ केड़िया कं० के नामसे अलग कारबार प्रारम्भ कर दिया। आपने हिन्दी पुस्तक एजन्सी नामक पुस्तक प्रकाशन की संस्थाको खरीदी इस एजन्सीके द्वारा हिन्दी संसारकी बहुत सेवा की है। आपने इसके द्वारा हिन्दीके अच्छे २ लेखकोंसे मौलिक तथा धार्मिक ग्रन्थ लिखवा २ कर प्रकाशित किये। यह एजन्सी मारवाड़ीके द्वारा संचालित हिन्दीकी तमाम पुस्तकोंको सप्लाई करने वाली पहली ही दुकान है। आपने अपनी पुस्तकोंके छापनेके लिए वणिक् प्रेस नामक प्रसिद्ध प्रेसको खरीदा। इस प्रेसमें हिन्दी अंग्रेजी बंगलाकी सब प्रकारकी छपाई होती है।

श्रीयुत बाबू बैजनाथजी अग्रवाल समाजकी सुधारक पार्टीके सदस्य हैं। राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्योंमें आप बड़ी दिलचस्पीके साथ भाग लेते हैं।

श्रीयुत हरजीमलजी केड़िया बड़े शान्ति प्रकृतिके पुरुष हैं। व्यवसायमें प्रधान भाग न लेते हुवे भी आप सभी कार्योंमें भाग लेते हैं। आप खुश मिजाज आदमी हैं। बाहर रहना ही अधिक पसन्द करते हैं।

बाबू बसन्तलालजी उत्साही और सुधार प्रिय सज्जन हैं। आपका मारवाड़ी सहायक

मेसर्स जयलाल हरगुलाल

इस फर्मके मालिक पेरी (रोहतक) के निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन २०।२२ वर्ष पूर्व बाबू जयलालजीके हाथोंसे हुआ है। आपकी फर्म गनी ब्रोकरेजका अच्छा काम करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—जयलाल हरगुलाल १५ कैनिंग स्ट्रीट फोन नं० १८२१, और १३५१ कलकत्ता है—यहां हेसियन और गनीकी ब्रोकरेजका काम होता है।

मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी

इस फर्मके प्रधान संचालक बाबू जयदयालजी कसेरा हैं। यहां इसका आफिस २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। इसके अतिरिक्त चितरंजन एवेन्यू नार्थमें भी आपकी फर्म है। यहां हेसियन और गनीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित जूटके व्यापारियोंमें दिया है।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मियानी (पंजाब) है। इस फर्मके स्थापक स्वर्गीय लाला तुलसीदासजी सब्बरवाल थे। आप बड़े प्रतिष्ठित महाशय हो गये हैं। आपके हाथोंसे तिजारतको अच्छी तरक्की प्राप्त हुई। आपके ४ पुत्र हुए। लाला किशनदयालजी, लाला हरभगवानदासजी, लाला मेघराजजी तथा देसराजजी। स्वर्गीय लाला तुलसीदासजीका स्वर्गवास संवत १९५४ में हुआ। आपके स्वर्गवासी होनेके पश्चात आपके पुत्र अलग २ होकर अपनी २ फर्मोंका संचालन करते हैं।

इस फर्मके मालिक लाला मेघराजजी सब्बरवाल हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १९५७ में हुआ। आपने आरम्भमें अपनी फर्मपर गनीका ट्रेड शुरू किया तथा इस व्यवसायमें अच्छी तरक्की हासिल की। लाला मेघराजजी शिक्षित, समझदार एवं अनुभवी सज्जन हैं। बोरेके व्यापारमें आपकी अच्छी निगाह है।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे लाला रामलुभायामल और बाबू ओंकार प्रकाश हैं। दोनों विद्याध्ययन करते हैं।

बाबू बैजनाथजी केडिया

बाबू हरजीमलजी केडिया

बाबू बसंतलालजी केडिया

बाबू प्यारीलालजी केडिया

मेसर्स मोलाराम कुन्दनमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ मोलारामजी संवत् १६४० में देशसे कलकत्ता आये। आरंभमें आपने हेसियन बोरेकी दलालीका कामकाज आरंभ किया एवं संवत् १६५५ में आपने भूदरमल रामचन्द्रके नामसे पार्टनरशिपमें बोरेका व्यवसाय शुरू किया। इस फर्मके व्यवसायको आपने अच्छी तरक्की दी तथा इस व्यवसायमें सफलता प्राप्त करनेके बाद संवत् १६६६ में मोलाराम कुंदनमलके नामसे आप अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। इस फर्मके व्यापारको भी आपने अच्छी तरक्की दी।

सेठ मोलारामजीकी धार्मिक कामोंकी ओर अच्छी रुची थी। आपहीके परिश्रमसे होलीकी मिर्चीकी बड़ी मांग लागका आना आरंभ हुआ था। जिसकी आमदनी भिवानी पीजरापोलमें व्यापारियोंकी ओरसे पहुंचाई जाती है। आप बड़े मिलनसार, तथा सरलप्रकृतिके महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत् १६७३ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोलारामजीके पुत्र बा० कुंदनमलजी एवं बाबू मुरसुरीलालजी डालमियां हैं। आप दोनों भाइयोंके हाथोंसे फर्मके व्यवसायकी अच्छी वृद्धि हुई है। बाबू मुरसुरीलालजी शिक्षित सज्जन हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मोलाराम कुन्दनमल १३७ काटनस्ट्रीट—यहां बोरा तथा हेसियनका कारबार होता है

कलकत्ता—मेसर्स मोलाराम कुंदनमल १६ क्लाइवरो—यहां हेसियन बोरेका कामकाज होता है।

यहींपर मुरसुरीलाल डालमियां कं० के नामसे आपका दलालीका काम होता है।

दिल्ली—मेसर्स मोलाराम कुंदनमल नया बाजार—यहां आढ़त तथा बोरेका व्यापार तथा गल्लेका कामकाज होता है।

कल्का मंडी (पंजाब) मेसर्स मोलाराम मुरसुरीलाल—आढ़त तथा गल्लेका व्यापार होता है।

जाखल मंडी (पंजाब) मेसर्स मोलाराम मुरसुरीलाल—आढ़त तथा गल्लाका व्यापार होता है।

चंदौसी (यू० पी०) मेसर्स मोलाराम मुरसुरीलाल—आढ़त गल्लाका व्यापार होता है

सुनामंडी (पंजाब) मेसर्स मोलाराम मुरसुरीलाल—आढ़त गल्लाका व्यापार होता है

भिवानी—मेसर्स नैनसुखदास मोलाराम—यहां आपका खास निवासस्थान है तथा सराफी कामकाज होता है। यह फर्म बहुत पुराने समयसे व्यापार कर रही है।

स्व० राय कन्हैयालालजी बागला बहादुर (एम० पी० बागला कम्पनी

बा० महावीरप्रसादजी बागला (एम० पी० एण्ड को०)

बा० हनुमानप्रसादजी बागला एम.पी. एण्ड को०

मेसर्स मातूरामजी डालमियां

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान भिवानी (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। कलकत्तेमें सेठ जालीरामजी ३५।४० वर्ष पूर्व आये एवं आपने आरंभसेही हैशियन तथा बोरेका कारबार शुरू किया। इस फर्मके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ जालीरामजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। पहिले आपकी फर्म पर मथुरादास जालीरामके नामसे व्यवसाय होता था। बाबू जालीरामजीने अपनी फर्मकी ब्रांचेज अहमदाबाद एवं बलरामपुरमें भी स्थापित की। आपका स्वर्गवास करीब ११ वर्ष पूर्व होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जालीरामजीके पुत्र बाबू मातूरामजी डालमियां हैं। आपने अपनी फर्मकी एक ब्रांच बम्बईमें भी स्थापित की। आपकी फर्म गनी ट्रेड एसोसिएशनकी सब्जेक्ट कमिटीकी मेम्बर है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मातूराम डालमियां ६ सेंट्रलएवन्यू यहां बोरा तथा हैसियनका कारबार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मातूराम डालमियां २१ केनिंग स्ट्रीट—यहां भी हैसियन तथा बोरेका ब्रोकर बिजिनेस होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स मातूराम गूजनमल नवा माधोपुरा T. A. Dalmiya—यह कपड़े और गल्लेका व्यापार और चालानीका काम होता है।

भिवानी—मेसर्स मथुरादास जालीराम—यहां कपड़ेकी दुकान है।

बलरामपुर (गोंडा)—मेसर्स मथुरादास जालीराम - यहां गल्ला तथा आढ़तका कारबार होता है।

बम्बई—मेसर्स शिवदयालमल गूजनमल मारवाड़ी बाजार - यहां आढ़त तथा सराफी लेनदेन होता है।

— —

मेसर्स एम० पी० बागला एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक बाबू महादेवप्रसादजी बागला एवं बाबू हनुमानप्रसादजी बागला चूरू (बीकानेर) निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। आपके पिता रायबहादुर सेठ कन्हैयालालजी बागलाको बीकानेर स्टेटसे छड़ी, दुशाला एवं सेठका खिताब प्राप्त हुआ था।

रा० ब० सेठ कन्हैयालालजीने संवत् १९५५ में दिल्लीमें अपनी फर्म स्थापित की थी, वहांपर आपने बहुत जगह जायदाद खरीदी एवं हनुमान महादेव कॉटन वीविंग एण्ड स्पीनिंग मिल की स्थापना की थी। व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ धार्मिक कामोंमें भी आपकी अच्छी रुचि रही, आपने करीब ५० हजारकी लागतसे जगदीशमें एक धर्मशाला बनवाई। इसके अतिरिक्त सुजानगढ़,

स्व: भोलारामजी डालमियां
(भोलाराम कुन्दनमल)

बा: सत्यनारायणजी डालमियां
(हरगोविन्दराय मथुरादास)

बा: कुन्दनमलजी डालमियां (भोलाराम कुन्दनमल)

बा: [illegible] डालमियां (भोलाराम कुन्दनमल)
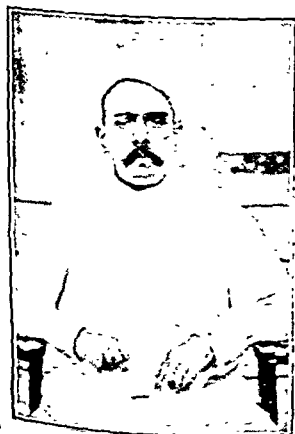
स्व० हरदत्तरायजी प्रहलादका
(मोतीलाल प्रहलादका कम्पनी)

बा० मोतीलालजी प्रहलादका
(मोतीलाल प्रहलादका कम्पनी)

बा० हनुमानबक्सजी चोखानी (हनुमानबक्स चोखानी)

बा० गोवर्धनदासजी चोखानी (हनुमानबक्स चोखानी

मेसर्स रामस्वरूप मामचंद

इस फर्मके मालिक कमरूा (जिला रोहतक) के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ दुर्गादत्तजी एवं आपके पुत्र सेठ देवीसहायजी कमरूाके अच्छे ख्याति प्राप्त महानुभाव हो गये हैं।

इस फर्मको कलकत्तेमें स्वर्गीय बाबू देवीसहायजीके पुत्र सेठ रामस्वरूपजीने ३५।४० वर्ष पूर्व स्थापन किया। आरम्भसे ही आपके यहां हैसियन गनीका व्यवसाय होता आ रहा है। बाबू रामस्वरूपजीने इस फर्मके व्यवसायकी अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास करीब ६ वर्ष पूर्व हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय बाबू रामस्वरूपजीके पुत्र बाबू मामचंदजी एवं श्री मुरारीलालजी हैं। आपकी फर्म गनीट्रेड एसोसियेशनकी सब्जेक्ट कमेटीकी मेम्बर है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामस्वरूप मामचन्द ४८ जकरिया स्ट्रीट—यहां आपका निवास है तथा हैसियन गनीका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स डेविड सासुन कम्पनीकी सोल ब्रोकर है इसके अलावा गार्डन स्किनर, एण्डयूल कम्पनी, रायली ब्रदर्स, शॉ वालेसकम्पनी और ई० डी० सासुन कम्पनी आदि प्रतिष्ठित कंपनियोंसे इसका व्यापारिक सम्बन्ध है।

कलकत्ता—मेसर्स रामस्वरूप मामचन्द १३६ केनिंगस्ट्रीट —यहां आपका आफिस है। इसमें हैसियन और गनीका ब्रोकर बिजिनेस होता है

मेसर्स रामजीवन सरावगी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकों का मूलनिवास स्थान फतेपुर जयपुरमें है। आप अग्रवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें संवत् १९३२ में हुई। जिससमय इस फर्मकी स्थापना हुई उससमय गनीब्रोकर्समें या तो दो अंग्रेज कम्पनियां थीं या हिन्दुस्तानियोंमें केवल यही एक फर्म थी। मतलब यह कि गनीव्यापारके इतिहासमें इस फर्मका इतिहास बहुत पुराना है इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बाबू रामजीवनजीने की। आप बड़े सज्जन उदार और व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत १९७५में होगया। आपके कुल आठ पुत्र हुए जिनमेंसे इससमय छः विद्यमान हैं। जिनके नाम क्रमशः बाबू फूलचन्दजी, बाबू गुलजारीलालजी, बा० दीनानाथजी, बा० छोटेलालजी, बा० नन्दलालजी, और बा० लालचन्दजी हैं। आप सब बिजीनेसमें भाग लेते हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र २१ केनिंग स्ट्रीट Phone 3147 Cal—यहां हेसियन गनीका ब्रोकर्स बिजनेस होता है।

बाबू लक्ष्मीनारायणजीके पुत्र माणकचन्दजी तथा रामचन्द्रजीके पुत्र हनुमानप्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

मेसर्स लोयलका कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी लोयलका एवम घनश्यामदासजी लोयलका हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय शेयरके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका आफिस ७ लियांसेंजमें है। यहां यह फर्म हेसियन और गनीका व्यापार करती है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण वंशीधर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास भिवानी (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक रा० ब० सेठ सुखरामजी कानोड़िया थे। आप संवत् १९४२ में देशसे कलकत्ता आये, एवं यहां आकर हरनन्दरायजी बद्रीदास फर्मकी प्रधान मैनेजरीका काम करने लगे। बोरेके व्यवसायमें आपकी निगाह अच्छी थी, फलतः आपने उक्त फर्मके व्यवसायको खूब उत्तेजन दिया। पश्चात् हरनन्दरायजी बद्रीदासके नामसे तुलापट्टीमें एक गोदाम खोला गया, जिसमें सेठ बहादुरमलजी डालमिया, सेठ मथुराप्रसादजी डालमिया, सेठ हरगोविंदरायजी डालमिया एवं रा०ब० सेठ सुखरामजी कानोड़िया आदि पार्टनरके रूपमें काम करने लगे। इस फर्मने भी बोरेके व्यवसायमें अच्छी प्रगति की। तत्पश्चात् आपने संवत १९५१।५२ से अपना स्वतंत्र व्यवसाय लक्ष्मीनारायण वंशीधरके नामसे शुरू किया। इस नामसे अभीतक आपका कुटुम्ब फर्मका व्यवसाय संचालित कर रहा है।

रा० ब० सेठ सुखरामजी व्यवसायिक कार्योंके अतिरिक्त धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छा लक्ष रखते थे। आपको भारत सरकारसे सन १९२१ ई०में राय बहादुरकी पदवी प्रदान की। देवघर (वैद्यनाथ धाम) जिला सन्थाल परगनामें नई धर्मशालाके नामसे आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। सन १९२१ ई० में कलकत्तेके बाबूघाटपर जहाजमें उतरनेवाले मुसाफिरोंकी सुविधाके लिये भी एक धर्मशालाका निर्माण कराया है। बनारसमें आपका एक अन्नक्षेत्र चल रहा है।

हिन्द, एवं चूरूके आसपास ४१६ धर्मशालाएं बनवाई, चूरूमें आपकी ओरसे धर्मशाला, मंदिर, छत्र एवं कूएं बनाये हुए हैं।

इधर ४१० वर्षोंसे स्व० सेठ कन्हैयालालजी बागलाके पुत्रोंने कलकत्तेमें आकर हेसियन और रेशमीके कारबार शुरू किया। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—एम० पी० बागला एण्ड कं० २१ केनिंग स्ट्रीट T.No 1903, 2223 Cal—यहां हेसियनका ब्रोकरेज बिजिनेस होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बागला कम्पनी ७ क्लियांसेज T.A Monopoli, T. No 1513 Cal रजिस्टर्ड टेलिफोन नं० 305 B B—यहां शेअर और स्टाकका व्यापार होता है।

मेसर्स मोतीलाल प्रल्हादका कम्पनी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके प्रल्हादका सज्जन हैं आप लोग रामगढ़ (सीकर) के रहने वाले हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ हरदत्तरायजीने कलकत्तेमें की थी। तथा आपही के हाथों इसे तरक्की मिली। आप सन् १९११ ई० में स्वर्गवासी हुए और फर्मके संचालनका कार्य भार आपके पुत्र बाबू मोतीलालजी पर पड़ा। आपने अपनी छोटी वयमें ही अच्छी शिक्षा प्राप्त करली थी अतः व्यवसाय संचालनमें आप सफल हो गये। आप उत्साही और होनहार युवक हैं।

इस परिवारका लोकोपकारी कार्योंकी ओर सदा ही अधिक झुकाव रहा है। यही कारण है कि रतनगढ़में आप लोगोंकी एक चेरिटेबल डिस्पेन्सरी भी चल रही है जहां सभी प्रकारकी सहायता धर्मार्थ दी जाती है। सेठ हरदत्तरायजी द्वारा संस्थापित रतनगढ़का प्राइमरी स्कूल बाबू मोतीलालजीके उद्योग और सहायसे आज हाई स्कूलकी पढ़ाई कर रहा है। इन दोनोंही की विशाल इमारतें भी इन्हींकी बनवाई हुई हैं। सेठ हरदत्तरायजीने अपनी अन्तिम 'विल' (दान पत्र) में [illegible] लाखकी रकम स्कूल और डिस्पेन्सरीके लिये निकाल दी थी।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीलाल प्रल्हादका एण्ड को० १४।२ क्लाइव रो T.A. Prempathik T.No. 3268 Cal—यहां गनी ब्रोकर्सका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशनारायण हरदत्तराय १० ए चितरंजन एवेन्यू T. N. 1063 B. B.—यहां काटनके एक्सपोर्ट बिजनेसका काम होता है। यह फर्म न्यू इण्डिया इन्श्युरेन्स कम्पनीकी मेरिन एजेन्ट है।

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, कलकत्ता

श्रीराम लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल, बनारस (लक्ष्मीनारायण सुहृत्सत)
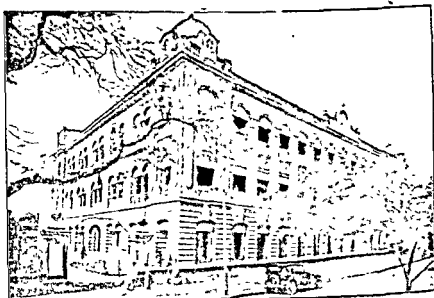
और बाबू चान्दमलजी। इनमेंसे बाबू लक्ष्मीनारायणजी और बाबू सूरजमलजी कलकत्तेमें व्यापार करते थे। बाबू लक्ष्मीनारायणजीके कोई संतान नहीं थी, इस लिये उन्होंने अपना उत्तराधिकारी अपने छोटे भाई बाबू चांदमलजीको बनाया तथा उन्हें छोटी अवस्थासे ही कलकत्तेमें अपने पास रखने लगे। बाबू जगन्नाथजी अपने पिताजीके साथ काशीजी हीमें रहते थे। एकाएक दैव योगसे संवत १७६३।६३ में बाबू जगन्नाथजी और बाबू सूरजमलजीका एक एक मासके अन्तरसे देहावसान हो गया।

सेठ श्रीरामजी काशीके बड़े प्रतिष्ठित महानुभाव हो गये हैं, आपका जीवन, धार्मिक जगतमें, साधुओंमें, सत्पुरुषोंके संगमें विशेष प्रख्यात था। आपके बड़े पुत्र लक्ष्मीनारायणजी कलो-ड़ियाकी इच्छा एक बहुत बड़ा धार्मिक कार्य करने की थी, अपने इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये आप एक अस्पताल स्थापित करना चाहते थे, आपने इसके लिये जमीनका प्रबन्ध भी कर लिया था। लेकिन आप अपनी इच्छा पूरी न कर सके, एकाएक घोड़ेके बिगड़ जानेसे गाड़ीसे कूद पड़नेके कारण सन १९१५ ईमें कलकत्तेमें आपकी मृत्यु हो गई। सेठ श्रीरामजीने उनकी इच्छा पूर्तिके लिये काशीमें "श्रीराम लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल" के नामसे एक विशाल अस्पतालका निर्माण कराया, जो अगस्त सन १९१६ ई०में सर जेम्स मेस्टन यू० पी० गवर्नरके द्वारा उद्घाटित किया गया, इस प्रकार बनारसमें एक चिर स्थाई कामकर श्रीसेठ श्रीरामजी ७७ वर्षकी आयुमें अस्पतालके उद्घाटनके २ वर्ष बाद स्वर्गवासी हुए।

इस फर्मके व्यापारकी वृद्धि सेठ लक्ष्मीनारायणजीके हाथोंसे हुई, आपने आरम्भमें कलकत्तेमें मार्फत रामनिरंजनदास बद्रीदासके यहां तथा हरनंद राय फूलचंदके यहां नौकरीकी, आपने हरनंदराय फूलचंदके गल्लेके व्यापारको खूब बढ़ाया, उस समय इस फर्मका माल हंडी हेमराम, आदि स्थानोंको सिपमेंट होता था, इस प्रकार नौकरी द्वारा द्रव्य और अनुभव प्राप्त करके अपने भ्राता सेठ सूरजमलजीके साथ लक्ष्मीनारायण सूरजमलके नामसे आपने एक स्वतंत्र फर्मका स्थापन किया। आपकी फर्मपर प्रधान व्यापार बोरा और मेन शीलिंगका होता था, सेठ लक्ष्मीनारायणजीको व्यापारिक विषयोंकी अच्छी जानकारी थी, हेसियन बोरेका व्यापार करने वाले कई बड़े बड़े आफिसोंसे आपका व्यापारिक सम्बन्ध था। आप प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मेकड़ाड एण्ड कम्पनीको भी मिलोंके इन्स्पेक्टर थे।

सेठ श्रीरामजी एवं लक्ष्मीनारायणजीके पश्चात इस फर्मके व्यवसाय संचालनका भार बाबू चान्दमलजी एवं स्वर्गीय सूरजमलजीके पुत्र बाबू छोटेलालजी पर आया। आप लोगोंने सेठ लक्ष्मीनारायणजीके स्थापित किये हुए अस्पतालके फंडमें भी वृद्धि की। कलकत्तेके अग्रवाल समाजमें यह कुटुम्ब अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। संवत १९८५ तक इस फर्मपर नीचे लिखे नामोंसे व्यापार होता था।

इस फर्मकी दानधर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। प्रायः सभी सार्वजनिक कार्य्योंमें आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

१—मेसर्स रामजीवन सरावगी एण्ड को० १४ क्लाइवस्ट्रीट (phone 4581 Cal)—यहांपर गनी-ब्रोकर्सका काम होता है। कलकत्तेमें यही एक ऐसी फर्म है जो केवल दलाली ही करती है। निजका व्यवसाय बिलकुल नहीं करती है।

आपका मकान २५ सेण्ट्रलऐवन्यूनार्थमें है। घरका फोन न० 3034 B. B. है।

मेसर्स रामसहाय मलमोर

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबु रामसहायमलजी मोर हैं। आपका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसफर्मका आफिस २१ कैनिंग स्ट्रीटमें है। इसपर हेसियन और बोरेका व्यापार होता है।

सेठ रामकिशनदास बागड़ी

इस फर्मके मालिक बीकानेर निवासी बाबू रामरतनदासजी बागड़ी हैं। इस फर्मका आफिस ३३, क्रास स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म बैंकिंग और हेसियन तथा गनीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बैंकर्समें दिया गया है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान चूरू (बीकानेरस्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके लोहिया सज्जन हैं। सर्व प्रथम सन् १८८७ के पूर्व सेठ नारमलजी लोहिया कलकत्ता आये और बादमें आपके छोटे भ्राता सेठ रंगलालजी लोहिया भी आ गये। आप दोनों भाई अफीम, गल्ला तथा कपड़ेका कारबार करते रहे। सेठ नारमलजीका स्वर्गवास संवत् १९५६ में और रंगलालजीका संवत् १९६६ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रंगलालजीके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायण एवं बाबू रामचन्द्र जी हैं। बाबू लक्ष्मीनारायणजीने संवत १९६८।६९ में हेसियन गनीका कारबार आरंभ किया और तबसे बराबर आप यह काम कर रहे हैं।

बाबू चांदमलजी कानोड़िया

बाबू छोटेलालजी कानोड़िया

बाबू रामनाथजी कानोड़िया

बाबू रामसुन्दरजी कानोड़िया

[illegible] पु- विद्यार्थियोंके पढ़नेका भी प्रबंध है। भिवानीमें स्याम संस्कृत पाठशालाके नामसे आप[illegible]
वर्षोंसे एक पाठशाला है। यहां भी विद्यार्थियोंके मय २ विद्यार्थियोंके भोजनोंका प्रबंध भी है। इस
प्रकार इसके धार्मिक कार्योंमें आप बहुत भाग लिया करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८[illegible]
आसोज १३ बदीको हुआ। सेठ गुलाबरायजीके २ पुत्र हुए बड़े सेठ लक्ष्मीनारायणजी एवं छोटे सेठ
बंशीधरजी, इनमेंसे सेठ बंशीधरजीका संवत् १९७३में स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आपके २ छोटे
पुत्र श्री कन्हैयालालजी एवं श्रीआदूलालजी पढ़ रहे हैं।

वर्तमानमें इस कुटुम्बके प्रधान संचालक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप बड़े समझदार सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू राधाकृष्णजी, बाबू मोतीलालजी एवं श्रीबिहारीलालजी फर्मका व्यवसाय बड़ी तत्परतासे संचालित करते हैं। सेठ लक्ष्मीनारायणजीके सबसे बड़े पुत्र बाबू गौरीशंकरजीका स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र छोटेलालजी हैं जो अभी पढ़ते हैं।

महरिया (घाड़ापाट) में आपका लक्ष्मीनारायण बंशीधरके नामसे एक दातव्य औषधालय चल रहा है। इसमें नित्यप्रति ५०।६० रोगी आते हैं। यह कार्य स्वामी मोहनदासजी की अध्यक्षतामें होता है।

इस फर्मका प्रधान व्यापार बोरेका है। तथा बहुत समयसे आपलोग इस व्यापारको करते हैं। इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बंशीधर ८५ काटन स्ट्रीट—यहां आफिस है। तथा हेसियन और बोरेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बंशीधर २ रोज रोड-हवड़ा—यहां हेड आफिस है। तथा हेसियन बोरेका व्यापार होता है।

अमलगोड़ा, स्टेशन गढ़बेरा (मेदिनीपुर) लक्ष्मीनारायण बंशीधर—यहां आपका एक श्री राधाकृष्ण राइस मिल है।

कलकत्ता—सांवलदास कन्हैयालाल ७२ तुलापट्टी—हेसियन बोरेकी दुकान है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण सूरजमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास रामगढ़ (सीकर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य साम[illegible] [illegible]ड़िया सज्जन हैं। बनारसमें करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ श्रीरामजी आये थे, आप वहां गल्लेका [illegible] करते रहे। आपके ४ पुत्र हुए, बाबू लक्ष्मीनारायणजी, बाबू जगन्नाथजी, बाबू [illegible]

कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल T No 4002 B. B. तारका पता Suraj—यहां गल्ला,तीसी, आढ़त तथा बैंकिंगका व्यापार होता है।

बनारस मेसर्स श्रीराम सूरजमल,नीलकंठ महादेव—यहां गल्ला और बैंकिंगका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल नयागंज, T. A. Suraj गल्ला, बैंकिंग व थोकका व्यापार होता है।

आगरा—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल—आढ़त और थोकका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त यू० पी० के देहातोंमें आपकी और भी कई ब्रांचेज हैं।

मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ

इस फर्मके मालिक बाबू जगन्नाथजीके पुत्र बाबू रामनाथजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां गल्ला, बोरे और हेसियनका कारबार होता है।

बनारस—श्रीराम जगन्नाथ, नीलकंठ महादेव—यहां सराफी लेनदेन होता है।

इसके अलावा श्रीराम जगन्नाथके नामसे सकलडीहा तथा लखीसरायमें गल्ला और आढ़तका काम होता है।

सर स्वरुपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्ममें इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सर हुकुमचन्दजी और बीकानेरके राय बहादुर स्व० हरिकृष्णदासजीके कुटुम्बका साझा है। इसका आफिस ३० क्लाइव स्ट्रीटमें है। कलकत्तेमें इस फर्मके अंडरमें जूटमिल,स्टील वर्क्स आदि चल रहे हैं। इसका विस्तृत परिचय मिल मालिकोंमें दिया गयाहै। सर हुकुमचन्दजीका परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें सेंट्रल इण्डिया विभागके इन्दौरके पोर्शनमें दिया गया है। यहां जूट, हेसियन, गनी आदिका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स हरनन्दराय बद्रीदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ दीनानाथजी गोयनकाके पुत्र बाबू सत्यनारायणजी गोयनका, बाबू गंगाधरजी गोयनका एवं बाबू दुर्गाप्रसादजी गोयनका हैं। आपकी फर्ममें सेठ लक्ष्मीनारायणजी कानोड़िया अब भी काम कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्व: सेठ शिवनजी कानोड़िया

स्व: सेठ लक्ष्मीनारायणजी कानोड़िया

सेठ [illegible]लालजी कानोड़िया

स्व: सेठ सूरजमलजी कानोड़िया

स्वर्गीय बाबू हरगोविन्दरायजी डालमियां

स्वर्गीय बाबू मथुरादासजी डालमियां

स्वर्गीय बाबू गुजरमलजी डालमियां

रायबहादुर सेडमलजी डालमियां

आपको भारत गवर्नमेंटने सन् १९२५ ई०में रायबहादुरकी सम्माननीय उपाधिसे विभूषित किया है। आपका कुटुम्ब कलकत्ता तथा मिवानीमें बहुत प्रतिष्ठाकी निगाहोंसे देखा जाता है। अग्रवाल समाजमें होनेवाले हरएक कार्योंमें आपका अच्छा सहयोग रहता है। आपकी ओरसे सेठ हरगोविन्दरायजी डालमियाके नामसे चिड़ावामें एक स्कूल चल रहा है। इसी प्रकारके हर एक धार्मिक कार्योंमें आप बराबर योग देते रहते हैं।

आपकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरगोविन्दराय मथुरादास ७० कॉटन स्ट्रीट—इस फर्मका यहां हेड ऑफिस है। तथा बोरेका व्यापार होता है।

औरियंटल कॉटन मिल अमृतसर—यह आपकी प्राइवेट मिल है। वर्तमानमें इसमें २२११ स्पिंडल और २५४ लूम्स काम करते हैं।

मेसर्स हरगोविन्दराय मथुरादास दुवराजपुर (बंगाल)—यहां आपकी एक राइस और एक आइल मिल है।

मेसर्स मथुरादास सेढ़मल चौकीदला दिल्ली—यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।

ओरियंटल हाइड्रे जूट प्रेस उल्टाडांगा रोड—कलकत्ता—यहां जूट प्रेस है।

मेसर्स हरगोविन्दराय मथुरादास ७० कॉटन स्ट्रीट कलकत्ता—यहां बोरेका व्यवसाय होता है।

रा० ब० बाबू सेढ़मलजी डालमियाको बागीचोंसे विशेष प्रेम है। आपने चिड़ावामें एक छोटासा गार्डन अच्छी लागतसे तैयार किया है। उस छोटेसी जगहमें आपने कई [illegible] किस्मके [illegible] तैयार कराये हैं।

मेसर्स हनुमानबक्स पोद्दार

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर-स्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके [illegible] सज्जन हैं। [illegible] संवत् १९६० में सेठ [illegible] गणपतराय [illegible] के नामसे कपड़ेका व्यापार शुरू किया, तथा आपके छोटे भाई सेठ [illegible] [illegible] [illegible]। संवत् १९७० तक आप इस नामसे [illegible] करते रहे। पश्चात् १९७१ [illegible] इस फर्मके [illegible] हनुमानबक्सके नामसे कपड़ेका व्यापार [illegible] किया। और अब संवत् १९८१ [illegible] यह फर्म [illegible] तथा [illegible] व्यापार कर रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ [illegible] पुत्र बाबू हनुमानबक्सजी [illegible] बाबू [illegible] हैं।

कलकत्ता — मेसर्स लक्ष्मीनारायण सूरजमल —
कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण कानोड़िया कम्पनी —
बनारस—श्रीराम लक्ष्मीनारायण नीलकंठ महादेव—
कानपुर—सूरजमल चांदमल—यू० पी० की ब्रांचेज—श्रीराम लक्ष्मीनारायणके नामसे
दिलदार नगर, सकलडीहा, सैदराजा कचौली (फैजाबाद), सन्दोगंज [फैजाबाद]
सीतापुर डिस्ट्रिक्टमें—सिधौली, महमूदाबाद, कमालपुर, सहजनवां [गोरखपुर]
अभी कुछही मास पूर्व इस फर्मके मालिक बाबू चांदमलजी, बाबू छोटेलालजी तथा
जगन्नाथजी की अलग २ फर्में हो गईं जिनका परिचय निचे दिया गया है। इस कुटुम्बका सम्मि
व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।
कलकत्ता मेसर्स लक्ष्मीनारायण कानोड़िया कम्पनी यहां हेसियन गनीकी दलालीका बहुत ब
बिजिनेस होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण चांदमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू चांदमलजी और आपके पुत्र बाबू रामसुन्दरजी हैं। बाबू चांदमलजी मेसर्स मेकलाड एन्ड कम्पनीके जूटमिल डिपार्टमेंटके इण्डियनसोल ब्रोकर और डायरेक्टर हैं। आपका विस्तृत परिचय ऊपर दियाजाचुका है। इस फ़र्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।
कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण चांदमल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां हेसियन, गनी और गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।
बनारस—श्रीराम लक्ष्मीनारायण—यहां सराफी लेन देन, गल्ला और आढ़तका काम होता है, यह फर्म पुराने ही नामसे बाबू चांदमलजीके बड़े होनेसे इनके हिस्सेमें आई है।
ब्रांचेज जमनियां, दिलदार नगर, सैदपुर, मिटरी, रुदौली, सन्दरगंज, सिधौली, महमुदाबाद, और सहजनवां

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल

इस फर्मके मालिक बाबू छोटेलालजी कानोड़िया हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आप भी मेसर्स मेकलाड एण्ड कम्पनीके जूट मिल डिपार्टमेंटके इण्डियन सोल ब्रोकर और डायरे... आपके कुटुम्बका विस्तृत परिचय उपर दिया गया है। वर्तमानमें ...
इस प्रकार है।

कलकत्ता – मेसर्स गणपतराय कयाल एण्ड कम्पनी ७ लायंस रेंज T. NO 4285 Cal यहां गव्हर्नमेंट पेपर्स तथा शेअर्सका व्यापार और ब्रोकरेजका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गजानंद रामप्रताप ६ हलसी बगानरोड—यहां कनस्तर, डिबिया तथा टीनकी चीजें बनानेका कारखाना है इसके अलावा टीन प्लेटका इम्पोर्ट और गव्हर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है। यह फेक्टरी ३० वर्षोंसे काम कर रही है।

आगरा—मेसर्स गजानंद रामप्रताप बेलनगंज—कनस्तर तथा टीनकी चीजें बनानेका कारखाना है।

मेसर्स जी० डी० लोयलका एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूलनिवास स्थान पिलानी (जयपुर) है। आप अग्रवाल समाजके लोयलका सज्जन है। इस परिवारके पूर्व पुरुष सेठ भगवान दासजी लोयलकाने सर्व प्रथम अपना व्यवसाय बम्बईमें जमाया और उसे उन्नत बनाया। बम्बईमें आप पृथ्वीराज भगवानदासके नामसे रुईका अच्छा व्यापार करते थे। आपके दो पुत्र हुए जिनमें बाबू रामचन्द्रजी लोयलका बम्बईके कारबारका प्रबन्ध करते रहे और बाबू घनश्यामदासजी लोयलकाने लगभग १ वर्ष पूर्व कलकत्ते आकर उपरोक्त फर्मकी स्थापना कर शेअरका व्यवसाय आरम्भ किया और उसे उन्नत बनाया। आप कलकत्ता फर्मका संचालन करते हैं। इस लोयलका परिवारकी ओरसे इनके निवासस्थान पिलानीमें लोयलका अस्पताल चल रहा है जिसका संचालन शेखावाटीके प्रसिद्ध चिकित्सक डा० गुलजारीलालजी कर रहे हैं। इसी प्रकार आप लोगोंकी ओरसे वहां एक जाट बोर्डिङ्ग हाउस भी है जहां जाटोंके लड़के शिक्षा पाते और रहते हैं। कलकत्तेकी प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओंको समय २ पर आपकी ओरसे सहायता मिलती रहती है। सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र बाबू चिरंजी लालजी लोयलका एक शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदासजीके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी लोयलका और सेठ घनश्यामदासजी लोयलका हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जी० डी० लोयलका एण्ड कम्पनी ७ लियान्स रेंज R.E.P.—यहां स्टाकएक्सचेंज और शेयर तथा चांदी, हेसियन और पाटका ब्रोकरेज बिजिनेस होता है।

बम्बई—मेसर्स आर० सी० लोयलका, वाडिया बिल्डिङ्ग दलाल स्ट्रीट—यहां स्टाक एक्सचेंज तथा बुलियन और रुईका काम होता है।

राधेलालजी को आपरेटिव्ह इलाहाबादके डिपुटी डायरेक्टर हैं इसी प्रकार आपके भतीजे रायसाहब बाबू जुगल किशोरजी चौबे अपने यहांके स्पेशल मैजिस्ट्रेट हैं। यह परिवार शिक्षित और प्रतिष्ठित है। बाबू दामोदरजी चौबेने सामान्य स्थितिमें कलकत्ता आकर व्यवसाय आरम्भ किया और अपनी प्रतिभा एवं योग्यतासे उसे सुदृढ़ एवं समुन्नत बना दिया। यहांके शेअरके व्यापारियोंमें आपकी प्रतिष्ठाका द्योतक स्टाक एक्सचेंज भवनमें लगाया गया आपका चित्र है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—दमोदर चौबे एण्ड कम्पनी ७ लियान्स रेंज T. A. Pushpolela —यहांपर शेयर और स्टाक तथा गवर्नमेंट पेपरके डिलर्स तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

कानपुर—पुरुषोत्तमदास बनारसीदास इलसीगेड - यहां आढ़त और बैङ्किङ्गका काम होता है।

होलीपुरा (आगरा) चौबे जुगुल किशोर—यहां आपकी बहुत बड़ी जमींदारी और स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स देवीदित्त हजारीमल दुद्वेवाले

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान दूदवा खारा (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गौत्रीय सज्जन हैं।

दूदवा निवासी सेठ तेजपालजीके ३ पुत्र थे, सेठ सुन्दरमलजी, सेठ लच्छीरामजी एवं सेठ देवीदत्तजी। इनमेंसे कलकत्तेमें सर्व प्रथम सेठ लच्छीरामजी आये। सेठ लच्छीरामजीके बाद उनके पुत्र सेठ बीजराजजी कलकत्ता आये। सेठ लच्छीरामजीके तीन पुत्र थे, सेठ बीजराजजी, सेठ बल्देवदासजी एवं सेठ बसन्तलालजी। एवं सेठ देवीदत्तजीके दो पुत्र हुए। सेठ हजारीमलजी एवं सेठ जगनप्रसादजी। संवत् १९३७ में सेठ बीजराजजी तथा सेठ हजारीमलजीने मिलकर बीजराज हजारीमलके नामसे गवर्नमेंट पेपर तथा शेअर्सका व्यापार और दलालीका कारबार शुरू किया, यह काम आप इस नामसे संवत् १९४५ तक करते रहे। पश्चात् सेठ बीजराजजीने अपना साझा अलग कर लिया। उसी समयसे सेठ बल्देवदासजी, सेठ बसन्तलालजी, सेठ हजारीमलजी एवं सेठ जगनप्रसादजी चारों भाई मिलकर बल्देवदास हजारीमलके नामसे कम्पनी कागज, शेअरका व्यापार और दलाली करते रहे, तथा बल्देवदास बसन्तलाल का एक अलग फर्म लच्छीराम बसन्तलालके नामसे कमीशनएजेन्ट और कपड़ा चालानीका काम करता रहा। उसके थोड़ेही समय बाद सूतापट्टीमें मेसर्स बल्देव- दास हजारीमलके नामसे कपड़ेका कारबार खोला गया। संवत् १९५७ के बाद आप सब

राय हजारीमलजी दूदेंवाला बहादुर

स्वर्गीय बाबू जुगलप्रसादजी दूदेंवाला

भी हुआ है जिनमें हिन्दू विश्व विद्यालयको, कलकत्तेके ट्रापिकल मेडीसन इन्स्टीट्यूटको, विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पतालको, लेडीडफरिन हास्पिटलमें प्रसूति गृह निर्माण कार्यके लिये, पुरीके अनाथालयको, आदि दान मुख्य हैं। आपने मंदिरोंके जीर्णोद्धार और निर्माण कार्यके लिये भी बहुतसे दान किये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स देवीदत्त हजारीमल ९ ए मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट T. No. 2097 B.B.—यहां आपका रेसिडेंस है।

कलकत्ता—मेसर्स देवीदत्त हजारीमल ७ लियांसरेंज (आफिस) T. No 2096 Cal—यहां बैङ्कर्स, लैंडलार्डस, शेअर्स, गव्हर्नमेंट, पेपर्स स्टाकडीलर्स और ब्रोकर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथ ९६ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट T. No 3570 B.B—यहां रेसिडेंस है।

कलकत्ता - मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथ ७ लायंसरेंज (आफिस)—बैङ्कर्स, स्टॉक एण्ड शेअर डीलर्स तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स नारायणदास खण्डेलवाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मिर्जापुर (यू० पी०) है। आप खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। मिर्जापुरमें आपकी फर्मपर बहुत समयसे मूलचन्द नारायणदासके नामसे व्यापार होता है। कलकत्तेमें सन् १९१४ ई०में यह फर्म स्थापित हुई। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत नारायणदासजी खण्डेलवालने की। आप बाबू मूलचन्दजी खण्डेलवालके पुत्र हैं। बाबू मूलचन्दजी, बड़े सज्जन पुरुष थे। आप बनारस जौनपुर इत्यादि यू० पी०के बहुतसे डिस्ट्रिक्टोंमें फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट रहे थे। आपका स्वर्गवास सन् १८९८ ई०में हुआ। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत नारायणदासजी खण्डेलवाल, श्रीयुत केदारनाथजी खण्डेलवाल, और श्रीयुत कैलाशनाथजी खण्डेलवाल हैं। आप तीनों भाई सुशिक्षित, योग्य और उदार सज्जन हैं। व्यापारी समाजमें इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। यह परिवार सभी दृष्टियोंसे उन्नत है। सार्वजनिक कार्योंमें भी आपलोग समय २ पर अच्छा भाग लेते रहते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हेड ऑफिस—कलकत्ता-मेसर्स नारायणदास खंडेलवाल एन्ड कम्पनी १२ मिशन रो०
इस फर्मपर शेअर स्टाकका बिजिनेस होता है।

मेसर्स जुहारमल डागाएण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री जुहारमलजी डागा और हरदेवदासजी डागा हैं। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं आपका निवासस्थान बीकानेर है। श्री जुहारमलजी १८।२० वर्षोंसे शेअरका कामकाज करते हैं।

बाबू जुहारमलजी माहेश्वरी पंचायतके ६ वर्षोंसे सेक्रेटरी हैं। स्थानीय डीडू माहेश्वरी पंचायतके विद्यालयके भी आप सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता —मेसर्स जुहारमल डागा एण्ड कं० ७ लायंसरेंज—यहां शेअर ब्रोकरेजका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जुहारमल परशुराम २०१ हरिसन रोड—यहां देशी कपड़ेका कारबार होता है।

मेसर्स दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान होलीपुरा (जिला आगरा) यू० पी० है। आप लोग ब्राह्मण समाजके चौबे सज्जन हैं। सर्व प्रथम बाबू दामोदरजी चौबे लगभग ६० वर्ष पूर्व कलकत्ते आये और थोड़े समय बादही आपने गवर्नमेंट पेपर्सका कार्य्य आरम्भ करदिया। इस व्यवसायमें ही आपने उन्नति की और फलतः आजीवन यही काम करते रहे। योंतो आपने अपने व्यवसायमें क्रमशः उन्नति प्राप्तकी परन्तु सन् १९०२ में बोअरवार नामक युद्ध छिड़जानेके कारण जब सरकारी कागजोंके बजारमें भारी उथल पुथल हुआ तब आपने उससे अच्छा लाभ उठाया और अपने व्यवसाय को सुदृढ़ बनाया। आप गवर्नमेंट पेपर्सके बड़े व्यापारियोंमें मानेजाने लगे और फल यह हुआ कि आपने व्यवसायकी उन्नतिके साथही मान और प्रतिष्ठा भी अच्छी प्राप्तकी आपको लोग गवर्नमेंट पेपरका 'किङ्ग, कहा करते थे। आपका स्वर्गवास हुए ७।८ वर्ष होगये। आपके निवासस्थानपर आपकी बहुतसी बड़ी स्थायी सम्पति है जिसका सहज अनुमान इसीसे किया जासकता है कि लगभग २२ हजार रुपये सालियाना आपको सरकारी मालगुजारी देनी पड़ती है। आपके नामसे 'दामोदर मेमोरियल स्कूल,' नामका एक स्कूल भी आपको निवास स्थानपर चल रहा है। अकालके समय आप सदैव अकाल प्रपीड़ितोंको सहायता देते रहे हैं।

यह सब कारबार एक सम्मिलित परिवारकी सम्पत्तिके रूपमें है। इसका मालिक बाबू दामोदरजी चौबेका भारी परिवार है। वर्तमानमें इसके प्रधान संचालक बाबू रघुवरदयालजी, बाबू बनारसी दासजी, बाबू शंकरलालजी तथा बाबू पुरुषोत्तमलालजी हैं। बाबू दामोदरजी चौबेके दत्तक पुत्र बाबू

स्व०.सेठ विशुनदयालजी पोद्दार
(विशुनदयाल दयाराम)

स्व० सेठ गजानन्दजी पोद्दार
(विशुनदयाल दयाराम)

श्री सा० दयारामजी पोद्दार
(विशुनदयाल दयाराम)

रिक्त आपकी ओरसे मारवाड़ी बालगगाड़ी नामक एक बहुत सुन्दर इमारत सेन्ट्रल एवेन्यूमें बन रही है। श्रीयुत दयारामजीके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे श्रीसत्यनारायणजी, देवीप्रसादजी, और लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब पढ़ते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

(१) मेसर्स बिशनदयाल दयाराम, ताराचन्ददत्त स्ट्रीट (T.A. Insight. Phone 1735 B B)—यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है। यहांपर बैंकिंग और शेयरका बिजिनेस होता है।

(२) मेसर्स बिशनदयाल दयाराम २ रॉयल एक्सचेंज (Phone 2207 Cal)—यहां आपका आफिस है। यहांपर भी शेअर,स्टाक और गवर्नमेण्ट पेपरका बड़ा बिजिनेस होता है। आपके यहांसे पाक्षिक शेअर मार्केटकी रिपोर्ट भी निकलती है।

बम्बई—मेसर्स बिशनदयाल दयाराम ५५ अपोलो स्ट्रीट (T. A. Juteshare) यहांपर कलकत्तेके शेअरोंका व्यापार होता है।

राय बहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथानी

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान दूदवा खारा (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। दूदवा निवासी सेठ तेजपालजीके ३ पुत्र बाबू सुन्दरमलजी, बाबू लच्छीरामजी एवं बाबू देवीदत्तजी थे। इनमेंसे सेठ लच्छीरामजी कलकत्तेमें आये। सेठ लच्छीरामजीके पुत्र सेठ बीजराजजी, सेठ बलदेवदासजी सेठ बसंतलालजी। एवं सेठ देवीदत्तजीके पुत्र सेठ हजारीमलजी और जगनप्रसादजी हुए। संवत् १६३७ में सेठ लच्छीरामजीने कारबार आरंभ किया। संवत् १६४५ में सेठ बीजराजजी अलग हो गये, और शेष चारों भ्राता संवत् १६५७ तक शेअर्स और कपड़ेका सम्मिलित व्यापार करते रहे।

संवत् १६५७ में सेठ देवीदत्तजीका कुटुम्ब इस फर्मसे अलग हो गया और तबसे सेठ बलदेवदासजी एवं सेठ बसंतलालजी दोनों भ्राता मिलकर लच्छीराम बसंतलाल एवं बलदेवदास बसंतलालके नामसे कारबार करते रहे।

सन १६१४ में आप दोनों भाइयोंका कुटुम्ब भी अलग २ हो गया और तबसे राय बहादुर सेठ बलदेवदासजी की फर्म मेसर्स बलदेवदास रामेश्वरके नामसे एवं सेठ बसंतलालजीकी फर्म लच्छीराम बसंतलालके नामसे अपना २ स्वतंत्र व्यापार कर रही है। इस कुटुम्बमें श्री बलदेवदासजी नाथानी व्यवसाय चतुर, और मेधावी होगये हैं। आपका शेअरका कारबार करनेका बहुत बड़ा साहस था,

भाइयोंकी फर्में फिर अलग अलग हुईं, जिनमेंसे सेठ बलदेवदासजी तथा बसन्तलालजीकी फर्म लच्छीराम बसन्तलाल एवं बलदेवदास बसन्तलालके नामसे कारवार करने लगी। सेठ हजारीमलजी तथा सेठ जगनप्रसादजीकी फर्म देवीदत्त हजारीमल तथा हजारीमल जगनप्रसादके नामसे हुई।

सन् १९१३ ई०में [संवत् १९७० में] सेठ जगनप्रसादजीका स्वर्गवास हुआ, तब दोनों भाइयोंका कारवार फिर अलग अलग हुआ, तबसे सेठ हजारीमलजीकी फर्म देवीदत्त हजारीमल तथा हजारीमल मोहनलालके नामसे हुई और जगनप्रसादजीकी फर्मका नाम जगनप्रसाद बैजनाथ पड़ा। सेठ जगनप्रसादजीके स्वर्गवासी होनेके समय बाबू बैजनाथजी नाबालिग थे, अतएव उनकी सम्पत्तिके ट्रस्टी श्री सेठ बलदेवदासजी सेठ हजारीमलजी आदि सज्जन मुकर्रर हुए। बाबू बैजनाथजीके बालिग होनेपर उनकी सम्पत्ति उन्हें सम्हला दी गई।

इस कुटुम्बकी कलकत्तेके मारवाड़ी व्यापारी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है। आपका आरम्भसेही कम्पनी कागज और शेअर्सका व्यापार रहा है, तथा इस व्यापारमें इस कुटुम्बने लाखों रुपयोंकी दौलत पैदा की है, दौलतके साथ साथ साख, सम्मान एवं इज्जत भी आपने काफी पैदा की है। इस समय इस कुटुम्बकी बलदेवदास रामेश्वर, लच्छीराम बसन्तलाल, देवीदत्त हजारीमल तथा जगनप्रसाद बैजनाथके नामसे चार बड़ी बड़ी मातबर फर्में चल रही हैं। ये फर्में शेअर बाजारके प्रधान प्रधान व्यापारियोंमें मानी जाती है।

वर्तमानमें उपरोक्त फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ हजारीमल दूदवेवाले हैं। आपकी वय इस समय करीब ६२ वर्षकी है। आप बहुत सरल प्रकृतिके महानुभाव हैं। ता० १ जनवरी सन्१९१५ में रत गवर्नमेंटने आपको रायबहादुरके खिताबसे सम्मानित किया है। आपने मारवाड़ी एसोसियेशन, द्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल तथा विद्यालय, कलकत्ता पांजरापोल आदि यहां की प्रधान न संस्थाओंके सभापतिका आसन भी सुशोभित किया है। भारतके बड़े बड़े तीर्थ स्थानोंमें लोगोंके दान सुशोभित हो रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय इस प्रकारके विशुद्ध व्यापार सम्बन्धी में विषयान्तर हो जानेकी आशंकासे नहीं दे सकते फिर भी हम इतनातो अवश्यही कि सेठ साहबका औदार्य बहुत बढ़ा हुआ है आपकी धार्मिक मनोवृत्ति ही आपको कार्यमें सहयोग देनेके लिये आगे बढ़ाती है। ऐसे उच्च कोटि के व्यवसायी और इस मनुष्योचित स्वार्थत्याग वास्तवमें सेठजीके समान परम आस्तिककी महानताका एकमात्र ण है आपकी कितनी भव्य एवं मनमोहक धर्मशालायें भारतके प्रसिद्ध स्थानों जैसे श्री ी, श्रीबद्रिकाश्रम, श्रीद्वारिकापुरी, श्रीबैजनाथधाम, नैमषारण्य, आदिमें बनी हुई हैं। आपकी नीही सड़कें,कुआं,कुण्ड आदि बनवाये गये हैं। इतनाही क्यों आपकी ओरसे लाखोंका दान

इस फर्मकी व्यापारिक, धार्मिक तथा सामाजिक जगतमें अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित कर बा० रामेश्वरदासजीने अपनी स्थाई सम्पत्ति बढ़ानेकी ओर भी बहुत बड़ा लक्ष रक्खा। मुक्ताराम बाबू स्ट्रीटका आपका निर्माण कराया हुआ विशाल गोपाल भवन, कलकत्तेकी नामी और सुन्दर इमारतोंमें माना जाता है। सन् १९१८ में आपने कलकत्तेके प्रसिद्ध रईस बाबू दुलीचन्दजीका उपवन मोल लिया जो इस समय आपकी अधीनतामें है। इसका वर्तमान नाम श्रीगोपाल बाग है, बारकपुर ट्रंक रोडपर भी आपका एक बगीचा बना हुआ है।

वर्तमानमें आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े श्रीभागीरथजी एवं सत्यनारायणजी व्यापारमें योग देने लगे हैं एवं इनसे छोटे श्रीमहावीरजी तथा श्रीहरीरामजी पढ़ते हैं सबसे छोटे छई-गोपाल हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रायबहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथजी ६७।१ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (रेसिडेंस) यहां आपका विशाल गोपाल भवन बना है एवं प्रधान गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स रायबहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथजी २ रायल एक्सचेंज प्लेस (आफिस) यहां शेअर तथा हेसियनका बहुत बड़ा कारबार होता है।

चौबीस पर्गना नामक जिलेके अनन्तपुर नामक पर्गनेमें आपकी बहुत बड़ी जमींदारी भी है।

मेसर्स मगनीराम बांगड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक बा० मगनीरामजी एवम रामकुमारजी बांगड़ हैं। यह फर्म कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें बहुत अच्छी समझी जाती है। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता ही है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० २०० में चित्रों सहित दिया गया है। यह फर्म यहां शेअरोंका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है। इसकी यहां बहुत स्थायी सम्पत्ति भी है। इसका आफिस रायल एक्स चेंज प्लेस और गद्दी बांसतला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स मुकुन्दलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास भिवानी (पंजाब) है। आप वैश्य समाजके सज्जन हैं।

२ कलकत्ता—मेसर्स केदारनाथ खंडेलवाल एण्ड कम्पनी १२ मिशन रो० इस फर्मपर च[...]
बड़ा बिजिनेस होता है।
३ मिर्जापुर—मेसर्स मूलचन्द नारायणदास—इस फर्मपर बैंकिंग और कपड़ेका व्यापार होत[...]

७७[...]

मेसर्स नरसिंहदास मातूलाल

इस फर्मके मालिक भिवानी (हिसार) के निवासी अग्रवाल समाजके केजड़ीवाल स[...] हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू नरसिंहदासजी केजड़ीवालके हाथोंसे ४० वर्ष पूर्व हुआ। श[...] बाजारमें आपकी फर्म पुरानी मानी जाती है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू नरसि[...] दासजी एवं आपके भ्राता बाबू मातूलालजी हैं। बाबू नरसिंहदासजीके पुत्र बा० केदारनाथजी ए[...] रामकुमारजी हैं तथा बा० केदारनाथजीके पुत्र डूंगरमलजी हैं। आप सब सज्जन व्यापारमें भाग[...] लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता-नरसिंहदास मातूलाल ७ लियान्सरेंज-यहां शेअर एण्ड स्टाकका ब्रोकर्स बिजिनेस होता है।

मेसर्स बिशनदयाल दयाराम पोद्दार

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना ४० वर्ष पूर्व श्रीमान् सेठ बिशनदयालजीने की। आपका स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गजाननजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। इसके पूर्व यह फर्म बिशनदयाल गजाननके नामसे काम करती थी। इसकी विशेष तरक्की सेठ गजाननजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े सज्जन और व्यवसाय दक्ष पुरुष थे। आपका शरीरान्त सन् १९२८ ई०में होगया। अब इस फर्मके कार्य्यका संचालन श्री० सेठ गजाननजीके पुत्र श्रीबाबू दयारामजी करते हैं। आप बड़े सज्जन, उदार और व्यवसाय दक्ष पुरुष हैं। कलकत्तेके शेअर मारकेटमें इस फर्मने बहुत अच्छी उन्नति की है।

इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुची रही है। आपकी ओरसे कलकत्तेमें मारवाड़ी छात्र निवास नामक एक संस्था चल रही है। इसके लिये श्री सेठ गजाननजी १। लाख रुपयेकी रकम निकाल गये हैं। इसका प्रबन्ध बहुत अच्छा है। इसके अति-

मेसर्स रामदेव चोखानी

इस फर्मके वर्तमान संचालक राय बहादुर रामदेवजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थमें कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां इस नामसे शेअर और गवर्नमेंट पेपरका व्यापार होता है। इसका आफिस नं० ७ लियांस रेंजमें है।

रामकुमार केजड़ीवाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामकुमारजी और बाबू विलासरायजी केजड़ीवाल हैं। आप चिड़ावा (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इसका स्थापन आपहीके हाथोंसे हुआ। इसके पहले आपके पूर्वजोंने करीब ५० वर्ष पूर्व मेसर्स मिसरीलाल लक्ष्मीनारायण नामकी फर्म स्थापितकी थी। इस फर्ममें मिर्जापुरके प्रसिद्ध रईस मेसर्स सेवाराम मन्नूलालका साझा है।

वर्तमानमें इसका व्यापार इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स मिसरीलाल लक्ष्मीनारायण सूतापट्टी—T. No 2100 B.B. यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार तथा शराफीका कारबार होता है।

कलकत्ता—रामकुमार केजड़ीवाल ७ लियांस रेंज - यहां शेअर्स और स्टाक ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण सोनथलिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सोनथलिया सज्जन हैं। इस फर्मके मालिकोंके पूर्व पुरुष सेठ सोभीरामजी संवत् १९११ में देशसे कलकत्ता आये। अफीम आदिके व्यापारमें आपने अच्छा पैसा पैदा किया। सम्पत्ति प्राप्त करनेके साथ २ आपने अपनी मान एवं प्रतिष्ठा भी अच्छी बढ़ाई। आप अपने समाजके सम्माननीय [illegible] सुधार [illegible] थे। परोपकार करनेकी भावनाएं आपके हृदयमें खूब थी।

सेठ सोभीरामजीने अपने भतीजे सेठ रघुनाथरायजीको कपड़ेकी दुकान कराई और सोभीराम रघुनाथरायके नामसे आपका साझेमें व्यापार चलने लगा। इस फर्ममें भी आपने अच्छी तरक्की की। पश्चात् रघुनाथरायजीके स्वर्गवासी हो जाने पर आप सोभीराम रामदेवके नामसे अपना व्यापार करने लगे। इस प्रकार पूर्ण गौरव मय व्यावसायिक जीवन व्यतीत करते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ।

शेअरके व्यापारमें आपने करोड़ों रुपयोंकी दौलत पैदाकी, शेअर बाजारके आप ख्याति प्राप्त
माने जाते थे। इस बाजारके इतिहासमें आपका नाम बहुत ऊंचा है। आपने अपने अदम्य उ
शेअरके व्यापार द्वारा अटूट सम्पत्ति पैदाकर धार्मिक कार्योंकी ओर भी अच्छा लक्ष रक्खा, मे
रामेश्वर,द्वारिका, तथा पुष्करराजमें आपने विशाल धर्मशालाओंका निर्माण करवाया। कलकत्तेके श्री
श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पतालको आपने १ लाख ५१ हजारकी भारी रकम प्रदान की
इसके अतिरिक्त और भी आपने लाखों रुपयोंका दान किया है। जैसे मेटर्निटी हाउस नीलमनी स्ट्रीट
प्रसूति गृहके लिये, ५० हजार, ३५ हजार गीपोर्ट स्कूलमें, २१ हजार कालीघाट स्नानघाटके लिये,
२० हजार ब्रह्म समाजके स्कूलके लिये, १ लाख रुपेया एम० आर० दासके स्कूलके लिये, २०
हजार कुरहा स्टेशनपर तलाव बनवानेमें, ७५ हजार हिन्दू विश्व विद्यालयको वैश्य कालेजके लिये,
२५ हजार गोखले मेमोरियल स्कूलके लिये आदि २ कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें आपका बहुत बड़ा
सम्मान था, आपको भारत सरकारने "राय बहादुर" की पदवीसे सम्मानित किया था। संवत्
१९२१ में आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय राय बहादुर सेठ बल्देवदासजीके पुत्र श्री० बाबू
रामेश्वरदासजी नाथानी हैं। अपने पूज्य पिताजीके स्वर्गवासी होनेके समय आपकी अवस्था ३५
वर्ष की थी, एवं सेठ साहबकी मौजूदगीहीसे आप फर्मके सारे कारबारको सम्भालने लग गये। फल
यह हुआ कि आपके पिताजीके बहुत बड़े व्यापारिक साहसका आपके जीवन पर भी असर पड़ा एवं
आपभी शेअर तथा चांदीका काम करने वाले व्यापारियोंमें बहुत ऊंची श्रेणीके व्यापारी माने जाते हैं।

आपका जीवन प्रधानतया धार्मिक जीवन है। ब्राह्मणोंकी सहायतामें आपका हृदय उदारता
पूर्वक भाग लेता रहता है। इस समय आप हजारों रुपया प्रति वर्ष ब्राह्मणोंकी सहायतार्थ लगाते
हैं। आपने ४० हजार रुपयोंके जूट शेअर्स कलकत्ता पाञ्जरापोलको दिये हैं जिनके व्याजकी रकम
पिंजरापोलके प्रबन्ध कार्यमें जाती है। श्रीविशुद्धानन्द स० मा० अस्पतालमें आपने २५ हजारकी
लागतसे अपनी पूज्य माताजीके नामसे एक वार्ड बनवाया है। आपने करीब १। लाख रुपयोंकी
लागतसे श्रीजनकपुर रोड एवं जनकपुर धाममें दो सुन्दर धर्मशालाओंका निर्माण करवाया। इसी
प्रकार साहबगंज (तिवारीपट्टी) गोरखपुर तथा देशमें बहल नामक गांवमें धर्मशालाएं बनवाई गईं, इस
कुटुम्ब द्वारा स्थापित दुद्धवेके नाथानी कष्ट निवारक फण्डमें आपकी बहुत ज्यादा सम्पत्ति लगी है,
आप उसमें बराबर दान देते रहते हैं। इसी प्रकारके अनेक धार्मिक कार्योंमें प्रतिवर्ष आप बहुत सम्पत्ति
दान करते रहते हैं। कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें होनेवाले चन्दोंमें आपका ...
हा करता है।
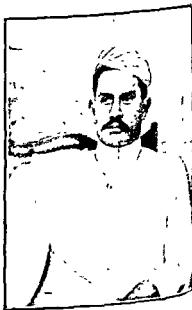
बा० महावीरामजी सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)

बा० मुरलीधरजी सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)

बा० [illegible] सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)

बा० केसरदेवजी सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)

इस फर्मका स्थापन करीब १९०८ में बाबू मुकुन्दलालजीके हाथोंसे हुआ। तथा इसके व्यवसायकी तरक्की भी आपहीके हाथोंसे मिली। इस समय आपके यहां शेअर स्टॉक एण्ड गवर्नमेंट पेपर्सका बिजिनेस होता है। आपका आफिस लियांसरेंजमें है वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री० मुकुन्दलाल-जी तथा आपके ३ पुत्र बाबू बिसेसरलालजी, बाबू लखपतरामजी तथा हरिचंद्रामजी हैं। आप सब लोग बिजिनेसमें भाग लेते हैं। आपके आफिसका पता १४६ हरिसन रोड है।

मेसर्स मुरलीधर सराफ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरू (बीकानेर) है। आप अग्रवाल समाजके सराफ सज्जन हैं। सेठ शिवप्रसादजी सराफ संवत् १९२८ में देशसे अमृतसर गये, वहांसे आप संवत् १९३८ में कलकत्ता आये। यहां आपने ११४२ में शिवप्रसाद भगवानदासके नामसे कपड़ेका कारबार शुरू किया, पश्चात् बिहार प्रांतके आरा वगैरा स्थानोंमें इसकी ब्रांचेज खोली गई।

सेठ शिवप्रसादजी सराफ समाज सुधारके कट्टर पक्षपाती थे। आप उपनिषध आदि वैदिक ग्रन्थोंसे विशेष प्रेम रखते थे, आपको कवितासे प्रेम था, हिन्दीमें लेख आदि आप लिखा करते थे। इसी प्रकारकी शिक्षा विषयक बातोंमें आपकी अधिक रुचि रहा करती थी। आपका शरीरान्त संवत १९८४ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी एवं बाबू मदनलालजी सराफ हैं। आपने अपने पिताजीकी मौजूदगी सेही ऑक्सिन आदिमें कपड़ेकी ब्रोकरेजका काम शुरू कर दिया था। सन् १९१४ में यूरोपीय युद्धके समय कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंजमें दलालीका कारबार शुरू किया तथा इस ओर अच्छी तरक्की हासिल की। बाबू मुरलीधरजी शेअर बाजारकी एक्जी-क्यूटिव्ह कमेटीके मेम्बर हैं। आपकी ओरसे चुरू स्टेशनके पास एक रमणीय बगीचा बना हुआ है। यहां गौओंके लिये जलकी भी व्यवस्था है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मुरलीधर सराफ ७ लियांसरेंज T.A. Shubh—यहां शेअर्सका होलसेल ब्रोकर व्यवसाय और बैंकिंग काम होता है।

कलकत्ता—मुरलीधर मदनलाल ७ लियांसरेंज T A Shubh कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छीराम बसंतलाल नाथानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ सागरमलजी नाथानी हैं। आपका मूल निवासस्थान चूरू (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ४० वर्ष पूर्व श्री सेठ बलदेवदासजी एवं आपके भाई श्रीसेठ बसंतलालजी की। आप ही दोनों सज्जनोंके हाथोंसे फर्मके व्यवसाय की अत्यधिक उन्नति हुई। सन् १९१४ तक दोनों भ्राताओंकी फर्म ज्वाइन्ट रूपसे व्यवसाय करती रही। इसके पश्चात् श्री सेठ बलदेवदासजी की फर्म बलदेवदास रामेश्वरदासके नामसे एवं श्री सेठ बसंतलालजीकी फर्म लच्छीराम बसंतलाल के नामसे अपना २ अलग व्यवसाय करने लगीं। श्रीसेठ बसंतलालजीका स्वर्गवास संवत १९८४ के मगसर मासमें हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मका कार्य आपके पुत्र श्री बाबू सागरमलजी संचालित करते हैं।

इस परिवारकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्मोकी ओर भी बहुत अधिक रुचि रही है। इस कुटुम्बकी ओरसे श्री विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पतालमें ५१०००) नगद तथा १ मकान दानमें दिया गया है। शोभपुर पींजरापोलके नीचे कचरापाड़ाके गोशाला ग्राउंडमें आपकी ओरसे एक मकान भी बनवाया गया है। इसकी जमीन श्री बाबू रामेश्वरलालजीने दी है। इनके अतिरिक्त श्रीरामेश्वर, द्वारिका, अयोध्या तथा मुजफ्फरपुरमें आपकी ओरसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं। इनमें सदावर्तका भी प्रबन्ध है। चूरूके नाथानी कष्ट निवारक फन्डमें भी इस परिवारने बहुत रुपया लगाया है। उसके सेक्रेटरी बाबू सागरमलजी हैं। इसी प्रकारके हरएक सार्वजनिक कार्मोमें आपलोग अच्छा सहयोग लिया करते हैं। कलकत्तेके अग्रवाल वैश्य समाजमें इस कुटुम्बकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है।

कलकत्तेके शेअर बाजारके इतिहाससे इस फर्मका बहुत सम्बन्ध है। शेअर बाजार एसोसियेशनके स्थापक आपही लोग हैं। आपने बड़े परिश्रमसे रिस्क उठाकर इसका स्थापन करवाया था। शेअरका व्यापार करने वालोंमें आपकी फर्म बहुत पुरानी मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स लच्छीराम बसंतलाल नाथानी T. A Nathani—यहां बेङ्किंग और कपड़ेकी आढ़तका व्यापार होता है।

२ कलकत्ता - मेसर्स बसंतलाल नाथानी ७ लाइंसरेंज T No 1058 —इस फर्मपर शेअर स्टॉक और गव्हर्नमेंट पेपर्सका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।
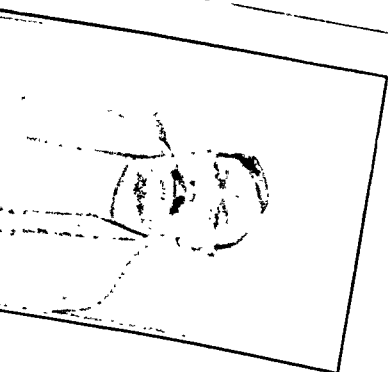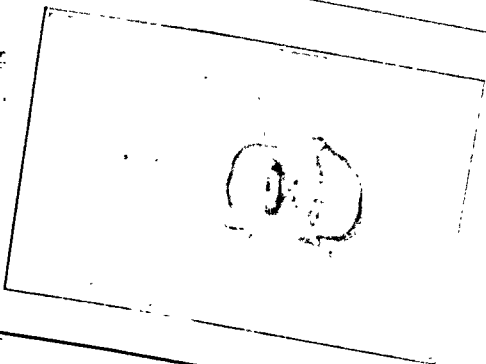
मेसर्स श्यामसुन्दरलाल खण्डेलवाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान आगरा (यू० पी०) है। आप खंडेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सन् १९१६ में बाबू श्यामसुन्दरलालजीके हाथोंसे कलकत्तेमें हुआ है। आपके पुत्र बाबू बिहारीलालजी, श्रीचंद्रालालजी एवं श्रीअमरनाथजी खंडेलवाल भी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपलोग शिक्षित हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्यामसुन्दरलाल खंडेलवाल ७ लायंसरेंज T No. 1624, 1625 Cal.—यहां शेअर स्टाक ब्रोकर्स एण्ड डीलर्सका व्यापार होता है।

कलकत्ता—श्यामसुन्दरलाल खंडेलवाल ६७ बागणसी घोष स्ट्रीट—T No 765 B. B.—यहां जूटका व्यापार होता है। तथा आपका निवास है। आपकी फर्म जूटवेलर्स एसोसियेशनकी मेम्बर है।

मेसर्स सदासुख कावरा एण्ड कम्पनी

इस फर्मके प्रधान संचालक बा० सदासुखजी कावरा हैं। इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीट है। नं० २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें इसका शेअरके व्यापारका आफिस है। यहां सब प्रकारके शेअरोंका व्यापार होता है। टेलीफोन नं० २६४६ कलकत्ता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें चांदी सोनेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हजारीमल सोमानी एण्ड कम्पनी

इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें है इस नामसे इसका आफिस २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। यहां यह फर्म शेअर और गवर्नमेंट पेपर्सका व्यापार करती है। इसका तारका पता Suraj mukhi है। टेलीफोन नं० है 1816 Cal. और 500 B B.। इसका विशेष परिचय चांदी सोनेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया है।

दानमल भूरामल
धनरूपमल गोलेछा
दिनानाथ नेवर
दुर्गाप्रसाद सराफ
द्वारकादास बांगड़
देवीदत्त हजारीमल
दुर्गादत्त जालान
देवेन्द्रनाथ सील
नागरमल गोयनका
नरसिंहदास मातूलाल
नारायणदास [illegible]
नन्दी एण्ड को०
नृपेन्द्रकुमार बोस
नवीनचन्द्र बड़ाल
नवकृष्णो दे
निकुंज कृष्ण दास
नरेन्द्र कृष्ण दत्त
एन० सी० मजूमदार एण्ड० को०
एन० एल० राय एण्ड को०
पी० सी० दे
पूरन चन्द्र सील
पन्नालाल दे
प्रेम [illegible] गुप्त
पी० सी० मल्लिक
[illegible] चन्द्र एण्ड ब्रदर्स
[illegible]
[illegible] एण्ड को०
[illegible]
[illegible]

बद्रीदास सराफ
विट्ठलदास द्वारकादास
बैजनाथ सराफ
बिसेसर प्रसाद ढांढनियां
बसंतलाल नाथानी
बोस एण्ड को०
बागला एण्ड को०
बालूराम लकड़
ब्रिजलाल मस्करा
बैजनाथ चम्पालाल
बैजनाथ अन्नीप्रसाद
बैजनाथ शर्मा
बद्रीदास सोहनलाल
ब्रिजलाल चोखानी
बिसनदयाल दयाराम
बी० एल० चक्रवर्ती
बी० एल० घोले
बिशानाथ दत्त
ब्रिजगोपाल दे
बी० एम० गर्ग कम्पनी
बी० मित्र एण्ड को०
बी० एन० मित्र
भानीराम भालोटिया
एम० ए० बासरी
मनमथनाथ दे
मगनीराम बांगड़ एण्ड को०
मदनमोहन पोद्दार
मल्लिक एण्ड को०

मेसर्स शिवनारायण मुरोदिया कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान पिलानी [जयपुर] है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मुरोदिया सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व स्व० सेठ शोभारामजी देशसे कलकत्ता आये। एवं आपने यहां कपड़ेकी दुकान की। आपके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके पुत्र बाबू लक्ष्मी-नारायणजी मुरोदियाने शोभाराम लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेके व्यवसायके लिये एक और नवीन फर्म खोली। इस व्यवसायमें आपने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आप कई संस्थाओंके ट्रस्टी थे। एवं सार्वजनिक कार्योंमें बहुत भाग लिया करते थे। अपने जीवनके अन्तिम १० वर्षोंसे आप व्यव-सायिक काम अपने पुत्रोंपर छोड़कर प्रायः सार्वजनिक एवं धार्मिक कार्योंमें विशेष रूपसे भाग लेते रहते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ में होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी मुरोदियाके पुत्र बाबू शिवनारायणजी मुरोदिया हैं। आपने संवत् १९७२ से शेअरका कारबार शुरू किया है। इस व्यापारमें भी आपने अच्छी उन्नति की। कुछ समय बादसे आप बा० वासुदेवजी कनोराके साझेमें शेअरका कारबार करने लगे। एवं वर्तमानमें भी आप दोनों सज्जन फर्मके व्यवसायका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवनारायण मुरोदिया कम्पनी २ रॉयल एक्सचेंज प्लेस—यहां शेअरका कारबार होता है।

कलकत्ता—शिवनारायण मुरोदिया ९० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां आपकी गद्दी है।

मेसर्स शिवभगवान गजानन

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान फतहपुर [जयपुर] है। आप अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ शिवभगवानजीने करीब ३५ वर्ष पूर्व किया। प्रारंभसे ही यह फर्म शेअरका काम करती आ रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवभगवानजीके पुत्र बा० गजाननजी, बा० राधाकृष्णजी, एवम् बा० रामकृष्णजी हैं। आप सब सज्जन व्यापारमें सहयोग देते हैं।

आपका व्यापारका परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स शिवभगवान गजानन १४ मुक्तमोहन लेन—यहां आपकी गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवभगवान गजानन ७ लायंसरेंज—यहां शेअरका व्यापार होता है।

स्टेवर्ट एण्ड को०
शिवदत्तराय केड़िया एण्ड को०
श्रीकिशन मकड़
शिवप्रसाद पोद्दार
एस० एन० नन्दी
एस० ए० मजूमदार
एम० एन० मित्र
श्यामलाल लहा एण्ड को०
एम० बी० गुप्ता एण्ड को०
ए० एम० डालमिया एण्ड को०
एस० बी० दे एण्ड को०
सतीशचन्द्र लाहा
हरिचरन बड़ाल एण्ड को०
हरिनाथ विस्वास
हेमेन्द्रनाथ बड़ाल
हरेन्द्रकृष्ण दत्त
हिरेन्द्रनाथदास एण्ड को०
हरदयाल सीताराम
हजारीमल सोमाणी एण्ड को०
हीरालाल एन० शुक्ल

मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ हजारीमलजी वेद और सेठ जंवरीमलजी वेद हैं। यह फर्म यहां संवत् १९२५ से व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १५६ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेका बहुत बड़ा इम्पोर्ट बिजिनेस करती है। इसके अतिरिक्त मेसर्स जंवरीमल गणेशमलके नामसे जूटका व्यापार भी होता है। यहां इसका आफिस ४२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। इस फर्मकी यहां स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी बनी हुई है।

मेसर्स करणीदान रावतमल

यह दुकान ५३ सूतापट्टीमें है। यहां धोतीका थोक व्यापार होता है। विशेष परिचय जूट बेलर्समें दिया गया है।

यहांके कपड़ेके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स खेतसीदास कालूराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके जम्मड़ सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका स्थापन हुए करीब ७० वर्ष हुए। इसकी स्थापना खेतसीदासजीके हाथोंसे हुई। शुरू २ में इस पर खेतसीदास तनसुखदास नाम पड़ता था। खेतसीदासजीके २ पुत्र हुए। श्रीयुत् कालूरामजी तथा नानूरामजी। श्रीयुत कालूरामजी बड़े होशियार व्यक्ति थे। आपके समयमें इसफर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। आपके समयमें ही सेठ खेतसीदासजी एवम् तनसुखदासजीकी फर्म अलग २ होगई थीं तभीसे इस फर्मपर उपरोक्त नामसे कारबार होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत कालूरामजीके पुत्र श्री मंगलचन्दजी, श्री विरदीचन्दजी, एवम् शुभकरणजी हैं। श्री विरदीचन्दजी, नानूरामजीके यहां दत्तक गये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स खेतसीदास कालूराम ११३ क्रास स्ट्रीट, मनोहरदासका कटरा—यहां बैंकिंग, धोती जोड़े एवं कपड़ेका व्यापार होता है।

शेअरके व्यापारी

अतुल चरन राय ब्रदर्स
अजीतनारायण चट्टोपाध्याय
अक्रूर चन्द्र दे०
इन्द्रनाथ लाहा
ए० सी० दत्त एण्ड को०
ए० पी० वरोल एण्ड ब्रदर्स
इ० ए० सोफर एण्ड को०
किशनलाल बांगड़
केदारनाथ केजड़ीवाल एण्ड को०
केदारनाथ सराफ एण्ड को०
कन्हैयालाल श्रीनारायण सोनी
किशनचन्द झूंझनूवाला
कोठारी एण्ड को०
के० के० सिंह
किशनलाल पोद्दार
केसरीचन्द सेठी एण्ड को०
कोहन अलबर्ट को०
गंगाप्रसाद चतुर्वेदी
गंगाविशन हरिस
गोरेलाल शील
गोकुलदास मेहता
गोपीकिशन बिन्नानी
गोपीनाथ दे
गणपतराय कयान एण्ड को०
गुलाबदास अमृतलाल
गुलाब एण्ड को०
यानीराम एण्ड को०
नश्यामदास जगनानी

कलकत्ता

जी० डी० लोयलका एण्ड को०
जी० एम० पेनी
चन्द्रकुमार अग्रवाल एण्ड को०
चुन्नीलाल टी० मेहता
जोहारलाल दत्त एण्ड संस
जे० एम० जार्ज एण्ड को०
जोहारमल डागा एण्ड को०
जीतमल सिंहानियां
ज्वालाप्रसाद चौबे
जुगनप्रसाद बैजनाथ
जैचन्दलाल नाहटा
जे० सी० माजूमदार एण्ड को०
जे० आर० सकलत
जे० एम० दत्त
जे० एस० हापवुड एण्ड को०
जोगेन्द्रनाथ लाहा
तुलसीदासराय एण्ड ब्रदर्स
तिलोकचन्द नेवर
थामस वाल्फर एण्ड को०
ठाकुरदास खेमका
ठाकुरप्रसाद मेहता
डी० मल्लिक
डी० एन० सेन एण्ड संस
डालूराम फूलचन्द
डी० बी० दत्त एण्ड को०
डी० जे० परसनस
डी० ए० गुब्बे एण्ड को०
दामोदर चौबे एण्ड को०

मुन्नालाल भालोटिया एण्ड को०
मुरलीधर सराफ
महादेवलाल लोहिया
मोतीलाल प्रहलादका कम्पनी
मुकुन्दलाल एण्ड संस
मुसा एण्ड को०
मुन्नालाल श्रीमाल एण्ड को०
मित्र बनर्जी एण्ड को०
मन्नीलाल लक्ष्मीदास
मानमल बिहारीलाल
मुरलीधर रामकुमार
महम्मद इस्माईल एण्ड को
मूलचंद लाखारिया
मुरारीमोहन नन्दी
महेन्द्रनाथराय एण्ड संस
एम० सुन्दर
आर० चट्टोपाध्याय एण्ड को
रीड वर्ड एण्ड को०
रामसहाय चतुर्वेदी
रामदेव चोखानी
रामकिशन मूंदड़ा
राधाकृष्ण सोनथलिया
रामकिशनदास सूरजमल
रामेश्वर मुत्सद्दी
रामसहाय चौधरी
...नाथ खन्डेलवाल
...नारायण जयलाल
...सिंह रनछोरदास

रामनारायण सेट
रामेश्वर चोखानी
रामनारायण सिंगानिया एन्ड संस
रामकुमार सोनथलिया
रामप्रसाद मूलचन्द सोनी
रामकुमार केजरीवाल
लक्ष्मण चरनदत्त
लक्ष्मीचन्द गांधी एण्ड को०
लक्ष्मीनारायण सराफ
लक्ष्मीदास दयाल
लक्ष्मणदास अमवाला
लक्ष्मीदास रायचन्द
विट्टाम एण्ड को०
विट्ठलदास हरगोविन्द
व्ही० एच० ए० गनी
श्रीगोपाल जालान
सदासुख कावरा एण्ड को०
सीताराम रामरिख
शिवनारायण सुरोदिया एण्ड को०
श्यामसुन्दरलाल खण्डेलवाल
एस० इ० सोलेमान
शिवदत्तराय रामवल्लभ एण्ड सन्स
श्रीनिवास रामप्रताप एण्ड को०
शंभूनाथ खत्री
सुगनचन्द बागरी
शिवदत्त राय कावरा
शिवनारायण चौबे
शिवभगवान गजा...

मेसर्स चौथमल दुलिचन्द

इस फर्मके मालिक सरदार शहर (बीकानेर) के निवासी ओसवाल वैश्य जातिके तेरापंथी सज्जन हैं। इसका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व बा० दुलिचंदजीके हाथोंसे मेसर्स मुल्तानमल दुलिचंदके नामसे हुआ था। शुरूसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार कर रही है। संवत् १९६७ में बा० दुलिचंदजी और मुल्तानमलजीकी फर्में अलग २ होगईं। बा० दुलिचंदजीके चार भाई और थे। जिनके नाम क्रमशः केसरीचंदजी, चुन्नीलालजी, मगराजजी एवं कोडामलजी थे। इनमें चुन्नीलालजी तथा मगराजजीका परिवार स्वतंत्र व्यापार करता है। शेष तीनों भाईयोंका व्यापार शामिल रूपमें होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ दुलिचंदजी तथा आपके पुत्र नथमलजी, सदासुखजी आपके नाती मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी और आपके भाई कोडामलजीके पुत्र पूनमचंदजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स चौथमल दुलिचंद—११३ क्रास स्ट्रीट—यहां बैंकिङ्ग तथा विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स जुगलकिशोर सेवकराम

इस फर्मके मालिक मूल निवासी रामगढ़ [जयपुर] के हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका पहले मेसर्स जुगलकिशोर सूरजमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ जुगलकिशोरजीने कलकत्तेमें की थी। सेठ जुगलकिशोरजी रामगढ़से मिरजापुर गये और वहांसे नावमें बैठकर करीब ४० दिनोंमें कलकत्ता आये थे। आप बड़े साहसी, व्यापार दक्ष और परिश्रमी सज्जन थे। यही कारण है कि आपको अपने जीवनमें ही व्यवसायिक सफलता प्राप्त हुई। आपके दो पुत्र हुए, श्रीयुत [illegible] और श्रीयुत सूरजमलजी। आपलोगोंके समयमें इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। इस कालमें यह फर्म कलकत्तेके अत्यन्त प्रसिद्ध [illegible] फर्मोंमें एक समझी जाने लगी। इसके अतिरिक्त इसका पीसगुड्सका व्यवसाय भी इतना बढ़ा कि यह इस कालमें [illegible] विलायती कम्पनियोंकी बेनियन हो गई। सेठ सूरजमलजीके पश्चात् आपके पुत्र सेठ [illegible] भी इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। आप कलकत्तेके नामी व्यापारियोंमें होगये हैं।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत सूरजमलजीके पौत्र और सेठ सेवकरामजीके पुत्र बा० [illegible] हैं। आप शिक्षित और योग्य सज्जन हैं। [illegible]

कपड़ेके व्यापारी

Cloth Merchants & Importers.
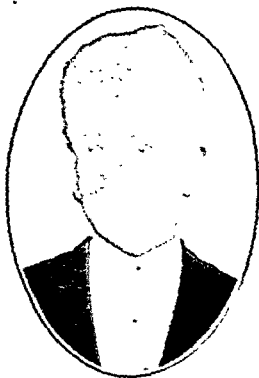
इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स जेठाभाई खटाऊ, शेख मेमन स्ट्रीट T. A. Unsurpass—यहां देशी कपड़ेका व्यापार तथा मिलोंके कपड़ेकी एजंसीका काम होता है।

बम्बई—जेठाभाई रामदास मूलजी जेठा मार्केट—यहांपर ई० डी० सासून मिल, रीवल मिल, सासुन मिल, विक्टोरिया मिल, जुबिलीमिल बम्बई राजनगर मिल और ओरेड़िया स्पिनिंग एण्ड स्पिनिंग मिल अहमदाबाद आदि मिलोंके कपड़ेकी एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता—जेठाभाई खटाऊ ३७, आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Indukumar—यहांपर सूत तथा देशी कपड़ेका व्यापार होता है। यह फर्म बम्बई तथा अहमदाबादके कितनेही मिलोंके कपड़ेकी एवं इन्सुरन्स कम्पनीकी एजण्ट है।

मेसर्स जीतमल रामलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बीकानेर (राजपूताना) है। आप माहेश्वरी समाजके कोठारी (तोशनीवाल) सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ रामलालजीके हाथोंसे संवत् १९२१ में हुआ।। आप सेठ जीतमलजीके पुत्र हैं। आपके २ पुत्र हुए, बड़े बाबू हिम्मतमलजी एवं दूसरे पन्नालालजी। सेठ रामलालजीका स्वर्गवास संवत् १९५२ में एवं हिम्मतमलजीका देहान्त संवत् १९५८ में होगया है।

इस फर्मके व्यापारको बाबू हिम्मतमलजी एवं पन्नालालजी दोनों भाइयोंके हाथोंसे अच्छी तरक्की प्राप्त हुई। पन्नालालजीके पुत्र बाबू बंशीलालजी हैं। आप यहां दत्तक आये हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ पन्नालालजी कोठारी करते हैं। आप सरल प्रकृतिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल रामलाल ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम गंगाराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास बीकानेर है। आप माहेश्वरी समाजके मीमाणी सज्जन हैं। संवत् १९[illegible] में सेठ गंगारामजी (आपका दूसरा नाम [illegible] था) देशसे यहां आये थे। आरंभमें आप यहां कपड़ेकी फेरीका काम करते थे। आपने अपने परिश्रमसे तरक्की करके [illegible] जीवणराम गंगारामके नामसे फर्म स्थापित की। सेठ जीवणरामजीके ३ पुत्र थे सेठ [illegible],

मेसर्स [illegible]

इस फर्मके [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] है। इसका विशेष परिचय इसी [illegible] [illegible] [illegible] विभाग के पेज नं० [illegible] में दिया गया है।

यहां इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स [illegible]—[illegible] क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़े का [illegible] व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स [illegible]—[illegible] क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़े का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स [illegible]—[illegible] क्रास स्ट्रीट—यहां भी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स गणेशचन्द्र शिवचन्द्रलाल

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १५० में मेसर्स चतुर्भुज नवलचन्दके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म १४ आर्मेनियन स्ट्रीटमें कपड़ेका व्यापार एवम् बैंकिंगका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदार शहर है। आप ओसवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तामें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ७५ वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्री गणेशदासजीने की। इसकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास होगया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन आपके भतीजे श्रीमूलचंदजी, नेमीचंदजी, और हरकचंदजी करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास जुहारमल १२ नारमल लोहिया लेन T.A. Samansukh—यहां देशी कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मेसर्स गोरखराम तनसुखराय खेमका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान चुरू (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके खेमका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ गोरखरामजी करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये।

स्व: बाबू जुगलकिशोरजी रूइया
जुगलकिशोर सेवकराम

स्व: बाबू पूरनमलजी रूइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)

...बू. सेवकरामजी रूइया
...किशोर सेवकराम)

बाबू नानकचन्दजी रूइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)
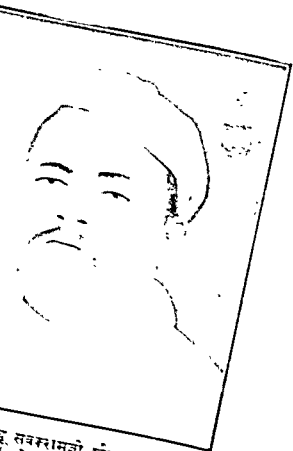
मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बिसाऊ (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके बासल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब तीस वर्ष हुए। इस फर्मको यहांपर श्रीमान् सेठ जमनादासजीने स्थापित की। आप सेठ तेजपालजीके पुत्र हैं।

इस फर्मका हेड आफिस मिर्जापुर है। वहांपर यह फर्म करीब सौ सवासौ वर्षसे स्थापित है। इस फर्मको विशेष तरक्की सेठ जमनादासजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े व्यापार दक्ष सज्जन और उदार पुरुष थे। आपका स्वर्गवास हुए करीब १० वर्ष हुए।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत जमनादासजीके पुत्र रामेश्वरदासजी सेठ हैं। आप मिर्जापुर हीमें रहते हैं।

कलकत्ते और मिर्जापुरके व्यापारिक समाजमें इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है। सेठ जमनादासजीने वृन्दावनमें स्टेशनके सामने एक बहुत ही सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। बनारसमें आपकी ओरसे एक अन्न क्षेत्र भी चल रहा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—तेजपाल जमनादास मिर्जापुर—यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है। यहांपर इस फर्मकी बहुत बड़ी जमींदारी है। तथा बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल जमनादास १६२ क्रास स्ट्रीट (T. A. Sunonoon)—इस फर्मपर कपड़े का इम्पोर्ट, शुगरका इम्पोर्ट और बैंकिंग बिजीनेस होता है। यहांके संचालक बाबू चिरंजीलालजी मुनीम हैं।

कानपुर—मेसर्स तेजपाल जमनादास काबू कोठी (T.A Dwarkadhish)—यहांपर सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सी और गल्लेका व्यापार होता है। कानपुरकी सुप्रसिद्ध काबू कोठीके मालिक आपही हैं।

आगरा—मेसर्स तेजपाल जमनादास बेलनगंज—यहांपर कमीशन एजन्सी और गल्ला तथा सोंदा बिजनेस होता है।

मेसर्स दौलतमल जवरीमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है। आप ओसवाल जैन श्वेताम्बर लोढ़ा गौत्रीय तेरापंथी सज्जन हैं। संवत् १९४१ में सेठ जीवनमलजीने

पूर्व सेठ [illegible] सूरजमल [illegible] की फर्म हो गये, जिसमें श्रीयुत मानमलजी [illegible] फर्म [illegible]
सुगनचंदजी मेघराजके नामसे व्यापार करती है। इस समय यह फर्म मेसर्स [illegible]
[illegible] है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स सुगनचंद मेघराज आर्मेनियन स्ट्रीट—इस फर्मपर पीसगुड्स और [illegible] व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स [illegible] [illegible] देती है। श्रीयुत मानमलजी [illegible] [illegible] होनेके लायक हैं।

मेसर्स जेसराज जयचंदलाल

यह फर्म ११४ क्रास स्ट्रीटमें है। यहां विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है, इसका हेड आफिस १४८ कॉटन स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय जूट मरचेंट विभागमें दिया गया है।

मेसर्स जीवनराम जानकीदास

इस फर्मके संचालक भिवानीके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हे० आ० दिल्ली है। यहां इसकी स्थापना करीब ३० वर्ष पूर्व सेठ जीवनरामजीके द्वारा हुई। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब १० वर्ष हुए।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जीवनरामजीके पुत्र जानकीदासजी, रामेश्वरदासजी, तथा रामनारायणजी हैं। इस फर्मकी विशेष उन्नति बा० जानकीदासजीके द्वारा हुई।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—भैरवराम जीवनराम कटला नवाब साहब चांदनी चौक T A Virat—यहां जर्मनी, जापान तथा इंग्लैंडसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है। तथा उसकी थोक बिक्री होती है।

कलकत्ता—जीवनराम जानकीदास ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Virat—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जेठाभाई खटाऊ

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंका मूल निवास स्थान खंभालिया जामनगर है। यहां यह फर्म [illegible]र १९७० से स्थापित है। इसके वर्तमान मालिक सेठ खटाऊ मुरारजी तथा लालजी मुरारजी हैं। [illegible]ा हेड आफिस बम्बईमें है। बम्बईमें यह फर्म देशी कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार करती है।
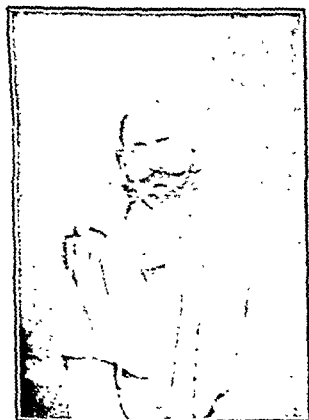
स्व॰ दौलतमलजी लोढ़ा (दौलतमल जवरीमल)

स्व॰ शिवकिशनदासजी मिमाणी (जीवणराम गंगाराम)

बा॰ दयालालजी कोठारी (शोभमल रामदास)
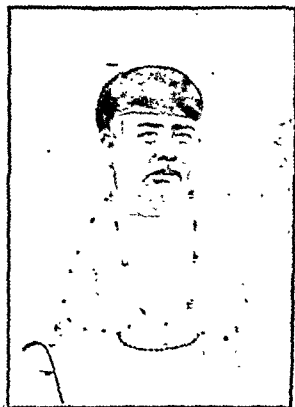
बा॰ रामगोपालजी मिमाणी (जीवणराम गंगाराम)

स्थानोंका जीर्णोद्धार और निर्माण करवाया। कनखलमें भी आपने एक पाठशाला और अन्नक्षेत्र स्थापित किया।

श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालय तथा अस्पतालके स्थापनमें आपका बहुत हाथ था। आपने इसमें हजारों रुपयोंकी सहायता भी प्रदान की।

आप इस अस्पतालके ट्रस्टी एवं उस कमेटीके सभापति निर्वाचित हुए। आपके सम्मानस्वरूप विद्यालय एवं अस्पतालमें आपके तैल चित्रोंका उद्घाटन किया गया है।

सन् १८९८ ई० में जबसे मारवाड़ी एसोसियेशनका जन्म हुआ और आपकी फर्म उसमें सम्मिलित हुई तभीसे आप उसमें सहयोग देने लगे। आप उसके सभापति भी रह चुके थे। आप मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके सभापति थे। आपने अपने समयमें चेम्बरकी अच्छी उन्नति की। चेम्बरके व्यापारिक झगड़ोंको निपटानेमें आप दिलचस्पीसे भाग लेते थे। पंच पंचायतोंमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७९ में हुआ।

आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपके छोटे भाई बाबू मानमलजी खेमकाने फर्मके कामको सम्हाला। आप भी सेठ जोहारमलकी तरह सब सभा सोसाइटियोंमें भाग लिया करते थे। आप अस्पतालके ट्रस्टी थे। अग्रवाल समाजमें आपकी भी बहुत प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में हुआ।

सेठ जोहारमलजीकी मौजूदगीमें ही मेसर्स नाथूराम रामकिशन फर्मकी कई शाखाएं हो गईं। इनमें नाथूराम जोहारमल नामक शाखाके वर्तमान मालिक सेठ जोहारमलजीके पुत्र बा० पुरुषोत्तमदासजी एवं दुलीचंदजी तथा सेठ मानमलजीके पुत्र बा० लक्ष्मीप्रसादजी हैं। बाबू मानमलजी बड़े उदार प्रकृतिके सज्जन थे, आपके स्वर्गवासी होनेके समय बा० पुरुषोत्तमदासजीके पुत्र लक्ष्मीप्रसादजीको आपने दत्तक लिया था एवं अपने दोनों भतीजों तथा अपने पुत्रका बराबरीका हिस्सा निश्चित किया। बा० पुरुषोत्तमदासजी भी शिक्षित सज्जन हैं बाबू लक्ष्मीप्रसादजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नाथूराम जोहारमल ११३ मनोहरदासका कटरा—यहां इस समय जूट शेयर्सके डिविडेंड, ब्याज मकानोंका भाड़ा तथा ब्याज बट्टाका व्यवसाय होता है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक चुरू निवासी बा० सागरमलजी वैद्य और आपके पुत्र

वर्ष पूर्व कलकत्ता आये और कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। कुछ ही समय बाद आपने मिर्जापुरकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स सेवाराम मन्नूलालके साझेमें बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण नामक फर्मका स्थापन किया। तबसे बराबर आपका कुटुम्ब कपड़ेका व्यवसाय कर रहा है। वर्तमानमें फर्मके मालिकोंमेंसे उपरोक्त फर्म मेसर्स सेवाराम मन्नूलालके मालिक रायसाहब सेठ बिहारीलालजी एवं श्री सेठ कुंजलालजी तथा स्वर्गीय सेठ गुरुदयालजीके पुत्र बाबू विलासरायजी केजड़ीवाल एवं बाबू रामकुमार जी केजड़ीवाल हैं।

बाबू विलासरायजी केजड़ीवाल शिक्षित एवं समझदार सज्जन हैं। आपकी फर्म इण्डियन मर्चेंट चेम्बर आफ कामर्सकी मेम्बर है। कपड़ेके व्यावसाइयोंमें आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण क्रास स्ट्रीट कलकत्ता T No 2409 B. B.—इस फर्मपर कपड़े और शक्करका व्यवसाय होता है।

मेसर्स—रामकुवांर केजड़ीवाल ७ लियांसरेन्ज कलकत्ता—इस नामसे आपका शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्सका प्राइवेट व्यवसाय होता है।

मेसर्स बिसेसरलाल वृजलाल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (राजपूताना) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झूंमन्नूवाला सज्जन हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व बाबू सूरजमलजी द्वारा इस फर्मका स्थापन हुआ। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार कर रही है। इसकी विशेष उन्नति भी आपहीके द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ४ पुत्र हुए। जिनमेंबाबू कुंजीलालजी एवम् बा० केशवदेवजी फर्मके व्यापार का संचालन करते हैं। बाबू वृजलालजी का स्वर्गवास हो गया। करीब ८।१० वर्षोंसे इस फर्म पर चावलका व्यापार भी होने लगा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बिसेसरलाल वृजलाल ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां फेन्सी कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार होता है। जूटका व्यापार भी यह फर्म करती है।

बारद्वार (विलासपुर) मेसर्स सूरजमल वृजलाल—यहां राईस मिल है तथा चावलका व्यापार होता है।

बाकुलिया (बंगाल) मेसर्स सूरजमल वृजलाल—यहां करीब २० वर्षसे यह फर्म व्यापार कर रही है ८।१० वर्षसे यहां आपका एक चावलका मिल स्थापित हुआ है।

...लजी लोढ़ा । दौलतमल जवरीमल)

बाबू मोहनमलजी लोढ़ा। दौलतमल जवरीमल)

...लतमल जवरीमल

मोहनमलजी लोढ़ा (दौलतमल जवरीमल)

हवेलियें इस फर्मकी मशहूर हैं। उस समय इसका नाम आनन्दराम [illegible] पड़ता था। सेठ [illegible] चार पुत्र हुए। श्रीयुत [illegible]मलजी, आनन्दमलजी, दौलतमलजी तथा [illegible]मलजी। संवत् १९७[illegible] तक इसी नामसे कार्य सम्मिलित रूपसे होता रहा। पश्चात् इसकी दो शाखाएं हो गईं। एक आनन्दमल [illegible] और दूसरी दौलतमल जवरीमल।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत दौलतमलजीके पुत्र श्रीयुत जवरीमलजी, सोहनमलजी [illegible]मलजी और मोहनमलजी हैं। आप चारों ही व्यक्ति सज्जन हैं। श्रीयुत दौलतमलजीका संवत् १९८८ में स्वर्गवास हो गया है।

आपकी ओरसे सुजानगढ़ स्टेशनपर एक अच्छी धर्मशाला एवम् स्मशान घाटपर दौलतमलजीकी यादगारमें छत्री एवम् मकान बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स दौलतमल जवरीमल २।१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. moti—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स दौलतमल जवरीमल १४ नारमल लोहिया लेन—यहां स्वदेशी तथा जापानी कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जवरीमल सोहनमल १६ नारमल लोहिया लेन—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स नाथूराम जौहारमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर स्टेट) में है। आप अग्रवाल समाजके खेमका सज्जन हैं। रतनगढ़ निवासी सेठ नाथूरामजी खेमकाके पुत्र बाबू जुहारमलजी खेमका संवत् १९३८ में देशसे कलकत्ता आये और यहां आकर आपने नाथूराम रामकिशनके नामसे कपड़ेका कारबार शुरू किया। थोड़े ही समयमें आपकी फर्मने अच्छी उन्नति की फलतः बम्बई, कानपुर, फर्रुखाबाद, दिल्ली आदि स्थानोंमें आपने ब्रांचेज स्थापित कीं, कलकत्तेके कपड़ेके व्यापारियोंमें आपकी फर्म प्रधान फर्मोंमें मानी जाने लगी। आपकी फर्म बाम्बे कम्पनी, मोब्रूस काटन कम्पनी, इविंग कम्पनी आदि प्रतिष्ठित कम्पनियोंकी बेनियन थी।

सेठ जौहारमलजीने व्यापारिक कामोंमें सम्पत्ति कमाकर दानधर्म एवं सार्वजनिक कामोंमें बहुत उदारतापूर्वक दान दिया, आपने कई धर्मशालाएं, कूप, तड़ाग, पाठशालाएं बनवाई तथा दे-व

सिंघयालालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पेज नं० १४६ में दिया गया है। यहां इसका आफिस नं० १६ कैनिंग स्ट्रीट में है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार एवं हुंडी चिट्ठीका काम करती है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० आशारामजी सादानी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२५ में मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानीके नामसे दिया गया है। यहां इसका आफिस रंगापट्टी नं० १५ में है। यहां कपड़ेका व्यापार और कमीशन एजंसीका काम होता है। इस फर्म पर तारका पता "Harku" है।

मेसर्स मुरलीधर मदनलाल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स मुरलीधरके नामसे ७ लियान्सरेंजमें है। उपरोक्त नामसे यह फर्म कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी भागके ३४३ पृष्ठ पर देखिये।

मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल

इस फर्मके मालिक बीकानेरके प्रसिद्ध मोहता परिवारके वंशज हैं। इसके संस्थापक राय बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी मोहता ओ० बी० ई० हैं। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ट १२६ पर सचित्र दिया गया है। इस परिवारके बाबू रामगोपालजी मोहताने श्री बिड़लाजीके सहयोगसे इङ्गलैण्डमें एक भवन खरीद कर शिवमंदिर बनवा रहे हैं जिसमें धर्मशाला भी रहेगी। इसका कलकत्तेमें आफिस २८ स्ट्राण्ड रोड पर है। तारका पता Mohta है। यहां पर कपड़ेका भारी व्यापार होता है।

मेसर्स रामविलास सागरमल

इस फर्मके वर्तमान प्रधान संचालक बा० रामविलासजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४६ में दिया गया है। यहां १५८ हरीसन रोडमें यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती है।

बा० धनराजजी एवं हनुमतमलजी बेद हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राज-पूताना विभागके पेजनं० १५१ में दिया गया है। इस फर्मकी गद्दी नं० १० फेंनिङ्ग स्ट्रीट में है। तथा ११३ क्रास स्ट्रीटमें विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है। मेसर्स धनराज हनुमतमल के नामसे आपकी ११२ क्रास स्ट्रीटमें एक दुकान और भी है। जहां खुले मालकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स बींजराज तनसुखदास

इस फर्मके मालिक बा० तनसुखरायजी एवं बा० पूनमराजजी दूगड़ हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथमभागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६५ में दिया गया है। यहां यह फर्म ११३ क्रास स्ट्रीट मनोहरदासके कटरेमें है और कपड़ेका अच्छा व्यापार करती है।

मेसर्स बींजराज भैरोंदान

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० भनीरामजी दूगड़ तथा आपके पुत्र बा० रामलालजी दूगड़ हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार करती है। तथा ११३ क्रास स्ट्रीटमें थोक एवं फूटकर माल बेचा जाता है।

मेसर्स बींजराज हुकुमचन्द

यह फर्म यहां करीब ५० वर्षसे स्थापित है। इसके वर्तमान संचालक बा० जसकरणजी बेद और मोहनलालजी बेद हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभाग के पेज नं० १४८ में दिया गया है। यहां इसका हेड आफिस ३० काटन स्ट्रीटमें है यह फर्म विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका अच्छा व्यवसाय करती है। इसके अतिरिक्त इसी नामसे गणेशभगतके कटरेमें इस फर्मकी एक शाखा है जहां धोती जोड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके स्थापक सेठ गुरुदयालजी केजड़ीवाल चिड़ावा (जयपुर स्टेट) से करीब ६०

स्व० चिमनरामजी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय)

बाबू रामकुमारजी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय

बाबू [illegible]जी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय)

बाबू शिवचन्द्रायजी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय
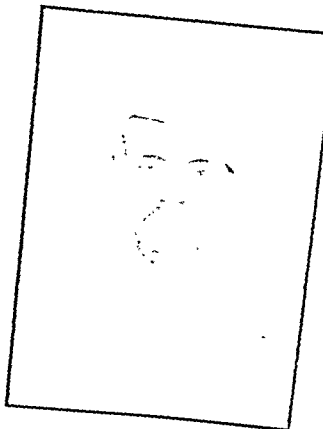
(३) बम्बई—मेसर्स रामकुंवार शिवचन्द्राय केदारभवन-कालबादेवीरोड इस फर्मपर आड़त, सराफी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नोहर [बीकानेर स्टेट] है। आप माहेश्वरी जातिके पचीसिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत् १९०२में सेठ रघुनाथदासजीने बहुत छोटेरूपमें की थी। प्रारंभसे ही इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठ रघुनाथदासजीके बाद सेठ शिवलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपके बाद आपके पुत्र सेठ रामलालजीने इस फर्मके व्यापारकी विशेष तरक्की की। माहेश्वरी समाजमें आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। आपके भ्राता सेठ किशनलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७१ में हो चुका था।

इस कुटुम्बकी ओरसे नोहरमें एक संस्कृत पाठशाला चल रही है। जिसमें विद्यार्थियोंको शिक्षाके साथ २ भोजन वस्त्रका भी प्रबंध है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ किशनलालजीके पुत्र बाबू सुगनचन्दजी तथा प्यारेलालजी एवं सेठ रामलालजीके पुत्र बा० दयालचन्दजी एवं बाबू प्रयागचन्दजी हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल ६२ कलाइवस्ट्रीट T. A Pachisia T. No 842 B.B. इस फर्मपर कपड़ेका इम्पोर्ट तथा हेसियन जूटके एक्सपोर्टका अच्छा व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल ६२ पगियापट्टी T. No. 1780 B. B —यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवलाल रामलाल १६ पगियापट्टी—इस फर्मपर भी कपड़ेका थोक व्यापारहोता है।

मेसर्स रामचन्द्र हरिराम गोयनका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान डूंडलोद [राजपूताना] है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोयनका सज्जन हैं। आपने करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके पितामह सेठ चन्दूलालजी डूंडलोदसे यहां आये थे। यहां आकर आपने मुनीमातकी। आपका ध्यान दलालीकी

स्व० सेठ रामचन्द्रजी गोयनका

सर हरिरामजी गोयनका के० टी०, सी० आई० ई०

बा० परशुरामजी (सुन्दरमल परशुराम)

बा० गोविन्दरामजी (सुन्दरमल परशुराम)

बाबू घनश्यामदासजी गोयनका—आप सर हरीरामजीके छोटे भ्राता हैं। आपका रहनसहन बहुत सादा है। आपके ४ पुत्र हैं जिनमेंसे बड़े श्रीईश्वरप्रसादजी व्यापारमें सहयोग देते हैं, तथा श्रीजगमोहनजी, सर हरीरामजीके यहां दत्तक हैं। श्री देवीप्रसादजी एवं श्यामसुन्दर जी अभी पढ़ते हैं।

रा० ब० बद्रीदासजी गोयनका सी० आई० ई०, एम० एल० सी०—आप कलकत्ता युनिवर्सिटीकी उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जन हैं। आप स्वभावके बड़े मिलनसार हैं। आजकल फर्मके व्यवसायका संचालन प्रधानरूपसे आपही करते हैं। यहांके उच्च पदाधिकारियोंमें आपका अच्छा सम्मान है। आप मारवाड़ी समाजके एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपको गवर्नमेंटने रायबहादुर और सी० आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया है। आप यहांकी प्रान्तीय लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिल के मेम्बर हैं। आपके पुत्र श्रीकेशोप्रसादजी एवं लक्ष्मीप्रसादजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स रामचन्द्र हरीराम गोयनका १४५ मुक्तराम बाबू स्ट्रीट—यह फर्म ४० वर्षोंसे मेसर्स रायलीब्रदर्सकी कपड़ेकी बेनियन और ब्रोकर है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदत्त रामकिशनदास १४५ मुक्तराम बाबू स्ट्रीट—यहां जूट बेलर्स, शीपर्स तथा बैंकर्सका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू कन्हैयालालजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, मेघराजजी, अगरचन्दजी, गोकुलदासजी एवम् विट्ठलदासजी हैं। आपका विशेष परिचय ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२६ में दिया गया है। यहां यह फर्म विलायतसे कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। यहांके आफिसका पता १६ पगियापट्टी है। तारका पता है Durgamai।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण हजारीमल

इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें मेसर्स हजारीमल सोमाणीके नामसे है नं० २०१ हरिसन रोडमें उपरोक्त नामसे यह फर्म ऊनी और फेन्सी कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके सोने चांदीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स रामलाल कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवा[ल] जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। पहिले इस फ़र्मपर चुन्नीलाल शिवचन्द नाम पड़ता था। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत कन्हैयालालजी श्रीयुत रंगलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामलाल कन्हैयालाल १५८ कासस्ट्रीट (सूतापट्टी) T.A. Savitri—इस फर्म[पर] स्वदेशी फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुँवार शिवचन्द राय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके पोद्दार सज्जन हैं। कलकत्तेमें संवत् १९४० में सर्व प्रथम सेठ सूरजमलजी आये। तथा आप यहां शेअरकी दलालीका काम करते रहे। आपके ४ पुत्र हुए जिनके नाम सेठ चिमनीरामजी,सेठ रामकुंवारजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी तथा सेठ शिवचन्द्ररायजी हैं। जिनमेंसे सेठ चिमनीरामजीका स्वर्गवास संवत् १९८०में हो गया है। आप संवत् १९५८में देशसे कलकत्ता आये, तथा संवत् १९६५ में आपने अपनी फर्म स्थापित की। आरंभसे ही आपकी फर्म देशी कपड़ेका व्यापार करती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनीरामजीके शेष तीनों भ्राता सेठ रामकुंवारजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी एवं बाबू शिवचन्द्ररायजी हैं। आपकी ओरसे बिसाऊमें श्रीगोविन्द देवजीका मंदिर बना है। उसमें एक दातव्य औषधालय भी स्थापित है। बिसाऊमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला एवं एक कुंआं भी बना है। वहां आपकी ओरसे गोचरभूमि भी छुड़वाई गई है। इसके अतिरिक्त बनारसमें वेदान्त शास्त्रकी शिक्षा देनेके लिये आपकी ओरसे एक संस्कृत पाठशाला है, जिसमें शिक्षाके साथ २ ग्यारह विद्यार्थियोंके भोजनका प्रबंध भी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामकुंवार शिवचन्दराय पांचागली T. A Ramshiva—इस फर्मपर देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार और स्वदेशी कपड़ेकी दलालीका कारबार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स चिमनलाल रामकुंवार पांचागली—यहां कपड़ेका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स सिंहल्मदर्सके कपड़े विभागकी बेनियन है।

बाबू घनश्यामदासजी गोयनका—आप सर हरीरामजीके छोटे भ्राता हैं। आपका रहनसहन बहुत सादा है। आपके ४ पुत्र हैं जिनमेंसे बड़े श्रीईश्वरप्रसादजी व्यापारमें सहयोग देते हैं, तथा श्रीजगमोहनजी, सर हरीरामजीके यहां दत्तक हैं। श्री देवीप्रसादजी एवं अनुग्रहप्रसाद जी अभी पढ़ते हैं।

रा० ब० बद्रीदासजी गोयनका सी० आई० ई०, एम० एल० सी०—आप कलकत्ता युनिवर्सिटीकी उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जन हैं। आप स्वभावके बड़े मिलनसार हैं। आजकल फर्मके व्यवसायका संचालन प्रधानरूपसे आपही करते हैं। यहांके उच्च पदाधिकारियोंमें आपका अच्छा सम्मान है। आप मारवाड़ी समाजके एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपको गवर्नमेंटने रायबहादुर और सी० आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया है। आप यहांकी प्रान्तीय लेजिस्लेटिव्ह कौंसिल के मेम्बर हैं। आपके पुत्र श्रीकेशोप्रसादजी एवं लक्ष्मीप्रसादजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स रामचन्द्र हरीराम गोयनका १४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यह फर्म ४० वर्षसे मेसर्स गयलीब्रदर्सकी कपड़ेकी बेनियन और ब्रोकर है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदत्त रामकिशनदास १४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां जूट बेलर्स, शीपर्स तथा बैंकर्सका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू कन्हैयालालजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, मेघराजजी, अगरचन्दजी, गोकुलदासजी एवम् विट्ठलदासजी हैं। आपका विशेष परिचय ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२६ में दिया गया है। यहां यह फर्म विलायतसे कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। यहांके आफिसका पता १६ पगियापट्टी है। तारका पता है Durgamai।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण हजारीमल

इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें मेसर्स हजारीमल सोमाणीके नामसे है नं० २०१ हरिसन रोडमें उपरोक्त नामसे यह फर्म ऊनी और फेन्सी कपड़ेका इम्पोर्ट और विक्रीका काम करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके सोने चांदीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

बा० दयाचंदजी जैन सेवूमल दयाचंद।

बा० रगनाथजी आजोदिया

ओर विशेष था। अतएव आपने अपने पुत्रोंको इस ओर लगाया। आपके २ पुत्र थे, सेठ रामकिशनदासजी तथा सेठ शत्रुघ्नदासजी। इनमेंसे सेठ रामकिशनदासजीका अल्पायुमें ही स्वर्गवास होगया था।

सेठ रामकिशनदासजीके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजीने इस फर्मके व्यापारको बढ़ाया, आपहीके समयमें इस फर्मपर केटल्स बिल ब्रुकेन आदि बड़े अंग्रेज कम्पनियोंकी दलाली एवं कमीशन एजंसीका काम आरंभ हुआ था। इसके पश्चात् आप मेसर्स रायचौधरीके कपड़ेके व्यवसायके प्रधान ब्रोकर नियुक्त हुए इस काममें आपकी फर्मने बहुत अधिक सम्पत्ति, मान एवं यश प्राप्त किया। आप बड़े व्यापारकुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत १९६४ में हुआ।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ साथ धार्मिक कार्यों में भी इस कुटुम्बका अच्छा लक्ष रहा है, आपकी ओरसे श्रीजगन्नाथ पुरी, वैद्यनाथ धाम तथा डूंडलोदमें धर्मशालाएं बनी हुई हैं, इसके अतिरिक्त डूंडलोदमें संस्कृत पाठशाला, विद्यालय, औषधालय तथा श्रीसत्यनारायणजीका मंदिर स्थापित है। स्थानीय हबड़ा पुलके पास गंगातीरपर स्त्रियोंके नहानेकी सुविधाके लिये एक जनाना घाट भी आपकी ओरसे बना हुआ है।

श्रीसेठ रामचन्द्रजीने "रामचन्द्र गोयनका हिन्दू विधवाश्रम" की स्थापना की थी, यह संस्था आज भी भली प्रकार अपना कार्य कर रही है,इसमें करीब १०००)रु०प्रति मास व्यय होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र रायबहादुर सर हरीरामजी गोयनका केटी०; सी० आई० ई०, श्रीसेठ घनश्यामदासजी गोयनका, एवं रायबहादुर बाबू बद्रीदासजी गोयनका सी० आई० ई०, एम० एल० सी० हैं।

रा० ब० सर हरीरामजी गोयनका केटी०, सी० आई० ई०—आप सेठ रामचन्द्रजीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। मारवाड़ी समाजमें आप बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं। आपको भारत सरकारने सन १९०० में रायबहादुर, सन् १९१७ में सी० आई० ई० तथा सन १९२० में सर नाइटकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप कलकत्तेके शरीफ एवं म्युनिसिपल कमिश्नर रह चुके हैं। मारवाड़ी एसोसियेशनके सभापतिका कार्य भी आपने कई वर्षों तक संचालित किया है। इस समय आपकी वय ६७ वर्षकी है, आपको महाराज जयपुर तथा रावराजाजी सीकरसे ताजीम प्राप्त है। वर्तमानमें फर्मके व्यवसायका कारबार अपने सुयोग्य भ्राता बाबू बद्रीदासजी गोयनका पर छोड़कर आप शान्तिलाभ करते हैं। आपके एक पुत्र बाबू मुरलीधरजीका युवावस्थामें ही स्वर्गवास हो गया है। अतः बाबू घनश्यामदासजीके पुत्र श्रीजगमोहनजी आपके यहां दत्तक आये हैं,जो व्यवसायमें भागलेने लगे हैं
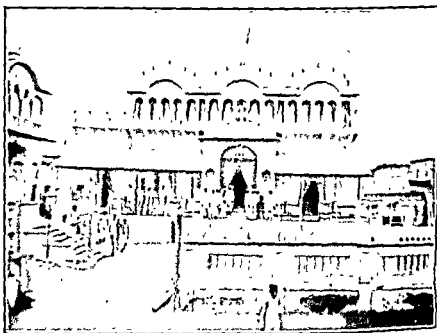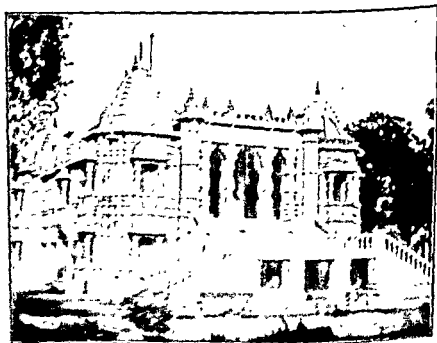
आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सेढ़मल दयाचंद २१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Sidhant; Phone No 3089 B.B.—यह फर्म मेसर्स आर्डियन लिकनर एण्ड कम्पनीकी वेनियन और ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त बैङ्किग व्यवसाय होता है।

मेसर्स सुन्दरमल परशुराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके बजाज सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब २० वर्ष पूर्व सेठ सुन्दरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ परशुरामजीने किया था। इसके व्यापारको भी आप ही दोनों सज्जनोंने विशेष तरक्की पर पहुँचाया। आरम्भसे ही यह फर्म शक्करका व्यापारकर रही है। श्रीसेठ सुन्दरमलजीका देहावसान संवत १९८४ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सुन्दरमलजीके पुत्र बाबू परशुरामजी तथा बाबू गोविन्दरामजी हैं। आप दोनों ही सज्जन हैं। आपकी फर्मपर कपड़े तथा शक्करका अच्छा व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स करीम भाई इब्राहिम की १३।१४ मिलोंका कपड़ा बेचनेकी कलकत्तेके लिये सोल एजंट है। अभी आपने दिल्ली और कानपुरके लिये भी सर करीम भाई इब्राहीमकी मिलोंके कपड़ेकी एजंसी ली है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स सुन्दरमल परशुराम ५ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Sitapal T. No. 2592
B.B.—यहां जापानी कपड़ेका इम्पोर्ट तथा जावा शक्करका थोक व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स सुन्दरमल परशुराम ६ नारमल लुहियाडेन – इस दुकानपर सर करीम भाई इब्राहिमकी मिलोंका माल बेचनेकी सोल एजंसी है। इसके अलावा जापानी कपड़ेकी बिक्री होती है।

मेसर्स सोनीराम जीतमल

इस फर्मके संचालक बिसाऊ (जयपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। यह फर्म शुरूसे करीब १० वर्ष पूर्व तक अफीमका व्यवसाय करती रही। इस फर्मके द्वारा चीनमें भी अफीम भेजी जाती थी। इस फर्मके स्थापक सेठ अमनारामजी तथा आपके भ्राता सेठ जीतमलजी और श्रीरामजी

तमलजी पोद्दार (मोनीराम जीतमल)

स्व॰ शिवप्रसादजी गाड़ोदिया (मोनीराम जीतमल

ार्मीचरणजी (मोनीराम जीतमल)

बा॰ आनन्दरामजी सराफ (हीरानन्द आनन्दराम,

इनके अतिरिक्त मेसर्स जमनाधर पोद्दारके नामसे रांची, चाईबासा, बिलासपुर, सम्बलपुर, रायपुर, हिंगनघाट वर्धा, चांदा, वरूड़, अकोला, नान्देड़, गया, मद्रास, शोलापुर, बेलगांव, रंगून, सिकंदराबाद (निजाम), उमरी (निजाम), अहमदाबाद तथा कई अन्य स्थानों पर छोटी २ शाखाएं हैं। जहां टाटा एण्ड संस लि० के मिलोंके कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स हरचन्दराय आनन्दरामके नामसे भागलपुरमें है। यहां इस फर्मका आफिस १८० हरीसन रोडपर है। यहांके तारका पता Hargolar है। टेलीफोन नं० २१२६ बड़ाबाजार है। इस फर्ममें कपड़ेका इम्पोर्ट और कमीशन एजेंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें बिहारप्रान्तके पेज नं० ६७ में चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स हरिबगस दुर्गाप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता ही है। यहां पर करीब ६० वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसके वर्तमान संचालक सेठ हरिबगसजी और आपके पुत्र बाबू दुर्गाप्रसादजी, गोवर्द्धनदासजी और रामनिवासजी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ६४ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। साथही गल्ला, हेसियन, बारदाना आदिका व्यापार भी करती है। यहां इसका आफिस ग्राम स्ट्रीटमें है।

मेसर्स हीरालाल हजारीमल

इस फर्मके संचालक बीकानेरके निवासी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३१ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मपर विदेशोंसे इम्पोर्टका काम भी बहुत बड़ा होता है। यहां इसका नाम [illegible] मिल नामसे कपड़ेका एक प्राइवेट मिल भी है। इसके अतिरिक्त बहुतसी स्थायी सम्पत्ति है। यहां आपका पता 'Hi[illegible]sana' है।

मेसर्स हीरालाल पन्नालाल

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है। यहां यह फर्म मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास १८० हरिसन रोडके मकानमें व्यापार करती है। इसका पता ६८ [illegible] है। यहां यह फर्म [illegible] व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागमें पेज नं० ६० में दिया गया है।

मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस ३० मड़तल्ला स्ट्रीटमें है। इसके वर्तमान मालिक राजा मोतीचन्द साहब सी० आई०ई० बनारस, बाबू गोकुलचन्दजी साहब, कुमार कृष्णकुमार साहब और बा० ज्योतिप्रसादजी हैं। इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार भी होता है। इसका विशेष परिचय मिलआनर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स शिवदयाल मदनगोपाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल समाजके गनेड़ीवाल सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ शिवदयालजीने संवत १९६३ में की। इसके पूर्व आपकी फर्मपर रंगलाल चिमनलालके नामसे कारवार होता था। सेठ शिवदयालजीने फर्मके व्यवसायको अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवदयालजीके पुत्र बाबू मदनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल मदनगोपाल नारमल लुहियालेन T. A. kripa T No 931 B B
यहां देशी, विलायती तथा जापानी कपड़ेका थोक व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स सेढ़मल दयाचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मलसीसर (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पूर्व श्री सेठ सेढ़मलजीने की। आप मलसीसरसे जब कलकत्ता आये थे तब रेल नहीं थी। इसके व्यवसायकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका देहावसान संवत् १९५६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू दयाचंदजीने भी फर्मके व्यवसायमें अच्छी तरक्की की। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ दयाचन्दजीके पुत्र बाबू बलदेवदासजी और बाबू महावीरप्रसादजी हैं। आप लोगोंकी ओरसे मलसीसरमें एक धर्मशाला, एक कुआं और २ कुंड बने हुए हैं। कलकत्तेके बेलगछियामें आपकी ओरसे करीब २ लाख रुपयोंकी लागतसे एक सुन्दर जैनमंदिर बना हुआ है। इसी प्रकार और भी सार्वजनिक कामोंमें आप अच्छा सहयोग देते रहते हैं।

इनके अतिरिक्त मेसर्स जमनाधर पोद्दारके नामसे रांची, चाईबासा, विश्रामपुर, मम्भरपुर, रायपुर, हिंगनघाट वर्धा, चांदा, घरड़ा अकोला, नान्दोग, गया, मद्रास, शोलापुर, बेजवाड़ा, रंगून, सिकंदराबाद (निजाम), उमरी (निजाम), अहमदाबाद तथा कई अन्य स्थानों पर छोटी २ शाखाएं हैं। जहां टाटा एण्ड संस लि० के मिलोंके कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स हरचन्दराय आनन्दरामके नामसे भागलपुरमें है। यहां इस फर्मका आफिस १८० हरीसन रोडपर है। यहांके तारका पता Hargolar है। टेलीफोन नं० २१२६ बड़ाबाजार है। इस फर्ममें कपड़ेका इम्पोर्ट और कमीशन एजेंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें बिहारप्रान्तके पेज नं० ६७ में चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स हरिबगस दुर्गाप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ताही है। यहां पर करीब ६० वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसके वर्तमान संचालक सेठ हरिबगसजी और आपके पुत्र बाबू दुर्गाप्रसादजी, गोवर्द्धनदासजी और रामनिवासजी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ६५ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। साथही गनी, हैसियन, चमड़ा आदिका एक्सपोर्ट भी करती है। यहां इसका आफिस क्रास स्ट्रीटमें हैं।

मेसर्स हीरालाल हजारीमल

इस फर्मके संचालक बीकानेरके निवासी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३१ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मपर विदेशोंसे इम्पोर्टका काम भी बहुत बड़ा होता है। यहां इसका राम पुरिया काटन मिल नामसे कपड़ेका एक प्रायवेट मिल भी है। इसके अतिरिक्त बहुतसी स्थायी सम्पत्ति है। यहां तारका पता 'Hasana' है।

मेसर्स हीरालाल बब्बूलाल

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है। यहां यह फर्म मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास १८० हरिसन रोडके सायरमें व्यापार कर रही। इसका पता ६६ क्रासस्ट्रीमें है। यहां यह फर्म धोतीका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागमें पेजमें नं० ६७ में दिया गया है।
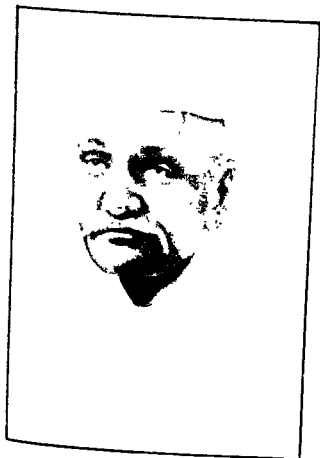
बाबू जगन्नाथजी पोद्दार (सोनीराम जीतमल)

बाबू जीवराजजी पोद्दार (सोनीराम जीतमल)

थे। सेठ जमनादासजीने करीब ३५ वर्ष पूर्व टाटा एण्ड सन्सकी मिलोंके कपड़ेकी कलकत्ते
एजंसी आरंभ की। तथा इस कार्यमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। जबसे नागपूरमें एम्प्रेस मि
स्थापना हुई तभीसे आप उसके कपड़ेका व्यापार करने लगे। आप बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति
आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हो गया। तथा सेठ जीतमलजीका स्वर्गवास भी संवत् १९६
हो गया। आप वर्धाकी ओरके व्यापारका संचालन करते थे। वहां आपका अच्छा सम्मा
था। आपकी फर्मकी ओरसे नागपुरमें एक मन्दिर तथा धर्मशाला बनी हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जीवराजजी, सेठ जमनादासजीके पौत्र अमोलकचंदजी
सेठ जीतमलजीके पुत्र नागरमलजी तथा जीवराजजीके पुत्र बाबू बिरदीचंदजी, चौथमलजी और
रामचंद्रजी हैं।

सेठ जीवराजजी निज़ाम हैदराबादकी ओरके व्यवसायका संचालन करते थे। आपने
वहां बहुतसी खेती आदिका काम शुरू किया था। वहां कई सौ गौओंका पालन पोषण होता था।
तथा इस समय भी हो रहा है। सेठ जीवराजजी इस समय व्यापारिक कार्योंसे अपना सम्बंध
विच्छेद करके काशीवास करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नागपुर—मेसर्स जमनाधर पोद्दार—यहां टाटाके मिलोंकी एजंसीका काम होता है। यहीं आपका
हेड आफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम जीतमल ४९ काटन स्ट्रीट—कलकत्तेकी फर्मोंमें शिवप्रसादजी गाड़ोदिया
का करीब ३५ वर्षोंसे साझा है। वर्तमानमें आपके पुत्र कालीचरणजी हैं।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम, जीतमल फेनिंग स्ट्रीट—यहां हेसियन तथा जूटके एक्सपोर्टका काम
होता है।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम जीतमल नागरमल लोहिया लेन—यहां टाटाके मिलोंके कपड़ेका काम
होता है।

बागककड़—(बंगाल) मेसर्स सोनीराम जीतमल—यहां कपड़ा तथा सूतका काम होता है।

बांकुड़ा—मेसर्स सोनीराम जीतमल ,, ,,

रांची—मेसर्स नागरमल पोद्दार—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

लायलपुर—(पंजाब) जमनाधर पोद्दार—यहां जीन फेक्टरी है। तथा रुईका काम होता है।

अबोहरमंडी—(पंजाब) नागरमल पोद्दार—यहां जीन तथा प्रेस फेक्टरी है। कराशा काम भी
इस फर्म पर होता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरमुखराय सनेहीराम ६६ क्रास स्ट्रीट T. No. 1404 B B.—यहां विलायती कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है। यह फर्म वालीं एण्ड कोके कपड़ेकी शाखाकी बेनियन है। इस विभागकी देखभाल बा० फूलचन्दजी करते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव चोखानी एण्ड को० १३७ हरिसन रोड—T. A Selection T. No. 2054 B.B.—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

कलकत्ता—रामदेव चोखानी ७ लायंसरेंज T. No 2454 Cal.—यहां गवर्नमेंट सिक्यूरिटीजके पेपर्स तथा शेअर स्टाकका व्यापार होता है।

कलकत्ता—बृजलाल चोखानी ७ लायंसरेंज T.A Sharbroker, T NO 5887 Cal—यहां भी शेअर स्टॉकका व्यापार होता है।

मेसर्स हीरानन्द आनन्दराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास मंडावा (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ मोहनलालजी और हीरानन्दजीने स्थापित की थी। उस समय इसपर मोहनलाल हीरानन्दके नामसे व्यापार होता था। प्रारंभसे ही इस फर्मपर कपड़ेका काम शुरू हुआ और वह इस समयतक चला आता है। उपरोक्त नामसे यह फर्म करीब १५ वर्षोंसे काम कर रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ आनन्दरामजी तथा आपके पुत्र महादेवलालजी, मुरलीधरजी, हनुमानप्रसादजी, रामगोपालजी, बाबूलालजी और किशोरीलालजी हैं। आप सब इस समय व्यापारिक कार्य्योंमें भाग लेते हैं।

सेठ आनंदरामजी स्थानीय मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स कई वर्षोंतक सेक्रेटरी रह चुके हैं। तथा यह संस्था आपहीके विशेष परिश्रमसे स्थापित हुई है। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। पींजरापोलमें भी आपका अच्छा हाथ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हीरानंद आनंदराम ६६ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर जेम्स फिनले नामक मोटे कम्पनीके शक्कर और कपड़ेके डिपार्टमेण्टकी बेनियन शीपका काम होता है।

बा० गणेशदासजी गड्डैया
(श्रीचन्द गणेशदास)

स्व० सूरजमलजी झुनझुनवाला
(बिसेसरलाल बृजलाल)

बा० कुंजलालजी झुनझुनवाला
(बिसेसरलाल बृजलाल)

बा० केशरदेवजी झुनझुनवाला
(बिसेसरलाल बृजलाल)

जाजोदिया सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ सुखदेवदासजी लगभग ५० वर्ष पूर्व कलकत्ता आये और मुनीमातका काम करने लगे। कुछही समय बाद आप यहांकी प्रसिद्ध फर्म ऐंग्लो गूल कम्पनीके सूतकी मिलकी दलाली करने लगे। इसीके बाद रतनगढ़के आसारामजी जाजोदियाके साझेमें आपने सूतका काम कर लिया। आपके चारों भाई भी कलकत्ते आये और वे सब लोग भी आपके साथही व्यापारमें लग गये। फलतः कलकत्ताके अतिरिक्त मद्रास, कटक भद्रक आदि कई स्थानोंमें शाखायें खुल गयीं। कुछ समय पश्चात् जूटका व्यवसाय भी आरम्भ किया और चितपुर जूट प्रेस भी खरीद लिया। आप कुछ काल तक जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० के बैनियन रहे।

इस फर्मके मालिकोंका कौटुम्बिक परिचय इस प्रकार है—

सेठ चिमनी रामजीके चारपुत्र हुए जिनका नाम सेठ सुखदेवदासजी, सेठ रामप्रसादजी, सेठ तनसुखरायजी और सेठ सूरजमलजी था। इन सज्जनोंमेंसे सेठ रामप्रसादजी और सेठ तनसुखरायजी इस समय विद्यमान हैं। स्व० सेठ सुखदेवदासजीके पुत्र बाबू रङ्गलालजी, सेठ रामप्रसादजीके पुत्र बाबू मोतीलालजी, सेठ तनसुखरायजीके पुत्र मदनलालजी, सोहनलालजी, चम्पालालजी और पन्नालालजी तथा स्व० सेठ सूरजमलजीके पुत्र बाबू माणिकलालजी हैं।

वर्तमान संचालकोंमें सभी अनुभवी और शिक्षित हैं। आप लोग आधुनिक सुधरे हुए विचारके महानुभाव हैं। बाबू रंगलालजी जाजोदियाका सार्वजनिक जीवन बहुत व्यापक है। आप विशुद्धानन्द स० विद्यालयके मन्त्री और अग्रवाल समाजके सभापति रहे हैं। बाबू मोतीलालजी भी व्यापारके अतिरिक्त सार्वजनिक कार्योंमें योग देते रहते हैं। यह परिवार दान धर्मके कार्योंमें भी भाग लेता रहता है। इसकी ओरसे धर्मशाला और तालाब बने हुए हैं। सुजानगढ़की धर्मशाला और गौशालाके स्थापनका श्रेय इसीको है। इसका व्यापारिक परिचय यों इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद २१२ क्रास स्ट्रीट—सब व्यापारों तथा शाखाओंकी यहां गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद १२ नारमल लुहिया लेन—यहां सूत, पाट और कपड़ेका आफिस है।

कलकत्ता—चितपुर जूट प्रेस T. No १० काशीपुर रोड—यहां जूट प्रेस है।

मद्रास—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद १०१ मिन्ट स्ट्रीट—यहां वाकर कम्पनीकी बेनियन शिप और सूतका काम है।

कटक—मेसर्स तनसुखराय सूरजमल बालूबाजार चांदनी चौक—यहां सूतका व्यापार है।

भद्रक—मेसर्स तनसुखराय सूरजमल हाट बाजार—यहां मिट्टीके तेलकी एजंसी और सूतका काम है।

मेसर्स हरसुखराय सनेहीराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवासस्थान मंडावा (जयपुर-स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चोखानी सज्जन हैं। संवत् १९३८ में सेठ हरसुखरायजी तथा सेठ सनेहीरामजीने इस फर्मका स्थापन किया। कुछ समय पश्चात् हरसुखरायजीके छोटे भ्राता बाबू दौलतरामजी भी इस फर्ममें शरीक हो गये। इस फर्ममें आपके भाई सेठ भगवानदासजी तथा [illegible] भी शरीक थे। सेठ सनेहीरामजी, सेठ रूडीरामजीके तथा शेष चारों सज्जन सेठ बधीरामजीके पुत्र थे। प्रारम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती आ रही है।

सेठ हरसुखरायजी, सेठ सनेहीरामजी तथा सेठ दौलतरामजी तीनों भ्राताओंने मिलकर विलायती मलमल, नैनसुख आदि कपड़ेके व्यापारमें अच्छी उन्नति की।

सन् १९०२ में बल्देवदास शिवप्रसाद फर्मके स्व० [illegible] नामके साझेमें सेठ दौलतरामजी [illegible] कम्पनीकी बेनियन और ब्रोकरशिपका काम करने लगे। इस समयसे बाबू रामदेवजीने भी उपरोक्त फर्ममें अपने पिताके साथ ४ वर्ष तक कार्य किया। इस कम्पनीका कार्य बंद होजानेके पश्चात् सेठ दौलतरामजीने इंग्लिश कम्पनीके बेनियन शिपका कार्य किया। आप बड़े व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ में तथा आपके भ्राता सेठ हरसुखराय-जीका १९५८ में एवम् सनेहीरामजीका संवत् १९७६ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ दौलतरामजीके पुत्र राय बहादुर बाबू रामदेवजी चोखानी और सेठ हरसुखरायजीके पुत्र बाबू फूलचंदजी एवम् मदनलालजी हैं। आप सब सज्जन व्यवसायमें भाग लेते हैं और बड़ी उत्तमतासे इसे संचालित करते हैं।

बा० रामदेवजीने सन् १९०६ में करीब ४ वर्ष तक बल्देवदास गनेशदास नाथानीके साझेमें शेअरका व्यापार आरम्भ किया। इसके पश्चात् अब आप अपने भाई शिवदत्तजीके साथ रामदेव चोखानीके नामसे व्यापार करते हैं। आप अग्रवाल समाजमें प्रतिष्ठित सज्जन समझे जाते हैं। भारत सरकारने आपको सन् १९१९ में राय साहब एवं सन् १९२७ में राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया। आपका सार्वजनिक जीवन बहुत अच्छा है। प्रायः सभी सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते हैं। सन् १९०२ में आप विशुद्धानंद विद्यालयके मंत्री रहे, सन् १९२२ से १९२८ तक आप कलकत्ता इम्प्रूवमेंट ट्रस्टके मेम्बर रहे। सन् १९११ से सन् १९२१ तक आप मारवाड़ी एसोसियेशनके मंत्री पदका कार्य देखते रहे। और वर्तमानमें आप विशुद्धानंद विद्यालयकी कमेटीके प्रेसिडेन्ट, मारवाड़ी एसोसियेशनके वाईस प्रेसिडेन्ट, मारवाड़ी हॉस्पिटलके ट्रस्टी तथा बांगड़ हॉस्पिटलके गवर्नर हैं। इसी प्रकार आपके सब भाई भी सार्वजनिक कार्योंमें अच्छा भाग लेते रहते हैं।

भागलपुर—मेसर्स जीवनराम रामचन्द्र T. A. Murli इस फर्मपर सून और आढ़तका कारबार होता है। इसके अतिरिक्त कई देशी मिलोंकी सून और कपड़ेकी ऐजेन्सी भी इसके पास हैं।

टांडा (फैजाबाद)—मेसर्स जीवनराम गुलराज—इस पर भी उपरोक्त कारबार होता है।

इसके अतिरिक्त यू० पी० के कितने ही स्थानोंपर यह फर्म सूतका कारबार करती है तथा उड़ीसा प्रान्तके लिये इसके पास वर्मा आइल कम्पनीकी पेट्रोलकी ऐजेन्सी है जिसपर मेसर्स डूंगरसीदास मुरलीधरके नामसे उक्त प्रान्तमें कारबार होता है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ फर्मके मालिकोंकी धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्यों में भी अच्छी रुचि रही है।

मेसर्स जेसराज जेचंदलाल

यह फर्म दी बावरिया कॉटन मिल लिमिटेड, दि डनबार मिल्स लि० तथा दि न्यूगिन काटन मिल लिमिटेडकी सूतके लिये सोल वेनियन और ब्रोकर है। इसका प्रधान आफिस १४२ क्लास स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय जूट वेलर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स नन्दलालपसारी

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (सीकर) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके पसारी सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व बाबू भोलारामजीने इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें आकर की थी। आपके बाद आपके पुत्र बाबू नंदलालजी फर्मका काम चलाते हैं आप वर्तमानमें भारत अभ्युदय काटन मिल्स; बनारस काटन मिल्स, केशोराम काटन मिल्स; आदिकी सूतकी दलालीका काम करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नन्दलाल पसारी १०५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां सूतकी दलालीका काम होता है।

मलकली (मेदनीपुर)—मेसर्स नंदलाल रघुनाथराम—यहां एक राइस मिल है।

मारग्राम [बन्गोलिया, बंगाल]—यहां एक राइस मिल है।

मेसर्स श्रीचन्द गणेशदास गधइया

इस फर्मके संचालक सरदार शहर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल समाजके श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय गधइया सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ जेठमलजीकी आज्ञासे संवत १९२९ में सेठ डूंगरसीदासजीके हाथोंसे हुआ। शुरु २ में इस फर्मपर लाल कपड़ेका व्यवसाय होता था। सेठ जेठमलजी सरल एवम साधुवृत्तिके महानुभाव थे। करीब ३६ वर्षकी वयमें श्रीसेठ श्रीचन्द्रजीके होनेके पश्चात ही आपने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया था। आपका जन्म संवत् १८८८ तथा स्वर्गवासी होनेका संवत् १९५२ है।

आपके एक पुत्र श्री सेठ श्रीचंदजी हैं। आप संवत १९३७ से व्यापारके निमित्त कलकत्ता आने जाने लगे। आपके समयमें इस फर्मको बहुत उन्नति हुई। आप बड़े व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन हैं। आपहीके समयमें इस फर्मका मेसर्स एंड्रू यूल कम्पनी, मेसर्स रायली ब्रदर्स, मेसर्स एन्डरसन राइट, मेसर्स जार्ज अन्डरसन आदि प्रसिद्ध २ कम्पनियोंके साथ व्यापारिक संबंध रहा। वर्तमानमें आप भी अपना जीवन धार्मिकतामें व्यतीत करते हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं। पहले श्री गणेशदासजी तथा दूसरे श्री विरदीचंदजी। इस समय आपकी वय ६७ वर्षकी है।

श्री गणेशदासजी व्यापारके निमित्त संवत् १९५० में यहां आये। यहां आकर आपने संवत् १९५१ में अपनी फर्मकी एक शाखा मेसर्स गणेशदास उदयचंद गधइयाके नामसे खोली। इसपर कोरे कपड़ेका कारबार शुरू किया जो इस समय बराबर हो रहा है। आपके हाथोंसे भी इस फर्मको बहुत उन्नति हुई। आप सरल, एवम निराभिमानी सज्जन हैं। आप सन् १९१८ से सरदार शहरकी म्युनिसिपेल्टीके मेम्बर हैं। सन् १९१७ से बीकानेर स्टेट की लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके भी आप सदस्य हैं। सन् १९१६ में बंगाल गवर्नमेंटने आपको दरबारमें आसन प्रदान किया है। आपका जीवन एक त्यागी जीवन है। आप अपनी फर्मपर कार्य करने वाले सभी व्यक्तियोंपर बड़ा स्नेह रखते हैं।

श्रीसेठ श्रीचन्दजी साहबके दूसरे पुत्र श्री विरदीचन्दजी हैं। आपने संवत् १९५३ में कलकत्ता आकर व्यापारमें भाग लेना प्रारंभ किया। आप भी सज्जन एवम मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस समय सेठ गणेशदासजीके भानजे श्रीयुत भीखमचंदजी इस फर्मके प्रधान कार्य कर्ता हैं। आप संवत् १९२१ सेही यहां आकर इस फर्मका संचालन कर रहे हैं। आप शांत एवं गम्भीर प्रकृतिके पुरुष हैं। फर्मके मालिकोंका आप पर पूरा स्नेह है।

स्वर्गीय गुरुदेव प्रसादजी जाजोदिया

बाबू राम प्रसादजी जाजोदिया

…रायजी जाजोदिया

बाबू मानकचन्दजी जाजोदिया

लांग क्लाथके व्यापारी

श्रीचन्द गनेशदास मनोहरदासका कटरा
श्री वल्लभ गोयनका मनोहरदासका कटरा
कोड़ामल गुलाबचन्द मनोहरदासका कटरा
गुलाबचन्द प्रेमसुख मनोहरदासका कटरा
छाजूराम अर्जुनदास सदासुखका कटरा
तुलसराय रामजीदास रंगपट्टी
मन्नालाल धनराज मनोहरदासका कटरा
वृद्धिचन्द मदनमल मनोहरदासका कटरा
वृद्धिचन्द नथमल मनोहरदासका कटरा
रामदेव गजानन्द पारखकी कोठी
सुमेरमल सुगना मनोहरदासका कटरा
हरकचन्द पूरणमल मनोहरदासका कटरा

मारकीनके व्यापारी

अजीतमल मानिकचन्द सूतापट्टी
केवलराम वैजनाथ बड़तल्ला स्ट्रीट
गणेशदास उदयचंद सूतापट्टी
गणेशदास मोहनलाल भजनलाल १५६ सूतापट्टी
चौथमल रामलाल सूतापट्टी
जयकिशनदास डागा पगैयापट्टी
धनेचंद इन्द्रचंद "
बंशीलाल गुजरानी गणेशभगतका कटला
बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण ६१ सूतापट्टी
भैरोंदान शिखरचंद गणेशभगतका कटला
शोभाचंद धनराज सूतापट्टी
सदासुख पारख ७ पगैया पट्टी
सागरमल मदनलाल सूतापट्टी
सुखदेव शिवलाल ७ चीनापट्टी

जापानी मारकीनके व्यापारी

गुलराज बैजनाथ ४ नागरदास बाबूलेन
जिन्दाराम हरकिशन १३२ सूतापट्टी
देवीलाल सुखराम ७७ सूतापट्टी
लक्ष्मीनारायण अनन्तराम ४ नागरदास बाबूलेन
हनूमान भगवानदास १३२ सूतापट्टी

लालरंगके कपड़ेके व्यापारी

श्रीचंद गनेशदास मनोहरदासका कटरा
कन्हैयालाल रामकुमार १३८ मल्लिक कोठी
जगन्नाथ मदनगोपाल पारखकी कोठी
बंशीधर द्वारकादास १६० सूतापट्टी
रामरतनदास रामजीदास सदासुखका कटरा
रामरतन हरदेवदास पारखकी कोठी
रामलाल कन्हैयालाल सूतापट्टी
शिवभगवान बाबूलाल मनोहरदासका कटरा
सागरमल नन्दलाल सदासुखका कटरा

धोतीके व्यापारी

खेतसीदास गिरधारीलाल ७ पगैया पट्टी
गंगाबिशन मुरलीधर १४ पगैयापट्टी
गनपतराय गोवर्धनदास गनेशभगतका कटरा
गणेशदास गोपीकिशन ६१ सूतापट्टी
गणपतराय नरसिंहदास २०१ हरीसन रोड
गणेशचन्द रामगोपाल २०१ हरीसन रोड
गोपीकिशन श्रीलाल १७८ हरिसन रोड
गंगाबिशन दीनानाथ पगैयापट्टी
चुन्नीलाल कालूराम १३ पगैयापट्टी

सूरजमल हीराम सदासुखका कटरा

रंगीन साड़ीके व्यापारी

गणेशदास नन्दलाल पारखकी कोठी
चुन्नीलाल हीरालाल पारखकी कोठी
डूंगरसीदास मोमवरूम सदासुखका कटरा
देवीप्रसाद भगवतीनन्दन सदासुखका कटरा
मंगलचन्द गिरधारीलाल १७८ हरीसन रोड
मदनगोपाल रामगोपाल पारखकी कोठी
मंसुखदास रामलाल १७८ हरीसन रोड
मोतीराम गजानंद पारखकी कोठी
रामनाथ मन्नालाल पारखकी कोठी
रामनाथ बृजमोहन पंजाबीकटरा क्रास स्ट्रीट
शिवदत्तराय श्रीनिवास १०० हरीसन रोड
शिवबख्श रंगलाल १७८ हरीसन रोड
श्रीगोपाल विश्रामराम पारखकी कोठी
श्रीगोपाल रामेश्वर पारखकी कोठी

रेशमी कपड़ेके व्यापारी

जसकरन केशरीचंद सूतापट्टी
जतनमल केशरीचंद सूतापट्टी
जेठमल दानमल न्यूमार्केटके सामने
तोलाराम देवजी हरिसन रोड
पेरुमल ब्रदर्स कैनिङ्ग स्ट्रीट
हरकिशनदास मोहनदास सूतापट्टी
हजारीमल लक्ष्मीचंद सूतापट्टी
इण्डियन सिल्क कम्पनी ५ डलहौसी स्क्वायर(ईस्ट)
एल० एच० टोलाराम एण्डको० ७२ पार्कस्ट्रीट
मनसाराम धनमल

सिद्धेश्वर सेन एण्डको० लि० ३३ कैनिङ्ग स्ट्रीट

होजियरी मरचेंट्स

उपेन्द्रनाथ सेन १४१ ओल्ड चाइना बाजार
कन्हैयालाल मूलचंद मनोहरदासका कटला
कैलाशचन्द्र दे ओल्ड चाइना बाजार
खेतसीदास रामजीदास १०८ हरिसन रोड
गम्भीरमल महावीर प्रसाद २०३ हरिसन रोड
चैनसुख गम्भीरमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
जीवनबख्श एण्ड कम्पनी हरीसन रोड
दयालाल कम्पनी १५६ हरिसन रोड
प्रभुदयाल नेमचन्द १६ पांचा गली
पुरुषोत्तमदास वर्मा १७२ हरिसन रोड
बल्देवदास पचीसिया २०३।१ हरिसन रोड
बंशीधर शिवभगवान ५१ पांचा गली
महम्मद रफी महम्मददीन गणेश भगतका कटला
महादेव प्रसाद खत्री १५८ हरिसन रोड
महम्मददीन नूर इलाही १६० हरिसन रोड
लक्ष्मीनारायण गोपालदास १७४ हरिसन रोड
शेख महम्मद सैयद एण्डको०
३१।३२ कोलू टोला स्ट्रीट
हीरालाल सगुनचन्द १४ पगैया पट्टी
हीरालाल शिवलाल चीना बाजार
घाट एण्ड को०—२४।१ श्री मन्त दे लेन
प्रेजुयट्स यूनियन ७२ हरिसन रोड
एम. मोहम्मद इमन एण्ड सन्स १७६ हरिसन रोड
मुमताज अहमद एच० मदबूब इलाही ३१।३१ कोलूटोला स्ट्रीट
नाथ्रू मेंग ११ म्युनिसिपल मार्केट
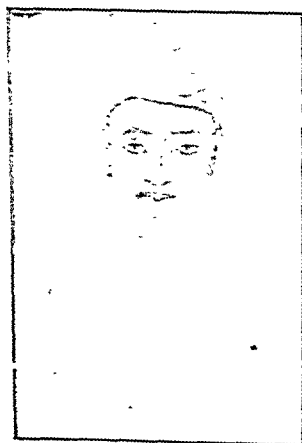
सुखदेवदास रामविलास ,,

हरिबक्स केदारनाथ ,,

सूतके व्यापारी

अब्दुल्ला भाई लालजी ५५ कैनिंग स्ट्रीट

आदमजी हाजीदाउद एण्ड को० लि० ५५ कैनिंग स्ट्रीट

इण्डो ट्रेडिंग कम्पनी ११ हाइड रो०

[illegible] एण्ड को० ८२।८ कोलूटोला स्ट्रीट

ए० बेनर एण्ड को० ६८।५ क्लाईव स्ट्रीट

के० दास एण्ड को० ८१ क्लाईव स्ट्रीट

[illegible] एण्ड सन्स लि० ११ क्लाईव स्ट्रीट

भारत कॉटन एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी लि० क्लाईव स्ट्रीट

जीवनराम शिवबक्स २१८ क्रास स्ट्रीट

जेठा मूलजी एण्ड को० १ तुरस लेन

नागरमल लाभचंद सूतापट्टी

नानूराम शिवभगवान सूतापट्टी

प्रतापचन्द्र प्रह्लादचन्द्र सूतापट्टी

बहादुरमल महादेव सूतापट्टी

मूंगीलाल हजारीमल सूतापट्टी

राजनाथ २६ स्ट्रांड रोड

सुखदेवदास रामप्रसाद सूतापट्टी

साधूराम तोलाराम वेंड्रापट्टी

सिमिंगटन काक्स एण्ड को० लि० ४ मिशन रो

शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद बड़तल्ला स्ट्रीट

हाजीहुसैन दादा सूतापट्टी

अरहर, अरहरकी दाल, मसूर, मसूरकी दाल, मटर, मटरकी दाल, मूंग, मूंगकी दाल उड़द, उड़दकी दाल आदि अन्न ग्रेटब्रिटेन, हालैण्ड, जर्मनी, बेलजियम, जापान, मोरिशस, और सीलोन जाती है। कलकत्तेके बाजारमें मनपर इनकी बिक्री होती है। पर करांचीमें ६५६ रतल वाली खण्डी पर इनका भाव होता है। बम्बईके बाजारमें २८ मन (बम्बई)की खण्डी होती है। कलकत्तेमें विदेशके लिये इनकी बोरी १६४, २१० या २२४ रतली भरी जाती है। पर बम्बईमें १६८ रतली भरनेका रिवाज है।

ज्वार, बाजरा, मो आदि अदन, मिस्र, ब्रिटिश टर्की, एशियाटिक टर्की अरब और इटेलियन पूर्व अफ्रीका जाती है। करांची बंदरपर ६५६ रतली खण्डीका भाव होता है और १६४ और २१६ रतली बोरे भरे जाते हैं। बम्बईमें भाव बम्बई २७ मनकी खण्डीका होता है और ज्वारके बोरे १५४ से १६८ रतली भरे जाते हैं तथा बाजरेके १६८ से १८० रतली तक होते हैं।

चना ग्रेटब्रिटेन, सीलोन, स्ट्रेटसेटलमेंट, और मारीशस, जाता है। जर्मनी और इटली भी खरीदते हैं। कलकत्तेमें १६४ या २१८ रतली बोरे भरे जाते हैं। करांचीमें २ हण्डरवेट की बोरी होती है। बम्बईमें १६८ से १८० रतल तकका बोरा भरता है।

मक्का ग्रेटब्रिटेन, मिस्र, यूनान, और जापान जाती है। करांचीमें भाव ६५६ रतलकी खण्डीपर होता है वहां २०६ रतली बोरे भरे जाते हैं।

इस प्रकारके मालका व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान झूंसी [इलाहाबाद] है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष लाला द्वारकाप्रसादजीके पांच पुत्रों द्वारा इस फर्मके व्यवसायकी स्थापना एवं वृद्धि हुई। उन पांचों सज्जनोंका नाम लाला हरनामदासजी, लाला मोहनलालजी, लाला किशोरीलालजी, लाला कन्हैयालालजी तथा लाला मुकुन्दीलालजी था। संवत् १९३७ ३८ में लाला किशोरीलालजी तथा लाला मुकुन्दीलालजी कलकत्ता आये और यहां आपने अपनी फर्म स्थापित की। लाला मोहनलालजी और लाला कन्हैयालालजी मद्रास गये और उन्होंने वहां कारबार जमाया और सबसे बड़े लाला हरनामदास इलाहाबादमें रामदयाल माधवप्रसाद फार्मका संचालन करते थे। इस कुटुम्बका प्रधान व्यापार गल्लेका है। एवं इस व्यापारको इस खानदानने अच्छा बढ़ाया है। भारतके कई प्रसिद्ध नगरोंमें इस फर्मकी शाखायें हैं। गल्लेके व्यवसायकी वृद्धिके अतिरिक्त इस फर्मने १२ वर्ष पूर्व नैनीमें त्रिवेणी देशी शुगर वर्कसके नामसे एक शुगर मिलकी एवं झूंसीमें भी एक शुगर मिल स्थापित की।
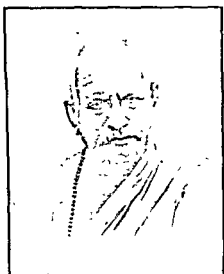
मिटं ब्रादर्स एण्ड को० लि० ३३ कैनिङ्ग स्ट्रीट
ट्रेडर्स स्टोर्स सी० १३।१५ म्युनिसिपल मार्केट

ऊनन और फैन्सी मरचॅन्ट्स

अब्दुल्लनीफ जमाल ७ आर्मेनियन स्ट्रीट
किसन गोपाल जीवनदास आर्मेनियन स्ट्रीट
छोटामल नथमल आर्मेनियन स्ट्रीट
निरंजनमल मंगलचन्द मनोहरदासका कटला
गोपीराम गोविन्दराम मनोहरदासका कटला
घोधमल चुन्नीलाल सूतापट्टी
घोधमल दुलीचन्द मनोहरदासका कटला
घोधमल जयचन्दलाल मनोहरदासका कटला
अमिय घोष—१०० हाइड स्ट्रीट
इण्डियन इण्डस्ट्रीयल एण्ड इम्पोर्टर्स अलायन्स
२१ कैनिङ्ग स्ट्रीट
इलाही बख्स ब्रदर्स एण्ड को०—८२।८ कोलू टोलास्ट्रीट

शालके व्यापारी

अमिय घोष १०० हाइड स्ट्रीट
जहरलाल पन्नालाल १३४ कैनिङ्ग स्ट्रीट
पञ्जाब ट्रेडिङ्ग कम्पनी २० कार्नवालिस स्ट्रीट
मेघाराम नवलराय एण्ड को० ७।१० सर स्टुअर्स हाग मार्केट
एल० एच० लीलाराम एण्ड को० ७।६ पार्क स्ट्रीट
सतरामदास धलामल ७।६ पार्क स्ट्रीट
ताराचन्द परशुराम एण्ड को० ७।५ पार्कस्ट्रीट
चाँदमल सरदारमल—खंगरापट्टी
तुंगनराय रामजीदास—७७ खंगरापट्टी
तिलोकचन्द गोपीकिशन ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट

नरसिंह सहाय मदनगोपाल—६ आर्मेनियन स्ट्रीट
प्रेमसुखदास मूंदड़ा—७ आर्मेनियन स्ट्रीट
धर्मचन्द सुगनचन्द—मनोहरदासका कटरा
मुन्नालाल नारायणदास—२७ आर्मेनियन स्ट्रीट
लक्ष्मीचन्द मंगतूलाल —मनोहरदासका कटरा
हनुमानमल लक्ष्मीचन्द—खंगरापट्टी

ब्लैंकट और शालके व्यापारी

कन्हैयालाल रामजीदास १५० काटन स्ट्रीट
गौरीदत्त हीरालाल १५० „
गोपालचन्द्र नन्दी रानीकोठी, सूतापट्टी
जगन्नाथ सरदारमल १५२ काटन स्ट्रीट
देवीसहाय भानीराम १५२ काटन स्ट्रीट
पञ्चानन चटर्जी रानीकोठी, सूतापट्टी
प्रेमसुखदास रूपनारायण पगैयापट्टी
बैजनाथ बृजमोहन रानीकोठी, सूतापट्टी
मूलचन्द खत्री पगैयापट्टी
रामविलास बृजमोहन, रानीकोठी, सूतापट्टी
लक्ष्मीचन्द बैजनाथ ३१ काटन स्ट्रीट
हुकमीचंद शिवनाथ, रानीकोठी, सूतापट्टी
श्रीराम कुन्दनमल, २०३ हरिसनरोड

फैन्सी और रंगीन छींटके व्यापारी

केदारनाथ मंगीलाल मनोहरदासका कटरा
गुरमुखराय हरमुखराय „ „
जीनमल रामलाल „ „
जीवनराम गंगाराम „ „
फूलचंद सूरजमल „ „
मदनगोपाल „
सुखदेवदास

मेसर्स केशवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मांगरोल (कठियावाड़) है। आप श्रीजैन समाजके वणिक सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें संवत् १९६४ में हुआ। इस फर्मके वर्तमान पार्टनर सेठ केशवजी नेमचन्द भाई, सेठ केशवजी रायचन्द भाई, सेठ गुलाबचन्द वृन्दावन भाई तथा प्रागजीवन जेठाभाई हैं। आप लोगोंकी फर्म कलकत्तेके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका हेड ऑफिस कलकत्तेमें है। व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ फर्मके मालिकोंकी दान धर्मके कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स केशवजी कम्पनी ४८ इजरा स्ट्रीट T A. Crystal—इस फर्मपर चावल, चाय, गनीज बेङ्किग,, बोटिंग और कमीशनका काम होता है। यह फर्म कलकत्तेसे, बम्बई, सुदान (अफ्रिका) रेडसी पोर्ट, सोमालीकोस्ट तथा परशियन गल्फके लिए चांवल और चायका एक्सपोर्ट करती हैं। तथा गोलमिर्च और लौंगका इम्पोर्ट इस फर्मपर होता है।

कलकत्तेकी मीलोंका माल लेने और सप्लाई करनेके लिये इस फर्मको निजकी मोटरसर्विस है। जिनके द्वारा कलकत्तेके आसपास माल लाया तथा पहुंचाया जाता है।

मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचंद

इस फर्मका हेड आफिस नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीटमें है। इस फर्मके मालिक श्रीबिरदीचंदजी, कन्हैयालालजीके पुत्र बजरंगलालजी और बिहारीचंदजीके पुत्र बा० लादूरामजी हैं। इस फर्म पर गल्लेका व्यापार होता है। यहां इसी स्थानपर आपको मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलालके नामकी फर्मपर भी गल्लेका व्यापार होता है। इस फर्मका तारका पता "Rasy है। विशेष परिचय कमीशनके काम करनेवालोंमें दिया गया है।

मेसर्स गुदीराम हेडराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाउ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मेहरसरिया सज्जन हैं। कलकत्तेमें प्रथम संवत् १९६९में सेठ गुदीरामजी आये एवं यहां आपने गुदीराम मानिकरामके नामसे फर्म स्थापित की। आपके पुत्र बाबू हेड्राजजीका जन्म संवत् १९०२ में हुआ। आपने सेठ गुदीरामजीके पश्चात फर्मका संचालन किया तथा संवत् १९४८ में गुदीराम

गल्ले और किरानेके व्यापारी

Grains, Seeds,
&
Kirana Merchants.

सेठ केशवजी नेमचन्द (केशवजी एण्ड कम्पनी)

सेठ केशवजी शिवचन्द (केशवजी एण्ड कम्पनी)
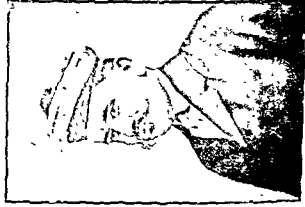
बा० गणेशीदासजी (गिरधारीलाल घासीराम)

देहली—मेसर्स गणेशीलाल भगवानदास नयाबाजार—इस दुकान पर गल्लेका व्यापार और कमीशन एजन्सीका व्यापार होता है।

कोसीकलाँ—मेसर्स गणेशीलाल बिहारीलाल—यहांपर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ फूलचंदजी टिकमाणी हैं। आपकी फर्म कलकत्तेमें इस नामसे करीब ५४ वर्षोंसे व्यवसाय कर रही है। २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें इस फर्मका हेड आफिस है। यहांपर बारदान हेसियन एवं गल्लेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मकी शाखाएं बम्बई, शिकोहाबाद और कानपुरमें हैं। इस फर्मके व्यवसायका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पृष्ठ ४४ में दिया गया है।

मेसर्स चंदनमल सिरेमल

इस फर्मका हेड आफिस अजमेरमें हैं। इसका यहांका आफिस १७८ हरिसन रोडमें है। यह फर्म यहां बैंकिंग और दूसरे व्यापारके साथ चांवलका भी व्यापार करती है। इस फर्मकी यहां रामकृष्टोपुरमें चांवलकी एक मिल है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू छोटेलालजी हैं। कुछ समयके पूर्व यह फर्म मेसर्स लक्ष्मीनारायण सूरजमल नामक फर्ममें शामिल थी। आजकल यहां और २ व्यापारोंके साथ गल्लेका भी व्यापार होता है। इसका आफिस ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हेसियन और गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल

इस फर्मकी स्थापना २३ वर्षपूर्व सेठ जयदयालजी एवम् रामरतनदासजीके हाथसे हुई। आप दोनों ही अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। सेठ जयदयालजी रामगढ़के और सेठ रामरतन दासजी लक्ष्मणगढ़के निवासी हैं।

वर्तमानमें कलकत्ता फर्मका संचालन लाला किशोरीलालजीके पुत्र लाला बनवारीलालजी, एवं मद्रास फर्मका संचालन लाला कन्हैयालालजीके पुत्र लाला बेनीप्रसादजी तथा लाला केदारनाथजी करते हैं। झूंसीमें लाला बनवारीलालजीके छोटे भ्राता लाला मक्खूदनलालजी कारबार सम्हालते हैं। इस कुटुम्बका व्यापार भलीप्रकार शांतिपूर्वक चल रहा है। कलकत्तेके प्रतिष्ठित गल्लेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। इसके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

झूंसी—मेसर्स रामदयाल माधवप्रसाद—यहां हेड आफिस है तथा बहुत पुराने समयसे यह फर्म इसी नामसे कारबार करती है।

झूंसी [इलाहाबाद] मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दलाल - इस फर्मपर कपड़ेका कारबार होता है।

झूंसी—(इलाहाबाद) लाला मक्खूदनलाल, इस नामसे शक्करका कारबार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ६ शिवठाकुर लेन—यहां गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ३ प्यारा बगान यहां एक आइल मिल अपने मैनजमेंटमें चलती है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ४० स्ट्रेंड बैंक रोड—यहां आपका गोदाउन है एवं अनाजका कारबार होता है।

मद्रास—मोहनलाल कन्हैयालाल २२४ मिंटरोड—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बम्बई—बेनीप्रसाद केदारनाथ कालबादेवी रोड—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कानपुर—रामदयाल माधवप्रसाद कोपरगंज—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

बनारस—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल विशेसरगंज- यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। इस दुकानके अंडरमें भटनी और सिवानमें एक एक स्यूगरमिल आपके मैनेजमेंटमें चलती है।

इलाहाबाद—बाबू कन्हैयालाल, मुट्ठीगंज—यहां गल्ले तथा आढ़तका कारबार होता है।

नैनी—बाबू कन्हैयालाल—गल्लेका व्यापार है। तथा स्यूगर मिल है।

बेलुर—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

मुंगेर—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— " "

सुल्ताना—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— " "

आरा—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— " "

बिहिया—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— " "

सहसराम—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— " "

इनके अतिरिक्त इन प्रांतोंके अंदरमें और भी कई स्थानोंपर गल्लेका कारबार होता है।

मेसर्स जीतमल विसेसर प्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरूमें है। मगर आप बहुत समयसे इलाहाबादमें आकर बस गये हैं। आप माहेश्वरी समाजके मुरानी गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ५०।६० वर्ष हुए। आरंभमें इस फर्मका मेसर्स जीतमल कल्लूमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना श्री सेठ कल्लूमलजीने की। तथा आप हीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष रूपसे प्रोत्साहन मिला। आपका स्वर्गवास हुए करीब १५ वर्ष हो गये हैं। आपके २ पुत्र हैं बाबू रामेश्वरप्रसादजी और बाबू विसेसर प्रसादजी। करीब ३ वर्ष पूर्व आप दोनों भाइयोंकी फर्में अलग २ होगई। बाबू रामेश्वरदासजीकी फर्म मेसर्स जीतमल कल्लूमल तथा बाबू विसेसरदासजीकी फर्म मेसर्स जीतमल विसेसर प्रसादके नामसे व्यवसाय करने लगी। वर्तमानमें बाबू विसेसर प्रसादजी ही फर्मके व्यापारको बड़ी उत्तमतासे संचालित करते हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री रामगोपालजी है। वे अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल विसेसरप्रसाद १०५ ओल्ड चायना बाजार T. A. Dharmatma Phone 2765 B B इस फर्मपर चावल और शक्करका बहुत बड़ा इम्पोर्ट व्यापार होता है। यू० पी० और बंगालमें चावलका एक्सपोर्ट करने वाली फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।

इलाहाबाद—मेसर्स कल्लूमल विसेसरप्रसाद चौक - यहां पर बैङ्किग, शक्कर तथा चावलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीतमल विसेसरप्रसाद काहूकी कोठी T. A. !isesar—यहां पर चावल शक्कर गल्ला, कपड़ा तथा किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सके मुनीम बाबू जुहारमलजी जालान हैं। इस फर्मका आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें है। यहां पर यह फर्म जूट और गल्लेका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी भागमें जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स जानकीदास शिवनारायण

इस फर्मका हेड आफिस ४८ केनिंग स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म किरानेका बहुत बड़ा

एवं आपके पुत्र बाबू प्रेमशंकरजी और बाबू हरीशंकरजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान चंदोसीमें (यू० पी०) है।

आपकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गाप्रसाद हरीशंकर २६ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां हेड ऑफिस है तथा प्रधानतासे गल्लेका व्यापार होता है।

सहजनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

नौतनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस फर्मका हेड ऑफिस १७८ हरीसन रोडमें है। यह फर्म यूरोपको गल्लेका बहुत बड़ा एक्सपोर्ट करती है। गल्लेके अतिरिक्त जूट एवं सनका काम भी यह फर्म करती है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके जूट बेलर्स एण्ड शीपर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स नोपचन्द मगनीराम

इस फर्मके संचालक मूल निवासी मुकुन्दगढ़ (जयपुर स्टेट) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके भगतानी सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ नोपचन्दजी संवत् १९०० में अपने व्यापारके लिये बड़िया (मुंगेर) आये। और यहां अपने कारबारकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मगनीरामजीने इस फर्मके गल्लेके व्यापारको बढ़ाया और उसमें अच्छी प्रतिष्ठा एवम् सम्पत्ति पैदा की। ३० वर्ष पूर्व इस फर्मकी कलकत्तेमें शाखा स्थापित हुई। सेठ मगनीरामजीका स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पांच पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः अर्जुनदासजी, [illegible], जोरावरमलजी, घनश्यामदासजी एवम् द्वारकादासजी हैं। इनमेंसे जोरावरमलजी एवम् द्वारकादासजीका देहान्त हो गया है। वर्तमानमें तीनोंही सज्जन इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे बड़ियामें एक हाई स्कूल चल रहा है। तथा वहीं एक धर्मशाला भी बनी हुई है। बा० घनश्यामदासजी कलकत्ता पिंजरापोलके सेक्रेटरी हैं। तथा करीब दस वर्षसे इण्डियन [illegible] एसोसिएशनके सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नोपचन्द मगनीराम [illegible]—इस फर्मपर बैंकिंग और गल्लेका व्यापार होता है।

बनारसमें इसी नामसे आपका व्यवसाय पहलेहीसे हो रहा है। वहां आपकी फर्म कपड़ा गल्ला और सूतके व्यवसायियोंमें अच्छी समझी जाती है। कलकत्तेमें भी यह फर्म गल्लेके व्यापारियोंमें प्रतिष्ठित समझी जाती है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जयदयालजी और उनके पुत्र बा० सागरमलजी तथा मनमोहनजी और सेठ रामरतनदासजी और उनके पुत्र बा० मदनगोपालजी तथा मुरारीलालजी हैं। मुरारीलालजी तथा मनमोहनजी इस समय विद्याध्ययन करते हैं।

सेठ रामरतनदासजीको राय साहबकी पदवी प्राप्त है। यह फर्म इण्डियन प्रोड्यूस एसोसिएशन, बंगाल चेम्बर, व्हीट सीड्स एसोसियेशन आदि कई व्यापारिक संस्थाओंकी मेम्बर है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल १८ मल्लिक स्ट्रीट—यहां लाख, जूट, सन, गल्ला व कपड़ेका व्यापार होता है।

बनारस—मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल लक्खी चौतरा—यहां इस फर्मका हे० आ० है। यहां कपड़ा गल्ला तथा लाखका व्यापार होता है।

शिवपुर (काशी)—जयदयाल मदनगोपाल कम्बाइन बेलिंग प्रेस—यहां जूटप्रेस, तथा तेल और लोहेका कारखाना है।

शेरपुर (गया)—मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल—गल्लेका व्यापार होता है।

मसुरी (गया)— ” ” ” ” ” ”

मुगलसराय— ” ” ” गल्लेका व्यापार होता है तथा लोहेका कारखाना है।

मेसर्स जयदयाल मदन गोपालके नामसे सकलडीहा, (बिहार), चुनार, (यू० पी०) दुर्गावती, (बिहार), मोहनिया (बिहार), कुदरा (बिहार), भभुआ रोड (बिहार), धर्मगंज (बिहार), नदौंई (बिहार)में दुकानें हैं इनस्थानोंपर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स जयदयाल मदन गोपालके नामसे लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, बांसबरेली, जौनपुर, बलिया, इन्दारा, मऊनाथभंजन, शाहजहांपुर, इन सब स्थानोंमें तेलकी एजंसी है।

मेसर्स जयदयाल मदन गोपालके नामसे इन्दारा, पांडेपुर, शिवपुर (बनारस) डिघवारा (छपरा) मसरख (छपरा) सैदराजा (बनारस) इन सब स्थानोंमें गल्ले तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

स्व० मेहता बलदेवरामजी
(बलदेवराम बिहारीलाल)

स्व० मेहता बिहारीलालजी
(बलदेवराम बिहारीलाल)

मेहता किशोरीलालजी
(बलदेवराम बिहारीलाल)

मेहता मुरारीलालजी
(बलदेवराम बिहारीलाल)

बाबू रामगोपालजी कानोड़िया
जानकीदास शिवनारायण

स्वर्गीय बाबू जीतमलजी दुगानी
(जीतमल हिंमतराम)

बाबू रामदेवजी मल्ल
(हरकचन्द मेघराज)

आपके छोटे भ्राता सेठ शालिगरामजी थे। दोनों भाइयोंके कोई सन्तान न थी, फलतः स्वर्गवासी होनेके बाद फर्मका सारा कारबार आपके भानजे एवं ट्रस्टी सेठ ... हजारीलालजी एवं सेठ किशोरीलालजीके हाथोंमें आया।

श्री सेठ बिहारीलालजीने अपने मामा मेहता बलदेवरामजीके स्मरणार्थ गमघाट २ लाख रुपयोंकी लागतसे एक मेहता बल्लभराम शालिगराम सांगवेद विद्यालय की ... इसके अतिरिक्त मथुरा, काशी, कलकत्ता हरिद्वार आदि स्थानोंमें आपने अन्नक्षेत्र स्थापित ... श्री सेठ बिहारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ में एवं सेठ हजारीलालजीका ... १९७७ में हुआ। सेठ बिहारीलालजीके पुत्र बाबू मुरारीलालजी बाबू मनोहरलालजी एवं गोविन्दलालजी हैं। तथा सेठ किशोरीलालजीके पुत्र बाबू गिरधारीलालजी एवं हरीलालजी हैं।

वर्तमानमें फर्मके व्यवसायमें प्रधान रूपसे भागलेनेवाले श्री सेठ किशोरीलालजी, ... रीलालजी एवं गिरधारीलालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन एवं शांतप्रकृतिके महानुभाव हैं। फर्म कलकत्तेके व्यवसायियोंमें बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है। आपके ... परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल ४६ स्ट्रांडरोड T.No 2557 B. B.—यहां हेड है। तथा बैङ्किंग, गल्लेका व्यापार और कमीशनका काम होता है। आपके ३ गोडाउन ... रोडपर एवं एक गोडाउन रामकृष्णपुर रेलवे साइडिंग पर है। राम कृष्णपुरका T. 559 है इसके अलावा कलकत्तेमें आपके निम्नलिखित व्यापार होते हैं।

कपड़ा—मुरारीलाल मोहनलाल—इस नामसे आप इविंग कम्पनीकी मैनेजिंग एजंट ... स्किनर कम्पनीके बेनियन हैं।

बैङ्किग—सन् १९१० से यह फर्म ईस्टर्न बैंक लिमिटेडकी ग्यारंटेड केशियर एवं बेनियन हैं। १९१६ से सेंट्रल बैंकके कलकत्ता हेड आफिस एवं बड़ाबजार तथा झरिया और सोल ब्रांचकी, ग्यारंटेड केशियर और बेनियन है।

हेसियन—गिरधारीलाल कम्पनी १३२।१३६ केनिंग स्ट्रीट T. No 1120 Cal—यहां ... ब्रोकरेजका काम होता है।

इलाहाबाद—मेसर्स बलदेवराम शालिगराम—गल्ला आढ़त तथा सराफीका काम होता है।

भरवारी (इलाहाबाद) बलदेवराम शालिगराम—गल्लेकी खरीदीका काम होता है।

महराजगंज } (जिला गोरखपुर)—बलदेवराम शालिगराम—यहां गल्लेका खरीदी और
घोस बोग } काम होता है।

व्यवसाय करती है। सिगरेटके साथ २ गल्लेका व्यापार भी इस फर्म पर होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित सिगरेटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स राय बहादुर जेसाराम हीरानंद

इस फर्मका हेड आफिस डेरा इस्माईलखांमें है। यहांके आफिसका पता १६० क्रासस्ट्रीट है। यह फर्म यहां गल्लेका व्यापार और कमीशनका काम करती है। तारका पता—"Jadwavarshi" है। इस फर्मका विशेष परिचय कमीशनका काम करने वालोंमें दिया गया है।

मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल

इस फर्मका हेड आफिस देहलीमें है। यहां इसका आफिस २२ केनिंग स्ट्रीटमें है। इस फर्मपर चीनी, हेसियन और गल्लेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हेसियन और गल्लेके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका तारका पता "Sabbarwal" है।

मेसर्स तेजपाल ब्रदादर्स

इस फर्मका आफिस १७ बडतल्ला स्ट्रीटमें है यहां यह फर्म गल्ले और हेसियनका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय हेसियन और गल्लेके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसके वर्तमान संचालक बा० प्रह्लाददत्तजी है।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्मका हेड आफिस भिवानीमें है। यहां यह फर्म १९२ क्रास स्ट्रीटमें अपनी निजकी कोठीमें कपड़े एवं गल्लेका व्यापार करती है। इसकी यहां बहुतसी स्थायी सम्पत्ति भी है। इस फर्मका विशेष परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद हरीशंकर

इस फर्मका स्थापन संवत १९५४ में सेठ दुर्गाप्रसादजीके हाथोंसे हुआ था। आपने ही इस फर्मको स्थापित कर व्यवसायको तरक्की दी। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ दुर्गाप्रसादजी

स्व० विनिमरदासजी कसेरा

बाबू नन्दलालजी कसेरा

बाबू रामलालजी कसेरा

सीतारामपुर – नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है।
खगड़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है
निर्मली (भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां राईस मिल है तथा गल्लेका व्यापार होता है।
बस्ती जंक्शन—(भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां आड़तका काम होता है।
नुकामा जंक्शन—नोपचन्द मगनीराम —यहां आड़तका काम होता है।
बढ़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां इस फर्मकी जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स फूलचन्द केदारमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामेश्वरदासजी, हनुमानबक्सजी एवम मङ्गलचन्दजी हैं। इसका यहांका आफिस नं० ३ चितरंजन एवेन्यूमें है। तारका पता Fresh है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इसके फैनिङ्ग स्ट्रीटके आफिसमें हेसियन गनी और चीनीका एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट व्यापार भी होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १८७ में दिया गया है।

मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल

इस फर्मके मूल स्थापक श्रीमेहता बलदेवरामजी मूल निवासी मथुराके थे। आप सन् १८६० के करीब कलकत्ता आये, एवं यहां आकर मुनीमात की। पश्चात् आपने बलदेवराम नारायणदासके नामसे गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। संवत् १९५२ तक आप इस नामसे व्यापार करते रहे। बादमें आप बलदेवराम बिहारीलालके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। सेठ बलदेवरामजीके उद्योग एवं अध्यवसायके कारण इस फर्मका व्यापार दिन प्रतिदिन उन्नत होता गया कलकत्तेमें जब आपका व्यापार तरक्की पर पहुंचा, तब आपने अपनी फर्मकी शाखाएं इलाहाबाद, भरवारी, और गोरखपुर जिलेके कुछ स्थानोंमें स्थापित की।

सेठ बलदेवरामजी परम धार्मिक एवं सात्विक पुरुष थे। आपका सारा जीवन धार्मिक रूपमें बीता धर्मकी उन्नतिमें आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति लगाई। आपने कई मंदिरोंका जीर्णोद्धार करवाया, पंच महायज्ञ करवाये। इन पंच महायज्ञ करानेमें करीब १ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति आपने लगाई। इसी प्रकारके धार्मिक कामोंमें आप सदा २ ही विपुल सम्पत्ति खर्च करते रहे। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ में हुआ

मेसर्स केशवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मांगरोल (काठियावाड़) है। आप श्रीमालजैन समाजके वणिक सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें संवत् १९५४ में हुआ। इस फर्मके वर्तमान पार्टनर सेठ केशवजी नेमचन्द भाई, सेठ केशवजी शामजी भाई, सेठ गुलाबचन्द वृन्दावन भाई तथा प्राणजीवन जेठाभाई हैं। आप लोगोंकी फर्म कलकत्तेके व्यापारिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका हेड आफिस कलकत्तेमें है। व्यापारिक उन्नतिके साथ २ फर्मके मालिकोंकी दान धर्मके कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स केशवजी कम्पनी ४८ इजरा स्ट्रीट T A. Crystal—इस फर्मपर चावल, चना, गनीज बेकिंग, बोटिंग और कमीशनका काम होता है। यह फर्म कलकत्तेसे, बम्बई, मुम्बासा (अफ्रिका) रंढसो पोर्ट, सोमालीकोस्ट तथा पर्शियन गल्फके लिए चावल और चनेका एक्सपोर्ट करती है। तथा गोलमिर्च और लौंगका इम्पोर्ट इस फर्मपर होता है।

कलकत्तेकी मीलोंका माल लेने और सप्लाई करनेके लिये इस फर्मकी निजकी बोटसर्विस है। जिनके द्वारा कलकत्तेके आसपास माल लाया तथा पहुंचाया जाता है।

मेसर्स कन्हैयालाल गिरधारीचंद

इस फर्मका हेड आफिस नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीटमें है। इस फर्मके मालिक श्रीगिरधारीचंदजी, कन्हैयालालजीके पुत्र बजरंगलालजी और गिरधारीचंदजीके पुत्र बा० छाजूरामजी हैं। इस फर्मपर गल्लेका व्यापार होता है। यहां इसी स्थानपर आपकी मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलालके नामकी फर्मपर भी गल्लेका व्यापार होता है। इस फर्मका तारका पता "Rasy" है। विशेष परिचय कमीशनका काम करनेवालोंमें दिया गया है।

मेसर्स गुदीराम डेडराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मेहणसरिया सज्जन हैं। कलकत्तेमें प्रथम संवत्१९६६में सेठ गुदीरामजी आये एवं यहां आपने गुदीराम मानिकरामके नामसे फर्म स्थापितकी। आपके पुत्र बाबू डेडराजजीका जन्म संवत् १९०२ में हुआ। आपने सेठ गुदीरामजीके पश्चात फर्मका संचालन किया तथा संवत् १९४८ में गुदीराम

सेठ केशवजी नेमचन्द (केशवजी एण्ड कम्पनी)

वर्तमानमें कलकत्ता फर्मका संचालन लाला किशोरीलालजीके पुत्र लाला बनवारीलालजी, एवं मद्रास फर्मका संचालन लाला कन्हैयालालजीके पुत्र लाला बेनीप्रसादजी तथा लाला केदारनाथजी करते हैं। भूंसीमें लाला बनवारीलालजीके छोटे भ्राता लाला मकसूदनलालजी कारबार सम्हालते हैं। इस कुटुम्बका व्यापार भलीप्रकार शांतिपूर्वक चल रहा है। कलकत्तेके प्रतिष्ठित गल्लेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। इसके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

भूंसी—मेसर्स रामदयाल माधवप्रसाद—यहां हेड आफिस है तथा बहुत पुराने समयसे यह फर्म इसी नामसे कारबार करती है।

भूंसी [इलाहाबाद]मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दलाल - इस फर्मपर कपड़ेका कारबार होता है।

भूंसी—(इलाहाबाद) लाला मकसूदनलाल, इस नामसे शक्करका कारबार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ६ शिवठाकुर लेन—यहां गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ३ प्यारा बगान यहां एक आइल मिल अपने मैनजमेंटमें चलती है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ४७ स्ट्रेंड बैंक रोड—यहां आपका गोडाउन है एवं अनाजका कारबार होता है।

मद्रास—मोहनलाल कन्हैयालाल २२४ मिंटरोड—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बम्बई—बेनीप्रसाद केदारनाथ कालबादेवी रोड—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कानपुर—रामदयाल माधवप्रसाद कोपरगंज—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

बनारस—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल विशेसरगंज- यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। इस दुकानके अंडरमें भटनी और शिवानमें एक एक श्यूगरमिल आपके मेनेजमेंटमें चलती है।

इलाहाबाद—बाबू कन्हैयालाल, मुट्ठीगंज—यहां गल्ले तथा आढ़तका कारबार होता है।

नैनी—बाबू कन्हैयालाल—गल्लेका व्यापार है। तथा श्यूगर मिल है।

बेल्लपुर—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

मुरेना—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— ,, ,,

मुकामा—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— ,, ,,

आरा—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— ,, ,,

बिहिया—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— ,, ,,

सहसराम—रामदयाल द्वारका प्रसाद— ,, ,,

इनके अतिरिक्त इन ब्रांचेजके अंडरमें और भी कई स्थानोंपर गल्लेका कारबार होता है।

मेसर्स जीतमल बिसेसर प्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरूमें है। मगर आप बहुत समयसे इलाहाबादमें आकर बस गये हैं। आप माहेश्वरी समाजके सुखानी गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ५०।६० वर्ष हुए। आरंभमें इस फर्मका मेसर्स जीतमल कन्लूमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना श्री सेठ कन्लूमलजीने की। तथा आप हीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको विशेष रूपसे प्रोत्साहन मिला। आपका स्वर्गवास हुए करीब १६ वर्ष हो गये हैं। आपके २ पुत्र हैं बाबू रामेश्वरप्रसादजी और बाबू बिसेसर प्रसादजी। करीब ३ वर्ष पूर्व आप दोनों भाइयोंकी फर्में अलग २ होगईं। बाबू रामेश्वरप्रसादजीकी फर्म मेसर्स जीतमल कन्लूमल तथा बाबू बिसेसरप्रसादजीकी फर्म मेसर्स जीतमल बिसेसर प्रसादके नामसे व्यवसाय करने लगी। वर्तमानमें बाबू बिसेसरप्रसादजी ही फर्मके व्यापारको बड़ी उत्तमतासे संचालित करते हैं। आपके एक पुत्र है जिनका नाम [illegible] है। वे अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल बिसेसरप्रसाद १०१ ओल्ड चायना बाजार T. A. Dharmatma Phone 2765 B B इस फर्मपर चावल और शक्करका बहुत बड़ा इम्पोर्ट व्यापार होता है। यू॰ पी॰ और बंगालमें चावलका एक्सपोर्ट करने वाली फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।

इलाहाबाद—मेसर्स कन्लूमल बिसेसरप्रसाद चौक - यहां पर बैंकिंग, शक्कर तथा चावलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीतमल बिसेसरप्रसाद कलूकी कोठी T. A. [illegible]—यहां पर चावल शक्कर, कपड़ा तथा किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीतराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक मेसर्स [illegible] मुनीम बाबू जुहारमलजी [illegible] हैं। इस फर्मका आफिस [illegible] स्ट्रीटमें है। यहां पर यह फर्म सूद और रुईका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके [illegible] दिया गया है।

मेसर्स जानकीदास शिवनारायण

इस फर्मका हेड आफिस [illegible] स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म किरानेका बहुत बड़ा

वर्तमानमें कलकत्ता फर्मका संचालन लाला किशोरीलालजीके पुत्र लाला [illegible]जी, एवं मद्रास फर्मका संचालन लाला कन्हैयालालजीके पुत्र लाला बैजनाथजी तथा लाला केदारनाथजी करते हैं। झूंसीमें लाला [illegible]लालजीके छोटे भाई लाला [illegible] काम करते हैं। इस कुटुम्बका व्यापार भलीप्रकार शांतिपूर्वक चल रहा है। कलकत्तेके प्रतिष्ठित गल्लेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। इसके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

झूंसी—मेसर्स रामदयाल मथुराप्रसाद—यहां हेड आफिस है तथा बहुत पुराने समयसे यह फर्म इसी नामसे व्यापार करती है।

झूंसी [इलाहाबाद] मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दलाल - इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।

झूंसी—(इलाहाबाद) लाला मथुराप्रसाद, इस नामसे शक्करका व्यापार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ६ [illegible] लेन—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ३ [illegible] बगान यहां एक आइल मिल आपके मैनेजमेंटमें चलती है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ४७ स्ट्रेंड बैंक रोड—यहां आपका गोदाम है एवं अनाजका व्यापार होता है।

मद्रास—मोहनलाल कन्हैयालाल २२४ मिंटरोड—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बम्बई—बैजनाथ केदारनाथ कालबादेवी रोड—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कानपुर—रामदयाल मथुराप्रसाद कोपरगंज—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

बनारस—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल विशेसरगंज- यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। इस दुकानके अंडरमें भटनी और शिवानमें एक एक शूगरमिल आपके मैनेजमेंटमें चलती है।

इलाहाबाद—बाबू कन्हैयालाल, मुट्ठीगंज—यहां गल्ले तथा आढ़तका कारबार होता है।

नैनी—बाबू कन्हैयालाल—गल्लेका व्यापार है। तथा शूगर मिल है।

बेलुर—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

मुरेना—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— ,, ,,

मुकामा—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— ,, ,,

आरा—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— ,, ,,

बिहिया—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— ,, ,,

सहसराम—रामदयाल द्वारका प्रसाद— ,, ,,

इनके अतिरिक्त इन ब्रांचेजके अंडरमें और भी कई स्थानोंपर गल्लेका कारबार होता है।

एवं आपके पुत्र बाबू प्रेमशंकरजी और बाबू हरीशंकरजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान चंदोसीमें (यू० पी०) है।

आपकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गाप्रसाद हरीशंकर २६ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां हेड आफिस है तथा प्रधानरूपसे गल्लेका व्यापार होता है।

सहजनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

नौतनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस फर्मका हेड आफिस १७८ हरीसन रोडमें है। यह फर्म यूरोपको गल्लेका बहुत बड़ा एक्सपोर्ट करती है। गल्लेके अतिरिक्त जूट एवं सनका काम भी यह फर्म करती है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके जूट बेलर्स एण्ड शीपर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स नोपचन्द मगनीराम

इस फर्मके संचालक मूल निवासी मुकुन्दगढ़ (जयपुर स्टेट) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ नोपचन्दजी संवत् १९०० में अपने व्यापारके लिये बढ़िया (मुंगेर) आये। और यहां अपने व्यवसायकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मगनीरामजीने इस फर्मके गल्लेके व्यापारको बढ़ाया और उसमें अच्छी प्रतिष्ठा एवम् सम्पत्ति पैदा की। ३० वर्ष पूर्व इस फर्मकी कलकत्तेमें शाखा स्थापित हुई। सेठ मगनीरामजीका स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पांच पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः अर्जुनदासजी, प्रेमसुखदासजी, जोरावरमलजी, घनश्यामदासजी एवम् द्वारकादासजी हैं। इनमेंसे जोरावरमलजी एवम् द्वारकादासजीका देहान्त हो गया है। वर्तमानमें तीनोंही सज्जन इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे बढ़ियामें एक हाई स्कूल चल रहा है। तथा वहीं एक धर्मशाला भी बनी हुई है। बा० घनश्यामदासजी कलकत्ता पिंजरापोलके सेक्रेटरी हैं। तथा करीब दस वर्षोंसे इण्डियन प्रोड्यूस एसोसियेशनके सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नोपचन्द मगनीराम ६४ पथरियाघट्टा—इस फर्मपर बैंकिंग और गल्लेका व्यापार होता है।

डेढ़राजके नामसे आप कारबार करनेलगे। आप इस समय विद्यमान हैं। आपके पुत्र बाबु बींजराज जी समझदार एवं सरल प्रकृतिके व्यापार चतुर सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू शुभकरणजी हैं आप भी व्यापारमें सहयोग लेते हैं।

आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—गुटीराम डेढ़राज २५ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No 2987 B B; T. A. Mahansria—यहां गल्लेका व्यापार हुंडी, चिट्ठी तथा सराफी लेनदेनका काम होता है। यह फर्म गल्लेके व्यापारियोंमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है।

कलकत्ता—डेढ़राज बीजराज २६ बड़तल्ला—यहां पीस गुड्स चलानीका व्यापार होता है।

फैजाबाद—मेसर्स डेढ़राज बींजराज—गल्लेका व्यापार तथा चलानीका काम होता है।

इनके अतिरिक्त नवाबगंज, खालीलाबाद, और बेलवारियामें भी आपकी शाखाएं है जिन पर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स गिरधारीलाल घासीराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बरड़ोद (अलवर राज्य) में है। आप महावर वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। सबसे पहले इसकी स्थापना सेठ गिरधारीलालजी और सेठ घासीरामजी दोनों भाईयोंने मिलकर की थी। सेठ गिरधारी लालजीका स्वर्गवास संवत् १९५७ में तथा सेठ घासीरामजीका संवत् १९७० में हो गया। सेठ गिरधारीलालजीके पश्चात् सेठ लक्ष्मीनारायणजी सेठ बिहारीलालजी और भगवानदासजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आप तीनोंहीका स्वर्गवास होचुका है इस समय इस फर्मके मालिक सेठ घासीरामजीके पुत्र श्रीयुत बाबू गणेशीलालजी हैं।

इस फर्मकी तरफसे बरड़ोदमें एक धर्मशाला, एक मन्दिर, और एक कुंआ बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गिरधारीलाल घासीराम १४२ काटन स्ट्रीट T. A. Chowkrrgat इस दुकान पर गल्ला, किराना, चावल, चीनी, इत्यादिका निजी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जगदीशप्रसाद पन्नालाल २५ बड़तल्ला स्ट्रीट—इस दुकान पर लौंग, इलायची, सुपारी, बदाम इत्यादि किराना बाहरसे इम्पोर्ट होता है तथा बिकता है।

बाबू रामगोपालजी कानोड़िया
(जानकीदास शिवनारायण)

स्वर्गीय बाबू जीतमलजी सरावगी
(जीतमल बिशंभर प्रसाद)

बाबू रामकुंवारजी भगत
(द्वारकादास केदारबख्श)

बाबू बिश्वंभर प्रसादजी सरावगी
(जीतमल बिशंभर प्रसाद)

व्यवसाय करती है। किराने के साथ २ गल्ले का व्यापार भी इस फर्म पर होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित किराने के व्यापारियों में दिया गया है।

मेसर्स राय बहादुर जेसाराम हीरानंद

इस फर्मका हेड आफिस देहरा इस्माईलखांमें है। यहांके आफिसका पता १६० क्रासस्ट्रीट है। यह फर्म यहां गल्लेका व्यापार और कमीशनका काम करती है। तारका पता—"Jadwavarshi" है। इस फर्मका विशेष परिचय कमीशनके काम करने वालोंमें दिया गया है।

मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल

इस फर्मका हेड आफिस देहलीमें है। यहां इसका आफिस २२ केनिंग स्ट्रीटमें है। इस फर्मपर चीनी, हेसियन और गल्लेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हेसियन और गल्लेके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका तारका पता "Sabbarwal" है।

मेसर्स तेजपाल प्रह्लादत्त

इस फर्मका आफिस ६७ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है यहां यह फर्म गल्ले और हेसियनका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय हेसियन और गल्लेके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसके वर्तमान संचालक बा० प्रह्लादत्तजी हैं।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्मका हेड आफिस मिर्जापुरमें है। यहां यह फर्म १९२ क्रास स्ट्रीटमें अपनी निजकी कोठीमें कपड़े एवं गल्लेका व्यापार करती है। इसकी यहां बहुतसी स्थायी सम्पत्ति भी है। इस फर्मका विशेष परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

इस फर्म

इस फर्मको स्थापित

आपके छोटे भ्राता सेठ शालिगरामजी थे। दोनों भाइयोंके कोई सन्तान न थी, फलतः आपके स्वर्गवासी होनेके बाद फर्मका सारा कारबार आपके भानजे एवं ट्रस्टी सेठ विहारीलालजी, सेठ हजारीलालजी एवं सेठ किशोरीलालजीके हाथोंमें आया।

श्री सेठ विहारीलालजीने अपने मामा मेहता बल्देवरामजीके स्मरणार्थ रामघाट काशीमें २ लाख रुपयोंकी लागतसे एक मेहता बल्लभराम शालिगराम सांगवेद विद्यालय की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त मथुरा, काशी, कलकत्ता हरिद्वार आदि स्थानोंमें आपने अन्नक्षेत्र स्थापित किये हैं। श्री सेठ विहारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७९ में एवं सेठ हजारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हुआ। सेठ विहारीलालजीके पुत्र बाबू मुरारीलालजी बाबू मनोहरलालजी एवं बाबू गोविन्दलालजी हैं। तथा सेठ किशोरीलालजीके पुत्र बाबू गिरधारीलालजी एवं हरीलालजी हैं।

वर्तमानमें फर्मके व्यवसायमें प्रधान रूपसे भागलेनेवाले श्री सेठ किशोरीलालजी, बाबू मुरारीलालजी एवं गिरधारीलालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन एवं शांतप्रकृतिके महानुभाव हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके व्यवसायियोंमें बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है। आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बल्देवराम विहारीलाल ४९ स्ट्रांडरोड T. No 2557 B. B.—यहां हेड आफिस है। तथा बेङ्किंग, गल्ले का व्यापार और कमीशनका काम होता है। आपके ३ गोडाउन स्ट्रांडरोडपर एवं एक गोडाउन रामकृष्टोपुर रेलवे साइडिंग पर है। राम कृष्टोपुरका T. No 558 है इसके अलावा कलकत्ते में आपके निम्नलिखित व्यापार होते हैं।

कपड़ा—मुरारीलाल मोहनलाल—इस नामसे आप इविंग कम्पनीकी मैनेजिंग एजंट मेसर्स जार्डीन स्किनर कम्पनीके बेनियन हैं।

बेङ्किग—सन् १९१० से यह फर्म ईस्टर्न बेंक लिमिटेडकी ग्यारंटेड केशियर एवं बेनियन हैं। सन् १९१६ से सेंट्रल बैंकके कलकत्ता हेड आफिस एवं बड़ाबजार तथा झरिया और आसनसोल ब्रांचकी, ग्यरंटेड केशियर और बेनियन हैं।

हेशियन—गिरधारीलाल कम्पनी १३५।१३६ केनिंग स्ट्रीट T. No 1120 Cal—यहां हेशियन ब्रोकरेजका काम होता है।

इलाहाबाद—मेसर्स बल्देवराम शालिगराम—गल्ला आढ़त तथा सराफीका काम होता है।

भरवारी (इलाहाबाद) बल्देवराम शालिगराम—गल्लेकी खरीदीका काम होता है।

खलीलाबाद } (जिला गोरखपुर)—बल्देवराम शालिगराम—यहां गल्लेका खरीदी और आढ़तका
चौरा चौरी } काम होता है।

स्व० विसेसरदासजी कसेरा

बाबू चन्द्रभानजी कसेरा

बाबू रामदासजी कसेरा

व्यवसाय करती है। आगरा तथा कलकत्तामें इस फर्मकी तेलकी मिलें हैं। इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय "ऑइल मरचेंट" विभागमें दिया है।

मेसर्स भगतराम शिवप्रताप

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान राजगढ़ [बीकानेर स्टेट] है। कलकत्तेमें फर्म करीब ६०।७० वर्षोंसे व्यापार कर रही है।

इस फर्मका हेड आफिस २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें हैं। यहांपर हुण्डी, चिट्ठी, गल्ला हेसियनका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मकी शाखाएं बम्बई, कानपुर, हिसार, [पंजाब] सरगोधा [पंजाब] एवं राजगढ़में [बीकानेर स्टेट) है। इन शाखाओंपर रुई, गल्ला, एवं आढ़तका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभाग पृष्ट ५८ में दिया गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ शिवप्रतापजी रामनारायणजी सेठ लक्ष्मीनारायणजी करते हैं।

मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल

इस फर्मका आफिस १३७ काटन स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें है और गनीके व्यापारियोंमें चित्रोंसहित दिया गया है। यहा यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मका हेड आफिस बम्बईमें है। बम्बईमें यह फर्म काटन, मील तथा बेङ्किंग बड़ा बिजिनेस करती है। इस फर्मके मैनेजमेंटमें अहमदाबादमें न्यू स्वदेशी काटन मिल तथा अकोला काटन मिल लिमिटेड चल रही है। इसके अतिरिक्त इसकी आँइल मिल तथा कई प्रेसिंग फेक्टरियां भिन्न २ स्थानों पर चल रही हैं। बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, तथा करांची प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्रोंमें आपकी फर्में स्थापित हैं, तथा इन फर्मोंके अंडरमें यू० पी०, पंजाब निजाम हैदराबाद प्रान्तोंमें करीब ४० शाखाएं खुली हुई हैं।

इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका स्थापन संवत् १६६१ में शिवसुखराम लक्ष्मीनारायण हुआ, एवं संवत् १९७१ से उपरोक्त नामसे यह फर्म यहां व्यापार कर रही है। वर्तमानमें इस

सीतारामपुर – नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है।

खगड़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है

निर्मली (भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां राईस मिल है तथा गल्लेका व्यापार होता है।

बस्ती जंक्शन—(भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां आढ़तका काम होता है।

मुकामा जंक्शन—नोपचन्द मगनीराम—यहां आढ़तका काम होता है।

बड़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां इस फर्मकी जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स फूलचन्द केदारमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामेश्वरदासजी, हनुमानबक्सजी एवम् मालचन्दजी हैं। इसका यहांका आफिस नं० ३ चित्तरंजन एवेन्यूमें है। तारका पता Fresh है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इसके फेंनिङ्ग स्ट्रीटके आफिसमें हैसियन गनी और चीनीका एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट व्यापार भी होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १८७ में दिया गया है।

मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल

इस फर्मके मूल स्थापक श्रीमेहता बलदेवरामजी मूल निवासी मथुराके थे। आप सन् १८५७ के करीब कलकत्ता आये, एवं यहां आकर मुनीमात की। पश्चात् आपने बलदेवराम नारायणदासके नामसे गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। संवत् १९५२ तक आप इस नामसे व्यापार करते रहे। बादमें आप बलदेवराम बिहारीलालके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। सेठ बलदेवरामजीके उद्योग एवं अध्यवसायके कारण इस फर्मका व्यापार दिन प्रतिदिन उन्नत होता गया कलकत्तेमें जब आपका व्यापार तरक्की पर पहुंचा, तब आपने अपनी फर्मकी शाखाएं इलाहाबाद, भरवारी, और गोरखपुर जिलेके कुछ स्थानोंमें स्थापित की।

सेठ बलदेवरामजी परम धार्मिक एवं सात्विक पुरुष थे। आपका सारा जीवन धार्मिक कृत्यों में बीता धर्मकी उन्नतिमें आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति लगाई। आपने कई मंदिरोंका जीर्णोद्धार करवाया, एवं मकानात करवाये। मकानों एवं मंदिरात करवानेमें करीब १ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति आपने लगाई। इसी प्रकारके धार्मिक कामोंमें आप समय २ पर विपुल सम्पत्ति खर्च करते रहे। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ

: जुहारमलजी डालमिया मामराज रामभगत)

बा॰ घनश्यामदासजी जगनानी (नोपचन्द मगनीराम)

: मेहता हजारीमलजी (बलदेवराम बिहारीलाल)

मेहता गिरधारीलालजी (बलदेवराम बिहारीलाल)

[illegible] हैं सेठ [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
कुशालचन्दजी, बा० [illegible] और बा० श्री बैजनाथजी हैं। [illegible] [illegible] तथा [illegible]
समाज समाजमें बहुत प्रतिष्ठित तथा सम्मानित माना जाता है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स रामलाल रामभगत [illegible] लेन T. No 1223 B B—यहां रुई और गल्लेका व्यापार होता है। इस फर्मका का० कुशालचन्दजी काम देखते हैं।

बम्बई—मेसर्स रामलाल रामभगत ([illegible] ऑफिस) मारवाड़ी बाजार T. A. Dalmiya—यहां रुई, चांदी तथा सट्टेका सुसंगठित व्यवसाय होता है। यह फर्म [illegible] [illegible] नामसे मेसर्स किशनलाल नामक शहरके [illegible] व्यवसायीको [illegible] लिये सोल एजेंट है इस फर्मका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पृष्ठ [illegible]में दिया गया है।

बम्बई मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत—इस फर्ममें इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सर हुकुमचन्दजीका हिस्सा है, इसकी एक ब्रांच कोबे (जापान)में भी है, यहां रुईका एक्सपोर्ट तथा जापानके काम एवं कमीशनका व्यवसाय होता है, इसके अंडरमें खामगांव तथा पान्द्रामें २ जिनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी भी चल रही है। इस फर्मके अण्डरमें और भी कई ब्रांचेज बम्बई प्रांतमें हैं।

मेसर्स एम० एम० इस्पहानी एण्ड सन्स

इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग ६० वर्ष पूर्व मद्रासमें हुई थी। आरम्भमें इस फर्मपर योरोपके लिये नील भेजनेका व्यापार होता था। और यही कारण है कि बंगालमें शाखा खोलनेके लिये वाध्य हो कर इस फर्मने स्थायी रूपसे कलकत्तेमें अपना आफिस सन १९०० में खोला। जो आज भी व्यापार व णिज्य कर रहा है।

यह फर्म चाय, नील, रुई, खाल, चमड़ा, घोरे, गल्ला, और तेलहन माल खरीद कर विदेश [illegible]ती है। मद्रासमें यह फर्म तेलहन खरीदने और चमड़ा भेजनेमें प्रथम मानी जाती है। कलकत्तेमें [illegible] खरीदने वाली फर्मोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा है। यह फर्म कलकत्तेमें नीलामके समय [illegible] खरीद कर विदेश भेजती है।

इस फर्मके तीन हिस्सेदार हैं। जिनमें मि० एम० एम० इस्पहानी

दुकानें थी। लाला शंकरदासजी यू० पी० के बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते थे। लाला शंकरदास-जीके पश्चात् उनके पौत्र लाला कालिकाप्रसादजीने इस फर्मपर आढ़तका काम आरम्भ किया, एवं इस कार्य्यको बहुत अधिक बढ़ाया। इस समय आपकी फर्म गल्लेकी आढ़तका अच्छा व्यवसाय करती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक लाला कालिकाप्रसादजीके पुत्र लाला कन्हैयालालजी एवं लाला मनोहरलालजी हैं। आप इलाहाबादमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्तियोंमें माने जाते हैं। तथा सार्वजनिक कार्यों में आपलोग अच्छा सहयोग देते रहते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

इलाहाबाद—मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद शंकरलाल कीटगंज—यहां बैंकिंग, आढ़त, एवं गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद १० कॉटन स्ट्रीट—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स स्वयम्बर सिंह हरिशङ्कर सिंह

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान खजूरगांव (रायबरेली) है। आप क्षत्रिय कुलके इतिहास प्रसिद्ध बैस ठाकुर राणाबेनीमाधवके वंशज हैं। इस परिवारका इतिहास बहुत पुराना है। अवधके ताल्लुकदारोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा है। आजकल इस गद्दीपर राजा रमानाथबख्स सिंहजी हैं। आप स्व० राना शिवराज सिंहजी बहादुर के० सी० एस० आईके सुपुत्र हैं। आपका सम्बन्ध बड़े २ राजघरानोंमें है।

रानासाहबके पांच पुत्र हैं जिनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र लालसाहब भावी राना हैं। तथा मझले पुत्र कुमार स्वयंबर सिंहजी तथा हरिशंकरजीके नामसे कलकत्तेमें उपरोक्त फर्म है तथा शेष दोनों छोटे राजकुमारोंके नामसे कानपुरमें एक चांदी सोनेकी फर्म चलरही है। ये चारों राजकुमार इलाहाबाद और लखनऊमें शिक्षा प्राप्त कररहे हैं।

आप रायबरेलीके सबसे बड़े ताल्लुकेदार हैं। इन.स्स, इलाहाबाद, लखनऊ आदिमें आपकी विशाल कोठियां हैं। आप एक प्रतिष्ठित घरानेके रत्नों एवं उदार चित्त सज्जन हैं। आपके पिता ... अधिक' दान हिन्दू विश्वविद्यालयको दिया है। इसी प्रकारके अन्य सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं। आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके सदस्य भी रह चुके हैं।

कलकत्तेकी उपरोक्त फर्मका संचालन इसके मनोहर बाबू सीतारामजी अग्रवाल बड़ी कुश

स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। १५ हालसी बागानमें इस फर्मका एक तेलका मिल चलता है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें तेलके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हासम अय्यूब और आपके भाई सेठ कासम अय्यूब हैं। इस फर्मका आफिस १२ अमरतल्ला स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म गल्ले और किरानेका बहुत बड़ा व्यापार करती है। यहां तारका पता "Kassam" है। इसकी बहुतसी शाखाएं हैं। इसका हेड आफिस बम्बईमें है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें किरानेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी एवम बाबू जगन्नाथजी हैं। इसका आफिस २२८ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म जूट और गल्लेका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित जूटके व्यापारियोंमें दिया गयाहै ।

चीनी

चीनी बहुतही आवश्यक वस्तु है। भारतमें इसका व्यापार बहुत पुराना है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने भी इसके व्यापारसे बहुत लाभ उठाया है। कम्पनीने कुछ समय तक बंगालकी चीनीके निर्यातको खूब बढ़ाया पर कुछ समय बादही उसने 'क्यूबा' की ईखको अधिक प्रोत्साहन देना आरम्भ किया और बङ्गालकी चीनीपर विलायती बन्दरोंमें टैक्स लगा दिया गया। धीरे धीरे स्वयं विलायतमें ही कितने ऐसे कारखाने खुले जहां चीनी साफ की जाने लगी। इसलिये खांड़की मांग बढ़ी और मद्रासकी सफेद खांड़का निर्यात बहुत: बढ़ गया। इसके बाद ही विलायती पद्धतिके अनुसार खांड़ साफ करनेके कारखाने भारतमें खोले गये। इसी समयसे मोरिशस और जावामें ईखकी खेती जोर पकड़ने लगी। अत: इन स्थानोंकी बनी खांड़ बाहर जाने लगी। इसी बीच जर्मनी और आस्ट्रियाने चुकन्दर (बीटरूट Beet root) से चीनी तैयार करना आरम्भकर दिया और अपनी २ सरकारकी आर्थिक सहायतासे भारतमें सस्ते भावपर ये देश चीनी बेचने लगे। जिससे भारतमें पुराने ढंगसे तैयार होनेवाली चीनीके उद्योगका अन्त हो गया। उधर सरकारी सहायताके रुक जानेसे जहां चुकन्दरकी चीनी भारत आना बन्द हुई वहां जावा और मोरीशसकी चीनी भारतके बाजारमें

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

इस फर्मके मालिकोंका खास वतन धांसवड़ (काठियावाड़) है। इस फर्मके मालिक सेठ हासम अय्यूब और आपके भाई, सेठ कासम अय्यूब हैं। इसके खास मालिक सेठ हासम अय्यूब साहब कलकत्ते रहते हैं। आपकी फर्म हिन्दुस्तानके बड़े २ शहरों और बाहरके मुल्कोंमें बहुत बड़ी तिजारत करती है। यह फर्म सभी जगह इज्जतकी निगाहोंसे देखी जाती है। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, सिंगापुर, पेनाङ्ग, रंगून, वगैरः से चावल, गल्ला, किराना और दूसरी चीजोंके एक्सपोर्ट और इम्पोर्टकी यह फर्म बहुत बड़ी तिजारत करती है। अय्यूब सेठके जमानेसे ही करीब ६० सालके अरसेसे इस फर्मपर किरानेकी तिजारत होती आई है। फोचोन और गुन्तूरमें इसकी दुराई आइल और राइसकी मिलें हैं। कई पीढ़ियोंसे इस फर्मके मालिक तिजारत करते आ रहे हैं।

तिजारतको तरक्की दे कामयाबी हासिल करनेके साथ साथ सवाबके कामोंकी तरफ भी इसके मालिकोंने काबिलेतारीफ तवज्जो दी है। इसके हरदिल अजीज मालिकोंकी तरफसे धांसवड़ काठियावाड़में सब कौमोंके लिये अय्यूबिया फ्री डिस्पेन्सरी चल रही है। इसके अलावा आमे पब्लिकके लिये कुतुबखानये महम्मद अली नामकी एक लायब्रेरी भी खोल रक्खी है। मुसलमान भाइयोंके लिए आपकी तरफसे पीरइब्राहिमिया मदरसा भी चल रहा है। इसी तरह लुनीवा स्टेशनपर आपकी तरफसे एक धर्मशाला है जहां आमतौरपर सभी कौमोंके लोगोंकी अच्छी तादादमें आमदरफ्त रहती है।

आपकी फर्मका तिजारती बयान नीचे लिखे ढंगपर है।

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

हेड आफिस—(१) बम्बई—खांडाबजार मांडवी T. A. kassım.

(२) धांसवड़—काठियावाड़ T. A. kassam.

ब्रांचेज—(हिन्दुस्तान)

आरा—T. A. kassam.—यहां गल्लेकी तिजारत होती है।

गोरखपुर— " " " "

कानपुर—T. A. Kassam—यहां गल्लेकी खरीदीका काम होता है।

हाथरस— " " " " " "

आगरा—T. A. Kassam.—यहां जीरा और सरसों वगैरः की खरीदीका काम होता है।

फरिंदा—T. A. kassam.—यहां चना और गल्लेकी तिजारतका काम होता है।

पटना—T A. kassam—यहां गल्लेकी तिजारत होती है।

कलकत्ता—१२ अमरतल्ला स्ट्रीट T. A. kassam T. No. 2703 B.B; 416 Hawrh—यहां किराना, गल्ला, सिंगापुरी सुपारी और चावलकी बहुत बड़ी तिजारत होती है।

गल्लेके व्यापारी

श्रीयुत अनुचितलाल जगन्नाथ प्रसाद
२१२, दरमाहट्टा स्ट्रीट।
अमरचन्द्र मायोजी एण्ड कम्पनी
६, आगा करबला स्ट्रीट
ईश्वरदास कन्हैयालाल
८।१, रूपचन्द्राय स्ट्रीट
उमरसी मोहनजी १५, मल्लिक स्ट्रीट
उगरमल हजारीमल ५१।५२ बड़तल्ला स्ट्रीट
कृपाराम खुसीराम २६।१ आरमेनियन स्ट्रीट
कन्हैयालाल वृद्धिचन्द २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट
कृष्णकुमार जटीभूषण ३० बड़तल्ला स्ट्रीट
कनीराम हजारीमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
कालूराम किशनदयाल २०८ सुतापट्टी
कालीचरण रामचन्द्र ६ पेद्दापट्टी
खेमसीदास खेतसीदास १७८ हरिसन रोड
गोरखराम ज्ञानकीदास ११८ सुतापट्टी
गोपीराम रामचन्द्र २६।१ आरमेनियन स्ट्रीट
गुदीराम छेदराज २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
गुरुमुखराय वासुदेव १७४ हरिसन रोड
गुरुमुखराय मदनगोपाल ४६ स्ट्राण्ड रोड
गंगाधर जोदारमल २०१ हरिसन रोड
गणेशदास राधाकिशन १० श्यामागली
गंगाधर रामचन्द्र ४०२ अपरचितपुर रोड
गणेशदास भैरोंदान १६० सूतापट्टी
गुलराज गिरधरलाल १८० हरिसन रोड
गुलराज शिवदयाल ३१ कुल्फीघाट
गनपतराय रामकुमार ७२ सुतापट्टी
घुन्नीलाल सूरजमल ३ दहीहट्टा स्ट्रीट
घुन्नीलाल किशनलाल १३१ काटन स्ट्रीट
चतुर्भुज घनश्यामदास २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
जयदयाल मदनगोपाल १८ मल्लिक स्ट्रीट
ज्वालाप्रसाद जगदम्बाप्रसाद ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
युगलकिशोर रामदलाल १७८ हरिसन रोड
जीतमल फत्तूमल १०५ ओल्ड चीनाबाजार स्ट्रीट
जीवनराम जोहारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जीवनराम गोविन्दराम २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
जयनारायण रामचन्द १८ मल्लिक स्ट्रीट
जानकीदास शिवनारायण ४८ मुर्गीहट्टा स्ट्रीट
तेजपाल जमुनादास १६२ सुतापट्टी
तेजपाल प्रह्लादराय ६७ बड़तल्ला स्ट्रीट
तुलसीदास किशुनदयाल १ काशीनाथ मल्लिक लेन
तुलसीदास राजमल २० बड़तल्ला स्ट्रीट
दुर्गाप्रसाद हरिशंकर २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
दोलतराम रावतमल १७८ हरिसन रोड
दुलसुखराय सागरमल १४५ काटन स्ट्रीट
दौलतराम कन्हैयालाल (रायबहादुर)
४२।१ स्ट्राण्ड रोड
देवकरणदास घासीराम ४६ स्ट्राण्ड रोड
धनराज सागरमल ६४ लोअर चितपुर रोड
नथमल श्रीनिवास १७१ हरिसन रोड
नौरंगराय मूंगालाल २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
नोपचन्द मगनीराम २६ गोयनका लेन ढाकापट्टी
नागरमल जयदयाल ६७।३८ कुल्फी घाट
९४ लोअर चितपुर रोड
नरसिंहदास पन्नालाल ५ नारायण प्रसाद लेन
नयनसुखदास मिर्जामल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
नरसिंहदास गौरीशंकर २१४ सुतापट्टी
नरसिंहदास मोतीलाल ५ सी मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
प्रयागशाह सहदेवराम १३ दहीहट्टा स्ट्रीट
पोकरमल फूलचन्द २०१ हरिसन रोड
पृथ्वीराज गणेशदास २६।४ आरमेनियन स्ट्रीट
फूलचन्द केदारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
फूलचन्द पदमराम ६ पेद्दापट्टी

किरानेके व्यापारी

मेसर्स चेतराम रामविलास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सांगानेरिया सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष बाबू चेतरामजी थे, जो संवत् १९०१ में देशसे कलकत्ता आये। कलकत्ता आने वाले मारवाड़ी सज्जनोंमें आप बहुत प्रथम थे। आरंभमें यहां आकर आपने किरानेकी दलालीका काम आरंभ किया, तथा आपका यह काम बराबर तरक्की पाता गया, थोड़े ही समयमें आप किरानेके सफल दलाल माने जाने लगे। बादमें आपने अपना निजका व्यवसाय स्थापित किया, तथा उसे अच्छी उन्नति दी। आपका शरीरान्त संवत् १९५७ में हो गया।

बाबू चेतरामजीके पश्चात् उनके पुत्र बाबू रामविलासजी हुए, बाबू रामविलासजीके ३ पुत्र हुए जिनमेंसे बड़े बाबू रामकिशन दासजीका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामविलासजीके पुत्र बा० मुरलीधरजी एवं बा० जयदयालजी तथा सेठ रामकिशनदासजीके पुत्र बा० प्यारेलालजी हैं।

बाबू रामविलासजी बड़े गौभक्त सज्जन थे, आपकी गौभक्तिके विशेष प्रेमके कारण आपके द्वारा लक्ष्मणगढ़में गौशालाका स्थापन हुआ था।

सेठ मुरलीधरजीके पुत्र बाबू चिरंजीलालजी एवं केशवदेवजी शिक्षित सज्जन हैं तथा फर्मके काममें बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके प्रतिष्ठित किरानेके व्यवसायियों में समझी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चेतराम रामविलास ३३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. [illegible] है यहां हेड आफिस है तथा किरानेका व्यापार और जूटके बेलिंग प्रेसिंगका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स चेतराम रामविलास १० पोर्तुगीज चर्च स्ट्रीट T. A. Chiranjiv यहां [illegible] डिपार्टमेन्ट है। और रङ्ग सफर, पान, गोलमिर्च, छोटी इलायची, लौंग आदिका थोक व्यापार होता है।

(३) [illegible]—[illegible] राइस एण्ड आइल मिल कम्पनी T. A. Chiranjiv—यहां राइस और आइल मिल है।

शिवनारायण गोपीराम ६।१ रामकुमार रक्षित लेन
शिवप्रसाद विशेश्वरलाल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
श्रीनिवास रामचन्द्र ४ नारायणप्रसाद लेन
शेखनालुब जलालुद्दीन ५० बांसतल्ला स्ट्रीट
शिवदयाल जालान १४६ काटन स्ट्रीट
श्रीराम बधुलाल ३ वैहरापट्टी
शालिग्राम शामदास ६ मल्लिक स्ट्रीट
शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद ३० बड़तल्ला स्ट्रीट
शुकदेवदास गोवर्द्धनदास १३७ काटन स्ट्रीट
शिवबक्सराय राधाकिशन ७४ बड़तल्ला स्ट्रीट
शिवचन्द्रराय नवरंगराय १३१ बड़तल्ला स्ट्रीट
स्वयम्बरसिंह हरिशंकरसिंह १६३ हरिसन रोड
सादीराम गंगाप्रसाद २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
सेड़मल डालमिया ६६ तुलापट्टी
सेवाराम रामरिखदास ४०२, अपरचितपुर रोड
सूर्य्यमल घनश्यामदास ६५ लोअरचितपुर रोड
सदाराम पुरणचन्द ४२ आरमेनियन स्ट्रीट
स्वारथराम रामसरनराम ४०२ अपरचितपुर रोड
सूरजमल गौरीदत्त ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
हजारीमल लालचन्द ३१ मल्लिक स्ट्रीट
हरनन्दराय लालचन्द ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
हरसुखराय दुलीचन्द ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
हरगोविन्दराय मदनलाल २०१ हरिसन रोड
हरबक्स गोपीराम १६ बड़तल्ला स्ट्रीट

चीनीके इम्पोर्टर्स

अब्दुल रहीम मुसल्मान जकरिया स्ट्रीट
अंडर सेट नाइट
ई० डी० सासून
काली चरण रामचन्द्र
केगवान कम्पनी
गिलेन्डर अर्बुथ नाट
जी० डी० लोयलका एण्डको० १८ मल्लिक स्ट्रीट
चन्दनमल सिरेमल १३८ हरिसन रोड
डेविड सासून
तुलसीदास किशनदयाल २१ कैनिंग स्ट्रीट
तुलसीदास मेघराज
द्वारकादास केदारबक्स ४ चीनी पट्टी
परसराम पीरूमल चीनी पट्टी
फारबिस फारबिस केम्पबल एण्ड को०
बालकट ब्रादर्स
बालिगराम किशनचंद
बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड
बाकुंड कम्पनी
मिन सूई मुसान
रायली ब्रादर्स
लूस ड्राफिस
शा वालेस कम्पनी
हाजी शुकर गनी कैनिंग स्ट्रीट
सेंडा कम्पनी
सेवाराम रामरिख सूतापट्टी
सुन्दरमल परशुराम
सदासुख गम्भीरचन्द
स्वरूपचंद हुकुमचन्द एण्डको०
हरियगस दुर्गाप्रसाद

कटक—T. A. kassam—यहां खरीद फरोख्तका काम होता है। इसके अलावा यहां बर्मा शेल आइल स्टोरेज एण्ड डिस्ट्रीब्यूटिङ्ग कं० इण्डिया लि०की तेलकी ऐजेन्सी और कुन्दनमोहन-की सोडेकी ऐजेन्सी है। तथा बहुत बड़ी मिकदारमें किराने और गल्लेका काम होता है।

विजयनगरम्—यहां गल्ले और किरानेकी खरीदीका काम होता है।

सालूर—यहां भी खरीदीका काम होता है।

पार्वतीपुरम—गुंजाइ, सरसों, बदाम, वगैरः की खरीदी होती है

कोकोनारा—(मद्रास)—चावलकी खरीदी, और गल्ले व किरानेका बहुत बड़ा काम होता है।

गुन्टूर—यहां आपकी एक राइस मिल और चीनाबादामकी आइल मिल है। तथा किराना और अनाजका व्यापार होता है।

बेजवाड़ा (मद्रास)—यहां मूंग, चावल, वगैरः की खरीदी और गल्लेकी बिक्रीका काम होता है।

मद्रास—T A. kassam ६।१० अन्डरसन लेन—यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका काम और बहुत बड़ी तह तिजारत होती है।

कोयम्बटूर—यहां व्यापार तथा खरीदीका काम होता है।

कोचीन—यहां कोकोनट आइल मिल है। और तेल तथा चावलका काम होता है।

रायपुर [C. P.]—किराना, कपड़ा, गल्ला वगैरःका काम होता है।

बम्बई—यहां हेड आफिस है।

करांची रैनर्ड रो—यहां एक्सपोर्टका काम होता है।

चटगांव—यहां बड़ व्यापार और खरीद फरोख्तका काम होता है।

अक्याब [बर्मा]—यहांसे राइस धानका एक्सपोर्ट होता है।

रंगून—६५ मोगल स्ट्रीट—यहां चावलकी बहुत बड़ी खरीदी होती है।

पेनांग [मलाया स्टेट]—यहां कलकत्ता, मद्रास और कोचीनसे चावलका इम्पोर्ट होता है।

सिंगापुर—T. A. ranakkal ८६ मार्केट स्ट्रीट—यहांसे सुपारी, साबूदाना, कत्था वगैरः खरीद कर कलकत्ता और दूसरी मार्केटमें भेजा जाता है। तथा किराना और गल्लेका व्यापार होता है।

सेगून [चीन]—चावल व धानका एक्सपोर्ट मिडिल मार्केटपर होता है।

हांगकांग—T. A. Hassam kassam ११८ विङ्गस स्ट्रीट—यहांसे सुपारी और साबूदाना खरीदकर सभी मार्केटमें भेजा जाता है।

मेसर्स किशनलाल हेमराज

इस फर्मका हेड आफिस डिबरुगढ़ (आसाम) में है। यहां इस फर्मकी गद्दी १६।११ रोडमें है। इसका तारका पता Sidbadata है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज १७।२१ में दिया गया है।

मेसर्स कोडामल रामवल्लभ

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स रामवल्लभ मोहनलालके नामसे धूब्रीमें है। यहां इसका आफिस नं० ४६ स्ट्रांड रोडमें है। यह फर्म यहां जूट, कपड़ा एवम आढ़तका व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ४६में दिया गया है।

मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचंद

इस फर्मके मालिक फतेपुर [सीकर] निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके जैनधर्मावलम्बी सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ कन्हैयालालजीने देशसे कलकत्ते आकर इस फर्मको स्थापित की। आप और आपके भाई सेठ बिरदीचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। सेठ कन्हैयालालजीका स्वर्गवास सं० १९६५ में हुआ। वर्तमानमें फर्मके मालिक सेठ बिरदीचन्दजी और सेठ कन्हैयालालजीके पुत्र बजरंगलालजी हैं। सेठ बिरदीचन्दजीके एक पुत्र है जिनका नाम [illegible] है। आप लोग सार्वजनिक कार्यों में भी भाग लेते हैं। फतेपुरमें आपकी ओरसे [illegible] आयुर्वेदिक [illegible] औषधालय चल रहा है। कलकत्तेमें भी एक दिगम्बर जैन मंदिर बनवाया है। आपकी ओरसे मन्दारगिरि और सम्मेद शिखरपर बनी हुई धर्मशालाओंमें कमरे बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचन्द T. A. Rosy T. No 3285 Cal, राजा वुडमन्ट स्ट्रीटमें हेड आफिस है। यहां हुंडी, चिट्ठी, गल्लाका व्यापार तथा बैंकिङ्ग काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामचन्द्र बजरंगलाल २, राजा वुडमन्ट स्ट्रीट—यहां गल्ला और कपड़ेकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

[illegible]—मेसर्स रामचन्द्र बजरंगलाल—यहां गल्लाका व्यापार होता है।

[illegible] [[illegible]]—मेसर्स बजरंगलाल [illegible]—यहां गल्लाका व्यापार है।

बिट्ठल मदन ८ [illegible] लेन
बंशीधर दुर्गादत्त २१ बड़तल्ला स्ट्रीट
बैजनाथ रामकुमार ७ नारायणप्रसाद लेन
बद्रीप्रसाद त्रिलोकचन्दप्रसाद १९।१ [illegible] लेन
बाबूलाल बनारसीलाल ४ जगमोहन मल्लिक लेन
बनीरामल [illegible] ६ बेहरापट्टी
[illegible] ३ राजाउडमन्ड स्ट्रीट
बल्देवदास बैजनाथ १८० हरिसन रोड
बैजनाथ बालुराम ७ ईमान लेन
बैजनाथ जुगलकिशोर २६।३ आरमेनियन स्ट्रीट
बंशीराम रामगुलामराम १२ दहिहट्टा स्ट्रीट
बृजलाल एण्ड कम्पनी २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
बिशुनदयाल बैजनाथ ५१ स्ट्राण्ड रोड
विलासराय चौधरी १९६ सुतापट्टी
विलासराय मंगलचन्द १२७ काटन स्ट्रीट
बंशीधर दानमल १५१ काटन स्ट्रीट
बालमुकुन्द मुरारीलाल ७६ काटन स्ट्रीट
बैजनाथ बालमुकुन्द ११८ सुतापट्टी
बिशेसरलाल हीरालाल ७६ काटन स्ट्रीट
बसन्तलाल घनश्यामदास ८५ रूपचन्ददत्त स्ट्रीट
बिशेशरदास छोटेलाल ६ बांसतल्ला स्ट्रीट
बद्रीदास चुन्नीलाल ४ नारायणप्रसाद लेन
भगवानदास मदनलाल २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
भवानीदास रामगोविन्द ६ जगमोहन मल्लिक लेन
भगवानदास हनुमानबक्स ४ बेहरापट्टी
भगतराम शिवप्रताप २६।३ आरमेनियन स्ट्रीट
भोलाराम कुन्दनमल १२७ तुलापट्टी
भोलानाथ भगवानदास ८ मल्लिक स्ट्रीट
मटरूमल राधाकिशन १३२ तुलापट्टी
मगनीराम छिम्मनराम ३ बेहरापट्टी
मामराज रामभगत ७ नारायण प्रसाद बा० लेन
महादयाल प्रेमचन्द ८८ बड़तल्ला स्ट्रीट
मन्नालाल गोपालदास १२७ काटन स्ट्रीट
मदनलाल मदनलाल १८० सुतापट्टी

मनीराम बैजनाथ १३२ काटन स्ट्रीट
मंगलचन्द शिवलाल १८० हरिसन रोड
मानादीन भगवानदास ७० बड़तल्ला स्ट्रीट
माधोलाल शर्मा ५ अमरतल्ला स्ट्रीट
मोतीलाल भीखमचन्द ४६ स्ट्राण्ड रोड
रामदत्त गंगाबक्स १८ मल्लिक स्ट्रीट
रामेश्वरलाल दुर्गादत्त २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामनाथ ब्रजमोहन २० दरमाहट्टा स्ट्रीट
राजेन्द्रप्रसाद गुलेश्वरीप्रसाद १८७ दरमाहट्टा स्ट्रीट
रामचन्द्र श्रीनिवास २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामप्रताप नोमानी ५० तुलापट्टी
रामजीदास बंशीलाल ७५ तुलापट्टी
रामेश्वरलाल द्वारकादास ४ नारायणप्रसाद लेन
रामचन्द्र सूर्य्यमल १३२ तुलापट्टी
रामदास महादेवप्रसाद ३६ काटन स्ट्रीट
रामचन्द्र छोटालाल ४७ खंगरापट्टी
रामदास गोवर्धनदास २० दरमाहट्टा स्ट्रीट
रामदेव बद्रीदास १५ भवानीदत्त लेन
रामनारायण जयलाल ७६ तुलापट्टी
रामरिखदास पुरुषोत्तमदास ३।६ मैंगो
राधाकृष्ण बेणीप्रसाद १० काटन स्ट्रीट
रामगोपाल लक्ष्मीनारायण २३ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामेश्वरलाल सूर्य्यमल ४०२ अपरचितपुर रोड
लालचन्द मदनगोपाल ७ नारायणप्रसाद लेन
लक्ष्मीनारायण कम्पनी १४६ तुलापट्टी
शिवनारायण केशवदेव १६८ सोनापट्टी
शंकरदास जमुनादास २०।२१ बड़तल्ला स्ट्रीट
शिवरामदास रामनिरंजनदास १३६ काटन स्ट्रीट
शिवबल्लभराम हरिहरप्रसाद २ दहिहट्टा स्ट्रीट
श्रीकृष्णदास शम्भुराम ७० तुलापट्टी
श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल २२८ [illegible]

मेसर्स किशनलाल हेमराज

इस फर्मका हेड आफिस डिबरुगढ़ (आसाम) में है। यहां इस फर्मकी गद्दी १६।१। हेरिसन रोडमें है। इसका तारका पता Sidhadata है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १७२१ में दिया गया है।

मेसर्स कोडामल रामवल्लभ

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स रामवल्लभ मोहनलालके नामसे धूबीमें है। यहां इसका आफिस नं० ४१ स्ट्रांड रोडमें है। यह फर्म यहां जूट, चपड़ा एवम आढ़तका व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ४६में दिया गया है।

मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचंद

इस फर्मके मालिक फतेपुर [सीकर] निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके जैनधर्मावलम्बी सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ कन्हैयालालजीने देशसे कलकत्ते आकर इस फर्मको स्थापित की। आप और आपके भाई सेठ बिरदीचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। सेठ कन्हैयालालजीका स्वर्गवास सं० १९६५ में हुआ। वर्तमानमें फर्मके मालिक सेठ बिरदीचन्दजी और बाबू कन्हैयालालजीके पुत्र बसंतलालजी हैं। सेठ बिरदीचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू स्वरूपचन्दजी है। आप लोग सार्वजनिक कार्यों में भी भाग लेते हैं। फतेपुरमें आपकी ओरसे औषधालय विशुद्ध आयुर्वेदिक दवाखाना औषधालय चल रहा है। कलकत्तेमें भी एक दिगम्बर जैन मंदिर आपने बनवाया है। आपकी ओरसे मन्दारगिरि और सम्मेद शिखरपर बनी हुई धर्मशालाओंमें कमरे बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचन्द T. A. Rosy T.No 3285 Cal. राजा वुडमन्ट स्ट्रीट यह हेड आफिस है। कपड़ेका, इम्पोर्ट गल्लेका व्यापार तथा बैंकिंग काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मदनचन्द बसंतलाल २, राजा वुडमन्ट स्ट्रीट—यहां गल्ला और कपड़ेकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

[illegible]—मेसर्स मदनचन्द बसंतलाल—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

[illegible] [[illegible]]—मेसर्स बसंतलाल स्वरूपचन्द—यहां गल्लेका व्यापार है।

कमीशन एजेण्ट्स

Commission Agents,

कमीशन एजेण्ट्स

मेसर्स अमोलकचन्द छोगमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० सागरमलजी गोयनका हैं। इसका कलकत्तेका आफिस १८० हरिसन रोड पर है यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ५६ पर देखिये।

मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय

इस फर्मके मालिक गुढ़ा (जयपुर) के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके गुटगुटिया सज्जन हैं। इसका कलकत्ता आफिस ५ श्यामा बाई लेनमें है। इसका तारका पता :Gutgutia है। यहां इस फर्मके पास सेगड़ा कम्पनीकी बेनियनशिप है इसके सिवा यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम भी करती है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ६२ पर देखिये।

मेसर्स अर्जुनदास हरिराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० अर्जुनदासजी, हरिरामजी तथा किशन दयालजी हैं। इस फर्मका हेड आफिस कुस्टियामें है। यहां इसका आफिस ४ बेहरापट्टीमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ५८ में दिया है। यहां यह फर्म सराफी तथा कमीशन एजंसीका व्यापार करती है।

मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके प्रधान संचालक बाबू सुमेरमलजी हैं। इस फर्मका हेड आफिस फारबिसगंजमें

बा० विरदीचन्दजी जैन (कन्हैयालाल विरदीचन्द)

बा० [illegible] जैन (कन्हैयालाल विरदीचन्द)

बा० माधूरामजी जैन (कन्हैयालाल विरदीचन्द)

बा० विरदीचन्दजी जैन (कन्हैयालाल विरदीचन्द)

बा० बजरंगलालजी जैन (कन्हैयालाल विरदीचन्द)

जातिके वेद सज्जन हैं। आपका हे० आ० कूचविहार है। यहां करीब १०० वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ आलिमसिंहजीने की थी। आपके पुत्र सेठ हुकुमचन्दजी बड़े व्यापार दक्ष एवम मेधावी सज्जन थे। आपके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ। आपके पश्चात इस फर्मका संचालन सेठ चिमनीरामजीने किया। आपके समयमें भी इसकी बहुत तरक्की हुई। आप कूचविहार की कौंसिलके मेम्बर थे। उस समय आपका बहुत नाम था। आपका स्वर्गवास १९६६ में हुआ। आपने अपनी जमींदारी की भी बहुत उन्नति की। आपके ही समयमें आजसे करीब ५० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुई। आपके २ पुत्र हुए सेठ मोतीलालजी और सेठ जसवंतमलजी। आप दोनोंका छोटी वयमें स्वर्गवास हो गया। पश्चात सेठ चिमनीरामजीने पूनमचन्दजीको दत्तक लिया। पूनमचन्दजी का भी संवत् १९७३ में स्वर्गवास हो गया। आपके भी कोई संतान न थी। अतः गिरधारीमलजी दत्तक आये। वर्तमानमें आपही इस फर्मके संचालक हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कूचविहार—मेसर्स आलिमसिंह हुकुमचन्द—यहां जमींदारी, बैंकिंग, तथा जूटका व्यापार होता है।

दीनहट्टा—मेसर्स हुकुमचन्द चिमनीराम—यहां जूट, गल्ला, बैंकिंग, तमाखू, सोना, चांदी आदि सभी का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चिमनीराम जसवंतमल १६ थोना फिल्ड लेन—यहां बैंकिंग, कमीशन एजेंसी एवम गोदाम आदिके भाड़ेका काम होता है।

जटेसर—(जलपाईगोड़ी) सेठ चिमनीराम वेद—यहां जमींदारी बैंकिंग तथा गल्लेका काम होता है।

मेसर्स छोटूलाल शोभाचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूं है। आप ओसवाल वैश्य जातिके भूरोड़िया सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर छोटूलाल हरकचन्द नाम पड़ता था। संवत् १९६८ में इस फर्मका नाम मेसर्स छोटूलाल शोभाचन्द हुआ। इसकी स्थापना सेठ छोटूलालजीके पुत्र हरकचन्दजीने की थी। आपके समयमें इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६१ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक शोभाचन्दजी हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः बा० भैंवरलालजी, काली प्रसन्नजी, मदनलालजी तथा चन्दनमलजी हैं।

जयनगर [दरभङ्गा]—मेसर्स बजरंगलाल लादूराम—यहां गल्लाका व्यापार है
जनकपुर—मेसर्स बजरंगलाल लादूराम—यहां गल्लाका व्यापार है।

मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान नेचवा [सीकर] जयपुर स्टेटमें है। आप अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ४० वर्ष पूर्व सेठ कन्हैयालालजीके हाथोंसे हुआ था तथा वर्तमानमें इस फर्मके मालिक आपही हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई। नेचवेमें आपकी ओरसे एक कुआं और एक धर्मशाला बनाई गई है, वहीं एक पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय १६।१। हरीसन रोड—यहां आढ़त, सराफी लेनदेन तथा कुस्टेका व्यवसाय होता है।

गोलाघाट [आसाम] सनेहीराम रामनाथ यहां आपका एक चायका बगीचा है तथा सराफी लेन देन और दुकानदारीका काम होता है।

सालमार—सनेहीराम रामनाथ—यहां दुकानदारीका काम होता है।

घोमानी [त्रिपुरा] कन्हैयालाल शिवदत्तराय—दुकानदारीका काम होता है। तथा सुपारीका व्यापार होता है।

चांदपुर [बंगाल] कन्हैयालाल शिवदत्तराय— " " " "

पटना [बिहार] मेसर्स सनेहीराम कन्हैयालाल—आढ़तका काम होता है।

पटना [बिहार] जगन्नाथ नेमीचन्द मारुफगंज—दुकानदारीका काम होता है।

दानापुर—मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ—आढ़तका काम होता है।

अफजलपुर [बोगड़ा] जगन्नाथ जीवनराम —आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त फतपुर तथा पटुआ [जिला पटना] में गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स खेतसीदास रामलाल

इस फर्मका हेड आफिस ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां गल्ले और कपड़ेकी चलानीका काम होता है। इसका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० १६ में दिया गया है।
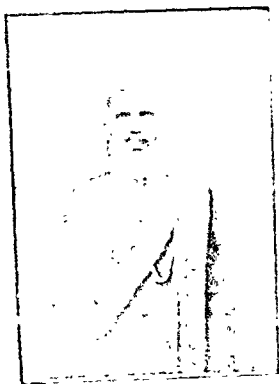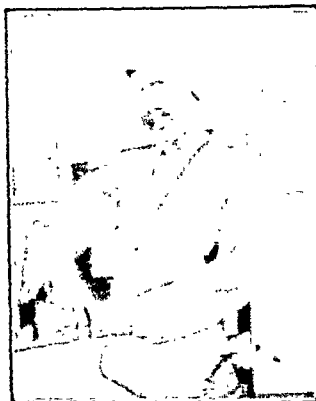
मेसर्स जुहारमल परशुराम

इस फर्मके मालिक बाबू जुहारमलजी और आपके भतीजे बाबू बृजलालजी हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४ बेहरा पट्टीमें है जहां कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ४२ पर देखिये।

मेसर्स जेठमल भोजराज

इस फर्मका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। इसके वर्तमान संचालक बाबू लक्ष्मीनारायणजी हैं। यहां यह फर्म ४ दही हट्टामें धरू दुकानोंपर माल भेजनेका काम करती है। इसके अतिरिक्त यहां बड़ी इलायचीका भी व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं०।८ में दिया गया है।

मेसर्स जीवराज रामकिशनदास गाड़ोदिया

इस फर्मके मालिक श्रीयुत मोतीलालजी एवम् अर्जुनलालजी हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में दिया गया है। यहां यह फर्म २।१३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें चलानीका काम करती है। इसका तारका पता "Gadodiya" है।

मेसर्स जीवराज रामप्रताप

इस फर्मके वर्तमान मालिक रामप्रतापजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में दिया गया है। यहां २।१३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें यह फर्म चलानीका काम करती है। इसका तारका पता *Pratap* है।

राय बहादुर जेसाराम हीरानंद

इस फर्मके मालिक पंजाबी भाटिया समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस डेरा इस्माइलखां है, यहां इसके कामेमें व्यापार हो रहा है। तथा वहांके व्यापारियोंमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मंगूलालजीके पुत्र राय बहादुर सेठ जेसारामजी तथा सेठ प्यारेलालजीके पुत्र बा० ठाकुरदासजी, बा० तेजभानजी, बा० फतेचन्दजी, बा० हीरानन्दजी,

मेसर्स गिरधारीलाल चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिक स्व० बाबू गिरधारीलालजीके पुत्र चंडीप्रसादजी एवं देवीप्रसादजी हैं। आप फतहपुर [शेखावाटी] निवासी अग्रवाल जैनसमाजके सज्जन हैं। बाबू गिरधारीलालजीने ३० वर्ष पूर्व अपनी फर्म मुंगेरमें स्थापित की थी। वहां आपका कपड़ेका व्यापार होता था आपका स्वर्गवास ८ वर्ष पूर्व हो चुका है।

इस फर्मका स्थापन करीब ६।७ वर्ष पूर्व बाबू चण्डीप्रसादजीने कलकत्तेमें किया, आप शिक्षित सज्जन हैं आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गिरधारीलाल चण्डीप्रसाद १६११ हरीसन रोड - यहां आढ़त तथा सराफी लेन देनका काम होता है।

मेसर्स गणपतराय लक्ष्मीनारायण

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स रामरिछपाल गणपतरायके नामसे सैदपुर (बंगाल) में है। यहां इसका आफिस नं० ५ नारायणप्रसाद बाबू लेनमें है। तारका पता है "Durga"। यहां यह फर्म कपड़ा व जूटकी आढ़तका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम

इस फर्मका हेड आफिस तेजपुर (आसाम) है। इसके वर्तमान संचालक रामकुमारजी, रामप्रतापजी, और बिलासरायजी तथा आपके पुत्र हैं। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १३ में दिया गया है। यहां यह फर्म १६८ क्रास स्ट्रीटमें कमीशन एजंसीका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास जगन्नाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक सागरमलजी हैं। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ७१ में दिया गया है। यहां यह फर्म १७१ हरिसन रोडमें चलानीका काम करती है।

इस फर्मपर यहां पलानीका व्यापार होता है। विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १८ में दिया गया है। इसके वर्तमान संचालक बाबू आसारामजी हैं।

मेसर्स देवकरणदास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मोतीलालजी हैं। आप इस समय नाबालिग हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२१ में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और आढ़तका काम करती है। इसका आफिस १३० क्रास स्ट्रीटमें है।

मेसर्स दानूलाल जीवनमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास गेनाली (शेखावाटी—जयपुर स्टेट) है। आप छावड़ खंडेलवाल जैन समाजके सज्जन हैं। यह फर्म छोगालाल दानूलालके नामसे कई एक वर्षसे सराफी तथा कपड़ेका कारबार करती है। कलकत्तेमें २ वर्ष पूर्वसे सेठ जीवनमलने अपनी आढ़तकी ब्रांच स्थापित की। वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें बाबू छोगालालजी, बाबू दानूलालजी तथा बाबू जीवनमलजी हैं। आप सब सज्जन महानुभाव हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—छोगालाल दानूलाल रमना रोड—सराफी तथा कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका कारबार है।

कलकत्ता—दानूलाल जीवनमल १६१ हरिसन रोड—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम तथा बैङ्किंग व्यापार होता है।

मेसर्स धरमचन्द डेडराज

इस फर्मका हेड आफिस डोमार (बंगाल) है। यहां इसका आफिस १७२ क्रास स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० २६ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेका काम करती है।

मेसर्स नारायणदास उदयचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान छापर (बीकानेर) का है। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए १४ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ
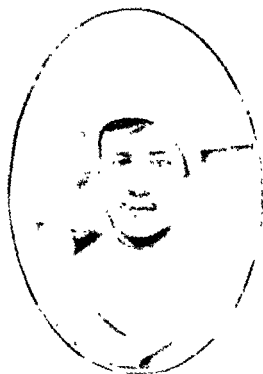
मेसर्स नथमल सुमेरमल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स फालूराम नथमलके नामसे जलपाई गोड़ीमें है। यहां इसका आफिस १७७ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म कपड़ा एवं कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ६ में दिया गया है।

मेसर्स नारमल शिवबक्ष

इस फर्मका हेड आफिस बांकुड़ामें है। यहां इसका आफिस १७४ हरिसन रोडमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ६२ में दिया गया है। यहां यह फर्म आढ़तका काम करती है।

मेसर्स नीवाराम परमानंद

इस फर्मके संचालक पंजाबी सज्जन हैं। इसका विशेष परिचय बम्बई विभागमें इसी ग्रंथमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर आढ़तका काम होता है। यहांका पता १९१ हरिसन रोड है।

मेसर्स पामीराम शिवलाल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ (बीकानेर) के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। ४०-४५ वर्ष पूर्व सेठ [illegible]जीने कलकत्ते आकर इस फर्मकी स्थापना की। इस फर्मपर आरम्भसे ही कपड़ेकी बिक्री और आढ़तका काम होता आया है। इसकी उन्नति प्रधानतया सेठ [illegible] एवं सेठ पन्नीरामजीके हाथोंसे हुई। आप व्यापारदक्ष और बुद्धिमान थे। सेठ [illegible]जीका स्वर्गवास सं० १९५४ और सेठ पन्नीरामजीका सं० १९६८ में हुआ। सेठ पन्नीरामजीके बाद आपके छोटे भाई सेठ शिवलालजीने व्यापारके कार्यको सम्हाला। इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ [illegible]जीके पुत्र बाबू [illegible]जी, स्व० सेठ पन्नीरामजीके पुत्र बाबू [illegible]जी तथा सेठ शिवलालजी हैं।

कलकत्तेके कपड़ेके व्यापारियोंमें यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपके [illegible] सभी व्यापारिक [illegible] होते हैं। सभी [illegible] हैं।

इस फर्मके मालिक धर्म, [illegible] और सार्वजनिक कार्योंमें योग देते रहते हैं। रतनगढ़ और

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स छेदूलाल शोभाचन्द १६।१ हरिसन रोड—यहां बेंकिंग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण गोवर्द्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स जयनारायन सनेही रामके नामसे गौहाटीमें है। यहां इसका आफिस ९४ लोअर चितपुर रोडमें है। प्रधान रुपसे यहां चलानीका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ८ में दिया गया है।

मेसर्स जिन्दाराय हरविलास

इस फर्मके मालिक मलसीसर (जयपुर स्टेट) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस १३२ काटन स्ट्रीट में है जहांका तारका पता Homerule है। यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट २१ में दिया गया है।

मेसर्स जादोंराम मानामल

इस फर्मके मालिक दिल्ली निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इनके वर्तमान मालिक लाला बनवारी लालजी हैं। इसका हेड आफिस पटना है। यहां इसका आफिस ६४ लोअर चितपुर रोड पर है और तारका पता Lohia है। यहां यह फर्म बैंकिंग और कमीशन एजन्टका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके इसी भागके बिहार विभागमें पृष्ट २० पर देखिये।

मेसर्स जीवनराम निर्मलराम

इस फर्मके मालिक गयाके रहनेवाले हैं। आपलोग माहुरी वैश्य समाजके सज्जन हैं। इसका कलकत्ता आफिस २६ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है जहांका तारका पता "Tributary" है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पेज ८२ पर दिया गया है।

इसका आफिस ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८८ में दिया गया है। यहां यह फर्म चलानी और बैंकिंगका काम करती है।

मेसर्स बनवारीलाल पांजा

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० शचीन्द्रनाथ, प्रफुल्लकुमार, और राधेश्याम पांजा हैं। इसका हेड आफिस वर्दमानमें है। यहां इसका आफिस २६ धर्मोहट्टा स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म कमीशन और नमक, चीनी, खड़ी आदिका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८१ में दिया गया है।

मेसर्स बस्तीराम द्वारकादास

इस फर्मका आफीस P 14 सेन्ट्रल एवन्यूमें है। इसकी मालिक मेसर्स जयदयाल कमेरा कम्पनी है। यह फर्म कपड़ा तथा शक्करकी आढ़तका व्यापार करती है। विस्तृत परिचय जूट मैल्सके परिचयमें दिया गया है।

मेसर्स बीजराज हरिकृष्ण

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यहां इस फर्मका आफिस ३२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है जहांका तारका पता Gopalniwas है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय बिहार विभागके पृष्ठ ५१ पर दिया गया है।

मेसर्स किशुनदयाल बैजनाथ

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झुंझनूवाल सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक बाबू बैजनाथ जी हैं। यहां इस फर्मका आफिस ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है और तारका पता Palandewi है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम करती है।

विस्तृत परिचय इसी भागके बिहार विभागमें पेज ११ पर दिया गया है।

मेसर्स बतरखीदास महादेव

इस फर्मके वर्तमान संचालक बैतरणीमलजी तथा महादेवलालजी हैं। इसका विशेष परिचय

देवीप्रसादजी, गुलाबचंदजी और सांवलरामजी हैं। इन सब सज्जनोंमें फर्मके प्रधान कार्यकर्ता बा० मगनमलजी एवं कालूरामजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मांगीलाल मोहनलाल १६।१। हरिसन रोड—यहां कमीशनका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छगनलाल गौरीशंकर पारखकोठी—यहां घोड़े घोनीका व्यापार होता है।

कुचामन—(१) राधाकिशन हरसुखदास (२) भोरुबक्श मांगीलाल—गल्ले और किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स मुल्तानमल चौथमल

इस फर्मके मालिक छापर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल जैन श्वे० तेरापंथी सज्जन हैं। इसकी स्थापना मुल्तानमलजी तथा चौथमलजी दोनों भाइयोंके हाथोंसे हुई। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आप दोनोंका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चौथमलजीके पुत्र बा० पृथ्वीराजजी, सिरदीचंदजी और कुन्दनमलजी हैं। आप सज्जन एवम मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स मुल्तानमल चौथमल ६५।३ पांचागली—यहां कमीशन एजंसीका काम होता है।

धनबाजार (बंगाल) चौथमल सरसनमल—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कुईमारी—मेसर्स कुन्दनमल हालचंद ,,

होलसनगर—मेसर्स सरसनमल पिरथीराज ,,

श्यामपुर—मेसर्स सिरदीचंद मन्नालाल ,,

सौनट भंजन—मेसर्स सरसनमल पिरथीराज—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स महादेवदास मोतीलाल

इस फर्मके मालिक फतेहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यहां यह फर्म बैंकिंग तथा कमीशन ऐजेन्सीका काम करती है। इसका आफिस १८० हरिसन रोडपर है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ १०० पर दिया गया है।

नारायणदासजी थे। आपका स्वर्गवास होगया। आप उदार एवं व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपके भाई उदयचन्दजीका भी स्वर्गवास हो गया। सेठ नारायणदासजीके ४ पुत्र एवं उदयचन्दजीके २ पुत्र विद्यमान हैं। आप लोगही इस समय इस फर्मके संचालक हैं। आपके नाम इस प्रकार है। सेठ नारायणदासजीके पुत्र बा० जोधराजजी, मोतीरामजी, रामचन्दजी और चतुरभुजजी तथा उदयचन्दजीके पुत्रोंके नाम लुणकरनजी तथा चुन्नीलाल जी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता – मेसर्स नारायणदास उदयचन्द ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट T.No 1302—यहां कपड़े, तमाकू तथा जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स नेमीचंद जेठमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लाडनूं है। आप ओसवाल वैश्य जातिके भूतोड़िया सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका स्थापन हुए करीब ३० वर्ष हुए। यहां इसकी स्थापना जेठमलजीके द्वारा हुई। आप बड़े योग्य सज्जन हैं।

इस समय इसके मालिक जेठमलजी तथा आपके भाई आसाकरणजी हैं। सेठ जेठमलजीके २ पुत्र हैं। श्रीयुत पूरनचंदजी तथा हुलासमलजी और आसकरणजीके पुत्रका नाम हणुतमलजी हैं। श्रीयुत पूरणचंदजी उत्साही नवयुवक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नेमचंद जेठमल १६१ हरिसन रोड—इस फर्मपर बैंकिंग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

धावरा (जलपाई) मेसर्स जेठमल पूनमचंद—यहां आपकी जमींदारी है। तथा जूट, बैंकिंग तथा कमीशन एजंसी और तमाकूका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त बर्दमान जिलेमें आसकरणजीके नामसे और भी जमींदारी है।

मेसर्स नथमल श्रीनिवास

इस फर्मके मालिक राय साहब नथमलजी हैं। आप सुरजगढ़ समीपके लोटिया नामक स्थानके रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपकी फर्म कलकत्तेमें कमीशन एजंटका काम करती है। इसका आफिस १७३ हरिसन रोड पर है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके इसी भागमें बिहार विभागके पृष्ट ४२ पर दिया गया है।

भिवानीके बीच रस्तेही मगनमें आपकी ओरसे धर्मशाला, कुआं और तालाब बने हुए हैं। इसी प्रकार मानभूमि जिलेमें भी आपने कुएं आदि बनवाये हैं। पुरुलियामें एक पुस्तकालय भी स्थापित किया है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स पालीराम किशनलाल १५८ हरीसन रोड—यहां हेड आफिस है। यहां विलायती कपड़ा, चीनी, नमक, सोना, चांदी आदिकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

पुरुलिया—(मानभूमि)—मेसर्स बेगराज किशनलाल – यहां मालिक लोग रहते हैं। यहां बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है।

झालदा—(मानभूमि ; मेसर्स गिरधारीलाल गुलजराय—यहां बैंकिङ्ग और कपड़ेका काम होता है।

झरिया – यहां आपकी वेस्ट गोलकुंडा कालेरीके नामसे कोयलेकी एक खान है।

मेसर्स पन्नालाल बख्तावरमल

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। यहां इसकी गद्दी ४६ स्ट्रांड रोडमें है। यहां यह फर्म चलनी एवम् पाटकी आढ़तका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ४१ में दिया गया है।

मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलिमपोंगमें है। यहां इसका आफिस ३० काटन स्ट्रीटमें है। तारका पता "Anlaste" है। यहां चलनीका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों-सहित बंगाल विभागके पेज नं० १८ में दिया गया है।

मेसर्स प्रयागदास मदनगोपाल

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक श्री कृष्णगोपालजी, चम्पालालजी और शिवकिशनदासजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३२ में दिया गया है। यहां यह फर्म ८९ मनोहरदास स्ट्रीटमें आढ़तका काम करती है। इसका तारका पता है Pekharpotha।

मेसर्स बलदेवदास विसेसरलाल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स विसेसरलाल बद्रीप्रसादके नामसे गनीगंजमें है। यहां

मेसर्स रामनारायण रागरमल

इस फर्मके मालिक चूरू (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी कलकत्ता गद्दीका पता १७३ हरिसन रोड है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्टका काम करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ ७८ में दिया गया है।

मेसर्स रामघनदास द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मुरलीधरजी एवम बंसीधरजी हैं। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८३में मेसर्स मोलाराम दुर्गाप्रसादके नामसे दिया गया है। यहां इनका आफिस ४२।१ स्ट्रांड रोडमें है। यह फर्म यहां चलानीका व्यापार करती है।

मेसर्स रामदास गोवर्द्धनदास

इस फर्मके मालिक रस्तोगी समाजके सज्जन हैं। आपका निवासस्थान पटना है वहीं पर इस फर्मका हेड आफिस भी है। यहां इस फर्मका पता २० धरम हट्टा स्ट्रीट है। इसका तारका पता Glorious है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्टका काम करती है। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके इसी भागमें बिहार विभागके पृष्ठ १८ पर दिया गया है।

मेसर्स रामनिरंजनदास बद्रीदास

इस फर्मके मालिक बाबू गोपीकृष्णजी हैं। इसका हेड आफिस पटना है। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस ७१ बड़तल्लामें है। यहां बैङ्किग, गल्ला, जूट सेलिंग और कमीशन एजेन्टका काम होता है। इसका विस्तृत परिचय मेसर्स म्हालीराम रामनिरंजनदासके नामसे पटना शहरके अन्तर्गत हमारे इसी भागके बिहार विभागके पेज नं० ११ पर दिया गया है।

मेसर्स रामचन्द्र दुलीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस जलपाईगोड़ी है। वहां इस फर्मपर मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र नाम पड़ता है। यहां इसका आफिस ६२ कटाइन स्ट्रीटमें है। यह फर्म सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ११ में दिया गया है।

मेसर्स मगनीराम फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू फूलचन्दजी एवम् आपके पुत्र हैं। इसका हेड आफिस डिबरुगढ़में है। यहां इसका आफिस १८८ क्रास स्ट्रीटमें है। तारका पता है "Campea"। यहां ज्यूटका तथा चलानीका काम होता है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित आसाम विभागके पेज नं० ६६ में दिया गया है।

मेसर्स मंगलचन्द आनंदमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मंगलचन्दजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२१ में दिया गया है। यहां यह फर्म ५० क्लाइव स्ट्रीटमें मूंगा, बैंकिंग और आढ़तका काम करती है।

मेसर्स मिश्रीमल हरनारायण

इस फर्मके मालिक चूरू के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके सिंघानिया सज्जन हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १८० हरिसन रोडपर है जहां बैंकिंग और कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ १०० पर दिया गया है।

मेसर्स मेघराज रामचंद्र

इस फर्मके मालिक नोहर (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय चाचान सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस १२२ काटन स्ट्रीटमें है। जहांका तारका पता Noria है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ ३० पर दिया है।

मेसर्स मोहनलाल शिवलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० लोकचन्दजी, पद्मचन्दजी और पुरुषोत्तमदासजी हैं। इसका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। यहां इसका पता ४८ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म चलानी और आढ़तका काम करती है।

स्थापना की थी। इसके बाद लगभग १४ वर्ष पूर्व आपने डिब्रूगढ़में अपनी एक और फर्म खोली। आप दोनोंही सज्जनोंने इसके व्यापारको तरक्की दी। आप लोग सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी १६।१२ हरिसन रोड T. A. Rasmera—यहां आसाम सिल्क और कमीशन एजेण्टका काम होता है।

पल्लासबाड़ी (आसाम)—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां कपड़ा, बर्तन तथा आसाम सिल्कका व्यापार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—T. A. Saraogi यहां कपड़ा, सोना, चांदी और कपड़ेका व्यापार होता है।

गोहाटी—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—T. A. Saraogi यहां कपड़ा, सोना, चांदी तथा बर्तनका व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छीराम कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० लच्छीरामजी तथा बाबू कन्हैयालालजी हैं। इसका हेड आफिस सिलहटमें है। विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ४२ में दिया गया है। इसका कलकत्तेका आफिस ५।१ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स लच्छीराम धर्मतलाल

इस फर्मके मालिक बाबू सागरमलजी नाथानी हैं। इसका आफिस मुक्तारामबाबू स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म शेअरका बहुत बड़ा व्यापार करती है। साथ ही कमीशनका काम भी बहुत ज्यादा करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें शेअरके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स मालचन्द दीपचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूं है। आप खण्डेलवाल जातिके श्वेताम्बरी सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इसको स्थापना बाबू फूलचन्दजीने की। आप बड़े योग्य और व्यापार दक्ष सज्जन हैं। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई। इस समय इस फर्मके मालिकोंमें श्रीयुत बाबू फूलचन्दजी, बा० मोतीचन्दजी दोनों भाई सम्मिलित हैं। श्रीयुत टीकमचन्दजीका स्वर्गवास संवत् ११८? में होगया।

बा॰ पालीरामजी (पालीराम किशनलाल)

बा॰ सादूलालजी डावड़ा (रामलाल शिवलाल)

बा॰ किशनलालजी (पालीराम किशनलाल)

बा॰ कानूरामजी डावड़ा (रामलाल शिवलाल)
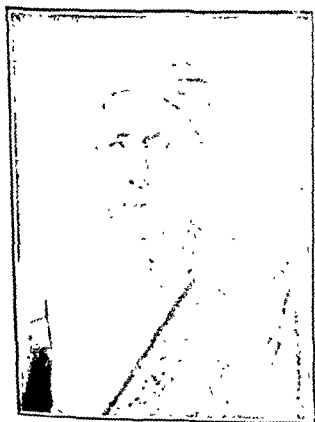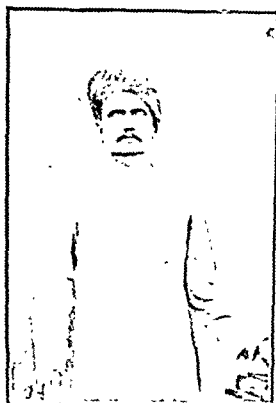
मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू हरदत्तरायजी एवम चुन्नीलालजी हैं। इसका यहां आफिस ४ नारायण प्रसाद बाबूलेनमें है। इस फर्म पर चलानीका काम होता है। यहांकी दुकानका संचालन बाबू वैजनाथजी करते हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ५१ में दिया गया है।

मेसर्स सनेहीराम डूंगरमल

इस फर्मका हेड आफिस डिबरूगढ़ (आसाम) है। इसके वर्तमान संचालक बाबू डूंगरमलजी लोहिया हैं। इस फर्मका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ७५ में दिया गया है। यहां इस फर्मका आफिस १७३ हरिसन रोडमें है। इस फर्मपर कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका तारका पता "Parb ahma" है।

मेसर्स सालमचन्द कन्हीराम

इस फर्मका हेड आफिस शाइस्तागंज है। यहां इसका आफिस १०५ ओल्ड चीना बाजारमें है। यह फर्म यहां कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ५२ में दिया गया है। इसमें शाईस्तागंज वालोंकी व्यापारिक हिस्सेदारी है।

मेसर्स सूरजमल सागरमल

इस फर्मका पूरा परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२४ में छापा गया है। यहां यह फर्म कपड़ा एवम चलानीका काम करती है। इसके वर्तमान संचालक बाबू सूरजमलजी हैं। आपका हेड आफिस पडरोना (गोरखपुर) है।

मेसर्स सुमेरमल रायचन्द

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। यहां इस फर्मपर मेसर्स चौथमल कुन्दनमल नाम पड़ता है। यहां इसका आफिस ७१२ बाबूलाल लेनमें है। यहां यह फर्म पाट एवम पाटकी बारदानका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बङ्गाल विभागके पेज नं० ३ में दिया गया है।

स्ट्रीटमें है। यह फर्म सब प्रकारकी चलानीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० १२ में दिया गया है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ [राजपूताना] के रहनेवाले अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस १६२ सूतापट्टीमें है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ५२ पर दिया गया है।

मेसर्स रामजसराय अर्जुनदास

इस फर्मके मालिक फतहपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ३ मेहरा पट्टीमें है जहांका तारका पता Arjundas है। यहां बम्बईकी मिलोंकी एजंसी और कमीशन ऐजेन्टका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ५१ में दिया गया है।

मेसर्स रामकिशनदास चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिक राय बहादुर सेठ देवीप्रसादजी हैं जो इस समय रिटायर्ड होकर शान्ति लाभ करते हैं। आप लोग मंडावा (राजपूताना) के रहने वाले हैं। इसका हेड आफिस भागलपुरमें है। यहां इस फर्मका आफिस १३६ काटन स्ट्रीटमें है जहांका तारका पता Dhandhania है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और कमीशन ऐजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ६४ पर देखिये।

मेसर्स रामसनेहीराम बोहितराम

इस फर्मके मालिक मलसीसर [जयपुर स्टेट] के रहने वाले अग्रवाल समाजके झूंझनूवाला सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४०1।7 A अपर चितपुर रोड पर है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ६८ पर दिया गया है।

मेसर्स रामविलास रामनारायण

इस फर्मका हेड आफिस अकयाबमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ७४ में मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलासके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म नं० १६२ क्रास स्ट्रीट में कपड़ेकी चलानीका व्यापार करती है। इसके यहां तारका पता Gldsipreeहै।

मेसर्स रघुनाथराय गौरीदत्त

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर) निवासी ओसवाल वैश्य समाजके कटारू सज्जन हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १८० हरीसन रोडपर है। जहांका तारका पता kataruka है। यहां बैंकिंग और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट १०१ पर दिया गया है।

मेसर्स रामरिखदास गंगाप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू श्रीनिवासजी, बाबू नौपतरायजी और बाबू ज्वालादत्तजी हैं। इसका हेड आफिस डिबरूगढ़में है। इस फर्मका यहां आफिस १७३ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म चलानीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० १६ में दिया गया है।

मेसर्स रामदयाल माणकचंद

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के रहनेवाले हैं। इसका हेड आफिस मैमनसिंहमें है जहां मालिक लोग रहते हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १६३।१ हरिसन रोडपर है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पृष्ट ६६ पर दिया गया है।

मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी

इस फर्मके मालिकोंमें बाबू रंगलालजी लाडनूं और बाबू रामेश्वरजी बनगोठड़ी (जयपुर) निवासी सरावगी जैन समाजके सज्जन हैं। इसके संस्थापक देशसे प्रथम पलासबाड़ी (आसाम) लगभग २३ वर्ष पूर्व आये थे। बाबू रामेश्वरजीने लगभग १७ वर्ष पूर्व कलकत्तेमें इस फर्मकी

श्रीयुत लालचन्दजीके इस समय दो पुत्र हैं, उनके नाम श्रीयुत छोगमलजी और श्रीयुत झूमूमलजी हैं। श्रीयुत दीपचन्दजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत चान्दमलजी और शिखर लालजी हैं। श्रीयुत चांदमलजीके एक पुत्र है जिनका नाम चम्पालालजी है। आप सब लोग बिजीनेस करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स लालचन्द दीपचंद २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट Phone 655 Cal—
इस दुकान पर बैंकिङ्ग, क्लाथ, कमीशन एजंन्सी और जूटका बिजीनेस होता है।

पलासवाड़ी [आसाम]—मेसर्स मोतीराम लालचन्द—यहां पर पाटका और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू वृद्धिचन्दजी, बा० निहालचन्दजी, बा० घनश्यामदासजी एवं सेठ छगनमलजी हैं। यह फर्म आसाममें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १५ में दिया गया है। यहां इसका आफिस ४ दहीहट्टामें है। तारका पता है "Hukum"। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और चलानीका काम होता।

मेसर्स शिवचन्द सुलतानमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० मूलचन्दजी सिंघी हैं। आप लाडनू [जोधपुर] निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस २६।२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है और तारका पता Shiw ganpati है। यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी भागके बिहार विभागमें पेज १७ पर दिया गया है।

मेसर्स शिवनन्दराय जोखीराम

इस फर्मके मालिक बिसाऊ [जयपुर स्टेट] के रहने वाले तथा अग्रवाल वैश्य समाजके पोद्दार सज्जन हैं। यहां इस फर्मका आफिस ४०१।७ अपर चितपुर रोड पर है जहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागमें पृष्ट ४५ पर दिया गया है।

मेसर्स हरनारायण शिवराज

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है जहां इसके वर्तमान मालिक लोग रहते हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी ६५ लोअर चितपुर रोडपर है जहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। विशेष परिचयके लिये बिहार विभागके पृष्ठ ७० को देखिये।

मेसर्स हनुतराम भगवानदास

इस फर्मके मालिक सांडू (बीकानेर) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यहां इस फर्मका आफिस १३२ काटन स्ट्रीटमें है जहां कपड़ेकी कमीशन एजेन्सीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ ३० पर देखिये।

मेसर्स हीरानंद बालाबक्स

इस फर्मका हेड आफिस १७१ A, हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म कमीशन एजंसीका व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक बालचन्दजी और अनन्तरामजी हैं। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८० में दिया गया है।

मेसर्स हरदत्तराय बिसेसरलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० हरदत्तरायजी, बिसेसरलालजी, सूरजमलजी तथा द्वारका-दासजी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके नवलगढ़ (शेखावटी) निवासी हैं। इस फर्मका स्थापन बा० हरदत्तरायजी द्वारा हुआ है। आप बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेडके प्रोड्यूस डिपार्टमेंटके प्रधान हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरदत्तराय बिसेसरलाल २३।३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. NO. 3630 B.B—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय फूलचन्द

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स मदनलाल शिवभुजरायके नामसे हाथरसमें है। कलकत्तेमें यह फर्म लम्बी अवधिसे गल्लेका व्यवसाय करती है। इस फर्मके द्वारा पहिले हुंडी और हेसियनके लिये

बाबू मुन्नीलालजीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके बड़े पुत्र बाबू छोटेलालजी स
१९२० तक इस फर्मका कार्य संचालित करते रहे।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू मुन्नीलालजीके पुत्र पूरणचन्दजी एवं बाबू मिश्र
चन्दजीके पुत्र बाबू महतावचन्दजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स उमरावसिंह मुन्नीलाल १९।१ सिकदर पाड़ा स्ट्रीट T. No 2757 B.B.—T. A
Famous—यह फर्म बहुत वर्षों से मेसर्स किलवर्न कम्पनीकी जौहरी डिपार्टमेंटकी से
ब्रोकर है। इस फर्मकी ब्रोकरशिपके कारण, फर्मके व्यवसायकी अच्छी वृद्धि हुई है।
इसके अतिरिक्त आपके यहां मोती और जवाहरातका एक्सपोर्ट और पन्नाका इम्पो
बिजिनेस भी होता है। यह फर्म पिटार लिवर्सन एण्ड कम्पनी लन्दनकी सोल ब्रोकर है।

मेसर्स कस्तूरचंद हीरालाल जौहरी

इस फर्ममें बाबू कस्तूरचन्दजी एवं हीरालालजी पार्टनर हैं। आपदोनों ही श्वेताम्बर ओस
समाजके सज्जन हैं। बाबू कस्तूरचन्दजी सहारनपुर (यू० पी०) के और बाबू हीरालालजी मेह
(रोहतक) के निवासी हैं।

इस फर्मका स्थापन आप दोनोंही सज्जनोंके हाथोंसे करीब २५ वर्ष पूर्व हुआ। प्रारंभसे
इस फर्मपर जवाहरातका व्यापार होता है। यह फर्म नीलम और माणिकके एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट
व्यापार करती है। इस फर्मपर बर्मा तथा श्यामसे कच्चा माल आता है। तथा आप उसे
कराकर विदेशोंके लिये रवाना करते हैं। कलकत्तेके जौहरी समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मा
जाती है। इसके कारबारको आप दोनोंही सज्जनोंने बढ़ाया। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिच
इस प्रकार है।

मेसर्स कस्तूरचन्द हीरालाल जौहरी १५५ राधाबाजार स्ट्रीट T.No. 2854 Cal T. A AMogh
इस फर्मपर माणक और नीलमका प्रधान व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त और जवाहरा
का भी व्यापार होता है।

मेसर्स गुलाबचन्द बेद

इस फर्मका हेड आफिस जयपुर (राजपूताना) है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थ
प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ६४ में दिया गया है। यहां इस फर्मका आफिस म
स्ट्रीटमें है। यहां इस फर्मपर जवाहरातका व्यापार होता है।

मेहता ठाकुरलाल केशवलाल जौहरी

मेहता कृष्णलाल, केशवलाल जौहरी

मेहता मणिलाल रतनचन्द जौहरी

मेहता चिमनलाल रतनचन्द जौहरी

जवाहिरातके व्यापारी

<u>जवाहिरातका व्यापार</u>

जवाहिरातके व्यापारपर हम इस ग्रन्थके पहले भागमें बहुत अच्छे प्रकाश डाल चुके हैं। अतएव उसको पुनः इस भागमें दोहराना व्यर्थ है। भारतवर्षमें जवाहिरातका सबसे बड़ा बाजार बम्बई है और उसके पश्चात् दूसरे नम्बरमें इसका मार्केट जयपुर है। जवाहिरातके इन दोनों व्यापारिक क्षेत्रोंका विवेचन इस ग्रन्थके प्रथम भागमें आचुका है। कलकत्तेमें भी जवाहिरातका व्यापार बहुत अच्छे परिमाणमें होता है। खासकर नीलामका व्यापार यहां बहुत अच्छा होता है। यहांके जवाहिरातके व्यापारियोंके सम्बन्धमें लिखनेके पूर्व हम प्रसिद्ध जौहरी राजा बद्रीदासका नाम विस्मृत नहीं कर सकते। जिस प्रकार बम्बईके शेयर मार्केटमें सेठ प्रेमचन्द रायचन्दका नाम अमर हो गया है। उसी प्रकार कलकत्तेके जौहरियोंमें राजा बद्रीदासका नाम अमर है। कलकत्तेके जौहरी समाजमें आप बड़े प्रतिभाशाली, दूरदर्शी और प्रतापी व्यक्ति हो गये हैं। आपकी कीर्ति भारतव्यापी थी। जवाहिरातकी परीक्षामें और उसके व्यापारमें आपकी दृष्टि बड़ी ही तीक्ष्ण थी। आपका बनाया हुआ जैन मन्दिर आज भी आपकी कीर्तिको आलोकित कर रहा है। उसका चित्र कलकत्तेके दर्शनमें दिया गया है।

कलकत्तेके कुछ जौहरियोंका सचित्र परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स छत्रपतसिंह मुन्नीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नाकड़ो (दिल्ली) है। आपलोग जैन श्वेताम्बर ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू छत्रपतसिंहजीके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें हुआ। आरंभसेही यह फर्म जवाहिरातका व्यापार करती रही है। तथा यह फर्म कलकत्तेके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। बाबू छत्रपतसिंहजीका स्वर्गवास सन् १९०४ ई० में हुआ। आपके २ पुत्र थे बाबू मुन्नीलालजी एवं बाबू शिखरचन्दजी। जिनमें बाबू मुन्नीलालजीका स्वर्गवास सेठ छत्रपतसिंहजीकी मौजूदगीमें हो गया था एवं सेठ शिखरचन्दजी भी सन् १९०६ ई० में स्वर्गवासी हो गये।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल १६७ लोअर चितपुर रोड—यहां आपका कारखाना है। इसमें ६६ कारीगर प्रति दिन काम करते हैं।

रंगून—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी १४ मुगल स्ट्रीट Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

मद्रास—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी ३१३ एस्प्लेनेड T.A. Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

एण्टवर्प (बेलजियम)—मेसर्स सूरजमल लल्लू भाई एण्ड कम्पनी २ रूसीमा Rue simona—यहां से हीरे अपनी कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं रंगून ब्रांचेजके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है, तथा भारतसे मोती एवं कलर स्टोनका यहां इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स ताराचन्द परशुराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० ताराचन्दजी हैं। आपकी फर्मका विशेष परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १४३ में दिया गया है। यहां यह फर्म निम्न व्यापार करती है।

कलकत्ता—९७ पार्क स्ट्रीट—यहां जवाहरात और क्यूरिओसिटीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—स्टुअर्ट हॉग मार्केट—यहां हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता—लिंडसे स्ट्रीट—यहां भी हीरा पन्ना आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास

इस फर्ममें दो सज्जन पार्टनर हैं, इनमेंसे सेठ पंजीलालजी देहलीके और सेठ बनारसीदासजी धनई पटियाला स्टेटके निवासी हैं। आप दोनोंही जैन श्वेताम्बर श्रीमाल समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका स्थापन करीब ४५ वर्ष पूर्व सन् १८८२ में बा० पंजीलालजी, एवं बा० बनारसीदासजीके हाथोंसे हुआ था, आरंभ सेही यह फर्म जवाहरातका व्यवसाय कर रही है, तथा कलकत्ते के जौहरी समाजमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानीजाती है। यह फर्म भारतीय प्रेशियस स्टोनका युनाइटेड स्टेट्स, इंग्लैंड, स्विटजरलेंड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंके लिये एक्सपोर्ट करती है। इस फर्मपर बर्मा, स्याम आदि स्थानोंसे नीलम और माणक का डायरेक्ट स्थानोंसे इम्पोर्ट होता है, तथा यहां पर तैयार करवाते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल १६७ लोअर चितपुर रोड—यहां आपका कारखाना है। इसमें ६६ कारीगर प्रति दिन काम करते हैं।

रंगून—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी १४ मुगल स्ट्रीट Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

मद्रास—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी ३।३ एक्सप्लेनेड T.A. Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

एण्टवर्प (बेलजियम)—मेसर्स सूरजमल लल्लू भाई एण्ड कम्पनी २ रूसीमा Rue simona—यहां से हीरे अपनी कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं रंगून ब्रांचेज के जरिये एक्सपोर्ट किया जाता है, तथा भारतसे मोती एवं कलर स्टोनका यहां इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स ताराचन्द परशुराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० ताराचन्दजी हैं। आपकी फर्मका विशेष परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १४३ में दिया गया है। यहां यह फर्म निम्न व्यापार करती है।

कलकत्ता—५७ पार्क स्ट्रीट—यहां जवाहरात और क्यूरिओसिटीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—स्टुअर्ट हैग मार्केट—यहां हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता—लिंडसे स्ट्रीट—यहां भी हीरा पन्ना आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास

इस फर्ममें दो सज्जन पार्टनर हैं, इनमेंसे सेठ पंजीलालजी देहलीके और सेठ बनारसीदासजी बम्बई पटियाला स्टेटके निवासी हैं। आप दोनोंही जैन श्वेताम्बर ओसवाल समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका स्थापन करीब ४५ वर्ष पूर्व सन् १८८३ में बा० पंजीलालजी, एवं बा० बनारसीदासजीके हाथोंसे हुआ था, आरंभ सेही यह फर्म जवाहरातका व्यवसाय कर रही है, तथा कलकत्तेके जौहरी समाजमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानीजाती है। यह फर्म भारतीय प्रेसियस स्टोन्स युनाइटेड किंग्डम, फ्रांस, इंग्लैंड, स्वीटजरलैंड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंके लिये एक्सपोर्ट करती है इस फर्मपर बर्मा, स्याम आदि स्थानोंसे नीलम और मानक का डायरेक्ट खानोंसे इम्पोर्ट होता है उनका यहां कट तैयार करवाते हैं।

मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी लल्लूभाईकी कम्पनी तथा मेहता ठाकुरलाल केशवलाल, मेहता चूनीलाल केशवलाल, मेहता मनीलाल रतनचंद तथा मेहता चिमनलाल रतनचंद हैं। आप लोग जैन वनिक समाजके गुजराती सज्जन हैं। आपलोगोंका मूल निवास पालनपुर (गुजरात) है। इस फर्मका स्थापन बड़ाबाजारमें संवत् १९७२ में हुआ था। आरंभ से ही यह फर्म जवाहरातका व्यवसाय करती आरही है। संवत् १९८२ से मेहता ठाकुरलालभाईने जवाहरातके बने दागीनों तथा चांदी सोनेके दागीनोंका एक सुन्दर शोरूम सुधरे हुए ढंगसे लालबाजार स्ट्रीटमें स्थापित किया। इसी समय अपनी फर्मके लिये माल तैयार करने वाला एक कारखाना १६७ लोअर चितपुर रोडमें स्थापित किया।

यह फर्म मारवाड़ी, बंगाली आदि जातियोंके लिये सभी प्रकारके सोना, चांदी तथा जवाहरातके दागीने तैयार करवाती है, तथा अपने शोरूममें रखकर बेचती है और आर्डरसे भी माल सप्लाई करती है।

सन् १९१४तक आपका एक ऑफिस एण्टवर्पमें भी था। अभी २ सन् १९२८के मईमासमें सेठ सुरजमल लल्लूभाई एवं मेहता ठाकुरलाल केशवलाल इन दोनों सज्जनोंने व्यवसायके निमित्त विदेश की यात्राकी थी, वहां आपने एण्टवर्प (बेलजियम), पेरिस, एमस्टर्डम, जर्मनी, आस्ट्रिया इटली स्वीटजरलैंड आदि देशोंकी यात्राकी, एवं अपना एक ऑफिस एण्टवर्पमें स्थापित किया।

इस फर्मको बम्बई तथा कलकत्तेके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है। सेठ सूरजमल लल्लूभाई बम्बईके एक ख्याति प्राप्त जौहरी हैं। आपकी फर्मका प्रधान व्यापार हीरेका है, इस ओर तरक्की करनेमें फर्मके संचालकोंने काफी लक्ष दौड़ाया है। वर्तमानमें फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी ३५९ कालबादेवी रोड T. A Calmness—यहां हीरा और जवाहरातका व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल एण्ड कम्पनी १२ लाल बाजार स्ट्रीट T. No. 400 Cal T. A. Fortune—यहां हीरेका इम्पोर्ट तथा मोती और कलर स्टोनका एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त चांदी, सोना, तथा सोनेके और जवाहरातके दागीने बिक्री होते हैं तथा आर्डरसे तैयार किये जाते हैं। यहां आपका शोरूम है।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल ४१ बड़तल्ला—यहां गद्दी है, तथा जवाहरातका व्यापार होता है।
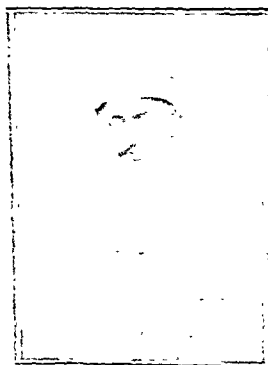
बाबू केशरीचंदजी भाड़भूर
(मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास जौहरी)

बाबू पन्नालालजी पारनार B. A.
(मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास जौहरी)
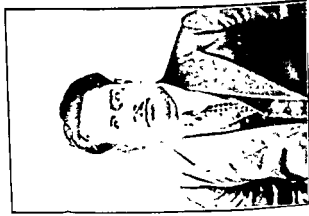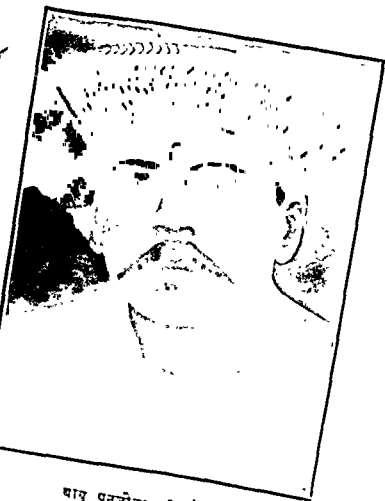
मेसर्स मोतीलाल मुकीम एण्ड संस

इस फर्मके मालिकोंका बहुत समयसे कलकत्तेमें ही निवास है। इस फर्मका स्थापन बाबू मोतीलालजीके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पूर्व हुआ था। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके व्यवसायकी उन्नति बाबू मोतीलालजी मुकीमके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास १८ जून १९२१ में हुआ। आप यहांके जौहरी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते थे। इस समय बाबू मोतीलालजी के ३ पुत्र हैं जिनके नाम बा० प्यारेलालजी मुकीम, सुन्दरलालजी मुकीम एवं कुंदनलालजी मुकीम हैं। इनमेंसे बा० प्यारेलालजी वकीलातका काम करते हैं। तथा बा०सुन्दरलालजी एवं बाबू कुन्दनलालजी जवाहरातका कारबार करते हैं। बाबू सुंदरलालजी साहब लोगोंकी गद्दीका व्यापार करते हैं। एवं बाबू कुन्दनलालजी योरोप, अमेरिका आदि विदेशोंके लिये जेवरातोंका एक्सपोर्ट करते थे। नीलम तथा माणक आपके यहांसे विदेशोंको जाता है और आपके यहां हीरा और घड़ियोंका इम्पोर्ट होता है। बर्माकी रूबी माईन्ससे नीलम और माणकका डायरेक्ट इम्पोर्ट आपके यहां होता है। कलकत्तेके जौहरी समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मोतीलाल मुकीम एण्ड संस ७६ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (Renown)—यहां जवाहरातका एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम होता है। अलाहाबाद बैंक तथा मरकेंटाइल बैंक इस फर्मके बैंकर हैं। और घड़ी तथा हीरेका इम्पोर्ट एवं नीलम तथा माणिकका एक्सपोर्ट यहांसे होता है।

मेसर्स मुन्नालाल हीरालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० मुन्नीलालजी जौहरी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इसका स्थापन बाबू हीरालालजीके द्वारा हुआ। आपके ही द्वारा उन्नति भी हुई। आप [illegible] जौहरी थे। आपका स्वर्गवास हो गया।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स मुन्नालाल हीरालाल ३८ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No 1738—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

[illegible]

[illegible] B. A. [illegible]

[illegible]

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[illegible] — मेसर्स [illegible] T. No 2336 B. B. T. A. Benarsi
यहां मोती, नीलमका व्यापार होता है। [illegible] एक्सपोर्ट एवं नीलम और माणिकके इम्पोर्टका व्यापार भी होता है।

[illegible] नीलम और माणिकका एक्सपोर्ट करनेवाली फर्मोंमें यह फर्म है तथा पहले [illegible] इसीके द्वारा नीलमका एक्सपोर्ट शुरू हुआ था।

जौहरी प्यारेलालजी ताम्बी

इस फर्मके संचालक श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत समयसे जवाहरातका काम कर रही है। पर इस नामसे काम करते हुए इसे २० वर्ष हुए। इस पर शुरूसे ही नौरत्न जवाहरातका काम होता चला आया है। खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष होता है। आपकी फर्म पर वर्मासे नीलम एवं माणिकका कच्चा माल आता है तथा यहांसे कट होकर [illegible] पक्का पक्का युरोप आदिमें जाता है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू प्यारेलालजी हैं। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति हुई है। आप बड़े व्यापारिक एवं मेधावी सज्जन हैं। आपने सब कार्य अपने पिता बुलाकीचंदजी से सीखा। आपका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। आप जवाहरातके काममें बड़े निपुण थे। आपके पास करीब ४०, ५० विद्यार्थी जवाहरातका काम सिखते थे जो अच्छी विद्या प्राप्त कर कलकत्ताके बाजारमें जवाहरातका अच्छा काम कर रहे हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता — मेसर्स प्यारेलाल ताम्बी ४३ B सिकदर पाड़ा T. No 3974 B. B. T. A. Tambi
यहां नौरत्न जवाहरातका व्यापार होता है। इसमें भी खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष रूपसे होता है तथा इनके जेवर भी बनते हैं।

है तथा विक्री किया जाता है। इसके अतिरिक्त कमीशन पर भी यह फर्म काम करती है।

बनारस—मेसर्स मोतीचन्द कुंजीलाल सिल्क हाउस मोती कटरा—यहां बनारसी माल एवं साड़ियां, लंहगे आदि पर सलमा सितारेका काम और जरीके काम की वस्तुओंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त काशी सिल्कका व्यापार भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द १६१।१ हरिसन रोड T No. 1292 B. B—यहां बनारसके बने हुए सभी प्रकारके जरीके बेशकीमती कपड़े एवं चांदी सोनेकी बनी हुई उपरोक्त वस्तुओंका व्यापार एवं कमीशन पर बनवादेनेका काम होता है।

मेसर्स मुगरजी गोविन्दजी

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान जाम (खंभालिया) काठियावाड़ है। आप वणिक सोनी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १३ वर्ष हुए। इसके वर्तमान मालिक सेठ मुगरजी हैं। आपहीके हाथोंसे इसका स्थापना हुआ है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मुगरजी गोविन्दजी १५६ हरीसन रोड फोन नं० १५६० B. B.—यहां चांदी सोनेकी बनी हुई फैंसी वस्तुओंका व्यापार होता है। तारका पता "Goldmine" है।

कलकत्ता—मेसर्स नरोत्तमदास मुरारजी १६६ बहुबाजार फोन नं० ३६७६ बड़ाबाजार तथा तारका पता है। "Holisoul"। यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

सोना चांदीके व्यापारी

सोना चांदीका व्यापार

इस व्यवसायके अन्तर्गत सभी प्रकारका सोना चांदीका वह व्यवसाय माना जाता है जो सिक्के तथा बने मालसे सम्बन्ध नहीं रखता है। कलकत्तेमें इसका व्यवसाय प्रधान रूपसे सोना पट्टीमें होता है। जिस प्रकार संसारके अन्य व्यवसायोंमें तैयार मालकी आवश्यकताको पूरा करनेके लिये वायदेके सौदेका प्राबल्य होता गया है उसी प्रकार इस व्यवसायमें भी तैयार मालके सौदेके साथ वायदेके सौदेका खूब दौड़ दौड़ा देखा जाता है। वायदेके सौदेके अनुसार ही तैयार मालके भावमें उतार चढ़ाव हुआ करता है। तैयार मालके सौदेकी डिलीवरीका माल कलकत्तेसे सम्बद्ध स्थानोंके माल सप्लाई करनेके काम आता है। इस बाजारका पेंचं संचालन यहांकी बुलियन एक्सचेंजकी देखरेखमें प्रायः यहांका चेम्बर आफ कामर्स करता है। इसी संस्था द्वारा इस व्यापारसे सम्बन्ध

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमेंसे बा० बनारसीदासजी झाड़चूर, एवं सेठ पंजीलालजी पारसानके पुत्र बा० मोतीलालजी हैं। बा० बनारसीदासजी पहिले कुछ समय तक मेसर्स इंग्लैंडसे आरबुथनाट एण्ड कम्पनीके जौहरी डिपार्टमेंटके बेनियन रहे थे। सेठ बनारसी दासजी झाड़चूरके पुत्र एवं बाबू मोतीलालजी पारसानके पुत्र श्रीधन्नुलालजी पारसान B. A. भी व्यवसायमें भागलेते हैं। बा० पंजीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९५२ में हो गया है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास १६ हंसपोकर लेन T No 2836 B. B T A Benarsi
यहां मोती, नौरत्नका व्यापार होता है। प्रेसियस स्टोनका विदेशोंके लिये एक्सपोर्ट एवं नीलम और माणिकके इम्पोर्टका व्यापार भी होता है।

कलकत्तेसे नीलम और माणिकका एक्सपोर्ट करनेवाली फर्मोंमें यह फर्म है तथा पहले पहल इसीके द्वारा नीलमका एक्सपोर्ट शुरू हुआ था।

जौहरी प्यारेलालजी ताम्बी

इस फर्मके संचालक श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत समयसे जवाहरातका काम कर रही है। पर इस नामसे काम करते हुए इसे २० वर्ष हुए। इस पर शुरूसे ही नौरत्न जवाहरातका काम होता चला आया है। खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष होता है। आपकी फर्म पर बर्मासे नीलम एवं माणिकका कच्चा माल आता है तथा यहांसे कट होकर अथवा कच्चा बाहर यूरोप आदिमें जाता है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू प्यारेलालजी हैं। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति हुई। आप बड़े व्यापारिक एवं मेधावी सज्जन हैं। आपने सब कार्य अपने पिता बुलाकीचंदजी से सीखा। आपका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हो गया। आप जवाहरातके काममें बड़े निपुण थे। आपके पास करीब ४०, ५० विद्यार्थी जवाहरातका काम सिखते थे जो अच्छी विद्या प्राप्त कर कलकत्तेके बाजारमें जवाहरातका अच्छा काम कर रहे हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स प्यारेलाल ताम्बी ९३ B सिकदर पाड़ा T. No 3974 B. B. T. A. Tambi
यहां नौरत्न जवाहरातका व्यापार होता है। इसमें भी खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष रूपसे होता है तथा इनके डेवर भी बनते हैं।

मेसर्स बिरला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मका आफिस ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्तामें है। इसका सुविस्तृत परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें दिया गया है। इस फर्मके मालिक भारत प्रसिद्ध बिड़ला बंधु हैं। जूट, गल्ला आदिके व्यवसायके साथ २ चांदी सोनेका भी आप बहुत बड़ा कामकाज करते हैं। बाबू रामेश्वरदासजी बिड़ला बुलियन एक्सचेंज बम्बईके प्रेसिडेन्ट हैं। आपके यहां चांदी सोनेका बहुत इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स मेघराज वासुदेव

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मलसीसर (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। इस व्यवसायको सेठ मोतीलालजी, केदारनाथजी तथा श्री मेघराजजी एवं बा० हनुमानदासजी इनचारों सज्जनोंने उन्नति पर पहुंचाया। संवत् १९८३ तक उपरोक्त चारों भाइयोंका व्यवसाय मेसर्स चिमनराम मोतीलालके नामसे सम्मिलित रूपसे होता रहा, पश्चात् आप सब अलग अलग हो गये। सेठ मोतीलालजीने पुराने फर्म चिमनराम मोतीलालके नामसे अपना काम अलग करना शुरू कर दिया तथा शेष तीनों भाइयोंने अपनी फर्म पर बम्बईमें नारायणदास केदारनाथके नामसे व्यवसाय शुरू किया। इस फर्म पर कलकत्ता तथा बम्बईमें चांदी सोनेका इम्पोर्ट तथा वायदेका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नारायणदासजी, सेठ मेघराजजी एवं सेठ हनुमानदासजी हैं। आप सब प्रतिष्ठित सज्जन हैं। बाबू नारायणदासजीके बड़े पुत्र श्री गोविंदरामजी तथा बाबू हनुमानदासजीके बड़े पुत्र श्री केदारनाथजी भी व्यवसायमें भाग लेते हैं। सेठ नारायणदासजी बम्बई बुलियन एक्सचेंज लि० के डायरेक्टर एवं वाइस चेयरमैन हैं। संवत् १९८६ से आप इस एक्सचेंजके वाइस चेयरमैन नियुक्त हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स नारायणदास केदारनाथ बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग T. No 24554—यहां हेड आफिस है। यहां चांदी सोनेका इम्पोर्ट तथा वायदेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अलावा बैंकिंग, कपड़ा तथा कमीशनका काम भी होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज वासुदेव १३२ काटन स्ट्रीट T A Silver cufo—यहां भी सोने चांदीका इम्पोर्ट और वायदेका व्यापार होता है। इसमें बाबू वासुदेवजी पोद्दार भागीदार हैं। आप ही यहां की व्यवस्था करते हैं।

...र्इ मोतीचन्दजी जैन (मोतीचन्द फूलचन्द)

मिर्इ फूलचन्दजी जैन (मोतीचन्द फूलचन्द)

...कटरा बनारस (मोतीचन्द फूलचन्द)
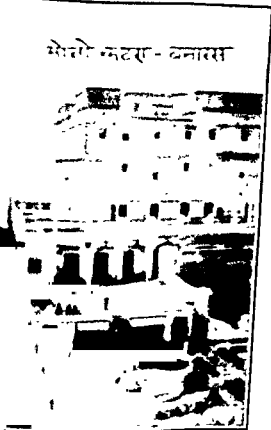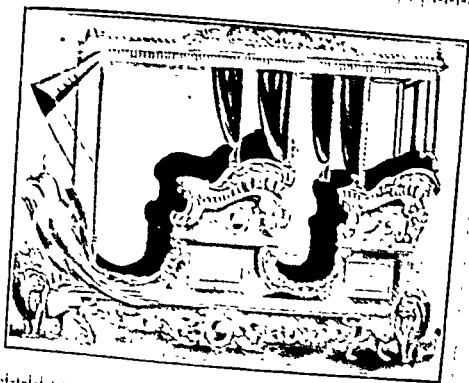
मोटरका हौदा (बनानेवाले मोतीचन्द फूलचन्द)

रखनेवाले सभी झगड़े सुलझाये जाते हैं। यहांके बुलियन मार्केटपर प्रायः लन्दनकी एक्सचेंज मार्केट द्वारा प्रभावित वहांके बुलियन हाउसका ही प्रभाव देखा जाता है।

सोनाका संसारमें प्रधान मार्केट यों तो अमेरिकन बाजार माना जाता है पर संसारमें विनिमयकी कुंजी लन्दनके महाजनोंके हाथमें होनेके कारण वहींसे सोनेका भाव निकलता है। चांदीका प्रधान बाजार शंघाई माना जाता है और वहींके भावपर संसारके चांदीके बाजारका उतार चढ़ाव होता रहता है। स्मरण रहे शंघाई कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां चांदी अधिक परिमाणमें पायी जाती हो। फिर भी शंघाई चांदीका प्रधान बाजार माना जाता है। और इसी बाजारके भावको देखकर अन्य बाजारोंमें सौदे होते हैं।

संसारमें सोनेकी सबसे प्रसिद्ध खानें अफ्रीकामें हैं। पर अस्ट्रेलिया और अमेरिकाकी सोनेकी खानें भी कुछ कम महत्व की नहीं मानी जातीं। आस्ट्रेलियामें सोनेकी खानोंकी अधिकताके कारण ही आज इतनी बड़ी जनसंख्या दिखाई देती है। नहीं तो पहिले बृटेनके चोर बदमाश निर्वासितों का ही वहां अड्डा था। इतना ही क्यों भारतकी जनश्रुतिके अनुसार कुछ इतिहासकारोंने सोनेके आधिक्यके कारण इसे ही रावणकी लंका भी सिद्ध करनेकी सराहनीय चेष्टाकी है। खैर भारतसे जो माल निर्यातके रूपसे बाहर जाता है उसके विनियममें ही उपरोक्त देशोंका सोना भारत आता है। यह सोना, सोना शुद्ध करनेवाली कम्पनियोंकी छाप लगाकर छोटे २ पाटके रूपमें आता है और यहाँ व्यापारियोंकी इच्छानुसार छाप लगाकर बाजारमें बिक्रीके लिये रक्खा जाता है। पाटकी वजनका अनुमान इसीसे हो सकता है कि प्रायः ८० तोलेमें तीन पाट चढ़ते हैं। पाट प्रायः ९७.२० टंचसे ९९.८० टंचतकका आता है। इसमें भी ९९.८० टंचवाला १०० टचमें ही माना जाता है।

चांदीकी सबसे बड़ी खानें प्रायः अधिक संख्यामें दक्षिण अमेरिकामें ही पायी जाती हैं पर भारतमें चांदी अमेरिकाके अतिरिक्त चीन और योरोपसे भी आती है। इसकी सिल प्रायः २८०० भरी होती है। चांदीकी सिलें दो प्रकारकी होती हैं जो १७॥ पेनी और १७ पेनीकी कहाती हैं। १७॥ पेनीवाला माल ९९९ टचका माना जाता है।

भारतमें भी सोनेकी दो प्रधान खानें हैं जिनमेंसे एक तो संसार प्रसिद्ध मैसूरकी कोलार गोल्ड फील्ड नामक खान है और दूसरी निजाम राज्यके लिंगसागर जिलेके अन्तर्गत हट्टीकी सोनेकी खान है। यहां प्रति वर्ष अच्छे परिमाणमें सोना निकलता है।

इस विषयके विस्तृत विवेचनके लिये हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागको देखिये।

लकड़ीके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

भगवानदास बागला राय बहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू मदनलालजी बागला हैं। इसकी बम्बई, मेक्टेले (बर्मा), रंगून, मंडाले आदि स्थानोंपर शाखाएं हैं। यहां इसका आफिस नीमतल्ला—स्ट्रांड रोडमें है। तारकापता है Kayora—यहां बैंकिंग, जमींदारी एवम लकड़ीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० ८३ में चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स भीमराज ज्वालादत्त

यह फर्म कलकत्तेके टिम्बरके व्यापारियोंमें बहुत पुरानी है। पहिले इस फर्मपर भीमराज मुरलीधरके नामसे व्यापार होता था। इस फर्मके स्थापक सेठ भीमराजजी सन् १८४४ में कलकत्ता आये तथा आरम्भसे ही आपने टिम्बरका व्यवसाय आरंभ किया। आपके २ पुत्र हुए सेठ मुरलीधरजी एवं सेठ ज्वालादत्तजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ ज्वालादत्तजी कुछ समय पूर्वसे भीमराज ज्वालादत्तके नामसे अपना अलग व्यवसाय करते हैं एवं बाबू मुरलीधरजी मोलमीनमें व्यवसाय संचालित करते हैं। लकड़ीके व्यापारियोंमें यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—भीमराज ज्वालादत्त ६७।२३ स्ट्रांड रोड—यहां आपका काठगोला है। तथा काठकी बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स मोतीलाल राधाकिशन

इस फर्मका हेड आफिस यहीं है। इसके वर्तमान संचालक बा० राधाकिशनजी बागला हैं। यहां करीब १३ वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० ४२ में दिया गया है। यहां इस फर्मपर लकड़ीका अच्छा व्यापार होता है। यहांका पता स्ट्रेंड रोड है। तारका पता Bigla है।

मेसर्स रामप्रसाद चिमनलाल गनेड़ीवाला

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके गनेड़ीवाला सज्जन हैं।

स्व॰ बा॰ चिमनलालजी गनेड़ीवाला

बा॰ ब्रजलालजी गनेड़ीवाला

बा॰ रामेश्वरदासजी गनेड़ीवाला

बा॰ राधाकृष्णजी गनेड़ीवाला

बाबू नारायणदासजी झूंझनूवाला (मेघराज बाणदेव)

(बाद

बाबू हजारीमलजी गोमानी

बाबू सदासुखजी काबरा (रिधकरण काबरा)
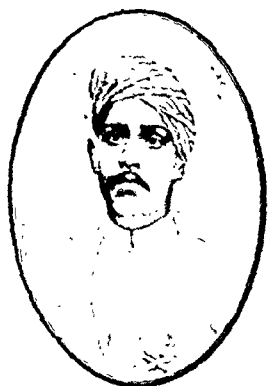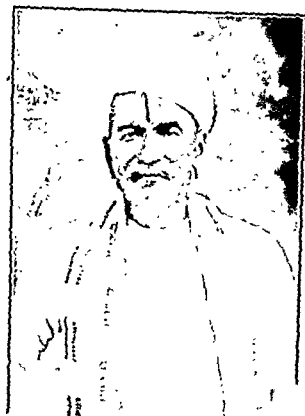
बाबू लक्ष्मी

पांढर कुवड़ा (बरार)—भगवानदास हरकिशनदास—यहां आपकी इसी नामसे जीनिंग तथा फेक्टरी है। तथा रुई और कमीशन एजंसीका काम होता है।

गोला—(गोरखपुर) सेवगराम हनुमानदास—यहां पर कपड़ा तथा गल्लेका काम होता है। ब्याजपर रुपया दिया जाता है। यह फर्म बाबू हनुमान दासजीकी है।

मेसर्स शिवनारायण गुलाबराय

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित पटनेमें दिया गया है। इस फर्मकी पटना, कलकत्ता तथा हाजीपुरमें हेड आफिस हैं। इसके अलावा बनारस, सैय्यदराजा और दिल्दार नगरके अंडरमें और भी बहुतसी दुकानें हैं। जिन पर कपड़ा, गल्ला, चांदी,सोना, आढ़त आदिका व्यापार होता है। कलकत्तामें इसकी गद्दी १०५ कॉटन स्ट्रीटमें है। तारका पता "Silver" है। यहां बेकिंग, कपड़ा, चांदी, सोना, गल्ला, गनीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संस

इस फर्मके व्यापारका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके बैंकर्स विभागमें चित्रों सहित दिया गया है। इसकी गद्दी १७८ हरिसन रोडमें है। यहां बेङ्किग, जूट आदिके व्यवसायके साथ २ चांदी सोनेका इम्पोर्ट और व्यवसाय भी होता है।

मेसर्स हजारीमल सोमानी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान मोलासर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके सोमानी सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ लक्ष्मीनारायणजी सोमानी संवत् १९५२ में देशसे कलकत्ता आये। एवं आरंभमें आपने चांदीकी दलालीका कार्य शुरू किया। तथा पश्चात् रिधकरण कावरा कम्पनीके पार्टनर शिपमें चांदीके व्यवसायको बढ़ाया। लड़ाईके समयमें रिधकरण कावरा कम्पनीने चांदी, रुई, शेअर, हेसियन आदिमें अच्छी सम्पत्ति पैदा की। इस कम्पनीकी उन्नति सेठ लक्ष्मीनारायणजीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू हजारीमलजीके हाथोंसे हुई। आप संवत् १९५८ से व्यवसायमें सहयोग देने लगे। संवत् १९६० में इस फर्मकी १ ब्रांच बम्बईमें भी खोली गई।

संवत् १९७६ में बाबू हजारीमलजीने लक्ष्मीनारायण हजारीमलके नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करना आरंभ किया। तथा अपने व्यवसायको अच्छा प्रोत्साहन दिया।
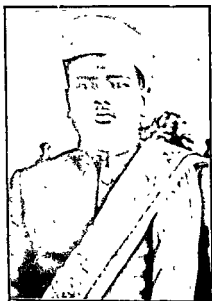
बा० हरिप्रसादजी गनेड़ीवाला
(रामप्रसाद चिमनलाल)

बा० नन्दरामजी निहचा
(हरदत्तराय नन्दराम)

लक्ष्मीनारायण गनेड़ीवाला
(रामप्रसाद चिमनलाल)

बा० जयनारायणजी निहला
(हरदत्तराय नन्दलाल)

कलकत्ता—मेसर्स बदरीचन्द रामकुमार ४६ स्ट्राड रोड T. No ४२० B.B | T.A. Enormous
यहां कपड़ा तथा चलानीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामकुंवार आईलमिल ६ रामा राम कृष्ण स्ट्रीट T. N 470 B. B -
यहां आपकी आइल मिल है।

सलकिया—बदरीचन्द रामकुंवार ३२ बनारस रोड T. No 411 How—यहां केवल काटनका
व्यापार होता है।

सलकिया—रामकुंवार रामेश्वर १६ किशनलाल बर्मन रोड—कपास काटनका व्यापार होता है।

साहबगंज (बिहार)—बदरीचन्द रामदयाल दे पोस्ट रुकमलीगली—यहां तेलकी कल है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामदयाल दे १६ १२।१ गोआबगान स्ट्रीट—यहां तेलकी कल है।

मेसर्स वृद्धिचन्द रामदयाल दे

इस फर्मके मालिक वर्द्धमान (बंगाल) के निवासी बंगाली सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामदयाल दे और बाबू आशुतोष दे हैं। कलकत्तेका काम बाबू आशुतोषजी देखते हैं। आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—वृद्धिचन्द रामदयाल दे गोआबगान—यहां तेल कल है।

साहबगंज—(बिहार) बदरीचन्द रामदयाल दे—यहां तेल कल है।

वर्द्धमान—रामदयाल दे आलमगंज—यहां तेल और चावलकी कल है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामकुंवार ६ रामा राम कृष्ण स्ट्रीट —यहां तेल कलमें आपका हिस्सा है

इस फर्मके मालिक बाबू रामदयाल दे वर्द्धमानमें रहते हैं।

मेसर्स बंसीधर दुर्गादत्त भगत

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (जयपुर) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्यजातिके सज्जन हैं। इस फर्मका व्यापार करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ बंसीधरजीने किया। आपके इस समय चार पुत्र हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके पुत्रोंके नाम क्रमशः बा० रा-मदयालजी, बा० बैजनाथजी, बा० दुर्गादत्तजी, तथा बा० प्रेमसुखदासजी हैं। वर्तमानमें इस . संचालक उपरोक्त चारों सज्जन हैं। आप लोग अपने व्यवसायमें सुचारु रूपसे . . . इस फर्मकी आसाम तथा कलकत्तेमें तेलकी मिलें चल रही हैं।

बाबू भगवानदासजी भगत (भगवानदास मदनलाल)
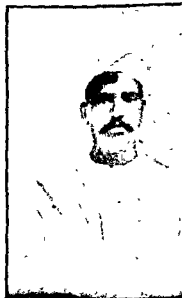
बाबू मदनलालजी भगत (भगवानदास मद

स्वर्गीय श्रीगोपीरामजी भगत (हरीबक्श गोपीराम)

श्रीफूलचन्दजी भगत (भगवानदास मदनला

और गोरखपुरमें जमींदारी भी खरीदी। आपने संवत् १९१२ में कलकत्तेमें अपनी दुकान स्थापितकी और तभीसे आपका कुटुम्ब यहीं निवास करता है। सेठ शिवदयालजीने धार्मिक एवं सामाजिक जगतमें भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपका सुविस्तृत परिचय मेसर्स शिवदयाल रामजीदास फर्मके विवरणमें दिया गया है। आपके ३ पुत्र हुए सेठ गौरीदत्तजी, सेठ जगन्नाथजी एवं सेठ रामजीदासजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ जगन्नाथजीका ही कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है। आपका स्वर्गवास संवत १९७० में हुआ, तबसे आपके पुत्र शिवदयाल जगन्नाथके नामसे अपना व्यवसाय संचालित करते हैं।

सेठ जगन्नाथजीके तीन पुत्र हुए श्रीकृष्णलालजी बाजोरिया, श्री नारायणदासजी बाजोरिया एवं श्री भगवानदासजी बाजोरिया, उपरोक्त सज्जनोंमेंसे बाबू कृष्णलालजीका देहावसान सन् १९१८ में हो गया है। आपने अपने देहावसानके समय २६ हजार रुपयोंका दान किया है जिसके ब्याजसे अकाल पीड़ितों, अनाथों तथा दुर्घटना पीड़ित व्यक्तियोंको सहायताका कार्य होता है। आप बड़े सरल एवं साधु प्रकृतिके सज्जन थे।

बाबू नारायणदासजी बाजोरिया शिक्षित एवं मिलनसार सज्जन हैं। सन् १९१७ में आपने कानपुरमें एक गंगा आइल मिल तथा जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी स्थापितकी। आप इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स, तथा कानपुर सनातनधर्म कालेज ऑफ कामर्सके मेम्बर हैं। तथा हरेक प्रकारकी देशहित सम्बन्धी संस्थाओंमें आप भाग लिया करते हैं। आप टीटागढ़ पेपर मिल्सके डायरेक्टर हैं। आपकी फर्मकी ओरसे हिन्दू युनिवर्सिटीमें २५ संस्कृत पढ़ने वाले छात्रोंको ५) मासिककी छात्रवृत्ति दी जाती है। कानपुर कालेज ऑफ कामर्समें भी आपने सहायता दी है। आपको व्यायामसे विशेष स्नेह है।

आपने सन १९२७ में बाबू घनश्यामदासजी बिड़लाके साथ इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्विटजरलैंड, आदि देशोंकी यात्रा की थी। आपके छोटे भ्राता बाबू भगवानदासजी बाजोरिया B. A. L. L. B भी व्यवसाय संचालनमें सहयोग देते हैं। बाबू कृष्णलालजीके पुत्र बंशीधरजी गोद लिया है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ११३ हरिसन रोड—यहां हेड ऑफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ९४ लोअर चितपुर रोड फोन नं० २५१२ तारका पता (Saakharid)—यहां जूट, बैंकिंग, शेयर और तेलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ बीजराज, कोपरगंज—यहां आपकी गंगा आइल मिल तथा कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, इसके अलावा आढ़त, तेलकी बिक्री और रुईका व्यापार होता है।

सेठ इन्द्रचन्द्रजी राजगढ़िया

आपने अपने भाइयोंके साथ धोती जोड़ेके व्यवसायमें सहयोग देना आरम्भ किया। आपने इस व्यापारको अच्छी अवस्थामें पहुंचाया। आपने अभ्रकके व्यवसायमें प्रवेशकर उसकी भी अच्छी उन्नति की। आज अभ्रकके व्यवसायमें आप अच्छे अनुभवी एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न माने जाते हैं। आपने आर्डर सप्लाईके कामको भी अच्छा बढ़ाया। आपने गोचर भूमिके लिये मथुरा, गया और कलकत्तेके पिंजरापोलको सहायता दी है।

सेठ बच्चूलालजी राजगढ़िया

आप स्व० सेठ केदारनाथजीके जेष्ठ पुत्र हैं। आपका हिन्दी साहित्यकी ओर अच्छा अनुराग है। आप मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं। आपको विद्वानोंका सतसंग प्रिय है।

सेठ रामप्रसादजी

आप सेठ नागरमलजीके पुत्र हैं। आप अभ्रकके जानकार हैं और उसके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय एण्ड कम्पनी १३ सैयदसाली लेन तारका पता "Maloty" calcutta. phone 1304B.B.—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। यहीसे अभ्रकके एक्सपोर्टका काम लंदन, लिवरपूल, मैनचेस्टर, फ्रांस, अमेरिका, बोस्टन, जर्मनी; जापान, आस्ट्रेलिया, इटली, स्वीटजर्लेण्ड आदिसे होता है। इसके अतिरिक्त यहींसे आर्डर सप्लाईका काम भी होता है।

इस फर्मकी खुदकी १७ के लगभग अभ्रककी खानें गया तथा हजारीबाग जिलेमें हैं। इनकी बड़ी शाखायें निम्नलिखित हैं:—

गिरिडिह, पचम्बा, कोडर्मा, डोमचांच, नवादा, भानाखाय आदि।

१ कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय केदारनाथ १२ सैयदसाली लेन—यहां सेमर तथा अकवानकी रूईका व्यापार तथा आर्डर सप्लाईका काम होता है।

२ कलकत्ता मेसर्स केदारनाथ तनसुखराय ६१ सूतापट्टी—यहां कपड़ेका कारबार होता है।

३ कलकत्ता—मेसर्स इन्द्रचन्द्र बच्चूलाल तुलापट्टी—यहां पर हैसियनका कारबार होता है।

४ कलकत्ता—मेसर्स नागरमल लाभचंद २१२ सूतापट्टी—यहां सूतेका कारबार होता है।

हवड़ा (सलकिया) नं० ५३।५४।५५ धर्मतल्ला रोड गणपतराय कम्पनी—यहां सेमल और अकवान काटनकी मिलका काम होता है।

और गोरखपुरमें जमींदारी भी खरीदी। आपने संवत् १९१२ में कलकत्तेमें अपनी दुकान स्थापितकी और तभीसे आपका कुटुम्ब यहीं निवास करता है। सेठ शिवदयालजीने धार्मिक एवं सामाजिक जगतमें भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपका सुविस्तृत परिचय मेसर्स शिवदयाल रामजीदास फर्मके विवरणमें दिया गया है। आपके ३ पुत्र हुए सेठ गौरीदत्तजी, सेठ जगन्नाथजी एवं सेठ रामजीदासजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ जगन्नाथजीका ही कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है। आपका स्वर्गवास संवत १९७० में हुआ, तबसे आपके पुत्र शिवदयाल जगन्नाथके नामसे अपना व्यवसाय संचालित करते हैं।

सेठ जगन्नाथजीके तीन पुत्र हुए श्रीकृष्णलालजी बाजोरिया, श्री नारायणदासजी बाजोरिया एवं श्री भगवानदासजी बाजोरिया, उपरोक्त सज्जनोंमेंसे बाबू कृष्णलालजीका देहावसान सन् १९१८ में हो गया है। आपने अपने देहावसानके समय २६ हजार रुपयोंका दान किया है जिसके व्याजसे अकाल पीड़ितों, अनाथों तथा दुर्घटना पीड़ित व्यक्तियोंकी सहायताका कार्य होता है। आप बड़े सरल एवं साधु प्रकृतिके सज्जन थे।

बाबू नारायणदासजी बाजोरिया शिक्षित एवं मिलनसार सज्जन हैं। सन् १९१७ में आपने कानपुरमें एक गंगा आइल मिल तथा जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी स्थापितकी। आप इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स, तथा कानपुर सनातनधर्म कालेज ऑफ कामर्सके मेम्बर हैं। तथा हरेक प्रकारकी देशहित सम्बन्धी संस्थाओंमें आप भाग लिया करते हैं। आप दौलतराम पेपर मिल्सके डायरेक्टर हैं। आपकी फर्मकी ओरसे हिन्दू युनिवर्सिटीमें २५ संस्कृत पढ़नेवाले छात्रोंको ५) मासिककी छात्रवृत्ति दी जाती है। कानपुर कालेज ऑफ कामर्समें भी आपने सहायता दी है। आपको खादीसे विशेष स्नेह है।

आपने सन १९२७ में बाबू घनश्यामदासजी बिड़लाके साथ इग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्विटजरलैंड, आदि देशोंकी यात्रा की थी। आपके छोटे भ्राता बाबू भगवानदासजी बाजोरिया B. A. L. L B भी व्यवसाय संचालनमें सहयोग देते हैं। बाबू कृष्णलालजीके पुत्र बंशीधरजी एजेंसियर हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ११३ हरिसन रोड—यहां हेड आफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ६५ लोअर चितपुर रोड फोन नं० २५१२ तारका पता (Saakharid)—यहां आढ़त, बेंकिंग, शेअर और तेलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ दौलतराम, कोपरगंज—यहां आपकी गंगा आइल मिल तथा कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, इसके अलावा आढ़त, तेलकी बिक्री और रुईका व्यापार होता है।

छातेके व्यापारी

मेसर्स तेजपाल विरदीचंद सुराना

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरु (बीकानेर) में है। इसके वर्तमान मालिकोंमें श्रीयुत सेठ रामचन्द्रजी सुराना, श्रीयुत छोटेलालजी सुराना, श्रीयुत श्रीचन्द्रजी सुराना तथा श्रीयुत शुभकरनजी सुराना हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें चूरूके पोर्शनमें दिया गया है।

श्रीयुत शुभकरनजी सुराना सन १९२८ में बहुमतसे बीकानेर लेजिस्लेटिव असेम्बलीके मेम्बर चुने गये। तथा इसी वर्ष श्रीमान् बीकानेर नरेशने आपको हाइकोर्टका जूरर भी नियुक्त किया है। इसके अतिरिक्त आप कलकत्ता युनिवर्सिटी इन्स्टिट्यूटके सीनियर मेम्बर और नेशनल हार्स ब्रीडिंग एण्ड शो सोसाइटी ऑफ इण्डिया देहलीके आजीवन सदस्य हैं। आप सार्वजनिक कार्य्योंमें बहुत अच्छा भाग लेते हैं। आपके विद्याप्रेमका नमूना सुराणा पुस्तकालय है। इस पुस्तकालयमें करीब २६०० सौ हस्तलिखित पुस्तकें हैं। और भी कई आश्चर्यजनक वस्तुएं इसमें संगृहीत की गई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Surana—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका तथा छातेके सामानका इम्पोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां छातोंकी बिक्री होती है। नं० ५२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छातेका बहुत बड़ा कारखाना है। इसमें करीब ३०० दर्जन छाते रोज तैय्यार होते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द सोहनलाल—२, [illegible] लेन—यहां भी छातेका एक कारखाना है।

कलकत्तेके छातेके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।
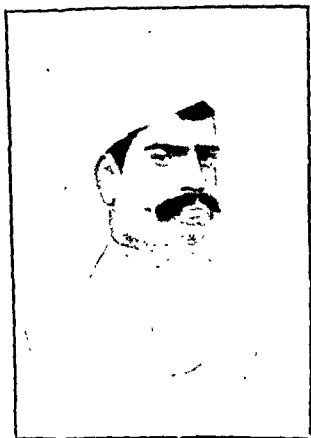
स्व॰ बाबू जगन्नाथजी बाजोरिया (शिवदयाल जगन्नाथ)

स्व॰ बाबू कृष्णलालजी बाजोरिया (शिवदयाल जगन्नाथ)

बाबू हरीबख्शजी भगत (हरीबख्श गोपीराम)

बाबू नारायणदासजी बाजोरिया बी॰ ए॰
(शिवदयाल जगन्नाथ)

चपड़ेके व्यापारी

मेसर्स हीरालाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मिर्जापुर (यू० पी०) है। आप अग्रवाल वैश्य-जातिके हैं। इसफर्मका स्थापन करीब ३०।३२ वर्षों पूर्व हीरालालजी अग्रवालके हाथोंसे हुआ था। कलकत्तेके चपड़ेके व्यवसाइयोंमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। सन् १९८४ से आपके यहां जूटके एक्सपोर्टका काम भी होने लगा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० वंशीधरजी एवं बा० हीरालालजीके पुत्र बा० जवाहरलालजी बा० गणेशप्रसादजी हैं वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हीरालाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी ४ मिशन रो T. A. Shellac यहां चपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। मिर्जापुर, मानभूमि, दुमका, पकोड़ आदि स्थानोंपर चपड़ेकी खरीद होती है। एवं आपकी आढ़तमें बिकनेके लिये भी यहांसे आता है। इसके अलावा जूट बेलिंग और शीपिंगका काम होता है।

कलकत्ता (आलमबाजार) बारानगर – हीरालाल अग्रवाला कं० – यहां आपका चपड़ेका कारखाना है।

पकोड़ (संथालपरगना) मेसर्स वंशीधर जवाहरलाल—यहां चपड़ेकी खरीदी होती है।

डाल्टनगंज (पलामू) मेसर्स वंशीधर जवाहरलाल—यहां भी चपड़ेकी खरीदीका काम होता है।

बा० कन्हैयालालजी और बा० बसंतलालजीकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

मिर्जापुर—मेसर्स गोपालदास कन्हैयालाल—यहां चपड़ेका व्यापार तथा बैंकिंगका काम होता है।

बलरामपुर (मानभूमि)—मेसर्स कन्हैयालाल बसंतलाल—यहां चपड़ेका व्यापार तथा अढ़तका काम होता है। तथा चपड़ेका कारखाना है।

मेसर्स भागीरथीराम मदर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मिर्जापुरमें है। आप जायसवाल जातिके सज्जन

मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास

इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए १८।२० वर्ष हुए। कलकत्ता फर्मका संचालन बाबू घनश्यामदासजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—सूरजमल घनश्यामदास ६५ लोअर चितपुर रोड T. A. Peas—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सूरजमल केदारनाथ १५३ अपर सरक्यूलर रोड—यहां आपकी ऑइल मिल है।

सीतापुर (लखनऊ)—सूरजमल घनश्यामदास—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बिस्वान (सीतापुर)—सूरजमल घनश्यामदास " "

मेसर्स हरीबक्श गोपीराम भगत

इस फर्मके मालिक स्व० सेठ बंशीधरजी भगतके छोटे भाई सेठ हरीबक्शजी भगत हैं। आपकी फर्मपर पहिले बंशीधर दुर्गादत्तके नामसे व्यवसाय होता था पर संवत् १९७४ से आपके भाई अलग २ हो गये तबसे आप उपरोक्त नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके भगत सज्जन हैं। आपके पुत्र सेठ गोपीरामजीका शरीरान्त होगया है। आपके पौत्र बा० प्रह्लादरायजी पढ़ रहे हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे देशमें शिवमन्दिर, कुआं, धर्मशाला आदि बनी हुई हैं। वहां आपकी ओरसे सदावर्तका भी प्रबंध है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स हरीबक्श गोपीराम २६ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां आढ़त, बेंकिंग तथा गल्लेका व्यापार होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स हरीबक्श गोपीराम १५ हलशीबगान रोड—यहां आपकी आइल मिल है।

टरी नामक रसायनिक प्रयोगशालाका कंट्राक्ट लिया और उसके लिये भवन निर्माण कराया। इसके बादसे आपने कितनी ही सरकारी इमारतोंके बनानेका कन्ट्राक्ट लिया और सफलतासे कार्य सम्पादन किया। फलतः आप प्रिन्स आफ कन्ट्राक्टर्स कहाने लगे।

आपने कंट्राक्टके काममें आने योग्य लोहेका सामान तैयार करनेके लिये स्टैण्डर्ड रिवेटबोल्ट एण्ड नट वर्क्स नामसे रामकिष्टोपुरमें लोहेका एक कारखाना खोला जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था पर है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—जे० सी० बनर्जी २० स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता—यहां फर्मका हेड आफिस है और सभी प्रकारकी सरकारी और प्रायवेट कंट्राक्टका काम होता है।

स्टैण्डर्ड रिवेट बोल्ट एण्ड नट वर्क्स रामकिष्टोपुर हवड़ा—यहां फर्मका लोहेका कारखाना है। जहां सरकारी विभागका माल बनानेका ठेका है। जहाजी कम्पनियों तथा इतर कन्ट्राक्टोंका काम भी तैयार होता है।

मेसर्स डी० गुप्त एण्ड को०

इस फर्मकी स्थापना डा० द्वारिकानाथ गुप्तने सन् १८४० ई० में कलकत्तेमें की थी। आप कलकत्तेके देशी डाक्टरोंमें प्रथम डाक्टर थे। फलतः ईस्ट इण्डिया कम्पनीने आपको मेडिकल आफीसरके पद पर सन् १८३९ ई० में नियुक्त किया पर स्वतंत्र व्यवसायके प्रेमी नौकरीमें कब लगने वाले थे अतः उसे अस्वीकार कर दिया। इसके कुछ ही दिन बाद आप स्वर्गीय टैगोर परिवारके डाक्टर नियुक्त किये गये। सन् १८४० ई० में आपने विलायती दवाइयोंका प्रथम दवा खाना खोला। सन् १८६२ ई० में आपके स्वर्गवासी हो जाने पर आपके पुत्र बाबू गोपालचंद्र गुप्त, रामचंद्र गुप्त, तथा चन्द्रलाल गुप्त इस फर्मके मालिक हुए। इसके बाद फर्मने अच्छी उन्नति की। फर्मके व्यवसायकी उन्नतिके साथ स्थायी सम्पत्ति भी बना ली।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स डी० गुप्त एण्ड को० ३६१ अपर चितपुर रोड यहां केमिस्ट और ड्रगिस्टका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स—डी० गुप्त एण्ड को० १३ स्टैण्ड रो ईस्ट - यहां दवाईयों और स्टेशनरी तथा कंट्राक्ट आदिका काम होता है।

मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को०

इस फर्मके मालिक इलाहाबादके रहनेवाले हैं। आप सारस्वत ब्राह्मण जातिके सज्जन हैं।

मेसर्स मोतीराम पन्नालाल

इस फर्मकी स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व भिनासर (बीकानेर) निवासी सेठ मोतीराम बांठियाने कलकत्तेमें की थी। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ठ १३५ पर दिया गया है। कलकत्तेमें यह फर्म छातेका व्यापार करती है। छाता तैयार करनेका इसका एक कारखाना भी है। इसका कलकत्तेका पता मेसर्स मोतीराम पन्नालाल ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट है और तारका पता है Rotbyatra छातेके अतिरिक्त यहां हुण्डी चिट्ठीका काम भी होता है।

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

इस फर्मके संस्थापक बा० प्रेमराजजी बांठिया थे। वर्तमानमें इसके व्यवसायका संचालन आपके पौत्र बा० बहादुरमलजी करते हैं। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभाग पृष्ठ १३५ में दिया जा चुका है। इसका कलकत्तेमें आफिस ४ आर्मेनियन स्ट्रीट पर है। तथा तारका पता Chatastick है। यहां छाता तैयार करनेकी फैक्टरी है और कपड़ी छातेका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम होता है।

हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए २८ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ भागीरथी रामजीने की। इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ भागीरथीरामजी और गरीबदासजी हैं। आपको गव्हर्नमेंटकी ओरसे सन् १९२५ में रायबहादुर का खिताब प्राप्त हुआ। है। इसके अतिरिक्त आपने मिरजापुरमें एक हाइ स्कूल खोला है। वह स्कूल बाबूलाल हाइस्कूलके नामसे चल रहा है। इसके अतिरिक्त कलकत्ते और मिर्जापुरकी जायसवाल सभाके आप सभापति हैं इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रा० ब० भागीरथीराम मदर्स १ लालबाजार स्ट्रीट T. No 033 Cal T.A. birbanket—इस दुकानपर कपड़ेका बहुत बड़ा बिकिनेस होता है।

पकौड़—(बंगाल) मेसर्स बसन्तलाल भगवतीप्रसाद—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मिरजापुर—बाबूलाल भागीरथीराम—यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।

बलरामपुर—मेसर्स किशोरदयाल हीरालाल—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

चाईबासा—गरीबदासजी—कपड़ेका व्यापार होता है।

जगदण्टी (बिहार) ,, ,, ,,

मेसर्स जवाहरमल चिमनलाल एण्ड कं०

इस फर्मके दो पार्टनर बाबू चिमनलालजी एवं बाबू जवाहरमलजीके पुत्र बाबू [illegible] तथा गोवर्द्धनदासजी, जगदीप्रसादजी तथा माल्लीरामजी हैं [illegible] व्यापार करते हैं।

इस फर्मका व्यापार इस प्रकार है—

कलकत्ता—जवाहरमल चिमनलाल ३।१ [illegible]—यहां कपड़ेका [illegible] तथा हुण्डीका काम होता है।

कलकत्ता—आसाराम जुहारमल २४ [illegible] स्ट्रीट [illegible]—यहां [illegible] कामकाज होता है।

मिर्जापुर—[illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible]—[illegible] जुहारमल—इन सब फर्मोंपर [illegible] होता है।

स्टीम बिल्डिंग, गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाइंग कम्पनी (पी० एन० जैतली एण्ड को०)

हेड आफिस इलाहाबाद (पी० एन० जैतली एण्ड को०

श्याम बिल्डिंग, गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी । पीः एमः जैनको एण्ड कोः

हेड आफिस इलाहाबाद . पीः एमः जैनको एण्ड कोः

मेसर्स जीवनलाल एण्ड को०

इस फर्ममें पोरबंदर (काठियावाड़) निवासी सेठ जीवनलाल मोतीचंद और अमरेली (काठियावाड़) निवासी सेठ कमानीरामजी हंसराज का साझा है। आप दोनों गुजराती सज्जन हैं। सेठ जीवनलाल मोतीचंदकी प्रेरणासे सेठ कमानीरामजी हंसराज के द्वारा इस फर्मका स्थापन हुआ है। आप ही दोनोंकि बुद्धिमत्ता एवम् व्यापारिक चतुरतासे यह फर्म इतनी उन्नत अवस्थामें पहुंची है। वर्तमानमें भारतके एल्युमिनियमके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है। इसकी भिन्न २ स्थानोंमें कई शाखाएं हैं। इसका कारखाना बेलूरमें क्राउन एल्यूमिनियम वर्कसके नामसे है। इस फर्मके संचालक सरल और उदार प्रकृतिके मेधावी सज्जन हैं। आप गांधीजीके और खद्दरके बड़े भक्त हैं। गरीबोंके प्रति आपके हृदयमें अच्छा स्नेह है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० हे० आ० ४४ इजरास्ट्रीट T. A. Martalumin T. No 8153 Cal यहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा एल्युमिनियमके बर्तनोंका व्यापार होता है। इसका बेलूरमें बहुत बड़ा कारखाना है।

बम्बई—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० कमेगवाल, कालबादेवी रोड T. A. T. No 20169— यहां एल्युमिनियमका व्यापार होता है।

[illegible]—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० ६४ [illegible] स्ट्रीट पोस्ट T. No 1051—

[illegible]—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० [illegible] „ „

[illegible]—मेसर्स जीवनलाल एण्ड [illegible] „ „

[illegible]—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० „ „

[illegible]—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० T No 2115 स्वामी [illegible] स्ट्रीट

मेसर्स भारत एल्यूमीनियम वर्क्स

इस फर्मका मालिक मेसर्स टी० [illegible] एण्ड कम्पनी है। जिसके प्रधान संचालक सेठ फूलचन्द [illegible] और सेठ [illegible] हैं। सेठ फूलचन्द [illegible] और सेठ [illegible] (काठियावाड़) निवासी [illegible] जैन समाजके सज्जन हैं।

सेठ फूलचन्द [illegible] करीब १५ वर्षसे कलकत्तेमें [illegible]

इस फर्मकी स्थापना पं० मुरलीधरजी जेटली तथा आपके पुत्र पं० पुरुषोत्तमलालजी जेटलीने सन् १९२१ में की । इस फर्मका आरम्भमें साधारणतः व्यापार किया गया तथा संस्थापकोंकी व्यवस्थित संचालन योग्यताके परिणाम स्वरूप इस फर्मने अच्छी उन्नति की और आज यह फर्म इलेक्ट्रिक गुड्सका बहुत बड़ा व्यापार करती है ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० मुरलीधरजी जेटली, पं० पुरुषोत्तमलालजी जेटली, पं० नरोत्तमलालजी जेटली, और पं० वैरागीनारायणजी जेटली हैं। पं० मुरलीधरजी जेटलीके एक पुत्र पं० श्याम सुन्दरलालजीका स्वर्गवास हो चुका है । आप सब शिक्षित सज्जन हैं । आप लोग मिलनसार और स्वभावसे शान्त सत्पुरुष हैं । आप लोग सार्वजनिक कार्योंके प्रति भी अच्छा अनुराग रखते हैं । पं० पुरुषोत्तमलालजीके प्रयत्नोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई है । आप हीके कारण इस प्रान्तमें यह फर्म भारतीय फर्मोंमें बहुत ऊंची समझी जाती है ।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० २८ स्ट्राण्ड रोड यहांसे आपकी सब फर्मोंपर इलेक्ट्रिक सामान और हार्डवेअर भेजा जाता है। यहां डायरेक्ट विलायतसे इनका इम्पोर्ट होता है ।

अहमदाबाद—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० १४-१५ केनिंग रोड, तारका पता Jetly, टेलीफोन नं० २५४—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। तथा इलेक्ट्रिक सामान और मैनेजिंग एजंटका काम होता है । यह फर्म यहांकी इलेक्ट्रिक सप्लाईंग कम्पनी की मैनेजिंग एजंट है ।

इलाहाबाद—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० ८ ह्विट रोड, तारका पता Jetly—यहां हार्डवेअर और इलेक्ट्रिक स्टोअर्स सप्लायका काम होता है ।

कानपुर—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० मालरोड, तारका पता Jetly टेलीफोन नं० २२३० यहां इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टिङ्गका काम होता है ।

लखनऊ—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० हजरतगंज, तारका पता Jetly टेलीफोन नं० १३२ यहां इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टिंगका काम होता है । यहां स्टेशन रोड तथा सदरमें इसी नामसे आपकी और फर्में हैं । जहां पेट्रोल एजंसी तथा मोटर एसेसरीजका काम होता है ।

पटना—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० फ्रेजर रोड, तारका पता Jetly टेलीफोन नं० ३१० यहां इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टिंगका काम होता है ।

गोरखपुर—गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी लि०—तारका पता Gesco है टेलीफोन नं० ३४ है इस कम्पनीकी यह फर्म मैनेजिङ्ग एजेन्ट है ।

मेसर्स एफ० एन० गुप्त एण्ड को०

मेसर्स डी० गुप्त एण्ड को० के मालिक बाबू गोपाल चंद्र गुप्तने अपने पुत्र एस० एन० गुप्त को मैन्यूफेक्चरिङ्ग लाइनमें दक्ष कर आपने सन् १९०५ ई० में पेनहोल्डर तैयार करानेके काममें लगाया। और एक फेक्ट्री खोली जिसने अच्छी उन्नति की। फलतः आपने उक्त कारखानेको सन् १९१० में और अधिक बड़ा कर दिया। यह फर्म भारत सरकारको स्टेशनरीके अन्तर्गत पेनहोल्डर, पेन्सिल, आदि सप्लाई करती है। इसके पास इसका सरकारी कंन्ट्राक्ट है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—एफ० एन० गुप्त एण्ड को० एस्प्लेनेड कलकत्ता—यहां पेन होल्डर तथा पेन्सिल आदिके कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स पी. एन. दत्त एण्ड को०

इस फर्मके आदि संस्थापक बाबू एस० एन० दत्त हैं। आप स्वयं कई बार योरोप गये और वहां रहकर कई कारखानोंके सम्बन्धमें अच्छी जानकारी प्राप्त की। आपने स्थानीय बंगाल गेल्वनाइजिङ्ग वर्क्स के नामसे बाल्टी, पानी भरनेके डोल, तथा स्नान करनेके कुण्ड बनानेका एक कारखाना सन् १९०३ ई० में खोला। आपको इस काममें अच्छी सफलता मिली। बर्तनोंकी पालिशके लिये बहुत बड़े परिमाणमें तेजाबकी आवश्यकता होती है अतः सन् १९१२ में आपने बंगाल एसिड मैन्यूफेक्चरिङ्ग कम्पनीकी स्थापना अलूलाडांगामें की।

इस फर्मके पास लन्दनकी यूनियन इलेक्ट्रिक कम्पनी लि० की सोल ऐजेन्सी है। यह फर्म मेसर्स टाटा आइरन एण्ड स्टील कम्पनी लि० की सेलिङ्ग ऐजेन्ट है जिसका माल यह कम्पनी रानिकस्टेबुलमें बेचती है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू एस० एन० दत्त, बाबू बी० बी० दत्त, बाबू पी० एन० दत्त तथा बाबू जी० सी० दत्त हैं। इसफर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स पी० एन० दत्त एण्ड को०—यहां फर्म ३१ हेड आफिस है कंन्ट्राक्टका काम होता है।

बंगाल गेल्वनाइजिङ्ग वर्क्स ४३ मस्जिदबारी स्ट्रीट कलकत्ता—यहां कम्पनीका कारखाना है जहां बाल्टी, डोल आदि बनते हैं।

बंगाल एसिड मैन्यूफेक्चरिङ्ग कम्पनी अलूलाडांगा—यहां तेजाब बनानेका कारखाना है।

लाला रग्घूमलजीने ।। लाख रुपये प्रदानकर इन्द्रप्रस्थ गुरुकुलका स्थापन किया, देहलीके कन्या गुरुकुलको भी आपने १ लाख रुपया प्रदान किया। सन् १९१९ में जब देहलीमें गोली चली थी, उसमें आहत व्यक्तियोंकी यादगारके लिये एक शहीदेहाल बनानेके लिये १ लाख रुपया देनेका तार आपने स्वामी श्रद्धानन्दको दिया था। उस रकममेंसे एक पाटोदी हाउस बिल्डिंग खरीदी गई, जिसमें वर्तमानमें नेशनल हाईस्कूल और यतीमखाना चल रहा है। सन् १९१८ के इन्फ्ल्यूएंजाके समय २५ हजार रुपया आपने यतीमोंकी सहायताके लिये दिया। २५ हजार रुपया के० डी० शास्त्रीको गरीबों का इलाज मुफ्त करनेके लिये समान खरीदनेको दिया। इसी प्रकार कई संस्थाओंको बड़ी २ रकमें बरसोंतक आपने दीं। आपने अपने जीवनमें करीब ४०।५० लाख रुपयोंका भारी दान किया था। आप विधवाओं और विद्यार्थियोंकी मदद करनेमें बड़े उदार थे। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास ५ सितम्बर सन् १९२६ को हुआ। आपने ४ सितम्बर सन् १९२६ को एक विल लिखा, जिसमें २० लाख रुपयोंकी जायदाद दानकी। इसके ट्रस्टी बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला, बाबू देवीप्रसादजी खेतान, बाबू गुरुप्रतापजी पोद्दार (जयनारायण रामचन्द्र) बाबू छाजूरामजी चौधरी एवं लाला दीनानाथजी (लाला रग्घूमलजीके भानजे) नियुक्त किये गये। लालाजीके कोई पुत्र नहीं था अतएव आपने अपनी सम्पत्तिके ४ बराबरके स्वामी बनाये। जिनके नाम (१) धर्मपत्नी लाला रग्घूमलजी, (२) पुत्री लाला रग्घूमलजी (तथा दामाद लाला हंसराजजी गुप्त)(३) और (४)अपने २ भानजे लाला गोरधनदासजी और दीनानाथजी हैं।

वर्तमानमें इस फर्मकी कलकत्ता, बम्बई, कानपुर एवं करांची ब्रांचेजका कार्य संचालन लाला हंसराजजी गुप्त एम०ए०करते हैं एवं देहलीका कार्य्यलाला गोरधनदासजी एवं लाला दीनानाथजी सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिल्ली—मेसर्स माधोराम बुद्धसिंह—(हेड आफिस)लोहेका व्यापार बेङ्किग और जायदादका काम होता है। यहां आपकी फर्म श्यूगर केन मिल्स मेन्युफेक्चरर भी हैं।

कलकत्ता—मेसर्स माधोराम हरदेवदास ६ धरमाहट्टा स्ट्रीट - लोहेका व्यापार और जायदादका काम होता है।

बम्बई—मेसर्स माधोराम रग्घूमल, मम्बादेवी नं० २—लोहेका व्यापार होता है।

करांची—मेसर्स माधोराम हरदेवदास, मेक्लोड रोड—लोहेका व्यापार) जायदाद एवं सराफी लेनदेन का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स जीवनलाल रणजीतमल, हल्सी रोड—लोहेका व्यापार होता है।
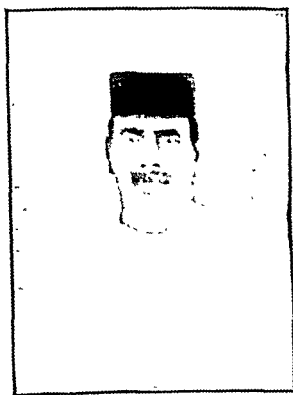
स्व॰ लाला रघूमलजी (माधोराम हरदेवदास)

सेठ जीवनलाल मोतीचंद (जीवनलाल एण्ड कं॰)

सेठ फूलचन्दजी पुरषोत्तम डोंगी
(भारत अल्युमिनियम वर्क्स)

सेठ रामजी हंसराज (जीवनलाल एण्ड कं॰

रंग

रंग

भारतमें रंगका व्यवहार बहुत पुराना है। यहां अच्छे २ रंग तैयार होते थे। यहांकी मनमोहक रंगाई और छपाई पर सारा संसार लट्टू था। पर आज वही भारत विदेशी रंगकी बिक्रीका प्रधान अड्डा माना जाता है। भारतमें उत्पन्न होनेवाले वनस्पति जात रंगोंकी निकासी बिलकुल ही गिर गयी है। विदेशसे आनेवाले रंगके साथ रंगीन सूत और रंगीन कपड़ेकी आमदनी भी बहुत बढ़ गयी है।

विदेशसे आनेवाले रंगके प्रकार तीन होते हैं जैसे अनीलीन [अलकतरेसे बने हुये रंग अलीजेरीन मंजीठसे तैयार किये गये रंग और कृत्रिम नील Synthetic endigo के रंग। भारतमें प्राचीन-युगमें नील, लाख और आलके रंग बहुत प्रसिद्ध थे। इनके बाद हल्दी, कुसुम, हर्रा, बहेड़ा, तथा कितने ही वृक्षोंके फूल,पत्ती और छालसे अच्छे और सुहावने रंग तैयार किये जाने लगे। पर विदेशी सस्ते रंगोंने इनको नष्ट कर दिया। सर्व प्रथम जर्मनीने नवीन कृत्रिम रंगोंका आविष्कार कर भारतमें रंग आरम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतमें नीलके रंगका सर्वनाश हो गया और साथ ही लाख और आलके रंग भी सदाके लिये बैठ गये। इसके बाद ही बेलजियम और फ्रान्सने भारत रंग भेजना आरम्भ किया और आज तो इंगलैंड, अमेरिका, जापान आदिका रंग भी जोरोंसे यहां आता है। भारतसे आज भी नील, त्रिफला, कत्था आदि विदेश जाते हैं और इन्हींको रसायनसे कपड़ा, रंगने और चमड़ा रंगनेके द्रव्य तैयार किये जाते हैं। ये चीजें अधिक परिमाणमें आस्ट्रिया इटली, बेलजियम, जर्मनी, मिश्र और संयुक्तराज्य अमेरिका जाती हैं।

मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम

इस फर्मके मालिकोंमेंसे श्रीयुत प्रतापमलजीका मूल निवासस्थान श्रीडूंगरगढ़ और श्रीयुत गोविन्दरामजीका मूल निवासस्थान बीकानेरमें है। आप दोनों ही ओसवाल जातिके सज्जन

एल्यूमीनियमका व्यवसाय करते थे। इधर २ वर्षसे आपने उक्त फर्मसे अलग होकर भारत एल्यू-मीनियम वर्कके नामसे अपनी फेक्टरी खोली। इस फेक्टरीका माल चांदतारा मार्काके नामसे मशहूर है। तथा सारे भारतमें इस फेक्टरीका बना माल जाता है।

सेठ फूलचंद पुरुषोत्तमको एल्यूमीनियमके व्यवसायकी अच्छी जानकारी है। गोल्ड मोहर मार्काकी जब आपके पास एजंसी थी, तब उसकी आपने अच्छी प्रसिद्धि की थी। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—भारत एल्यूमीनियम वर्क्स ५६।१ कैनिंग स्ट्रीट फोन नं० ५५६५ कलकत्ता तारका पता Remember—यहां एल्यूमीनियम बर्तनोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

कलकत्ता—भारत एल्यूमीनियम वर्कशाप १०।१३ चंडालपाड़ा लेन फोन नं० ३२० हवड़ा—यहां आपकी फेक्टरी है। इसमें चांद तारा मार्का बर्तन बनाये जाते हैं।

राजमहेन्द्री (रंगरेजपेठ)—एल्यूमीनियमका व्यापार होता है।

धातुके व्यापारी

मेसर्स प्रयागदास जमनादास

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू जीवनदासजी बिन्नाणी एवम् बाबू ग्वालदासजी बिन्नाणी हैं आपका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं०१२६में दिया गया है। यहां इसका आफिस ६२ क्लाइवस्ट्रीटमें है। यहां सब प्रकारकी धातुओंका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पुरुषोत्तमदासजी तथा आपके पुत्र बाबू नरसिंहदासजी बिन्नाणी हैं। इस फर्मका विस्तृत सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पृष्ठ १२६में दिया गया है। इसका कलकत्तेका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास ४१ स्ट्राण्डरोड—यहां धातुके स्क्रेप तथा आक्शनका काम होता है। यहां सरकारी तथा रेलवेके कंट्राक्टरोंसे माल खरीद किया जाता है।
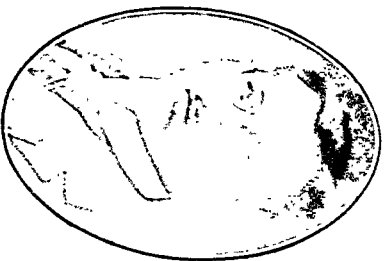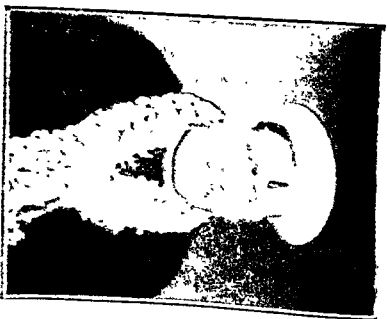
कलकत्ता—मेसर्स लहरचन्द खेमराज, १०८, ओल्ड चीनाबाजार पोस्ट बक्स नं०१५५—यहां मनिहारीकी कमीशन एजंसी और अंग्रेजी दवाइयोंके तय्यार करने और बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स सादलमल पूनमचन्द सोपानी

इस फर्मके मालिक उदरामसर (बीकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब बारह, तेरह वर्ष हुए। इस फर्मके संस्थापक बाबू सादलमलजी हैं। आप बाबू चन्दनमलजीके पुत्र हैं। इस फर्मकी तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई है। आपके इस समय एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स सादलमल पूनमचन्द १०५, ओल्ड चाइना बाजार - इस फर्मपर फूंका, दाना और मनिहारी सामानका जापानसे डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है। और यहांसे दूसरी जगहको चालानी होती है। इसके अतिरिक्त पीसगुड्स और जूटका व्यापार भी यह करते हैं।

चूड़ीके माल और माचीसका भी बहुत बड़ा व्यापार करते थे। पर जब गवर्नमेंटने मैचेज् बनानेके लिये मशीन पर ड्यूटी बढ़ाई तब सेठ एम० एन० मेहताके दिलमें कलकत्तेमें मैचिस फेक्टरी खोलनेका विचार हुआ और आपने जापानसे एक्सपर्ट कारीगर बुलाकर सन १९२५ में बहुत बड़े परिमाणमें माल तयार करनेके लिये कारखाना आरम्भ किया। इस समय आपकी फेक्टरी का माल मद्रास, पंजाब, मध्यप्रांत, करांची, चीन आदि प्रांतोंमें अच्छे परिमाणमें जाता है।

आपको सन १९२७ और २८ में मालकी उत्तम क्वालिटीके लिये दो पूर्निया सिटीमें चार गोल्ड मेडिल्स मिले।

सेठ मेरवानजी नानाभाई मेहताने व्यापारमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति अपने हाथोंसे प्राप्त की सम्पत्ति प्राप्तकर आपने सत्कार्य कार्योंकी ओरसे भी अच्छी रुचि रक्खी, आपने करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति नवसारी, कलकत्ता आदि स्थानोंमें गरीब पारसी भाइयोंकी मदद के लिये एवं विद्यार्थियों के लिये तथा इसी प्रकार और कई सत्कार्योंमें लगाई। जरथोस्तियोंके अवसरके समय काम आनेके लिये आपने अपनी कई बिल्डिंग भेंटकी। आपके दोनोंसे प्रसन्न होकर नामदार गायकवाड़ सरकारने सन् १९१६ में अपने साल गिरहकी खुशीमें आपको "दातार मंडल" नामका सोनेका चांद इनायत किया था। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास ७१ वर्ष की अवस्थामें जुलाई सन् १९२८ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ एम० एन० मेहताके पुत्र सेठ फीरोजशाह मेहता हैं। आप भी योग्य पिताकी योग्य संतान हैं। तथा अपने पिताजीके स्थापित किये हुए व्यापारको भली प्रकारसे संचालित कर रहे हैं। सेठ एम० एन० मेहताने आपको सन १९०८ से ही अपने हाथके नीचे व्यापारिक दीक्षा दी है। १९१४में आप पेढ़ीमें पार्टनर मुकर्रर हुए। आप अपने पिताजीके साथ यूरोप अमेरिका आफ्रिका भ्रमण भी कर आये हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स एम० एन० मेहता ६५ इजरा स्ट्रीट फोन नं० १५३ cal तारका पता Chonglee —यहां बंगड़ी माचिस तथा हायजरीका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

कलकत्ता—एम० एन० मेहता मेच फेक्टरी उल्टाडांगी रोड फोन नं० 1775 B. B. —इस नामसे आपकी मेच फेक्टरी है।

कैंटान (चीन)—मेसर्स एम० एन० मेहता तारका पता Mehta—यहांसे हिन्दुस्थानके लिये बंगड़ीका एक्सपोर्ट होता है।

कोबे (जापान)—मेसर्स एम०एन०मेहता तारका पता Merwanjee—यहांसे चूड़ी,तथा हायजरीका एक्सपोर्ट होता है।

बम्बई—मेसर्स एम० एन० मेहता T. A. Bangles—यहां चूड़ी, हायजरी तथा माचिसका व्यापार होता है।

इंजिनियरिङ्ग वर्क्स नामक दो बड़े कारखाने हैं। इनके पास इस्थमेन स्टीमशिप लाइनकी बंगालके लिये ऐजेन्सी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ३ क्लाइव रो में है। T. A. Anguspence है।

मेसर्स केटल बुलेयन एण्ड को. लि.

इस फर्मके पास २ जूट मिलों, ३ काटन मिलों, २ चाय बगानोंकी मैनेजिंग ऐजेन्सी और ३ बीमा कंपनियोंकी जेनरल ऐजेन्सी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडपर है और तारका पता Ketbullen है।

मेसर्स गिलैन्डर्स अरबुथनाट एण्ड को०

यह फर्म बैंकर्स, जेनरल मर्चेन्ट्स और कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यापार करती है। यह फर्म हुगली जूट मिल्स तथा चंद्रनगर वाले जूट मिलकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इसके अतिरिक्त ६ चायबगान कम्पनियों, ६ कोल कम्पनियों, ७ रेलवे कम्पनियों और १० बीमा कम्पनियोंकी यह फर्म मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं यह फर्म कितनी ही लकड़ी, सीमेन्ट, चूना, रस्सा, कत्था, लोहा ऐन्ड आदिकी कम्पनियोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ८ क्लाइव स्ट्रीटमें है। इसका तारका पता Gillanders.

मेसर्स जार्डिन स्कीनर एण्ड को.

यह फर्म एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट, बीमा कम्पनियों और शिपिङ्ग ऐजेन्सीका व्यवसाय करती है। यह फर्म ४ जूट मिलों, ३ कोल कंपनियों, ८ चाय बगान कंपनियोंकी मैनेजिंग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४ क्लाइव रो में है। इसका तारका पता Jardines है।

मेसर्स जार्ज हेन्डरसन एण्ड को. लि.

यह फर्म आर. एन० हेविड एण्ड को० की मालिक है जिसकी शाखायें नारायणगंज, सिराजगंज, चान्दपुर, मदारीपुर अमृतसर आदिमें हैं। यह फर्म कितनेही चाय बगान कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग एजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १०।११ क्लाइव स्ट्रीटमें है और तारका पता Scotsword. है।

बाबू प्रतापमलजी अगरवाला (प्रतापमल गोविन्दराम)

बाबू गोविन्दरामजी (प्रतापमल गोविन्दराम)

बाबू मादूमलजी मोरानी (मादूमल पूनमचन्द)
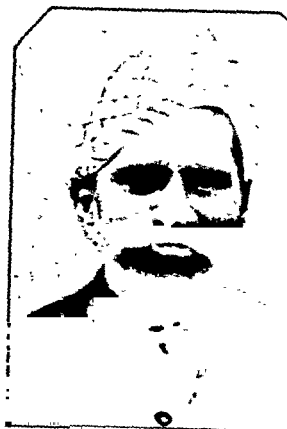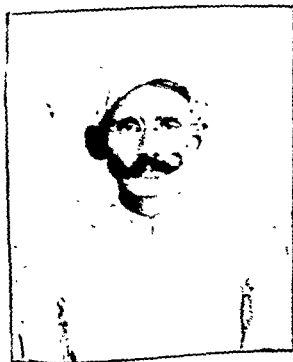
श्री पूनमचन्दजी मोरानी पु० मादूमलजी

४ जूट मिलों, १३ चाय बगान कम्पनियों; ३ बिजली सप्लाइ करनेवाली कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं ४ शक्करके कारखाने, कानपुरका एलगिन मिलस आदि २ कपड़ेकी मिलों, ८ चाय बगान कम्पनियों, २ बीमा कम्पनियों तथा कानपुरकी मशहूर बिजलीकी कम्पनी मेसर्स बेगसदरलैण्डकी ऐजन्ट भी यही फर्म है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है। इसका तारका पता Dunbogg है।

मेसर्स बर्ड एण्ड को०

यह फर्म जूट, गनीका एक्सपोर्ट, बैंकिंग व्यवसाय, तथा बीमा कम्पनियोंका काम करती है। पत्थर, लकड़ी, कोयला, कपड़ा, आदि कितने ही प्रकारके मालका एक्सपोर्ट एण्ड इम्पोर्ट करती है। यह फर्म कुली सप्लाई करनेका काम भी करती है। इसके पास ४ कोल कम्पनियों, ६ जूट मिलों; २ जूट प्रेसों, तथा कितनी ही अन्य प्रकारकी लि० कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी है। तथा ७ बीमा कम्पनियोंकी यह फर्म जेनरल ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग क्लाइव स्ट्रीटमें है तथा तारका पता Popinjay है।

मेसर्स बर्न एण्ड को.

यह फर्म कलकत्ता नगरकी बहुत पुरानी फर्म है। कर्नल आर्ची बाल्ड स्वीनटन नामक किसी योरोपियन सज्जनने सन् १७८१ ई० में इस फर्मका स्थापन किया था। उसके कुछ ही समय बाद फर्मने हवड़ेके पास लोहेका एक बड़ा कारखाना खोला और सभी प्रकारका लोहेका सामान तैयार करने लगी। आज इसका लोहेका कारखाना प्रथम श्रेणीके कारखानोंमें माना जाता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंमें कलकत्तेके सर राजेन्द्र नाथ मुकर्जी केटी०; के०सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ, ही खास कर सीनियर पार्टनर हैं। यह फर्म इण्डियन आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०, इण्डियन स्टैण्डर्ड वैगन कम्पनी लि०, तथा टोरी कोल एण्ड मिनरल्स प्रास्पेक्टिङ्ग कम्पनी लि० की मैनेजिंग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं हवड़ा आयर्न वर्क्स, रानीगंज एण्ड जबलपुर स्टोन वर्क्स, [illegible] फायर ब्रिक वर्क्स, [illegible] सिलिका ब्रिक वर्क्स, दुर्गापुर टाइल वर्क्स, [illegible] ब्रिक [illegible] और [illegible] मार्टिन बर्न एण्ड को० लि० नामक प्रसिद्ध लिमिटेड कम्पनीकी यह फर्म मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इस फर्मका आफिस—[illegible] कौन्सिल हाउस स्ट्रीटमें है और तारका पता Burn है।

गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब २२ साल हुए। इसको स्थापना आ
दोनों ही सज्जनोंने की। आपने अपने ही हाथोंसे इस फर्मकी इतनी उन्नति कर द्रव्य लाभ किया।
आप दोनों ही बड़े सज्जन हैं। श्रीयुत प्रतापमलजीके इस समय चार पुत्र हैं। प्रतापचन्दजीके
एक भाई श्रीयुत मूलचन्दजी हैं। मूलचन्दजीके दो पुत्र हैं। श्रीयुत गोविन्दरामजीके एक पुत्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं :—

फलकत्ता—मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम ११८।१९ खङ्गरापट्टी – इस दुकानपर रंग, कपूर, जीनतान, पीपरमेण्ट और अंग्रेजी दवाओंका होल सेल और रिटेल बिजीनेस होता है। यह फर्म बंगाल आसाम और बिहार उड़ीसाके लिये पीपरमेंट और जीनतानकी सोल एजण्ट है।

फलकत्ता—मेसर्स प्रतापमल मूलचन्द ३९ आर्मेनियन स्ट्रीट—इस दुकानपर कपड़ा वगैरह प्रत्येक वस्तुकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

गौरीपुर धोवड़ी (मैमनसिंह)—मेसर्स प्रतापमल मूलचन्द—इस दुकानपर कपड़ेका व्यापार होता है

फारबिसगंज (पूर्णिया)-मेसर्स हीरालाल भींवराज—इस दुकानपर पाटका व्यापार होता है।

मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया

इस फर्मके मालिक बीकानेर निवासी श्रीभेरूंदानजी सेठियाके सबसे छोटे पुत्र ज्ञानपालजी सेठिया हैं। इस नामसे यह फर्म संवत् १९७९ के सालसे काम कर रही है। इस फर्मके मालिकोंका पूर्ण परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरमें दे चुके हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

फलकत्ता—मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया २, आर्मेनियन स्ट्रीट—इस फर्मपर इस समय रंगका व्यापार तथा किरानेकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स लहरचन्द खेमराज

इस फर्मके प्रोप्राइटर श्रीयुत लहरचन्दजी सेठिया बीकानेर निवासी श्रीयुत भैरूदानजी
...के तृतीय पुत्र हैं। यह फर्म इस नामसे करीब दो वर्षसे स्थापित हुई है। इसके मालिकों
...का परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरके पोर्शनमें दे चुके हैं। इस समय इस
...नीचे लिखा व्यापार होता है।

बाबू हरदयालजीने मथुरा, काशी, रामगढ़ आदि स्थानोंमें धर्मशालाओंका निर्माण कराया है। आपने इस कुटुम्बमें अच्छी ख्याति पैदा की है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सलकिया—मेसर्स ठाकुरदास सुरेका १८२ ओल्ड घुसड़ीरोड—यहां फर्मकी गद्दी है। तथा लोहेके नाले, कड़ाही आदिका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है। आपका कारखाना नं० ८ चंडालपाड़ा लेनमें है।

मेसर्स मोहनलाल खत्री बहादुर

रा० ब० मोहनलालजी वृंदावन से ५०।६० वर्ष पूर्व कलकत्ता आये थे। आप अरोड़ा खत्री समाजके सज्जन हैं। आरम्भमें आपने काटनका व्यवसाय शुरु किया, तत्पश्चात जूटप्रेसका स्थापन किया। इस व्यापारमें सफलता प्राप्तकर आपने सलकियामें जमींदारी संग्रहकी। सन् १९०४में आप अपने भ्राता बा० किशनलालजीसे अलग हुए। आपलोगोंकी ओरसे सलकिया घाट बनवाया गया है। इसी प्रकार आपने वृन्दावनमें भी श्रीसत्यनारायणजीका एक मन्दिर निर्माण करवाया है।

बा० मोहनलालजी हवड़ेके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन होगये हैं। आपको सन् १९०१ में गवर्नमेंटसे रायबहादुरकी पदवी प्राप्त हुई। आप सलकियाके आनरेरीमजिस्ट्रेट थे। आप करीब सन् १९०६ में स्वर्गवासी हुए। आपके कोई संतान नहीं थी, अतएव फर्मका व्यवसाय संचालन आपकी धर्मपत्नी करती हैं। आपका भी धार्मिक कार्मोकी ओर अच्छा लक्ष है। आपने अपने मकानमें श्रीमनमोहनजीका मन्दिर बनवाया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सलकिया (हवड़ा) रायमोहनलाल खत्री बहादुर, किशनलाल बर्म्मन रोड १४ बांधाघाट—यहां जूटबेलिंग और जायदाद का काम होता है फोन नं० ५४ हवड़ा है।

सलकिया—इम्प्रेस आफ इण्डिया जूटप्रेस—ओल्ड घुसड़ीरोड—इस नामसे आपकी एक प्रेसिंगफेक्टरी है इसमें जूटकी पक्की गाठे बांधीजाती हैं।

मेसर्स हरदत्तराय गुलाबराय

इस फर्मके मालिक फतहपुर (जयपुर)के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ६५ वर्ष पूर्व बा० गुलाबरायजीके हाथोंसे बहादरमल हरदत्तरायके नामसे हुआ। बाबू

कुछ विदेशी कम्पनियां

—:*:—

मेसर्स एण्डरसन राइट एण्ड को.

यह फर्म जेनरल मरचेन्ट्स और कमीशन ऐजेन्टके रूपमें काम करती है। यह फर्म स्थानीय जूट मिलोंके अतिरिक्त रनडा कापनी लि०, बोकरो एण्ड रामगढ़ लि०, सेन्ट्रल करकेन्ड कोल कम्पनी लि० गोपालीचक कोल कम्पनी लि०, तथा सकरडीह सेन्डीकेट लि० आदिकी मैनेजिंग ऐजेन्ट है। इसी प्रकार कमर्शियल यूनियन ऐसुरेन्स कम्पनी लि० और नेटाल डायरेक्ट लाइन आफ स्टीमर्सकी एजेन्सी भी इसी फर्मके पास है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २२ स्ट्राण्ड रोड पर है।

मेसर्स एण्ड्रयूयल एण्ड को. लि.

इस विदेशी फर्मका व्यवसाय बहुत विस्तृत है। यह फर्म १० जूट मिलों, १४ चाय बगान कम्पनियों, ३ जहाजी कम्पनियों, २३ कोल कम्पनियों, २ तेलकी मिलों, और १ आटाकी मिलकी मैनेजिङ्ग एजेन्ट है। इसके अतिरिक्त सेन्ट्रल हाइड्रालिक प्रेस कम्पनी लि०, चितपुर गोलाबारी कम्पनी लि०, बंगाल इलेक्ट्रिक लैम्प फैक्ट्री लि०, हुगली प्रिन्टिङ्ग कम्पनी लि०, पोर्ट इंजिनियरिंग वर्क्स लि०, रिलायन्स फाइबरिक एण्ड पाटरी कम्पनी लि०, ऐसोसियेटेड पावर कम्पनी लि० आदि कल कारखानेके क्षेत्रमें काम करनेवाली लगभग २० कम्पनियोंकी यह फर्म डायरेक्टर है। इसी प्रकार २ रबड़ कम्पनियों तथा १० से अधिक बीमा कम्पनियोंका संचालन भी यही फर्म करती है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ८ क्लाइव रो में है। इसका T. A. Unicorn और Yuletide

---

मेसर्स ऐङ्गस कम्पनी लि०

इस फर्मके यहां मैन्यूफैक्चररके रूपमें काम होता है। इसके ऐङ्गस जूट वर्क्स और ऐंगस

मेसर्स डंकन ब्रदर्स एण्ड को० लि०

यह फर्म जेनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्सके रूपमें काम करती है। यह फर्म ऐङ्ग्लो इण्डिया जूट मिल्स कम्पनी लि० के अतिरिक्त अन्य १७ चाय बगान कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट और साथ ही ४ बीमा कम्पनियों और १५ चाय बगानोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १०१ क्लाइव स्ट्रीट में है और तारका पता Duncans. है।

मेसर्स एफ० डब्लू० हेलगर्स एण्ड को०

यह फर्म जेनरल मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन ऐजेन्ट्सके रूपमें काम करती है। इसके यहां ८ कोयला, कागज, तेल आदिका व्यापार होता है। यह फर्म टीटागढ़ पेपर मिल्स, २ जूट मिलों कोल कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है तथा ३ बीमा कम्पनियोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीटमें है तथा तारका पता Helgers. है।

मेसर्स फिनले जेम्स एण्ड को. लि.

इस फर्मका हेड आफिस २२ वेस्ट नाइल स्ट्रीट ग्लासगो (ग्रेट ब्रिटेन) में है। भारतमें इसकी ब्रांचें कलकत्तेके अतिरिक्त बम्बई, करांची, चटगांवमें भी हैं। यह फर्म ३ जूट मिलों, १६ चाय बगान कम्पनियोंके अतिरिक्त मैंगनीजकी खानों, नीलकी कोठियों, शक्करके कारखानों, रेलवे कम्पनियों, जहाजी कम्पनियों और बीमा कंपनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १ क्लाइव स्ट्रीटमें है और तारका पता Mercator है।

मेसर्स बर्क मेयर ब्रदर्स

यह फर्म जूट मैन्यूफेक्चरर्स और मर्चेन्ट्सके रूपमें व्यवसाय करती है। यह रसड़ाके हेस्टिङ्ग मिल्सकी मालिक है तथा स्थानीय रस्सेके कारखानेकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ६ क्लाइव रो में है और तारका पता Birkmygres है

मेसर्स बेग डनलप एण्ड को. लि.

यह फर्म जेनरल मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यवसाय करती है। यह फर्म

व्यापारियोंके पते

—※—

चाय मर्चेन्ट्स और डीलर्स

अकबर अली लुकमानजी एण्ड को० १३ पोलक स्ट्रीट

एशियाटिक ट्रेडिङ्ग कार्पोरेशन लि० १० गवर्नमेन्ट प्लेस

इम्पीरियल टी० सप्लाई एण्ड को० १८ मैङ्गोलेन

ग्रेट ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कम्पनी ३०।१ मोलाराम घोस घाट रोड

जार्ज पेने एण्ड को १ क्लाइव स्ट्रीट

टीन ब्रूक्स एण्ड को० २३ लालबाजार

दिलखुश टी० कम्पनी लि० २२ केनिङ्ग स्ट्रीट

नीलमनी एण्ड संस १३ मनोहरदास चौक

पर्विन एण्ड को० २१ केनिङ्ग स्ट्रीट

बनर्जी एण्ड को० ६ A. डफ लेन

बंगाल ट्रेडर्स लि० ८४।१ बो बाजार

बाम्बे टी० ट्रेडिंग कम्पनी ४४ आर्मेनियन स्ट्रीट

बिड़ला ब्रदर्स १३७ केनिङ्ग स्ट्रीट

ब्रूक बांड एण्ड को० लि० २ मेट्काफ स्ट्रीट

एम० ए० इस्पहानी एण्ड संस ५१ इजरा स्ट्रीट

मित्रा एण्ड को० १० केनिङ्ग स्ट्रीट

एम० ए० हामुन एण्ड सन्स लि० ५४ इजरा स्ट्रीट

यूनिवर्सल ड्रग स्टोर्स ५५ केनिङ्ग स्ट्रीट

राउले डेविस एण्ड को० ८ क्लाइव रो

लिपटन लि० ९ वेस्टन स्ट्रीट

लियान्स लि० ११ वृटिश इण्डियन स्ट्रीट

एस० एम० कुरवू एण्ड सन्स ४६ बेन्टिक स्ट्रीट

सेन मजूमदार एण्ड को० २४ स्ट्राण्ड रोड

एच मित्रा एण्ड को० २३।२४ स्ट्राण्ड रोड

हेल्थ एण्ड को० लि० ३१ ओल्ड चाइना बाजार

हैरीसन्स एण्ड क्रास फील्ड लि० ५ बैंकुस हाल स्ट्रीट

हैरीसन एण्ड ईस्टर्न एक्सपोर्ट लि० ५ बैंकुसहाल स्ट्रीट

चाय बगान मशीनरी बनाने वाले

डेविड सन्स एण्ड को० लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट

ट्रेन्टर्स स्टोर्स एण्ड ऐजेन्सी कम्पनी लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट

मार्शल सन्स एण्ड को० लि० ६० क्लाइव स्ट्रीट

चाय बगीचोंके चाय स्टोर्स

आलेक्जेण्डर यङ्ग (लन्दन) लि०—२७।२ स्ट्राण्ड रोड

सर राजेन्द्रनाथ मुकर्जी केटी; के० सी० आई० ई०; के० सी० वी० ओ; सी० आई० ई० एम० आई० एम० ई। (आनरेरी आजीवन सदस्य) सिविल इंजिनियर। आपका जन्म सन् १८५४ ई० में भवानीपुर (बंगाल) में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय भवानीपुरके मिशन स्कूलमें आरम्भ हुई। आप यहांके प्रसिद्ध प्रेसीडेन्सी कालेजके छात्र थे। व्यवसायिक क्षेत्रमें आपका बहुत बड़ा मान और प्रतिष्ठा है। आपके अनुभवके सम्बन्धमें जो कुछ भी कहा जाय थोड़ा है। आप बर्न एण्ड को० के सीनियर पार्टनर तो हैं ही साथ ही बंगालके प्रसिद्ध बराकरके लोहाके कारखानेकी मालिक दि आयर्न एण्ड को० इंजिनियर्स कन्ट्राक्टर्स एण्ड मर्चेन्ट्सके भी सीनियर पार्टनर हैं। इतना ही नहीं नगरकी कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंके डायरेक्टर भी हैं जिनमेंसे अन्य व्यापार सम्बन्धी कम्पनियोंके अतिरिक्त जूट, कोल और चाय तथा चाय बगीचोंका व्यापार करने वाली कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियां भी हैं।

आपका सार्वजनिक जीवन भी महत्व पूर्ण है। आप इम्पीरियल बैंक आफ इण्डियाके गवर्नर; रोयल कर्रेंसी कमीशनके सदस्य, कलकत्तेके शरीफ, इन्स्टीट्यूट आफ इंजिनियर्स (इण्डिया) के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं। आप इण्डियन इंडस्ट्रियल कमीशनके सदस्य भी रहे हैं। आप कलकत्ता विश्व विद्यालयके फेलो, शिवपुर कालेज आफ इंजिनियरिङ्गकी संचालक समितिके सदस्य, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्सके विजिटर्सके बोर्डके मेम्बर, और कलकत्तेके इण्डियन म्यूजियमके ट्रस्टियोंमें हैं। आपके निवास स्थानका पता ७ हैरिङ्गटन स्ट्रीट कलकत्ता है।

मेसर्स बेरी एण्ड को०

यह फर्म जनरल मरचेन्ट एण्ड कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यापार करती है। यह फर्म लन्दन एण्ड लंकाशायर इन्सुरेन्स कम्पनी लि० और कतिपय अन्य १० चाय बगान कम्पनीकी ऐजन्ट और नदिया मिल्स कम्पनी लि० के समान ३ कारखानोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २ फेयर्ली प्लेसमें है तथा तारका पता Barryco; है।

मेसर्स मार्टीन एण्ड को०

यह फर्म कलकत्तेकी पुराने फर्मोंमें मानी जाती है। यह फर्म यहां इंजिनियर्स, कन्ट्रा-[ct]र्स और मर्चेन्ट्सके रूपमें व्यवसाय करती है। जिस समय रानीगंजके समीप लोहा गलानेका काम [आ]रम्भ करनेके लिये कम्पनी स्थापित की गयी थी उस समय भी यह फर्म अपनी प्रतिष्ठा स्थापित [कर] चुकी थी। सन १८८९ ई० में इसने बराकर (बंगाल) की लोहा गलानेकी फर्मको खरीद कर सारा [का]र्य भार हाथमें लिया और उसे सफल बनानेमें आज यह यशस्वी सिद्ध हुई है। इस फर्मके सीनियर [पार्ट]नर सर राजेन्द्रनाथ मुकर्जी केटी०; के० सी० आई० ई०; के० सी० वी० ओ० हैं और आपके

वामापदघोष एण्ड सन्स १७।४ कनाल वेस्ट रोड
येकर मे०एण्ड को० लि० कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
माणिकलाल पाल एण्ड को० ९२ हरिसन रोड
मेट्रोपालिटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी ३ डेविड जोसेफ लेन
मौलाबक्स एण्ड ब्रदर्स राजमोहन स्ट्रीट

अभ्रकके व्यापारी

इण्डो ट्रेडिङ्ग कम्पनी ११ क्लाइव रो
ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कार्पोरेशन २४८ बड़ाबाजार स्ट्रीट
जे० डी० जोन्स एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीट
डब्लू० एन० कुमार दुर्गाचरण डाक्टर रो
एन० के० सरकार ३।१ बैंकसहाल स्ट्रीट
नइ० एण्ड० समोन्ट एण्ड को० लि० २१ स्ट्रांड रोड
लक्ष्मीनारायण शराफ १८० क्रास स्ट्रीट
सिद्धेश्वर सेन एण्ड को० लि० ३३ केनिङ्ग स्ट्रीट

विलायती कपड़ेके इम्पोर्टर्स

इण्डियन स्टेट्स एण्ड ईस्टर्न ऐजेन्सी ५ टेम्पल चेम्बर
ओरियण्ट एण्ड को० ८६ क्लाइव स्ट्रीट
केशरीमल कुंदनमल ३५ आर्मेनियन स्ट्रीट
के० पाअल एण्ड को० ८१ क्लाइव स्ट्रीट
कहान एण्ड कहान १४ क्लाइव स्ट्रीट
कैलास काटन एण्ड को० लि० मर्केण्टाइल बिल्डिङ्ग लाल बाजार
केनर्स एण्ड को० लि० ८३ ओल्ड चायना बाजार
चंदनमल सिंगमल १७८ हरिसन रोड
जान फ्रस्टो एण्ड सन्स लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० क्लाइव बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीट
जीवनराम गंगाराम एण्ड को० ११३ मनोहरदास चौक बड़ा बाजार
जेम्स टाइलर एण्ड को० लि० ३८ स्ट्रांड रोड
टाटा सन्स लि० १०० क्लाइव स्ट्रीट
तेजपाल वृद्धिचन्द्र ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट
दत्त हरिदास एण्ड को० ६० कोलूटोला स्ट्रीट
धनधनियां एण्ड को० १३६ काटन स्ट्रीट
नरसिंहदास बसन्तलाल ५ बासक स्ट्रीट
पांचीराम नाहटा १७७ हरिसन रोड
फ्रेड्रिक गंवेल एण्ड को० १५ क्लाइव रोड
वेयर एण्ड को०२४ A कार्पोरेशन प्लेस
बींजराज हुकुमचन्द काटन स्ट्रीट
भगवानजी देवकरन ११३ क्रास स्ट्रीट
मालवी मफीजुर्रहमान चौधरी ६६ लोअर चितपुर रोड
रामप्रसाद महादेव १२ चितरंजन एविन्यू (दक्षिण)
शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद ३०।३१।३१-१ बड़तल्ला
स्टेन्स बगी डायर एण्ड को०लि० बैंकसहाल स्ट्रीट
सुमेरमल सुराना ६२ क्लाइव स्ट्रीट
सुन्दरदास टाकर्सी एण्ड को० २ लुकास लेन आर्मेनियन स्ट्रीट
एम० एन० वैसिक १०८ मानिक तल्ला स्ट्रीट
एस० एल० पारवन ब्रदर्स १२ क्लाइव स्ट्रीट
एस० इजरा एण्ड को० ६५ लोअर चीतपुर रोड
लक्ष्मीनारायण हजारीमल २०३।१ हरिसन रोड
हनूमान तुलसीराम ४० आर्मेनियन स्ट्रीट

एन० सी० बनर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट
पूर्णचन्द्र कुण्डू एण्ड सन्स १३६ ओल्ड चाइना बाजार
माल्नेयर लारी एण्ड को० लि० ७१ केनिंग स्ट्रीट
मिमिन्स टीचे एण्ड ऐलेक्स पोई टाई लि०६मैङ्गो लेन
बी० ड्राइडेन एण्ड को०लि०१२ डलहौसी स्क्वायर
भोलानाथदत्त एण्ड सन्स १३४ ओल्डचाइना बाजार
एल० एन० चन्द्र एण्ड को० १४४ राधाबाजार स्ट्रीट

टिम्बर मर्चेन्ट्स

कलकत्ता सिल्वर्स स्टोर्स लि० ६२ बहूबाजार स्ट्रीट
गुरुबगस मिस्त्रस्म ६।१२० स्ट्राण्ड रोड
हेरिसन एण्ड को० लि० ११ हाइड स्ट्रीट
टूमर ब्रदर्स एण्ड को ७ हेयर स्ट्रीट
बर्ड एण्ड को हाइड स्ट्रीट
बंगाल कनर्सियल कम्पनी ६७ हाइड स्ट्रीट
मिडर्स टिम्बर एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी लि० २५ डलहौसी स्क्वायर
एस० के० सरकार एण्ड को० ३५ मोहन बगान रोड
बब० टिम्बर एण्ड को० लि० ८ क्लाइव स्ट्रीट
डब्लू०सी०रांग एण्ड को०लि०१२ लिण्डसे स्ट्रीट

रंगके व्यापारी

के० डी० जेन्स एण्ड को० लि०८ बलाइव स्ट्रीट
जी० सी० दत्ता १ धर्मतल्ला स्ट्रीट
ई० के० स्मिथ एण्ड को० ४ बैंकिट मोमेक लेन
बंगाल पेन्ट एण्ड वार्निश कम्पनी १६ बालीगंज लेन
मानिकलाल पाल एण्ड को० ६२ हरिसन रोड
मुरारका पेन्ट एण्ड वार्निश वर्क्स लि०१३६ केनिंग स्ट्रीट
एस० नगीनदास पारेख ५ पोलक स्ट्रीट

बेंतका फर्नीचर तैयार करनेवाले

टी० ह्यूक्स एण्ड को० २३ लालबाजार
पाचियाक्स एण्ड को० २ लिण्डसे स्ट्रीट
मलायन केन एण्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी २४ राधाबाजार

विज्ञापन बांटनेवाले

इण्डियन पब्लिसिटी सर्विस ३ मैङ्गो लेन
इन्टरनेशनल ऐडवर्टाइजिङ्ग लि० ३।१ बैङ्कसाल स्ट्रीट
कलकत्ता ऐडवर्टाइजिङ्ग ऐजेन्सी १५ कालेज स्क्वायर
कलकत्ता पब्लिसिटी कम्पनी २८ वाटरलू स्ट्रीट
ट्रेड्स ऐडवर्टाइजिङ्ग कम्पनी १३ स्वालो लेन
बंगाल ट्रेडर्स लि० ३७ क्लाइव स्ट्रीट
पब्लिसिटी सोसाइटी इण्डिया लि० वाटरलू स्ट्रीट

फार्वर्डिंग, क्लियरिंग एण्ड शिपिंग ऐजेण्ट

अब्दुल रहीम एम० एन्ड सन्स लि० १५ मार्केट स्ट्रीट
ऐलेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट
ऐंग्लो इण्डिया फीरिंग कम्पनी १०१ क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता लैंडिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी लि०
कासम एण्ड प्रिंस लि० ५ बैंकस हाल स्ट्रीट
फिलिप्स मिस्मन एण्ड को० १०१ क्लाइव स्ट्रीट
ईगल पैसन लि० १० पोल्लोक्स स्ट्रीट

जे० डी० जोन्स एण्ड को० ८ ह्राइव स्ट्रीट
जे० मरे एण्ड को० लि० २१ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट
जे० एम० ब्राउने एण्ड सन्स टालीगंज लेन
जे० डी० वागगम एण्ड को० १४।२ ह्राइव रो
जी० ए० आर्चर्ड एण्ड को० २५ मेंगोलेन
जी० एर्थर्टन एण्ड को० ८ ह्राइव स्ट्रीट
टीकमजी जीवनदास एण्ड को० ५ इजरा स्ट्रीट
त्रिभुवन हीराचन्द एण्ड को० ६ अमरतल्ला स्ट्रीट
डी० सी० नियोगी एण्ड सन्स ६५ ह्राइव स्ट्रीट
डान वाट्सन एण्ड को० ८ लियान्स रेंज
डेवेन पोर्ट एण्ड को० ८।१ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
डेविड सासुन एण्ड को० लि० ४ लियान्स रेंज
डेमेट्रियस ब्रदर्स ५७ राधाबाजार स्ट्रीट
दीनशा एण्ड शोरावजी ८ धर्मतल्ला स्ट्रीट
पारक एण्ड को० ४० केनिंग स्ट्रीट
पैरी एण्ड को० ११ ह्राइव स्ट्रीट
प्लेन्टर्स स्टोर्स एण्ड एजेन्सी को० लि० ११ ह्राइव स्ट्रीट
बाल्मेयर लारी एण्ड को० १०३ ह्राइव स्ट्रीट
बाइरन एण्ड को० ४ चौरंगी रोड
बिदवास एण्ड को० ४ कमर्शियल बिल्डिंग
बिलासीराम टाकुरदास १३१ हरीसन रोड
भूधरनाथ सिनहा एण्ड ब्रदर्स ७१ A ह्राइव स्ट्रीट
एम० एम० भगन एण्ड को० ७२ केनिंग स्ट्रीट
आर० के० मोदी १११ केनिंग स्ट्रीट
मुकुन्दलाल पाल चौधरी एण्ड सन्स ६७,२१ स्ट्रांड रोड
मुकर्जी दत्त एण्ड को० ३१ जेक्सन लेन
मैकुलाड एण्ड को० २८ डलहौसी स्क्वायर
मैकेंजी लियाल एण्ड को० ५ मिशन रो
मोयर्टी ऐण्ड को० ६ मेंगोलेन
मोदी एण्ड को० १८० हरीसन रोड
मोतीलाल गुलगगेलाल ८।१ रूपचन्दराय स्ट्रीट
यूनिवर्सल स्टोर सप्लाई कम्पनी २ अनाथनाथ देव लेन
यूनिवर्सल एजेन्सी १०।१ रसा रोड
एम० रसील शिराजी एण्ड को० १२ मिशन रो
एन० एन० घोष एण्ड को० ७ स्वालो लेन
एन० घोष एण्ड को० ४ कमर्शियल बिल्डिंग
आर० बी० मण्डल एण्ड को० ४० केनिंग स्ट्रीट
रायली ब्रदर्स १, २ चर्च लेन
लियाल मार्शल एण्ड को० २१ मैंगो लेन
वालेस स्टुअर्ट एण्ड को० लि० २१ केनिंग स्ट्रीट
विलियमसन मैगर एण्ड को० ४ मैंगो लेन
सेन० ला० एण्ड को० ५२ ; ५३ वेलस्ली स्ट्रीट
स्टेनली आवस एण्ड को० ६ मैंगो लेन
सी० हार्टमैन एण्ड को० ६७ ह्राइव स्ट्रीट
सेण्ट्रल ट्रेडिंग को० ४२।१ गंगाधर बुलैस लेन
एस० ए० पी० बक्सी एण्ड को० ७१ कोलूटोलास्ट्रीट
एस० अब्दुल सत्तार एण्ड को० ७८ कोलूटोल स्ट्रीट
हाजी अब्दुल अली रजा २२ जकरिया स्ट्रीट
हाजी मोहम्मद इस्माइल मोहम्मद रफी ८० कोलूटोला स्ट्रीट
हर्बर्ट सन्स एण्ड को० ११ ए० राधाबाजार
हर्बर्ट ह्राइट वर्थ लि० २६ स्ट्रांड रोड
होअर मिलर एण्ड को० ५ फेयली प्लेस
हालैण्ड बाम्बे ट्रेडिंग कम्पनी लि० २६ पोलक स्ट्रीट

ऐंगस कीथ एण्ड को० ६८।५ क्लाइव स्ट्रीट
आसाम बंगाल कमर्शियल्स लि० १६४ धर्मतल्ला स्ट्रीट
ईवान्स जोन्स लि० १२ मिशन रो
कमर ब्रदर्स एण्ड को० लि० १५ राजावुडमन्ट स्ट्रीट
गोपालचन्द्रदास एण्ड को० लि० ८६ क्लाइव स्ट्रीट
वाल्मेयर लारी एण्ड को० लि० १०३ क्लाइव स्ट्रीट
बिपिन बिहारी धर २८१ A बहूबाजार स्ट्रीट
मार्शल सन्स कम्पनी लि० ९९ क्लाइव स्ट्रीट
मैक्नेगोर एण्ड बाल्फर लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
राबर्ट मैक्लीन एण्ड को० लि० २३ लाल बाजार
लांगोविका लि० १०२ क्लाइव स्ट्रीट

पत्थरके कोयलेके व्यापरी

आल इण्डिया ट्रेडिङ्ग एण्ड को० लि० ५० बेनि-यापुकुर लेन
इण्डिया कम्पनी लि० १०० क्लाइव स्ट्रीट
करमचन्द थापर एण्ड ब्रदर्स ८ ओल्ड कोर्ट हाउस
कोल बंकरिङ्ग एण्ड शिपिङ्ग को० लि० १८ सेन्ट्रल ऐवेन्यू
रजी अमृतलाल एण्ड को० १३ क्लाइव स्ट्रीट
सी० बनर्जी एण्ड को० २० स्ट्रांड रोड
ल ब्रदर्स लि० ११२ हेयर स्ट्रीट
मारिलन एण्ड को० लि० ६ लियान्स रेंज
एण्ड मुकर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट
बंकर्स लि० १०२ हेयर स्ट्रीट
० बनर्जी एण्ड को० ८१ क्लाइव स्ट्रीट

कलकत्ता

एम० के० खन्ना एण्ड को० लि० ८ ओल्ड कोर्ट हाउस
लायड ब्रोकर एण्ड को० लि० डल्हौसी स्क्वायर
शालिग्राम हरवंशलाल ७१ कैनिङ्ग स्ट्रीट
एस० एम० कुण्डू एण्ड सन्स३० बहूबाजार स्ट्रीट

लोहा फौलादके व्यापारी और इम्पोर्टर्स

आनन्दजी हरिदास एण्ड को० २० दर्माहट्टा स्ट्रीट
जी० सी० बनर्जी एण्ड को० ६७।४ स्ट्राण्ड रोड
जादवराय भानूमल ६४ लोअर चीतपुर रोड
डायना इंजिनियरिङ्ग कम्पनी ३१ क्लाइव स्ट्रीट
ट्रैन्डर्स स्टोर्स ऐजेन्सी कम्पनी लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
सन्तोषकुमार मल्लिक २१ दर्माहट्टा स्ट्रीट

लोहा गलाने और ढालनेवाले

मार्शल सन्स एण्ड को० लि० ९९ क्लाइव स्ट्रीट
ऐंगस इंजिनियरिङ्ग वर्क्स कलकत्ता

छाता बनाने और इम्पोर्ट करनेवाले

पावल एण्ड को०१३०।१६१ओल्ड चाइना बाजार
पूर्णचन्द्र बानक ४० कैनिङ्ग स्ट्रीट
एम० एल० दे एण्ड को० २३ हरिसन रोड
एस० सी० बनर्जी एण्ड ब्रदर्स ९२-२।४ हरिसन रोड

आइल मर्चेन्ट्स एण्ड डीलर्स

अटलस ट्रेडिङ्ग कम्पनी २४ जोड़ाबगान
ए० के० आदित्य ८।२ हेस्टिङ्ग स्ट्रीट
वाल्मेयर लारी एण्ड को० लि० १०३ क्लाइव स्ट्रीट
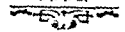
हीरालाल हजारीमल १४८ काटन स्ट्रीट

हर्बर्ट हाइट वर्थ लि० २३ स्ट्रांड रोड

काटन मिलोंक ऐजेन्ट

अब्दुला भाई जुमा भाई लालजी ५५ केनिंग स्ट्रीट

ऐलेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट

ऐण्ड्रू यूल एण्ड को० लि० क्लाइव रो

डी० बी० मेहता ५५ केनिंग स्ट्रीट

म्योर मिल्स लि० २५ चौरंगी रोड

हरिवल्लभदास एण्ड को० ७ आगा कर्बला मोहम्मद स्ट्रीट

एफ० डब्लू० हेलगियर्स एण्ड को० चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगस क्लाइव स्ट्रीट

ग्रेन एण्ड ग्रेन सीड्स मर्चेन्ट्स

अटलस इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कम्पनी २३ केनिङ्ग स्ट्रीट

इण्डियन ग्रेन स्टोर्स १५ A जस्टिस रमेशचन्द्र रोड भवानीपुर

कोसन टेली ब्रदर्स ७ मिशन रो

ग्रेन सप्लाइङ्ग कम्पनी २,५,६,४३,४४,४५ मोती-सील स्ट्रीट

जोहार एण्ड सन्स ८२ कोलूटोला स्ट्रीट

एन० सी० बनर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट

देकर ग्रे एण्ड को० लि० हांगकांग हाउस कौन्सिल हाउस स्ट्रीट

पेलेंडियम एण्ड को० ८८३ पेलेंडियम रोड हवड़ा

आर० एस० हार्ट ब्रदर्स डोवर लेन

रेली ब्रदर्स १२ चर्च लेन

राइस मर्चेन्ट्स

एल्मॉन्स अराकान राइस एण्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० ३६ डालहौसी स्कायर

ऐडी० एण्ड को० ७८ बेल्ला रोड अलीपुर

के० डी० मुकर्जी एण्ड को० ८६ क्लाइव स्ट्रीट

बी० डी० सम्पत ४ मल्लिक स्ट्रीट

आर० गंगाधर एण्ड को० लि० मन्क्स लेन

शीशेके व्यापारी

अमेरिकन फ्रेमिङ्ग कम्पनी २८ फ्री स्कूल स्ट्रीट

ईस्ट इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी ८।२ हेस्टिंग स्ट्रीट

कलकत्ता ग्लास ट्रेडिंग कम्पनी ४ रोयल एक्सचेन्ज प्लेस

कुंजबिहारी चन्द्र एण्ड सन्स १०।१ स्वालो लेन

डायना इंजिनियरिंग कम्पनी २१ क्लाइव स्ट्रीट

नारायणचन्द्र दे २ स्वालो लेन

फणीन्द्रनाथपाल ११।१२ केनिंग स्ट्रीट

फटिकलाल सील एण्ड सन्स ५२ A स्वालो लेन

बनर्जी ब्रदर्स १०१-१०२ अहिरी टोला स्ट्रीट

मारिस जार्ज एण्ड सन्स ५२ A डायमन हार्बर रोड

राय बनर्जी एण्ड को० १८८ लोअरचीतपुर रोड

सीतानाथ ला एण्ड को० ७ स्वालो लेन।

पेपर मर्चेन्ट्स

कलकत्ता पेपर ट्रेडिंग कम्पनी १३३ केनिंग स्ट्रीट

जान डिकिन्सन एण्ड को० लि० पोस्ट बाक्स ४५

जे० एन० चटर्जी एण्ड को० ६२ B बाघाबाजार स्ट्रीट

जे० बी० ऐर्नाल्ड एण्ड को० कलकत्ता

डा० मल्लिक एण्ड को ९७ ओल्ड चाइना बाजार

थामस कुक एण्ड सन्स लि० ६ ओल्ड कोर्ट
हाउस स्ट्रीट
निपन यूसेन कैशा २, ३ क्लाइव रो
थयसाक लैंडिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी लि०
२६ A क्लाइव स्ट्रीट
थालमेयर लारी एण्ड को०लि० १०३ क्लाइवस्ट्रीट
एस० एम० कुण्डू एण्ड सन्स १०।११ स्प्लेनेड ईस्ट
भीकमदास रावजी सन्स १४ बंदर रोड
केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट ।
ऐलेक्स एस० एण्ड सन्स—१२ नाथ पार्क स्ट्रीट
ऐलेन एण्ड हैनवरीज लि०—क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता केमिकल कम्पनी लि०—बालीगंज
कल्पतरु फार्मेसी—चितरंजन ऐविन्यू
कमला फार्मेसी—६ नकुल डांगामेन रोड
डी० गुप्त एण्ड को० २६६ अपर चीतपुर रोड
दास डन एण्डको०—५६।४ में स्ट्रीट
नगेन्द्रनाथ सेन एण्ड को० लि०—१८।१-१६
लोअर चीतपुररोड
एन० भट्टाचार्य्य एण्ड को०—१६ बांनफील्ड लेन
थटो कृष्टोपाल एण्ड को०—बानफील्ड लेन
थर्मन फार्मेसी—१६६ बो बाजार स्ट्रीट
बंगाल केमिकल एण्ड फर्मेस्यूटिकल वर्क्स—१५
कौलेज स्क्वायर
मेडिकल सप्लाई ऐसोसियेशन—२८।६ मुलिया स्ट्रीट
स्टैण्डर्ड ड्रग एण्ड केमिकल को० लि० २ रोयल
एक्सचेंज प्लेस
जेनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स
अल्फ्रेड हर्बर्ट (इण्डिया) लि०
१३ ब्रिटिश इण्डिया स्ट्रीट

आपकर एण्ड को० ६ स्ट्राण्ड रोड
इलियट एण्ड को० लि० ७ क्लाइव रो
ईविङ्ग एण्ड को० २ रोयल एक्सचेंज प्लेस
एडी एण्ड को० ५ रोयल एक्सचेंज प्लेस
लेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट
ए० बोनर एन्ड को० ९८ क्लाइव स्ट्रीट
ए० टी० गेलु स्पाई लि० ५ हेस्टिंग स्ट्रीट
ई० मेयर एण्ड को० लि० २८ पोलक स्ट्रीट
इम्पोर्ट एण्ड सप्लाई एजेन्सी कम्पनी ८।१ पोलक
स्ट्रीट
इन्टरनेशनल कमर्शियल को० लि० क्लाइव स्ट्रीट
ईशनचंद्र चटर्जी एण्ड सन्स २१ धर्मोहट्टा स्ट्रीट
ईवान जोन्स एण्ड को०नार्टन बिल्डिंग लालबाजार
कबोल्ड एण्ड को० ६, १२ लालबाजार
कहान एण्ड कहान ५ क्लाइव घाट स्ट्रीट
कार्तिक चरणदत्त एण्ड को० १३४ केनिंग स्ट्रीट
क्राफर्ड एण्ड को० लि० ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट
किल बर्न एण्ड को० ४ फेयर्ली प्लेस
किलिक निकसन एण्ड को० १०१ क्लाइव स्ट्रीट
के० जे० बोले एण्ड को० २१ केनिंग स्ट्रीट
के० जे० गजदर २३ केनिंग स्ट्रीट
ग्लेडस्टोन विली एण्ड को०५ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
माहम एण्ड को० ६ क्लाइव स्ट्रीट
गोस्ट बिहारी भूर ३५६ अपरचीतपुर रोड
घोप मित्तर एण्ड को० ३३ एमहर्स्ट स्ट्रीट
घोप दे एण्ड को० ६ बिश्वास नर्सरी लेन
घेल्लियापट्टा
जानकीदास जगन्नाथ ३२ आर्मेनियन स्ट्रीट

चौबीस परगना, बाकरगंज, रंगपुर, फरीदपुर, जेसोर, दिनाजपुर, चटगांव, राजशाही, नदिया, नोआखोली, खुलना, बर्दवान, पबना, मुर्शिदाबाद, हुगली, बोगड़ा, बांकुरा, हवड़ा, मालदा, जलपाईगोड़ी, कलकत्ता, बीरभूमि, दार्जिलिंग, और चटगांव।

औद्योगिक केन्द्र

इस प्रान्तके प्रधान औद्योगिक केन्द्र ये हैं। काशीपुर, मानिकतोला, गार्डनरीच, हवड़ा, भाटपारा, टीटागढ़, बैंधवटी, चाम्पदानी, भद्रेश्वर, सेरामपुर, हालिशहर, नईहटी, कमरहटी, सर्ईद बड़ानगर, दमदम, गरुलिया, बजबज, उत्तरपाड़ा, बाली, खड़गपुर, कचरापाड़ा, सैय्यदपुर आसनसोल, रानीगंज, नारायणगंज, मदारीपुर, चटगांव, मलकारी इत्यादि। इनमेंसे प्रथम ४ तो कलकत्तेके समीपवर्ती उपनगर हैं। उसके पश्चात् १६ मिल केन्द्र हैं। उसके पश्चात् ५ रेलवे केन्द्र हैं। जहां लोहे और कोयलेका भारी काम होता है। अन्तके शेष तीन जूट संग्रह करनेके महान् केन्द्र हैं। चटगांव और मलकारी इस प्रान्तके प्रधान बन्दर हैं। चटगांव, चांदपुर, चौमुहानी सुपारीकी प्रधान मण्डियां हैं।

प्रधान मण्डियां

जूट, चाय, रेशम इत्यादि वस्तुओंकी प्रधान मण्डियोंका वर्णन इस ग्रन्थके प्रारम्भिक भागमें हम कर चुके हैं।

भिन्न २ प्रकारके व्यवसाय करनेवालोंकी संख्या

व्यवसाय	जनसंख्या	व्यवसाय	जनसंख्या
जमीदारी	१३१६३०२	वकील	८७७५६
खाद्यपदार्थके व्यवसायी	२४,३६,८५६	डाक्टर और वैद्य	१७७,३६६
कपड़ेके व्यवसायी	१,८६,९६४	धार्मिकढोंगसे पेट भरनेवाले	३०१०६७६
महाजनी करनेवाले	१,५५,१११	खनिज मजदूर	६७३१२
आमोदप्रमोदकी चीजोंवाले	७३,२२८	रेशमबुनने वाले	१३५७०
खाल और चमड़ेवाले	६६,९०३	कपास कातने और कपड़ा बुननेवाले	५,२३,५०६
फर्नीचर और हार्डवेयरवाले	४७,०६४	जूट कातने और बुननेवाले	४,६३,४१८
जूट वाले	४२०६५	चाय और काफीके मजदूर	२,९२,६१०
दलाल	३०,६३७	मछली मारनेवाले	४,३८,३७३
रासायनिक पदार्थवाले	१५०२१	मछलीबेचनेवाले	४,३४,२४०
धातुवाले	१०६८६	रेलवे और जहाजके कुली	३२२६०

वंगाल

BENGAL.

चौबीस परगना, बाकरगंज, रंगपुर, फरीदपुर, जैसोर, दिनाजपुर, चटगांव, राजशाही, नदिया, नोआखोली, खुलना, बर्दवान, पबना, मुर्शिदाबाद, हुगली, बोगड़ा, बांकुरा, हवड़ा, मालदा, जलपाईगोड़ी, कलकत्ता, बीरभूमि, दार्जिलिंग, और चटगांव।

औद्योगिक केन्द्र

इस प्रान्तके प्रधान औद्योगिक केन्द्र ये हैं। काशीपुर, मानिकतोला, गार्डनरीच, हवड़ा, भातपारा, टीटागढ़, बैंधवटी, चाम्पदानी, भद्रेश्वर, सेरामपुर, हालिशहर, नईहटी, कमारहटी, खर्डह बड़ानगर, दमदम, गहलिया, बजबज, उत्तरपाड़ा, बाली, खड़गपुर, कचरापाड़ा, सैय्यदपुर आसनसोल, रानीगंज, नारायणगंज, मदारीपुर, चटगांव, झलकारी इत्यादि। इनमेंसे प्रथम ४ तो कलकत्तेके समीपवर्ती उपनगर हैं। उसके पश्चात् १६ मिल केन्द्र हैं। उसके पश्चात् ५ रेलवे केन्द्र हैं। जहां लोहे और कोयलेका भारी काम होता है। अन्तके शेष तीन जूट संग्रह करनेके महान् केन्द्र हैं। चटगांव और झलकारी इस प्रान्तके प्रधान बन्दर हैं। चटगांव, चांदपुर, चौमुहानी सुपारीकी प्रधान मण्डियां हैं।

प्रधान मण्डियां

जूट, चाय, रेशम इत्यादि वस्तुओंकी प्रधान मण्डियोंका वर्णन इस ग्रन्थके प्रारम्भिक भागमें हम कर चुके हैं।

निम्न २ प्रकारके व्यवसाय करनेवालोंकी संख्या

व्यवसाय	जनसंख्या	व्यवसाय	जनसंख्या
जमींदारी	१३१६३०२	वकील	८७७५६
खाद्यपदार्थके व्यवसायी	२४,३६,८५६	डाक्टर और वैद्य	१७७,३६६
कपड़ेके व्यवसायी	१,८६,६६४	धार्मिकढोंगसे पेट भरनेवाले	३०१०६७६
महाजनी करनेवाले	१,५५,१११	खनिज मजदूर	६७३१२
आमोदप्रमोदकी चीजोंवाले	७३,२२८	रेशमबुनने वाले	१३५७०
खाल और चमड़ेवाले	६६,६०३	कपास कातने और कपड़ा बुननेवाले	५,२३,५०६
फर्नीचर और हार्डवेयरवाले	४७,०६४	जूट कातने और बुननेवाले	४,६३,४१८
जूट वाले	४२०६५	चाय और काफीसे मजदूर	२,६२,६१०
दलाल	३०,६३७	मछली मारनेवाले	४,३८,२७३
रासायनिक पदार्थवाले	१५०२१	मछलीबेचनेवाले	४,३४,२५०
धातुवाले	१०६८६	रेलवे और जहाजके कुली	३२२६०

मेसर्स घोष एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान संचालक जे० सी० घोष तथा आपके पुत्र डी० सी० घोष और बी० सी० घोष हैं। आप बंगाली सज्जन हैं। यों तो यह फर्म यहां कई वर्षोंसे स्थापित है मगर सन् १९१५ ई० से उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। इसके स्थापक जे० सी० घोष हैं। आपहीके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई।

इस फर्मके मूल स्थापक बाबू जी० सी० घोष थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपही यहां प्रथम भारतीय थे जिन्होंने चायकी खेतीका काम प्रारम्भ किया। चायकी खेतीके विषयमें भारतियोंमें आपका नाम सबसे पहले माना जायगा।

बाबू जे० सी० घोष यहांके नामांकित व्यक्तियोंमेंसे हैं। आप कई चाय बगानके एजेण्ट, प्रोप्राइटर, मैनेजिङ्ग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त कई बैंक और कई संस्थाओंके आप मेम्बर, चेयरमैन एवम डायरेक्टर हैं।

इस फर्मपर निम्नलिखित कार्य होता है —

जलपाई गौड़ी—मेसर्स घोष एण्ड सन्स—T. A. Ghoseson इस फर्मपर बैंकिङ्ग, जोतदारी एवम जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गोपालपुर टी कम्पनीकी मैनेजिङ्ग एजेण्ट, मालहाटी और कादम्बिनी टी गार्डनकी प्रोप्राइटर एवम विजयनगर, सौदामिनी; लक्ष्मीकान्त आदिके मैनेजिंग एजेण्ट हैं।

मेसर्स जीवनदास वृद्धिचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। वहां यह फर्म जूटका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सरदारमलजी, वृद्धिचन्दजी एवम रामलालजी हैं। आप ओसवाल समाजके गोठी सज्जन हैं। यहां इस फर्मपर जमींदारी एवम बैंकिंगका काम होता है। यहां इस फर्मकी बहुत बड़ी जमींदारी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें जूटके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स जेठमल रामकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू फतेचन्दजी कलानी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सवाई रामजी तथा जेठमलजी दोनों भाई थे। यहां आकर आप लोगोंने कपड़ेका व्यापार किया। इसमें अच्छी सफलता रही। आप लोगोंका स्वर्गवास हो गया है।

ग्रामोफोन रेकार्डका कारखाना	... १...४३६	केमिकल्सके कारखाने	... २...१८७५
आर्डिनेन्स फैक्टरीज	... ४...६६५२	कांचके कारखाने	... ४...८४५
रस्सेके कारखाने	... ४...१०८३	लाखका कारखाना	... १...७२५
जनरल इंजिनियरिंग	...११६ ..२०८४०	माचीसके कारखाने	... ११...३१८६
टीन फैक्टरियां	... ८...५३८७	तेलके मिल	... ६२...२७२६
मेटल स्टेम्पिंग	... २...६६६	साबनके कारखाने	... ६...११७६
रेल्वे वर्कशाप	... १७...३५८३२	पेपर मिल्स	... ३...३७४४
जहाजके कारखाने	... १३...१६०८३	खपड़िया नलिया कारखाना- (सूतों मिल)	... ५...४६०
ट्राम्वे वर्क्स	... २...१११६		
लोहे और फोलाद ढालनेके मिल	३...५८६१	सुनारी कारखाने	... ८...१३७३
लेड ढालनेका कारखाना	... १...२७४	सिमंट और चूनेके कारखाने	... ६...१४२८
फ्लोअर मिल्स	... ७ ..१२४५	लकड़ीके मिल	... २...१२१
चर्मके कारखाने	... १२...८५५	पत्थर फैक्टरी	... ४...४१०
चावलके मिल	... १०१...८३८४	टेनेरी फैक्टरी	... ८...७५०
शक्करका कारखाना	... १...१००	काटन जिनिंग और बेलिंग फैक्टरियां	... १०...१८७६
चाय फैक्टरियां	... २०४...१३६६२		
तमाखूके कारखाने	... २...४२३	जूट प्रेस	... १०१...३१६९८

जिले और जनसंख्या

यह प्रान्त शासन व्यवस्थाके दृष्टिसे ५ कमिश्नरियोंमें बंटा हुआ है और ये कमिश्नरियां २८ जिलोंमें विभक्त हैं—जिनका विवरण निम्नाङ्कित है—

कमिश्नरियां

नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या
ढाका	१४८२२ वर्गमील	१,२८,३७,३११
राजशाही	१६०१८ ,,	१,०३,४५,६६४
प्रेसीडेन्सी	१७४०५ ,,	९,४६१,२९५
वर्दवान	१३८५४ ,,	८,०५०,६४०
चटगांव	११,७१० ,,	६०,००,५२४

इन पांच कमिश्नरियोंमें २८ जिले हैं जिनके नाम ये हैं मैमनसिंह, ढाका, त्रिपुरा, मिदनापुर

मेसर्स घोष एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान संचालक जे० सी० घोष तथा आपके पुत्र डी० सी० घोष और ई० सी० घोष हैं। आप बंगाली सज्जन हैं। यों तो यह फर्म यहां कई वर्षोंसे स्थापित है मगर सन् १९१५ ई० से उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। इसके संचालक जे० सी० घोष हैं। आपहींके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई।

इस फर्मके मूल स्थापक बाबू जी० सी० घोष थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपही यहां प्रथम भारतीय थे जिन्होंने चायकी खेतीका काम प्रारम्भ किया। चायकी खेतीके सिलसिलेमें भारतीयोंमें आपका नाम सबसे पहले माना जायगा।

बाबू जे० सी० घोष यहांके नामांकित व्यक्तियोंमेंसे हैं। आप कई चाय बगानके एजेन्ट, प्रोप्राइटर, मैनेजिङ्ग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त कई बैंक और कई संस्थाओंके आप मेम्बर, चेयरमैन एवम डायरेक्टर हैं।

इस फर्मपर निम्नलिखित कार्य होता है —

जलपाई गौड़ी—मेसर्स घोष एण्ड सन्स -T. A. Ghoseson इस फर्मपर बैंकिङ्ग, सौदागरी एवम जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गोपालपुर टी कम्पनीकी मैनेजिङ्ग एजेण्ट, मालहाटी और कादम्बिनी टी गार्डनकी प्रोपाइटर एवम विजयनगर, सौदामिनी; लक्ष्मीकान्त आदिके मैनेजिंग एजेण्ट हैं।

मेसर्स जीवनदास वृद्धिचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। वहां यह फर्म जूटका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सरदारमलजी, वृद्धिचन्दजी एवम रामलालजी हैं। आप ओसवाल समाजके गोठी सज्जन हैं। यहां इस फर्मपर जमींदारी एवम बैंकिंगका काम होता है। यहां इस फर्मकी बहुत बड़ी जमींदारी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें जूटके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स जेठमल रामकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू फतेचन्दजी कलानी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सवाई रामजी तथा जेठमलजी दोनों भाई थे। यहां आकर आप लोगोंने कपड़ेका व्यापार किया। इसमें अच्छी सफलता रही। आप लोगोंका स्वर्गवास हो गया है।

बंगालका सामाजिक जीवन

विचार जगतकी दृष्टिसे देखा जाय तब तो बंगालके सामाजिक जीवनमें कई व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिन्होंने यहांके सामाजिक जीवनमें उलट फेर कर दिया है। इन महानुभावोंमें राजा राममोहनराय, पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि प्रसिद्ध हैं। इन महापुरुषोंकी बदौलत यहांके सामाजिक जीवनमें कई अभिनन्दनीय उलटफेर हुए, और इन्हींका असर है कि आज बंगालमें ब्राह्म समाजके समान उन्नत संस्थाओंका अस्तित्व दिखलाई देता है। फिर भी यदि यहांकी जनसंख्याकी विशालता देखा जाय तो सुधारकी दृष्टिसे बंगालका सामाजिक जीवन अब भी बहुत पिछड़ा हुआ है। अब भी यहां बाल विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, व वैधव्यके करुणाजनक दृश्य भयङ्कर रूपमें अभिनीत होते हुए देखे जाते हैं। खासकर यहांके छोटे ग्रामोंमें तो इस प्रकारके दृश्य बहुत ही दिखलाई देते हैं। जिससे यहांका नारी जीवन बड़ा ही त्रस्त हो रहा है। व्यभिचार भी यहांपर बहुत बढ़ा हुआ है। खासकर वेश्या-वृत्तिपर जीवन यापन करनेवाली नारियोंकी संख्या और दशा यहां पर बहुत ही भयङ्कर है। यहांके छोटे २ गावोंमें सैकड़ोंकी तादादमें ये पाई जाती हैं। कलकत्ता नगरमें भी इस वृत्तिके भयङ्कर दृश्य देखनेको मिलते हैं। छोटी २ गन्दी और अत्यन्त संकीर्ण गलियोंके अन्दर सैकड़ोंकी तादादमें ये वेश्याएं भरी हुई मिलेंगी। जो केवल पेटभर अन्नके बदलेमें व्यभिचारके लिये प्रस्तुत हैं। इस वृत्तिको करते २ इनके नारी स्वभाव-सुलभ स्वाभाविक गुण भी नष्ट हो गये हैं। स्वास्थ्य, सौन्दर्य और सदाचारको ये भारतकी मारी हुई ललनाएं खो चुकी हैं। इनकी भयंकर स्थितिका दृश्य देखकर करुणा चीत्कार उठती है, मनुष्यत्व कांप उठता है। सचमुच बंगालके सामाजिक जीवनके लिये यह भाग बड़ाही कलंकपूर्ण है।

जलपाईगौड़ी

यह स्थान करीब ७० वर्ष पूर्व एक छोटेसे देहातके रूपमें था। सत्तर वर्षसे ही इसकी उन्नतिका इतिहास शुरू होता है। पहले यहां जलपाईके बहुत वृक्ष थे। कहा जाता है कि इन्हीं जलपाईके वृक्षोंकी बदौलत इस शहरका नाम जलपाईगौड़ी पड़ा। आजकल यह स्थान उत्तरी बंगालमें एक ही माना जाता है। गवर्नमेंटकी इन्कमटैक्स रिपोर्टसे मालूम होता है कि इन्कमटैक्सकी आमदनीमें इसका नम्बर कलकत्तेके दूसरे नम्बर पर है। यहांकी बनावट साफ सुथरी एवम लम्बी

स्व० सेठ मोहनलालजी डागा जलपाईगाड़ी
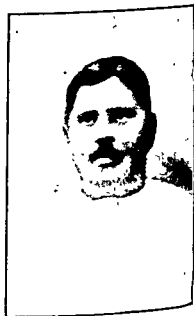
स्व० सेठ रामचन्द्रजी डागा जलपाईगोड़ी

बाबू रामरतनजी डागा जलपाईगाड़ी

बाबू जोगेशचन्द्र घोष जलपाईगोड़ी

बंगालका सामाजिक जीवन

विचार जगतकी दृष्टिसे देखाजाय तब तो बंगालके सामाजिक जीवनमें कई व्यक्तियां ऐसी हुई हैं जिन्होंने यहांके सामाजिक जीवनमें उलट फेर कर दिया है। इन महानुभावोंमें राजा राम-मोहनराय, पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि प्रसिद्ध हैं। इन महापुरुषोंकी वजहसे यहांके सामाजिक जीवनमें कई अभिनन्दनीय उलटफेर हुए, और इन्हींका प्रताप है कि आज बंगालमें ब्रह्म समाजके समान उत्कृष्ट संस्थाओंका अस्तित्व दिखलाई देता है। फिर भी यदि यहांकी जनसंख्याकी निगाहसे देखाजाय तो सुधारकी दृष्टिसे बंगालका सामाजिक जीवन अब भी बहुत पिछड़ा हुआ है। अब भी यहां बाल विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, व वैधव्यके करुणाजनक दृश्य भयङ्कर रूपमें अभिनीत होते हुए देखे जाते हैं। खासकर यहांके छोटे ग्रामोंमें तो इन प्रकारके दृश्य बहुत ही दिखलाई देते हैं। जिससे यहांका नारी जीवन बड़ा ही त्रस्त हो रहा है। व्यभिचार भी यहांपर बहुत बढ़ा हुआ है। खासकर वैश्या-वृत्तिपर जीवन यापन करनेवाली नारियोंकी संख्या और दशा यहां पर बहुत ही भयङ्कर है। यहांके छोटे २ गावोंमें सैकड़ोंकी तादादमें ये पाई जाती हैं। कलकत्ता नगरमें भी इस वृत्तिके भयङ्कर दृश्य देखनेको मिलते हैं। छोटी २ गन्दी और अत्यन्त संकीर्ण गलियोंके अन्दर सैकड़ोंकी तादादमें ये वैश्याएं भरी हुई मिलेंगी। जो केवल पेटभर अन्नके बदलेमें व्यभिचारके लिये प्रस्तुत हैं। इस वृत्तिको करते २ इनके नारी स्वभाव-सुलभ स्वाभाविक गुण भी नष्ट हो गये हैं। स्वास्थ्य, सौन्दर्य और सदाचारको ये भाग्यकी मारी हुई ललनाएं खो चुकी हैं। इनकी भयंकर स्थितिका दृश्य देखकर करुणा चीख उठती है, मनुष्यत्व कांप उठता है। सचमुच बंगालके सामाजिक जीवनके लिये यह बात बड़ीही कलंकपूर्ण है।

— —

जलपाईगौड़ी

यह स्थान करीब ७० वर्ष पूर्व एक छोटेसे देहातके रूपमें था। मगर इतनेमें ही इसकी उन्नतिका इतिहास शुरू होता है। पहले यहां जङ्गलोंमें बहुत झाड़ थे। कहा जाता है कि इसी जङ्गलोंके वृक्षोंकी वजहसे इस स्थानका नाम जलपाईगौड़ी पड़ा। आजकल यह स्थान [illegible] एक ही माना जाता है। [illegible] रेलवे स्टेशनसे मालूम होता है कि [illegible] [illegible]

मेसर्स मनोहरदास गोरखराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खेतड़ी (जयपुर) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ खेमकरणजी एवम मनोहरदासजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ खेमकरणजीके पुत्र बाबू प्रहलादरायजी हैं। आपही दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स मनोहरदास गोरखराम—यहां कपड़ा और जमींदारीका काम होता है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स प्रहलाद राय दुर्गाप्रसाद—यहां इस नामसे गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्यजातिके सिंघाड़ा निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ६० वर्षसे काम कर रही है। इसके स्थापक रामचन्द्रदासजी थे। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः रामेश्वरदासजी, भगवानदासजी एवम डेढ़राजजी हैं। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। तीनोंही सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास—यहां बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है। इसके अतिरिक्त कई टी गार्डनोंके शेयर भी आपके पास हैं।

मेसर्स रतीराम तनसुख राय

इस फर्मके वर्तमान संचालक रतीरामजीके पुत्र बाबू तनसुखरायजी हैं। यह फर्म यहां करीब ४० वर्ष पहले रतीरामजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके ही द्वारा इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। आपने शुरू २ में कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया था जो आज-तक चला आरहा है। बाबू तनसुखरायजी शिक्षित एवम नूतन विचारोंके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स रतीराम तनसुखराय—यहां कपड़ा, टी गार्डनके शेयर, धान, चावल एवम बैंकिङ्गका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रतीराम तनसुखराम—४२, आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां चालानीका काम होता है।

मेसर्स मनोहरदास गोरखमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खेतड़ी (जयपुर) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ खेमकरणजी एवम मनोहरदासजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ खेमकरणजीके पुत्र बाबू प्रहलादरायजी हैं। आपही दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झलपाई गौड़ी—मेसर्स मनोहरदास गोरखमल—यहां कपड़ा और जमींदारीका काम होता है।
झलपाई गौड़ी—मेसर्स प्रहलाद राय दुर्गाप्रसाद—यहां इस नामसे गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्यजातिके सिंघाड़ा निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ६० वर्षसे काम कर रही है। इसके स्थापक रामचन्द्रदासजी थे। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः रामेश्वरदासजी, भगवानदासजी एवम छेदूरामजी हैं। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। तीनोंही सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास—यहां बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है। इसके अतिरिक्त कई टी गार्डनोंके शेयर भी आपके पास हैं।

मेसर्स रतीराम तनसुख राय

इस फर्मके वर्तमान संचालक रतीरामजीके पुत्र बाबू तनसुखरायजी हैं। यह फर्म यहां करीब ४० वर्ष पहले रतीरामजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके ही द्वारा इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। आपने शुरू २ में कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया था जो आज तक चला आरहा है। बाबू तनसुखरायजी शिक्षित एवम नूतन विचारोंके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स रतीराम तनसुखराय—यहां कपड़ा, टी गार्डनके शेअर, धान, चावल एवम बैंकिंगका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रतीराम तनसुखराम—४२, आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां चालानीका काम होता है।

वर्तमानमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, मनीलेंडर और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल बींजराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब जमनाधरजी हैं। आपका हेड आफिस साहबगंज है इस फर्मका विशेष परिचय साहबगंजमें दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, गल्ला और किरानेका व्यापार करती है।

मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा

इस फर्मके मालिक नोहर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके डागा सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आप बहुत साधारण स्थितिमें यहां आये थे। अपनी व्यापार कुशलतासेही आपने यहां अच्छी सम्पत्ति एवम सम्मान प्राप्त किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके दो पुत्र हुए। बाबू रामचन्द्रजी एवम दुलीचन्दजी। रामचन्द्रजीका स्वर्गवास हो गया है। आपके समयमें भी इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू दुलीचन्दजी, रामस्वरूपजी, रामानन्दजी, भगवानदासजी एवम गौरीशंकर जी हैं। दुलीचन्दजीके बाबू बद्रीनाथजी, बन्शीधरजी और सीतारामजी नामक तीन पुत्र हैं।

इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है। बाबू रामदीनजी स्थानीय कई संस्थाओं और टी गार्डनोंके मेम्बर एवम डायरेक्टर हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा T. A. Daga—यहां बैंकिंग, जमींदारी और टी प्रोपरटर्सका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामचन्द्र दुलीचन्द ६२ क्लाइव स्ट्रीट—यहां सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स आर० डी० डागा एण्ड को०—यहां कपड़ा एवम कण्ट्राक्टिंगका काम होता है

शिलीगुड़ी—मेसर्स रामस्वरूप रामानन्द—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

यह फर्म निम्नलिखित टी गार्डनकी एजेण्ट मैनेजिंग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं।

१ सरस्वतीपुर टी गार्डन	४ जादवपुर टी गार्डन
२ फोगेनेशन ,, ,,	५ बंगालडोआर्स ,, ,,
३ कोहीनूर ,, ,,	६ जयन्ती ,, ,,

वर्तमानमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, मनीलेण्डर और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल जीवराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक गनमानन्द जमनादासजी हैं। आपका हेड आफिस मालवगंज है। इस फर्मका विशेष परिचय मालवगंजमें दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, गल्ला और तिलहनका व्यापार करती है।

मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा

इस फर्मके मालिक नौखा (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके डागा सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आप बहुत साधारण स्थितिमें यहां आये थे। अपनी व्यापार कुशलतासेही आपने यहां अच्छी सम्पत्ति एवम सम्मान प्राप्त किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके दो पुत्र हुए। बाबू रामचन्द्रजी एवम दुलीचन्दजी। रामचन्द्रजीका स्वर्गवास हो गया है। आपके समयमें भी इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू दुलीचन्दजी, रामसरूपजी, रामानन्दजी, भगवानदासजी एवम गौरीशंकरजी हैं। दुलीचन्दजीके बाबू बद्रीनाथजी, बन्शीधरजी और सीतारामजी नामक तीन पुत्र हैं।

इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है। बाबू रामदीनजी स्थानीय कई संस्थाओं और टी गार्डनोंके मेम्बर एवम डायरेक्टर हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा T. A. Daga—यहां बैंकिंग, जमींदारी और टी डायरेक्टरीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामचन्द्र दुलीचन्द ९२ क्लाइव स्ट्रीट—यहां सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स आर० डी० डागा एण्ड को०—यहां कपड़ा एवम कण्ट्राक्टिंगका काम होता है

...बाड़ी—मेसर्स रामस्वरूप रामानन्द—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

यह फर्म निम्नलिखित टी गार्डनकी एजेण्ट मैनेजिंग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं।

१ सरस्वतीपुर टी गार्डन
२ कोरोनेशन „ „
३ कोहीनूर „ „
४ जादवपुर टी गार्डन
५ बंगालडोआर्स „ „
६ जयन्ती „ „

" रामरिछपाल लादूराम
" रामनारायण भगवानदास
" रामनारायण रामजसराय
" हजारीमल मंगतूराम

बैंकर्स

आर० जी० बैं० लिमिटेड
इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
इण्डियन कार्पोरेशन बैंक
मेसर्स कालूराम नथमल
जलपाई गोड़ी बैंकिंग एण्ड ट्रेडिंग कार्पोरेशन लिमिटेड
मेसर्स जेठमल केवलचन्द
जोहार्स बैंकिङ्ग एण्ड ट्रेडिंग कार्पोरेशन लिमिटेड
बंगाल डाअर्स बैंक लिमिटेड
मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्
" शिवलाल मामराज

चांदी सोनाके व्यापारी

मेसर्स कालूराम नथमल
" जेठमल केवलचंद
" धनसुखराय मानिकचन्द नाहटा

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स कन्हीराम रामदेव
" रूपचन्द रामप्रसाद
" गोवर्द्धनदास मुरलीधर
" गोविन्दराम गजानंद
" मथुराम जानकीलाल
" पन्नालाल बीजराज
" ब्रन्दावनराय दुर्गाप्रसाद
" हरचंदराय कन्हैयालाल

जूटके व्यापारी

" कुन्दनमल केवलचन्द
मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्
" रायली ब्रादर्स
" लंदन कलार्क
" मिम कम्पनी

टी प्लेंटर्स

आर० के नियोगी
आर० डी० डागा
ए० ई० रहमान
ए० बी० राय
ए० सी० राय
ए० सी० सेन
ए० सन्याल
एस० होर
एम० एल० चक्रवर्ती
एन० बागची
एल० घटक
ए० एम० एल० रहमान

बर्तनके व्यापारी

मेसर्स गोकुलचन्द रिछपाल
" प्रसादीलाल प्रभुदयाल
" रामनारायण भगवानदास
" रामसहाय हजारीमल

लोहेके व्यापारी

" लक्ष्मीनारायण रामकिशन

किरानेके व्यापारी

" परिराम भगवानदास
" जयनारायण गणपत

प्रिंटिंग प्रेस

टूटर्स प्रिंटिंग प्रेस
रायल प्रिंटिंग प्रेस
सरला प्रिंटिंग प्रेस
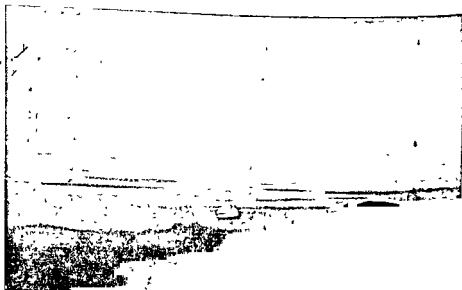
टाइगर हिलसे सूर्योदयका दृश्य—दार्जिलिंग

दार्जिलिंगके मार्गमें रेल्वेका घुमाव

कीमती भाड़ियां एवं पौधे रखे हुए हैं। ये पौधे यहांकी वायुको सहन नहीं कर सकते। इस बगीचे की यह खास दर्शनीय वस्तु है।

विक्टोरिया वाटर फाल—शहरसे करीब पौन मिलकी दूरीपर यह प्रसिद्ध फाल स्थित है। कई सौ फीट ऊपरसे गिरकर देखते २ नीचे गिरने लगता है। इसका सीन बहुत सुन्दर है। प्रकृति-प्रेमियोंके देखने योग्य है।

टाईगर हिल—यह स्थान दार्जिलिंगसे ६ माईलकी दूरी पर स्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्रकी सतहसे करीब ८००० हजार फीट है। यहां जानेके लिये मोटरें मिलती हैं। ट्रेनसे भी घूम नामक स्टेशनसे जा सकते हैं। इस स्थानसे सूर्योदयका दृश्य भारत भरमें सबसे सुन्दर दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त हिमालयकी प्रसिद्ध गगन चुम्बी चोटी माउंट एवरेस्ट दिखाई पड़ती है। इस पर जब बादल घिर जाते हैं तब इसका सीन लाजवाब हो जाता है इसी प्रकारके कई प्राकृतिक सीन यहांसे देखनेको मिलते हैं।

विक्टोरिया पार्क—यह पार्क दार्जिलिंग टाउनके सबसे ऊंचे स्थान पर है। यहांसे दार्जिलिंग हथेलीके समान मालूम होता है। यहांसे एक ओर दार्जिलिंग टाउनका सीन और दूसरी ओर पहाड़ोंकी चोटियोंका दृश्य देखने काबिल है। हवा तो यहां इतनी सुन्दर आती है कि कहना ही क्या? यहां प्रायः अंग्रेज बसते हैं। भारतीय भी यहां हवा खाने आया करते हैं।

इनके अतिरिक्त चौक बाजार, दार्जिलिंग रोडके रेलवेके सीन आदि देखने योग्य हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स खेतसीदास रामलाल

इस फर्मके मालिक श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको दार्जिलिंगमें स्थापित हुए ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना खेतसीदासजी के द्वारा हुई तथा उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आप व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन थे। आपके भाई रामलालजी थे। आप दोनोंका स्वर्गवास होगया। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक खेतसीदासजीके पुत्र गंगारामजी पारिख हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दार्जिलिंग खेतसीदास रामलाल—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कालिम्पोंग—खेतसीदास रामलाल—

कलकत्ता—खेतसीदास रामलाल ५।३ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां गल्ले तथा कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

दार्जिलिंग

—:०:—

यह स्थान समुद्रकी सतहसे करीब ७ हजार फीट ऊंचा हिमालय पहाड़ पर सुन्दर ढंगसे
बना हुआ है। ई० बी० आर० के आखिरी स्टेशन सिलीगोड़ीसे यहां जानेके लिये दार्जिलिंग हिमालयन
रेलवेमें जाना होता है। सिलीगोड़ीसे टैक्सियें भी जाया करती हैं। रास्ता बड़ा टेढ़ा मेढ़ा सुन्दर
एवं हृदयग्राही है। पहाड़ों परसे गिरते हुए जल-प्रपातोंका सुन्दर सीन देखते ही बनता है। यह
स्थान हिल स्टेशन है। गर्मियोंमें यहां कई लोग हवा खाने आया करते हैं। इन्हीं दिनोंमें बंगाल
के गवर्नरका आफिस भी यहां आ जाता है। यहांसे टाइगर हिल पास ही है। जहांसे हिमालयकी
प्रसिद्ध एवरेस्ट चोटी दिखलाई पड़ती है। इसका विवरण आगे दिया जायगा।

व्यापार—यहांका प्रधान व्यापार चाय एवं जंगली पैदावार ही का है। यही वस्तुएं बाहर
जाती हैं। इनमें चाय, आलू और बड़ी इलायची बहुत मशहूर है। यहांसे करीब १ लाख मन आलू
२० हजार मन बड़ी इलायची, २० हजार मन चिरायता, ४ हजार मन मजीठ, २ हजार मन मोम
और इसी प्रकार शहद आदि बाहर जाते हैं। बाहरसे आनेवाले सामान में से यों तो सभी वस्तुएं हैं
मगर इनमें कपड़ा, गल्ला, हार्डवेअर आदि विशेष हैं।

सामाजिक स्थिति— यहांकी पहाड़ी जातियोंकी सामाजिक स्थिति भिन्न है। यहां विशेष
घर सब काम स्त्रियां ही करती हैं। व्यापार वगैरहका काम भी कई स्थलोंपर स्त्रियों पर ही निर्भर
रहता है। यहां के स्त्री पुरुष स्वस्थ और सुन्दर होते हैं। इनमें विवाह शादीके रीति रिवाज बड़े भिन्न
हैं। तलाक प्रथाका यहां जोरोंसे प्रचार है। ये लोग पहाड़ी लोग कहलाते हैं। इनमें भी तेली, लोहार,
खत्री, ब्राह्मण आदि सभी हिन्दू जातियां होती हैं। ये लोग बड़े भोले और सच्चे होते हैं।

दर्शनीय स्थान—एक प्रकारसे देखा जाय तो दार्जिलिंग में कोई ऐसी जगह नहीं जो
देखने योग्य न हो। सारा दार्जिलिंग शहर ही प्रकृतिदेवीका लीला निकेतन बना हुआ है। यहांके
मकान पहाड़ पर इस ढंगसे बने हुए हैं, मालूम होता है एक पर एक खड़े किये गये हों।
यहांके दर्शनीय स्थानोंका कुछ परिचय इस प्रकार है :

फूल बागान—इसका अंग्रेजी नाम बोटानिकल गार्डन है। इसमें संसारके भिन्न २
स्थानोंसे कई प्रकारके पौधे एवं झाड़ मंगवा कर लगाये गये हैं। दर्शकोंकी सुविधाके लिये उन सब
पर नाम लिखा हुआ है। इसी बागानके ठीक बीचमें एक कांचका घर बना हुआ है इसमें बहुत

कलकत्ता—मेसर्स जेठमल भोजराज, ४ दहीहट्टा—यहां बड़ी इलायचीका व्यापार एवं घरकी दुकानों पर माल भेजनेकी चलानीका काम होता है।

मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द

इस फर्मके मालिक रैनी (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके मंत्री सज्जन हैं। आपकी फर्म यहां करीब ५० सालसे व्यवसाय कर रही है। इस फर्मकी स्थापना सेठ लक्ष्मणदासजी तथा पुरुखचन्दजीके हाथोंसे हुई। आप दोनों भाईयोंने शुरु में कपड़ेका व्यापार किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। सेठ लक्ष्मणदासजीके दो पुत्र हुए, रामचन्द्रजी तथा हीरालाल जी। सेठ पुरुखचन्दजीके एक पुत्र हुए बाबू लक्ष्मीचन्दजी। बाबू हीरालालजीका देहान्त हो चुका है।

सेठ लक्ष्मीदासजी व पुरुखचन्दजीके पश्चात् आपके पुत्र इस फर्मका संचालन करते रहे। सन् १६२६ से आप दोनों भाई अपना अलग अलग कारबार करते हैं

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बाबू लक्ष्मीचन्दजी करते हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम बन्सीधरजी कालूरामजी, देवचन्दजी, और केदारनाथजी हैं। इस समय आप सब लोग व्यवसायमें भाग लेते हैं। आप मिलनसार एवम सज्जन हैं।

आपकी ओरसे रैनीमें कुआ और धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कालिमपोंग—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द T. A Purukhchand —यहां हेड आफिस है तथा उन और कपासका व्यापार होता है। यह फर्म तिब्बतके लिये गवर्नमेंट केरिंग कन्ट्राकर है।

दार्जिलिङ्ग—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द T. A Purukhchand —यहां कपड़ा और इलायचीका काम होता है।

कलकत्ता मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द ३० काटन स्ट्रीट T. No.389 B. B. T. A. Anlasta—यहां आढ़तका काम होता है।

सिलीगौड़ी—मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द—यहां जूटका काम होता है।

टीस्टा ब्रिज—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीनारायण—यहां कमीशन एजन्सीका काम होता है।

याटुंग (तिब्बत)—मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द—गवर्मेंट केरिंग कन्ट्राकरका काम होता है

दार्जिलिंग

—:०:—

यह स्थान समुद्रकी सतहसे करीब ७ हजार फीट ऊंचा हिमालय पहाड़ पर सुन्दर ढंगसे बसा हुआ है। इ० बी० आर० के आखिरी स्टेशन सिलीगोड़ीसे यहां जानेके लिये दार्जिलिंग हिमालयन रेलवेमें जाना होता है। सिलीगोड़ीसे टेक्सियें भी जाया करती हैं। रास्ता बड़ा टेढ़ा मेढ़ा सुन्दर एवं हृदयहारी है। पहाड़ों परसे गिरते हुए जल-प्रपातोंका सुन्दर सीन देखने ही बनता है। यह स्थान हिल स्टेशन है। गर्मियोंमें यहां कई लोग हवा खाने आया करते हैं। इन्हीं दिनोंमें बंगाल के गवर्नरका आफिस भी यहां आ जाता है। यहांसे टाईगर हिल पास ही है। जहांसे हिमालयकी प्रसिद्ध एवरेस्ट चोटी दिखलाई पड़ती है। इसका विवरण आगे किया जायगा।

व्यापार—यहांका प्रधान व्यापार चाय एवं जंगली पैदावार ही का है। यही वस्तुएं बाहर जाती हैं। इनमें चाय, आलू और बड़ी इलायची बहुत मशहूर है। यहांसे करीब १ लाख मन आलू २० हजार मन बड़ी इलायची, २० हजार मन चिरायता, ५ हजार मन मजीठ, २ हजार मन मोम और इसी प्रकार शहद आदि बाहर जाते हैं। बाहरसे आनेवाले सामान में वे यों तो सभी वस्तुएं हैं मगर उनमें कपड़ा, गल्ला, हार्डवेअर आदि विशेष हैं।

सामाजिक स्थिति—यहांकी पहाड़ी जातियोंकी सामाजिक स्थिति भिन्न है। यहां विशेष कर सब काम स्त्रियां ही करती हैं। व्यापार वगैरहका काम भी कई स्थलोंपर स्त्रियों पर ही निर्भर रहता है। यहां के स्त्री पुरुष स्वस्थ और सुन्दर होते हैं। इनमें विवाह शादीके रीति रिवाज बड़े भिन्न हैं। तलाक प्रथाका यहां लोगोंमें प्रचार है। ये लोग पहाड़ी लोग कहलाते हैं। इनमें भी तेली, लोहार, क्षत्री, ब्राह्मण आदि सभी हिन्दू जातियां होती हैं। ये लोग बड़े भोले और नम्र होते हैं।

दर्शनीय स्थान—एक प्रकारसे देखा जाय तो दार्जिलिंग में कोई ऐसी जगह नहीं जो देखने योग्य न हो। नगर दार्जिलिंग शहर ही प्रकृतिदेवीका खेल निकेतन बना हुआ है। यहांके मकान पहाड़ पर इस ढंगसे बने हुए हैं, मालूम होता है एक पर एक खड़े किये गये हों। यहांके दर्शनीय स्थानोंका कुछ परिचय इस प्रकार है:

फूल बागान—इसका अंग्रेजी नाम बोटानिकल गार्डन है। इसमें संसारके भिन्न २ स्थानोंके कई प्रकारके पौधे एवं झाड़ झंखाड़ ला लाकर लगाये गये हैं। दर्शकोंकी सुविधाके लिये उन सब पर नाम लिखा हुआ है। इस बगानके ठीक बीचमें एक कांचघर बना हुआ है इसमें बहुत

कपड़ेके व्यापारी

जेठमल भोजराज

दुरुखचन्द लखमीचन्द

दीनाराम वंशीधर

साहीराम ख्यालीराम

गजानंद कालूराम

मालीराम रामेश्वर

हुकुमचन्द हरदयाल

सुखराम श्रीनारायण

हरदयाल केदारनाथ

परसराम लालजीराम

भगवानदास दुलीचन्द

गल्ले और किरानेके व्यापारी

अमरचन्द इसरदास

श्रीकिशनदास कन्हैयालाल

चतुरभुज काशीराम

खेमसीदास रामलाल

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लि० (ब्रांच)

मेसर्स जेठमल भोजराज

हार्डवेयरके व्यापारी

जेठमल भोजराज

मोहनलाल शिवलाल

रामप्रसाद गनेशीलाल

जयलाल नरसिंहदास

हरलाल जगन्नाथ

जनरल मरचेण्ट्स

फ्रांसिस हेरिसन हाथवे एण्ड० को० चौरस्ता

हबीब मल्लिक एण्ड सन्स "

गुलाम महम्मद एण्ड ब्रदर्स "

हाल एण्ड आण्डरसन लि० "

स्मिथ सेनीस्ट्रीट एण्ड को० "

वाड़ो एण्ड फ्लीना "

पायोनियर स्पोर्ट्स, जनरल मरचेंट "

मेयर एण्ड को स्पोर्ट्स डीलर्स "

जयलाल नरसिंहदास माउंट प्लीमेंट रोड

इमामडीन ए० एण्ड सन्स फायर्व

अब्दुल समद एण्ड सन्स

क्यूरियो एण्ड सिल्क मरचेन्ट्स

धनराज परशुराम सिल्क हाउस

शिवसुन्दर एण्ड सन्स क्यूरियो

मास्टर एण्ड को० क्यूरियो

जमनालाल एण्ड सन्स

परशियन सिल्क मार्ट

के हासम एण्ड को०

फोटो ग्राफर्स

प्रिन्स एण्ड को०

एस० एण्ड को० लि०

जान्स एण्ड को०

वेलिंगटन स्टूडियो

दास एण्ड को०

जौहरी

जे योसेफ एण्ड को

पी० सी० बेनर्जी एण्ड को०

रानगी (सिक्कम)—मेसर्स पूरनचन्द लक्ष्मीचन्द P.O.सुकिया पोखरी—गवर्नमेन्टके लिए कन्ट्राक्टका
काम होता है।

गोरखिया (नेपाल) मेसर्स पूरनचन्द लक्ष्मीचन्द—यहां कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास गोगाराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक हरिचन्दरामजी एवं लक्ष्मीरामजी हैं। इनका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। अतएव इनका विशेष परिचय वहीं मेसर्स हरिचन्दराम लक्ष्मीरामके नामसे दिया गया है। यहां इस फर्मपर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स मोहनलाल शिवलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मडुआ (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रिय सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक मोहनलालजी तथा शिवलालजी दोनों भाई थे। आप दोनोंका देहान्त हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोहनलालजीके दत्तक पुत्र लोकरामजी,सेठ शिवलालजीके पुत्र परशुरामजी और पुरुषोत्तमदासजी हैं।

आपकी ओरसे मडुआ नामक स्थानपर धर्मशाला तथा तालाब और दार्जिलिङ्गमें एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दार्जिलिङ्ग—मेसर्स मोहनलाल शिवलाल—यहां हार्डवेअर, कपड़ा व कांचके सामानका व्यापार होता है।

यह फर्म मकान, बिजली आदि का कन्ट्राक्ट भी करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोहनलाल शिवलाल ४८ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल

यहां यह फर्म करीब ७५ वर्षोंसे व्यापार कर रही है। आजकल इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू कन्हैयालालजी और जगन्नाथजी हैं। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म सोना चांदी एवम् किरानेका व्यापार करती है।

दीर बाजारसे दार्जिलिंगका दृश्य

विक्टोरिया फाल दार्जिलिंग
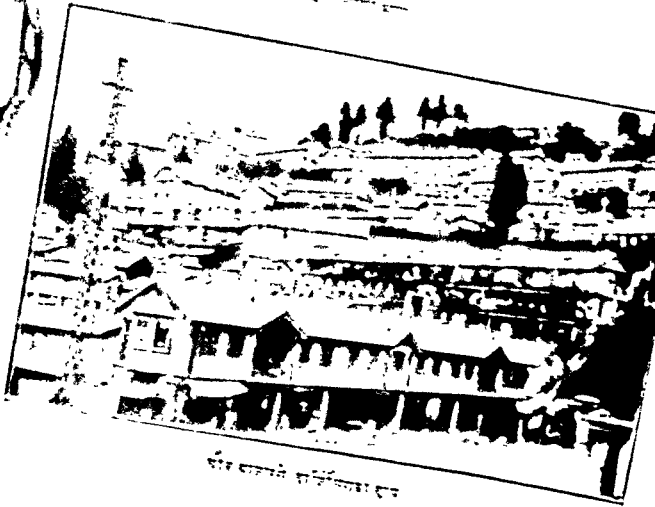
गंगाचढ़ा, बुड़िया हाट आदि स्थानोंमें तमाखू बहुत पैदा होती है। यहांकी तमाखू होती भी बहुत अच्छी क्वालिटीकी है। इसकी मोसिम चैत्र और वैसाख मासमें होती है। तमाखूका तोल ५ मनका एक मन गिना जाता है। यह कालाचंदी तोल कहलाता है। जाति और मोतिहारी तमाखू के तोलमे ६० सेरका मन माना जाता है। यह तमाखू हलकी होती है। यहांसे प्रति वर्ष लाखों रुपयेकी तमाखू बाहर जाती है। इसका भाव कालाचंदी मनसे करीब ६०) के होता है।

इसके अतिरिक्त जूटका व्यापार भी यहां अच्छा होता है साल भरमें करीब ५ लाख मन जूट यहांसे बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त गल्ला, कपड़ा मनीहारी, किराना आदि बाहरसे यहां आकर बिकते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद गोकुलचंद इन्द्रचंद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तामें मेसर्स मोजीराम इन्द्रचन्द नाहटाके नामसे है। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। इसके वर्तमान मालिक बा० पूरणचंदजी एवम बा० रतनचंदजी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके बैंकर्स विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म जमींदारी एवम बैंकिंगका व्यापार करती है।

मेसर्स छोगमल तिलोकचन्द

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान गंगाशहर है। आप ओसवाल जातिके चोपड़ा सज्जन हैं। इस फर्मका हे० आफिस माड़ीगंज रंगपुरमें है। यहां इस फर्मको संवत् १९५० में सेठ पूनमचंदजी तथा विरामलजी चोपड़ाने स्थापित की। आरंभसे ही इस फर्मपर गल्ले तथा पाटका कारबार होता रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक लादूरामजीके पुत्र मंगलचन्दजी, गुमानीरामजीके पुत्र इन्द्रचन्दजी तथा विरामलजीके पुत्र तिलोकचन्दजी हैं। आपका स्व० हो गया है। आपके सुगनचन्द जी नामक एक पुत्र हैं। पूनमचंदजी तथा विरामलजी आजीवन तक मेसर्स मोजीराम इन्द्रचन्द नाहटाके यहां मुनीमातका काम देखते रहे।

बा० छोगमलजी आजकल वकालातका काम काज करते हैं। आप बी० ए० बी० एल० हैं। आप बा० बैजनाथ आद. कामर्सके ज्वाइन्ट सेक्रेटरी हैं। ओसवाल श्वेताम्बर जैन सभा (तेरापंथी) के भी आप सेक्रेटरी हैं।

करसियांग

यह स्थान हिमालय पहाड़ पर समुद्रकी सतहसे करीब ५ हजार फीट ऊंचाई पर बसा हुआ है। सिलीगोड़ी और दार्जिलिङ्गके बीचमें यह स्थान पड़ता है। यह डी० एच रेलवेका बड़ा स्टेशन है। यहां भी लोग हवाखाने आया करते हैं। इसके आस-पास भी बहुतसे प्राकृतिक स्थान देखने योग्य है। यहांका व्यापार चाय आलू और इलायची का है। ये तीनों ही पदार्थ यहांसे हजारों मनकी तादादमें बाहर जाते हैं। बाहरसे प्रायः सभी वस्तुएं आती हैं। जिसमें विशेष कर कपड़ा, गल्ला, तेल, चद्दर, हार्डवेअर आदि हैं। यहां भी बड़े २ व्यापारी निवास करते हैं। उनका परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स खतसीदास रामलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक गंगारामजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म दार्जिलिङ्गमें करीब ५० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय दार्जिलिङ्गके पोर्शनमें दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ले एवं सिगरेटकी एजन्सीका काम करती है।

मेसर्स गोयनका एण्ड को०

इस फर्मके मालिक भिवानी निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके गोयनका सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८९६ से व्यापार कर रही है। इसके स्थापक बाबू पोखरमलजी तथा शिवनारायजी हैं। बाबू शिवनारायणजीका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू नागरचन्दजी गोयनका और पोखरमलजी बगड़िया हैं। इस फर्ममें आप दोनोंका साझा है। बाबू पोखरमलजीके दो पुत्र हैं। बामनचन्दजी तथा लक्ष्मीनारायणजी। बामनचन्दजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करसियांग—मेसर्स पोखरमल शिवनारायण—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। यहां बैंकिंग, कपड़ा और चलानीका काम होता है।

करसियांग—मेसर्स गोयनका एण्ड को० T. A. Barmoilo & Goenka Co.—यहां हार्डवेअर, कपड़ा, मनिहारी आदिका काम होता है यह फर्म बर्माशेल कम्पनीके पेट्रोल और किरासनकी एजेन्ट है।

दार्जिलिंग—पोखरमल शिवनारायण—हार्डवेअर, मनिहारी तथा एजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल

इस फर्मके स्थापक बाबु माणकचन्दजी वेद हैं। आप पड़िहारा (बीकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जैन सम्प्रदायके तेरापंथी सज्जन हैं। आपने ८ वर्ष पहिले इस फर्मकी स्थापना की थी। इस फर्ममें पड़िहारेके भैरोंदानजीका और आपका साझा है। बाबू माणकचन्दजी ही वर्तमानमें इस फर्मका संचालन कर रहे हैं। आपके इन्द्रचन्दजी नामक एक बड़े भाई हैं। जो छावनियांमें अपनी फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल—यहां जूटका काम होता है इसमें आपका साझा है।

कलकत्ता—मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल—१६ सैनागो स्ट्रीट—यहां आढ़त तथा जूटकी चालानीका काम होता।

अखोरा (त्रिपुरा) नरसिंदी (ढाका) और ग्वालंदामें भी इसी नामसे आपका फर्म जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स रामलाल सुगनचन्द

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके चोरड़िया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू सेरमलजी अपने निवासस्थान नागोर (जोधपुर) से करीब ३० वर्ष पहिले यहां आये। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हो गया है। आपके दो पुत्र हैं बाबू सुगनमलजी, तथा बाबु हीरालालजी। आप दोनों भाई इस समय उपरोक्त फर्मका संचालन कर रहे हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—मेसर्स सेरमल सुगनमल चोरड़िया—माहीगंज—यहां गल्लेका तथा जूटका व्यापार होता है।

गायबंदा—सेरमल हीरालाल—यहां गल्लेका काम होता है।

मेसर्स सेरमल सुगनमल

इस फर्मके मुख्य कार्यकर्ता और मालिक चान्दरामजी, सुगनचन्दजी नथमलजी, और सुमेरमलजी हैं। यहां यह फर्म करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें रामचन्द सुमेरमलके नाममे दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ा किराना और सनरल मर्चेंटका काम करती है।

हिमालयकी किंचिनचंगा चोटी (बादलोंसे घिरा हुई) (दार्जिलिंग)
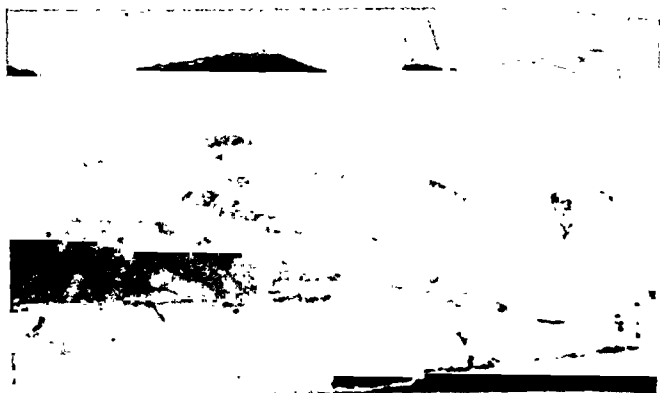
माउंट एवरेस्टका दृश्य टाइगर हिलसे (दार्जिलिंग)

डोमार

यह छोटा ग्राम जूटकी अच्छी मंडी है। देहातवाले डोमारके व्यापारियोंके हाथ जूट बेचते हैं। यहां जूटके अच्छे २ व्यापारियोंकी दुकानें हैं। यहां आसपासके देहातोंमें जूट बहुतायतसे पैदा होता है। प्रधानतया गल्ला तमाखू तथा जूटका व्यापार विशेष रूपसे होता है जिसमेंसे जूट करीब ८ लाख मन और तमाखू करीब १ लाख मन यहांसे बाहर जाती है यहांसे अदरख और चट्टी भी बाहर जाती है। यहांपर गल्ला करीब ४ लाख मन बाहरसे आता है इसके अलावा कपड़ा, किरोसिन तेल आदि वस्तुएं बाहरसे आकर यहां बिकती हैं।

मेसर्स छोगमलजी घींसूलाल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं आपकी फर्म यहां ३५ वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू छोगमलजी हैं। आप व आपके पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मेसर्स छोगमलज घींसूलाल—यहां पाट और गल्लेका काम होता है।

धूत्री—मेसर्स मोहनलाल डूंगरमल—गल्लेका व्यापार होता है।

भोमरादे—(दिनाजपुर) शंकरमल सागरमल—यहां पाटका व्यापार होता है

मेसर्स ताराचंद घींसराज

इस फर्मका हेड आफिस २ राजा उडमांट स्ट्रीट कलकत्तामें हैं। यहां यह फर्म १९६२ से काम कर रही है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म जूट और तमाखूका व्यापार करती है।

मेसर्स घींसराज [illegible]चंद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। यहां यह फर्म जूटकी खरीदीका काम करती है। कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें इसकी अच्छी प्रतिष्ठा है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १४२ पेजमें दिया गया है।

प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १४२ पेजमें दिया गया है।

बैंकर्स

मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल

कपड़ेके व्यापारी

,, तुलसीराम बालचन्द

,, पदमचन्द रामगोपाल

,, पोखरमल शिवनारायण

,, रामजसराय बजरंगलाल

,, शिवबगसदास कालूराम

,, हनुमानदास श्रीमुखराय

गल्ला किरानेके व्यापारी

,, तुलसीराम बालचन्द

,, दुमाराम भरोसीराम

,, पोखरमल शिवनारायण

,, हनुमानदास श्रीमुखराम

जनरल मर्चेण्ट्स

,, गोयनका एण्ड को०

,, दो तारापुर एण्ड को०

,, शेख गुजल हुसैन

टी प्लेन्टर्स

करसियांग दार्जिलिंग टी कम्पनी लिमिटेड

(मैनेजिंग एजण्ट जार्डन कीनर एण्ड को०)

स्प्रिंग साइड टी स्टेट लिमिटेड

(मैनेजिंग एजण्ट जार्डन कीनर एण्ड को०)

केसलटन टी स्टेट लिमिटेड

(मैनेजिंग एजंट वार्लो एण्ड को०)

सिंगल टी कम्पनी लिमिटेड

(मैनेजिंग एजंट हार्मोलर एण्ड को कलकत्ता)

गोइटी व्हेट टी कम्पनी लिमिटेड

(जी० डब्ल्यू० आर० करसियांग मैनेजिंग एजंगट) महालदेराम टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग) सिपाई कोरा टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग)

माटीगाग टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग)

रंगपुर

रंगपुर तीन गांव मिलकर बना हुआ है। महीगंज नवाबगंज, एवम आलम बाजार। इन तीनोंमें करीब २ दो माईलका फासला है। आलम बाजार जूटके लिये, माहीगंज जूट, तमाखू और गल्लेके व्यापारके लिये एवम नवाबगंज साधारन कपड़े वगैरह व्यापारके लिये प्रसिद्ध है। यह स्थान इस्टर्न बंगाल रेल्वेकी छोटी लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनके पास बसा हुआ है। आलम बाजार स्टेशनपर ही है। माहीगंज एवम नवाबगंज २ मीलकी दूरीपर भिन्न दिशामें है। सवारीके लिये मोटर और घोड़ा गाड़ियां मिल जाया करती है।

व्यापार—यहांका प्रधान व्यापार तमाखू एवम जूटका है। इन्हीं दोनोंकी वजहसे यहां की गतिविधि बहुत अच्छी है। यहांके आसपासके देहातोंमें जैसे हरनाथ, हारू, बेंडबाड़ी आदित्य,

मेसर्स हीरालाल रामकुमार

इस फर्मके मालिक बोरसू (जोधपूर) निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्ज... हैं। यह फर्म यहां करीब १० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू हीरालालजी हैं। आप... आपके छोटे भाई रामकुमारजी वर्तमानमें इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मेसर्स हीरालाल रामकुमार—यहां जूटका व्यापार होता है जूटकी मोसिममें आप और भी... स्थानोंमें जूट खरीदते हैं।

जूटके व्यापारी

मेसर्स जी० एन गोसाईं
" ताराचंद बीजराज
" बार्डमेर ब्रादर्स
" बीजराज शोभाचन्द
" रायली ब्रदर्स
रंदन हार्के
" शोभाचन्द मोहनलाल
" सूरजमल महीपाल
" हनुमतमल हरकचन्द
" हीरालाल भैरराम
" हीरालाल रामकुमार

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स हीरालाल पीरूदान
" नथमल रामचन्द्र
" बैजनाथ मदनगोपाल
" भैरोंदान सूरजमल
" मिश्रीमल हरिश्चन्द्र
" रूपचन्द रामलाल

तमाखूके व्यापारी

मेसर्स ताराचंद बीजराज
" रासबिहारी पोद्दार
" लोकनाथ साह
" शशिभूषण साह
" सुखलाल भोमराज
" हनुमतमल हरकचन्द

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स बैजनाथ मदनगोपाल
" लक्ष्मीचन्द दुर्गाप्रसाद
" हरिकिशन बद्रीप्रसाद

लकड़ीके व्यापारी

दी डोमार टिम्बर ट्रेडिंग एण्ड को
परशुराम स्टोन
हरमुख छोटीउद्दीन

चट्टीके व्यापारी

रामचन्द्र बद्रीनारायण
हजारीमल रामचन्द्र

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रंगपुर—([illegible]) मेसर्स टीगमल [illegible]चन्द—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स टीगमल [illegible]चन्द नाम [illegible] [illegible] [illegible] T. A. UdB[illegible]

यहां जूटकी [illegible] कम लेता है।

मेसर्स जेसराज रिधकरण

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रिधकरणजी हैं आप गंगाशहर (बीकानेर) निवा[सी]
ओसवाल जैन सम्प्रदायके नेगवंशी सज्जन हैं। आपके पड़दादा बाबू उम्मेदमलजीने करीब १२९ व[र्ष]
पूर्व इस फर्मकी स्थापना की थी। तबसे यह फर्म बराबर उन्नति करती जा रही है। आपके द्वारा बाबू
जेसराजजीने इस फर्मकी विशेष उन्नति की थी।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—जेसराज रिधकरण—यहां बैंकिंग और जूटका काम होता है।

कांकनिया—जेसराज रिधकरण—जूटका काम होता है।

जूटकी सीजनपर यह फर्म और भी कई जगह जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स नगराज माणिकचन्द

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़के निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं।
करीब २९ वर्ष पूर्व इसकी रंगपुरमें स्थापना हुई। वर्तमानमें नगराजजी इसके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

रंगपुर—मेसर्स नगराज मानिकचन्द माहीगंज—यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स फतेचन्द प्रतापमल सम्पतमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक प्रतापमलजी एवं निर्मलजी हैं। आप ओसवालजातिके
राजलदेसर निवासी सज्जन हैं। कलकत्तेमें यह फर्म ७८ वर्षोंसे काम कर रही है। इसका विशेष
परिचय मेसर्स फतेचन्द चौथमल निर्मलके नामसे [illegible] दिया गया है। यहां इस फर्मपर
पीतल, तांबा और कांसी आदि धातुओंके बर्तनोंका व्यापार होता है।

की। आपके भाई सेठ गुलाबचन्दजी थे। आप दोनों भाइयोंकी मृत्युके पश्चात् आपके चचेरे भाई खूबचन्दजीने इस फर्मके कार्य्यको संचालन किया। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री गुलाबचन्दजीके पुत्र सेठ तोलारामजी तथा खूबचन्दजी के पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी हैं। सेठ तोलारामजीके पुत्र बाबू खेमकरणजी कलकत्तेमें बी० एल० की परीक्षाके लिये अध्ययन कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—खूमचन्द तोलाराम—यहां धान, चावल, बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।
मदारगंज (दिनाजपुर) खूमचन्द तोलाराम—यहां कपड़ा तथा चांदी, सोनाका काम होता है।
पूलहार—(दिनाजपुर) „ „—धान, चावल; सेमलकी रूई (Kapot)का काम होता है।

मेसर्स खेतसीदास चिमनीराम

इस फर्मके मालिक बीकानेर राज्यान्तर्गत नोहर नामक ग्रामके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ भगवानदासजी १०० वर्ष पहले देशसे यहां आये। आपने बर्तन, मसाला, कपड़ा आदिका व्यापार कर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भगवानदासजीके ज्येष्ठ पुत्र चिमनीरामजी हैं।

आपकी ओरसे यहां बाबू बाड़ीमें तथा नोहरमें एक २ धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—मेसर्स खेतसीदास चिमनीराम -यहांपाट धान, चावल और कपड़ेका काम होता है।
रोशीबन्दर (दिनाजपुर) ईसरदास चन्दनमल—यहां सूत और तमाखूका व्यापार होता है।

मेसर्स गुलाबचन्द नेमचन्द इन्द्रचन्द नाहटा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बालूचर (मुर्शिदाबाद) है। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू पूरणचन्दजी एवम बाबू ज्ञानचन्दजी हैं। आजकल आप विलायत निवास करते हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित मेसर्स मौजीराम इन्द्रचन्दके नाममें कलकत्तेके बैंकर्स विभागमें में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग एवम जमींदारीका काम करती है।

गौरांग सेवक ज्वेलर्स

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप बंगाली स्वर्णवणिक जातिके सज्जन हैं।

बा० गौरमनदास बसाक (गौरांग मेडिकल स्टोर्स) दिनाजपुर

बा० तोलारामजी भुतोड़िया (लूमचन्द तोलाराम) दिनाजपुर

बा० [illegible]

बा० कुन्दनमलजी सेठिया (चौथमल कुन्दनमल) दिनाजपुर

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

दिनाजपुर—मेसर्स घोथमल कुंदनमल—यहां पाट, धान और चावलका व्यापार होता है ।

कलकत्ता—सुमेरमल रायचन्द ७।१ वाबूलाल लेन—यहां पाटका और पाटकी आढ़तका काम होता है।

रायगंज (दिनाजपुर) घोथमल कुंदनमल—यहां पाटकी खरीदीका काम होता है ।

मेसर्स जमनदास केदारनाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक राय साहब जमनाधरजी चौधरी हैं । इस फर्मका हेड आफिस साहबगंजमें हैं । अतएव आपका विशेष परिचय मेसर्स पन्नालाल मींमराजके नामसे वहां दिया गया है । यहां यह फर्म आढ़त एवं जूटका व्यापार करती है ।

मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (सीकर) है । आप अग्रवाल जातिके बांसल गोत्रीय सज्जन हैं । इस फर्मको स्थापित हुए चालीस वर्ष हुए । इस फर्मके स्थापक जुहारमलजी देशसे यहां आये और गल्लेका व्यापार शुरू किया । आपने अपनी व्यापार कुशलतासे अपनी फर्मकी तरक्की की । सेठ जुहारमलजीके बाद आपके बड़े भाई हरदेवदासजीने इस फर्मका संचालन किया । आपका देहान्त भी हो चुका है ।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू इन्द्रचन्दजी,बाबू बालचन्दजी, व बाबू शिवप्रसादजी हैं। बाबू इन्द्रचन्दजी इस फर्मका संचालन करते हैं ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

दिनाजपुर—मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द-गल्ला व आढ़तका काम होता

दिनाजपुर—मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द—कपड़ेका काम होता है ।

मेसर्स जेसराज शिवलाल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं । आप महेश्वरी जातिके लोहिया सज्जन हैं । करीब ३६ साल पहिले जेसराजजी व शिवलालजी ने इस फर्मकी स्थापना की । पहिले पहल इस फर्म पर आटा, मेदा किराना, मसाला आदिका व्यापार होता था । इस फर्मके दोनों स्थापक व्यापार दक्ष है । जेसराजजी के दो पुत्र है लालचन्दजी और हरनारायणजी । शिवलालजी के तीन पुत्र हैं, दीपचन्दजी लक्ष्मीनारायणजी और छगनमलजी ।

सैदपुर

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी अपनेही नामकी स्टेशनके समीप बसा हुआ है बंगालके दूसरे शहर अथवा ग्रामोंकी तरह इसमें भी छोटे २ मकान बने हुए हैं।

यह ग्राम छोटा होते हुए भी व्यापारका अच्छा क्षेत्र है। यहां आसपास जूट, सोंठ, तमाखू आदि बहुतायतसे पैदा होती है। यहांसे करीब ५ लाखमन जूट करीब २० हजार मन अदरक करीब ५ हजारमन सोंठ और ५०,६० हजार मन तमाख हरसाल बहर जाती है। और गल्ला, चद्दर कपड़ा आदि वस्तुएं बाहरसे आकर बिकती हैं।

यहांकी सोंठ खानेमें तेज होती है। इसकाभाव साधारणतया ३० रुपये प्रतिमन तथा अदरकका भाव ८) रुपये प्रति मन रहता है।

मेसर्स ख्यालीराम जगन्नाथ

इस फर्मके मालिक धानोटी (बीकानेर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके केडिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ३५ सालसे स्थापित है। इस फर्म के स्थापक बाबू ख्यालीराम जी थे। आपका देहान्त हो चुका है। आपके दो पुत्र बाबू जगन्नाथजी तथा बाबू टिकूरामजी इस समय इस फर्मके मालिक हैं। बाबू जगन्नाथजी सैदपुर कमर्सियल बैंकके डाइरेक्टर हैं। आप मिलनसार हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सैदपुर— (रंगपुर) मेसर्स ख्यालीराम जगन्नाथ—पाट, कपड़ा तथा गल्लेका काम होता है।
बादरगंज (रंगपुर) मेसर्स ख्यालीराम धनराज – यहां पाटका काम होता है।

मेसर्स घेवरचन्द दानचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक दानचन्दजी है आप लाडनूं (जोधपुर) निवासी ओसवाल जातिके चोपड़ा सज्जन हैं। यहां यह फर्म जूटका व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय प्रथम भागके राजपूताना विभागके १३६ पृष्ठ में देखिये।

मेसर्स मुरलीधर बनेचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल जातिके

करसियांग—भगवानराम गोगाराम-यहां चायकी खेतीका काम होता है।
कूचबिहार, दिनाजपुर, करसियांग में इस फर्मकी जमींदारी है

मेसर्स दुलीचन्द नेमचन्द पटावरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोमासा (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके पटावरिया सज्जन हैं। आपकी फर्म यहां पर करीब ६० साल से स्थापित है। इस फर्मके स्थापक सेठ दुलीचन्दजीने पहिले कपड़ेका व्यवसाय प्रारंभ किया। आप ही ने इस फर्मकी तरक्की की

वर्तमानमें इस फर्म के मालिक सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू नेमचन्दजी व बाबू सुगनचन्दजी हैं। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स दुलचन्द नेमचन्द-यहां कपड़ा, सोना, चांदी, टीन पाट आदिका काम होता है।
कलकत्ता मेसर्स केसरीचन्द तोलाराम-२ राजा उडमंट स्ट्रीट-यहां चालानी तथा पाटकी आढ़तका काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

उपरोक्त फर्ममें लाडनू निवासी मूलचन्दजी गिड़िया का साझा है। आप भी ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आप इस फर्मके प्रधान कार्य कर्ताओं में से हैं।

मेसर्स तापचन्द सेठ

इस फर्मके मालिक मालदाके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए १७ वर्ष हुए। बा० कुंजमल पोद्दारने फर्मको स्थापना की। आपहीने इस फर्मको तरक्कीपर पहुंचाया। अभी आपही इस फर्मका संचालन कर रहे हैं। बाबू कुंजमल पोद्दार इस फर्मके मैनेजर हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक प्रतापचन्द सेठ और नंदगोपाल सेठ हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स प्रतापचन्द सेठ—गल्ले और किरानेका व्यापार होता है। यहां इम्पीरियल टोवाको कंपनीकी दिनाजपुर जिलेके लिये सोल एजेन्सी है।
दिनाजपुर—मेसर्स नंदगोपाल सेठ—गल्ला और किरानाका व्यापार होता है।
मालदा—नंदगोपाल सेठ—हेड आफिस है। गल्ला किरानाका काम होता है B. O. C. को किरासिनकी एजेन्सी है। बेंकिंग और जमींदारीका काम होता है।

यह फर्म यहांके अच्छे जमींदारोंमें से है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५ वर्ष हुए। इसके वर्तमान संचालक गोपीनाथदास बड़ाल और गौरचन्द्रदास बड़ाल हैं। आपके पिताजीका नाम विश्वम्भरदास बड़ाल है। आप धार्मिक पुरुष हैं। आजकल अपना जीवन धार्मिकतामें बितानेके लिये वृन्दावन निवास करते हैं।

आपकी ओरसे नवद्वीप (नदिया) में गङ्गाके तीरपर एक घाट बना हुआ है। तथा निजकी ठाकुरबाड़ीमें आपने ३५०० रुपयेकी जमींदारी प्रदानकी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—गौरांग सेवक जौहरी—यहां जवाहिरातका व्यापार होता है।

मेसर्स चन्द्रकान्तदास ब्रादर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मालदा (बंगाल) है। यहां यह फर्म २०० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू लोकनाथदास थे। आपका कुटुम्ब अग्रवाल वैश्य एरनगोत्रका है। बाबू लोकनाथदासने शुरूमें किरानेका व्यापार कर अपनी फर्मकी उन्नति की।

इस समय आपके पौत्र बाबू चन्द्रकान्तदास, बाबू कृष्णचन्द्रदास, बाबू रामचन्द्रदास और गौरचन्द्रदास ही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स चन्द्रकान्तदास ब्रादर्स-किराना, पाट, वर्तन वेङ्किगका काम होता है। यह फर्म योड़ामंट एण्ड कम्पनीके सोडाकी सोल एजंट, तथा कार्न प्रोडेक्ट कम्पनीके स्टार्च पाउडर, क्रिमिनस्टार्चकर्न प्लाट आदिकी दिनाजपुर मालदा और पूर्णियाके सोल एजंट हैं।

मेसर्स चौथमल कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बिकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सेठिया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ बींजराजजी और चौथमलजी संवत् १९४० में देशसे यहां आये। आप दोनों भाई थे। आपने यहां आकर मनिहारीकी छोटीसी दुकानकी थी। फिर अपनी व्यापार कुशलतासे आपने अच्छी सम्पत्ति प्राप्तकी। तत्पश्चात् दोनों भाई अलग २ हो गये।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक श्री चौथमलजीके पुत्र बाबू लादूरामजी, बाबू कुन्दनमलजी, और बाबू माणकचन्दजी हैं।

बाबू कुन्दनमलजी समाजसेवी देशभक्त और मिलनसार व्यक्ति हैं।

नौगांव

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेके सन्ताहार नामक जंक्शनसे करीब १ मीलकी दूरीपर हुआ है।

यह गांजेके लिये सारे भारतमें मशहूर है। यहां करीब ४५०० मन गांजा प्रति वर्ष पैदा होता है। यह सब गांजा कोआपरेटिव सोसाइटी खरीद लेती है कोई दूसरा व्यापारी इसका व्यापार नहीं कर सकता। सोसाइटी कृषकोंसे ८०) रुपयेसे १००) रुपये प्रतिमन तक गांजा खरीदती है और फिर बाहर भेजती है। नौगांवमें भी यही १८-) फी तोला पब्लिकको बेचा जाता है।

यहां आसपास जूट भी पैदा होता है यहांसे ५ लाख मन जूट बाहर भेजा जाता है। और कपड़ा व किरासन आइल आदि पदार्थ बाहरसे आकर बिकते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आपलोग गौड़ ब्राह्मण समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक पं० शिवनारायणजीने लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी फर्मका स्थापन किया। कुछ दिन बाद गांजा पैक करनेके बोरोंका कंट्राक्ट आपने लिया। आपके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् पं० श्रीनिवासजी शर्माने १६ वर्षतक आपके व्यापारको चलाया। आपके पुत्र पं० दुर्गाप्रसादजी शर्माने १३ वर्षकी आयुमें व्यापार संचालन भार संभाला, फर्मकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप सज्जन और मिलनसार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः पं० श्री राधाकृष्णजी, पं० विश्वंभरजी और पं० गौरीशंकरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां गांजा, अफीम, और भंगके ठेकेका काम होता है। इम्पीरियल टोबेको कम्पनीकी सिगरेट और वर्मा आइल कम्पनीके वर्मासेल पेट्रोलकी एजेन्सियाँ इस फर्म पर हैं। यहां जूटका काम भी होता है। कोआपरेटिव सप्लाई और शेल सोसाइटीके जूट विभागके दलालीका काम भी यहां होता है।

सन्ताहार—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां भी इम्पीरियल टोबेको कम्पनीकी सिगरेटकी एजेन्सी है।

बा० मुनमीरामजी सिहानिया सैदपुर
[मुरलीधर धनेचन्द]

बा० हरनारायणजी लोहिया दिनाजपुर
(जेसराज शिवलाल)

बा० इन्द्रचन्दजी अग्रवाल दिनाजपुर

नौगांव

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेल्वेके सन्तहार नामक जंक्शनसे करीब १ मीलकी दूरीपर हुआ है।

यह गांजेके लिये सारे भारतमें मशहूर है। यहां करीब ४५०० मन गांजा प्रति वर्ष पैदा होता है। यह सब गांजा कोआपरेटिव सोसाइटी खरीद लेती है कोई दूसरा व्यापारी इसका व्यापार नहीं कर सकता। सोसाइटी कृषकोंसे ८०) रुपयेसे १००) रुपये प्रतिमन तक गांजा खरीदती है और फिर बाहर भेजती है। नौगांवमें भी यही १।≈) फी तोला पब्लिकको बेचा जाता है।

यहां आसपास जूट भी पैदा होता है यहांसे ५ लाख मन जूट बाहर भेजा जाता है। और कपड़ा व किरासन आइल आदि पदार्थ बाहरसे आकर बिकते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आपलोग गौड़ ब्राह्मण समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक पं० शिवनारायणजीने लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी फर्मका स्थापन किया। कुछ दिन बाद गांजा पैक करनेके बोरोंका कंट्राक्ट आपने लिया। आपके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् पं० श्रीनिवासजी शर्माने १६ वर्षतक आपके व्यापारको चलाया। आपके पुत्र पं० दुर्गाप्रसादजी शर्माने १३ वर्षकी आयुमें व्यापार संचालन भार संभाला, फर्मकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप सज्जन और मिलनसार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः पं० श्री राधाकृष्णजी, पं० विश्वंभरजी और पं० गौरीशंकरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां गांजा, अफीम, और भंगके ठेकेका काम होता है। इम्पीरियल टोबैको कम्पनीकी सिगरेट और बर्मा आइल कम्पनीके वर्मासेल पेट्रोलकी एजेन्सियाँ इस फर्म पर हैं। यहां जूटका काम भी होता है। कोआपरेटिव सप्लाई और सेल सोसाइटीके जूट विभागके दलालीका काम भी यहां होता है।

सन्तहार—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां भी इम्पीरियल टोबैको कम्पनीकी सिगरेटकी एजेन्सी है।

नौगांव

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेके सन्तहार नामक जंक्शनसे करीब १ मीलकी दूरीपर हुआ है।

यह गांजेके लिये सारे भारतमें मशहूर है। यहां करीब ४५०० मन गांजा प्रति वर्ष पैदा होता है। यह सब गांजा कोआपरेटिव सोसाइटी खरीद लेती है कोई दूसरा व्यापारी इसका व्यापार नहीं कर सकता। सोसाइटी कृषकोंसे ८०) रुपयेसे १००) रुपये प्रतिमन तक गांजा खरीदती है और फिर बाहर भेजती है। नौगांवमें भी यही १।~) फी तोला पब्लिकको बेचा जाता है।

यहां आसपास जूट भी पैदा होता है यहांसे ५ लाख मन जूट बाहर भेजा जाता है। और कपड़ा व किराना आइल आदि पदार्थ बाहरसे आकर बिकते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आपलोग गौड़ ब्राह्मण समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक पं० शिवनारायणजीने लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी फर्मका स्थापन किया। कुछ दिन बाद गांजा पैक करनेके गोदामका कंट्राक्ट आपने लिया। आपके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् पं० श्रीनिवासजी शर्माने १६ वर्षतक आपके व्यापारको चलाया। आपके पुत्र पं० दुर्गाप्रसादजी शर्माने १३ वर्षकी आयुमें व्यापार संचालन भार संभाला। फर्मकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप सज्जन और मिलनसार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः पं० श्री रामकृष्णजी, पं० विश्वंभरजी और पं० गौरीशंकरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नौगांव (हेडआफिस)—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां गांजा, अफीम, और भांगके ठेकेका काम होता है। इम्पीरियल टोबेको कम्पनीकी सिगरेट और बर्मा आइल कम्पनीके मिट्टीके तेलकी एजेन्सियाँ इस फर्म पर हैं। यहां जूटका काम भी होता है। कोआपरेटिव सभाएं और जेल सोसाइटीके जूट विभागके कुल्लीका काम भी यहां होता है।

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां भी इम्पीरियल टोबेको कम्पनीकी सिगरेटकी एजेन्सी है।

टेढ़ीमेढ़ी, लम्बी एवम खराब है। सफाईकी ओर यहांके निवासी बहुत कम ध्यान देते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गुलराज विसेसरलाल चौधरी

इस फर्मके मालिक फतेपुर (सीकर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोयलीय सज्जन हैं। इसके स्थापक बाबू नंदरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस समय आपके पुत्र बाबू गुलराजजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजशाही—गुलराज विसेसरलाल यहां जूट, सोना चांदी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है। घाटपाटमें व राजशाहीमें आपकी और भी शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज विसेसरलाल १८० हरिसन रोड यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स प्रतापचंद सेठ

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुर है। इसके वर्तमान मालिक प्रतापचन्द सेठ और मंगलचन्द सेठ हैं। आप बंगाली समाजके सज्जन हैं। यहां यह फर्म १७ वर्षसे काम कर रही है। यहां पर किराना एवम सोडावाटर एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय दिनाजपुरके पोर्शनमें दिया गया है।

मेसर्स मालचन्द शोभाचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक मालचन्दजी, शोभाचंदजी आदि सात भाई हैं। आप राजलदेसरके निवासी हैं। यह फर्म यहां बहुत वर्षोंसे व्यापार कर रही है। यहां जमींदारी, बैंकिंग, जूट और कपड़ेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमें मेसर्स मेघराज इमचन्दके नामसे दिया गया है।

मेसर्स मोहनलाल अपचंदलाल

इस फर्मका हेड आफिस बालुरघाट (बंगाल) है। यहां यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इसके वर्तमान मालिक [illegible] तथा आपके भतीजे [illegible] एवम [illegible] हैं। इस फर्मका विशेष परिचय कलकत्तामें [illegible] मोहनलालके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जमींदारीका व्यापार करती है।

मैसर्स रामरत्नपाल कस्तूरीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान पचाड़ा (नारनौल) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजमें सज्जन हैं। सेठ रामरत्नपालजीने यहां आकर इस फर्मकी स्थापना लगभग ३५ वर्ष पूर्व की थी। आपने कपड़ेकी दुकानदारीसे आरम्भ कर अपने व्यवसायको बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया। आपके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू कस्तूरीलालजी, दुर्गादासजी, गजानन्दजी रामचन्द्रजी, और बलभद्रजी हैं। आपलोग सभी साक्षर एवं उदार सज्जन हैं तथा व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नौगांव (राजशाही)—मैसर्स रामरत्नपाल कस्तूरीलाल—यहां कपड़ा गल्ला और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—रामरत्नपाल कस्तूरीलाल—७।१ बाबूलाल लेन—यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मैसर्स रामरत्नपाल कस्तूरीलाल

" सतीशचन्द्र बैसाक

गल्लेके व्यापारी

छोटूलाल सेठिया

जगदीश्वर मानी

मदनमोहन मल्लिक

जूट मरचेंएटस

कालीनारायण चौधरी

पेम्राबलाल साव

कोआपरेटिव सप्लाइ एण्ड सेल्स सोसाइटी

चुन्नीलाल साव

छगनलाल अग्रवाला

छोटूलाल सेठिया

राधिमोहन राय

राजशाही

इसका दूसरा नाम रामपुर बोलिया भी है। यह स्थान ई० बी० आरके नाटोर नामक स्टेशनके समीप बसा हुआ है। यहां आनेके लिये नाटोरसे मोटर सर्विस रन करती है। यहां खास व्यापार जूट एवम धान और कपड़ेका है। करीब १ लाखमन जूट यहांसे बाहर जाता है। धान भी कभी २ बाहर चला जाता है। आनेवाले मालमें किराना, गल्ला, कपड़ा आदि हैं। यहांका व्यापार भी पासके देहातोंसे संबन्ध रखता है। यहां कोई खास चहलपहल नहीं है। इस गांवकी बसावट

टेढ़ीमेढ़ी, लम्बी एवम खराब है। सफाईकी ओर यहांके निवासी बहुत कम ध्यान देते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गुलराज विसेसरलाल चौधरी

इस फर्मके मालिक फतेपुर (सीकर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोत्रीय सज्जन हैं। इसके स्थापक बाबू नंदरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस समय आपके पुत्र बाबू गुलराजजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजशाही—गुलराज विसेसरलाल यहां जूट, सोना चांदी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है। चारघाटमें व राजशाहीमें आपकी और भी शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज विसेसरलाल १८० हरिसन रोड यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स प्रतापचंद सेठ

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुर है। इसके वर्तमान मालिक प्रतापचन्द सेठ और नंदगोपाल सेठ हैं। आप बंगाली समाजके सज्जन हैं। यहां यह फर्म १७ वर्षसे काम कर रही है। यहांपर किराना एवम सोडाकी एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय दिनाजपुरके पोर्शनमें दिया गया है।

मेसर्स मालचन्द शोभाचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक मालचन्दजी, शोभाचंदजी आदि सात भाई हैं। आप राजलदेसरके निवासी हैं। यह फर्म यहां बहुत वर्षोंसे व्यापार कर रही है। यहां जमींदारी, बैंकिंग, जूट और कपड़ेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमें मेसर्स मेघराज उमचन्दके नामसे दिया गया है।

मेसर्स मोहनलाल जयचंदलाल

इस फर्मका हेड आफिस वर्द्धमान (बंगाल) है। यहां यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इसके वर्तमान मालिक जैचंदलालजी तथा आपके भतीजे विजयचंदजी एवम महालचंदजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय वर्द्धमानमें तिलोकचंद मोहनलालके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जमींदारीका व्यापार करती है।

मेसर्स रामरत्नपाल कस्तूरीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान पचाड़ा (नारनौल) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजमें सज्जन हैं। सेठ रामरत्नपालजीने यहां आकर इस फर्मकी स्थापना लगभग ३८ वर्ष पूर्व की थी। आपने कपड़ेकी दुकानदारीसे आरम्भ कर अपने व्यवसायको बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया। आपके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू कस्तूरीलालजी, दुर्गादत्तजी, गजानन्दजी रामचन्द्रजी, और बलभद्रजी हैं। आपलोग सभी साक्षर एवं उदार सज्जन हैं तथा व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स रामरत्नपाल कस्तूरीलाल—यहां कपड़ा गल्ला और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—रामरत्नपाल कस्तूरीलाल—७।१ मानूलाल लेन—यहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स रामरिछपाल कस्तूरीलाल
" सतीशचन्द्र बैसाक

गल्लेके व्यापारी

छोटूलाल सेठिया
जगदीश्वर मानी
मदनमोहन मल्लिक

जूट मरचेण्टस

कालीनारायण चौधरी
भैरवलाल साव
कोआपरेटिव सप्लाइ एण्ड सेल्स सोसाइटी
चुन्नीलाल साव
छगनलाल अग्रवाला
छोटूलाल सेठिया
शशिमोहन राय

राजशाही

इसका दूसरा नाम रामपुर बोलिया भी है। यह स्थान इ० बी० आरके नाटोर नामक स्टेशनके समीप बसा हुआ है। यहां जानेके लिये नाटोरसे मोटर सर्विस रन करती है। यहां खास व्यापार जूट एवम धान और कपड़ेका है। करीब १ लाखमन जूट यहांसे बाहर जाताहै। धान भी कभी २ बाहर चला जाता है। आनेवाले मालमें किराना, गल्ला, कपड़ा आदि हैं। यहांका व्यापार आसपासके देहातोंसे संबन्ध रखता है। यहां कोई खास चहलपहल नहीं है। इस गांवकी बसावट

मेसर्स थानसिंह करमचन्द

इस फर्मके मालिक बिदासर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। इस फर्मकी और भी कई शाखायें हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता हैं। विशेष परिचय कलकत्ते विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स नेतराम कन्हैयालाल

इस फर्मके स्थापक रतनगढ़ (बीकानेर) निवासी बाबू नेतरामजी हैं। आप अगरवाल वैश्य जातिके हैं। आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

धुब्री—नेतराम कन्हैयालाल—यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है। यह फर्म बर्मा शेल आइल कम्पनीकी एजेण्ट है। यहां "रामचन्द्र रघुनाथ" नामसे आपकी गल्ला तथा आढ़तकी दुकान है

मेसर्स मोहनलाल मोमासिंह

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसकी और भी कई स्थानोंपर शाखायें स्थापित हैं। यह फर्म विशेषकर जूटका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नम्बर १४६ में दिया गया है। इस फर्मपर बैंकिंग, गल्ला और किरानेका व्यापार होता है। जूटका व्यापार भी यह फर्म करती है।

मेसर्स रामवल्लभ मोहनलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी बाबू रामवल्लभजीके पुत्र बा० छगनलालजी, मोहनलालजी तथा किशनरामजीके पुत्र बाबू बालाबक्सजी, छगनलालजी तथा लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप अगरवाल सज्जन हैं। बाबू रामवल्लभजी तथा बा० किशनरामजीने इस फर्मको करीब १५ साल पहले यहां स्थापित की थी। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुब्री—रामवल्लभ मोहनलाल—यहां गल्ला, किराना तथा जूटका काम होता है तथा मिलों की एजेंसी है।

कलकत्ता—कोडूमल रामवल्लभ, ४१ स्ट्राड रोड—यहां जूट, कपड़ा तथा चालानीका काम होता है।

मेसर्स रामरतनपाल कस्तूरीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान धनाना (नारनौल) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजमें सज्जन हैं। सेठ रामरतनपालजीने यहां आकर इस फर्मकी स्थापना लगभग ३५ व[illegible] पूर्व की थी। आपने कपड़ेकी दुकानदारीसे आरम्भ कर अपने व्यवसायको बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया। आपके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू कस्तूरीलालजी, दुर्गादत्तजी, गजानन्दजी रामचन्द्रजी, और वल्लभदत्तजी हैं। आपलोग सभी साक्षर एवं उदार सज्जन हैं तथा व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स रामरतनपाल कस्तूरीलाल—यहां कपड़ा गल्ला और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—रामरतनपाल कस्तूरीलाल—७।१ बाबूलाल लेन—यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स रामरिछपाल कस्तूरीलाल
" सतीशचन्द्र बसाक

गल्लेके व्यापारी

छोटूलाल सेठिया
जगदीश्वर मानी
मदनमोहन मल्लिक

जूट मरचेण्टस

कालीनारायण चौधरी
पेसावलाल साव
कोआपरेटिव सप्लाइ एण्ड सेल्स सोसाइटी
पुन्नीलाल साव
छगनलाल अग्रवाला
छोटूलाल सेठिया
शशिमोहन राय

राजशाही

इसका दूसरा नाम रामपुर बोलिया भी है। यह स्थान इ० बी० आरके नाटोर नामक स्टेशनके समीप बसा हुआ है। यहां जानेके लिये नाटोरसे मोटर सर्विस रन करती है। यहां खास व्यापार जूट एवम धान और कपड़ेका है। करीब १ लाखमन जूट यहांसे बाहर जाताहै। धान भी कभी २ बाहर चला जाता है। आनेवाले मालमें किराना, गल्ला, कपड़ा आदि हैं। यहांका व्यापार भी पासके देहातोंसे संबन्ध रखता है। यहां कोई खास चहलपहल नहीं है। इस गांवकी बसावट

मेसर्स थानसिंह करमचन्द

इस फर्मके मालिक बिदासर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। इस फर्मकी और भी कई शाखायें हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। विशेष परिचय कलकत्ते विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स नैनराम कन्हैयालाल

इस फर्मके स्थापक रतनगढ़ (बीकानेर) निवासी बाबू नैनरामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

धुब्री—नैनराम कन्हैयालाल-यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है। यह फर्म बर्मा ऑइल कम्पनीकी एजेण्ट है। यहां "रामचन्द्र रघुनाथ" नामसे आपकी गल्ला तथा आढ़तकी दुकान है

मेसर्स मोहनलाल भोमसिंह

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसकी और भी कई स्थानोंपर शाखायें स्थापित हैं। यह फर्म विशेषकर जूटका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नम्बर १४६ में दिया गया है। इस फर्मपर बैंकिंग, गल्ला और किराना व्यापार होता है। जूटका व्यापार भी यह फर्म करती है।

मेसर्स रामवल्लभ मोहनलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी बाबू रामवल्लभजीके पुत्र बा० छगनलालजी, मोहनलालजी तथा किशनरामजीके पुत्र बाबू बालाबक्सजी, छगनलालजी तथा लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप अग्रवाल सज्जन हैं। बाबू रामवल्लभजी तथा बा० किशनरामजीने इस फर्मको करीब १५ साल पहले यहां स्थापित की थी। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुब्री—रामवल्लभ मोहनलाल—यहां गल्ला, किराना तथा जूटका काम होता है तथा मिलोंको जूट भेजी जाती है।

कलकत्ता—चौड़मल रामवल्लभ, ५१ स्ट्रांड रोड—यहां जूट, कपड़ा तथा चालानीका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स चुन्नीलाल जीवराज
" नंदलालराम श्यामलालराम
" नेनराम कन्हैयालाल
" श्रीकांत वल्लभ
" मोहनलाल भोमसिंह
" रामवल्लभ मोहनलाल
" लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र

जूटके व्यापारी

मेसर्स आरसिम कम्पनी
" ओंकारमल ज्वालाप्रसाद
" गिरधारीमल बालचन्द
" थानसिंह करमचन्द
" बालाबक्ष रामचन्द्र
" मोहनलाल भोमसिंह
" रायली ब्रादर्स

कूच बिहार

यह देशी राज्य है। यहांके शासक महाराजा कड़लाते हैं। महाराजाके महल आदि देखने योग्य हैं। इस शहरमें दूर २ मकानात बने हुए हैं। बागमें तलाव एवम् टाउन हाल आदिके कारण यहांकी सुन्दरता बहुत बढ़ गई है। शहरमें सफाई काफी रहती है। यह स्थान इ० बी० आरके लालमनीर हाटनामक जंक्शनसे चार पांच स्टेशनपर है। यहांसे कूचबिहारतक रेल्वे गई है। यहांका प्रधान व्यापार तमाखू, एवम् जूटका है। तमाखू हजारों मन यहांसे बाहर जाती है। इसके बड़े २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। गल्ले एवम् किरानेका व्यापार भी यहां अच्छी उन्नतिपर है। प्रायः आसपासके देहातवाले यहींसे सब माल खरीदकर ले जाते हैं।

मेसर्स कालूराम नथमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके सेठिया सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस कृथविहारमें है। यहां इसका स्थापन हुए १०० वर्षोंके करीब हुए। इसका स्थापन सेठ कालूरामजीके हाथोंसे हुआ तथा आपहीके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके २ पुत्र हुए। श्रीयुत नथमलजीका भी संवत् १९४४ में स्वर्गवास हो गया। श्रीयुत भिखमचंदजी इस समय वर्तमान हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत भिकमचंदजी तथा आपके पुत्र भीमराजजी और श्री नथमलजीके पुत्र श्रीदुलीचन्दजी हैं। आप सज्जन, शिक्षित, एवम् विद्याप्रेमी हैं।

आपकी ओरसे सरदारशहरमें करीब २१ हजारकी लागतसे एक अस्पताल चल रहा है। तथा नथमलजी सेठिया जैन पुस्तकालय भी खुला हुआ है ये दोनों श्रीयुत नथमलजीके स्मारक स्वरूप खड़े हैं।

गौरीपुर (आसाम)—रामवल्लभ पन्नालाल—यहां गल्ला, किराना तथा जूटका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म यहां ७ सालसे स्थापित है। इसके स्थापक बा० लक्ष्मीनारायणजी तथा रामचन्द्रजी हैं। आपही इस फर्मका संचालन सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आप व्यापार कुशल सज्जन हैं।

आपकी ओरसे शोभासर और जसवंतगढ़में एक एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुबड़ी—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र—यहां गल्ला, किराना, जूट तथा सोना, चांदीका व्यापार होता है।

गौरीपुर (आसाम)—रामचन्द्र रामानन्द—यहां कपड़ा तथा उपरोक्त काम होता है।

कलकत्ता—कोड़ामल लक्ष्मीनारायण ६४ लोअर चितपुर रोड—यहां बैंकिंग तथा जूटकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरपतराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान जोदका (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोयन गोत्रीय सज्जन हैं आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए ५८ वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू शिवजीरामजी तथा हरपतरायजी थे।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू हरपतरायजीके दत्तक पुत्र बाबू रामचन्द्रजी हैं

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धुबड़ी—मेसर्स शिवजीराम हरपतराय—यहां गल्ला, और जूटका व्यापार होता है। और किरासिन तेलकी एजंसी भी है।

कपड़ेके व्यापारी
मेसर्स गिरधारीमल बालचन्द
" छोगमल रावतमल
" ब्राउन स्टोर कम्पनी

श्री लक्ष्मी भंडार
मेसर्स लालचन्द कुशालचन्द
" हरकचन्द तनसुखराय
" पाल ब्रादर्स

तमाखूके व्यापारी
आसकरण तनसुखदास
फालूराम नथमल
आलिमसिंह हुकुमीचन्द
बालचन्द जैचन्दलाल

लोहेके व्यापारी
सुखलाल हीरालाल
हीरालाल मिस्त्री

बर्तनके व्यापारी
गुरुगोविन्दसाह
ललितमोहनपोद्दार

सिराज गंज

भारतकी प्रसिद्ध नदी ब्रह्मपुत्राके किनारेपर बसी हुई यह एक बड़ी मंडी है। यह ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी सिराजगंज शाखाका आखिरी स्टेशन है। स्टेशनके पाससे ही यह मंडी बसी हुई है ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसी होनेके कारण वर्षा ऋतुमें यहां मकानों तकमें पानी भर जाता है। यहांके खास निवासी इसी तरह पानीमें अपना कार्य करते रहते हैं।

इस मंडीमें जमीदारी सिस्टम जारी है। जमीदार लोग यहांके निवासियोंको पक्का मकान बनानेकी आज्ञा नहीं देते हैं। पक्का मकान बनानेकी आज्ञा लेनेके लिये जमीदारको बहुत रुपया देना पड़ता है। इस लिये इस मंडीमें अधिकांश मकान चद्दर तथा बांसके बने हुए हैं। सारे शहरमें सात आठ मकान दुमंजिले दृष्टिगोचर होते हैं। यहां बांस ज्यादा तादादमें पैदा होनेके कारण मनुष्योंको बांसका मकान बनानेमें ज्यादा सुविधा होती है।

शहरकी सफाई व रोशनीकी ओर यहांकी म्युनिसिपैलिटीका विशेष ख्याल नहीं है। सिराजगंजकी सड़क भी बहुत टूटीफूटी है। यहां रोशनीका भी अच्छा इन्तिजाम नहीं है रोशनी बहुत दूरीपर लगी हुई है, इस लिये शहरमें अंधेरा हो जाता है। जिससे लोगोंको बड़ी तकलीफ होती है।

सिराजगंज शहरके बीच होकर ब्रह्मपुत्रकी एक छोटी सी शाखा गुजरी है। ग्रीष्म ऋतुमें यह सूख जाती है पर वर्षाऋतुमें तो यह सिराजगंजको दो भागोंमें विभक्त कर देती है। इस समय लोग नावोंमें बैठकर इधर उधर आते जाते हैं। तथा नावों द्वारा व्यापार करते हैं।

ऐसा सुननेमें आता है कि ब्रह्मपुत्र नदी करीब आठ दस वर्षके पहले सिराजगंजसे तीन मील दूर बहती थी। पर अब बिलकुल पासही बहने लगी है। इससे सिराजगंजकी कोर्ट इत्यादि सरकारी इमारतें खतरेमें आगई हैं इस लिये सरकारने दूसरे स्थानपर कोर्ट आदिकी व्यवस्था की है।

सिराजगंज जूटकी प्रसिद्ध मंडी है यहांका जूट अपनी विशेषताके लिये मशहूर था।

तमाखूके व्यापारी	लोहेके व्यापारी
भ.सकरण तनसुखदास	सुखलाल हीरालाल
फाळूराम नथमल	हीरालाल मिस्त्री
जालिमसिंह हुकुमीचन्द	वर्तनके व्यापारी
वालचन्द जौचन्दलाल	गुरुगोविन्दसाह
	ललितमोहनपोद्दार

सिराज गंज

भारतकी प्रसिद्ध नदी ब्रह्मपुत्राके किनारेपर वसी हुई यह एक बड़ी मंडी है। यह ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी सिराजगंज शाखाका आखिरी स्टेशन है। स्टेशनके पाससे ही यह मंडी बसी हुई है ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसी होनेके कारण वर्षा ऋतुमें यहां मकानों तकमें पानी भर जाता है। यहांके खास निवासी इसी तरह पानीमें अपना कार्य करते रहते हैं।

इस मंडीमें जमीदारी सिस्टम जारी है। जमीदार लोग यहांके निवासियोंको पक्का मकान बनानेकी आज्ञा नहीं देते हैं। पक्का मकान बनानेकी आज्ञा लेनेके लिये जमीदारको बहुत रुपया देना पड़ता है। इस लिये इस मंडीमें अधिकांश मकान चद्दर तथा बांसके बने हुए हैं। सारे शहरमें सात आठ मकान दुमंजिले दृष्टिगोचर होते हैं। यहां बांस ज्यादा तादादमें पैदा होनेके कारण मनुष्योंको बांसका मकान बनानेमें ज्यादा सुविधा होती है।

शहरकी सफाई व रोशनीकी ओर यहांकी म्युनिसिपैलिटीका विशेष खयाल नहीं है। सिराजगंजकी सड़क भी बहुत टूटी फूटी है। यहां रोशनीका भी अच्छा इन्तिजाम नहीं है रोशनी बहुत दूरीपर लगी हुई है, इस लिये शहरमें अंधेरा हो जाता है। जिससे लोगोंको बड़ी तकलीफ होती है।

सिराजगंज शहरके बीच होकर ब्रह्मपुत्रकी एक छोटी सी शाखा गुजरी है। ग्रीष्म ऋतुमें यह सूख जाती है पर वर्षाऋतुमें तो यह सिराजगंजको दो भागोंमें विभक्त कर देती है। इस समय लोग नावोंमें बैठकर इधर उधर आते जाते हैं। तथा नावों द्वारा व्यापार करते हैं।

ऐसा सुननेमें आता है कि ब्रह्मपुत्र नदी करीब आठ दस वर्ष पहले सिराजगंजसे दो तीन मील दूर बहती थी। पर अब बिलकुल पाससे बहने लगी है। इससे सिराजगंजकी कोर्ट इत्यादि सरकारी इमारतें खतरेमें आगई हैं इस लिये सरकारने दूसरे स्थानपर कोर्ट आदिकी व्यवस्था की है।

सिराजगंज जूटकी प्रसिद्ध मंडी है यहांका जूट अपनी विशेषताके लिये मशहूर था।

तमाखूके व्यापारी	**लोहेके व्यापारी**
आसकरण तनसुखदास	सुखलाल हीरालाल
कालूराम नथमल	हीरालाल मिस्त्री
जालिमसिंह हुकुमीचन्द	**वर्तनके व्यापारी**
वालचन्द जैचन्दलाल	गुरुगोविन्दसाह
	ललितमोहनपोद्दार

सिराज गंज

भारतकी प्रसिद्ध नदी ब्रह्मपुत्राके किनारेपर बसी हुई यह एक बड़ी मंडी है। यह ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी सिराजगंज शाखाका आखिरी स्टेशन है। स्टेशनके पाससे ही यह मंडी बसी हुई है ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसी होनेके कारण वर्षा ऋतुमें यहां मकानों तकमें पानी भर जाता है। यहांके खास निवासी इसी तरह पानीमें अपना कार्य करते रहते हैं।

इस मंडीमें जमीदारी सिस्टम जारी है। जमीदार लोग यहांके निवासियोंको पक्का मकान बनानेकी आज्ञा नहीं देते हैं। पक्का मकान बनानेकी आज्ञा लेनेके लिये जमीदारको बहुत रुपया देना पड़ता है। इस लिये इस मंडीमें अधिकांश मकान चद्दर तथा बांसके बने हुए हैं। सारे शहरमें सात आठ मकान दुमंजिले दृष्टिगोचर होते हैं। यहां बांस ज्यादा तादादमें पैदा होनेके कारण मनुष्योंको बांसका मकान बनानेमें ज्यादा सुविधा होती है।

शहरकी सफाई व रोशनीकी ओर यहांकी म्युनिसिपैलिटीका विशेष खयाल नहीं है। सिराजगंजकी सड़क भी बहुत टूटीफूटी है। यहां रोशनीका भी अच्छा इन्तिजाम नहीं है रोशनी बहुत दूरीपर लगी हुई है, इस लिये शहरमें अंधेरा हो जाता है। जिससे लोगोंको बड़ी तकलीफ होती है।

सिराजगंज शहरके बीच होकर ब्रह्मपुत्रकी एक छोटी सी शाखा गुजरती है। ग्रीष्म ऋतुमें यह सूख जाती है पर वर्षाऋतुमें तो यह सिराजगंजको दो भागोंमें विभक्त कर देती है। इस समय लोग नावोंमें बैठकर इधर उधर आते जाते हैं। तथा नावों द्वारा व्यापार करते हैं।

ऐसा सुननेमें आता है कि ब्रह्मपुत्र नदी करीब आठ दस वर्षके पहले सिराजगंजसे डेढ़ तीन मील दूर बहती थी। पर अब बिलकुल पासही बहने लगी है। इससे सिराजगंजकी कोर्ट इत्यादि सरकारी इमारतें धारामें आगई हैं इस लिये सरकारने दूसरे स्थानपर कोर्ट आदिकी व्यवस्था की है।

सिराजगंज जूटकी प्रसिद्ध मंडी है यहांका जूट अपनी विशेषताके लिये मशहूर था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कूचबिहार—मेसर्स कालूराम नथमल हे० आ०—यहां बैंकिंग, जमींदारी तथा दुकानदारी होता है।

कलकत्ता—मेसर्स कालूराम नथमल ४६ स्ट्रांड रोड T. A. "Dulcraj" यहां जूट बेलिंग, और कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त मौसिमपर और भी आपकी टेम्परेरी शाखाएं खुल जाया करती है।

मेसर्स जालिमसिंह हुकुमीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस यहीं है। यहां करीब १०० वर्षसे यह फर्म व्यवसाय कर रही है इसकी और भी शाखाएं हैं। इसके वर्तमान संचालक बाबू गिरधारीमलजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत अच्छी मानी जाती है। इसका विस्तृत परिचय कलकत्ता विभागके कमीशन एजंटोंमें चिमनीराम जसवंतमलके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग, जमींदारी, जूट और दूकानदारीका व्यापार करती है।

मेसर्स शोभाचन्द श्रीचन्द

यह फर्म यहां बहुत वर्षोंसे स्थापित है। इसपर जमींदारी, जूट एवम् गल्लेका कारवार होता है। इसके वर्तमान संचालक राजलदेसर निवासी मालचंदजी, शोभाचन्दजी, हरिलालजी, सन्तोषचन्दजी, चम्पालालजी, सोहनलालजी और श्रीचन्दजी हैं। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके जूटके व्यापारियोंमें मेसर्स मेघराज उमचन्दके नामसे दिया गया है।

जूटके व्यापारी

आसकरण तनसुखदास भादानी
कालूराम नथमल सेठिया
जालिमसिंह हुकुमचन्द
स्वरूपचन्द धनराज
हनुतमल हनुमानदास
कालूराम भाईदान
ताराचन्द इन्द्रचन्द
बींजराज शोभाचन्द
भीखनचन्द भैरोंदान

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम नथमल

गल्लेके व्यापारी

कालूराम नथमल
किसनराय जोरमल
रामलाल गंगाजल

परमेया सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ मोतीलालजीके हाथोंसे हुई। आपहीके द्वारा इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आप बड़े व्यापार दक्ष पुरुष हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोतीलालजी तथा आपके भाई पृथ्वीराजजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लछमनदास मोतीलाल १५नारमल लोहिया लेन – यहां जूट तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मिराजगंज—मेसर्स खुशालचंद लछमनदास—इस फर्मकी स्थापना यहां संवत् १९३३ में हुई। यहां जूट बेंकिंग तथा सोना चांदीका काम होता है।

बोगरा

यह पूर्वी बङ्गालमें ईस्टर्न बंगाल रेलवे की इसी नामकी स्टेशनके समीप बसा हुआ है। रेल्वे तो इस ग्रामके भीतरसे होकर जाती है। इसके बाजार चौड़े हैं। ग्राममें विशेष मकान टीनके बने हुए हैं भी यहां चहलपहल ज्यादा होनेसे शहरमें जीवन मालूम होता है।

यहां जूट तथा धान पैदा होता है ये दोनों ही वस्तुएं यहांसे बाहर जाती है। गल्ला, कपड़ा आदि सब वस्तुएं बाहरसे आकर यहां बिकती हैं। इन वस्तुओंका यहां अच्छा व्यापार होता है। पासके सब देहातोंमें यहींसे माल जाता है। यहां बड़ी कोर्ट भी है। यह स्थान अपने ही नामके जिलेकी मुख्य जगह है।

मेसर्स गेवरचंद दानचंद चोपड़ा

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ निवासी हैं। इसके वर्तमान मालिक बा० दानचन्दजी चोपड़ा हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १३९ पेजमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार एवम कमीशनका काम होता है।

मेसर्स चम्पालाल कोठारी

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मूलचंदजी, मदनचंदजी एवम चम्पालालजी हैं। यहां इस

पहिले सिराजगंज जूटका नाम ही था मगर रेलवेके आनेके पहले ज्यादा बिकते थे। उस समय यहां रेलवे नहीं थी इसलिये जूट नावों द्वारा भेजा जाता था। जब इसमें यहां रेलवे हो गई है तबसे इस मंडीका महत्व कम हो गया है अब पास रेलवेके स्टेशनोंसे ही जानेसे यहां जूटकी आमदनी कम होगई है। अब यहांसे करीब सात आठ लाख मन जूट जाता है जूटके इतिहासमें सिराजगंज का नाम उल्लेखनीय है। यहांका जूट चमकीला नरम और बहुत अच्छा होता है जूटके सिवा यहां आसपासके देहातोंमें धान चावल भी पैदा होता है धान चावलका व्यापार भी यहां होता है यहांसे जूट तथा धान चावल बाहर जाता है तथा चद्दर, कपड़ा आदि वस्तुएं बाहरसे आकर बिकती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स थिकमचन्द दानसिंह

इस फर्म पर अभी दुकी बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है। इसका हेड आफिस कलकत्ता में है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३५ में दिया गया है।

मेसर्स बुधमल बालचन्द

इस फर्मके हेड आफिस कलकत्ते में है। इसका विशेष परिचय यहांके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द नथमल

इस फर्मके दो पार्टनर हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस भी कलकत्ता है। अतएव इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार एवम् कमीशन एजंसीका काम करती है। कलकत्तेकी प्रसिद्ध फर्म हरिसिंह निहालचन्दकी जूट खरीदी इसी फर्मके मार्फत होती है।

मेसर्स लछमनदास मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूं है। आप ओसवाल वैश्य जातिके

कलकत्ता—रामधनदास द्वारकादास—४२।१ स्ट्रांड रोड—यहां आढ़तका काम होता है।
मारवाड़ी—रामधनदास भगवानदास—कपड़ा तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रिखचन्द नाथूलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लादूरामजी कालूरामजी, और लक्ष्मीनारायणजी हैं। यह फर्म करीब ४० वर्षोंसे कलकत्तेमें व्यापार कर रही है। यहीं इसका हेड आफिस है। यहां इसपर कपड़ा तथा गल्लेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मेसर्स लादूराम जमनालालके नामसे भी यहां एक दूकान और है इसपर भी यही काम होता है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें कमीशन एजंटोंमें मेसर्स रामलाल शिवलालके नामसे दिया गया है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स चांदमल भंवरीलाल
" जुहारमल धन्नालाल
" बालमुकुन्द महादेव
" भीमराज शिवप्रसाद
" रिखचन्द नाथूलाल
" लादूलाल धन्नालाल

कपड़ेके व्यापारी

" किशनलाल सोंठी
" गणपतराय तोलाराम
" गोविन्दराम कालूराम
" गोविन्दराम लादूराम
" पूरणमल थेगराज
" बीजराज जगन्नाथ
" बीजराज लादूराम
" रामचन्द्र बालावक्ष
" रामवल्लभ किशनलाल
" रामचन्द्र रामप्रताप

मेसर्स लादूराम जमनालाल
" लछमनराम बालमुकुन्द
" हजारीमल मदनलाल

चांदी सोनाके व्यापारी

" जेचन्दलाल बरमेचा
" बालमुकुन्द महादेव

जूटके व्यापारी

" घनश्यामदास नेमीचन्द
" चम्पालाल कोठारी
" प्रेमसुख गोवर्धन
" मोतीलाल पूनमचन्द

चद्दरके व्यापारी

" गजानंद कन्हैयालाल
" चम्पालाल कोठारी
" बालमुकुन्द महादेव
" भीमराज शिवप्रसाद
" मोतीलाल पूनमचन्द

पहिले सिराजगंज जूटका नाम ही भर लेनेपर भावमें चार आने ज्यादा मिलते थे। उस सम
रेल्वे नहीं थी अतएव उसमें जूट नावों द्वारा भेजा जाता था। अब जबसे यहां रेल्वे हो गई है नव
मंडीका महत्व कम हो गया है आस पास रेल्वेकी स्टेशनें हो जानेसे यहां जूटकी आमदनी
होगई है। अब यहांसे करीब सात आठ लाख मन जूट जाता है जूटके इतिहासमें सिराज
का नाम उल्लेखनीय है। यहांका जूट चमकीला साफ और बहुत अच्छा होता है जूटके सिवा यह
आसपासके देहातोंमें धान चावल भी पैदा होता है धान चावलका व्यापार भी यहां होता
यहांसे जूट तथा धान चावल बाहर जाता है तथा चद्दर, कपड़ा आदि वस्तुएं बाहरसे आकर
बिकती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स टीकमचन्द दानसिंह

इस फर्म पर जमींदारी बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है। इसका हेड आफिस कलकत्ता में है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६५ में दिया गया है।

मेसर्स बुधमल वालचन्द

इस फर्मके हेड आफिस कलकत्ते में है। इसका विशेष परिचय वहांके जूटके व्यापारियों में दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द नथमल

इस फर्मके दो पार्टनर हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस भी कलकत्ता है। अतएव इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और जूटका व्यापार एवम कमीशन एजंसीका काम करती है। कलकत्तेकी प्रसिद्ध फर्म हरिसिंह निहालचन्दकी जूट खरीदी इसी फर्मके मार्फत होती है।

मेसर्स लछमनदास मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाड़नूमें है। आप

कपड़ा, सोना, चांदी, ।, टीनका काम होता है। यहां आपकी बहुत बड़ी जमींदारी है। और बैंकिङ्गका काम भी होता है।

गायबंधा - मेसर्स छत्तूमल जोहारमल—यहां पाट, कपड़ा, सोना, चांदी, गल्ला और टीनका काम होता है। इसमें सेठ जोहारमल सिंघीका हिस्सा है।

गायबंधा मेसर्स अमोलकचन्द दुलीचन्द—यहां पाटका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छत्तूमल मुलतानमल ७।२ बाबूलाललेन—यहां जूटकी आढ़त और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

पलासबाड़ी (रंगपुर) छत्तूमल राजमल—यहां जूट और गल्लेका काम होता है।

सादुलापुर (रंगपुर) मेसर्स मुलतानमल अमोलकचंद—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा, और टीनका काम होता है।

धौतरा (रंगपुर)—मेसर्स पूसराज बछराज—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा और टीनका काम होता है।

कौमुलपुर—(रंगपुर)—मेसर्स छत्तूमल राजमल—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा और टीनका काम होता है।

मेसर्स मालमचन्द हुलासमल

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के निवासी हैं। आप लोग ओसवाल जैन श्वेताम्बर बागेचा सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ धनराजजीने लगभग १५ वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी इस फर्मकी स्थापना की और जूटका व्यापार करने लगे। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू मन्नालालजी, और बा० जयचन्द्रलाल हैं। बाबू जयचन्द्रलालजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ मन्नालालजी, सेठ मालमचंदजी के पुत्र बाबू सागरमलजी, और बिदासरके बाबू मंगळचन्दजी वेद हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तुलसीघाट—मेसर्स मालमचन्द चम्पालाल—यहां गल्ला, और जूटका काम होता है।

गायबन्धा मेसर्स मालमचंद हुलासमल—यहां गल्ला और जूटका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मालमचंद मन्नालाल ६५।३ पांचा गली—जूटका काम है।

पाटग्राम—मेसर्स हुलासमल सागरमल - यहां जूट तम्बाकूका काम होता है।

कोईग्राम—(रंगपुर) मेसर्स हुलासमल सागरमल - जूट, कपड़ा और तम्बाकू काम होता है।

फर्म पर जूटकी खरीदीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६० में दिया गया है।

मेसर्स प्रतापमल मगनीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी नेमीचन्दजी बैद हैं। इसका हे० आफिस कलकत्ता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां एक शाखा और है जहां गल्ले किराने आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन

इस फर्मके मालिक रेवासा (जयपुर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां ५५ वर्षसे स्थापित है इसके स्थापक बाबू रामप्रतापजी थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामप्रतापजीके लघुभ्राता बाबू प्रेमसुखजीके पुत्र बाबू गोवर्धनजी और भगवानदासजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन—यहां जूट, बैंकिंग और लकड़ीका व्यापार होता है। आपकी यहां पूरनमल बेगराजके नामसे एक कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान परशुरामपुर (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू भोलारामजी थे। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू भोलारामजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी और बाबू बंशीधरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद—यहां कपड़ेका काम होता है।

गोविन्द गंज—(रंगपुर) मेसर्स भोलाराम मुरलीधर—यहां जमींदारी और कपड़ेका काम होता है।

यहां आसपास जूट, हल्दी, धनियां, उड़द, मसूर, तिलहन आदि वस्तुएं पैदा होती हैं। और बाहर जाती हैं। तथा घी, धान, केरोसिन आइल आदि वस्तुएं बाहरसे आकर बिकती हैं। यहांपर गन्नेकी खेती भी ज्यादा तादादमें होती है। यहांपर गन्नेका रस निकालनेकी सैकड़ों मशीने हैं। जो किसानोंको किरायेपर दी जाती हैं।

यहांपर मोहिनी मिल नामकी एक मिल है। इसमें धोती जोड़े साड़ी, छींट, चेक आदि वस्तुएं तैयार होती हैं। ये अच्छी क्वालिटीकी होती है। इस मिलके कपड़ेकी बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठा है। यहांसे इस मिलका कपड़ा बाहर कलकत्ता आदिके बाजारोंमें बिकता है।

मेसर्स खुशालीराम वैतरणीमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके गाठेड़ वाला सज्जन हैं। इसके स्थापक लक्ष्मणगढ़ निवासी खुशालीरामजी थे। इस समय इसका संचालन बाबू खुशालीरामजीके पुत्र वैतरणीमलजी तथा पौत्र महादेवलालजी करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुड़िया — खुशालीराम वैतरणीमल—यहां कपड़ा और मनिहारीका काम होता है।

कलकत्ता — वैतरणीदास महादेव—२०१ हरिसन रोड, यहां कमीशन एजेंसी तथा कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स गौरीशंकर भगवानदास

इस फर्ममें झुंझनू (जयपुर) निवासी बाबू गौरीशंकरजी तथा मिरपुर (राजगढ़) निवासी बाबू भगवानदासजीका साझा है। आप दोनों अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८ वर्षसे व्यापार कर रही है। इसके पहिले बाबू गौरीशंकरजीके पिता बाबू रामचन्द्रजी यहां कपड़ा तथा ठेकेदारीका व्यवसाय करते थे। यहां पहिले पहल आपही इमारती लकड़ी और [illegible] करते थे। आपका देहान्त हो चुका है। इस समय इस फर्मके मालिक बाबू गौरीशंकरजी तथा भगवानदासजी हैं। इस फर्मकी ओरसे यहां एक ठाकुरवाड़ी और बगीचा बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुड़िया—गौरीशंकर भगवानदास—[illegible], लकड़ी, टीन, जूट गल्ला और आढ़तका काम होता है।

फर्म पर जूटकी खरीदीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६० में दिया गया है।

मेसर्स प्रतापमल मगनीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी नेमीचन्दजी बेद हैं। इसका हे० आफिस कलकत्ता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १९९ में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां एक शाखा और है जहां गल्ले किराने आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन

इस फर्मके मालिक रेवासा (जयपुर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां ५५ वर्षसे स्थापित है इसके स्थापक बाबू रामप्रतापजी थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामप्रतापजीके लघुभ्राता बाबू प्रेमसुखजीके पुत्र बाबू गोवर्धनजी और भगवानदासजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन—यहां जूट, बैंकिंग और लकड़ीका व्यापार होता है। आपकी यहां पूरनमल घेगराजके नामसे एक कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान परशुरामपुर (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके विठ्ठल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू भोलारामजी थे। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू भोलारामजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी और बाबू वंशीधरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद—यहां कपड़ेका काम होता है।

गोविन्द गंज—(रंगपुर) मेसर्स भोलाराम मुरलीधर—यहां जमींदारी और कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स श्रीनारायण पूरणमल

इस फर्मके स्थापक बाबू श्रीनारायणजी हैं। आप रामगढ़ (सीकर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सिंगल गोत्रीय सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू पूरणमलजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया—मेसर्स श्रीनारायण पूरणमल—यहां इमारती लकड़ीका काम होता है। यहां आपकी दो शाखाएं और हैं। जो अलग २ नामसे पाट और लकड़ीका व्यापार करती हैं।

गल्ला और जूटके व्यापारी

मेसर्स गणपतराय मुरलीधर
- ,, गोविन्दराम सांवलराम
- ,, गौरीशंकर भगवानदास
- ,, हेड़राज मदनलाल
- ,, श्रीचन्द्रपाल ज्ञानोदा सुन्दरीदासी
- ,, मधुसुदन पाल प्यारेलाल पाल
- ,, श्रीगोपाल चण्डीप्रसाद
- ,, ज्ञानेन्द्रनाथ दां०

लकड़ीके व्यापारी

- ,, गौरीशंकर भगवानदास
- ,, भद्रीदास बनारसीलाल

मेसर्स मदनलाल गौरीशंकर
- ,, महादेव जगदीश
- ,, श्रीनारायण पूरणमल
- ,, हरिराम रायवल्लभ

कपड़ेके व्यापारी

- खुशालीराम बैतरणीमल
- डालूराम सागरमल
- मनीराम अर्जुनदास
- लक्ष्मीचन्द मामराज
- श्रीकिशनदास शिवप्रसाद
- हरमुखराय भगवानदास

ढाका

यह शहर आसाम बंगाल रेलवेके अपनेही नामके स्टेशनसे करीब आधा मीलकी दूरीपर नदीके किनारे बसा हुआ है। इसकी बसावट एक दम लम्बी है। मालूम होता है कि यहां सफाईकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। इसका इतिहास बहुत प्राचीन है। मुगल साम्राज्यके समयमें तो यह स्थान बड़ा प्रसिद्ध रहा है। उस समय यह व्यापारका केन्द्र माना जाता था। यहांके बने हुए कपड़ोंके लिये विदेशी लोग तरसते थे। इन्हें पहनना अपना परम सौभाग्य समझते थे। यहांके कारीगरोंने इस कौशलमें कमाल हासिल कर लिया था। उस समय ढाका भारतमें ही नहीं प्रत्युत

गायबंधा

यह स्थान ईस्टर्न बंगाल रेल्वेके अपने ही नामके स्टेशनपर बसा हुआ है। यह पासके स्थानोंमें व्यापारिक दृष्टिसे बड़ा स्थान है। यहां इस जिलेकी बड़ी कोर्ट भी है। इससे गतिविधी रहती है। यहांका मुख्य व्यापार जूट, कपड़ा एवम धान चावलका है। कपड़ा, किराना, गल्ला आदि बाहरसे आते हैं। एवम जूट यहांसे बाहर जाता है। इसकी तादाद करीब ९,१० लाख मन है। इसी व्यापारसे यहां बड़ी रौनक मालूम होती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय नीचे दिया जाता है—

मेसर्स छगनमल नेमचंद

इस फर्मका हे० आफिस कलकत्ता है। यहां इसपर गल्ला एवम किरानेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १९९ में दिया गया है।

मेसर्स छतूमल चोथमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान गोगोलाव (नागौर) है आप लोग ओसवाल समाजके बाइसटोला कांकरिया सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ छतूमलजी लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आये और आपने सेठ कुशालचंदजीके यहां नौकरी करली। पर ४ वर्ष बाद आप उसी फर्ममें भागीदार हो गये। इसके कुछ ही समय बाद आपने अपनी उपरोक्त फर्मकी स्थापना की। आपने अपनी इस फर्मको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आपका स्वर्गवास सं० १९५१ में हुआ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक आपके वंशज ही हैं। इनके नाम क्रमशः सेठ अमोलखचंद जी, दुलीचंदजी, मुकुन्दमलजी, रेखचंदजी, किशनलालजी, भैरवदानजी, पूसराजजी, और जेठमलजी हैं। आप सभी सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं। सेठ अमोलखचंदजीके पुत्र बाबू बछराजजी तथा सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू भंवरलालजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तुलसीघाट—मेसर्स छतूमल चौथमल—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है तथा जूट,

का बुना कपड़ा बहुत सुन्दर एवम मजबूत होता है। हमने कुछ वर्षों पहलेका बना हुआ एक मलमलका थान देखा। व्यापारीने उसकी ६५०) रुपये कीमत मांगी। वह दस गजका थान था। वह इतना महीन था कि कई तह करनेपर भी शरीर उसमेंसे दिखलाई पड़ता था।

साबुन फैक्टरीज—साबुन बनानेके भी यहां करीब २५ बड़े बड़े कारखाने हैं। इनमें स्वदेशी साबुन बनता है और हजारों रुपयोंका साबुन बाहर जाता है। यह साबुन सस्ता और बढ़िया होता है। साबुन स्नान करने तथा कपड़े धोनेका दोनोंही तरहका बनता है।

इसके अतिरिक्त जूट, कपड़ा, गल्ला, चमड़ा, मनीहारी आदिका व्यापार भी यहां बहुत अच्छा होता है। यहांसे करीब ७ लाख मन जूट बाहर जाता है। धान चावलका भी व्यापार यहां कम नहीं होता है।

यहां शिक्षाका भी बहुत प्रचार है। यहांकी ढाका युनिवर्सिटी बहुत प्रसिद्ध है। सारे भारतवर्षमें इसी युनिवर्सिटीमें टीचिंग ट्रेनिङ्ग कालेज है। यहां कई शिक्षक अध्ययन करनेके लिये आया करते हैं। भारतवर्षके प्रसिद्ध ढाका शक्ति औषधालयका हेड आफिस भी यहीं है। इसमें शुद्ध रीतिसे आयुर्वेदिक दवाइयां तैयार की जाती हैं। इसकी भारतवर्षमें और कई शाखायें हैं।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड

कपड़ेके व्यापारी

अक्षय वस्त्रालय पटुआटोली
कमलाक्षय इस्लामपुर
किशोरी वस्त्रालय पटुआटोली
गोपीमोहन साहा ,,
गोविन्द चन्द्र पाल एण्ड सन्स बाबू बाजार
जगन्नाथ साह चौक बाजार
[illegible] साह ,,
बनमालीलाल बाबू बाजार
भोलानाथ गिरीन्द्र मोहन चौक बाजार
राजेश्वरी वस्त्रालय पटुआटोली
तारणीचरण गिरीशचरण साह चौक बाजार
धाम आदर्श पटुआटोली
नारायण स्वदेशी स्टोअर
भगवनदास गोविन्ददास बाबू बाजार
माणिक वस्त्रालय पटुआटोली
मिठ्ठूलाल मखीलाल साह चौक बाजार
हरिदास कृपानाथ ,,
रामकृष्ण वस्त्रालय पटुआटोली
लालमोहन कृष्णलाल बाबू बाजार
लोकनाथ वस्त्रालय पटुआटोली
विपिनबिहारी साह चौक बाजार
सुन्दरलाल कृष्णचन्द्र साह ,,
श्रीनाथ पद्मचन्द्र ,,
हाफिज मोहम्मद हुसेन ,,

मेसर्स शेरमल हीरालाल

इस फर्मका हेड आफिस गंगापुर है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यवसाय करती है। विशेष परिचय गंगापुर विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म करीब ३० वर्षोंसे गल्लेका व्यापार कर रही है।

बैंकर्स

आलाम बंगाल बैंक
नाथबंधु यूनाइटेड बैंक लि०
लोन आफिस

जूटके व्यापारी

मेसर्स कनोलकचन्द दुलीचंद
" मी० आर० साहा
" जयकिशनदास मल्ल
" मालमचन्द दुलमचन्द
" एम० डेविड एण्ड को०
" राली ब्रदर्स

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स खूबचन्द नत्थमल
" डालचन्द भैरोंदान
" धेवरचन्द मोतीलाल
" बल्लमल रघुनाथ
" भैरोंदान मूलचन्द
" मनीराम पूनमचन्द

गल्ले और किरानेके व्यापारी

मेसर्स छगनमल नेमचन्द
" पूर्णचन्द्र साहा
" पूनाराम रामनारायन
" गरीबचन्द खेमराज
" राम सुमान दास
" यामासुन्दरी जतीन्द्र मोहन ललित मोहन साहा
" शेरमल हीरालाल

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आकुजान ब्रदर्स
" इब्राहिम सौदागर

दी न्यू साइकल कम्पनी

मेसर्स पूर्णचन्द्र साहा
" यामासुन्दरी जतीन्द्रमोहन ललितमोहनसाहा
" हरदेवदास रघुनाथराय

कुस्टिया

गोराई नदीके किनारेपर बसा हुआ यह एक अच्छा ग्राम है। इसके समीप ईस्ट बंगाल रेल्वेको स्टेशन इसी नामसे पुकारा जाता है। रेल्वे शहरके मध्य भागमेंसे होकर जाती है। ग्राम होते हुए भी यहांकी चहल पहल अच्छी है।

जूटके व्यापारी

आर सिम कंपनी — नलगोला
के० जी० साह कम्पनी — ,,
चुन्नीलाल भैरोंदान — ,,
जे० लेजरस — ,,
सिम कंपनी — ,,
सोनाकांडा वेलिंग कम्पनी — ,,

जनरल मरचेण्ट्स

अमृतलाल पाल — नवाबपुर
एन० के० मित्र एण्ड को० — ,,
कालीचरण राधागोविन्द — फिराजगंज
कुंजविहारी पुष्पलाल — ,,
जनीन्द्रकुमार दास — मुगलटोली
मधुमोहन केशवलाल — फिराजगंज
रजनीकांत नवद्वीप — मुगलटोली
शशिनन्दन रविनन्दन — ,,
हरिमाधव वेनीमाधव — मौलवी बाजार
हरिचरण विरूपचरण — ,,

पेपर मरचेंटस

पर्वती चरणसिंह — मुगलटोली
पापुलर पेपर मार्ट — पटुआटोली
पार्वती चरण पाल — मुगलटोली
राधवल्लभ दास — ,,
सीतानाथ पाल — ,,

हार्डवेयर मरचेंटस

फनीन्द्रकुमार राधाकांत दास — मुगलटोली
दशरथ साह — बंसी बाजार
दीनानाथ राय — मीट फोर्ट रोड
पाप्युलर हार्डवेअर एण्ड को — पटुआटोली
पुष्परेपन साह — स्वारी घाट

फार्मेसी एण्ड मेडिकल हाल

अभय फार्मेसी
एम्परर मेडिकल हाल
केम्पबेल मेडिकल हाल
जार्ज मेडिकल हाल
ढाका शक्ति औषधालय
ढाका आयुर्वेदिक फार्मेसी
दी हाल फार्मेसी
प्युपिल फार्मेसी
सुधाराम फार्मेसी
स्टार मेडिकल हाल

इसके सिवाय बाबू गौरीशंकरजी की प्रायवेट फर्म रामचन्द्र गौरीशंकर के नामसे है जो मकानोंका किराया वगैरहका काम करती है।

मेसर्स मनीराम अर्जुनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सुरेका सज्जन हैं। यह फर्म यहां ५० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू मनीरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपके तीन पुत्र हुए। महादेवप्रसादजी, बिलासरामजी, तथा अर्जुनदासजी। इनमेंसे अभी अर्जुनदासजी विद्यमान हैं। इस समय बाबू अर्जुनदासजी तथा महादेवप्रसादजीके पुत्र हरिरामजी और किशनदयालजी इस फर्मका संचालन करते हैं। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया - मेसर्स मनीराम अर्जुनदास—यहां यह फर्म कपड़ेका सबसे ज्यादा व्यापार करती है। यहां ही आपकी दूसरी फर्मपर गल्ला और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—अर्जुनदास हरीराम, ४ मेहरापट्टी—यहां सराफी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

ग्वालंदो—अर्जुनदास द्वारकादास—यहां जूटका काम होता है।

बाबू अर्जुनदासजी यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं आप मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत और गौशालाके सेक्रेटरी भी हैं।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द मामराज

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके जैनधर्मावलम्बी सज्जन हैं। आप बिसाऊ (जयपुर) के निवासी हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू लक्ष्मीचन्दजी हैं। यह फर्म यहां ५० वर्षसे स्थापित है। आपके एक पुत्र है। जिनका नाम मामराजजी है। आपभी व्यापारमें भाग लेते हैं। आप मिलनसार हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया लक्ष्मीचन्द मामराज —कपड़ा तथा सरसोंके तेलका व्यापार होता है। यहां हार्डिंगके भिन्न-भिन्न तेलकी एजंसी है और एक सुरखी मिल है।

जूटके व्यापारी

आर सिम कंपनी नलगोला
के० जी० साह कम्पनी ,,
चुन्नीलाल भैरोंदान ,,
जे० लेजारस ,,
सिम कंपनी ,,
सोनाकांडा बेलिंग कम्पनी ,,

जनरल मरचेण्ट्स

अमृतलाल पाल नवाबपुर
एन० के० मित्र एण्ड को० ,,
कालीचरण राधागोविन्द फिराजगंज
कुंजबिहारी पुष्पलाल ,,
जतीन्द्रकुमार दास मुगलटोली
मधुमोहन केशवलाल फिराजगंज
रजनीकांत नवद्वीप मुगलटोली
शशिनन्दन रविनन्दन ,,
हरिमाधव बेनीमाधव मौलवी बाजार
हरिचरण विरूपचरण ,,

पेपर मरचेंटस

पर्वती चरणसिंह मुगलटोली
पापुलर पेपर मार्ट पटुआटोली
पार्वती चरण पाल मुगलटोली
राधवल्लभ दत्त ,,
मीनानाथ पाल ,,

हार्डवेअर मरचेंटस

फनीन्द्रकुमार राधाकांत दास मुगलटोली
दशरथ साह बंसी बाजार
दीनानाथ राय मीट फोर्ट रोड
पापुलर हार्डवेअर एण्ड को पटुआटोली
पुष्परंजन साह स्वारी घाट

फार्मेसी एण्ड मेडिकल हाल

अभय फार्मेसी
एम्परर मेडिकल हाल
केम्पवेल मेडिकल हाल
जार्ज मेडिकल हाल
ढाका शक्ति औषधालय
ढाका आयुर्वेदिक फार्मेसी
दी हाल फार्मेसी
प्युपिल फार्मेसी
सुधाराम फार्मेसी
स्टार मेडिकल हाल

दुनियामें अपनी कारीगरीके लिए मशहूर था। यहांकी मलमल इतनी महीन होती थी कि कई ...
पहनने पर भी उसमें अंग, प्रत्यंग दिखाई पड़ते थे। उस समयका इतिहास बतलाता है कि ए...
की बांसकी नलीमें इतना बड़ा मलमलके कपड़ेका थान भरा जाता था कि जिससे हाथी सम्पूर्ण
ढक जाय।

यहांके कारीगरोंने कपड़े बुननेकी कुशलता प्राप्त की हो सो बात नहीं है। प्रत्युत ...
भी कई कलाकौशलोंमें वे पारङ्गत थे। उस समय यहांके चांदी सोनेके इत्रदान आदि जेवर पर की
खुदाई एवम् पालिश संसारमें अपना एक प्रधान स्थान रखती थी। इसी प्रकारके और भी कई कलाकौशल
यहां विद्यमान थे। लेकिन समयकी गतिने इसे एकदम पलट दिया। जहां यहांके कपड़ों आदिके
लिये विदेशी लोग लालसा करते थे। आज यहांके लोग विदेशोंके कपड़ेका मुंह ताकते हैं। समयकी
गति बड़ी विचित्र है।*

वर्तमान व्यापार—प्राचीन समयकी तरह तो अब ढाकेमें कोई कला कौशलके काम नहीं
है। पर हां, शंखकी चूड़ियां, साबुन, इत्रदान, चांदी सोने पर नक्काशीका काम अब भी बहुत अच्छा
बनता है। इसका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

शंखकी चूड़ियां—यहां शंखकी चूड़ियोंका व्यापार बहुत जोरों पर है। अथवा यों कहना
चाहिये कि ढाकेको छोड़ शायद ही कहीं शंखकी चूड़ियां बनती हों। यहां इस कामके करने वाले
करीब १००० घर हैं। इस काममें यहांके कारीगरोंकी कारीगरी देखते ही बनती है। शंख जैसी
वस्तुको अपनी कुशलतासे ये लोग इतना सुन्दर रूप दे देते हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। इन
चूड़ियोंपरकी खुदाई एवम् आवश्यकतानुसार स्थान स्थानपर सोनेकी जड़ाईका काम बहुत सुन्दर
होता है।

चांदी सोनेके जेवर—इस काममें भी यह प्रसिद्ध है। खासकर इत्रदान, पानदान, गुलाब-
दान आदि शौकिया चीजोंपरकी कारीगरी तो यहां बड़ी अद्भुत होती है।

ढाकेका कपड़ा—मुसलमानी कालमें तो इस काममें ढाका संसार प्रसिद्ध था मगर आज
इसकी बड़ी शोचनीय हालत है। यहां आज भी इस कामके करने वाले करीब ९ हजार घर हैं।
मगर उन्हें किसी प्रकारकी सुविधा नहीं है इससे वे काममें उन्नति नहीं कर सकते। आजकल भी
यहांका कपड़ा ढाकेके नामसे प्रसिद्ध है। यहां धोती जोड़े, शर्टिंग, मलमल एवम् फोटका हाथका

---

* नोट—यदि इस विषयमें और अधिक पढ़ना चाहें तो इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें भारतका व्या-
पारिक इतिहास नामक विभागमें देखिये।

—सम्पादक

गोहाटी—नवरंगराय किशनदयाल फांसी बाजार T. A Nawarangrai—यहां जूट, गल्ला, मालों तथा चालानीका काम होता है।

डियरूगढ़—नवरंगराय उदयराम यहां आपकी २ तेलकी मिल हैं।

नौगांव (आसाम) नौरंगराय किशनदयाल – यहां जमींदारी और पाटका काम होता है।

सपाई (नौगांवा) नौरंगराय किशनदयाल—यहां जूटका काम होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण मोतीलाल

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है जहां इस पर मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संन्स नाम पड़ता है। यह फर्म वहां बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें बेंकर्समें दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। इसका तारका पता "Star" है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड (ब्रांच)
काशीनाथ वासीनाथ निताईगंज
गोपीनाथ पोद्दार ”
जयगोविन्द देवेन्द्रचन्द्र प्रभाचन्द्रराय चौधरी निताईगंज
नबीनराय चन्दन साह
सपाई गोपीनाथ

जूटके व्यापारी

आर० सिम कम्पनी सीतालख्या
एम० डेविड कम्पनी ”
कांचनपुर जूट कम्पनी ”
जगन्नाथ मगुर्लिकोत ”
गुहरचन्द चम्पालाल ”
जूट मन्युफेक्चरिंग कम्पनी ”
जे० सी० पाल सीतालख्या
तुलाराम बछराज ”
नवरंगराय नागरमल ”
नारायणगंज कम्पनी ”
बंगाल बेलिंग कम्पनी ”
बालमुकुन्द ओंकारमल ”
माइकल सडिस ”
रायली ब्रदर्स लिमिटेड ”
राधाकिशन मोतीलाल ”
लंदन डार्क कम्पनी ”
डाट ब्रदर्स ”
सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को ”
सोना कांदा बेलिंग कम्पनी ”

कपड़ेके व्यापारी

नागरधामी कुण्डू भगवानगंज ”

ढाकाके बने हुए कपड़ेके व्यापारी

चांदमोहन प्राणवल्लभ बेसाक नवाबपुर
जी० एन० नागदास ,,
जे० पी० बेसाक ,,
मंगलचन्द राधाश्याम ,,

सोना चांदीके व्यापारी

गोविन्द हरिधर पोद्दार इस्लामपुर
गोविन्दहरि प्रल्हादधर ,,
ठाकुरदास गोप ,,
नागरचन्द दे ,,
प्रसन्नकुमार सेन ,,
पारसनाथ दास ,,

जौहरी

चौधरी एण्ड० को० हरिप्रसन्नमित्र रोड
माखनचांद सेन इस्लामपुर
परसनाथ दत्त हरिप्रसन्नमित्र रोड
हरकचन्द जोहरी ,,

गल्लाके व्यापारी

अब्दुल रहमान व्यापारी इमामगंज
अरोज अली ,, रहमतगंज
आलमचन्द ,, बादामटोली
फदमअली ,, रहमतगंज
कन्हैयालाल घोष इमामगंज
गंगासागर साह रहमतगंज
जगतचन्द फणिभूषन्द साह रहमत गंज
जनाबअली व्यापारी बादामटोली
जोगेन्द्रचन्द्रधर इमामगंज
द्वारकनाथ किष्टकमल साह बादामटोली
रिकमुनअली ,,
हाकिम महम्मद हुसेन रहमत गंज

बतनोंके व्यापारी

कुञ्जलाल शतीशचन्द्रदास पत्थरहट्टा
प्यारीमोहन गोपीनाथ दास मुगलटोली
प्यारीमोहन कृष्टोदास ,,

शंखकी चूड़ियोंके व्यापारी

प्रेमचन्द्र सुर संखारी बाजार
रामगोपालधर ,,
सुरेशचन्द्र सूर ,,
हेमचन्द्र कर ,,

वाच मरचेण्ट्स

एस बनर्जी एण्ड को० पटुआ टोली
जी० बेसाक एण्ड को० पटुआ टोली
एन० बी० सूर इस्लामपुर

ट्रंक मरचेण्टस

कृष्णचन्द्र दास मौलवी बाजार
केशवलाल दास मुगलटोली
गोविन्दवल्लभ दत्त ,,
नगेन्द्रनाथ पाल ,,
पारसलाल शील ,,
मगनलाल गोप बंसी बाजार
मनीलाल सील मुगल टोली
रमेशचन्द्र जोगेशचन्द्र ,,
सीतानाथ पाल ,,
हरिमोहन शील ,,

नारायणगंज

नारायणगंज शीतालक्ष्या नामक नदीके किनारे बसा हुआ है। यह ए० बी० आर०
एक प्रधान व्यापारिक स्टेशन है। यहांके मोहल्ले दूर २ बसे हुए हैं। सुन्दरताकी दृष्टिसे इस शहर
कोई बात नजर नहीं आती। दूर २ बस्ती होनेसे यहां सफाई आदि अच्छी है।

व्यापार—व्यापारिक दृष्टिसे इस स्थानका बहुत बड़ा महत्व है। इसका कारण यह है कि
यहां व्यापार नदीके जल मार्ग एवं स्टेशनके थलमार्ग दोनों ही मार्गों द्वारा होता है। साथ ही यह
स्थान ऐसी जगह स्थित है कि इसके आस पास कई छोटी २ जूट की मंडियां हैं। इन मंडियोंसे
सारा जूट इसी शहरमें आता है और यहांसे स्टीमर द्वारा कलकत्ते भेजा जाता है। आजकल
भारतवर्षमें नारायणगंज ही एक ऐसा स्थान है जहांसे सबसे अधिक जूटकी रफ्तनी होती है। जूटका
व्यापार विशेष कर शीतालक्ष्या नदीके किनारे शीतालक्ष्या मोहल्लेमें होता है। यहां कई बड़े २ जूटके
खरीददारोंकी फर्में हैं। यहांसे करीब ५० लाखमन जूट प्रतिवर्ष बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त
कपड़ा, धान, चावल आदिका व्यापार भी यहां बहुत अच्छा है।

फैक्ट्रीज और इण्डस्ट्रीज—यों तो यहां चावलोंके मिल और जूटके प्रायवेट प्रेस बहुत हैं,
जिनका विवरण प्रथम दिया जा चुका है। मगर यहांकी खास वस्तु है यहांके काटन मिल्स। इनकी
संख्या दो है। प्रथम श्रीढाकेश्वरी काटन मिल और दूसरा लक्ष्मीनारायण काटन मिल है। प्रथम
पुराना मिल है। दूसरा अभी शुरू हुआ है। इन मिलोंमें धोती जोड़े, जनानी साड़ियां वगैरह अच्छी
बनती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स नवरंगराय नागरमल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह
फर्म यहां १२ वर्षसे स्थापित है। इसके संस्थापक बाबू नागरमलजी हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नागरमलजी, ओंकारमलजी, मालीरामजी, और
प्रल्हादरायजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नारायणगंज—नवरंगराय नागरमल—यहां जूटका व्यापार होता है T. A. "Nawarangrai"

कलकत्ता—„ „ ४३ काटनस्ट्रीट T. A. Nominator—यहां बैंकिंगका काम होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंके नाम इस प्रकार हैं। बाबू मथुरामोहन चौधरी, बा० अमरकृष्ण चौधरी, बाबू लालमोहन चौधरी, बाबू हरिदास चौधरी, बाबू कामिनी कुमार चौधरी, बाबू अश्विनीकुमार चौधरी, बाबू चन्द्रकुमार चौधरी, तथा बाबू श्रीशचन्द्र चौधरी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ चटगांव—मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा सदर घाट T. A. Ram—यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा बैंकिङ्गका बहुत बड़ा काम होता है।

२ चटगांव—मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा नमूना बाजार—यहां दियासलाईकी ऐजेन्सीका हेड आफिस है और धान, चावल, गल्ला माल तथा लकड़ीका काम होता है। यहां एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्टका काम भी है।

३ चटगांव—मेसर्स मथुरामोहन महेशचन्द्र चौधरी खतनगंज—यहां स्थानीय खपतका काम होता है। तथा सभी प्रकारका व्यवसाय है।

इसके अतिरिक्त चटगांव मुफस्सिलमें आपकी तीन दुकानें हैं तथा बासपर (नोआखोली) राजूमियां बजार और गुनवती इन स्थानोंपर भी आपकी फर्मे स्थापित हैं। कलकत्तेमें मेसर्स मथुरा मोहन चौधरीके नामसे ६७।४४ स्ट्राण्ड रोड पर आपकी दुकान है। जहां तम्बाकू और आर्डर सप्लाय का काम होता है।

—— ——

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान तो नाहणी जिला हिसार है। पर गत ८० वर्षोंसे आप लोग सीकर (जयपुर स्टेट) में रहते हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य जातिके सोमानी सज्जन हैं। लगभग ८० वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्व पुरुष सेठ मोतीलालजी सोमानीने मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलासके नामसे बर्माके अकयाब नामक प्रसिद्ध बन्दरमें इस फर्मकी स्थापनाकी। जहां आज भी इस फर्मके कारवारका हेड आफिस है। आरम्भमें इस फर्मपर कपड़ा और गल्लेका काम होता था पर वर्तमानमें सभी प्रकारका ऊंचा व्यापार होता है।

इस फर्मके मालिकोंने सीकर रेलवे स्टेशनपर १ लाखसे अधिककी रकम से एक धर्मशाला बनवायी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बृजलालजी सोमानी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी सोमानी तथा स्व० सेठ मोतीलालजीके पुत्र बाबू गुलाबचन्दजी और बाबू सागरमलजी, स्व० सेठ रामविलासजीके पुत्र बाबू मदनलालजी, स्व० प्रेमसुखजीके पुत्र बाबू रामप्रसादजी और रामनिवासजी हैं। सेठ बृजलालजी हेड आफिसका काम देखते हैं हैं

नारायणगंज

नारायणगंज सीतालक्ष्या नामक नदीके किनारे बसा हुआ है। यह ए० बी० आरलाइनका एक प्रधान व्यापारिक स्टेशन है। यहांके मोहल्ले दूर २ बसे हुए हैं। सुन्दरताकी दृष्टिसे इस शहरमें कोई बात नजर नहीं आती। दूर २ बस्ती होनेसे यहां सफाई आदि अच्छी है।

व्यापार—व्यापारिक दृष्टिसे इस स्थानका बहुत बड़ा महत्व है। इसका कारण यह है कि यहां व्यापार नदीके जल मार्ग एवं रेल्वेके थलमार्ग दोनों ही मार्गों द्वारा होता है। साथ ही यह स्थान ऐसी जगह स्थित है कि इसके आस पास कई छोटी २ जूट की मंडियां हैं। इन मंडियोंसे सारा जूट इसी शहरमें आता है और यहांसे स्टीमर द्वारा कलकत्ते भेजा जाता है। आजकल भारतवर्षमें नारायणगंज ही एक ऐसा स्थान है जहांसे सबसे अधिक जूटकी रफ्तनी होती है। जूटका व्यापार विशेष कर सीतालक्ष्या नदीके किनारे सीतालक्ष्या मोहल्लेमें होता है। यहां कई बड़े २ जूटके खरीददारोंकी फर्में हैं। यहांसे करीब ५० लाखमन जूट प्रतिवर्ष बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त कपड़ा, धान, चावल आदिका व्यापार भी यहां बहुत अच्छा है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज—यों तो यहां चावलके मिल और जूटके प्रायवेट प्रेस बहुत हैं, जिनका विवरण प्रथम दिया जा चुका है। मगर यहांकी खास वस्तु है यहांके काटन मिल्स। इनकी संख्या दो है। प्रथम श्रीढाकेश्वरी काटन मिल और दूसरा लक्ष्मीनारायण काटन मिल है। प्रथम पुराना मिल है। दूसरा अभी शुरू हुआ है। इन मिलोंमें धोती जोड़े, जनानी साड़ियां वगैरह अच्छी बनती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स नवरंगराय नागरमल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म यहां १२ वर्षसे स्थापित है। इसके संस्थापक बाबू नागरमलजी हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नागरमलजी, ओंकारमलजी, मालीरामजी, और मदनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नारायणगंज—नवरंगराय नागरमल—यहां जूटका व्यापार होता है T. A. "Nawarangrai"

कलकत्ता—„ „ ४३ स्ट्रान्डरोड T. A. Nominator—यहां बैंकिंगका काम होता है।

चांदपुर

यह ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसा हुआ एक अच्छा नदी बंदर है। यहांसे नारायणगंज, ग्वालंदो, कलकत्ता आदि स्थानोंको स्टीमर जाते हैं। यह आसाम बंगाल रेलवेका स्टेशन है। ब्रह्मपुत्र होनेके कारण रेलवे यहीं रुक जाती है। यहांके मकान प्रायः चद्दर और बांसोंके होते हैं।

चांदपुरके आसपास सुपारी बहुतायतसे पैदा होती है इसके पास ही चौमुहानी नामक सुपारीकी प्रसिद्ध मंडी है। यहांसे बाहर बहुत सुपारी भेजी जाती है।

इसके सिवाय यहां नावों द्वारा आसपासके देहातोंसे जूट आकर बिकता है। यहांके व्यापारी जूट खरीदकर कलकत्ता भेज देते हैं। मतलब यह है कि चांदपुरसे सुपारी व जूट बाहर जाता है तथा कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे आकर बिकता है।

मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहां यह फर्म दुकानदारी एवम सुपारीका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके कमीशनके काम करनेवालोंमें दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी हैं।

मेसर्स गोवर्धनदास चौथमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान सीकर (जयपुर स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके गोयल सज्जन हैं। आजसे लगभग १० वर्ष पूर्व सेठ गोवर्धनदासजीने इस फर्मकी स्थापना चांदपुरमें की थी। प्रारम्भमें इस फर्मपर गल्ला, चीनी, मैदा तथा तेलका व्यापार आरम्भ हुआ जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोवर्धनदासजी तथा आपके पुत्र बाबू शिवनारायणजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

चांदपुर—मेसर्स गोवर्धनदास चौथमल—यहां गल्ला, चीनी, मैदा और तेलकी थोक बिक्रीका काम होता है और प्रायवेट बैंकिंगका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गोवर्धनदास चौथमल ४३ मुरगीहट्टा—यहां सूतका व्यापार होता है।

गोपीनाथ पोद्दार निताईगंज

काशीनाथ वासीनाथ ,,

सचाई गोपीनाथ ,,

गल्लेके व्यापारी एवं आढ़तिया

आनन्द रामचन्द्र पाल भगवानगंज

कैलाशचन्द्र वृन्दकांत निताईगंज

जयगोविन्द देवेन्द्रचन्द्रराय चौधरी ,,

जगन्नाथ पूर्णचन्द्र साह ,,

जगन्नाथ जशोदालाल भगवानगंज

बंकविहारी साह निताईगंज

मदनमोहन आशुतोष ,,

रजनीकांत राधाकांत ,,

रविदास नंदकुमार साह भगवानगंज

हरदेवदास गनेशनारायण ,,

हाड्याली वृंदावन निताईगंज

जनरल मरचेंट्स

विपिन विहारी साह भगवानगंज

राधावल्लभ राधिकामोहन साह भगवानगंज

बर्तनोंके व्यापारी

नागचन्द्र कुंजविहारीपाल भगवानगंज

तेलके व्यापारी

घनश्यामदास वैजनाथ निताईगंज

राधाकिशन श्रीनिवासदास ,,

इमारती लकड़ीके व्यापारी

मोतीलाल राधाकिशन टान बाजार

टीनके व्यापारी

भागचन्द दुलीचन्द सोनी बन्दर

बेंतके व्यापारी

मेसर्स गोपालराय सेवाराम

(देखो आसाम पेज नं०१६)

,, रामरिखदास गंगाप्रसाद

(देखो आसाम पेज नं०१६)

मैमनसिंह

यह स्थान ढाका जिलेका एक प्रधान स्थान है। यहां विशेषकर जूटहीका व्यापार है। इसी व्यापारके हेतु यहां अच्छी गनिविधी है। आसपासके देहातोंसे यहां नदी द्वारा माल आता है, और फिर नारायणगंज होता हुआ कलकत्ता जाता है। जूटकी खरीद करनेवाले कई व्यापारियोंकी यहां फर्म स्थापित हैं। यह व्यापार प्रायः शहरसे २ मीलकी दूरीपर जूट आफिस नामक स्थानमें होता है। इसके अतिरिक्त यहां कपड़े एवं चद्दरका व्यापार भी बहुत अच्छा है।

मैमनसिंह नगर ए० बी० रेलवेके अपनेही नामके स्टेशनसे पासही बसा हुआ है। इसकी बस्ती साधारण है। हां, नदीकी सीमा पासही आजानेसे इसकी सुन्दरता अवश्य बढ़ गई है।

व्यापारीकी फर्मपर भेजते हैं। कलकत्ते जूट व्यवसायी यहांकी मिलोंसे पहिले ही कण्ट्राक्ट कर रखते हैं। ज्योंही जूट आना आरम्भ हुआ कि गांठ बांध २ कर ये लोग कण्ट्राक्टका माल सप्लाई करते हैं। इस प्रकार जूट केन्द्रोंके स्थानीय व्यापारियोंके पारस्परिक सहयोगसे कलकत्तेके जूट व्यवसायी अपनी फर्में जूट केन्द्रोंमें खोलकर जूटकी खरीदीका काम करते हैं। यही प्रधान कारण है कि जूट केन्द्रोंमें वहांके स्थानीय व्यापारी तो प्रायः प्रकट रूपमें नहीं देखेंगे पर कलकत्तेके व्यापारियों की फर्में अवश्य ही मिलती हैं। इसी लिये फरीदपुरके जूट व्यापारियोंका हम नाम नीचे दे रहे हैं इनका इच्छित परिचय कलकत्ता विभागमें मिलेगा।

१ मेसर्स नौरंगराय नागरमल—फरीदपुर, हेड आफिस—४३ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

२ मेसर्स डालूराम गोगनमल—फरीदपुर, हेड आफिस १७८ हरिसन रोड कलकत्ता।

३ लक्ष्मीनारायण रामकुमार—फरीदपुर, हेड आफिस ४३, ४४ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

४ मेसर्स गणपतराय मुरलीधर—फरीदपुर, हेड आफिस १७८ हरिसन रोड कलकत्ता।

ग्वालंदो

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी इसी नामकी स्टेशनके पास बसा हुआ है। ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे बसा होनेसे रेलवे यहींतक जा सकती है। यहांसे चांदपुर स्टीमर जाता है इस ग्रामके मकान टीनके बने हुए हैं। जब ब्रह्मपुत्रमें पानी बढ़ जाता है तब ग्रामके लोग एक स्थानसे उठकर दूसरे स्थानपर अपने मकान बना लेते हैं। ब्रह्मपुत्रका बहाव अनिश्चित रहता है यह कभी एक तरफ और फिर कभी दूसरी तरफ बहने लग जाता है। इसलिये ग्राम भी कभी यहां तो कभी वहां बस जाता है। ग्रामकी निश्चित स्थिति न होनेसे कोई पक्के मकान नहीं बनाते। चहरका मकान बना लेते हैं। यहांके मकानोंके नींव नहीं होती इनके नीचे मजबूत लकड़ियां गाड़कर उसीपर मकान बना लेते हैं। जिससे पानी भरा रहनेपर भी मनुष्य मकानोंमें सो सकते हैं। यह हालत यहींकी नहीं बरन ब्रह्मपुत्रके किनारेपर बसे हुए करीब २ सभी ग्रामोंकी है।

ग्वालंदो कई हिस्सोंमें विभक्त है जैसे ग्वालंदो नंबर १ नंबर २ इत्यादि। इतने हिस्से होनेका एकमात्र कारण ब्रह्मपुत्रका अनिश्चित प्रवाह ही है। यहांपर विशेषकर जूटका व्यवसाय है। आसपासके ग्रामोंसे नावोंमें जूट आता है व्यापारी उसे खरीदकर कलकत्ता भेज देते हैं। कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे यहां आकर बिकता है। यह स्थान जूटकी अच्छी मंडी माना जाता है।

चटगांव

यह नगर कर्णफूली नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। [illegible] पहले यह आराकान [illegible] था। [illegible] और [illegible] है। [illegible] धान आदिका [illegible] है। [illegible] गांठें [illegible] है। और [illegible] है। [illegible] भी [illegible] है। [illegible] है। इसके [illegible] भी [illegible] है।

इस बंदरमें ४ जेटी हैं जो रेलवे कम्पनीकी हैं और जिनमें माल चढ़ाने उतारनेके लिये क्रेन मशीनोंकी सुविधाका प्रबन्ध है। रेलवेके पास गोदाम भी हैं जिनमें धानके बोरे, रुईकी गांठें, पाटकी गांठें आदि स्टोर किये जाते हैं सिर्फ तेलके व्यवसायकी सुविधाके लिये तेल लाने और ले जानेवाले जहाजोंके लिये भी अलग प्रबन्ध है। जहाजोंकी मरम्मतकी भी सुविधा है।

यहांकी प्रधान व्यापारिक संस्था चटगांव चेम्बर आफ कामर्स है। इसकी स्थापना १९०६ ई० में हुई थी। यह की व्यापारियोंके बीचका व्यापार सम्बन्धी झगड़ा भी निपटाती है।

यहांके व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा

इस फर्मके मूल संस्थापक बाबू रामकमल शाहाने आजसे लगभग सौ वर्ष पूर्व चटगांव आकर मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहाके नामसे यह फर्म स्थापित की। उस समयसे यह फर्म निरन्तर इज्जतसे व्यवसाय करती आ रही है। और चटगांवमें महाजनी व्यवसाय करनेवाली भारतीय फर्मोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा माना जाता था।

यों तो यह फर्म सभी प्रकारका व्यवसाय करती है पर प्राइवेट बैंकिङ्ग; सामान्य प्रकारकी वस्तुओंका व्यवसाय; धान, चावल, रुई, लोहा (Corrogated iron), शक्कर नमक, तम्बाकू, मीठा तेल आदिका काम विशेषरूपसे है। उपरोक्त व्यवसायके अतिरिक्त बर्मा आइल कम्पनीकी सोल ऐजेन्सी चटगांव और नोआखालीके जिलोंके लिये इसी फर्मके हाथमें है। इसी प्रकार ११ जिलोंके लिये यह फर्म स्वीडिश मैच कम्पनी नामक दियासलाईकी कम्पनीकी सोल एजेन्ट है।

मेसर्स हीरानन्द बालाबक्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बालाबक्सजी, आपके भाई अनन्तरामजी और आपके पुत्र बाबू चिमनलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके रतननगर निवासी सज्जन हैं। करीब ७ वर्षसे यह फर्म यहां स्थापित है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हीरानन्द बालाबक्स १७१ ए हरिसन रोड—यहां हेड आफिस है और कपड़ेकी आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है।

ग्वालन्दो (जि० फरीदपुर) मेसर्स हीरानंद बालाबक्स ग्वालन्दो घाट—यहां ब्रांच आफिस है। यहां धान, चावल, तथा जूटकी आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है। नं० ६ ग्वालन्दो बाजारमें इस फर्मका जूट प्रेस है।

जूट और गल्लेके व्यापारी

२ मेसर्स बद्रीदास मोतीलाल—ग्वालंदो, हेड० आ० ४६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
३ मेसर्स शंकरमल राधाकिशन—ग्वालन्दो, हेड० आ० ४६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
४ मेसर्स गजानन्द ज्वालादत्त—ग्वालन्दो, हेड० आ० ४३, ४४ काटन स्ट्रीट कलकत्ता
५ मेसर्स लक्ष्मीनारायण महादेव—ग्वालन्दो, हेड आफिस ४६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
६ मेसर्स मालमचंद सूरजमल—ग्वालन्दो, हेड० आ०—बैंक बाजार कलकत्ता
७ मेसर्स रतनचंद जौहरीलाल—ग्वालन्दो, हेड० आ० १६ सेनागाग स्ट्रीट कलकत्ता
८ मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द—ग्वालन्दो, हे० आ० २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट कलकत्ता

वर्द्धमान

वर्द्धमान इस्ट इण्डिया रेल्वेको हवड़ा देहली मेन लाईनका अच्छा शहर है। यह कलकत्ते से ६७ मीलकी दूरीपर स्थित है। यहांके व्यापारका विशेष सम्बंध कलकत्तासे है। इसकी बसावट बहुत बड़ी एवम लम्बी है। प्रधान व्यापार चावल, तेल एवम धानका है। यही यहांसे बाहर जाते हैं। चावल एवम तेलके यहां कई मिल हैं।

यहांके चावलोंमें रामदयालदेके मिलका चावल बहुत प्रसिद्ध है। यहांसे इन्दौर प्रभृति सेन्ट्रल इण्डियाके शहरोंतक चावल जाता है। यहांके व्यापारियोंकी सुविधाके लिये कलकत्ते और यहांके बीच कई ट्रेनें दौड़ती हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकयाब—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास तारका पता—Nadriwalla—यहां फर्मका हेड आफिस है तथा धान, चावल, सोना, चांदी, कपड़ा, सूत और बैंकिंगका काम होता है। अकयाब जिलाके लिये बर्मा आइल कम्पनीकी सोल एजेंसी भी इसके पास है।

कलकत्ता—मेसर्स रामविलास रामनारायण १६२ क्रास स्ट्रीट T. A. Gold Silver—यहां कपड़ेकी चलानीका काम होता है।

रंगून—मेसर्स मोतीलाल प्रेमसुखदास ६३६ मर्चेण्ट स्ट्रीट तारका पता Somani—यहां बैंकिंग और धान चावलके शिपमेंटका काम होता है।

चटगांव मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास लामा बाजार और स्ट्राण्ड रोड T.A. Nadriwalla—यहां बैंकिंग, धान चावलका बहुत बड़ाकाम होता है।

सांडवे—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास तारका पता Nadriwalla—यहां धान, चावलका बहुत बड़ा काम होता है। यहां इस फर्मका लकड़ीका एक कारखाना है। रेलवे कण्ट्राक्ट और इमारती लकड़ी सप्लाईका काम भी होता है।

खुलना—मेसर्स रामविलास रामनारायण—यहां जूटका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण जोखीराम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुरमें) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ३० वर्षोंसे व्यवसाय कर रही है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी तथा सेठ जोखीरामजी हैं। आप ही इसके संस्थापक हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चटगांव—मेसर्स लक्ष्मीनारायण जोखीराम लामा बाजार—यहां चीनी, गल्ला और किरानेका बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म चीनीका डायरेक्ट इम्पोर्ट करती है। महाजनीका काम भी होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामजसराय आसाराम १७३ हरिसन रोड—इस फर्मके द्वारा चीनी, किराना आदिकी खरीदी कर चटगांवकी फर्मको माल भेजा जाता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सीतारामजीके पुत्र बाबू बनारसीलालजी, जानकीलालजी के पुत्र मोहनलालजी, शिवदत्तरायजीके पौत्र बिलासरामजी और कालूरामजीके पुत्र प्रल्हादरायजी हैं। सीतारामजी, जानकीलालजी, शिवदत्तरायजी और कालूरामजी सब भाई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—जानकीदास हरिप्रसाद—यहां गल्ला और आढ़तका काम होता है।

दुबराजपुर—(वीरभूमि) सीताराम प्रल्हादराय—यहां चावल और आढ़तका काम होता है।

सूरजगढ़ (मुंगेर) सुखदेवदास सीताराम—यहां बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है।

अभयपुर (मुंगेर) सुखदेवदास कालूराम—यहां बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स महादेवलाल रामनिवास बजाज

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक सीकरके (जयपुर) मूल निवासी हैं। आपने अग्रवाल वैश्य जातिमें जन्म ग्रहण किया है। इस फर्मके स्थापक बाबू महादेव लालजी देशसे कलकत्ता आये और यहीं अपना व्यापार प्रारम्भ किया। आपने अपनी व्यापार कुशलता एवं मेधावी शक्तिसे व्यापारमें अच्छी सम्पत्ति पैदाकी। करीब ४० वर्ष पहले आपने महादेवलाल मिलके नामसे यहां एक तेलकी मिल खोली। जो अभी तक सफलता पूर्वक चल रही है। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू महादेवलालजीके पुत्र बाबू रामनिवासजी हैं। आप मिलनसार एवम सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—मेसर्स महादेवलाल रामनिवास—यहां बैंकिंग, आढ़त और तेलका व्यापार होता है। यहां आपकी एक तेलकी मिल भी है।

मेसर्स विसेसरलाल बद्रीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके झूंझनू वाला सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू बल्देवदासजी तथा आपके भाई मंगलचन्दजी थे। उस समय इस फर्मपर मंगलचन्द बल्देवदास नाम पड़ता था। बाबू बल्देवदासजीके तीन पुत्र हुए। जगन्नाथजी, विसेसरलालजी और केदारनाथजी। भाइयोंमें हिस्सा हो जानेसे करीब ८ सालसे यह फर्म उपरोक्त नामसे व्यवसाय कर रही है

मेसर्स जयनारायण मथुरालाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान फतेपुर सीकर (जयपुर स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके सराफ सज्जन हैं। गत सम्वत् १९६६ में इस फर्मकी स्थापना सेठ जयनारायणजी तथा आपके भाई मथुरालालजीने चांदपुरमें की थी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मथुरालालजी बाबू मोतीलालजी (स्व० जयनारायणजीके पुत्र) तथा सेठ मथुरालालजीके पुत्र बाबू चौथमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चांदपुर—मेसर्स जयनारायण मथुरालाल—यहां आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है।

चौमुहानी—(नोआखाली जि०) मेसर्स जयनारायण मथुरालाल—यहां केवल सुपारी पैदा होती है और इसीकी आढ़तका बहुत बड़ा काम यहां होता है। यह फर्म देसावरोंकी खरीदी कर सीधा माल उन्हें भेजती है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सूरजमलजी जालान एवम् नागरमलजी बाजोरिया हैं। आप अग्रवाल वैश्य हैं। कलकत्तेमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका हनुमान जूट मिल नामक एक प्राइवेट मिल भी है। इसका विशेष परिचय कलकत्तेके मिल ओनर्समें दिया गया है। यहां यह फर्म जूटका व्यापार करती है।

फरीदपुर

यह नगर बंगाल प्रान्तमें है। यह बंगालके प्रधान जूट केन्द्रोंमें माना जाता है। बंगालके जूट केन्द्रोंमें प्रायः देखा जाता है कि वहांके स्थानीय व्यापारी कलकत्तेके जूट व्यवसायियोंसे फसलमें अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। फलतः कलकत्तेके व्यवसायियोंकी ओरसे जूट केन्द्रोंमें प्रबन्ध किया जाता है। और वहां कुछ ऐजेन्ट भी फसलपर पहुंच जाते हैं। वहांके स्थानीय व्यापारी जूट बोनेवालोंको आरम्भमें ही आर्थिक सहायता दे रखते हैं अतः फसलपर वे लोग इन्हीं व्यापारियोंके हाथ अपना जूट बेंच देते हैं। स्थानीय व्यापारी कलकत्ते वालोंकी आर्थिक सहायतासे उनके ऐजेन्टोंकी उपस्थितिमें जूट खरीदते और गांठ बांध २ कर माल कलकत्ते वाले

मेसर्स अर्जुनदास द्वारकादास

इस फर्मका हेड आफिस कुस्टियामें है। यहां यह फर्म ५० वर्षसे स्थापित है। इसके वर्तमान मालिक अर्जुनदासजी तथा आपके भतिजे हरिरामजी और किशनदयालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय कुस्टियामें दिया गया है। यहां यह फर्म जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा

इस फर्मके मालिक बाबू दानचन्दजी चोपड़ा हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी और भी शाखाएं हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३६ में दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। यह फर्म यहां सबसे बड़ी मानी जाती है।

मेसर्स गणेशदास सागरमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुरस्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके पोगेदिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ३५ वर्षोंसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ गणेशमलजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र बाबूलालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ग्वालन्दो (जि० फरीदपुर) मेसर्स गणेशदास सागरमल यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां आढ़तका बड़ा काम होता है। यहां ग्वालन्दोके लिये आपके पास बर्मा आइल कम्पनीकी एजेन्सी है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास जगन्नाथ १७१ हरीसन रोड—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मालमचंद सूरजमल

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहां यह फर्म जूटकी खरीदी, आढ़त एवम् बैंकिंग व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स तिलोकचन्द मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लाडनूं (जोधपुर) है। आप ओसवाल जातिके भूतोड़िया सज्जन हैं। वर्द्धमानमें यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी स्थापना करीब १२० वर्ष पूर्व हुई थी। इसकी स्थापना सेठ गंगारामजी भूतोड़िया द्वारा हुई। गंगारामजीके तीन पुत्र थे। श्रीतिलोकचन्दजी, छोटूलालजी तथा बीजराजजी। यह फर्म इनमेंसे सेठ तिलोकचन्दजी की है। सेठ तिलोकचन्दजीके भी तीन पुत्र हुए। श्रीनेमीचन्दजी, हजारीमलजी तथा मोहनलालजी। उपरोक्त फर्म सेठ मोहनलालजीकी है। आप बड़े व्यापार दक्ष पुरुष थे आपका स्वर्गवास संवत् १६७७ में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोहनलालजीके पुत्र जैचन्दलालजी हैं। आपके भाई श्री खेमचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। आपके विजयचन्दजी एवम महालचंदजी नामके दो पुत्र हैं

जैंचन्दलालजीके पुत्रका नाम श्रीरावतमलजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धमान—मेसर्स तिलोकचन्द मोहनलाल—यहां आपकी जमींदारी है। तथा बैंकिङ्ग बिजनेस होता है।
राजशाही—मेसर्स मोहनलाल जैचन्दलाल ,, ,,

मेसर्स बनवारीलाल पांजा

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप बंगाली क्षत्रिय सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसका स्थापन बाबू बनवारीलालजी पांजाने किया। इस फर्मकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू बनवारीलालजीके पुत्र डा० शचीन्द्रनाथ पांजा, बाबू प्रफुल्लकुमार पांजा, और बाबू राधेश्याम पांजा हैं। आप सब लोग अपनी फर्मका संचालन करते हैं। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

वर्द्धमान—मेसर्स बनवारीलाल पांजा (F. A. 'Panja) यहां बैंकिंग, जमींदारी, चांवलका एक्सपोर्ट व मार्को गल्ला आदिके इम्पोर्टका काम होता है।

कटवा (वर्द्धमान)—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है

कलकत्ता—मेसर्स बनवारीलाल पांजा नं० ८ धर्मटोला स्ट्रीट-कलकत्ता, यहां आढ़तका व्यापार होता है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल—मेसर्स सीताराम रामचन्द्र—यहां बैंकिंग, जमींदारी और गल्लेका काम होता है। इस फर्म कोयलेकी खनकी मालिक भी है।

गल्लेके व्यापारी

ज्वालाप्रसाद मन्नालाल

नौरंगीलाल हरकिशन

बलदेवदास भीमराज

रामकुमार मन्नालाल

सीताराम रामचन्द्र

कपड़ेके व्यापारी

बालमुकुन्द बनारसीलाल

मक्खनलाल महादेव

रामप्रताप रामचन्द्र

जनरल मरचेंट्स

दुर्गा स्टील ट्रंक फेक्टरी

मनोर घाटी

सत्तो घाटी

मोटरके सामानके व्यापारी

महम्मद दीन पंजाबी

नूरदीन मिस्त्री

बराकर

यह ईस्ट इण्डिया रेलवेकी इसी नामकी एक छोटीसी स्टेशनके समीप ही बसा हुआ है। यह ग्राम बराकर नामक नदी पर बसा हुआ है। इसी नदीके नामसे ही यह ग्राम भी बराकरके नामसे पुकारा जाता है। बराकर छोटा ग्राम है। इसके रास्ते बहुत संकीर्ण है। यहांकी सड़कें जर्जर होगई है ग्रामकी सफाईकी ओर जनताका विशेष ध्यान नहीं है ऐसा मालूम होता है।

यहां धान पैदा होता है धान हीका व्यापार यहां होता है व्यापारी यहांसे धान, चांवल बाहर भेजते हैं, कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे आकर यहां बिकता है। और आसपासके आदमी यहांसे माल खरीद कर ले जाते हैं। यहांके व्यापारियोंकी झरिया नामक स्थानमें कई कोलियारियां हैं।

मेसर्स गोपालराय हरमुखदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लोयल (राजपूताना) का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन है। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है। पहले इस फर्मपर मेसर्स
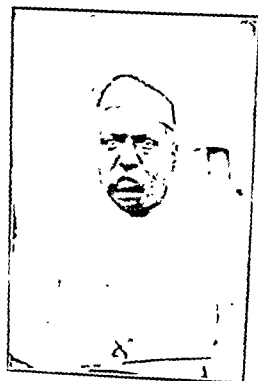
बुनने, हाथी दांतका उत्तम माल तैयार करने और गंगा जमुनी कारीगरीने अच्छी उन्नति की जो आज भी किसी न किसी रूपमें यहां अवश्य ही जीवित है। अजीमगंजके पास बैलडांगा और गंगीपुरमें रेशमके कीड़े पालकर रेशम तैयारकी जाती है। और इसीसे मुर्शिदाबादके कारीगर रेशमी माल तैयार करते हैं। अब हम यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

मेसर्स निहालचंद डालचंद सिंघी

इस फर्मका विस्तृत परिचय कलकत्तामें जूट बेलर्स और शीपर्स विभागमें पृष्ठ ५८४ में दिया गया है। कलकत्तेमें यह फर्म जूट एक्सपोर्टका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी हैं। आपका कुटुम्ब अजीमगंजमें एक लम्बी अवधिसे निवास कर रहा है। तथा यहांके प्रतिष्ठित जमीदार और धनिक कुटुम्बोंमें माना जाता है। स्वर्गीय बाबू हरीसिंहजी, बाबू निहालचंदजी तथा बाबू डालचन्दजी सिंघीने अपने धार्मिक कार्योंसे ओसवाल जैन समाजमें बहुत बड़ी ख्याति पाई है। बाबू डालचन्दजी सिंघी अपने स्वर्गवासी होनेके समय कई लाख रुपयोंकी सम्पत्ति अपने रिस्तेदारोंमें वितरित कर गये थे। आपकी अजीमगंज फर्मपर जमीदारी और बेंकिंग काम होता है।

मेसर्स पंजीराम मौजीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्वर्गीय बाबू इन्द्रचन्द्रजीके पुत्र बाबू पूरनचंदजी और ज्ञानचन्दजी नाहटा हैं। बालूचरमें करीब १०० वर्ष पूर्वसे आपका कुटुम्ब निवास कर रहा है। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कलकत्तामें बैंकर्स विभागमें पृष्ठ २५८ में दिया गया है।

मेसर्स प्रसन्नचंद फतेसिंह

यह फर्म आसाम और बंगालके ख्याति प्राप्त महानुभाव राय मेघराज बहादुरके छोटे पुत्र बाबू प्रसन्नचन्दजी की है। राय मेघराज बहादुरका स्वर्गवास सन १९०१ में हुआ। सन् १९०२ में आपके पुत्र बाबू आलिमचन्दजी और बाबू प्रसन्नचन्दजीका कारबार अलग अलग हो गया। बाबू प्रसन्नचन्दजीका स्वर्गवास १९०७ में हुआ। आपके ३ पुत्र हुए बाबू भैंवरसिंहजी कोठारी, फतेसिंहजी कोठारी और चन्द्रपतसिंहजी कोठारी, जिनमें दो भाई बहुत थोड़ी वयमें स्वर्गवासी हो गये हैं। बा० प्रसन्नचंदजीकी माताका स्वर्गवास १९२७ में करीब ८८ वर्षकी आयुमें हुआ।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू बिसेश्वरलालजी तथा इनके पुत्र बाबू गोकुलचन्द और केदारनाथजीके पुत्र बाबू बद्रीप्रसादजी हैं।

बाबू बद्रीप्रसादजी स्थानीय म्युनिसिपैल्टीके मेम्बर हैं। आप देशभक्त एवं स्वदेशी भक्त धारी हैं। आप स्थानीय तिलक पुस्तकालयके प्रेसिडेन्ट हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रानीगंज—बिसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद—T. A Bisseswarlall यहां बैंकिंग, गल्ला, सीमेन्ट, इमारती लकड़ी और कोयलेका व्यापार होता है। यहां आपकी तेल और चावलकी मिल है और कोयलेकी खदान है।

रानीगंज—श्री लक्ष्मी भण्डार, बद्रीप्रसाद गोकुलचन्द—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—बलदेवदास बिसेश्वर लाल—७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No 710 BB—यहां बैंकिंगका काम होता है।

आसनसोल—बिसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद—यहां बैंकिंग तथा लकड़ीका काम होता है।

मेसर्स वासुदेव केदारनाथ

इस फर्मके मालिक फतेपुर निवासी बाबू वासुदेवजी, मंडावा निवासी बाबू केदारनाथजी तथा मदनलालजी हैं। आप तीनों अग्रवाल हैं। आप तीनोंका उपरोक्त फर्ममें साझा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—मेसर्स वासुदेव केदारनाथ—यहां तेल, गल्ला, सिमेन्ट तथा चालानीका काम होता है। इसकी एक शाखा दुबराजपुर (वीरभूमि) में है।

कलकत्ता—बस्तीराम द्वारका प्रसाद, ४ केदारपट्टी—यहां कपड़ेकी चालानीका काम होता है। इसमें वासुदेवजी तथा केदारनाथजीका साझा है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड (सब एजन्सी)

मेसर्स बिसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स ईसरदास बंशीधर

" चुन्नीलाल रामचन्द्रदास

" [illegible]

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल श्रीदुर्गा स्टील ट्रङ्क फेक्टरी—यहां कुरसी, स्टील ट्रङ्क, सूटकेस वगैरह बनते और बिकते हैं।

आसनसोल - दुर्गा स्टील ट्रङ्क हाउस—यहां स्टील ट्रङ्क सूटकेस आदि बिकते हैं।

पुरुलिया - मेसर्स मूंगीलाल दुर्गादत्त—यहां उपरोक्त काम होता है।

पुरुलिया—दिल्ली स्टील ट्रङ्क हाउस - यहां भी उपरोक्त काम होता है

बराकर—मेसर्स मूंगीलाल दुर्गादत्त—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुमार मन्नालाल

इस फर्मके मालिक मुकन्दगढ़ (जयपुर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके केडिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब २८ वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू रामकुमारजी हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं।

आपकी ओरसे मुकन्दगढ़में धर्मशाला और मंदिर बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल—मेसर्स रामकुमार मन्नालाल—यहां बेङ्किग, गल्ला और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू विसेश्वरलालजी, गोकुलचन्दजी एवम बद्रीप्रसादजी हैं। इस फर्मका हेड आफिस रानीगंज है। इसका विशेष परिचय रानीगंजमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैकिंग लकड़ी एवम सिमेंटका व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिंवाला (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू सीताराम जी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू सीतारामजीके पुत्र बाबू रामचन्द्रजी हैं। आप यहांकी कोर्टके जूरी रह चुके हैं।

स्व० राय लक्ष्मीपतसिंह बहादुर

स्व० राय धनपतसिंह बहादुर

स्व० राय मेघराज सिंहजी बहादुर, कैसरे हिन्द

श्री महाराज बहादुर सिंहजी

जमींदारी खरीद की। आप बहुत धार्मिक मनोवृत्तिके महानुभाव थे, एवं बंगालके जैन समाजमें प्रतिष्ठा सम्पन्न नेता मानेजाते थे। आपने कई स्थानोंपर जैन मंदिरोंका निर्माण कराया, पब्लिकके कामोंमें बड़ी बड़ी रकमें भेंटकी। अपनी जातिके सैकड़ों व्यक्तियोंके उत्थानमें आपने बड़ी उदारता दिखाई, आपका आश्रय पाये हुए आज सैकड़ों लखपति व्यापारी हैं। दिल्लीके बादशाह और बंगालके नवाबने खिलत बख्शकर आपका सम्मान किया था। बंगालके जैन समाजमें आप सबसे बड़े जमींदार थे। आपने पालीताना और सम्मेद शिखरजीकी यात्राके लिये एक पैदल संघ निकाला, जिसमें बंगालके सैकड़ों कुटुम्ब आमंत्रित किये गये थे। उस यात्रामें आपने शत्रुंजय तीर्थमें कार्तिकी पौर्णिमापर नौकारसीका बड़ा भारी जीमन किया, तबसे यह प्रथा आपके परिवारमें बराबर चली आती है। और प्रति वर्ष पालीतानामें दस पंद्रह हजार आदमियोंका नौकारसीका जीमन होता है। इस प्रकार पूर्ण गौरव का जीवन व्यतीत करते हुए सन् १८६० में आप स्वर्गवासी हुए। अपने स्वर्गवासी होनेके कुछ ही मास पूर्व, आप अपने पुत्र लक्ष्मीपतसिंहजी और धनपतसिंहजीका विभाग अलग २ कर गये थे। इन दोनों भाइयोंने भी अपने पिताजीकी कीर्ति और प्रतापमें बहुत ज्यादा वृद्धि की। आप दोनों भाइयोंका पारस्परिक भ्रातृभाव अद्वितीय था। आप लोगोंके समयमें भी सैकड़ों धार्मिक एवं सामाजिक कार्य हुए। राजाप्रतापसिंहजी एवं आपके पुत्र राय लक्ष्मीपतसिंहजी बहादुर और राय धनपतसिंहजी बहादुरके हाथोंसे इतने बड़े २ धार्मिक कार्य हुए कि सारे भारतका जैन समाज आपसे परिचित हो गया।

राय लक्ष्मीपतसिंह बहादुर—[सन् १८३५ से सन् १८८६ तक] आपने अपने जीवन कालमें अपनी विस्तृत जमींदारीमें कितनेही स्कूल और अस्पताल स्थापित किये। एवं सार्वजनिक संस्थाओंमें यथेष्ट सहायताएं दी, जैन समाजमें आपने भी बहुत बड़ी फर्सि पेश की थी। आपने कठगोला [कटगोला] नामक एक दिव्य उपवन लाखों रुपयोंकी लागतसे सन् १८७३ में बनाया, जो मुर्शिदाबाद और बंगालका दर्शनीय स्थान है। इसमें एक सुन्दर जिन मंदिर भी बना है। आपकी दान वीरता एवं सार्वजनिक कार्योंसे खुश होकर सन् १८६७ में गवर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया। आपने भी सन् १८७० में एक संघ निकाला इस संघमें राजपूतानाके कई नरेशोंसे आपका परिचय हुआ। इसी परिचय स्वरूप जयपुर महाराज सवाई रामसिंहजी जब कलकत्ता आते थे, तब आपके यहां अतिथि होकर रहे थे। आपने अपने जीवन समयमें कभी मनका दुराग्रह नहीं किया, सदाही सर्वप्रिय आपको बहुत बड़ा ख्याल रहता था। आपके पुत्र छत्रपतसिंहजी [१८७० से १९१८] हुए। आप बहुत स्वतंत्र विचारोंके निर्भीक सज्जन थे। कलकत्तेके जैन समाजमें आप बहुत सुपरिचित महानुभाव थे। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीपतसिंहजी और जगतपतसिंहजी विस्तृत जमींदारीका संचालन करते हैं, आप भी बड़े स्वभावके शिक्षित महानुभाव हैं। सन-

नामसे आप लोग प्रख्यात हुए। आपकी जमींदारी ४०० वर्ग मीलमें फैली हुई है, तथा १३०६०१ जन संख्यासे भरी पुरी है। आपने अपनी जमीदारीमें स्कूल अस्पताल आदि बनवाये हैं। तथा प्रार्थना करनेपर विद्यार्थियोंके लिये उच्च शिक्षा दिलानेका प्रबन्ध भी आपके द्वारा किया जाता है। वर्तमानमें श्रीसुपनसिंहजीके पुत्र नरेन्द्रपतसिंहजी तथा वीरेन्द्रपतसिंह और महीपतसिंहजीके पुत्र योगेन्द्रपतसिंहजी वादिन्द्रपतसिंहजी, कनकपतसिंहजी और कीर्तिपतसिंह हैं। और भूपतसिंहजीके राजेन्द्रपतसिंह नामक एक पुत्र है।
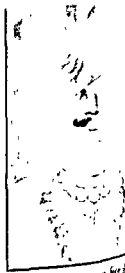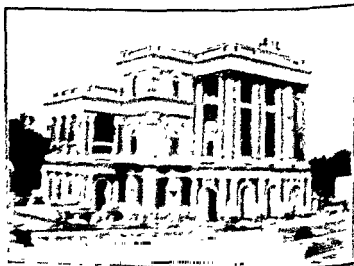
महाराज बहादुर सिंहजी—आपका जन्म १८८० में हुआ। आप अच्छे शिक्षित समझदार एवं उदार हृदयके रईस हैं। अपने पूज्य पिताजी द्वारा स्थापित किये हुए मंदिर, धर्मशाला स्कूल आदि की सुव्यवस्थाका भार आपहीके जिम्मे है। सम्मेद शिखरजी चम्पापुरीजी आदि तीर्थोंका प्रबन्ध भार जैन समाजकी ओरसे आपके जिम्मे है। और उसमें आप बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं। अपने पूर्वजोंकी कीर्तिको अक्षुन्न बनाये रखनेका आपके हृदयोंमें बड़ा स्थान है। आपके ६ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः कुमार ताजबहादुरसिंहजी एम० एल० सी०, श्रीपाल बहादुरसिंहजी, महीपालबहादुरसिंहजी, भूपालबहादुरसिंहजी तथा जगतपाल बहादुर सिंहजी हैं। श्रीताजबहादुर सिंहजी सुशिक्षित एवम विचारवान नवयुवक हैं। अभी ६ जून १९२६ को आप बंगाल लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके मेम्बर निर्वाचित हुए हैं। आप लोगोंकी विस्तृत जमींदारी बंगाल तथा विहार प्रांतके, मुर्शिदाबाद, वीरभूमि, हुगली, वर्द्धमान, रंगपुर, दिनाजपुर, पुर्णिया, संथाल परगना, राजशाही, हजारीबाग, गया, कूचविहार, आदि जिलोंमें हैं। दिनाजपुरमें प्राइवेट बेंकिंग काम भी आपके यहां होता है। आपकी स्टेट वालूचर स्टेटके नामसे प्रसिद्ध है।

मेसर्स महासिंहराय मेघराज बहादुर

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित तेजपुर [आसाम] में दिया गया है। राय मेघराज बहादुर मुर्शिदाबाद आसाम और बंगालके ख्याति प्राप्त व्यापारी हो गये हैं। आपने आसाम तथा बंगाल प्रांतमें बीसियों स्थानोंमें अपनी शाखाएं खोली। आपकी अजीमगंज दुकानपर बेंकिंग व जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स मूलचन्द हरकचन्द राय विशनचन्द बहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा विजयसिंहजी दुधोरिया हैं। आपका पारिवारिक परिचय ऊपर दिया जा चुका है। आप भी अजीमगंजके बहुत बड़े जमींदार हैं। आपका विस्तृत परिचय

जमें आप सज्जनोंका भी अच्छा सम्मान है। जगतपत सिंहजीके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः राजपत सिंहजी (आप बी० ए० में पढ़ रहे हैं) कमलपतसिंहजी, प्रजापतसिंहजी और यदुपतिसिंहजी हैं। श्रीपतसिंहजी साहब ब्रिटिश इण्डिया एसोशियेसन, कलकत्ता क्लब आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपकी जमींदारी संथाल परगना, मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, रंगपुर, दिनाजपुर आदिमें है।

राय धनपतसिंजी बहादुर—(१८४० से १८९६ तक) आप अपने योग्य पिताकी योग्य सन्तान थे। आपने जैन धर्मके अप्रकाशित आगम ग्रन्थोंके प्रकाशनका अभूत पूर्व कार्य हाथोंमें लिया और प्रचुर धन व्यय करके उन्हें प्रकाशित कराया और मुफ्तमें बंटवाया। आपके इस कार्यको जैन समाज चिरकाल तक स्मृति न भूलेगा। इसके अतिरिक्त आपने अजीमगंज बालूचर, नलहट्टी, भागलपुर, लखीसराय, गिरीडीह, बड़ाकर, सम्मेद शिखर, लछवाड़, काकंडी, राजगिरी, पावापुरी-जी, गुनाया, चम्पापुरी, बनारस, दहेश्वर, नवराही, आबू पालीताना, तलाजा, गिरनार बम्बई तथा किशनगढ़में मंदिर और धर्मशालाओंका निर्माण कराया। इन सबमें विशेष उल्लेखनीय शत्रुंजय तलहट्टीका मंदिर है। जिसका चित्र ग्रन्थमें दिया गया है। इसकी प्रतिष्ठा सन् १८९२ में कराई गई। यह मन्दिर दिनों दिन तरक्की पर है जैन समाजका इस मन्दिर पर अच्छा प्रेमभाव है। इसी प्रकार जैन समाजके कई एक कार्य आपके हाथोंसे हुए, आपने तीन चार संघ भी अपने समयमें निकाले थे। राय धनपतसिंह बहुत उदार चेता महानुभाव थे, बंगालकी सभी संस्थाओंमें एवं सार्व-जनिक चन्दोंमें आप मुक्त हस्तसे सहायतायें प्रदान किया करते थे। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सन् १८६५ में गवर्नमेंटने आपको राय बहादुरीका सम्मान समर्पण किया।

आपके तीन पुत्र हुए राय गनपतसिंहजी बहादुर, श्री नरपतसिंहजी एवं तीसरे श्री महाराज दुर सिंहजी। इन सज्जनोंमेंसे सन् १८८७ में आपने राय गनपतसिंहजी और नरपतसिंहजीको क किया।

राय गनपतसिंहजी बहादुर (१८६४-१९१५) को सन् १८९८ में राय बहादुरकी पदवी प्राप्त पने अपनी स्टेटमें बहुत तरक्की की, छात्रोंको मदद देकर उच्च शिक्षा दिलानेकी ओर आपका ध्यान रहता था। आपके कोई पुत्र नहीं था, फलतः आपकी सम्पत्तिके उत्तराधिकारी आपके ता नरपतिसिंहजी हुए। नरपतसिंहजीके ३ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्री सुरपतसिंहजी हजी, एवं भूपतसिंहजी हैं। आप ही तीनो सज्जन वर्तमानमें जमींदारीके विस्तृत क्षेत्रका रते हैं। नरपतसिंहजी बहुत संतोषी और उच्च चरित्रके महानुभाव थे।

राय नरपतसिंहजी बहादुर कैसरे हिन्द और आपके भ्राता राय गनपतसिंहजी बहादुरने ल्पुर जिलेमें हरावत नामक स्थानमें अपनी जमींदारी स्थापित की, और वहांके राजाके

में निःसंतान स्वर्गवासी हुए। अतः वंशके अन्त होनेकी आशंकासे सम्वत् १९७५ में बाबू निर्मल-कुमारजी दत्तक गये।

बाबू निर्मल कुमार सिंह नौलखा—करीब १६ वर्षकी अवस्थामें आप गुलाबगढ़से नौलखा परिवारमें दत्तक लाये गये। सं० १९७९ में आपने स्टेटका कारभार सम्हाला, आप बहुत होनहार तथा विद्याप्रेमी शिक्षित नवयुवक हैं। आपको शुद्ध खद्दरसे बहुत स्नेह है। अजीमगंजमें आपने खादी स्टोर खोला है, तथा कलकत्तेकी खादी प्रतिष्ठानमें सहायता देते रहते हैं। आप जैन श्वेताम्बर सभा अजीमगंज, जियागंज एडवर्ड कोरोनेशन स्कूलके वाइस प्रेसिडेंट, अजीमगंज म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। १९८६ में आपकी ओरसे यहां एक बालिका विद्यालय खोला गया है। इसके अलावा आप बंगाल लैंड होल्डर्स एसोसिएशन, कलकत्ता ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन आदि संस्थाओंके भी मेम्बर हैं।

शिक्षा एवं सामाजिक प्रतिष्ठाके साथ धार्मिक कामोंकी ओर भी आपका अच्छा लक्ष है, संवत १९८२ में महात्मागांधीजी अजीमगंज आये थे उस समय आपने १० हजार रुपया उनको सेवामें भेट किया था। उसी साल जैनाचार्य श्रीज्ञानसागरजी महाराजको भी ज्ञान भंडारमें १० हजार रुपया दिया था। श्री पावापुरीजीमें गांवके जैन श्वेताम्बर मंदिरके जीर्णोद्धारमें २० हजार रुपया लगाया था। संवत १९८८ के बंगाल दुर्भिक्षके समय आपने बहुत सहायता दी एवं चांवल आदि वितरित करनेका कार्य्य आपने हाथोंसे किया। इसी प्रकार जियागंज मेडिकल हास्पीटल, हास्पीटल स्कूल लाल बाग आदिमें सहायताएं दी हैं। फुटबाल आदि खेलोंसे आपको बड़ा शौक है। आपके पुत्र कुंवर चारित्रकुमारसिंहजी की वय ४ वर्ष की है।

बाबू निर्मल कुमारसिंहजीको पुरातत्व विषयोंसे भी बहुत स्नेह है। आपने अपने बगीचेमें पुरानी वस्तुओंका संग्रह किया है सम्वत् १९८४ में आपने जमींदारीके गांव चन्दनवारीमें खुदाई करवाई थी, उसमें एक विशाल महादेवजीका लिंग एवं एक ५॥ फुट डायमेटरकी पार्वतीजी की प्रतिमा निकली है। कहते हैं कि ८००।९०० शताब्दिके पूर्व मालवंशके समयकी यह प्रतिमा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजीमगञ्ज—मेसर्स हरकचंद बूलचन्द (T. A. Nowlakha) हेड आफिस—यहां जमींदारी बेङ्किंगका काम तथा घी, कुस्टा एवं गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरकचंद डालचन्द २२४ हरीसन रोड फोन नं० 1920 B. B. तारका पता charitra यहां गल्ला जूट तथा चलानीका काम होता है।

साहबगंज—गुलाबचन्द राय धनपतसिंह नौलखा बहादुर—गल्ला घी कुस्टाका व्यापार होता है।

धुलियान—गुलाबचन्द] राय धनपतसिंह नौलखा बहादुर—पाट, गल्ला और बेङ्किंगका काम होता है।

इसके अलावा पुर्नियां बुढ़िया (पुर्णिया) अकबरपुर (भागलपुर) मुरलीगंज (भागलपुर) पुवाडोगोला (पुर्णिया) में हरकचन्द गुलाबचन्दके नामसे बेंकिंग गल्ला और पाटका व्यापार होता है।

— —

श्री महीपतसिंहजी

कुमार श्रीपाल बहादुर सिंहजी
S/o श्री महाराज बहादुरसिंहजी

कुमार कमलपत सिंहजी S/o श्री जगपत सिंहजी

कुमार ...

[illegible] विभागमें [illegible] में दिए गए हैं। आपकी [illegible] [illegible] [illegible] लिखी हुई हैं।

[illegible] [illegible] [illegible]

मेसर्स [illegible] इन्द्रचन्द नौलखा

[illegible] नौलखा परिवारकी [illegible]

परिवार समय २ पर भिन्न भिन्न नामसे सम्बोधित किया जाता था पर पुराने [illegible] अन्तर्गत होती है। [illegible] भारी रकम देनेके कारण इसका नाम नौलखा परिवार पड़ा और आज भी यह परिवार इसी नामसे सम्बोधित किया जाता है। इनके प्रथम सन् १८५० ई० में [illegible] नौलखा अजीमगंज आये। आप बड़े ही व्यापारकुशल थे अतः थोड़े ही समयमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने सबसे भतीजे बाबू [illegible]चन्दजीको दत्तक लिया और बाबू गोपालचन्द बाबू हरकचन्दजीको दत्तक लिया। बा० हरकचन्दजी सन् १८५७ में अपने पितासे अलग हो गये और अपने नामसे स्वतंत्र व्यवसाय बैंकर और मर्चेण्ट्सके रूपमें आरम्भ कर थोड़े कालमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, अजीमगंज, पूर्णिया, मुङ्गेर, नवाबगंज, दूर्गापुर, [illegible] और नवाबगंजमें अपनी फर्में खोलीं। आपने बैंकिंग व्यवसायके साथही जमींदारी स्टेटोंमें भी पूंजी लगायी। फलतः आपकी जमींदारी मुर्शिदाबाद वीरभूमि और पूर्णिया जिलोंमें हो गयी। आप स्वभावके सरल और मिलनसार थे। आपकी मान और प्रतिष्ठा गोवेरिमन्ट और भारतीय समाजमें समान रूपसे थी। आपका स्वर्गवास सन् १८७४ ई० में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए जिनमें बाबू धूलचन्दजी नौलखा, और बा० दानचन्दजी नौलखाका स्वर्गवास सन् १८९७ में हुआ। आपके तीसरे पुत्र बा० गुलाबचन्दजी नौलखाने अपने व्यवसाय और स्टेटको अधिक बढ़ाया, आप मुर्शिदाबादकी लालबाग बेंचके १० वर्ष तक आनरेरी मैजिस्ट्रेट रहे। आपने सन् १८८९ के अकालमें अपनी प्रजाका कर माफ कर दिया और तीन महीने तक दो हजार प्रपीड़ितोंको भोजन देते रहे। आप संगीतके प्रेमी थे। आपने अजीमगंजका प्रसिद्ध 'रोजबिला' नामक उद्यान बनवाया। आप बहुतही लोकप्रिय सहृदय सज्जन थे आपका स्वर्गवास सन् १८९१ ई० के जून मासमें हुआ।

आपके पुत्र बाबू धनपतसिंहजी नौलखामें अपने पिताके सभी सद्गुण थे। आप बहुत ही [illegible]र और सहृदय सज्जन थे। आपने विक्टोरिया मेमोरियलको २ हजार, एडवर्ड मेमोरियल फण्डमें २ [illegible]ार और इसी प्रकारके अन्य कामोंमें ७ हजारकी रकम दान की। आपने बंगाल सरकारको १५ [illegible]रकी रकम अजीम गंज गोपालचन्द नौलखा अस्पतालके भवनके लिये दिये। इसी प्रकार २५ [illegible]रकी रकम आपने कलकत्तेके पं० शम्भूनाथ हास्पिटलको सर्जिकल वार्ड बनानेके लिये दिये। [illegible]रने आपके कार्योंके सम्मान स्वरूप आपको सन् १९१० में राय बहादुरकी पदवी प्रदान की। [illegible]ही नहीं सरकारने आपको तलवार और कलंगीके रूपमें खिलत दे आपका आदर किया। [illegible] स्वर्गवास सन् १९७० में हुआ। आपके दो पुत्र थे। जिनके नाम बाबू आनन्दसिंह [illegible] और बाबू इन्द्रचन्दजी नौलखा थे। आप दोनों ही क्रमशः सन् १९०४ और सन् १९०८

वर्ड्स लेक शिलांग

पहाड़ी शिलांग रोडका दृश्य
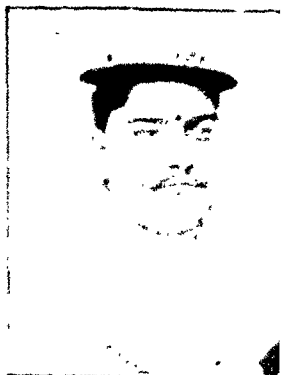
यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है :-

मेसर्स गणेशदास श्री राम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान चूरू (बीकानेर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके गोयनका सज्जन हैं। सबसे प्रथम इस फर्मके संस्थापक सेठ गणेशदासजी गोयनका स्वदेशसे लगभग सं० १६४० के गोहाटी आये और यहांसे शिलांग चले गये। यहां आपने मेसर्स गणेशदास श्रीरामके नामसे गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। ज्यों ज्यों इस व्यापारने उन्नति की त्यों त्यों दूसरे व्यापार भी क्रमानुसार खोले गये। शिलांगके समीपवर्ती भूभागमें आलू अधिक उत्पन्न होता है अतः आपने आलू खरीदकर बाहर भेजनेका काम आरम्भ किया और साथ ही दूसरे स्थानोंसे गल्ला आदि मगांकर यहां बेचनेका काम भी आपने जोरोंमें आरम्भ किया। सम्वत् १६६४ में आपने गोहाटीमें भी मेसर्स गणेशदास श्रीरामके नामसे व्यापार आरम्भ किया। गोहाटीसे मीठा तेल, मिट्टीका तेल तथा चावल आदि शिलांग भेजा जाने लगा और शिलांगसे आलू आदि यहां आने लगा इस प्रकार आपने थोड़ेही समयमें अपनी दोनों ही फर्में सुदृढ़ बना लीं। सम्वत् १६७०में आपने मेसर्स गणेशदास बालचंदके नामसे कलकत्तेमें व्यापार आरम्भ किया। गोहाटी और शिलांगसे हुण्डी चिट्ठी कलकत्ते जाती और वहांसे शिलांग गोहाटी और आसाम प्रान्तके अन्य स्थानोंको आढ़तसे माल भेजा जाता था। इस प्रकार कलकत्ते वाली फर्ममें आढ़त की चलानीका काम जोरसे होने लग गया।

वर्तमानमें यह फर्म पंजाब, संयुक्तप्रान्त तथा विहारसे गल्ला मंगाती है और गोहाटी तथा शिलांगकी अपनी दोनों फर्मोंके द्वारा समीपवर्ती भूभागमें ही नहीं वरन प्रान्तके सभी भूभागमें भेजती और बेचती है। इसके अतिरिक्त शिलांगके समीपवर्ती भूभागसे आलू खरीदकर और गोहाटीके पास पाठशाला नामक स्थानसे घी खरीद कर प्रान्त और प्रान्तके बाहर दूसरे स्थानोंको भेजती है। इस प्रकार आलू और घी का काम इस फर्मपर प्रधान रूपसे होता है और इन दो वस्तुओंकी यह फर्म प्रधान और प्रतिष्ठित व्यापार करने वाली एक मात्र फर्म है। इस फर्मका घी अपनी विशुद्धता एवं पवित्रताके कारण बहुत ही प्रसिद्ध है अतः श्रेष्ठ माना जाता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ गणेशदासजीके पुत्र बाबू जीवनरामजी गोयनका हैं। तथा सेठ बालचंदजी गोयनकाके पुत्र बाबू हरिरामजी गोयनका, बाबू कमलालालजी गोयनका तथा बाबू दुर्गादत्तजी गोयनका और सेठ जीवनरामजीके पुत्र बाबू रामेश्वरलालजी गोयनका है।

बाबू जीवनरामजी गोयनका बड़े ही सज्जन एवं सरल स्वभावके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स गणेशदास श्रीराम शिलांग (आसाम) T. A. Goenka—यहां फर्मका हेड आफिस है।

साहबगंज

ईस्ट इंडिया रेलवेकी साहबगंज लूप लाइनपर बसी हुई छोटी सी, लेकिन सुन्दर मन्डी है। यहां तेल एवम चावलके बड़े २ कारखाने हैं जिनके लिये यह स्थान मशहूर है। यहां गल्ले, किराने, कपड़े और साबे घासका व्यापार भी होता है। यह घास कागज बनानेके काममें आती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद धनपतसिंह नौलखा

इसके वर्तमान मालिक बाबू निर्मलकुमार सिंह जी नौलखा हैं। आपका हेड आफिस अजीमगंज है। साहबगंजमें यह फर्म ३० वर्षोंसे व्यापार कर रही है यहां प्रधान व्यापार पाट तथा गल्लेका होता है विस्तृत परिचय अजीमगंजमें दिया गया है।

मेसर्स द्वारकादास राधाकृष्ण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर शेखावटी है। आप अग्रवाल वैश्य-समाजके भरथिया सज्जन हैं। प्रथम देशसे सेठ जगरूपजी पटना आये थे पटनेमें यह फर्म बहुत कारबार करती थी वहांसे सेठ जगरूपजीके पुत्र बा० ठाकुरदासजीने साहबगंज आकर छोटी सी तेलकी मिल खोली, धीरे२ इस मिलने अच्छी तरक्की की और आज बिहार प्रान्त भरमें यह मिल बहुत बड़ी है। इसमें ११०० मन सरसोंका प्रतिदिन तेल निकाला जा सकता है। इस फर्मके वर्तमान मालिक ठाकुरदासजीके बड़े भ्राता रायसाहब द्वारकादासजी भरथिया तथा बाबू ठाकुरदासजीके पुत्र श्री राधाकृष्णजी भरथिया एवं विशेश्वरलालजी हैं। बाबू ठाकुरदासजीका स्वर्गवास करीब १५ वर्ष पूर्व हो गया है। सेठ द्वारकादासजीको गवर्नमेंटसे रायसाहबकी उपाधि प्राप्त हुई है आप यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। बाबू राधाकृष्णजी एवं विशेश्वरलालजी भी अच्छे शिक्षित सज्जन हैं। आपकी मिलमें बहुत [illegible] का काम भी होता है। आपने वर्तमानमें इसमें इंजिनियरिंग वर्कशाप [illegible] है। यहां [illegible] एक्सपेलर तेल निकालनेका काम करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

साहबगंज—मेसर्स द्वारकादास राधाकृष्ण—यहां बहुत बड़ी तेल मिल है [illegible] और इंजिनियरिंग वर्कशाप भी इसीमें है।

नामसे यह फर्म व्यवसाय कर रही है। इसके स्थापक सेठ कालूरामजी हैं। आपके ही द्वारा इस फर्मकी उन्नति हुई। आपके सुखलालजी नामक एकपुत्र हैं। तथा सेठ सुखलालजीके सात पुत्र हैं इस फर्मकी विशेष देख रेख कालूरामजीके पुत्र बाबू सुखलालजी तथा कालूरामजीके छोटेभाई पांचीरामजीके पुत्र बाबू भीमसिंहजी करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स कालूराम सुखलाल ४६ स्ट्रांड रोड यहां कमीशन एजेन्सी तथा गवर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है।

शिलांग - मेसर्स सुखलाल भीमसिंह, पल्टन बाजार यहां कपड़ा गल्ला तथा आलूका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त गवर्नमेंट कंट्राक्टर तथा मोटर लारीज़ सर्विसका भी काम आपकी फर्म पर होता है।

पटनामिटी—मेसर्स पांचीराम सुखलाल यहां गल्ला तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

गोहाटी—कालूराम सुखलाल फांसीबाजार T A Dudhoria यहां कमीशन एजंसी और दुकानदारीका काम होता है।

व्यापारियोंके पते :—

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड ब्रांच

मेसर्स गणेशदास श्रीराम

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स उदयराम धनराज

,, गोविंदराम कन्हैयालाल

,, डूंगरमल श्रीनिवास

,, [illegible]

,, हनुमानराम [illegible]

,, हरीदास पूरनमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स उदयराम धनराज

,, भजनलाल श्रीनिवास

,, [illegible] बिहारीलाल

मेसर्स सुखलाल भीमसिंह

,, शेरमल चौथमल

,, एस० लालचंद

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स नरसिंहप्रसाद दास

,, नवीनकृष्ण भट्टाचार्य

मोटर एजेन्सी

मेसर्स ए० नागी एण्ड संस

,, एच० एम० शरीफ

,, गणेशदास श्रीराम

,, भजनलाल श्रीनिवास

तेल पेट्रोल एजेन्सी

मेसर्स रामसीराम राय चुन्नीलाल बहादुर

भीमसिंहजी हैं। इसका विशेष परिचय शिलांगमें दिया गया है। यहां इसफर्मपर दुकानदारी एवं कमीशन एजेंसीका काम होता है।

मेसर्स गणेशदास श्रीराम

इस फर्मके मालिक चूरू (बीकानेर) के निवासी हैं। इसका हेड आफिस शिलांगमें है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित शिलांगके पोर्शनमें दिया गया है। इसफर्मपर यहां घी, गल्ला, तेल और किरानेका व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण सनेहीराम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके जालान सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ जयनारायणजी जालान स्वदेशसे लगभग ८० वर्ष पूर्व गोहाटी आये और वहांसे डिब्रूगढ़ चले गये जहां लगभग डेढ़ वर्ष रहकर पुनः गोहाटी आये और सं० १९३२ में आपने मेसर्स जयनारायण दुलमुखरायके नामसे कारोबार काम आरम्भ किया। यह फर्म लगभग ४० वर्ष तक बराबर काम करती रही जिसके बाद सेठ जयनारायणजी जालान अपने छोटे भाई सेठ दुलमुखरायजीसे अलग हो गये और अपना स्वतन्त्र व्यापार मेसर्स जयनारायण सनेहीरामके नामसे सन् १९१८ ई० से करने लगे जो आज भी पूर्ववत् अवस्थामें हो रहा है। इस फर्मका प्रधान व्यापार वर्तमानमें प्राइवेट बैंकिङ्ग है। इसके अतिरिक्त यह फर्म सभी प्रकारके मालकी आढ़तका काम करती है। इस फर्मका एक राइस मिल नलबाड़ीमें है जहां चावल तैयार होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जयनारायणजी जालान तथा आपके पुत्र बाबू सनेहीरामजी जालान तथा बाबू गोवर्द्धनदासजी जालान हैं।

बाबू सनेहीरामजी जालान नलबाड़ी (गोहाटी) के राइस मिलका काम देखते हैं और गोहाटीवाली फर्मसे सम्बद्ध सभी कारबारका का काम देखते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स जयनारायण सनेहीराम फांसी बाजार गोहाटी (आसाम)—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है। यहां प्रधान रूपसे बैंकिङ्गका तथा सभी प्रकारके मालकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण गोवर्द्धनदास ६४ लोअर चीतपुर रोड कलकत्ता—यहां प्रधान रूपसे आढ़तका काम होता है।

और बड़ी स्थायी सम्पत्तिके साथ साथ विस्तृत जमींदारी है। यहां बैङ्किंग का काम होता है। साथ ही कमीशन एजन्सीका काम होता है। बाहरसे गल्ला मंगाकर बेचा जाता है और आलू खरीदकर बाहर भेजा जाता है।

मेसर्स गनेशदास श्रीराम गोहाटी (आसाम) T. A. Goenke—यहां गल्ला, घी, तेल, किराना आदिकी खरीद बिक्री तथा आढ़तियोंको माल भेजनेका काम होता है। घी, पाटशाला (कामरूप)से खरीदकर बाहर भेजा जाता है।

मेसर्स गनेशदास बालचंद १५८ हरिसन रोड कलकत्ता—यहां कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स मगनलाल श्रीनिवास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ मगनलालजीने करीब ५० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। आपके श्रीनिवासजी तथा कामाख्याप्रसादजी नामक दो पुत्र हुए। श्रीनिवासजीका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू कामाख्याप्रसादजी एवं श्रीनिवासजीके पुत्र बाबू मदनमोहनजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

शिलांग—मेसर्स मगनलाल श्रीनिवास—यहां बैङ्किंग तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है। इस फर्मकी ओरसे गोहाटीसे शिलांगतक मुसाफिरोंके लिये मोटर लारी रन करती है।

शिलांग—श्रीलक्ष्मी मोटर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी—इस कम्पनीकी मालिक उपरोक्त फर्म है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मके वर्तमान संचालक-गण डिब्रूगढ़ रहते हैं। वहीं इस फर्मका हेड आफिस है। ...का विशेष परिचय चित्रों सहित डिब्रूगढ़के परिचयमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर पेट्रोलकी ...नेका काम होता है।

मेसर्स सूरजमल भीमराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान छापर (बीकानेर) है। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। परन्तु करीब ३० वर्षसे उपरोक्त

मेसर्स शानिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मके मालिक डिब्रूगढ़में निवास करते हैं, और वहीं इसका हेड आफिस है। यहां इस फर्म पर विशेषकर आसाम आइल कम्पनीकी तेलकी एजेन्सीका काम होता है। इसका पूरा परिचय डिब्रूगढ़के विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल हरिरामदास

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ४२ वर्ष हुए। इसमें सूरजमलजी तथा हरिरामजी का साझा है। सेठ सूरजमलजीका स्वर्गवास हो गया है। इस समय इसका संचालन हरिरामजी करते हैं। आपके लक्ष्मीनारायणजी नामक एक पुत्र है।

आपकी ओरसे गौहाटी, कामाख्या आदि स्थानोंपर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गौहाटी—मेसर्स सूरजमल हरिराम—यहां मूंगासिल्क और, आसाम सिल्कका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

गौहाटी—मेसर्स सूरजमल शुभकरण—यहां चांदी, सोना, कपड़ा तथा बर्तनोंका व्यापार होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स [illegible]
" गणेशदास बद्रीनारायन
" [illegible]
" केदारमल महादेव
" [illegible]
" दौलतराम रामगोपाल
" मोहनलाल गोविन्दराम
" शिवदत्तराय हरिवक्ष
" शिवलाल मालचन्द

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास श्रीराम
" भागचन्द भगत महावीरराम
" जगेश्वर रामनारायण
" रामूराम मिश्रीमल
" वीजराज हरदयाल
" मोतीचंद चौथमल
" शिवप्रताप रघुनन्दनराम
" रामचन्द्र शिवदत्तराय
" रामनिवास शिवदत्तराय
" कुंजबिहारी ठाकुर

ओर भूटानका इलाका शुरू होता है। यहां यात्रियोंकी सुविधाके लिये एक धर्मशाला बनी हुई है।

व्यापार

यहांपर जंगलकी पैदावारका ही विशेषरूपसे व्यापार होता है। पास ही पहाड़ी स्थानोंसे पहाड़ी लोग जंगली उपज जैसे पीपल, मोम, शहद, अगर, गोंद, लाख हाथीदांत इत्यादि वस्तुएं लाते हैं और इनके एवजमें नमक, चीनी, कपड़ा आदि गृहस्थीकी आवश्यक वस्तुएं ले जाते हैं।

इसके अतिरिक्त यहांसे २० मील दूरीपर लकरा और ३० मील दूरीपर उदाल कुड़ी (टोंग) नामक स्थान हैं। यहांपर पीपल, मोम, ऊन, कस्तूरी, चंवर, घोड़ा, मिर्च आदि अच्छी पैदा होती है। भूटिया लोग इन्हें लेकर तेजपुरके बाजारमें बेच जाते हैं और बदलेमें आवश्यकीय वस्तुएं खरीद ले जाते हैं। यही यहांसे जानेवाली वस्तुओंका व्यापार है।

आनेवाले मालमें गल्ला, कपड़ा, नमक, किरोसिन तेल, टीन, किराना आदि विशेष हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स महासिंग राय मेघराज बहादुर

इस फर्मके मालिक मुर्शिदाबादके निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रतनचंदजी और आपके छोटे भ्राता बाबू महासिंहजीके हाथोंसे सन् १८१८ में ग्वालपाड़ामें, सन् १८२२ में गोहाटीमें और सन् १८२४ में तेजपुरमें हुआ। उस समय इस फर्म पर रबरका व्यापार, बैङ्किग तथा चाय बागानोंमें रसद सप्लाई करनेका काम होता था। बाबू महासिंहजीके पुत्र राय मेघराज बहादुर हुए। आपके तथा बाबू मेघराजजीके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई और आसाम बंगाल प्रान्तमें कोनियों शाखाएं स्थापित की गई। आप बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन थे। बाबू मेघराजजीको सन् १८६० में [illegible] ([illegible]) के भूटान युद्धके समय गवर्नमेंटकी मदद करनेके उपलक्षमें रायबहादुरकी पदवी प्राप्त हुई। आपका स्वर्गवास सन् १९०१ की १९ वीं जुलाईको हुआ। आपके २ पुत्र हुए। बाबू जालिमचन्दजी और बाबू प्रसन्नचन्दजी। बाबू जालिमचन्दजीके स्वर्गवासी होनेके बाद सन् १९०७ में इनके कारबारका कुछ [illegible] हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू जालिमचंदजीके पुत्र बाबू धनपतसिंहजी बाबू [illegible] सिंहजी बाबू [illegible] सिंहजी बाबू [illegible] सिंहजी और बाबू दिलीप सिंहजी हैं। आप सब शिक्षित सज्जन हैं। इस फर्मके [illegible] मुनीम [illegible] थे। आपने ४० वर्षतक इस फर्मका संचालन कर इसको खूब बढ़ाया। वर्तमान इस फर्मके [illegible] मैनेजर [illegible] हैं।

गौहाटी

यह स्थान ए० बी० रेलवे पर बसा हुआ है। आसाम प्रान्तका सबसे बड़ा शहर होनेकी वजहसे यहांका व्यापार भी बड़ा चढ़ा बढ़ा है। यह शहर एकदम लम्बा बसा हुआ है। यहांसे तेजपुर और अमीन गांव दोनों स्थानों पर स्टीमर द्वारा जा सकते हैं। यहांकी मारवाड़ी पट्टी को छोड़कर शेष बसावट साफ और सुन्दर है। मारवाड़ी पट्टीमें काफी गन्दगी रहती है। आसाम प्रान्तका बड़ा शहर होनेकी वजह से यहां सरकारी कोर्ट भी हैं। यहां गांवका सीन बहुत सुन्दर मालूम होता है। एक ओर पहाड़ और पास ही ब्रह्मपुत्रका किनारा और दूसरी ओर अमीन गांव एवं पाण्डू की बिजलियोंका सीन बड़ा ही मनमोहक मालूम होता है। यहांसे शिलांग मोटर जाती है।

व्यापार

यहांका प्रधान व्यापार आसामसिल्क, मूंगासिल्क और अण्डीसिल्कका है। इसके अतिरिक्त कपड़ा, गल्ला, जूट आदिका भी व्यापार यहां पर होता है। इस स्थानसे सारे आसाम प्रांतमें माल भेजा जाता है।

यहांसे पास ही पलासबाड़ी एवम नलबाड़ी नामक स्थानोंपर मूंगा, अंडी, घी एवम जूट अच्छी पैदा होता है। यहांकी मूंगा रेशम और मजबूत एवम सुन्दर होती है यह कारीगरों द्वारा गौहाटीके बाजारमें बिकने आती है। व्यापारी लोग यहांसे खरीदकर बाहर गांवोंमें इसको चलानीका काम करते हैं। मूंगा सिल्क विशेषकर सालकूंची नामक स्थानसे आती है। यह स्थान पास ही है, यहां अमीनगांवसे नाव द्वारा जाना होता है।

यहां पर हाट एवम मेलेकी पद्धति भी है। प्रायः हफ्तेमें २-३ बार हाट लगता है। इसमें गृहस्थोंकी आवश्यक सभी वस्तुएं बिकने आती हैं।

यहांसे आनेवाले मालमें गल्ला, विलायत माल, कपड़ा, तेल, टीन आदि हैं और बाहर जाने वाले मालमें आसाम सिल्क, मूंगा, अंडी आदि प्रधान हैं। इससे कुछ दूरी पर पलाशबाड़ी नामक घी की बहुत बड़ी मन्डी है। यहांसे पास ही ८ मीलकी दूरी पर प्रसिद्ध कमख्या देवीका मंदिर है। यहां हजारों व्यक्ति यात्राके निमित्त आते हैं। यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स कानूराम मुरलीधर

इस फर्मका हेड आफिस शिलांगमें है। इसके वर्तमान संचालक सेठ सुन्दरलालजी तथा

मेसर्स [illegible] (गोहाटी, आसाम) - यहां इस फर्मका [illegible] है यानी आसाम प्रान्तमें [illegible] है।

मेसर्स नरसिंग राय किशनदयाल

यहां यह फर्म गुड़, गल्ला, सरसों तथा पाटलीका काम करती है। इसके मालिक रतनगढ़ निवासी अग्रवाल जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नागरमलजी, ओंकारमलजी, नरसिंगमलजी और मदनगोपालजी हैं। इनका विशेष परिचय [illegible] विभागमें देखिये।

मेसर्स तिलोकचन्द डायमन

इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके हैं। इसका हेड आफिस ७।८, मल्लिक लेन कलकत्तामें है। अतएव इनका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ता पोर्शनके कपड़े विभागमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर गल्ला एवं कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स पूनमचन्द माणकचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू गिरधारीलालजी पूनमचन्दजी एवम माणकचन्दजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म मेसर्स कालूराम सुल्तानचन्द नामक फर्मसे अलग हुई है। इसका स्थापन सन् १९२८ में हुआ।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गौहाटी—मेसर्स पूनमचन्द माणकचन्द फांसी बाजार—यहां पर गल्ला किराना और कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम भी करती है। इसके अतिरिक्त अण्डी सिल्कका काम भी यहां होता है।

मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक मुर्शिदाबादके निवासी हैं। इसका हेड आफिस तेजपुर (आसाम) में है। अतएव इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित वहां दिया गया है। यहां इसफर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, जमींदारी एवम आढ़तका काम होता है। इस फर्मके अण्डरमें और [illegible]

व्यापारियोंके पते

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स किशनचंद मालचंद

„ गणेशदास बिलासीराम

„ चतुर्भुज पन्नालाल

„ भागमल सूरजमल

„ रतनचंद सुमानचंद

„ हजारीमल सुल्तानमल

„ हजारीमल आसकरन सौभागमल

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम

„ भागमल सूरजमल

„ रतनचंद सुमानचंद

„ महासिंग राय मेघराज बहादुर

जूटके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम

„ महासिंग राय मेघराज बहादुर

„ रतनचंद सुमानचंद

„ हजारीमल आसकरण सौभागमल

„ हजारीमल सुल्तानमल

टी प्लेंटर्स

ज्योतिषचन्द्र मित्र

रुक्मनी मोहन दे

राधानगर टी स्टेट

रेशम, मूंगा, अंडीके व्यापारी

महासिंग राय मेघराज बहादुर

डिब्रूगढ़

यह स्थान उत्तरीय आसाममें व्यापारकी प्रधान जगह है। यह डी० एस० रेल्वेके अन्तिम स्टेशनतक इसी नामके स्टेशनके पास बसा हुआ है। यहांकी बसावट लम्बी एवम् सुन्दर है। ब्रह्मपुत्रका किनारा होनेकी वजहसे इसकी सुन्दरता और भी अधिक बढ़गई है। इसके आसपास चायकी बहुत खेती होती है।

व्यापार

यहां पर सभी प्रकारका व्यापार होता है। मगर चाय, चावल, तेल और कपड़ेका व्यापार प्रधान रूपसे होता है। यहांसे हजारों मनकी तादादमें ये वस्तुएं बाहर जाती हैं। इसके अतिरिक्त इसके समीपके हिमालयके जङ्गलोंमें बेंत भी बहुत पैदा होती है। यहांके व्यापारी ठेकेदार इन बेंतोंको जंगलसे मंगवाते हैं तथा फिर बाहर गांव भेजते हैं।

यहांसे बाहर जानेवाली प्रधान वस्तुएं चाय, चावल, तेल, बेंत आदि हैं। और बाहरसे आनेवालोंमें कपड़ा, टीन, किराना, गल्ला आदि प्रधान हैं।

यहां मालकी आमदनी एवम् रफ्तनी दो रास्तोंसे होती है। एक जलमार्गसे और दूसरे

गिरसोंके व्यापारी
मेसर्स गनेशदास बद्रीनारायण
" जेसराज गिरधरचंद
" नौरंगराय किसनदयाल
सामरके व्यापारी
मेसर्स भोलाराम देवीदत्त
" रामजीदास मुकुन्दराम
मैच एजन्ट्स
मेसर्स करीम ब्रादर्स
" आसाम मैच कंपनी लि०
स्टेशनरीके व्यापारी
मेसर्स अब्दुल्ला मोहम्मद
" गणेशदास बद्रीनारायण
" सूरजमल कन्हैयालाल
" सूरजमल हरिदत्त
" शिवदयाल रामकुंवार
" सांवलराम कस्तूरचंद
कांसा पीतलके व्यापारी
मेसर्स कन्हैयालाल मुरलीधर
" गंगाराम मुकुन्दराम
" गोविन्दराम चतरभुज

जेनरल मरचेन्ट्स
मेसर्स आनरु अली एण्ड सन्स
" ई० टिन० एण्ड सन्स
" उसमान गनी ब्रदर्स
" गुलामरहमान एण्ड सन्स
" बी० एन० चटर्जी एण्ड सन्स
" सेन ब्रादर्स
" एन० पी० गोगोई एण्ड को
" पी० सी० बरुआ एण्ड ब्रादर्स
मोटरके समानके व्यापारी
मेसर्स आसाम साइकल एण्ड मोटरट्रेडिंग कम्पनी
" एस० ब्रादर्स कंपनी (cycle)
" ए० ए० गनी एण्ड सन्स
" चक्रवर्ती एण्ड को
ड्रगिस्टस एण्ड केमिस्टस
गोहाटी फर्मेसी
स्टेण्डर्ड फर्मेसी
होमियोपेथिक फर्मेसी

तेजपुर

यह ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे पहाड़ोंपर बसा हुआ बहुत सुन्दर स्थान है। यहांका इति-
हास बहुत पुराना है। पुराणोंमें इसका वर्णन मिलता है। कहावत है कि यहांके अग्निपहाड़ नामक
थानपर भस्मासुर और मोहनीकी बातचीत हुई थी। यहीं पर विष्णुरूप-मोहनी ने भस्मासुरको भस्म
डाला था तभीसे इस स्थानका नाम अग्निपहाड़ पड़ा। इस प्रकारकी और भी बहुत सी कहावतें
यहांकी वर्तमान बसावट बहुत साफ सुथरी एवम सुन्दर है। ऊंची पहाड़ीपर बसा हुआ होनेकी
हसे आस पासके सुन्दर सीनोंको देखते रहनेकी इच्छा होती है। उसमें भी खासकर ब्रह्मपुत्रके
रेके दृश्य तो लाजवाब हैं। यहांसे पास ही वृटिश गवर्नमेंटकी सरहद खतम होती है। उत्तरकी

स्व: राय मेघराज बहादुर महतसिंह राय मेघराज बहादुर तेजपुर।

बाबू आनन्दचन्दजी महतसिंह राय मेघराज बहादुर तेजपुर।

[illegible]

इनके अतिरिक्त गोहाटी, शिलांग, नौगांव, तजपुर, जोरहाट, रुपसाड़ा, तिनसुकिया डिबरूगढ़ मार्गरेटा, दूमदूमा आदि स्थानोंपर भी आपकी दुकानें हैं जहां मेसर्स शालिग्राम राय चुन्नीलाल बहादुरके नामसे बैंकिंग, एवम तेलकी एजंसीका काम होता है।

मेसर्स कन्हीराम किशनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतननगर (बीकानेर) का है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कन्हीरामजीके द्वारा हुआ। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास होगया है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक आपके पुत्र किशनलालजी धानुका हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स कन्हीराम किशनलाल, यहां कपड़ा, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। यहां इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स गोपालराय सेवाराम

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान मंडावा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जाति खेमाणी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६५वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवनारायण तथा आपके भाई सेवारामजी थे। आप हीके समयमें इसकी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपकी फर्म भी संवत् १९६० से अलग २ हो गई हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेवारामजीके द्वितीय पुत्र बाबू प्रहलादरायजी हैं। आप द्वारका प्रसादजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिब्रूगढ़—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां बैंकिंग तथा ठेकेदारीका काम होता है। यह फर्म यहां जंगलोंसे बेंत निकलवाकर बाहर चालान करती है।

नारायणगंज—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां बेंतकी बिक्रीका काम होता है।

मारपामा—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां भी बेंतका व्यापार होता है।

मेसर्स जमनादास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी तथा आपके पुत्र बाबू रामकुमारजी

इसके अतिरिक्त गौहाटी, शिलांग, नौगांव, तजोंग, जोरहाट, रङ्गपाड़ा, तिनसुकिया डिगबोई मारगरेटा, दूमदूमा आदि स्थानोंपर भी आपकी दुकानें हैं जहां मेसर्स शालिगराम राय चुनीलाल बहादुरके नामसे बैंकिंग एवम तेलकी एजंसीका काम होता है।

मेसर्स कन्हीराम किशनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतननगर (बीकानेर) का है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कन्हीरामजीके द्वारा हुआ। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास होगया है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक आपके पुत्र किशनलालजी धानुका हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स कन्हीराम किशनलाल, यहां कपड़ा, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। यहां इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स गोपालराय सेवाराम

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान मंडावा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके खेमाणी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६५वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवनारायणजी तथा आपके भाई सेवारामजी थे। आप हीके समयमें इसकी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपकी फर्में भी संवत् १९६० से अलग २ हो गई हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेवारामजीके द्वितीय पुत्र बाबू प्रहलादरायजी हैं। आपके द्वारका प्रसादजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिब्रूगढ़—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां बैंकिंग तथा ठेकेदारीका काम होता है। यह फर्म यहांके जंगलोंसे बेंत निकलवाकर बाहर चालान करती है।

नारायणगंज—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां बेंतकी बिक्रीका काम होता है।

नारपामा—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहां भी बेंतका व्यापार होता है।

मेसर्स जमनादास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी तथा आपके पुत्र बाबू रामकुमारजी

बाबू प्रह्लादरायजी (गुलाबराय सेवाराम)
डिबरूगढ़ (देखो आसाम पृष्ठ १६)
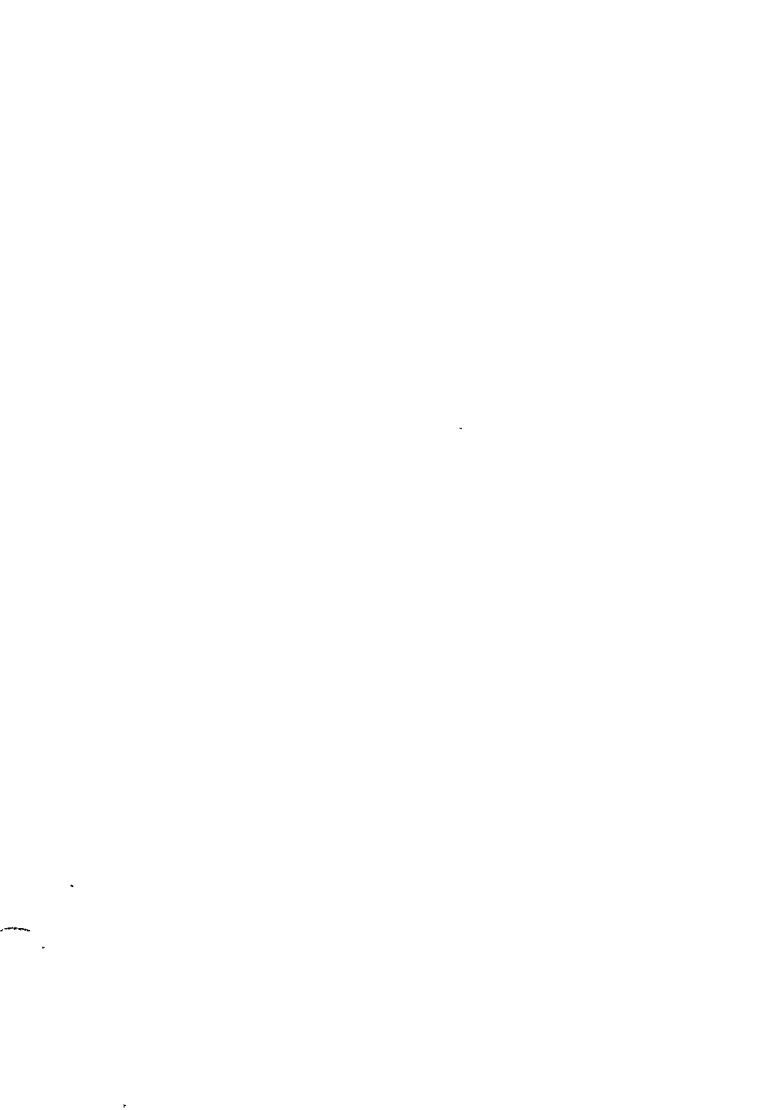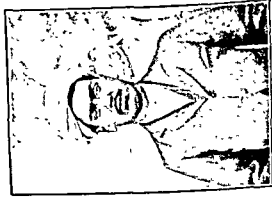
बाबू भागवान दासजी (ललूराम बैजनाथ)
डिबरूगढ़ (देखो आसाम पृष्ठ १७)
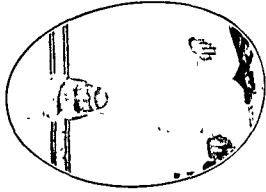
स्थलमार्गसे। जलमार्गसे जहाज द्वारा यहां मालकी आमद रफ्त होती है। एवम स्थलमार्गसे रेल्वे द्वारा। स्थलके लिये तो हम उपर रेल्वेका जिक्र करही चुके हैं। जलसे यहां डिब्रूगढ़ घाट नामक स्टीमर स्टेशन है। यहांसे कलकत्ता तक माल आता तथा जाता है।

आजकल यहांके व्यापारमें तिनसुकिया मंडीके आबाद होजानेसे अवश्य कुछ धक्का लगा है। मगर फिर भी यहांका व्यापार गिरा नहीं है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्ममें सरदारशहरके सेठ शालिगरामजी तथा लालगढ़के राय चुन्नीलालजी बहादुरका साझा है। सेठ शालिगरामजी माहेश्वरी समाजके करवा सज्जन हैं। तथा राय चुन्नीलालजी बहादुर सरावगी जैन जातिके वाकलीवाल सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन १८६१ से स्थापित है। इसके स्थापक उपरोक्त दोनों ही सज्जन हैं। जिस समय आपलोग यहां आये थे आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। पर आप बड़े व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन थे। यही कारण है कि आपने अपनी फर्मकी बहुत उन्नति की। संवत् १८६४ में सेठ चुन्नीलालजीको भारत गवर्नमेंटकी ओरसे रायबहादुरकी उपाधि प्राप्त हुई थी। आप दोनों सज्जनोंका स्वर्गवास होगया है।

सेठ शालिगरामजीके चार पुत्र हुए। मगर उनमें तीन सज्जनोंका स्वर्गवास होगया जिनके नाम क्रमशः किशनलालजी, प्रेमसुखजी, तथा रामचन्द्रजी था। चौथे पुत्र श्री वृद्धिचन्द्रजी इस समय विद्यमान हैं।

राय चुन्नीलालजी बहादुरके तीन पुत्र हुए। बा० मोहनलालजी, बा० निहालचंदजी तथा बा० घनश्यामदासजी। इनमेंसे मोहनलालजीका स्वर्गवास होगया है। आपके कंवरीलालजी नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्ममें लालगढ़ निवासी सेठ छगनमलजी पांड्याका भी साझा है आप भी सरावगी जैन जातिके हैं।

यह फर्म आसाममें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर (T. A. Rai Bahadur) यहां बैंकिंग, इंश्योरेंस तथा बर्मा आईल कम्पनीकी एजेन्सीका काम होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंककी ट्रेझरर है।

कलकत्ता — मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर दर्रो हट्टा (T. A. Hukum) T. No 1807 B. B. इस फर्मपर बैंकिंग, जूट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स बलदेवदास हनुमानवक्स

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू हनुमान बक्सजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य सरावगी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत् १६२७ है। मगर कई नाम बदलते हुए वर्तमानमें उपरोक्त नामसे यह फर्म व्यापार करती है। इसके संचालक माल एवं मिलनसार प्रकृतिके व्यक्ति हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिबरुगढ़—मेसर्स बलदेवदास हनुमान बक्स, यहां बैंकिंग, आसाम सिल्क एवं कमीशन एजंसीका काम होता है। यह फर्म टीप्लेंटर्स भी है। इसके कई टी बागान हैं।

कलकत्ता—मेसर्स ए० डी० लैम्ब ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट, यहां चायकी बिक्री एवं पेकिंगका काम होता है। इसके सोल एजंट हनुमानबक्स सरावगी हैं।

डिबरुगढ़—दी आसाम काटन एण्ड सिल्क फैक्टरी इस नामसे आपकी एक छोटी फेक्टरी है। यहां सिल्क तथा काटनका काम होता है।

मेसर्स बींजराज आसाराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू आसारामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। पहले इस पर दूसरा नाम पड़ता था इसके मूल स्थापक सेठ नवरंगरायजी थे। पश्चात् रामसुख दासजीने इसके कामको संचालित किया। आपके बींजराजजी तथा ताराचंदजी नामक दो पुत्र हुए। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ बींजराजजीके तीसरे पुत्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरुगढ़—मेसर्स बींजराज आसाराम, यहां कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गादत्त हरिबक्स १६।१२ हरिसन रोड, यहां चलानीका काम होता है। इसफर्ममें आपका साझा है।

मेसर्स रामजसराय जैनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके पेड़िया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामजसरायजीके हाथसे संवत् १६४१ में हुई। आपके द्वारा इसकी उन्नति भी बहुत हुई। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके पुत्र बाबू जैनारायणजी इस समय इस फर्मके मालिक हैं। आप सरल प्रकृतिके व्यक्ति हैं। आपके पुत्रोंका नाम बाबू गजानन्दजी और बाबू मन्नालालजी हैं। आप दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जन हैं।

रामरतनदासजी थे। आप व्यापार कुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आपहीके द्वारा इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। आपके २ भाई और थे, शिवनारायणजी तथा मगनीरामजी। आप तीनोंहीका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामरतनदासजीके पुत्र फूलचंदजी एवं मगनीरामजीके पुत्र मोहनलालजी हैं। इसकी विशेष उन्नति बा० फूलचंदजीके द्वारा हुई। आप वयोवृद्ध एवं मिलनसार सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं। बा० मोहनलालजी, बा० ओंकारमलजी तथा बा० हेमराजजी। बा० मोहनलालजी सेठ मगनीरामजीके यहां दत्तक गये हैं। आप तीनों ही व्यापारमें सहयोग देते हैं। आपकी ओरसे सरदार शहरमें धर्मशाला, कुआं, कुंड, बगीचा आदि बना हुआ है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हिंगनघाट—मेसर्स रामरतनदास मोहनलाल (T. A. mohanlal) यहां बैंकिंग, कंट्राक्टिंग तथा दीवानी-में दुकानदारीका काम होता है। यहां आपकी ७ शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम फूलचंद १८२ क्रास स्ट्रीट (T A ca vpca) यहां बैंकिंग तथा चलानीका काम होता है।

मेसर्स श्यामलाल रामकुमार

इस फर्ममें मंडावा निवासी बा० श्यामलालजी तथा रामकुमारजीका साझा है। आप दोनों एक ही वंशके हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके खेमाणी सज्जन हैं। इस फर्मकी उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगनघाट—मेसर्स नंदराम बालाबक्स—यहां बैंकिंग, मूंगा, सिल्क, कस्तूरी आदिका व्यापार होता है। यह फर्म श्यामलालजीकी है।

हिंगोली—मेसर्स श्यामलाल श्रीनिवास—यहां दुकानदारीका काम होता है। इसमें श्यामलालजीका साझा है।

[illegible] - यहां भी इसी नामसे इसीका ही काम होता है।

हिंगनघाट - मेसर्स श्यामलाल रामकुमार—इस नामसे आपका जिन, प्रेस तथा आपने पार्टनरों के जिम्मे काम होता है यह बहुत बड़ी मिल है।

हिंगनघाट—मेसर्स रामकुमार श्यामसुंदर यहां बैंकिंग, जिन तथा आढ़तियोंका काम होता है। यह फर्म रामकुमारजीकी है।

हरकचन्दजी, प्रसन्नचन्दजी तथा दुलीचन्दजी हैं। आपका विशेष परिचय तिनसुकियामें देखिये। यहां इस फर्मपर बैंकिंग, गल्ला, जमींदारी तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स डालूराम बैजनाथ

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (सीकर) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवदत्तरायजी तथा डालूरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। उपरोक्त फर्म सेठ डालूरामजीके वंशजोंकी है। सेठ डालूरामजीके दो पुत्र हुए। गंगा बिशनजी तथा बैजनाथजी। आपके समयमें इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपका भी स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बैजनाथजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी तथा बाबू हेमराजजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरूगढ़—मेसर्स डालूराम बैजनाथ, यहां गल्ले तथा कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बिशनलाल हेमराज १६।११ हरिसन रोड (T. A. Sidhada'a) यहां चलानीका काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

मेसर्स डूंगरसीदास ग्यालीराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक डूंगरसीदासजीके पुत्र बाबू ग्यालीरामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके संतारिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सरदारशहर निवासी सेठ धनसुखरायजी तथा डूंगरसीदासजीने की थी। आप दोनों भाई थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू ग्यालीरामजीने यहां एक संतारिया सोप फैक्टरी नामक साबुनका कारखाना खोला है। इसमें चर्बी आदि अस्पृश्य वस्तुओंका बिलकुल व्यवहार नहीं होता।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरूगढ़—डूंगरसीदास ग्यालीराम मिहानाडी, यह फर्म संतारिया सोप फैक्टरीकी मालिक है। आपके यहां इत्र, तेल, साबुन, शर्बत आदिके तैय्यार करनेका तथा उनकी बिक्रीका काम होता है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीधर

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके लोहिया सज्जन हैं। इस फर्मका पूर्व परिचय मेसर्स सनेहीराम डूंगरमलकी फर्मके साथ दिया गया है वर्तमानमें इस फर्मके सञ्चालक सेठ मुरलीधरजी हैं। यहां आपकी बहुत जमींदारी है। आपके शिव भगवानजी नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीधर—यहां बैंकिङ्ग,कंट्राक्टिङ्ग,जमींदारी तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है। यह फर्म बुढापार एवम् आसाम मेपास नामक टीगार्डनसकी मालिक है। इसके अतिरिक्त मोरगाई उडयीन एवम् चांदमारी नामक स्थानोंपर चुन्नीलाल मुरलीधरके नामसे इस फर्मपर बैंकिङ्ग एवम् दुकानदारीका काम होता है।

मेसर्स जमनादास रामकुमार एण्ड को०

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लछमणगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवनारायणजी एवं जमनादासजी हैं। शिवनारायणजीका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक जमनादासजी तथा आपके चार पुत्र हैं। आप लोगोंके नाम क्रमशः बाबू रामकुमारजी, द्वारकादासजी, ब्रजमोहन तथा दुर्गादत्तजी हैं। आप चारों सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तिनसुकिया—मेसर्स जमनादास रामकुमार एण्डको०—यहां बैंकिंग, जमींदारी, कंट्राक्टिङ्ग, गल्ला तथा कपड़ेका एवं और कमीशन एजेंसीका काम होता है।

तिनसुकिया—मेसर्स ब्रजमोहन दुर्गादत्त—यहां आपका आईल; फ्लोर तथा राईस मिल है। यह फर्म करीब २५०० बीघा जमीनमें चावलकी खेती करती है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स जमनादास रामकुमार—यहां बैंकिङ्ग, जमींदारी, गल्ला कपड़ा आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास सूरजमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नरसिंहदासजी तथा आपके पुत्र बाबू सूरजमलजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ३२ वर्ष हुए।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिब्रूगढ़—मेसर्स रामजसराय जैनारायण, यहां बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।

हाल फटा—हाल फटा सॉ मिल्स, यहां आपका लकड़ीका कारखाना है तथा आईलमिल है।

इस फर्मकी ओरसे शीघ्रही डिब्रूगढ़में बिजली सप्लाय करनेका कारखाना खोला जाने वाला है।

मेसर्स रामरिखदास गंगाप्रसाद

इस फर्मके संचालकोंका निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके केड़िया सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामरिखदास थे। आपके तीन पुत्र हुए। जमनादासजी, गंगाप्रसादजी तथा हरिदासजी। सेठ गंगाप्रसादजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको विशेष उत्तेजन मिला। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास होगया है। संवत् १९७८ में इस फर्मकी तीन शाखाएं होगईं।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक गंगाप्रसादजीके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी, बाबू नौपदरायजी, एवं बाबू ज्वालादत्तजी हैं। चौथे पुत्र जुगल किशोरजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। इस फर्मकी ओरसे जलालसर (राजपूताना) नामक स्थानमें धर्मशाला कुंआ आदि बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिब्रूगढ़—मेसर्स रामरिखदास गंगाप्रसाद (T. A. Kedia) यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजेंसीका व्यापार होता है। यह फर्म यहांके जंगलोंसे बेंत निकलवाती है। तथा बाहर चालान करती है। इसकी यहां चायके बगीचोंमें ६ दुकानें हैं।

डिब्रूगढ़—मेसर्स गंगाप्रसाद नवपदराय, यहां कपड़ा, गल्ला तथा किरानेका काम होता है।

कलकत्ता—रामरिखदास गंगाप्रसाद १७३ हरिसन रोड, यहां चलानीका काम होता है।

गोहाटी - रामरिखदास गंगाप्रसाद, यहां आटा मैदा तथा आढ़तका काम होता है।

नारायणगंज—रामरिखदास गंगाप्रसाद, यहां बेंतका व्यापार होता है।

चांदपुर—रामरिखदास गंगाप्रसाद यहां भी बेंतका व्यापार होता है।

मेसर्स रामपतदास मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदार शहर (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चौधरी सज्जन हैं। यह फर्म यहां संवत् १९२३ से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां चावल सूत, गरान कन्ट्राक्ट, दियासलाई, टायर्स, ट्यूबकी एजेन्सी, और प्राइवेट बैंकिङ्गका काम होता है।

मेसर्स जयसुखलाल गणेशलाल डीमापुर—यहां माल सप्लाई तथा आढ़त दारीका काम होता है।

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स जमनालाल मांगीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान लोसल (जयपुर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके सिंघाडियां सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनालालजी तथा आपके पुत्र बाबू मांगीलालजी और बाबू हरखचंदजी हैं।

सेठ जमनालालजी सिंघाड़ियां वयोवृद्ध सज्जन हैं। व्यापारका समस्त संचालन कार्य आपके पुत्र बाबू मांगीलालजी देखते हैं। आप शिक्षित युवक हैं। आपके भ्राता बाबू हरकचंदजीभी व्यापारमें योग देते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स जमनालाल मांगीलाल सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां पेचा पगड़ी तथा सभी प्रकारके मनीपुरी कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त गल्ला माल स्टेशनरी और फेन्सी गुड्स का काम भी होता है।

मेसर्स प्रभूला फूलचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बेरी (जयपुर) है। आपलोग सरावगी समाजके पाटनी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १६२६ से स्थापित है। इसके स्थापक बाबू प्रभूलालजी एवम फूलचन्दजी दोनों भाई हैं। इसके पहले आप लोग मङ्गलचन्द कालूरामकी फर्ममें सामीदार थे। आप ही दोनोंके हाथसे इसकी उन्नति हुई है। आप सज्जन और व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक आप ही लोग हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स प्रभूलाल फूलचन्द्र मैथमुअल बाजार इम्फाल (मनीपुर स्टेट)—यहां फर्मका हेड औफिस है। तथा मनीपुरी कपड़ा, चावल, लाल मिर्च, गुड़, घी का काम होता है। मोट पार्टसकी बिक्री भी होती है।

मेसर्स शिवदत्तराय प्रह्लादराय

इस फर्मको यहां स्थापित हुए ४० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवदत्तरायजी तथा डालूरामजी थे। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन थे। आपके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। वर्तमान फर्म सेठ शिवदत्तरायजीके वंशजोंकी है। सेठ शिवदत्तरायजीके २ पुत्र हुए श्रीमंगतूरामजी तथा प्रह्लादरायजी। मंगतूरामजीका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें इसके संचालक सेठ प्रह्लादरायजी तथा आपके ५ पुत्र हैं। जिनमें बा० किशनलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे रामगढ़में एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

डिब्रूगढ़—मेसर्स शिवदत्तराय प्रह्लादराय—यहां कपड़े तथा गल्लेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स किशनलाल हेमराज १६।१ हरिसन रोड (T. A. Sidhi data) यहां चलानीका काम होता है। इसमें आपका साझा है।

मेसर्स हनुतराम रामप्रताप

इस फर्मके मालिक कालाडेरा (जयपुर) के निवासी हैं। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ हनुतरामजी थे। आपहीके द्वारा इसकी विशेष उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपके रामप्रतापजी तथा रामप्रसादजी नामक दो पुत्र थे। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। आप दोनोंके कोई पुत्र न होनेसे आपने बाबू रामेश्वरलालजी को दत्तक लिये हैं। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

यहां मुनीम नथमलजी काम देखते हैं। आप बहुत वर्षोंसे यह काम कर रहे हैं। इस फर्मकी ओरसे यहां एक धर्मशाला और कालाडेरामें कुंआ और औषधालय बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स हनुतराम रामप्रताप बड़ा गोला, यहां बैंकिंग, कमीशनएजंसी तथा जमींदारीका काम होता है। यह फर्म कई चाय बागानोंकी मालिक है। तथा बागानमें आपकी कई दुकानें हैं। जहां दुकानदारी एवं बैंकिंग बिजिनेस होता है।

बड़िलाग, ससनागपन टी इस्टेट, फटालगुड़ी आदि स्थानोंपर आपके चायके बगीचे हैं।
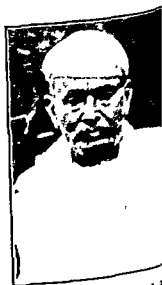
जो फर्म मेसर्स जयसुखलाल कालूरामके नामसे स्थापित हुई थी उसी फर्मसे अपना व्यापारिक सम्बन्ध अलग कर सेठ कालूरामजीने सम्वत् १६७३ में अपनी स्वतन्त्र फर्म मेसर्स कालूराम मङ्गलचन्दके नामसे स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया। व्यापारमें आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। जहां आरम्भमें इस फर्मपर केवल कपड़ेका ही काम होता था। वहां क्रमशः चावल, मोटर पार्ट्स आदिका काम भी होने लगा और मोटर कम्पनी एलेनबेरीकी एजेन्सी भी इस फर्मने ली। इसी प्रकार सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी लिया। इस प्रकार व्यापार उन्नत अवस्था पर पहुंचा परन्तु सन् १६२६ में इस फर्मके मालिक अलग हो गये और सेठ कस्तूरचन्दजीने अपने बड़े भाई सेठ मङ्गलचन्दजीके साथ मेसर्स मङ्गलचन्द कस्तूरचन्द नामसे व्यापार आरम्भ किया। इस फर्मपर पहिलेकी भांति राशन कन्ट्राक्ट, मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स, मेसर्स ऐलेनबेरी नामक मोटर कम्पनीकी ऐजेन्सी आदिका व्यापार होने लगा जो अब भी पूर्ववत् हो रहा है। इसी बीच सन् १६२८ ई० में सेठ कालूरामजीका स्वर्गवास हो गया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मङ्गलचन्दजी पाटनी और सेठ मङ्गलचन्दजीके पुत्र बाबू मेघराजजी तथा सेठ कस्तूरचन्दजीके पुत्र बाबू जौहरीमलजी, बाबू माणिकचन्दजी तथा बाबू ताराचन्दजी हैं।

इस फर्मका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मङ्गलचन्द कस्तूरचन्द मैंरूसुअल बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां इस फर्मके व्यापारका हेड आफिस है। यहां कपड़ा, धान, चावल तथा सभी प्रकारके मनीपुरी मालका काम है। मोटरपार्टस, ट्यूबटायर्स आदिकी मेसर्स ऐलेनबेरीकी ऐजेन्सी है। राशन कन्ट्राक्टका काम भी होता है।

मेसर्स कस्तूरचंद जौहरीमल कोहिमा जि० नागाहिल्स—यहां गल्ला कपड़ा, सूत, आदि का काम है। और विशेषरूपसे यहां सरकारी कंट्राक्टका काम है।

मेसर्स मङ्गलचंद कस्तूरचंद डीमापुररेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां चावलका काम प्रधान रूपसे होता है। और फार्वर्डिंग ऐजेन्सी का काम भी है।

मेसर्स मङ्गलचंद कस्तूरचंद सदिया जि० लखीमपुर—यहां सरकारकी सीमास्थित फौजको रसद देनेके कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स कालूराम मङ्गलचंद ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता T.A.Parpatni—इस फर्मपर अभी स्वर्गं सेठ कालूरामजी पाटनीके छओं पुत्रोंका सम्मिलित काम है। यहां चालानीका काम होता है।

इसके स्थापक तथा इसकी उन्नति करनेवाले आपही हैं। बा० सूरजमलजीके बा० मुरलीधरजी नामक एक पुत्र हैं। तिनसुकिया दुकानपर मुनीम सूरजमलजी काम करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—मेसर्स नरसिंहदास सूरजमल—यह फर्म तिनसुकिया राइस एण्ड आइल मिलकी प्रोप्राइटर है। यहां बैंकिंग, कमीशन एजेन्सी, धान, और चावलका काम होता है। यह फर्म डीनजोई टी इस्टेटकी मालिक तथा जवारबन्ध टी इस्टेटकी शेयर होल्डर है।

———

मेसर्स सनेहीराम डूंगरमल

इस फर्मके संचालक रतनगढ़के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके लोहिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८६६ से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ कन्हीरामजी थे। आपके दो पुत्र हुए। मुन्नीलालजी तथा सनेहीरामजी। आप दोनोंके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आप दोनों भाइयोंकी अलग अलग फर्में चल रही हैं। उपरोक्त फर्म सेठ सनेही रामजीके वंशजोंकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ डूंगरमलजी हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः बा० दुर्गादत्तजी, ज्वालादत्तजी, शिवभगवानजी तथा गौरीशंकरजी हैं। बाबू दुर्गादत्तजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

स्थानीय सनेहीराम गवर्नमेण्ट एड स्कूल आपहीके द्वारा स्थापित हुआ है। आपकी ओरसे मारवाड़ी संस्कृत कालेज मीरघाटमें भी अच्छी सहायता दी गयी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—सनेहीराम डूंगरमल—यहां बैंकिंग, जमींदारी, और कमीशन एजेन्सीका काम होता है। यह फर्म दिनपुर टी इस्टेटकी प्रोप्राइटर है।

तिनसुकिया—डूंगरमल दुर्गादत्त—यहां धान, चावल और गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सनेहीराम डूंगरमल १७२ हरिसन रोड (T. A. Parbrahma) यहां चलनीका काम होता है।

[illegible]र—सनेहीराम डूंगरमल—गल्ला तथा केरोसिन तेलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त मिलपुखरी, घेलाघाट, दुकानपुखरी आदि स्थानोंपर भी सनेहीराम डूंगरमलके [illegible] गल्ल का व्यापार होता है।

—

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल मु० मिंगमई पो० इम्फाल, मनीपुर स्टेट—यहां कपड़ा, चावल आदि खरीद और बिक्रीका काम है।

मेसर्स सेनराज भूरमल कोहिमा नागाहिल्स यहां कपड़ा, सूत, नमक आदिकी बिक्री तथा चावलकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर—स्टेट फारवर्डिङ्ग ऐजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स सदासुख मनसुख

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नागोर (मारवाड़) है। आप लोग समाजके पहाड़्या सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक स्व० सेठ सदासुखजी देशसे सन् १९३५ के लगभग आसाम प्रान्तके डिब्रूगढ़ नामक स्थानमें आये और मेसर्स सदासुख मनसुख नामसे कपड़ेका काम आरम्भ किया। धीरे धीरे गल्लाका भी व्यापार करने लगे। कुछ समय पश्चात् आप मनीपुर आये और मेसर्स सेरमल सदासुखके नामसे कपड़ेका काम आरम्भ किया। आपको यहाके व्यापारमें अच्छी सफलता मिली अतः व्यापारने अच्छी उन्नति की। इस नामसे वर्षोंतक व्यापार होता रहा पर सन १९२८ ई० के मई मासमें मालिक लोग अलग हो गये अतः उपरोक्त फर्मके प्रधान संचालक सेठ मनसुखजीने अपना व्यापार मेसर्स सदासुख मनसुखके नामसे आरम्भ किया जो पूर्ववत् उन्नत अवस्थामें आज भी हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखजी तथा स्व० सेठ सदासुखजीके पुत्र बाबू मूलमलजी, और स्व० सेठ सदासुखजीके भाई स्व० सेठ मूलचन्दजीके पुत्र बाबू हरखचंदजी तथा सेठ सदासुखजीके भांजे बाबू किशनलालजी और बाबू सूरजमलजी हैं।

इस फर्मका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सदासुख मनसुख सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां फर्मके व्यापारका हेड आफिस है यहां प्रधान रूपसे कपड़ा, सूत और चावल का काम होता है। सोना, चांदी, किराने इत्यादिमालका भी काम होता है। आसाम आइल कम्पनीकी ऐजेन्सी तथा इम्पीरियल टौबेको कम्पनीकी ऐजेन्सी भी इस फर्मपर है। यह फर्म पोलीटिकल ऐजेन्ट इन मनीपुर स्टेटकी फारवर्डिङ्ग ऐजेन्ट भी है। यहांसे मनीपुरी कपड़ा बाहर भेजा जाता है। यहां प्राईवेट बैंकिङ्गका काम भी है।

मेसर्स सदासुख मनसुख डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां फारवर्डिङ्ग ऐजेन्सीका काम होता है।

पाटनी सज्जन हैं। आप लोग स्व० सेठ कालूरामजीके पुत्र हैं। सन् १९२६ में कालूरामजीके पुत्र अलग होकर अपना व्यापार स्वतन्त्र रूपसे करने लगे तो बाबू हजारीमलजीने अपने भाई बाबू दुलीचन्दजीके साथ मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द नामकी यह फर्म खोली पूर्व व्यापारक्रमके अनुसार इस फर्मपर भी मनीपुर कपड़े, चावल, तथा सूत आदिका व्यापार होता है।

इस फर्मके मालिक सेठ हजारीमलजीके पुत्र बाबू महादेवजी तथा सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू कुन्दन मलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द मैरमुअल बाजार इम्फाल—यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा कपड़ा चावल आदि सभी प्रकारके मनीपुरी मालका व्यापार और सूतका काम होता है।

मेसर्स कालूराम हजारीमल डीमापुर, रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां फार्वडिंग ऐजेन्टका काम होता है।

मेसर्स कालूराम हजारीमल कोहिमा, जिला नागा हिल्स—यहां नमक, तेल, सूत तथा गल्ला मालका काम है और सरकारी पल्टनकी रसदका कण्ट्राक्ट है।

मेसर्स कालूराम मंगलचन्द ४१ स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता—यहां सभी भाइयोंका सम्मिलित व्यापार पूर्ववत् होता है। यहां प्रधान रूपसे चलानीका काम होता है।

डीमापूर

आसाम बङ्गाल रेलवेकी मेन लाईनपर मनीपुर रोड नामक स्टेशनके पास ही यह मण्डी बसी हुई है। यह एक बहुत छोटी मण्डी है। पर फिर भी फारवर्डिंग स्टेशन होनेकी वजहसे यहां काफी चहल पहल रहती है। यहांपर विशेष व्यापार लकड़ी एवम चावलका होता है। चावल मोटर-लारियों द्वारा मनीपुरसे यहां आता है। एवम यहांसे हमारे मन बाहर दिसावरोंमें भेजा जाता है। यहांपर भी कई अच्छे अच्छे व्यापारियोंकी फर्मे हैं। इनके हेड आफिस प्रायः मनीपुरमें हैं। मनीपुरके व्यापारियोंने माल मंगवाने एवम भेजनेकी सुविधाके लिये यहां दुकानें खोल रखी हैं। यहांसे मनीपुर रोड (इम्फाल) को मोटर जाती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है

मेसर्स कालीचरनराम बलदेवराम

इस फर्मके मालिक बड़िया जिलेके रहने वाले वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना बाबू

मेसर्स प्रभूलाल फूलचन्द मु० कानकोपी मनीपुर स्टेट—यहां प्रधान रूपसे कपड़े की बिक्री तथा घीकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स कालूराम प्रभूलाल मु० लोकरा जि० तेजपुर—यहां सरकारी पल्टनके रसद देनेका कन्ट्राक्ट है।

मेसर्स कालूराम प्रभूलाल डीमापुर, रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां जेनरल मर्चेन्ट और कमीशन ऐजेन्टका काम होता है। आपके यहां आर्डर स्प्लाई और फारवर्डिङ्ग ऐजेन्टका काम भी होता है।

मेसर्स कालूराम मङ्गलचन्द ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता—यहां सभी भाइयोंका सम्मिलित काम है। यहां पर चालानीका काम विशेष रूपसे होता है

मेसर्स भैरवदान भगवानदास

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बीकानेर है। आपलोग माहेश्वरी समाजके मोहता सज्जन हैं। मनीपुर विद्रोहके समय सेठ धनेचन्दजी मोहता यहां आये और आपने व्यापार करनेके लिये मेसर्स धनेचन्द चतुर्भुजके नामसे फर्म खोली। सम्वत् १९५० में सेठ भैरवदानजी भी यहीं आ गये, और व्यापारमें सहयोग देने लगे। बहुत दिन तक व्यापार इसी नामसे होता रहा पर सम्वत् १९६३ में मालिकोंके अलग हो जानेके कारण सेठ भैरवदानजीने अपना स्वतंत्र व्यापार मेसर्स भैरवदान भगवानदासके नामसे आरम्भ किया जो आज भी अपना पूर्ववत व्यापार करते जा रहे हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भैरवदानजी तथा आपके पुत्र बाबू नथमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भैरवदान भगवानदास सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां सभी प्रकारके मनीपुरी कपड़ेका तथा चावलका काम होता है। सोना चांदीका तथा सभी आवश्यक वस्तुओंका व्यवसाय भी यहां होता है।

मेसर्स धनेचन्द भैरवदान डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां भी मनीपुरी कपड़ा, चावल, सोना, चांदी आदिका काम होता है।

मेसर्स मंगलचन्द कस्तूरचन्द

इस उपरिलिखित फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान [illegible] (जयपुर) है। आपलोग [illegible] समाजके [illegible] सज्जन हैं। आपने लगभग ७० वर्ष पूर्व इम्फाल (मनीपुर स्टेट) में

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स शिवनारायण बिलासीराम डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड T. A. Bilasiram—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है। यहां चावल आदि सभी प्रकारके मनीपुरी मालकी आढ़तका काम होता है। महाजनी लेन देनका काम भी होता है।

मेसर्स शिवनारायण बिलासीराम डीफू जि० नवगांव—यहां इस फर्मका लकड़ीका कारखाना है। यहां इमारती लकड़ी सप्लाईका काम होता है। रेलवे कम्पनियोंको स्लीपर्स सप्लाई करनेका ठेका भी लिया जाता है।

मेसर्स शिवनारायण बिलासी राम, बोकाजान जि० शिवसागर—यहां जंगली प्रदेशकी सभी प्रकारकी उपज जैसे कपास, सरसों, अरडी रेशमकी कुसियारी तथा लाख आदि संग्रह करने और उसे आसाम प्रान्त तथा अन्य प्रान्तोंको भेजनेका काम है। यहां बेंत और चावल मोगरा संग्रह कर बेचनेका सरकारी ठेका भी इसी फर्मके पास है।

सिलचर

यह भी एक पहाड़ी स्थान है। ए० बी० आरके बदरपुर जंक्शनसे एक लाईन सिलचर तक गई है। इसका आखरी स्टेशन सिलचर ही है। यहां पर विशेषकर चाय एवम कपासका व्यापार होता है। चाय तो यहां पासही पहाड़ोंपर पैदा होती है। मगर कपास यहांसे कुछ दूरीपर होता है पहाड़ोंपरसे किसान लोग जंगलमें एक निश्चित स्थानपर आ जाते हैं और साथमें कपास ले आते हैं। व्यापारी लोग मोटर या किसी सवारीमें कच्चे रोड द्वारा चलेजाते हैं। और वहीं किसानों तथा व्यापारियोंका सौदा तय होजाता है। इस प्रकार यहांके व्यापारी कपासका व्यापारकरते हैं। यहांका कपास साधारण काटिंका होता है।

चाय बागानकी वजहसे यहां मजदूर लोगोंकी बस्ती बहुत है। इस लिये यहां साधारण दुकानदारोंका व्यापार ही अधिक है

यहांसे बाहर जानेवाली वस्तुओंमें चाय और कपास एवम जंगली पैदावार है एवम् आनेवाले मालमें प्रायः सभी प्रकारका गृहस्थीका समान है।

मेसर्स छोटेलाल सेठ एण्ड को०

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान आगरा है। आप लोग वैश्य समाजके सज्जे-

मेसर्स लादूलाल चतुर्भुज

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान छापड़ा (जयपुर) है। आप लोग दिगम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आजसे २५ वर्ष पूर्व नागा पहाड़ीपर बसे हुए कोहिमा नगरमें हुई थी जहां आज भी पूर्ववत् व्यापार हो रहा है। इम्फालमें इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग १० वर्ष पूर्व हुई थी। फर्मके संचालकोंकी तत्परतासे फर्मने उन्नति की ओर पैर उठाया है। इस स्थानपर होने वाले चावल, लाल मिर्च आदिके व्यापारके अतिरिक्त यह फर्म प्रधानरूपसे मनीपुरी कपड़ेकी चलानीका काम ही करती है यहां आसाम सिल्क, मूंगा, और अण्डीकी चलानीका काम जोरसे होता है। यह फर्म सन्डे परिवारमें 'अरीकोलन' अर्थात् अण्डी रेशमकी कुकिनारी जिससे अण्डीका रेशम तैयार होता है बाहर भेजती है और साथ ही मनीपुरसे बाहर जाने वाले सभी प्रकारके मालको भेजनेका काम करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लादूलालजी तथा सेठ चतुर्भुजजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लादूलाल चतुर्भुज इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां मनीपुरी कपड़ेका तथा अण्डी, मूंगा, और आसाम सिल्ककी चलानीका काम होता है। चावल लाल मिर्चका व्यापार भी होता है।

मेसर्स लादूलाल चतुर्भुज कोहिमा नागापहाड़ी आसाम—यहां मोमकी तथा कपासकी खरीदी और नमक तथा सूतकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरामल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान घेरी (जयपुर) है। आप लोग सरावगी समाजके सेठी सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक सेठ भूरमलजी सम्वत् १९४२ के लगभग देशसे मनीपुर आये। यहां आकर आपने अपनी फर्म खोली तबसे यह फर्म बराबर अपना व्यापार करती आ रही है। आरम्भमें इस फर्मपर केवल कपड़ेका काम होता था परन्तु ज्यों २ व्यापारमें उन्नति हुई त्यों त्यों कपड़ेके अतिरिक्त चावल, सोना, चांदी आदिका काम भी खोला गया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गुमानरामजी तथा आपके छोटे भाई सेठ वृद्धकरणजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां कपड़ा, चावल, सोना, चांदी, का काम होता है। तथा सभी प्रकारके मनीपुरी मालकी खरीद बिक्रीका काम है।

किया। सं० १९५६ में आपने लूशाई पर्वतश्रेणीके दुर्गम पहाड़ी प्रदेशान्तर्गत ऐजल नामक स्थानमें अपनी दूसरी फर्म खोली। यहां आप मालका बहुत बड़ा स्टाक रख व्यापार करने लगे। कुछ ही दिन बाद यहां रहनेवाली सरकारी सैन्यको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी आपने लिया जो आज भी आपके ही हाथमें है। इसी प्रकार सिलचरमें भी सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट इसी फर्मके पास है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दुर्गाप्रसादजी तथा आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी, बाबू बिहारीलालजी, बाबू गणेशप्रसादजी, बाबू भोमलालजी और बाबू सोहनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर कछार मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहां फर्मका हेड आफिस है। धान, चावल, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। तथा सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट है।

ऐजल मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहां सभी प्रकारकी आवश्यक वस्तुओंका ऊंचा व्यापार है। सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी है।

मेसर्स सेदूमल मांगीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान मीठड़ी (जोधपुर) है। आपलोग गाड़ोदिया अग्रवाल सज्जन हैं। आजसे लगभग १२ वर्ष पूर्व सेठ सेदूमलजी सिलचर आये और यहां आपने मेसर्स सेदूमल मांगीलालके नामसे चायका व्यापार आरम्भ किया। यह फर्म सिलचरमें चाय खरीदती और कलकत्ते भेजती थी। इसके बाद ही फर्मने चावलका काम भी खोला और आसामके विभिन्न स्थानोंको चावल भेजने लगी। इस फर्मको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। सन् १९२६ में सेठ सेदूमलजीने एक चायका बगीचा खरीदा इसे जिसे आप सब विधि उन्नत अवस्थापर पहुंचाकर संचालित कर रहे हैं। इसके बाद आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है। आपने एक और नवीन बगीचा तैयार कराया है जो अच्छी उन्नति कर रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बच्छराजजी, सेठ सेदूमलजी तथा सेठ जेठमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स सेदूमल मांगीलाल यहां चाय, चावल, कपड़ा, और गल्ला मालका काम होता है। चावलकी आढ़तका काम भी है। महाजनी लेनदेन भी होता है। यहां पर आपकी स्थायी सम्पत्ति तथा जमींदारी है।

मेसर्स सदासुख मनसुख डिब्रूगढ़—यहां कपड़ा, सूत, चावल, सोना, चांदी, किराना, गल्ला, पेट्रोल, सिमेंट, आदिका काम है। प्राइवेट बैंकिङ्गका काम भी यहां होता है।

मेसर्स सदासुख मनसुख मु० लायमेकुरी जि० डिब्रूगढ़—यहां सरकारका लकड़ीका जो कारखाना है। उसमें काम करनेवालोंकी सुविधाके लिये यह फर्म सभी प्रकारका आवश्यक माल रखती है।

इससे अतिरिक्त इस फर्मकी दुकानें इम्फाल नगरके मैक्सुअल बाजार तथा मनीपुर राज्य के कानकोपी, कैंथी मामी, तथा थोपाल नामक स्थानोंपर हैं जहां कपड़ा, चावल, सूत आदिका काम होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय

इस फर्मके संचालक रतननगर (बीकानेर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके जीवराजका सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २१ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म शिलांगमें रसद सप्लाई और कन्ट्राक्टिंगका काम करती थी। इसके स्थापक सेठ सनेहीरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपने मनीपुरके पासही एक तालाब बनवाया है। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन सेठ तनसुखरायजीने किया। आपके समयसेही इस फर्मपर मनीपुर दरबारकी फारवर्डिंग ऐजेन्सी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ सनेहीरामजीके पुत्र बाबू रामकुमारजी तथा स्व० सेठ तनसुखरायजीके पुत्र बाबू हनुमान प्रसादजी तथा बाबू हरिप्रसादजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय सदर बाजार इम्फाल; (मनीपुर स्टेट)—यहां राशन कण्ट्राक्ट, मनीपुर स्टेटके बिल्डिङ्ग रोड आदिका कण्ट्राक्ट, फोर्ड मोटरकी ऐजेन्सी, मोटर पार्टसकी एजेन्सी तथा चावल, सूत और मनीपुरी कपड़ेका काम होता है। मनीपुर दरबारके फार्वर्डिङ्ग ऐजेन्सीका काम भी होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुख राय मैक्सुअल बाजार इम्फाल (मनीपुर स्टेट)—यहां मनीपुरी कपड़े, बर्तन तथा मोटर एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय डीमापुर, स्टेशन मनीपुर रोड—मनीपुर दरबारके फार्वर्डिङ्ग ऐजेण्ट हैं तथा गल्ला कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान घेरी (जयपुर) है। आप लोग सरावगी समाजके

किया। सं० १९५६ में आपने लूशाई पर्वतश्रेणीके दुर्गम पहाड़ी प्रदेशान्तर्गत ऐजल नामक स्थानमें अपनी दूसरी फर्म खोली। यहां आप मालका बहुत बड़ा स्टाक रख व्यापार करने लगे। कुछ ही दिन बाद यहां रहनेवाली सरकारी सैन्यको रसद देनेका कन्ट्राक भी आपने लिया जो आज भी आपके ही हाथमें है। इसी प्रकार सिलचरमें भी सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक इसी फर्मके पास है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दुर्गाप्रसादजी तथा आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी, बाबू बिहारीलालजी, बाबू गणेशप्रसादजी, बाबू भोमलालजी और बाबू सोहनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर कछार मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहां फर्मका हेड आफिस है। धान, चावल, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। तथा सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक है।

ऐजल मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहां सभी प्रकारकी आवश्यक वस्तुओंका ऊंचा व्यापार है। सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक भी है।

मेसर्स सेढ़मल मांगीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान मीठड़ी (जोधपुर) है। आपलोग गाड़ोदिया अग्रवाल सज्जन हैं। आजसे लगभग १२ वर्ष पूर्व सेठ सेढ़मलजी सिलचर आये और यहां आपने मेसर्स सेढ़मल मांगीलालके नामसे चायका व्यापार आरम्भ किया। यह फर्म सिलचरमें चाय खरीदती और कलकत्ते भेजती थी। इसके बाद ही फर्मने चावलका काम भी खोला और आसामके विभिन्न स्थानोंको चावल भेजने लगी। इस फर्मको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। सन् १९२६ में सेठ सेढ़मलजीने एक चायका बगीचा खरीदा इस जिसे आप सब विधि उन्नत अवस्थापर पहुंचाकर संचालित कर रहे हैं। इसके बाद आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है। आपने एक और नवीन बगीचा तैयार कराया है जो अच्छी उन्नति कर रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बच्छराजजी, सेठ सेढ़मलजी तथा सेठ जेठमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स सेढ़मल मांगीलाल यहां चाय, चावल, कपड़ा, और गल्ला मालका काम होता है। चावलकी आढ़तका काम भी है। महाजनी लेनदेन भी होता है। यहां पर आपकी स्थायी सम्पत्ति तथा जमींदारी है।

कालीचरनजीने १८ वर्ष पूर्वकी थी। आरम्भमें इस फर्मने साधारण स्थितिसे काम किया पर आज यह फर्म कपड़ा, गल्ला, वर्तन आदि सभी आवश्यक वस्तुओंका व्यापार करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डीमापुर—मेसर्स कालीचरन राम बलदेव राम यहां कपड़ा, वर्तन, और गल्ला मालका व्यापार होता है।

योकाजान (शिवसागर)—मेसर्स जमुनाराम शिवधनो, यहां लाख, तिल, कपासकी खरीदीका और कपड़ा, वर्तन, गल्ला मालकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स तनसुखदास जयनदास

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बीकानेर है। आप लोग ओसवाल समाजके सेठानी सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ लूनकरणजी लगभग ६० वर्ष पूर्व डीमापुर आये और यहां आपने मेसर्स रामलाल लूनकरणके नामसे गल्ले मालका व्यापार आरम्भ किया। ३० वर्षके बाद मालिक लोग अलग हो गये और सेठ लूनकरणजीके पुत्र सेठ घेवरचंदजीने मेसर्स घेवरचंद तनसुखदासके नामसे व्यापार आरम्भ किया। पर ७ वर्ष बाद ये लोग भी अलग हो गये तब सेठ तनसुखदासजीने मेसर्स तनसुखदास जयनदासके नामसे व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है।

यह फर्म प्रधान रूपसे लाख, अण्डी रेशमकी कुसियारी तथा सरसों और कपासका काम करती है।

इस फर्मके मालिक सेठ तनसुखदासजी तथा आपके पुत्र बाबू जयनदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स तनसुखदास जयनदास डीमापुर ए० रे० मनीपुर रोड यहां लाख, अण्डी रेशमकी कुसियारी, कपास, तिल, सरसों, कपड़ा आदिका काम होता है।

मेसर्स शिवनारायण बिलासीराम

इस फर्मके संचालक लोसल (जयपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सिंघानिया सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १६ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ बिलासीरामजी हैं। इसके पहले यह फर्म निगजगंज आदि स्थानोंमें व्यापार करती थी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बिलासीरामजी, तथा आपके भाई शिवनारायणजी हैं। आप लोग व्यापार दक्ष सज्जन हैं। सेठ बिलासीरामजीके लक्ष्मीनारायणजी नामक एक पुत्र हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं।
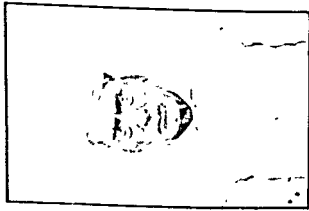
स्व॰ गुमराजजी गाड़ोदिया (सेढ़मल मांगीलाल)
भिवंडर
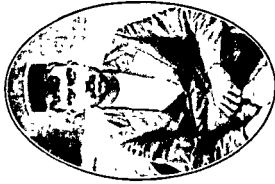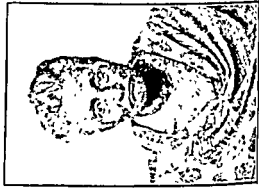
स्व॰ सेढ़मलजी गाड़ोदिया (सेढ़मल मांगीलाल)
भिवंडर

[illegible]

वाल सज्जन हैं। लगभग २० वर्षसे बाबू छोटेलालजी सिलचर रहते हैं। आपकी फर्मपर मोटर पार्टस, मोटर एसेसरीज, ट्यूब, टायर्सका काम होता है। इसी प्रकार धान, चावल तथा पाट आदिका व्यापार होता है। फर्मके पास सरकारी फौजको रसद देनेका कण्ट्राक्टका काम है। यह फर्म मेसर्स राली-ब्रदर्सको चावल सप्लाई करती है।

बाबू छोटेलालजी प्रभावशाली व्यक्ति हैं और यहांके प्रतिष्ठित व्यापारी तथा सुनभ्य नागरिक हैं। आप सभी सार्वजनिक कार्यों में प्रचुर भाग लेते हैं। आप यहांकी म्यूनिसिपेल्टीके म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। यहांकी बिजली कम्पनीके आप डायरेक्टर हैं। इसी प्रकार आप कितनी ही संस्थाओंके सदस्य एवं पदाधिकारी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स छोटेलाल सेठ एण्ड को० यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स, और मोटर असेसरीजका काम होता है।

सिलचर मेसर्स छोटेलाल ओंकारनाथ—इस नामसे इस फर्ममें देशी कारबार होता है।

मेसर्स जेसराय रामप्रताप

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके फन्डोयी सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस तिनसुकिया है इसकी एक ब्रांच सन् १९२० में सिलचरमें खोली गयी। यह ब्रांच चावलका व्यापार प्रधान रूपसे करने लगी। इसे व्यापारमें अच्छी सफलता मिली फलतः सन १९२५ में एक चावलका मिल भी शिवशङ्कर राइस मिल्सके नामसे यहां खोला गया जो अच्छी उन्नत अवस्थामें है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स जेसराय रामप्रताप यहां धान तथा चावलका व्यापार प्रधान रूपसे होता है।

तिनसुकिया मेसर्स जेसराय रामप्रताप यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके चौदगोड़िया सज्जन हैं। लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ दुर्गाप्रसादजी स्वदेशसे आसाम प्रान्तके सिलचर नगर आये और मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद क्रमशः धान, चावल, तथा सभी प्रकारके गल्ले मालका व्यापार भी आपने आरम्भ

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलहट—मेसर्स लच्छीराम मेघराज बन्दर बाजार - यहां कपड़ेका काम प्रधान रूपसे होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लच्छीराम कन्हैयालाल ५।६ अर्मेनियन स्ट्रीट—यहां कपड़ेकी चलानीका काम होता है।

धोलपुर—मेसर्स कन्हैयालाल मेघराज यहां कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान देशनोक (बीकानेर) है पर वर्तमानमें आपलोग गतः ३० वर्षोंसे बीकानेर हीमें रहते हैं। आपलोग ओसवाल समाजके सुराना सज्जन हैं। सेठ सुरंगमलजी देशसे सम्वत् १९३४ में सिलहट आये और कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९४० में आपने कलकत्तेमें गुलाबचंद सरदारमलके नामसे चलानीका काम खोला, सम्वत् १९६२ में आपने छातक जिला सिलहटमें गल्ले और कपड़ेका काम खोला। इस प्रकार आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। आपने सन् १९०७ ई० के अकालमें अन्न कष्ट प्रपीड़ितोंको अच्छी सहायता प्रदान की थी। आपकी इस सेवाकी प्रशंसा सरकारने भी की है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुरंगमलजी सुराना तथा आपके पुत्र बाबू कन्हैयालालजी सुराना और बाबू पूनमचंदजी सुराना हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलहट—मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद बन्दर बाजार—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां कपड़ेका काम प्रधानरूपसे होता है। सोना, चांदी, महाजनी और जमींदारीका काम भी है।

सिलहट—मेसर्स सुरंगमल कन्हैयालाल कालीघाट रोड तारका पता Corogated—यहां गल्ला,टीन,तेल, घी, और तम्बाकूका व्यवसाय होता है।

छातक (जि० सिलहट)—मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद —यहां सोना, चांदी, कपड़ा, गल्ला माल और महाजनी तथा जमींदारीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलाबचंद सरदारमल ६५।३ पांचागली —यहां सोना, चांदी, गल्ला कपड़ा आदिकी चलानीका काम होता है।

५ बीकानेर—सुरानाकी गवार पुराना निजामत—यहां बैङ्किगका काम होता है।

बा० चाँदराजजी पटवा (छोगमल मूलचन्द)
श्रीमंगल

बा० सुगनचन्दजी पटवा (धनराज सुहालाल)
श्रीमंगल.

बा० रतनचन्दजी पटवा (छोगमल मूलचन्द)
श्रीमंगल

बा० भिखमचन्दजी सेठिया (सूरजमल भिखमचन्द)
श्रीमंगल

कपड़े तथा गल्ले का व्यापार आरम्भ किया। यहांसे संवत् १९५६ के लगभग आप श्रीमंगल आये और अपनी उपरोक्त फर्मकी स्थापनाकर कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया और अपने परिश्रमसे अपने व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया।

आजकल आप वृद्धावस्थाके कारण देशमें ही रहते हैं और यहांकी फर्मका समस्त व्यापार आपके द्वितीय पुत्र बाबू सुगनचन्दजी देखते हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ धनराजजी पटवा तथा आपके पुत्र बाबू जुहारमलजी पटवा बाबू सुगनचन्दजी पटवा तथा बाबू छगनमलजी पटवा हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल, जिला सिलहट मेसर्स धनराज जुहारमल—यहां प्रधान कपड़ेका व्यापार है। इसके अतिरिक्त सोना, चांदी तथा महाजनीका काम भी होता है।

मेसर्स पीरदान रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान देशनोक (बीकानेर स्टेट) है। आपलोग ओसवाल समाजके गुलगुलिया सज्जन हैं। सबसे प्रथम लगभग संवत् १९३१ के सेठ पीरदानजी देशसे मैमनसिंह आये और वहांसे सिलहट होते हुए मोलवी बाजार गये। मैमनसिंह तथा सिलहटमें रहकर जिस प्रकार आपने नौकरीकी थी उसी प्रकार मोलवी बाजारमें भी आपने आरम्भमें नौकरीकी पर सं० १९४२ में आपने छोटे भाई सेठ रावतमलजीको कपड़ेकी दुकान खुलवाकर व्यापारमें प्रवेश कराया। कुछ समय बाद आपने भी नौकरी छोड़ दी और दोनों भाई अपने स्वतन्त्र व्यापारकी उन्नतिमें लग गये। आपकी व्यापार चातुरीने अपना प्रभाव दिखाया और व्यापारने उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। मोलवी बाजारमें अपना व्यापार विस्तृत एवं सुदृढ़ कर संवत् १९५२ में आपने श्रीमङ्गलमें अपनी फर्म खोली और स्वयं भी यहीं आकर रहने लगे। यहां आरम्भमें आपने कपड़ेका व्यापार किया पर ज्यों-ज्यों आपको सफलता मिलती गयी त्यों त्यों आपने अपने व्यापारको बढ़ाया और फलतः कुछही समयमें आपकी फर्म प्रतिष्ठित फर्म हो गयी। संवत् १९८८ में आप स्वर्गवासी हुए और आपके ज्येष्ठ पुत्र बाबू मोतीलालजीने व्यापारका समस्त उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। उस समय बाबू मोतीलालजीकी अवस्था कम थी पर आपने बड़े साहस एवं धैर्यसे अपने विस्तृत व्यापारको संभाला और क्रमशः और अधिक बढ़ाया। आप बड़े मिलनसार एवं सरल स्वभावके युवक हैं। आप शिक्षा प्रेमी एवं आधुनिक विचारोंके समर्थक हैं।

डिहाबाड़ी (डिबरुगढ़) मेसर्स गुलराज बच्छराज मो० यहां हेड आफिस है। कपड़ा, चाय, चावल, गल्लाका व्यापार तथा महाजनी लेनदेन होता है।
इस फर्मके पास दो चायके बगीचे हैं।

१ नोअर बन्द टी० कम्पनी	}	पो० Doarband
२ सरस्वती टी० स्टेट		(Cochar)

मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यां

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान गोपालदेयी, जि० ढाका है। आप लोग वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक बाबू हरिश्चन्द्र भुइय्यांने लगभग ६० वर्ष पूर्व अपने जन्मस्थान गोपालदेयी बाजारमें मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यांके नामसे व्यापार आरम्भ किया। आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली और आपने अपना व्यापार विस्तृत करना आरम्भ कर दिया। प्रथम कलकत्तेमें आपने अपनी फर्म खोली फिर क्रमशः बंगाल और आसामके कितने ही नगरमें शाखायें खोलीं। आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपके पुत्र बा० रामकन्हाई भुइय्यांने व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आप सन् १६१२ में स्वर्गवासी हुए और व्यापारका संचालन आपके भाई बाबू चन्द्रमाधव भुइय्यां और इनके बाद बाबू दारोगानाथ भुइय्यांके हाथों हुआ।

इस समय इस फर्मका संचालन प्रधान रूपसे बाबू कैलाशचंद्र भुइय्यां करते है और आपके आदेशानुसार विभिन्न विभागोंकी व्यवस्था बाबू रेवतीमोहन भुइय्यां, बाबू शशिमोहन भुइय्यां तथा बाबू दशरथ भुइय्यां करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर कन्छार मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यां—यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा सभी प्रकारकी ऐजेन्सियोंका प्रबन्ध आफिस है। बर्मा आइल कम्पनी; सुरमा आइल कम्पनी और वर्नर माएड एण्ड को० की यहां ऐजेन्सी हैं। जमीदारी और आढ़तदारीका काम भी होता है। हुण्डी चिट्ठीका काम भी है चाय बगानोंके साथ बहुत बड़ा व्यापार है।

कलकत्ता—२३ चितपुर-कालीकुमार बनर्जी लेन—यहां प्राइवेट बैङ्किङ्गका काम होता है।

गोपालदेयी बाजार (ढाका)—यहां जमीदारी और धान चावलका काम होता है।

बालागंज (सिलहट)—यहां जमीदारी और बर्न टिमाग्ट ऐजेन्सी है।

मदनगंज (ढाका)—यहां फुटकर मालका व्यापार होता है।

एवं खाद द्वारा तरक्की कर सकेगी, अथवा किस आवहवामें रहनेसे उसका नाश हो जायगा आदि २ सभी बातें यहां देखी जाती हैं। जिस समय टीटावारसे जोरहाट जाते हैं तब रास्तेमें यह स्थान पड़ता है। ट्रेनसेही इस स्थानपर कई प्रकारकी चाय बोई हुई दिखलाई देती है। यहां चायकी परीक्षा आदिके लियेबड़े २ यंत्र आदि रखे हुए हैं जिस प्रकार पूसा नामक स्थान खेती बाड़ी संबंधी विषयके लिये भारत भरमें एक ही है उसी प्रकार यह स्थान भी इस कामके लिए पहला ही है।

चायके अतिरिक्त यहां कपड़ेका व्यापार भी बहुत जोरोंपर होता है। कपड़ेके कई बड़े २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त गृहस्थी सम्बन्धी सभी वस्तुओंका छोटी बड़ी तादादमें यहां व्यापार होता है। ये सब वस्तुएं बाहरसे यहां आकर बिकती हैं।

यहांसे आसपास कई व्यापारिक जगहोंमें मोटर सर्विस रन करती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स आसकरण पांचीराम रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान सरदार शहर है। इसके वर्तमान मालिक रावतमलजी पींचा हैं। इसका स्थापन करीब १०० वर्ष पहले हुआ। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें सरदार शहरके पोर्शनमें दिया गया है।—यहां निम्न लिखित व्यापार होता है—

जोरहाट—मेसर्स आसकरण पांचीराम रावतमल—यहां बैंकिङ्ग तथा दुकानदारीका काम होता है। यह फर्म यहां बहुत बड़ी मानी जाती है। इसकी करीब १० शाखाएं यहींपर और हैं। जहां दुकानदारीका काम होता है।

मेसर्स कस्तूरचन्द मोहनलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मोहनलालजी, जगन्नाथजी तथा चम्पालालजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके सज्जन हैं। यह फर्म सम्वत् १९२६ से स्थापित है। इसके संस्थापक सेठ कस्तूरचंदजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपहीके द्वारा इस फर्मकी उन्नति हुई। वर्तमान संचालक आपके पुत्र हैं। इस फर्मकी ओरसे नौगा नामक स्टेशनपर एक धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जोरहाट—मेसर्स कस्तूरचंद मोहनलाल—यहां बैंकिङ्ग, हुंडी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त यहां चायके बागानमें आपकी दुकानें हैं

कलकत्ता—मेसर्स कस्तूरचंद मदनचंद ४१ स्ट्रांड रोड यहां चलानीका काम होता है

स्वर्गवास हो गया है। शेष तीनों इस फर्मके मालिक हैं। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके मुनीम गंगापुर निवासी राधावल्लभजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नजीरा—मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल—यहां बैंङ्किग, कंट्राक्टिंग तथा कमीशन एजेंसीका काम होता है। ठाकुरवाड़ी नामक टी बागानकी यह फर्म मालिक है। इसी नामसे इस फर्मकी चार शाखाएं यहां और हैं जहां गल्ला, तेल मनीहारी कपड़ा आदिका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल गोवर्द्धनदास १६२ क्रास स्ट्रीट T. A. Geodhan—यहां बैंकिंग तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरिवक्स गजानन्द गणेश भगतका कटरा सूतापट्टी—यहां कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स पूरणमल रामकुमार १६२ क्रास स्ट्रीट—यहां नमकका व्यापार होता है। इसमें रामकुमारजीका साझा है।

आमगुरी—मेसर्स चुन्नीलाल हरिवगस—यहां धान चावलका व्यापार होता है।

चामगुरी—मेसर्स चुन्नीलाल मिर्जामल—यहां दुकानदारीका काम होता है।

गायस—जीवराज चुन्नीलाल—यहां बैंङ्किग तथा दुकानदारीका काम होता है।

खुमटाई— „ „ „ „

शिवसागर— „ „ यहां तेल, पेट्रोल तथा मोटरगुड्सका व्यापार होता है।

सिमालुगुड़ी—मेसर्स चुन्नीलाल पूरणमल—यहां धान चावलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त और भी छोटी २ शाखाएं हैं।

नजीरा कोल कम्पनी लि०

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १९१३ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें बाबू पी० सी० चौधरी भी हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी कलकत्तेके मेसर्स शाहवालेस एण्ड को० नामक कम्पनीके पास है। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी ६ लाखकी है। जो ६० हजार शेयरोंमें विभाजित की गयी है। आसाम बंगाल रेलवेके सिमालुगोड़ी स्टेशनसे १५ मील दूर २७३० एकड़ भूमिमें इसकी खानें हैं। यह घाटी जहां खानें हैं १००० हजार फीट ऊंची पहाड़ियोंके बीचमें है। ऐसी अवस्थामें घाटीके बीचमें आसामानपर झूलते हुए झूलेमें माल बाहर लाया जाता है। यहांका कोयला उत्तमश्रेणीका होता है इसमें केवल २ प्रतिशत खाक रहती है।

बैंकर्स एण्ड मरचेंट्स

मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल	मेसर्स जीवराज बालमुकुन्द
„ जसनादास शिवभगवान	„ लक्षीराम किशनलाल

श्रीमंगल

मेसर्स छोगमल मूलचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आपलोग ओसवाल समाजके पटवा सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ छोगमलजीके हाथों सम्वत् १९४३ में श्रीमङ्गल जिला सिलहटमें हुई थी। इस फर्मपर कपड़ा, सोना, चांदी आदिका व्यापार आरम्भ हुआ। संवत् १९६२ ई० में आपके स्वर्गवासी होनेपर आपके पुत्र बाबू मूलचन्दजी पटवाने व्यापारको संभाला। संवत् १९६५ में सेठ मूलचन्दजीने मनुपुर जि० सिलहटमें मेसर्स हनुमानमल धीजराजके नामसे कपड़े, धान तथा टीनका व्यापार किया। आप संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए और मनुपुर वाली फर्मका समस्त उत्तरदायित्व भीनासर निवासी सेठ नेमचन्दजी कांकरिया मालिक फर्म भागचन्द नेमचन्द राजा वुडमन्ड स्ट्रीट कलकत्ताको संभालकर उपरोक्त फर्मके उत्तराधिकारी अलग हो गये। बाबू धीजराज पटवाने अपनी बाल्यावस्थामें ही अपनी श्रीमङ्गलवाली फर्मका समस्त भार सम्भाल लिया और अपनी योग्यता एवं सामर्थ्यसे उक्त फर्मको आज भी पूर्ववत् चलाते जा रहे हैं।

बाबू धीजराजजी आधुनिक सुधरे हुए विचारोंके युवक हैं। आपके उद्योगसे श्रीमङ्गलमें एक हिन्दी पाठशाला भी चल रहा है जिसमें बालक बालिकायें सभी सछूत तथा अछूत जातिके एक साथ पढ़ते हैं। यहां क्यों आपके यहांकी तीन बालिकायें भी इसी स्कूलमें पढ़ती हैं। आप जिस प्रकार सफल व्यापारी एवं परिश्रमी कार्यकर्ता हैं उसी प्रकार सार्वजनिक कार्य्योंमें भी भाग लेते हैं। आप धर्मार्थ लोगोंको औषधि भी देते हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ धीजराजजी पटवा तथा आपके भतीजे बाबू रतनलालजी पटवा हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल, जिला सिलहट मेसर्स छोगमल मूलचन्द—यहां कपड़ा, सोना, चांदी, घड़ी, छत्री आदि आवश्यक वस्तुओंका व्यापार होता है और साथही महाजनी कारबार भी है।

मेसर्स धनराज जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग ओसवाल समाजके पटवा सज्जन हैं। सबसे पहले सेठ धनराजजी देशसे बङ्गाल (आसाम) आये और

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज—मेसर्स नवरङ्गराय हरचंद्राय—यहां प्रधान रुपसे तेलकी विक्रीका काम होता है।

सिलचर—मेसर्स नवरंगराय हरचंद्राय यहां प्रधान रुपसे तेलका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स नौरंग राय मोर १६१।१ हरीसन रोड—यहां आपका तेलका मील है। और यहांसे बाहरको तेलकी चलानीका काम होता है और खरीका काम भी जोरों से होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिङ्ग और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

श्री शिवसागर मिश्र

इस फर्मके मालिक उन्नाव जिलेके मकरावा नामक स्थानके रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। लगभग ३० वर्ष पूर्व पं० शिवसागरजीने करीमगंजमें अपनी फर्म खोली थी। इसके ५ वर्ष बाद आपने अपनी दूसरी फर्म हरागंज (त्रिपुरा) में खोली। प्रथम यहांपर नमक और मिट्टीके तेलका बहुत बड़ा व्यापार होता था पर वर्तमानमें इसके अतिरिक्त सुपारी धान चावल आदिका भी अच्छा व्यापार यह फर्म करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० कालीचरणजी मिश्र, पं० कालीशंकरजी मिश्र और पं० शिवशंकरजी मिश्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज (जि० सिलहट) मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहां धान, चावल, नमक, मीठा तेल और सभी प्रकारके गल्ला मालका व्यापार होता है।

सिलहट—मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहां रंगूनी चावलका काम होता है। कानपुरके मेसर्स नारायणदास लछमणदासकी इस फर्मपर तेलकी एजेन्सी है।

हरागंज—(त्रिपुरा) मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहां मिट्टीके तेल और नमककी विक्री तथा सुपारी और लाल मिर्चोंकी खरीदीका काम जोरोंसे होता है।

कानपुर—मेसर्स शिवसागर मिश्र लोकमन मोहाल—यहां सुपारी और अन्य पूर्वीय मालकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स सवाईराम बैजनाथ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल जैन जातिके हैं। इस फर्मको सिलहटमें स्थापित हुए ८० वर्ष हुए। इसके स्थापक अमीचंदजी थे।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीलालजी तथा आपके भाई बाबू नेमचन्दजी तथा बाबू सोहनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल (जिला सिलहट) मेसर्स पीरदान रावतमल—यहां फर्मका हेड आफिस हैं और कपड़ा, धान, चावल, दाल, गल्ला माल, चीनी तथा मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स आदिका काम है। तथा प्राइवेट बैंकिंगका काम भी है।

श्रीमङ्गल मेसर्स पीरदान रावतमल—यहां वर्मा आइल कम्पनीकी रशीदपुर और तेलगांवके बीच किरासीन, पेट्रोल, मोबील तथा मीजको ऐजेन्सी है।

मेसर्स सूरजमल भीखमचन्द

आप लोग मिनासर (बीकानेर) के रहनेवाले हैं। आप ओसवाल समाजके सेठिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ भीखमचन्दजीने संवत् १९५७ में की थी। यहांपर कपड़ेका काम आरम्भसे ही होता आया है। आजकल इस फर्मपर प्रधान रूपसे कपड़ेका तथा सोना, चांदीका काम होता है। इसके अतिरिक्त टीनका काम भी होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भीखमचन्दजी तथा आपके पुत्र बाबू हनुमन्तमलजी बा० रतनलालजी, बा० भूमर मलजी, बा० हनुमानमलजी तथा बा० जीवराजजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्रीमङ्गल—मेसर्स सूरजमल भीखमचन्द—यहां कपड़ा, सोना, चांदी और टीनका व्यापार होता है।

जोरहाट

यह आसाम प्रांतका एक जिला है। इसकी बसावट साफ एवं घना है। यहांका व्यापार बहुत अच्छा है। विशेषकर यहां बैंकिङ्ग एवं चायका व्यापार होता है। बैंकर्स चाय बागानमें अपना रुपैया लगाते हैं। चायका व्यापार यहांपर अच्छा है। जोरहाटके पास ही एक स्थानमें चायकी परीक्षाका केन्द्र है। यहां सब प्रकारकी चायका एक्सपेरिमेंट किया जाता है। चायके पौधे के रोगका इलाज भी इसी जगह होता है। कौन २ सी जातिकी चाय किस प्रकारकी आब हवा
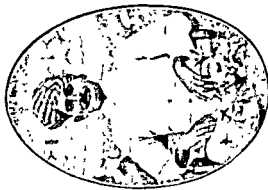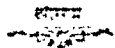
बा० मक्खनरायजी मोर, फरीदाबाद

बा० अयोध्याप्रसादजी (अयोध्याप्रसाद वृन्दावन)
कुसौरा

बा० [illegible]

कपड़ेके व्यापारी
- आसचंद जुहारमल
- कस्तूरचंद मोहनलाल
- बंशीलाल मदनचंद
- रामलाल किशनीराम
- रामदेव रूपचंद

गल्लेके व्यापारी
- कस्तूरचंद मोहनलाल
- शिवनराम सुन्दरमल
- गोविन्दराम श्रीराम
- बालचन्द वृद्धिचंद
- रामनाथ चुन्नीलाल
- रामलाल ओंकारमल
- मगनमल भेरूदान

जनरल मर्चेन्ट्स
- हमीरचंद मेघराज
- शिवनराम सुन्दरमल
- मेघराज लक्ष्मीचन्द
- हुकुमचन्द श्रीचन्द

टी प्लेंटर्स
- चन्द्र बरील
- शिवनन्द दुवरा
- मेसर्स माइकल डीलर
- पोरमल नारमल

नज़ीरा

यह आसाम प्रान्तके शिवसागर जिलेका एक कस्बा है। यह ए० बी आर० की मेन लाईन पर नदीके किनारे अपनेही नामके स्टेशनसे २ मीलकी दूरी पर लम्बे आकारमें बसा हुआ है। सिमालुगुड़ी जंक्शनसे भी यहां आ सकते हैं। यहांसे यह स्थान २॥ मीलके करीब होता है। यहांका प्रधान आफिस शिवसागर है।

यहांका व्यापार खासकर कपड़ा, गल्ला, किराना आदिका है। यही बाहरसे यहां आकर बिकते हैं एवं धान चावल बाहर जाते हैं। यहांसे करीब १५ मीलकी दूरी पर कोयलेकी खानें भी हैं।

मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके लाहोटी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ जीवराजजी तथा चुन्नीलालजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस फर्मकी विशेष उन्नति आप ही लोगोंके हाथोंसे हुई। वर्तमान फर्म सेठ चुन्नीलालजी के वंशजोंकी है। आपके ५ पुत्र हुए। मिर्जामलजी, गोवर्द्धनदासजी पूरणमलजी, हरिकृष्णजी तथा छोटेलालजी। इनमेंसे प्रथम दोका

शाईस्ता गंज

मेसर्स चुन्नीलाल सोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग ओसवाल समाजके पट्वा सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग १० वर्ष पूर्व बाबू हम्मीरमलजी पट्वाके हाथोंसे यहां हुई थी। इस फर्म पर आरम्भमें कपड़ेका काम और फिर क्रमशः स्टेशनरी, फैन्सी गुड्स धान चावल तथा गल्ले मालका व्यापार आरम्भ हुआ। जो आज भी पूर्ववत् उन्नत अवस्थामें हो रहा है। उपरोक्त मालके व्यवसायके अतिरिक्त आजकल सोना चांदी तथा टीनका काम भी होता है। स्टैण्डर्ड आइल कम्पनी आफ न्यूयार्ककी पेट्रोल तथा मोबील और किरासन तेलकी ऐजेन्सी भी इसी फर्मके पास है। यह फर्म शाइस्ता गंजकी प्रतिष्ठित फर्म है।

कलकत्तेकी मेसर्स सालमचंद कनीराम बांठिया नामक फर्ममें इस फर्मके मालिकोंकी व्यापारिक हिस्सेदारी भी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चुन्नीलालजी पट्वा तथा आपके पुत्र बाबू हम्मीरमलजी पट्वा, बाबू हीरालालजी पट्वा, बाबू सोहनलालजी पट्वा, और बाबू हस्तमलजी पट्वा हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल सोहनलाल शाईस्ता गंज जि० सिलहट—यहां फर्मके व्यापारका हेड आफिस है। यहां कपड़े तथा सोना चांदीका काम प्रधान रूपसे होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पट्वा शाइस्तागंज (जि० सिलहट)—यहां स्टेशनरी, गल्लामाल, धान चावल और टीनका व्यापार होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पट्वा एण्ड को० शाईस्तागंज (जि० सिलहट)—यहां स्टैण्डर्ड आइल कम्पनी आफ न्यूयार्ककी ऐजेन्सी है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ते वाली भागीदारीकी फर्मका पता इस प्रकार है।

मेसर्स सालमचंद कनीराम बांठिया १०६ ओल्ड चाइना बाजार कलकत्ता—यहां चालानीका व्यवसाय होता है।

करीमगंज

मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान बीकानेर है। आपलोग ओसवाल समाजके बच्छी सज्जन हैं। सेठ सुमेरमलजी बच्छी देशसे सम्वत् १९५३ में कलकत्ते आये और सम्वत् १९६४ में आपने मेसर्स तेजकरण पेमचंदके नामसे व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९६५ में आपने करीमगंज (जि० सिलहट) में अपनी दूसरी फर्म स्थापित की. सम्वत् १९६८ में सेठ तेजकरणजीने अपना हिस्सा फर्मसे निकाल लिया अतः यह फर्म कलकत्ता और करीमगंजमें मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायणके नामसे व्यापार करने लगी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुमेरमलजी तथा आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी और आपके भाई स्व० आनन्दमलजीके पुत्र बाबू भंवरलालजी हैं (ये बाबू लक्ष्मीनारायणजीके पुत्र हैं जो सेठ आनन्दमलजीके गोद गये हैं)

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज—मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण —यहां प्रधान रूपसे कपड़ेका काम होता है। सोना, चांदी धान चावलका काम भी है।

कलकत्ता—मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण ३९ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां कपड़ा, सोना, चांदी आदिकी चलानीका काम होता है।

मेसर्स नौरंगराय हरचंदराय।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके मोर सज्जन हैं। यह फर्म सम्वत् १९१७ के लगभग मेसर्स नरसिंहदास सोहनरायके नामसे स्थापित की गयी थी और सम्वत् १९३४ में मेसर्स हरचंद राय गनेशदासके नामसे दूसरी फर्म कलकत्तेमें खुली। इस फर्मने व्यापारमें अच्छी उन्नति की। सम्वत् १९५४ में इस फर्मके मालिक लोग अलग हो गये और ४ भिन्न २ फर्में स्थापित कर व्यापार करने लगे।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नौरंग रायजी मोर हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपने अपनी फर्मको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आपने कलकत्तेमें तेलकी कल खोली और तेलकी बिक्रीके उद्देश्यसे करीमगंज और सिलचरमें शाखायें स्थापित की गयी।

पटना

ऐतिहासिक परिचय

ईसाके पूर्व छठी शताब्दीमें, जिस कालमें भगवान् महावीर और भगवान् बुद्धके दिव्य उपदेशोंसे भारत वसुन्धरा मुकुलित हो रही थी, मगध देशमें शिशुनाग वंशके सुप्रसिद्ध सम्राट् बिम्बसार राज्य करते थे। उस समय मगधकी राजधानी राजगृही थी। मगर बिम्बसारके पुत्र अजातशत्रुने राज्यके लोभमें आकर अपने पिताकी हत्या करवा डाली, और स्वयं राज्य को और अपनेको सुरक्षित करनेके उद्देश्यसे गंगाके दक्षिणी किनारेपर पाटली नामक देहातमें एक किला बनवाया। यही किला आगे चलकर पाटलिपुत्रके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

इसके पश्चात् तो इस नगरका इतिहास दिन २ जगमगाता गया। मौर्य्य वंशके प्रसिद्ध सम्राट् चन्द्रगुप्तने जगत् प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्यकी सहायतासे विशाल मौर्य्य साम्राज्यकी स्थापना की इस साम्राज्यकी राजधानी इसी नगरमें स्थापित की इसके पश्चात् संसार प्रसिद्ध सम्राट् अशोकका यहां शासन चला हुआ। फिर यहां गुप्त साम्राज्यका सूर्य्य उदय हुआ और अस्त भी हो गया।

इसके पश्चात् यह शहर मुसल्मानी साम्राज्यके अन्तर्गत भी बहुत रहा। प्रसिद्ध विजेता शेरशाहने सन १५४१ यहां एक सुन्दर किला भी बनवाया। तभीसे शायद यह नगर पाटलीपुत्रसे "पटना" कहलाने लगा। इस प्रकार इसके जीवनमें कितने ही उलट फेर हुए।

मतलब यह कि भारतवर्षके इतिहासमें यह स्थान अत्यन्त प्राचीन, अत्यन्त महत्व पूर्ण और अत्यन्त गौरवमय स्थान रखता है।

व्यापारिक परिस्थिति

इस स्थानका व्यापार कुछ समय पूर्व बहुत उन्नति पर था। तमाम उत्तरी और दक्षिणी बिहारका व्यापारिक सम्बन्ध पटनेसे था। पर इधर कुछ वर्षोंसे गयाकी ओर ईस्टइण्डिया रेल्वे की ग्रैण्ड कॉर्ड लाइन हो जानेसे दक्षिण बिहारका व्यावसायिक सम्बन्ध डायरेक्ट कलकत्तेसे हो गया। तथा उधर उत्तरमें मुजफ्फरपुरसे बी० एन० डब्ल्यू० की लाइनका सम्बन्ध हो जानेसे उत्तरीय बिहारका व्यापार भी सीधा कलकत्तेसे होने लगा। इस कारण कई व्यापारिक क्षेत्र इससे अलग हो गये

आपके चार पुत्र हुए। उपरोक्त फर्म आपके द्वितीय पुत्र सवाईरामजीके वंशजोंकी है। इस फ
वर्तमान संचालक सेठ सवाईरामजीके पुत्र हरदत्तरायजी एवम् चुन्नीलालजी हैं। चुन्नीलालजी
पुत्र बैजनाथजी दुकानके संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोहाटी—मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय—यहां सरसोंकी खरीद तथा चलानीका काम होता है।

करीमगंज—मेसर्स गोविन्ददेव चुन्नीलाल—यहां चावल तथा तेलकी कल है। तथा सवाईराम बैज-
नाथके नामसे चलानीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय ४ नारायण बाबू लेन—T-No 3695 B. B.—यहां
चलानीका काम होता है।

कुलौरा

मेसर्स अयोध्याप्रसाद वृन्दावन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हसनापुर (रायबरेली) है। आपलोग कान्य-
कुब्ज ब्राह्मण जातिके शुक्ल सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक पं० अयोध्याप्रसादजी शुक्ल सर्व
प्रथम लगभग ६० वर्ष पूर्व सिल्हट आये और कपड़ेका काम आरम्भ किया। वहांसे मोलवी बाजार
गये जहां आपने कपड़ेका काम खोला। कुछ दिन बाद आप कुलौरा गये और वहीं उपरोक्त नामसे
व्यापार आरम्भ किया। यहां आपने महाजनी लेन देनका काम भी खोला और साथ ही चाय बगी-
चोंकी हुण्डी चिट्ठीका काम भी प्रारम्भ किया। जो आज भी उन्नत अवस्थामें हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व पं० अयोध्याप्रसादजी शुक्लके पुत्र पं० वृन्दावनजी शुक्ल हैं।
पं० वृन्दावनजी शुक्लके पुत्र पं० सूर्यप्रसादजी शुक्ल, पं० सूर्यकुमार शुक्ल तथा पं० राधेश्याम शुक्ल हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद वृन्दावन कुलौरा सिल्हट—यहां महाजनी लेन देन, चाय बगानकी हुण्डी
चिट्ठीका काम होता है। यहां टीनकी एजेन्सी है। मोटर पार्टस, ट्यूब टायर्सका व्यापार
होता है। इसके सिवा यहां बर्मा आइल कम्पनी मिट्टीके तेल, पेट्रोल, मोबील तथा ग्रीज
आदिकी एजेन्सी भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

पटना सिटी—मेसर्स गुरुमुख राय राधाकृष्ण जालान (T A. Jalan) किला हाउस—यहां बैंकिङ्ग व्यवसाय होता है और हेड आफिस है इसके अतिरिक्त पटनामें एक लॉ प्रेस नामक आपका बहुत बड़ा प्रेस है और इसी नामसे चौक बाजारमें आपकी एक दूकान और है इस पर बंगाल पेपर मिलकी एजन्सी है और कागजका व्यापार होता है।

दरभंगा—दरभंगा श्यूगर कम्पनी लि० लोहट दरभंगा—इस मिलमें गन्नेसे शुद्ध चीनी तैयार की जाती है। इसके सोल एजंट आप हैं इस मिलके सबसे बड़े शेअर होल्डर महाराज दरभंगा हैं।

बाँकीपुर—मेसर्स जालान एण्ड सन्स—यहां आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुरुमुखराय राधाकृष्ण १६।१। हरीसन रोड T. NO. 3559 B B तारका पता Jalan—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान देहराजाजीखां डिस्ट्रिक्ट के डाजल नामक स्थानमें है। आप अरोड़ा खत्री समाजके सज्जन हैं। यह कुटुम्ब पटनेमें सन् १७१६ में देशसे आया उस समय रेलवे नहीं थी। आरंभसे ही इनके यहां इसी नामसे व्यापार होता है। इसमें नावों द्वारा आनेवाले मालकी खरीदी और बिक्रीका काम होता था।

बाबू विशेश्वरनाथजीके समयमें इस कुटुम्बके कारबारको तरक्की प्राप्त हुई। आपने इस फर्मके व्यापार एवं मानमें वृद्धि की। आपका स्वर्गवास करीब १७ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू विशेश्वरनाथजीके छोटे भ्राता बाबू तेजूरामजी एवं विशेश्वरनाथजीके पुत्र श्रीनारायणदासजी अरोड़ा हैं। श्रीनारायणदासजी शिक्षित सज्जन हैं। पटनेमें आपकी फर्म सबसे पुरानी है। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है। बिहार, छपरा आदि स्थानों पर आपकी जमी री है। इसी प्रकार देशमें भी आपकी जमींदारी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज T A. Shreenarayan—यहां प्रधान व्यापार बैंकिङ्गका होता है इसके अतिरिक्त किराना और घीका बहुत बड़ा व्यापार तथा आढ़त और हुंडी का काम होता है। यहां बङ्गाल पेपरमिलकी मुंगेर, भागलपुर और दरभंगाके लिये एजन्सी है

बिहार

BIHAR.

स्व० बा० नन्दुलालजी जालान
(गुरसुखराय राधाकृष्ण) पटना

बा० रामजीराम बैंकस, पटना

रायबहादुर राधाकृष्णजी जालान पटना

बा० बद्रीदासजी (महावीरराम रामनिरंजनदास पटना

पटना म्युजियम

शेरशाहका किला पटना (रायबहादुर राधाकृष्ण जालान)
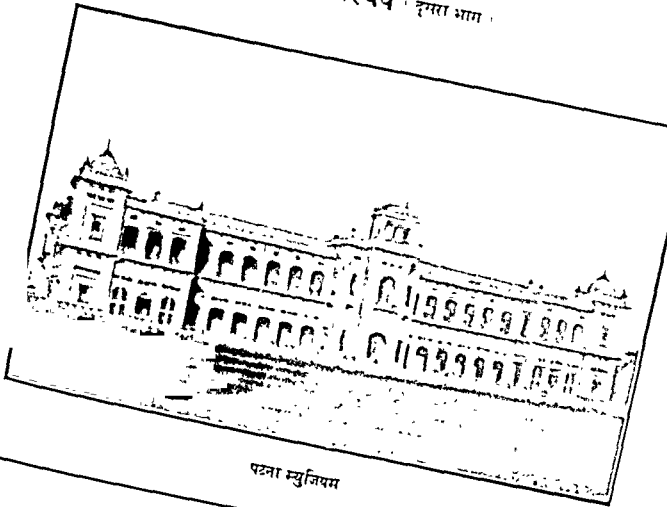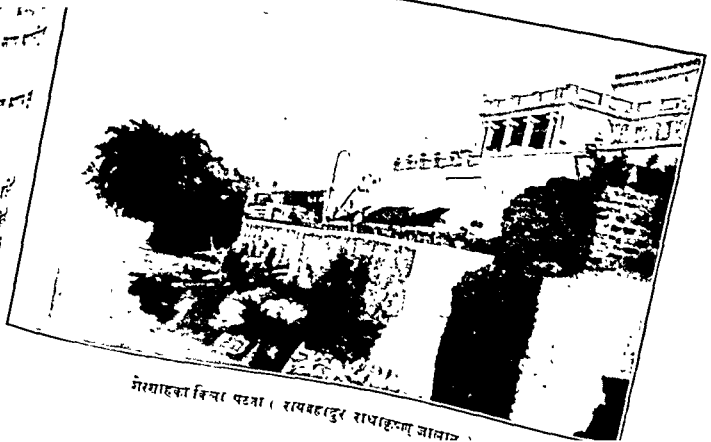
बा० रामजीराम हैं। आपकी ओरसे पटनेमें एक घाट और एक मन्दिर बना है तथा पुरीमें एक मठ है। उसमें अन्नक्षेत्रका प्रबंध है। बा० रामजीरामको पुरानी तस्वीरों और अशर्फियोंका बहुत शौक है। पटनेमें आप बड़े धनिक और मोतबिर रईस समझे जाते हैं। आपका सुन्दर मकान गंगातट पर बना हुआ है। आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रामजीराम चौक पटना सिटी—आपके यहां बैङ्किग तथा जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स बिसुन दयाल बजनाथ

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झूंझनूंवाल सज्जन हैं। इस दुकानको बाबू बिसुनदयालजीके पिता सेठ चेतरामजीने करीब ७० वर्ष पहिले स्थापित किया था। इसके कारबारको विशेष तरक्की बाबू बिसुन दयालजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। शुरूमें आपके यहां चेतराम बिसुन दयालके नामसे कपड़े और ब्याजका काम होता था। इस समय बाबू बिसुन दयालजीकी अवस्था ७८ वर्षकी है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बाबू बिसुनदयालजीके पुत्र बाबू बैजनाथजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स बिसुनदयाल बैजनाथ T. No 523 चौक—यहां जमींदारी, बैंकिंग तथा चांदी सोनेका व्यापार होता है।

पटना सिटी-बिसुन दयाल नेमचंद मछरहट्टा बाजार—यहां जर्मन सिल्वरके बर्तनोंका व्यापार होता है।

पटना सिटी-बैजनाथ प्रसाद कम्पनी मछरहट्टा बाजार—मनिहारी सामान और जनरल मर्चेंटका व्यापार होता है।

पटना सिटी—देवी प्रसाद हरिकृष्ण मिरचाईगंज—कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बिसुनदयाल] बैजनाथ ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. NO. 2700 B.B. तारका पता-Palandewi—यहां आढ़तका कारबार होता है।

मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास

इस फर्मका स्थापन सेठ रामजीरामजीके हाथोंसे संवत १९१६ में शिवरामदास मंगुलचंदके नामसे हुआ। पहले यहां गल्ले और कपड़ेका व्यापार होता था। कलकत्तेमें संवत् १९१८ में शिवरामदास रामनिरंजनदासके नामसे एक अलग फर्मकी स्थापना की गई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक

इधर सन् १९१२ से जब बङ्गालसे विहार अलग किया गया और पटनामें विहार प्रांतकी राज
कायम हुई, तबसे व्यवसायमें पुनः उत्तेजन प्राप्त हुआ। यह स्थान गङ्गा,गण्डक और सोन न
३ नदियोंके सङ्गमपर वसा है। इसलिये इस स्थानपर विशेष व्यापार नावों द्वारा होता है।

बसाहट—यह शहर गंगाके किनारे २ फरीब ६ मील लम्बा वसा हुआ है। इसमें प्रधान व्यापारि
स्थान पटना सिटी है पटना जङ्कशन नई बसाहट है। सन् १९१३ में गवर्नमेंण्टने ६ हजा
बीघा जमीन लेकर हाईकोर्ट, कालेज, हास्पीटल, आदि आफिसोंकी बिल्डिंग्स बनवाई हैं।

व्यवसायिक स्थल—मारूफगञ्ज—यह गल्लेकी बहुत भारी मण्डी है। यहां गल्ला किरानेका व्यापार होता है। इस स्थानपर आंइल फ्लावर मिल, आइस फैक्ट्री और आयर्न फाउण्डरी वर्क है। इस स्थानपर पटनाघाट नामक स्टेशन है जो जलमार्गका व्यापारिक सम्बन्ध ई० आई० आर० से जोड़ता है।

चौक—यहां कपड़ेका व्यापार एवं जनरल व्यापार होता है।

मछरहट्टा वाजार—यहां चांदी, सोना, कपड़ा, रंगका व्यापार और सब प्रकारका जनरल व्यवसाय होता है इसके आगे गुड़की मण्डी है। खाजेकलांपर नदी द्वारा फल फूल सब्जी उतरते हैं।

मुरादपुर—इस स्थानपर सब प्रकारका जनरल व्यवसाय होता है। अदालत आफिस स्कूल कालेजोंके कारण यहां अच्छी चहल पहल रहती है।

फ्रेजर रोड, डाकबङ्गला रोड, स्टेशन रोड—यहां की सुन्दर सड़कें हैं, इनपर मोटर कम्पनियां लिमिटेड कम्पनीज आदि जनरल फर्मे हैं।

दर्शनीय स्थान—गुरु गोविन्द सिंहका जन्म स्थान, (हरमंदिर गली) छोटी बड़ी पटनदेवी, अशोक कूप (अगम कुंआ) शेरशाहका किला, पटना कालेज, पटना म्यूजियम, गोलघर, खुदाबख्श खां की लाईब्रेरी, सेक्रेटरियट, गोल लाइन, सुल्तान अहमदखां का मकान, साइन्स कालेज आदि है।

रेलवे स्टेशन और घाट—पटना घाट, पटना सिटी, गुलजार बाग, पटना जङ्कशन। महावीर घाट, महेन्द्र घाट और दिघा घाट इनमेंसे पटना घाट, सीटी, गुलजार बाग तथा जङ्कशन और दीघा घाट ई० आइ० आरके स्टेशन हैं। और महावीर घाट तथा महेन्द्र घाट पर बी० एन० डब्ल्यू आर०के जहाज उत्तरी बिहारसे सवारी और गुड्स ढोते हैं।

स्टरीज और इण्डस्ट्रीज—पटना सिटीमें ५ आइल राइस फ्लावर एण्ड दाल मिल और १ आइस फैक्टरी हैं। इसके अतिरिक्त इस स्थानपर दरी, सलमें, सितारेका काम, टि कुटी

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामप्रतापजी कमलिया हैं आपके पुत्र मोतीलालजी चुन्नीलालजी, काशीप्रसादजी, सीतारामजी, और दुर्गाप्रसादजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

पटना सिटी—गुलाबराय रामप्रताप चौक T. No513—यहां आढ़तका काम होता है।
पटना सिटी—गुलाबराय रामप्रताप चौक—कपड़ेका कारबार होता है।
पटना सिटी रामप्रताप रामेश्वर मारूफगंज—गल्लेकी आढ़तका काम होता है।
बृजमनगढ़ (गोरखपुर) रामप्रताप मोतीलाल—आढ़तका कारबार होता है।

मेसर्स जीवणराम महावीरप्रसाद

इस फर्मका स्थापन पटनेमें सन् १९२१ में हुआ, इसके मालिक नागपुरके बाबू जमनाधरजी पोद्दार हैं। वर्तमानमें इसके संचालक सेठ जीवनरामजी पोद्दारके पुत्र हैं। जिनमें बड़े बाबू महावीरप्रसादजी गयामें, मुरलीधरजी पटनामें और पन्नालालजी नागपुरमें कार्य करते हैं। यहां एम्प्रेस मिल नागपुर और एडवांस मिल अहमदाबाद की एजंसी है। आपकी पटना सिटीकी दुकानपर थोक एवं मुगलपुर (जंकशन) पर खुदरा बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स जिन्दाराम मदनलाल

इसके वर्तमान मालिक पुरुषोत्तमदासजी अग्रवाल जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका ७०।८० वर्ष पहिले कपड़ेका रोजगार शुरू हुआ था। कपड़ेके व्यापारियोंमें यह बहुत पुरानी दुकान है। पहिले यहां जोहरीमल जिन्दारामके नामसे कारबार होता था। १९६६ से इस नामसे कारबार होता है। आपका पता इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स जिन्दाराम मदनलाल चौक—कपड़ेका कारबार और सराफी काम होता है।

मेसर्स मनोहरदास जयनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय बुवना सज्जन हैं। यह कुटुम्ब करीब ५०।६० वर्ष पूर्व पटनेमें आया। इस फर्मके व्यापारको विशेष तरक्की बाबू मनोहरदासजी और बाबू जयनारायणजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। बाबू मनोहरदासजीके ७ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः बाबू जयनारायणजी बाबू हरनारायणजी

स्वर्गीय बाबू मनोहरदासजी बूबना पटना

स्वर्गीय बाबू जयनारायणजी बूबना

बाबू आशाराम प्रसादजी डालमियां गया (पृष्ठ ८२)
(गोवर्द्धनदास आशाराम)

बा० गोपीरामजी डालमियां गया (पृष्ठ ८
(गोवर्द्धनदास आशाराम)

डुमरांव—मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ बड़ीबाजार—किरानेका व्यापार होता है। यह फर्म ५० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है।

मेसर्स म्हालीराम रामनिरंजनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कांवटिया सज्जन हैं। आरंभमें सेठ म्हालीरामजी देशसे करीब ८० वर्ष पूर्व पटना आये थे, आपके यहां उस समय म्हालीराम हरसुखदासके नामसे कारबार होता था। सेठ म्हालीरामजीके ३ पुत्र हुए, सेठ हरसुखदासजी, सेठ रामचन्द्रजी, एवं सेठ रामनिरंजनदासजी। संवत् १९४६ में आप तीनों भाइयोंका व्यवसाय अलग २ हो गया। तबसे सेठ रामनिरंजनदासजी पटने में म्हालीराम रामनिरंजनदास और कलकत्तेमें रामनिरंजन छोगालालके नामसे अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे। सेठ रामनिरंजनदासजीके पश्चात् इस फर्मके व्यापारको आपके पुत्र छोगालालजीने सम्भाला। आप दोनोंका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ छोगालालजीके पुत्र गोविन्दरामजी हैं। आपकी अवस्था अभी १२ वर्षकी है। आपकी नाबालिगीके समय फर्मका प्रबंध भार एक ट्रस्टके जिम्मे है। पटनेमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

धर्मादेमें आपकी ओरसे एक मन्दिर और अन्नक्षेत्र तथा लक्ष्मणझूलापर एक धर्मशाला और एक अन्नक्षेत्र बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स म्हालीराम रामनिरंजनदास चौक T.N0.331—यहां मारवाड़ी ढंगसे बैंकिंग काम होता है। इसके अतिरिक्त पटना सिटीमें आपका एक [illegible] और [illegible] है। और एक दूकान और है जिस पर सोना और गिन्नीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—रामनिरंजन छोगालाल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No. 1103 B B.—बैंकिंग, हुंडी, सूद, कमीशन और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामजीमल [illegible]

इस [illegible] निवास [illegible] है। [illegible] हुए [illegible] संवत् १९११ के [illegible] मेसर्स [illegible] करीब सन् १९०८ से यह फर्म [illegible]। [illegible]

रहा है। आप उदयपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। बिहारीजी मिल्स पटनेमें बहुत बड़ा कामकाज करती है। इनके यहांका आटा विशेष प्रख्यात है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

पटना सिटी—श्रीबिहारीजी मिल्स पटना घाट T. No. 513 तारका पता flour.—यहां रोलर फ्लावर.मिल, आइल, राइस दाल मिल एवं आयर्न फाउंडरी वर्कस है।

पटनामें बिक्री और खरीदीकी शाखाएं—

(१)मारूफगंज – पटना सिटी (२) बाकरगंज (पटना जंकशन)

बाहरकी शाखाएं मेसर्स बिहारीजी:मिल्सके नामसे :—

आरा, संझोली (जिला शाहाबाद),नोहट्टा (जिला शाहाबाद), सहसराम, कुदरा (शाहाबाद) भभुआ रोड (शाहाबाद) चौसा, (शाहाबाद), बक्सर, मसौढ़ी (पटना), बारागनियां (चम्पारन), गोगरी (मुंगेर), फैजाबाद (यू० पी०), नवाबगंज (गोंडा), सहजनवां, बलरामपुर (गोंडा) मस्कनवां गिशिया (बहराइच), नेपालगंज (बहराइच)।

इन फर्मोंपर सरसों, तिलहन, गेहूं, धान, अरहर, मसूर, तिशारी, खूंट, आदि सभी प्रकारकी खरीदीका काम होता है। इस मिलने अरहरका पूरा छिलका उतारी हुई दाल भी तैयार की है।

माधव मिल्स लिमिटेड

इस मिलका स्थापन आसोज सुदी १० संवत् १९८२ में हुआ यह.मेसर्स सदासुख काबरा कलकत्ता और रामदेव हरखचन्द कलकत्ताकी प्राइवेट लिमिटेड है। बाबू सदासुखजी काबरा माहेश्वरी समाजके और रामदेव हरखचन्दके मालिक पन्नालालजी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—श्रीमाधवमिल लिमिटेड मारूफगंज T. N. 537—यहां आइल फ्लावर एवं दालमिल तथा आयर्न फाउण्डरी वर्क और आइस मिल है।

कलकत्ता—श्रीमाधव मिल्स लिमिटेड २ रॉयल एक्सचेन्ज प्लेस T. N. 2610 cal—यहां इसमिल का हेड ऑफिस है।

जमनियां—श्रीमाधोमिल—मालकी खरीदीका काम होता है।

हैं। इस फर्मका कारबार आरम्भमें सेठ शिवचंद्जीके हाथोंसे करीब ७०।७५ वर्ष पूर्व शुरु हुआ था एवं इसके कारबारको आपहीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई। पटनेमें यह दूकान २५ वर्ष पूर्व खोली गई सेठ शिवचंद्जीके यहां सुलतानमल जी एवं सेठ सुलतानमलजीके यहां बाबू मूलचंद्जी दत्तक लाये गये।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू मूलचंद्जी सिंघी हैं। लाडनूं स्टेशन पर आपने सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। वहांकी गौशालाकी स्थापनामें आपने बहुत परिश्रम उठाया है और स्वयं अपनी ओरसे ११ हजार रुपया प्रदान किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—मेसर्स शिवचंद सुलतानमल चौक T. A. Singhi—आढ़तका काम होता है। इस फर्म पर लाडनूं निवासी बाबू प्रतापमलजी बोथरा ८ वर्षोंसे पार्टनर हैं। आप भी ओसवाल समाजके हैं।

कलकत्ता—शिवचंद सुलतानमल २६।२ आर्मेनियन स्ट्रीट Shiw Ganpati—यहां आढ़तका कारबार होता है।

फतुहा (पटना)—शिवचंद सुल्तानमल—आढ़त और गल्लेका काम होता है।

चावड़ाहाट (कुचविहार) सुल्तानमल मूलचंद—आढ़त तथा तमाखूका व्यापार होता है।

किरानेके व्यापारी

मेसर्स नारायणदास लक्ष्मणदास

इस फर्मके मालिक रस्तोगी जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान पटना ही है। करीब ४५ वर्ष पूर्व इस फर्मका स्थापन नारायणदासजीके हाथोंसे हुआ था। आरम्भमें ही यहां किरानेका व्यापार होता है। पटनेके किरानेके व्यापारियोंमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है। इस कारबारको नारायणदासजीके छोटे भ्राता लक्ष्मणदासजी रस्तोगीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्ष्मणदासजी रस्तोगी बाबू रामदासजी (लक्ष्मणदासजी के छोटे भ्राता) के पुत्र पन्नालालजी रस्तोगी एवं नारायणदासजीके पुत्र चतुर्भुजनारायणजी रस्तोगी हैं। बाबू लक्ष्मणदासजीके पुत्र राधामोहनजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—मेसर्स नारायणदास लक्ष्मणदास मारूफगंज T No 535 T A Rastoji—यहां हेड आफिस है। किरानेका व्यापार होता है। यह फर्म सोडा और रंगके लिये पेरिस केमिकल कम्पनीकी और मेचिसके लिये पाराम कम्पनीकी एजेंट है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—भानामल गुलजारीमल चावड़ी बाजार T A Bhanamal T No 5639—हेड आफिस है यहां वेङ्कर्स आयर्न मर्चेट्स एण्ड आयर्न फाउंडर्सका काम होता है।

बम्बई—भानामल गुलजारीमल ३१२ कालबादेवी रोड T A Lohabala 21158 यहां बेङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता हैं।

पटना जंकशन—भानामल गुलजारीमल मीठापुर T A Bhanamal T No 62—यहां ऊख पेलनेकी मशीन, धानमशीन, कुट्टीमशीन, पानी निकालनेके पम्प, जाली अंगले आदि ढाले जाते हैं और बिक्री होते हैं, यह फर्म बिहारके लिये टाटा स्टील कं० की सेलिंगएजेन्ट तथा गार्टर, टी आयरन चद्दर आदिकी बिक्री और वेङ्किग काम होता है।

कलकत्ता—जादोराय भानामल ६४ लोअर चितपुर रोड T. A Lohia T. NO. 832 B. B. वेङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

फैजाबाद—भानामल गुलजारीमल T. A. Bhanamal—वेङ्किग आयर्न मर्चेटका काम होता है।

खेरली (राजपूताना) भानामल गुलजारीमल T. A. Bhanamal—वेङ्किग और आयर्न मर्चेट

मेसर्स शिवचन्द राय सूरजमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सूरजमलजी जैन हैं। आपने २८ वर्षों पूर्व बहुत थोड़ी पूंजीसे इस दूकानपर कपड़े कारबार शुरु किया था और साहसपूर्वक व्यापारमें अच्छा पैसा पैदा किया। अभी करीब ४० हजार रुपया लगाकर आपने फतेहपुरमें मंदिरकी प्रतिष्ठा करवाई है। आप फतहपुर (शेखावाटी) निवास जैन समवाल समाजके सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू बसंतलालजी व्यवसाय संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—सूरजमल बसंतलाल १९१ हरिसन रोड—आढ़तका काम होता है।

पटना—शिवचन्द सूरजमल, अदालत—कपड़ेका व्यापार होता है।

पटना—सूरजमल बसंतलाल मुरादपुर—कपड़ेका व्यापापार होता है।

पटना—सूरजमल जैन स्टेशनके पास—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स एम० एन० वर्म्मन एण्ड कम्पनी

इस फर्मका स्थापन सन् १८८६ में बहुत थोड़ी पूंजीसे बाबू शरद कुमार वर्मनके हाथोंसे हुआ था। दिन प्रतिदिन आपकी दुकान तरक्की पाती गई। सन् १९१८ में आपने अपना निजक

मेसर्स श्यामलाल भगवानदास

इस फर्मके मालिक शनतुरके निवासी हैं। आपलोग जायसवाल समाजके सज्जन हैं। मिलका स्थापन बा० श्यामलालजी और भगवानदासजीके हाथोंसे सन् १९१६में हुआ बा० श्यामला... वैश्यनाथ धाम आर्य गुरुकुलके ट्रेजरर तथा पटना मिल ओनर्स एसोसियेशनके सभापति हैं।

बा० श्यामलालजी शाहके पुत्र बा० भगवनप्रसादजी जायसवाल शिक्षित सज्जन हैं। आप बिहार उड़ीसा चेम्बर आफ कामर्सके ज्वाइंट सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शनतुरके—मेसर्स श्यामलाल भगवन प्रसाद—गल्लेका व्यापार होता है।

पटनासिटी—श्यामलाल भगवानदास मारूफगंज T. No 501 तारका पता mill—यहां आइल एवं राइस मिल है अभी बा० भगवन प्रसादजीने एक आयर्न फाउंडरी वर्क भी खोला है।

इस फर्ममें बा० रामनारायनजी एवं दुर्गा लालजी जायसवालका पार्ट है।

मेसर्स मंगलचंद शिवचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जैन तेरापंथी समाजके प्रमुख सज्जन हैं। इस फर्मको २५।२६ वर्ष पहिले बाबू मंगलचंदजीने स्थापित किया। मद्रासमें यह फर्म बहुत लम्बे समयसे व्यापार कर रही है एवं वहांके प्रधान व्यापारियोंमें मानी जाती है। बाबू मंगलचंदजी विशेष कर देशमें ही रहते हैं आपके पुत्र बाबू शिवचंदजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

पटनासिटी—मेसर्स मंगलचंद शिवचंद तारका पता Jhabak—सराफी लेन देन और आढ़तका काम होता है। इस फर्म पर बाबू शिवनारायनजी काम संवत् १९६८ से काम करते हैं।

मद्रास—मेसर्स केशरीचंद मगनमल ४९० साहुकार पैठ—बैंकिंग व्यापार होता है।

मद्रास—मेसर्स शिवचंद जतनलाल १।३ गोडवीन स्ट्रीट—कपड़ेका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

मुकामा—मंगलचंद शिवचंद Jabak—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स शिवचन्द सुल्तानमल

इस फर्मके मालिक लाडनूं (जोधपुर) के निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्सरामलाल भगवानदास, पुरानी बाजार—यहां प्रधानतया बेंकिङ्ग और जमींदारीका काम होता है। इसके अतिरिक्त कपड़ेकी आढ़त और एजंसीका काम भी होता है।

मेसर्स लच्छीराम हनुमानप्रसाद

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (शेखावाटी) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू लच्छीरामजीके हाथोंसे ६०।७० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके यहां प्रधानतया बेंकिंग और जमींदारीका काम होता था। बाबू लच्छीरामजी अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने लच्छीराम धर्मशालाके नामसे बनारस और मुजफ्फरपुरमें धर्मशालाएं बनवाईं। आपके पुत्र बाबू हनुमानप्रसादजीका स्वर्गवास बहुत थोड़ी अवस्थामें हो गया था।

इस समय फर्मके मालिक बाबू बिहारीलालजी भावसिंहका हैं। आप बाबू हनुमानप्रसादजीके यहां दत्तक लाये गये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स लच्छीराम हनुमानप्रसाद, पुरानी बाजार, T. NO 27—यहां बेंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।

मुजफ्फरपुर—बिहार नेशनल मोटर कम्पनी मोतीझील T. NO. 21—यहां ओवरलैंड व्हिलिजनाइट की मुजफ्फरपुरके लिये एजंसी है। तथा सब प्रकारका मोटरका सामान बिक्री होता है।

मुजफ्फरपुर—श्रीकृष्णचन्द्र कम्पनी सरैयागंज—यहां वेस्ट एण्ड वाच कं०, आगफाफोटो कं० तथा एवरेडी इण्डिया कं० आदि की एजंसियां हैं। तथा सब प्रकारके फेंसी गुड्सका व्यापार होता है।

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स उदयराम जमनादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू उदयरामजीके पुत्र बाबू जमुनादासजी एवं भैरामजी हैं। आप अग्रवाल समाजके गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। आपका खास निवास सोनासर (शेखावाटी) है। इस फर्मका स्थापन बाबू उदयरामजीके हाथोंसे ३० वर्ष पूर्व हुआ था।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उदयराम जमनादास मुजफ्फरपुर—देशी और विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मुनिसिपैलिटी प्रेस खोला, आपके पुत्र बाबू प्रवीन कुमार बर्म्मन और बाबू विपिन कुमार बर्म्मन फर्मका संचालन करते हैं। आपके यहां सब प्रकारकी स्कूली पुस्तकोंका बहुत बड़ा स्टाक रहता है। पटना शहरमें सबसे प्राचीन एवं आदर्श फर्म है। (T. A. Birmn) है।

पटनासिटी

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्ड्स

मेसर्स चन्दू बाबू लल्लू बाबू धेलुरा कोठी
» गुरुचरनराम राधाकृष्ण किला हाउस
» गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज
» न्यूपटना बैंक पटना सिटी
» म्हालीराम रामनिरंजनदास चौक
» बिशुनदयाल बैजनाथ चौक

क्लाथमरचेंट्स

मेसर्स गिलीराम गुलाबराय चौक
» जिन्दाराम मदनलाल »
» जीवणराम महावीरप्रसाद »
» गुलाबराय रामप्रताप »
» देवीप्रसाद हरीकृष्ण »
» भीमराज देवीवक्स »
» मनोहरदास जयनारायण »
» मंगलचन्द राधाकिशन »
» लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर »
» हरसुखराय लक्ष्मीनारायण »
» श्रीनिवास सीताराम »

ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स रामनिरंजन बद्रीदास मारूफगंज
» सरजूराम बिशुनराम »

मेसर्स लच्छूभगत बिशुनराम मारूफगंज
» लच्छू भगत बिशुनराम »
» बिशुन साव बेनीमाधव प्रसाद »
» शंकरराम भगवतीदास »
» सीताराम रामधनी »

गोल्ड एण्ड सिलवरमरचेंट्स

» सरचलल मकसूदनलाल चौक
» पालीराम मानिकराम »
» मनोहरदास जयनारायण »
» मंगलचंद सुरारका »
» रामकिशनदास रस्तोगी »
» बिशुन दयाल बैजनाथ »

मिल्स

श्री बिहारीजी मिल्स, (रोलर फ्लावर, आइल, राइस, दाल एण्ड फाउंडरी)
म्हालीराम रामनिरंजनदास
आइल एण्ड फ्लावर मिल
माधव मिल लिमिटेड, (आइल आइस एण्ड आयर्न फाउंडरी)
मोहन राइस मिल गुलजार बाग
श्यामलाल भगवानदास पटना (फ्लावर आइल मिल आइल, फाउंडरी)

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० भगवानदासजीके पुत्र बा० दत्तूरामजी, बैजनाथजी एवं जौहरीमलजी हैं। आपका खास निवास सांखू (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके वात्सल गोत्रीय सज्जन हैं। आपकी फर्म मुजफ्फरपुरमें कपड़ेका बड़ा कारबार करती है। इसफर्मकी ओरसे मारवाड़ी हाईस्कूलकी बिल्डिंग बनवाई गई है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स भगवानदास दत्तूराम, तारका पता Kejariwol—देशी और विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स तेजपाल हीरालाल, न्यू माधौपुरा—देशी कपड़े की आढ़तका काम होता है। इसमें आपका हिस्सा है।

कलकत्ता—हनुतराम भगवानदास १३२ काटन स्ट्रीट—कपड़े की आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स मेघराज रामचन्द्र चाचान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गोहर (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय चाचान सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू शिवदत्तरायजीने करीब ६० वर्ष पूर्व किया था। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा, चांदी, सोना, गल्ला तथा जमींदारीका काम कर रही है। बाबू शिवदत्तरायजीका स्वर्गवास करीब २२ वर्ष पूर्व हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन कर्ता बाबू मेघराजजी, रामचन्द्रजी और मदनलालजी हैं। मुजफ्फरपुरके व्यापारियोंमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स मेघराज रामचन्द्र चाचान, छाता बाजार—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका थोक व्यापार और चांदी सोनेका काम होता है। आप यहांके जमींदार भी हैं।

मुजफ्फरपुर—मदनलाल बद्रीप्रसाद, गोलागोड—गल्लेका व्यापर और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेघराज रामचन्द्र १३२ काटन स्ट्रीट T. A. Nori:—सराफी लेन देन और आढ़तका व्यापार होता है। यह फर्म ३० वर्षोंसे स्थापित है।

मेसर्स रतनलाल फूलचन्द

इस फर्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पहले बाबू रतनलालजीके हाथोंसे हुआ था। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू रतनलालजी और फूलचन्दजी हैं। बाबू रतनलालजीके पुत्र श्रीरामजी बंडा भार्ड

मुजफ्फरपुर—वैद्यनाथ इलेक्ट्रिक वर्कस—यहां बिजलीका सामान बिक्री होता है। इस फर्मकी ओरसे सरैयागंजमें शीघ्रही एक धर्मशाला बनने वाली है।

ग्रेन मर्चेंट्स

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल

इस फर्मके मालिक बाबू भागदरामजीके पुत्र महावीरप्रसादजी, बद्रीदासजी, बैजनाथजी तथा सागरमलजी हैं। इनमें बाबू महावीर प्रसादजीका स्वर्गवास होगया है, आपका विशेष परिचय बेतियामें दिया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बेतिया—उदयराम मक्खनलाल—गल्ला, बैंकिंग जमींदारीका काम होता है तथा रेंडीका मिल है।

मुजफ्फरपुर—उदयराम मक्खनलाल—गल्ला आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—उदयराम रामभगत १६१ बांगड़ बिल्डिंग—आढ़तका काम होता है।

जनरल मर्चेंट्स

मेसर्स शर्मन एण्ड कम्पनी

इसका स्थापन सन् १९०५ में हुआ था। इसके संचालक बाबू मंगलीप्रसादजी खन्ना, तथा आपके पुत्र बाबू शिवप्रसादजी खन्ना, "विशारद", एवं हरप्रसादजी खन्ना हैं। आपके यहां स्कूली पुस्तकें, स्टेशनरी सामान, बिजलीका सामान मशीनरी एवं पेटेण्ट मेडिसिन्स और स्टेशनरीका व्यापार होता है हालहीमें आपने श्रीकृष्ण आइल मिल नामक मिल पार्टनररूपमें चालू की है। आपका तारका पता Shri Krishna और T. No. 51 है।

बैंकर्स एण्ड लैण्डलार्ड्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड स्टेशन, रोड (ब्रांच)

कोआपरेटिव बैंक, हास्पीटल रोड

ट्रेडर्स [illegible] बैंक, स्टेशन धर्मशाला

इलाहाबाद बैंक लिमिटेड, कम्पनीबाग (ब्रांच)

मेसर्स पीताम्बरी गोपाल चौधरी सरैयागंज

राय बहादुर कृष्णदेवनारायण मेहता, मेहता हाउस जेल रोड

मेसर्स तुलसी शा बैजनाथप्रसाद सरैयागंज

मेसर्स मेघराज रामचन्द्र टाना बाजार

रायबहादुर [illegible] रोड
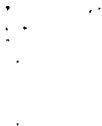
मेसर्स जमनादास प्रहलादराय

इस फर्मका स्थापन करीब ४०।४५ वर्ष पूर्व बाबू जमनादासजी बांसलके हाथों
वर्तमानमें इसके मालिक बाबू जमनादासजी के पुत्र प्रहलादरायजी हैं। आपका खास निवास
(शेखावाटी) है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स जमनादास प्रहलादराय, सरैयागंज—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम रामचन्द्र

इस फर्मका हेड ऑफिस भागलपुर है। कलकत्तेमें इस फर्मपर जीवणराम शिवबक्स नामसे सूतका बड़ा कारबार होता है। मुजफ्फरपुर फर्मपर श्रीजय गोविन्दजी और ज्वालाप्रसादजी काम देखते हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फरपुर—मेसर्स जीवणराम रामचन्द्र, सरैयागंज—तारका पता muurli—यहां देशी कपड़ेका थोक व्यापार होता है। और मॉडल मिल नागपुरकी एजन्सी है।

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

यह फर्म देशी कपड़ेके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स चैनीराम जेसराम बम्बईवालोंकी ब्रांच है। इसके व्यापारका विस्तृत परिचय मालिकोंके चित्रों सहित हमारे ग्रंथके प्रथम भागके बम्बई विभागमें पृष्ट ४६ में दिया है।

मुजफ्फरपुरमें इसफर्मका स्थापन संवत १९७६ में हुआ था। इसपर टाटासंसकी इम्प्रेस मिल नागपुर, स्वदेशी मिल बम्बई, टाटामिल बम्बई तथा एडवांस मिल अहमदाबादकी सोल एजन्सी है। इसके वर्तमान मालिक बा० घनश्यामदासजी पोद्दार हैं। इसफर्मपर श्री गेन्दालालजी पुरोहित काम करते हैं। इसफर्मके व्यापारका परिचय इसप्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स नाथूराम रामनारायण, सरैयागंज, T. A. Swarga—यहां टाटासंसकी मिलोंका कपड़ा बिक्री होता है।

मेसर्स भगवानदास दत्तुराम

इसफर्मका स्थापन बा० भगवानदासजीके हाथोंसे करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ था। आपका स्वर्गवास अभी ८ मास पूर्व होगया है।

„ हनीफ एन्ड को० सरैयागंज

„ हनीफ एण्ड को० सिविल मिलिटरी टेलर (चतुर्भुज स्थान रोड)

„ ए० सापुरजी एण्ड को० (वाइन एण्ड जनरल मरचेंट)

„ वर्मन कम्पनी (स्टेशनरी एण्ड स्पोर्टस)

लोहेके व्यापारी

मेसर्स जगाधरप्रसाद् साह

„ टुनकीशा बैजनाथप्रसाद्

„ भंडारीलाल भगवानसहाय

„ श्रीराम हरीराम

मोटर एण्ड मोटर गुड्स डीलर्स

मेसर्स आर्थर बटलर एण्ड को (एजंट फोर्ट कार)

„ विहार एण्ड ओडीसा ओटो मोबाइल कम्पनी (एजंट जनरल मोटर कारपोरेशन)

„ विहार नेशनल मोटर कम्पनी

„ पंजाब मोटर वर्कस गोला

„ शांति मोटर वर्कस मोतीझील

„ गणेशदास रामगोपाल

साइकिल एण्ड साइकिल गुड्स डीलर्स

मेसर्स घोष एण्ड को०

„ चक्रवर्ती चटर्जी एण्ड को० मोतीझील रोड

„ मित्र एण्ड को०

„ मुकर्जी नेकू एण्ड को० मोतीझील रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

चौक डिस्पेंसरी

दा।शक्ति औषधालय लि० (ब्रांच)

बोस एण्ड को०

मैग्टि एण्ड को०

वाच मरचेंट्स

मेसर्स कृष्ण वट कम्पनी सरैयागंज

„ निरहुन वाच कम्पनी छाता बाजार

एल्यूमीनियम मरचेंट

गनपतलाल चौधरी

मोहनसा विहारीसा

फूट मरचेण्ट्स एण्ड कमीशन एजंट्स

दि मुजफ्फरपुर आर्ट चर्ड एण्ड नरसरी फेकनर्स रोड

दि विहार फूट प्रिसेर्विंग कम्पनी आर्म टोला

इलेक्ट्रिक स्टोर्स

मेसर्स आर्थर बटलर एण्ड० को०

„ टुनकी शाह बैजनाथप्रसाद

फेक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

आर्थर बटलर आयर्न फेक्टरी

विहार एण्ड ओडीसा ओटो मोबाइल मोटर वर्कशाप क्लब रोड

मुजफ्फरपुर आइस फेक्टरी

मुजफ्फरपुर इलेक्ट्रिक सप्लाइ कम्पनी

श्रीकृष्ण आइल मिल

पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेन्ट्स

धीना चौधरी गोपाल चौधरी सरैयागंज

विहार कामर्शियल एजंसी

विहार स्टेशनरी मार्ट

बोस एण्ड को०

हन्ताही नवयुवक हैं। आप मारवाड़ी एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं। आपका मूल निवास सो
(शेखावाटी) हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय
प्रकार है

मुजफ्फरपुर—मेसर्स रतनलाल फूलचन्द, सरैयागंज—देशी और विलायती कपड़ा और फेंसी गुड्स थोक और मुदरा व्यापार होता है।

मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र

इस फर्मका हेड आफिस कानपुरमें है। यहां करीब ५० वर्षोंसे यह फर्म व्यापार कर रही है। कानपुरमें इस फर्मपर ४० वर्षोंसे मियोर मिलकी एजंसी एवं १० वर्षोंसे एलगिन मिलकी एजंसीका काम होता है। इसके मालिकोंका खास निवास नारनौल है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी हैं। आपकी अवस्था इस समय १६—१७ वर्षकी है। कानपुरकी प्रतिष्ठित फर्मोंमें इसकी गणना है जहां निहालचन्द बलदेव सहायके नामसे ४० वर्षोंसे मियोर मिलकी एजंसी और बैङ्किग काम होता है। इसकी शाखाएं कानपुर (जनरलगंज नयागंज) दिल्ली, अमृतसर, मुल्तान, झांसी आदि स्थानोंपर हैं। मुजफ्फरपुरमें इस फर्मका स्थापन करीब ३ वर्ष पूर्व किया गया है। यहां पं० बाबूलालजी शर्म्मा काम करते हैं। फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र, सरैयागंज—यहां एलगिन मिलका कपड़ा और सूत बेंचने की एजंसी है।

मेसर्स वासुदेव बैजनाथ

यह फर्म कलकत्तेमें मेसर्स जिंदाराय हरविलासके नामसे बाबू जिंदारायजीके द्वारा स्थापितकी गई थी। मुजफ्फरपुरमें १० वर्ष पूर्व उपरोक्तनामसे शाखा स्थापितकी गई है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू तेजपालजी सांगानेरिया तथा बाबू राधाकिशनजी हैं। आप लोग मलसीसर (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इसके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—वासुदेव बैजनाथ, सरैयागंज—कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मुजफ्फरपुर—बैजनाथ सांगानेरिया, सरैयागंज—गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जिंदाराम हरविलास १३२ कॉटन स्ट्रीट ता० प० होमरूल- यहां … होता है।

अग्रवाल वैश्य गोत्रीय सेमका सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पहिले ताजपुरमें तथा ३५।३६ वर्ष पूर्व समस्तीपुरमें हुआ था। आरम्भमें बाबू बंशीधरजीने इस फर्म पर गल्ले और कपड़ेका व्यापार शुरू किया था, बादमें आपने थोड़ी जमीदारी भी खरीदी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बंशीधरजीके पुत्र बाबू बसंतलालजी सेमका हैं। आपके हाथोंसे इस फर्म पर ताजपुरमें जमीदारी खरीदी गई। समस्तीपुर के आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं वर्तमानमें आप यहांकी म्युनिसिपेल्टीके वाइसचेयरमैन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

समस्तीपुर—मेसर्स बंशीधर बसंतलाल—यहां कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता है।

ताजपुर—मेसर्स बंशीधर बसंतलाल—यहां बैंकिंग और जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स रामनारायण गयाप्रसाद गोयनका

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गयाप्रसादजी गोयनका हैं। इस फर्मका स्थापन आपके पिता बाबू रामनारायणजी गोयनकाके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पहिले हुआ था। आरंभसे ही यह दूकान कपड़ेका रोजगार कर रही है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गयाप्रसादजीके ४ पुत्र हैं। जिनके नाम बाबू मदनलालजी, रामेश्वरलालजी, फतेहचंदजी एवं शिवशंकर प्रसादजी हैं। इनमेंसे बड़े तीन व्यापारमें भाग लेते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके फतेहपुर निवासी गोयल गोत्रीय गोयनका सज्जन हैं। आपकी ओरसे यहां एक सुंदर धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

समस्तीपुर—रामनारायण गयाप्रसाद—यहां आपकी एक दूकान पर थोक और दूसरी पर खुदरा कपड़े का व्यापार होता है। इसके अलावा जमीदारीका काम भी होता है।

समस्तीपुर—रामनारायण गयाप्रसाद—यहां आपकी दो दूकानें पर गल्ले का व्यापार और आढ़तका काम होता है।

दलसिंहसराय—मदनलाल रामेश्वर—कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

दरभंगा—गयाप्रसाद बजरंगलाल—गल्ले का कारबार होता है।

कलकत्ता—गयाप्रसाद बजरंगलाल २ राजा उडमंड स्ट्रीट—यहां आढ़तका कारबार होता है। इस दूकानमें और दरभंगाकी दुकानमें कन्हैयालाल बन्द्रीचंदका साझा है।

सेठ तुनकी मा तुनकी मा बैजनाथ प्रसाद)
मुजफ्फरपुर

बा० रूपनारायणप्रसाद चौधरी
मुजफ्फरपुर

बा० बैजनाथ प्रसाद
फर्म बैजनाथप्रसाद) मुजफ्फरपुर

बा० ब्रज० दी० प्रा० समस्तीपुर

जनरल मरचेंटस	धर्मशालाएँ
एम० एन० पाल	मोतीरा रामदयाल धर्मशाला
रामदास भूपनारायण	महावीरसिंह धर्मशाला
समस्तीपुरको आपरेटिव स्टोअर्स लि०	रामनारायण गयाप्रसाद गोयनका
एच० पी० घोष एण्ड संस	

दरभंगा

यह स्थान बी० एन० डब्ल्यू० आर० का जंक्शन है। यहांसे कई तरफ गाड़ियां जाती हैं। गल्लेकी पैदावारीके मध्यमें यह स्थान है, इसके आसपास मधुवनी, जयनगर आदि अनाजकी अच्छी मंडियां हैं। यह शहर हिमालयके नजदीक तराईमें आगया है। यहांकी पैदावार चावल, गेहूं, अरहर मड़ुआ मकई, राई, तोरी, अदी, रोवी, पटुआ, साने, आदि अन्न हैं। हिमालय पहाड़के समीप आजाने से सुपारी, कत्था, चन्दन, मसाला चिरायता, पिपपत्ता, मजीठ आदि भी मिलता है। इसके अलावा तालमखाना, आम और अमावट यहांके विशेष अच्छे होते हैं, और बाहर जाते हैं। इसके पाससे जयनगरके रास्तेपर मधुवनी नामक स्थानमें शक्करका कारखाना है इस स्थानपर कोकटी नामक रंगीन कपासका कपड़ा बहुत सुन्दर बनता है।

यह नगर भी पटनेकी तरह दो विभागोंमें विभक्त है। (१) दरभंगा—यह पुरानी बस्ती है महाराज दरभंगाके महल यहीं हैं। बाघमती नदीके किनारे इस बस्तीकी बसावट है। यहां की सड़कें टूटी और बेमरम्मत हैं। बाजार बहुत तंग और गंदे हैं। पटनासिटीकी तरह थोक व्यवसाइयोंकी दुकानें यहींपर हैं। यहांपर २ राईस एवं आइस मिल हैं। यहांका अधिकतर व्यापार मारवाड़ी व्यापारियोंके हाथोंमें है। (२) लहरियासराय - यहां कोर्ट और सरकारी आफिस है, इस वजहसे विशेष चहल पहल रहती है। यहां कपड़ा चांदी सोना तथा जनरल मर्चेण्ट्सकी दुकाने हैं।

दरभंगा जिलेकी औसत वर्षा करीब ५३ इंच है। इस जिलेमें उन्नीस लाख बारह हजार मनुष्य संख्या है। जिनमें ७७ प्रतिशत मनुष्य खेती करते हैं।

बैंकर्स और जमींदार

मेसर्स भगवत प्रसाद रामप्रसाद

यह कुटुम्ब बहुत समयसे यहीं निवास कर रहा है। इस खानदानका आगमन आगरेसे हुआ था। बा० सीताराम‌लालजीके समयमें इस कुटुम्बके व्यवसायकी वृद्धि हुई आपने बैंकिंग व जमींदारीके

सार्वजनिक संस्थाएं और इन्स्टीट्यूट

आर्य समाज
टेक्निकल इंस्टीट्यूट
निर्धन सेवा-समिति
पींजरापोल गोशाला कमेटी
विहारप्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन
बिहार प्रांतीय चरखा संघ
परोपकारिणी समिति
भारतीय नवयुवक समिति
मारवाड़ी मर्चेंट्स एसोसिएशन
मारवाड़ी क्लब
हरिनारायण गोशाला
हिन्दूसभा
हिन्दू सेवा समिति

लायब्रेरीज

बिहार प्रांतीय हि० सा० स० लायब्रेरी
म्युनिसिपल टाउन हॉल लायब्रेरी
मारवाड़ी क्लब वाचनालय

होटल्स एण्ड धर्मशाला

पूनमजी होटल स्टेशन
गौरीदत्त धर्मशाला
रा० ब० दलेश्वरलाल बसन्तलाल धर्मशाला
लच्छीराम धर्मशाला

समस्तीपुर

मुजफ्फरपुर और दरभंगाके मध्यमें बसा हुआ यह दरभंगा जिलेका छोटा सा शहर है इस स्थान पर बी० एन० डब्लू० रेलवेका वर्कशाप और मेसर्स बेग्सदर लैंड कम्पनीकी शुगर फैक्ट्री है। इसके समीप ही मुजफ्फरपुरके पास पूसा नामक स्थानमें इम्पीरियल कृषि कालेज है। यहां वैज्ञानिक ढंगसे खेतीकी शिक्षा दी जाती है। तथा कृषि विद्या विशारद छात्र तैयार किये जाते हैं। यह स्थान भारतवर्षमें अपनी कोटिका शायद प्रथम ही है।

समस्तीपुरके नजदीक ही महाराज दरभंगा की ओगमेश्वर जूट मिल है। इसमें हैसियन और बोरे तैयार करनेका काम होता है। समस्तीपुरसे दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुकामाघाट और रसड़ा की ओर गाड़ियां जाती हैं। इस स्थानके आसपास दलसिंह सराय, रसड़ा आदि छोटी २ गल्लेकी मंडियां हैं। समस्तीपुर डीविजनमें सब प्रकारका अनाज और विशेष कर गुड़, तम्बाकू, मिरचाई और हल्दीकी विशेष पैदावार होती है।

मेसर्स बंशीधर बसंतलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर (शेखावाटी) में है। आप

इस मिलमें रेलवे साइडिंग भी लाई गई है। इसके अलावा गल्ला, बैङ्किग, जमींदारी एवं आढ़तका काम होता है।

मढ़ुँया—मोहनलाल हरदेवदास—गल्ला और जमींदारीका काम होता है।

जयनगर—नथमल श्रीनिवास—गल्लेका बड़ा व्यापार तथा जमींदारीका काम होता

निर्मली (भागलपुर) नथमल श्रीनिवास—गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड T. NO 214 B. B. आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल

यह फर्म कलकत्तेके मेसर्स कन्हैयालाल बद्रीचन्द और समस्तीपुरके रामनारायण गयाप्रसादके पार्टकी है। आप दोनोंका परिचय क्रमशः कलकत्ता और समस्तीपुरमें दिया गया है। इस फर्मपर गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गुरमुखराम रामचन्द्र

इस फर्मका स्थापन संवत् १९०५ में सेठ गुरमुखरायजीके हाथोंसे हुआ। आरंभसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार कर रही है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी एवं मेघराजजी पोद्दार हैं। आप बिसाऊके निवासी हैं।

यह फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—गुरमुखराय रामचन्द्र—कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।

दरभंगा—रामचन्द्र जुगलकिशोर—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स जुहारमल परशुराम

इस फर्मका स्थापन ४०।५० वर्ष पहले बाबू जुहारमलजीके हाथोंसे हुआ था। आप रेलवेकी ठेकेदारी और कपड़ेका व्यापार करते थे। गोहाटीकी रेलवे सड़क पुल वगैरा आपके कंट्राक्टमें बनी थीं। आपके ३ पुत्र हुए बाबू परशुरामजी बाबू ज्वालाप्रसादजी एवं बाबू बुद्धमलजी।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालकोंमें बाबू बुद्धमलजी एवं ज्वालाप्रसादजीके पुत्र बाबू कृष्णलालजी विद्यमान हैं।

इस मिलमें रेलवे साइडिंग भी लाई गई है। इसके अलावा गल्ला, बैङ्किग, जमींदारी एवं आढ़तका काम होता है।

मढ़ैया—मोहनलाल हरदेवदास—गल्ला और जमींदारीका काम होता है।

जयनगर—नथमल श्रीनिवास—गल्लेका बड़ा व्यापार तथा जमींदारीका काम होता

निर्मली (भागलपुर) नथमल श्रीनिवास—गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड T. NO 214 B. B. आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल

यह फर्म कलकत्तेके मेसर्स कन्हैयालाल बद्रीचन्द और समस्तीपुरके रामनारायण गयाप्रसादके पार्टकी है। आप दोनोंका परिचय क्रमशः कलकत्ता और समस्तीपुरमें दिया गया है। इस फर्मपर गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गुरुमुखराम रामचन्द्र

इस फर्मका स्थापन संवत् १६०५ में सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुआ। प्रारंभसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार कर रही है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी एवं मेघराजजी पोद्दार हैं। आप बिसाऊके निवासी हैं।

यह फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—गुरुमुखराय रामचन्द्र—कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।

दरभंगा—रामचन्द्र जुगलकिशोर—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स जुहारमल परशुराम

इस फर्मका स्थापन ५०।६० वर्ष पहले बाबू जुहारमलजीके हाथोंसे हुआ था। आप रेलवेकी ठेकेदारी और कपड़ेका व्यापार करते थे। गौहाटीकी रेलवे सड़क पुल वगैरा आपके कंट्राक्टमें बनी थी। आपके ३ पुत्र हुए बाबू परशुरामजी बाबू ज्वालाप्रसादजी एवं बाबू बुद्धमलजी।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालकोंमें बाबू बुद्धमलजी एवं ज्वालाप्रसादजीके पुत्र बाबू कृष्णचन्द्रजी विद्यमान हैं।

इस मिलमें रेल्वे साइडिंग भी लाई गई है। इसके अलावा गल्ला, बैंकिंग, जमीदारी एवं आढ़तका काम होता है।

मढ़ैया—मोहनलाल हरदेवदास—गल्ला और जमीदारीका काम होता है।

फारबिसगंज—नथमल श्रीनिवास—गल्लेका बड़ा व्यापार तथा जमीदारीका काम होता

निर्मली (भागलपुर) नथमल श्रीनिवास—गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड T. NO 211 B. B. आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल

यह फर्म कलकत्तेके मेसर्स कन्हैयालाल वरदीचन्द और समस्तीपुरके रामनारायण गयाप्रसादके पार्टीकी है। आप दोनोंका परिचय क्रमशः कलकत्ता और समस्तीपुरमें दिया गया है। इस फर्मपर गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गुलमुखराम रामचन्द्र

इस फर्मका स्थापन संवत् १९०५ में सेठ गुलमुखरायजीके हाथोंसे हुआ। आरंभसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार कर रही है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी एवं मेघराजजी पोद्दार हैं। आप बिसाऊके निवासी हैं।

यह फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—गुलमुखराम रामचन्द्र—कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।

दरभंगा—रामचन्द्र जुगलकिशोर—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स सुखारमल परशुराम

इस फर्मका स्थापन ४०।५० वर्ष पहले बाबू सुखारमलजीके हाथोंसे हुआ था। आप पहिले [illegible] और कपड़ेका व्यापार करते थे। [illegible] रेल्वे सड़क पुल बनेगा [illegible] करते थे। आपके ३ पुत्र हुए बाबू परशुरामजी बाबू [illegible] एवं बाबू बुद्धमलजी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें बाबू बुद्धमलजी एवं [illegible] पुत्र बाबू [illegible] विद्यमान हैं।

व्यवसायमें विशेष ख्याति प्राप्तकी। बा० मोहनलालजीके ३ पुत्र हुए, रायबहादुर देवीप्रस
बाबू हरगोपालदासजी एवं बा० हरकिशनदासजी, बा० हरगोपालदासजीके पुत्र भगवतप्रसादजी
बा० लालजी लालजी हुए रा० ब० देवीप्रसादजीके पुत्र रा० ब० गोवर्द्धनलालजीके समयतक
कुटुम्बका व्यापार उन्नति पर रहा।

बा० हरगोपालदासजीके समयमें ही उनके पुत्र भगवतप्रसादजी एवं लालजी लालज
अलग २ हो गये थे। इस फर्मके बैंकिंग तथा जमींदारीके व्यापारको बा० भगवतप्रसादजीके पुत्र
बा० रामप्रसादजीने पुनः उत्तेजित किया। आपका स्वर्गवास सन् १९१८ में होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बा० रामप्रसादजीके पुत्र बा० पद्मनाभ प्रसादजी हैं। आप
देसी बीसा अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपकी वय इस समय २७ वर्षकी है इतनी अल्प-
वयमें ही आपने जनतामें अच्छा सम्मान पाया है। आप दरभंगाके आनरेरीमजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल
चैयरमेन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—मेसर्स भगवतप्रसाद रामप्रसाद—यहांप्रधान बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है निमक
तथा चोनाका व्यापार भी आपके यहां होता है।

गल्ले और कपड़ेके व्यवसायी

मेसर्स कुंदनमल नथमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास सूरजगढ़के समीप लोटिया नामक स्थानमें है। आप
अग्रवाल वैश्य समाजके सिंगल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू मोहनलालजीके हाथोंसे
४५।५० वर्ष पहिले मोहनलाल हरदेवदासके नामसे बढ़ैयामें हुआ था। इस फर्मके व्यापारको बाबु
मोहनलालजी एवं उनके पुत्र हरदेवदासजीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई। बाबू मोहनलालजीने देशमें
धर्मशाला और बढ़ैयामें नोपचन्द मगनीरामके साझेमें मिडिल इंग्लिश स्कूल बनवाया, इस समय
यह स्कूल गवर्नमेंटकी ग्रांट और व्यापारियोंकी वित्ती द्वारा हाई इंगलिश स्कूलके रूपमें काम कर
रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू हरदेवदासजीके छोटे भ्राता राय साहब नथमलजी, बाबू
कुन्दनमलजीके पोत्र बाबू हजारीमलजी एवं राय साहबके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी हैं। बाबू हजारी-
मलजी एवं श्रीनिवासजी शिक्षित सज्जन हैं, आपकी ओरसे यहां कुंदनमल नथमल इंग्लिश हाईस्कूल
चल रहा है। वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—मेसर्स कुंनदमल नथमल—यहां आपका श्री महावीर राइस एण्ड

इस मिलमें रेल्वे साइडिंग भी लाई गई है। इसके अलावा गल्ला, बैंकिंग, जमींदारी एवं आढ़तका काम होता है।

घड़ैया—मोहनलाल हरदेवदास—गल्ला और जमींदारीका काम होता है।
अररिया—नथमल श्रीनिवास—गल्लेका बड़ा व्यापार तथा जमींदारीका काम होता
निर्मली (भागलपुर) नथमल श्रीनिवास—गल्लेका कारबार होता है।
कलकत्ता—नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड T. NO 244 B. B. आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल

यह फर्म कलकत्तेके मेसर्स कन्हैयालाल परदीपचन्द और समस्तीपुरके रामनारायण गयाप्रसादके पड़ोसी है। आप दोनोंका परिचय क्रमशः कलकत्ता और समस्तीपुरमें दिया गया है। इस फर्मपर गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गुरुमुखराम रामचन्द्र

इस फर्मका स्थापन संवत् १९०५ में सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुआ। आरंभसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार कर रही है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी एवं मेघराजजी पोद्दार हैं। आप [illegible] निवासी हैं।

यह फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[illegible] - गुरुमुखराय रामचन्द्र - कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।
[illegible] - रामचन्द्र जुगलकिशोर—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स जुहारमल परसुराम

इस फर्मका स्थापन ७०।८० वर्ष पहले बाबू जुहारमलजीके हाथोंसे हुआ था। आप [illegible] और कपड़ेका व्यापार करते थे। [illegible] आपके [illegible] पुत्र हुए बाबू परसुरामजी बाबू [illegible] एवं बाबू [illegible]।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू [illegible] एवं [illegible] पुत्र बाबू [illegible] हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

दरभंगा—मेसर्स जुहारमल परशुराम—कपड़ेका थोक व्यापार जमींदारी तथा सराफी लेनदेनका काम होता है।

दरभंगा—बृजलाल हरीराम—गल्ला का व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता-जुहारमल परशुराम ४ येद्दरापट्टी—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारूका

इस फर्मके मालिक मूल निवासी जवरापुर (खेतड़ी) शेखावाटीके है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू थानमलजी दारूका और आपके छोटे भाई बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ था। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू थानमलजीके पुत्र बाबू पालीरामजी, परमानन्दजी, नारायणप्रसादजी, काशीप्रसादजी और गौरीशंकरजी तथा बाबू चुन्नीलालजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी दारूका हैं, इनमेसे गौरीशंकरजी आई० ए० में पढ़ते हैं तथा शेष सब सज्जन व्यापारमें भागलेते हैं।

यह फर्म दरभंगाके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है बाबू पालीरामजी लहेरियासराय गौशालाके सेक्रेटरी एवं बाबू परमानन्दजी दारूका हिन्दू सभा, हिन्दू रिलिफ कमेटी आदि संस्थाओंके सेक्रेटरी हैं। यह फर्म दरभंगा गौशालाकी ट्रेझरर है। वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ दरभंगा—मेसर्स थानमल चुन्नीलाल, बड़ी बाजार—यहां एक दुकानपर कपड़ेका थोक और एकपर खुदरा व्यापार होता है, और किरासिन तेलकी दरभंगा, जयनगर, समस्तीपुर दलसिंहसराय तथा रसड़ा घाटके लिये एजंसी है इसके अलावा जमीदारी और बैंकिंग व्यापार होता है, यह फर्म सन् १९२५ से दरभंगामें इम्पीरियल बैंककी ट्रेझरर और ग्यारंटी ब्रोकर है।

२ दरभंगा—काशीप्रसाद गौरीशंकर—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

३ दरभंगा—पालीराम नारायण प्रसाद—टिम्बरका व्यापार होता है।

४ जयनगर—थानमल चुन्नीलाल—तेल एजंसी, गल्ला और टिम्बरका व्यापार है।

५ समस्तीपुर—थानमल चुन्नीलाल—तेलकी एजंसी और आढ़तका काम

६ लहेरियासराय—पालीराम परमानन्द—कपड़ेका व्यापार होता है।

७ लहरियासराय—भगवानदास काशीप्रसाद—चांदी सोने और गहनेका व्यापार होता है।
८ जनकपुर रोड–चुन्नीलाल पालीराम—कपड़ा और गल्लाका कारबार होता है।
९ कलकत्ता–थानमल चुन्नीलाल ६ वैशाखपट्टी T. A Thanmal आढ़तका काम तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

दरभङ्गा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मका स्थापन सन् १९०६में हुआ। दस दस रुपयेके दो हजार शेअरोंमें इसकी बीस हजारकी पूंजी एकत्रित कीगई, यह फर्म गल्लेकी आढ़तका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे स्थापित की गई। आरम्भसे १९ वर्षोंतक बाबू बजरंगलालजी सराफने इसका मेनेजमेंट किया। इस फर्मने थोड़े समयमें ही व्यवसायिक समाजमें मिलकर काम करनेका अच्छा आदर्श उपस्थित किया। इसके वर्तमान मेनेजिंग डायरेक्टर बाबू भीमेश्वरप्रसाद वकील, बाबू शारदा चरण बनर्जी एवं बाबू मुन्नालाल साव हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दि दरभंगा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड दरभंगा—यहां सब प्रकारके गल्ला, तेलहन तथा मसालेकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है,

मेसर्स दुर्गाप्रसाद चमड़िया

इस फर्मका हेड ऑफीस मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संसके नामसे कलकत्तेमें है। इस दुकानका स्थापन १०।१२ वर्ष पूर्व यहां हुआ था। यहां बाबू रामरिखरामजीके पुत्र जवाहिर लालजी काम करते हैं। इस फर्मपर तीसी और गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवनंदराय जोखीराम

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्यसमाजके पोद्दार सज्जन हैं। इसफर्मका स्थापन ६० वर्ष पहिले बा० शिवनंदरायजीके हाथोंसे हुआ था। इसके व्यापार को बा० शिवनंदरायजी और उनके छोटे भ्राता बा० जोखीरामजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई। बा० जोखीरामजीके पुत्र बा० बिसुनदयालजीका स्वर्गवास करीब ६ वर्ष पहिले हो गया है।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० बिसुनदयालजीके पुत्र बा० महावीर प्रसादजी, बा० श्यामाप्रसादजी तथा बा० नागरमलजी पोद्दार हैं। आप तीनों सज्जन व्यवसाय संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

दरभंगा—मेसर्स हुलासमल परशुराम—कपड़ेका थोक व्यापार जमींदारी तथा साहुकारी लेनदेनका काम होता है।

दरभंगा—हुलासमल हरीराम—गल्लाका व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

[illegible]—हुलासमल परशुराम [illegible]—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारुका

इस फर्मके मालिक मूल निवासी जयपुर (खेतड़ी) रियासतके हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके दारुका गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू थानमलजी दारुका और आपके छोटे भाई बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ था। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू थानमलजीके पुत्र बाबू पालीरामजी, परमानन्दजी, नारायनप्रसादजी, काशीप्रसादजी और गौरीशंकरजी तथा बाबू चुन्नीलालजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी दारुका हैं. इनमेंसे गौरीशंकरजी आई० ए० में पढ़ते हैं तथा शेष सब सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं।

यह फर्म दरभंगाके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है बाबू पालीरामजी लहेरियासराय गौशालाके सेक्रेटरी एवं बाबू परमानन्दजी दारुका हिन्दू सभा, हिन्दू रिलिफ कमेटी आदि संस्थाओंके सेक्रेटरी हैं। यह फर्म दरभंगा गौशालाकी ट्रेजरर है। वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ दरभंगा—मेसर्स थानमल चुन्नीलाल, बड़ी बाजार—यहां एक दुकानपर कपड़ेका थोक और एकपर सुद्रा व्यापार होता है, और किरासिन तेलकी दरभंगा, जयनगर, समस्तीपुर दलसिंहसराय तथा रसड़ा घाटके लिये एजेंसी है इसके अलावा जमींदारी और बैंकिंग व्यापार होता है, यह फर्म सन् १९२५ से दरभंगामें इम्पीरियल बैंककी ट्रेझरर और ग्यारंटी ब्रोकर है।

२ दरभंगा—काशीप्रसाद गौरीशंकर—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

३ दरभंगा—पालीराम नारायन प्रसाद—टिम्बरका व्यापार होता है।

४ जयनगर—थानमल चुन्नीलाल—तेल एजंसी, गल्ला और टिम्बरका व्यापार है।

५ समस्तीपुर—थानमल चुन्नीलाल—तेलकी एजंसी और आढ़तका काम

६ लहेरियासराय—पालीराम परमानन्द—कपड़ेका व्यापार होता है।

७ लहरियासराय—भगवानदास काशीप्रसाद—चांदी सोने और गहनेका व्यापार होता है।

८ जनकपुर रोड—चुन्नीलाल पालीराम—कपड़ा और गल्लाका कारबार होता है।

६ कलकत्ता—थानमल चुन्नीलाल ६ बेहरापट्टी T. A. Thanmal आढ़तका काम तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

दरभंगा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मका स्थापन सन् १६०६में हुआ। दस दस रुपयेके दो हजार शेअरोंमें इसकी बीस हजारकी पूंजी एकत्रित कीगई, यह फर्म गल्लेकी आढ़तका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे स्थापित की गई। आरम्भमें १६ वर्षोंतक बाबू बजरंगलालजी सराफने इसका मेनेजमेंट किया। इस फर्मने थोड़े समयमें ही व्यवसायिक समाजमें मिलकर काम करनेका अच्छा आदर्श उपस्थित किया। इसके वर्तमान मेनेजिंग डायरेक्टर बाबू सोमेश्वरप्रसाद वकील, बाबू शारदा चरण बनर्जी एवं बाबू मुन्नालाल साव हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दि दरभंगा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड दरभंगा—यहां सब प्रकारके गल्ला, तेलहन तथा मसालेकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है,

---

मेसर्स दुर्गाप्रसाद घमड़िया

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स हरदत्तराय घमड़िया एण्ड संसके नामसे कलकत्तेमें है। इस दुकानका स्थापन १०।१२ वर्ष पूर्व यहां हुआ था। यहां बाबू रामनिवासजीके पुत्र जवाहिरमलजी काम करते हैं। इस फर्मपर सीसी और गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवनंदराय जोगीराम

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ५० वर्ष पहिले बा० शिवनंदरायजीके हाथोंसे हुआ था। इनके पश्चात इनके पुत्र बा० शिवनंदरायजी और इनके छोटे भ्राता बा० जोगीरामजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई। बा० शिवनंदरायजीके पुत्र बा० त्रिभुवनदासजीका स्वर्गवास करीब ६ वर्ष पहिले हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बा० त्रिभुवनदासजीके पुत्र बा० महावीर प्रसादजी, बा० रामचन्द्रजी तथा बा० रामचन्द्रजी पोद्दार हैं। आप सभी सज्जन व्यवसाय संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

दरभंगा—मेसर्स जुहारमल परशुराम—कपड़ेका थोक व्यापार जमींदारी तथा सराफी लेनदेनका काम होता है।

दरभंगा—बृजलाल हरीराम—गल्ला का व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता-जुहारमल परशुराम ४ वेदरापट्टी—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारूका

इस फर्मके मालिक मूल निवासी जसरापुर (खेतड़ी) शेखावाटीके हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू थानमलजी दारूका और आपके छोटे भाई बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे करीब ४६ वर्ष पूर्व हुआ था। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू थानमलजीके पुत्र बाबू पालीरामजी, परमानन्दजी, नारायणप्रसादजी, काशीप्रसादजी और गौरीशंकरजी तथा बाबू चुन्नीलालजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी दारूका हैं, इनमेंसे गौरीशंकरजी आई० ए० में पढ़ते हैं तथा शेष सब सज्जन व्यापारमें भागलेते हैं।

यह फर्म दरभंगाके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है बाबू पालीरामजी लहेरियासराय गौशालाके सेक्रेटरी एवं बाबू परमानन्दजी दारूका हिन्दू सभा, हिन्दू रिलिफ कमेटी आदि संस्थाओंके सेक्रेटरी हैं। यह फर्म दरभंगा गौशालाकी ट्रेभरर है। वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ दरभंगा—मेसर्स थानमल चुन्नीलाल, बड़ा बाजार—यहां एक दुकानपर कपड़ेका थोक और एकपर खुदरा व्यापार होता है, और किरासिन तेलकी दरभंगा, जयनगर, समस्तीपुर दलसिंहसराय तथा रसड़ा घाटके लिये एजंसी है इसके अलावा जमींदारी और बैंकिंग व्यापार होता है, यह फर्म सन् १६२६ से दरभंगामें इम्पीरियल बैंककी ट्रेभरर और ग्यारंटी ब्रोकर है।

२ दरभंगा—काशीप्रसाद गौरीशंकर—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

३ दरभंगा—पालीराम नारायन प्रसाद—टिम्बरका व्यापार होता है।

४ जयनगर—थानमल चुन्नीलाल—तेल एजंसी, गल्ला और टिम्बरका व्यापार है।

५ समस्तीपुर—थानमल चुन्नीलाल—तेलकी एजंसी और आढ़तका काम

६ लहेरियासराय—पालीराम परमानन्द—कपड़ेका व्यापार होता है।

किरानेके व्यापारी

बनवारीसा रामलोचनसा

रामदेव सीताराम

रामधीनसा सरजूसा

सहुनसा महादेवराम

घीके व्यापारी

बाबू भूपति मुकर्जी

बाबू शारदाचरण बनर्जी

गल्लेके व्यापारी और कमीशनएजेंट

कुन्दनमल नथमल

कालूराम रामेश्वर

गयाप्रसाद बजरंगलाल

चतुर्भुज मोहनलाल

दरभंगा ट्रेडिंग कम्पनी लि०

भूषलाल हरीराम

रामजीदास मूंगालाल

जनरल मरचेंट्स

वासुदेवनारायण

मुसासाव केटकी बाजार

मोहलाल चौक

हिन्दिचिंतक कार्यालय

लोहेके व्यापारी

वासुदेव महासेठ रामकरन महासेठ

रामनुमकारक मुकुन्दनायक

किरासिन तेलके एजेंसी

थानमल चुन्नीलाल

राधाकिशन श्रीनिवास

धर्मशालाएँ

थमनल हजारीमल धर्मशाला (शहरमें)

थानमल चुन्नीलाल धर्मशाला

महाराजाकी धर्मशाला (स्टेशनके पास)

सार्वजनिक संस्थाएँ

कुन्दनमल नथमल इंग्लिश हाईस्कूल

श्रीदरभंगा गौशाला

लहरियासराय

अशर्फी महासेठ

इस फर्मके मालिक बाबू अशर्फी महासेठ हैं। आप वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपने सन् १९१२ में बहुत छोटे रूपमें इस दूकानका कारवार शुरू किया था। बहुत थोड़े समयमें आपने अपने व्यवसायकी अच्छी तरक्की की है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्री अशर्फी महासेठ, लहरियासराय—आपके यहां साइकिल, ग्रामोफोन, वाच, केरासिन, ऑयल मेन स्टोर्स पेटेन्ट मेडीसिन्स, हेनउर स्वर, गुड्स आदि २ का इम्पोर्ट तथा थोक और फुटकर मनस्त व्यापार होता है।

श्री अशर्फी महासेठ लहरियासराय—बैंकिंग और किरानेका व्यापार होता है।

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपड़ा बिकता है।

कलकत्ता—रामजसराय अर्जुनदास—३, मेहरा पट्टी T. A. No 4549 B B T. A. Arjundas—चलानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

सरसुंड—शिवनाथ किशोरीलाल—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके विंदल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लाका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरीप्रसादजी हैं। इसमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी औरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपके २० गांव जमीदारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां एलनबरी और मारिसकार कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा साइकिलका इम्पोर्ट और पेट्रोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १६२ सूतापट्टी—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स

सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक

फूलचन्द साहू बिहारीलाल

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स कमलाप्रसाद हनुमानप्रसाद

" केदारबख्श कमलाप्रसाद

मेसर्स गनपतराय महादेव

" गंगाराम श्रीलाल

" बैजनाथ नथमल

" शिवचरणदास हरीप्रसाद

" रघुनाथराय रामविलास

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपड़ा बिकता है।

कलकत्ता—रामप्रसाद अर्जुनदास—३, मैंडगा स्ट्रीट T.A No 4849 B B T.A. Arjundas—बनानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

मम्बई- [illegible] किशोरीलाल—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लेका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरिप्रसादजी हैं। इनमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी अवस्थामें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपकी ३० गांव जमीन्दारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और रुपयेकी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां [illegible] और [illegible] कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा [illegible] इम्पोर्ट और पेट्रोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १५,२ [illegible]—बजाजीका काम होता है।

बैंकर्स

मेसर्स दी [illegible] बैंक

[illegible]

[illegible]

मेसर्स [illegible]

" [illegible]

मेसर्स [illegible] महादेव

" [illegible]

" [illegible]

" [illegible]

" [illegible]

बा: हीरालालजी साह मोतिहारी। वि: १९१८

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपड़ा बिकता है।

कलकत्ता—रामजसराय अर्जुनदास—३,बंदरा पट्टी T.A No 4849 B B T.A Arjundas—घलानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

सरसुंड—शिवनाथ किशोरीलाल—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके विंदल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लाका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरीप्रसादजी हैं। इसमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपके २० गांव जमींदारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां एलनबरी और मारिसकार कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा साइकिलका इम्पोर्ट और पेट्रोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १९२ सूतापट्टी—घलानीका काम होता है।

बैंकर्स

सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक

फूलचन्द साहु बिहारीलाल

काथ मरचेंट्स

मेसर्स कमलाप्रसाद हनुमानप्रसाद

" केदारबख्श कमलाप्रसाद

मेसर्स गनपतराय महादेव

" गंगाराम श्रीलाल

" बैजनाथ नथमल

" शिवकरणदास हरीप्रसाद

" रघुनाथराय रामविलास

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपड़ा बिकता है।

कलकत्ता—रामजसराय अर्जुनदास—३,बड़ा पट्टी T.A No 4849 B B T.A. Arjundas—चलानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

सरसुंड—शिवनाथ किशोरीलाल—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लाका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरीप्रसादजी हैं। इसमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपके २० गांव जमीदारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां एलनवरी और मारिसकार कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा साइकिलका इम्पोर्ट और पेट्रोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १६२ सूतापट्टी—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स
सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक
फूलचन्द साहु बिहारीलाल

क्लाथ मरचेंट्स
मेसर्स कमलाप्रसाद हनुमानप्रसाद
" केदारबख्श कमलाप्रसाद

मेसर्स गनपतराय महादेव
" गंगाराम भीखलाल
" बैजनाथ नथमल
" शिवकरणदास हरीप्रसाद
" रघुनाथराय रामविलास

गल्लेके व्यापारी और कमिशन एजेंट
मेसर्स गंगाधर श्रीलाल
" कमलपतसा नथुनीराम
" जयनारायण बिहारीलाल
" जयनारायण जमनाधर
" दौलतराम रावतमल
" फूलचन्द साहु बिहारीलाल
" बीजराज रंगलाल
" रघुनाथराय रामविलास
" राजकुमार बिसनीराम
" रायली ब्रदर्स एजेंसी

किरानेके व्यापारी
मेसर्स महंतशाह
" महावीरराम किसनराम
" मंगलचंद देवचंद
" राजकुमारसा बिसुनसा
" वंशलोचन शाह हरीहरप्रसाद

सोना चांदीके व्यापारी
मेसर्स निरसू साहु लछमीप्रसाद
" फूलचंदसाहु बिहारीलाल
" शिवसहायभगत मूलचन्द
" सुब्बालाल रामप्रसाद

गुड़के व्यापारी
मेसर्स दानमल गिरधारीलाल
" धालाबक्स जानकीप्रसाद

लोहेके व्यापारी
मेसर्स खूबलालसाहु मोहनप्रसाद
" रामसुन्दर साहु नत्थूसाहु

मोटर गुड्स एण्ड पेटरोल मर्चेंट्स
मेसर्स ओटो मोबाइल कम्पनी
" खेमका मोटर एण्ड साइकल वर्क्स
" बजरंग लाल ब्रदर्स
" विश्वकर्मा ब्रदर्स (पायसपंप, वाच आदि)

औषधालय
आयुर्वेद औषधालय
काली औषधालय

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट
डा० मुकुन्दलाल स्टोर्स
सखावत हुसेन एण्ड को०
सूरज एण्ड को०

वर्तनके व्यापारी
चुन्नीलाल साहु
देवीराम सखीचंद साहु

सार्वजनिक संस्थाएं
श्रीसीतामढ़ी गौशाला
सनातन धर्मपुस्तकालय
श्रद्धानंद अनाथालय
श्रद्धानंद पुस्तकालय

तेलकी एजेंसी
जयनारायण जमुनाधर
मिर्जामल गोविंदबक्स

धर्मशालाएं
अर्जुनदास धर्मशाला
चतुर्भुज जगन्नाथ धर्मशाला
खेमका धर्मशाला

प्रिंटिंग प्रेस और बुकसेलर
भगवान प्रेस
रा० ब० नारायणप्रेस
गयाप्रसाद (बुकसेलर)

गल्लेके व्यापारी और कमीशन एजेंट

मेसर्स गंगाधर श्रीलाल
" कमलपनसा नथुनीराम
" जयनारायण बिहारीलाल
" जयनारायण जमनाधर
" दौलतराम गवनमल
" फूलचन्द साहु बिहारीलाल
" धीजराम गंगलाल
" रघुनाथराय रामविलास
" राजकुमार किसनीराम
" राधली ब्रदर्स एजेंसी

किरानेके व्यापारी

मेसर्स महंतसाहु
" महावीरराम किशनराम
" मंगलचंद देवचंद
" राजकुमारसा विशुनसा
" वंशलोचन साहु हरिहरप्रसाद

सोना चांदीके व्यापारी

मेसर्स निरसू साहु लछमीप्रसाद
" फूलचंदसाहु बिहारीलाल
" शिवसहायभगत मूलचन्द
" मुन्नालाल रामप्रसाद

गुड़के व्यापारी

र्स दानमल गिरधारीलाल
" घासीदास जानकीप्रसाद

लोहेके व्यापारी

सूरजलालसाहु मोहनप्रसाद
ताराचन्द्र साहु नत्थूसाहु

टर गुड्स एण्ड पेटरोल मर्चेंट्स

टो मोबाइल कम्पनी
" गेमका मोटर एण्ड साइकल वर्क्स
" बजरंग लाल ब्रदर्स
" विश्वकर्मा ब्रदर्स (मार्बलपेपर, वाच आदि)

औषधालय

आयुर्वेद औषधालय
काली औषधालय

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

डा० मुकुन्दलाल स्टोर्स
सत्धन हुसेन एण्ड को०
सूरज एण्ड को०

बर्तनके व्यापारी

चुन्नीलाल साहु
देवीराम सतीचंद साहु

सार्वजनिक संस्थाएं

श्रीसीतामढ़ी गौशाला
सनातन धर्मपुस्तकालय
श्रद्धानंद अनाथालय
श्रद्धानंद पुस्तकालय

तेलकी एजेंसी

जयनारायण जमुनाधर
मिर्जामल गोविंदबक्स

धर्मशालाएं

अर्जुनदास धर्मशाला
चतुर्भुज जगन्नाथ धर्मशाला
खेमका धर्मशाला

प्रिंटिंग प्रेस और बुकसेलर

भगवान प्रेस
रा० ब० नारायणप्रेस
गयाप्रसाद (बुकसेलर)